श्रीहनुमते नमः

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास-कृत

असली और विशुद्ध

श्रीरामचरित-मानस

राजापुर की पुरातन प्रति तथा काशी-निवासी
प्रसिद्ध रामायणी पं० वन्दन पाठक की
रामायण एवं अन्यान्य कतिपय प्राचीन
प्रामाणिक प्रतियों को देखकर श्रीअयो-
ध्यान्तर्गत जानकीघाट-निवासी;
निखिल-शास्त्र-निष्णात; सकल
साधु-गुण-व्रात महात्मा

श्री १०८ पं० रामवल्लभाशरणजी

के निर्देशानुसार संशोधित

संपादक—

पं० रामकिशोर शुक्ल बी०ए०, वकील, उन्नाव

लखनऊ

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा
नवलकिशोर-यन्त्रालय में मुद्रित और प्रकाशित

प्रथम बार] सन् १९२५ ई० [३००० प्रति

श्रीसीताराम ।

श्रीहनुमते नमः ।

श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदास-कृत

मूल तथा शुद्ध

श्रीरामचरित-मानस ।

पं० रामगुलाम द्विवेदी, चिथरूसिंह, बनवारीदास, मानदास तथा राजापुर की पुरातन प्रति से संशोधित सटिप्पण काशीनिवासी प्रसिद्ध रामायणी पं० वन्दन पाठक की रामायण तथा श्रावणकुञ्ज, अयोध्या के बालकाण्ड एवम् अन्यान्य कतिपय प्राचीन प्रामाणिक प्रतियों को देखकर निखिल शास्त्र-निष्णात सकल साधुगुण-व्रात श्रीतुलसीसाहित्य-परिषद्, अयोध्या के स्वनाम धन्य अध्यक्ष श्रीजानकीघाट, अयोध्या-निवासी अष्टोत्तरशत **श्रीमत्स्वामि पं० रामवल्लभा-शरणजी** महाराज के निर्देशानुसार इसका पाठ ठीक किया गया ।

सम्पादक—

पं० रामकिशोर शुक्ल बी० ए०, वकील, उन्नाव ।
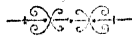
प्रकाशक—

नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ.

सं० १९८२ वै०

प्रथमावृत्ति ३०००]

[मूल्य सजिल्द ४)

सूचीपत्र ।

सूचीपत्र

आरण्यकाण्ड ।

किष्किन्धाकाण्ड ।

सुन्दरकाण्ड ।

लङ्काकाण्ड ।

चित्रों का सूचीपत्र ।

श्रीरामाय नमः ।

श्रीहनुमते नमः ।

भूमिका

पूज्यपाद श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी के रामचरितमानस का आदर जैसा है उसको सबही जानते हैं सहृदय विद्वान् तथा हलग्राही पामर-पर्यंत सर्व श्रेणी की जनता इसे जैसी बहुमान्य दृष्टि से देखती है उसके कहने की आवश्यकता नहीं है परंतु अबतक इसके जितने संस्करण निकले हैं उनमें पाठों का परिवर्तन यथावस्थित रहगया—इतना ही नहीं-कितने संस्करण-कर्ताओं ने बहुत सी क्षेपक कथायें भरदीं बहुतसे महाशयों ने श्रीजगत्पूज्य गोस्वामीजी का ठीक-ठीक आशय न समझकर अपने विचार से शब्दों को बदल दिया ऐसा कर्म अतीव अनुचित हो गया है महान् विचारवान् तथा सत्यवादी श्रीमान् शिवलाल पाठकजू ने इस विषय में ऐसा लिखा है:—

दो॰ ललीपूर्व संकल्प को, रस मुनि वीचे जान ।
अधिक मिलाये हैं अधम, करि हैं नरक पयान ॥
अनलकाम अहिक्रोध हैं, लोभहि बिच्छू जान ।
पाठ फेर जो करत हैं, ते शठ नरक समान ॥

अतः इस श्रीमन्मानस रामायणकी प्रतिको पढ़कर किसी सज्जन को यदि कहीं पर शंका उत्पन्न हो तो वह न समझें कि पाठ अशुद्ध होगया है उनको उचित है कि श्रीमान् स्वामी रामवल्लभाशरण जानकीघाट अयोध्यानिवासी को अपनी शंका लिख भेजें वहां से शंका निवारण पूर्णरीति से हो जायगी ।

एक एक अक्षर के इधर उधर होजाने के कारण पाठ और अर्थ में बड़ी विपरीतता होजाती है इसके दृष्टांत २-४ नीचे लिखे जाते हैं:—

शुद्धपाठ

"हंसहिबकगादुरचातकही * हँसहिंमलिनखल बिमलबतकही"

कोई कोई महानुभाव "गादुर" शब्द का यथार्थ अर्थ न समझ कर "गा" की जगह पर "दा" बदल कर "दादुर" पाठकर दिया है—अब विचारवान् यह ध्यान देवें कि पक्षी पक्षी पर हँसता है और पशु पशु पर। ऐसा असम्भव

है कि पक्षी पशुपर हँसे "दादुर" अर्थात् मेढक का चातक पर हँसने का क्या प्रयोजन है "गादर" चमगादुर का सूचक है और उक्त चौपाई के प्रथम भागमें "हंस" "वक" "चातक" तीन पक्षी जाति के जीव आये हैं इसकारण चौथा जल का जीव कैसे हो सकता है।

द्वितीयसोपान में

"रामतुम्हहिप्रियतुमप्रियरामहि * यहनिर्जोसिदोषबिधिबामहि"

इस चौपाई में भी निर्जोस का भाव न समझकर बहुत से महाशयों ने "निर्दोष" पाठ बदल दिया है "निर्जोस" का अर्थ "अच्छी तरह विचार कर देखा जाना" है।

प्रथम सोपान में

"क्षत्रिय तनुधरि समरसकाना * कुलकलंक तेहिपामर आना"

"आना" शब्द का भाव लक्षित न होने से बहुत प्रतियों में "जाना" शब्द कर दिया गया है। इसी तरह से यदि सब अशुद्धियां यहां पर लिखी जावें तो भूमिका के विस्तार की सीमा न रहेगी—इस कारण मैंने दो चार दृष्टान्तार्थ पाठान्तर लिखे—शुद्ध-से-शुद्ध प्रतियां जो देखी गईं तो उनमें भी बहुत सी त्रुटियां मिलीं।

श्री १०८ श्रीस्वामी रामवल्लभाशरण जानकीघाटनिवासी वेदों और शास्त्रों के इस समय में अद्भुत ज्ञाता हैं और अयोध्याजी के समस्त महात्माओं में माननीय हैं—संस्कृत के ऐसे प्रबल विद्वान् होनेपर भी श्रीमानस रामायण में उनको अतीव प्रेम है और श्रीमानस के इस समय में आचार्य माने जाते हैं।

श्रीमानसरामायण की शुद्ध प्रति प्रकाश करनेकी मेरी बहुत काल से इच्छा थी इस कारण मैंने श्रीअयोध्याजी में निवासकरके उक्त श्रीस्वामी जीसे इस प्रति को बड़े परिश्रम से संशोधन कराया।

श्रीअयोध्याजी श्रावणकुंज नामक स्थान में सं० १६६१ के साल का लिखा प्रथम सोपान तथा मानदासजी चिथुरूसिंह भक्तमालीजी भगवद्दासजी इनके पास प्राचीन पुस्तकों से सोधी हुई श्रीबंदन पाठक जी की पुस्तक से शोधकर इस संस्करणको प्रकाश किया आशा है भक्तजन इससे पूर्णलाभ उठावेंगे—

४-२-२५

रामकिशोरशरण
वकील, उन्नाव।

श्रीरामाय नमः ।

श्रीहनुमते नमः ।

श्रीरामचरितमानस-माहात्म्य ।

परमात्मा साक्षात्कार, क्षमाशील महर्षियों ने अपार संसार तरणोपाय विचार में एकमात्र भगवच्चरित्र ही प्रधान तथा निश्चय किया है । यथाशक्ति यथारुचि सबने उसे अपने-अपने ग्रंथों में उच्चस्थान भी दिया है ।

यद्यपि सभी भगवच्चरित्र अनन्त, पूर्णमहत्त्ववाले हैं और जीवों के कल्याण में सभी माने जाते हैं तथापि श्रीरामचरित्र सबसे विस्तृत और सुगम धार्मिक श्रद्धा बढ़ाने में अधिक ही कहे जाते हैं तिसपर भी श्रीराम-चरित-मानस की मनोज्ञता तथा गंभीरता सरस-हृदयवालों की दृष्टि में निराली ही प्रतीत होती है ।

इस ग्रंथ का प्रभाव कहांतक कहा जावे कोई भी लौकिक वा पारमार्थिक कार्य ऐसा नहीं है जो इस ग्रंथ से सिद्धि न होसकै अच्छे आप्त तथा तत्त्वज्ञ निर्मत्सर सज्जनों का तो यह निश्चय है कि जैसे सत्ययुग में ब्रह्माजी आचार्य और वेद ही से सब धर्मों का निश्चय होता था तथा त्रेता में वाल्मीकि आचार्य और श्रीमद्रामायण से धार्म्मिक व्यवहार प्रचार होता था, द्वापर में भगवान् कृष्ण द्वैपायन आचार्य और पुराणों से धर्म्म की प्रवृत्ति होती थी, इसी तरह कलियुग में श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी आचार्य और उनके ग्रंथ ही धार्म्मिक प्रवृत्ति के कारण हैं ।

श्रीगोस्वामीजी ने अपने ग्रंथमें स्पष्टरूप से लिख भी दिया है—

जिन पुरुषों का अनुराग श्रीरामचरितमानस में है उनको श्रीमन्महाराजने स्वयं आशीर्वाद दिया है:—

चौपाई

जो यह कथा सनेह समेता । कहिहैं सुनिहहिं समुझि सचेता ॥

ह्वैहहिं रामचरन अनुरागी। कलिमल रहित सुमंगल भागी॥

दो॰ स्वप्नहु सांचहु मोहि पर, जो हर गौरि पसाउ।
तो फुर होउ जो कहहुँ सब, भाषाभनितप्रभाउ॥

जिन जीवोंका इस ग्रंथमें प्रेम नहीं है और अतृप्त इधर उधर भटकते हैं उनके विषय में भी महानुभाव ने ऐसा कहा हैः—

चौपाई

जिन्ह इहि वारि न मानस धोये। ते कायर कलिकाल बिगोये॥
तृषित निरखि रबिकरभवबारी। फिरिहहिं मृगजिमिजीव दुखारी

श्रीब्रह्मरामायण तथा महाकालसंहिता में श्रीपार्वतीजी के श्री-शिवजी से प्रश्न करने पर श्रीशंकर भगवान् ने रामचरितमानस का माहात्म्य और नवाह तथा मासिक पाठों की विधि तथा उनके उत्थान और विश्राम इस प्रकार कहेः—

श्लो॰ वाल्मीकिस्तुलसीदासो भविष्यति कलौयुगे।
शिवेनात्र कृतो ग्रंथः पार्वतीं प्रति बोधितुम्॥
रामभक्तिप्रवाहार्थं भाषाकाव्यं करिष्यति।
रामायणं मानसाख्यं सर्वसिद्धिकरं नृणाम्॥
भाषारामायणस्यैव पठनाच्छ्रवणात्प्रिये।
सद्यः पुनन्ति वै सर्वे चिरकालात्तथान्यतः॥

महाकालसंहिता में इस प्रकार लेख हैः—

धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनञ्च तथोत्तमम्।
श्रोतव्यं च तथा भक्त्या रामायणरसामृतम्॥
ऊर्जे मासे सिते पक्षे चैत्रे च द्विजसत्तम।

नवाह्ना खलु श्रोतव्यं रामायणकथामृतम् ॥
अथवा माधवे विप्र मार्गशीर्षे च श्रावणे ।
आश्विने फाल्गुने चैव शुक्ल पक्षे विशेषतः ॥
श्रुत्वा रामायणं पुण्यं परमपदमाप्नुयात् ।
वर्णानामिति चारभ्य उवाच करुणा निधिः ॥
प्रथमे दिवसे पाठं कुर्य्याच्चैव विचक्षणः ।
द्वितीये दिवसे विप्र शतानन्दस्य वन्दनम् ॥
तृतीये कृत शौचान्तं चतुर्थे वारिजेक्षणः ।
पञ्चमे राम शैलान्तं शोकस्थिति च षष्ठके ॥
सप्तमे मारुतेर्वाक्यं चंद्रे रामस्य संस्थितिः ।
अष्टमे गुरु वाक्येन राज्यसंभार संस्मृतिः ॥
नवमे पतङ्ग किरणैर्नैव दद्यान्ति मानवाः ।
एवं क्रमेण श्रोतव्यं नवाह नवभिः दिनैः ॥

ब्रह्म रामायण महाकाल संहिता से छांटकर जो श्लोक लिखे गये हैं उनका सारांश यह है कि कलियुग में श्रीवाल्मीकि जी गोस्वामी तुलसीदासजी का अवतार धारण करेंगे और श्रीशिवजी ने जो श्रीपार्वतीजी से रामचरितमानस कहा था उसको वह भाषा में लिखेंगे उसके अनुरागी जन अपार संसार को पार करके परमपद को पावेंगे ।

इस रामचरितमानस का मासिक तथा नवाह पाठ जिस प्रकार जिस स्थान से उठाया जायगा और जहां पर विश्राम होगा वह ग्रंथके भीतर सब लिख दिया गया है ।

अनेक प्रकार की सिद्धियों की तो बात क्या साक्षात् श्रीरामजी का दर्शन इसके पाठकों को और प्रेमियों को मानसद्वारा प्राप्त होते हैं पर यह गुप्त रहस्य है इस कारण इस जगह यह सब विधान लिखना उचित नहीं—जो भक्तजन जिस पदार्थ की चाहना करें उस पदार्थ के प्राप्त करने के लिये पाठ का विधान मानस के प्रेमी महात्मावों से प्राप्त करें।

४-६-२५

परात्पर ब्रह्म रघुवंश भूषण—

रामकिशोर शरण

वकील, उन्नाव।

महाकवि तुलसीदास ।
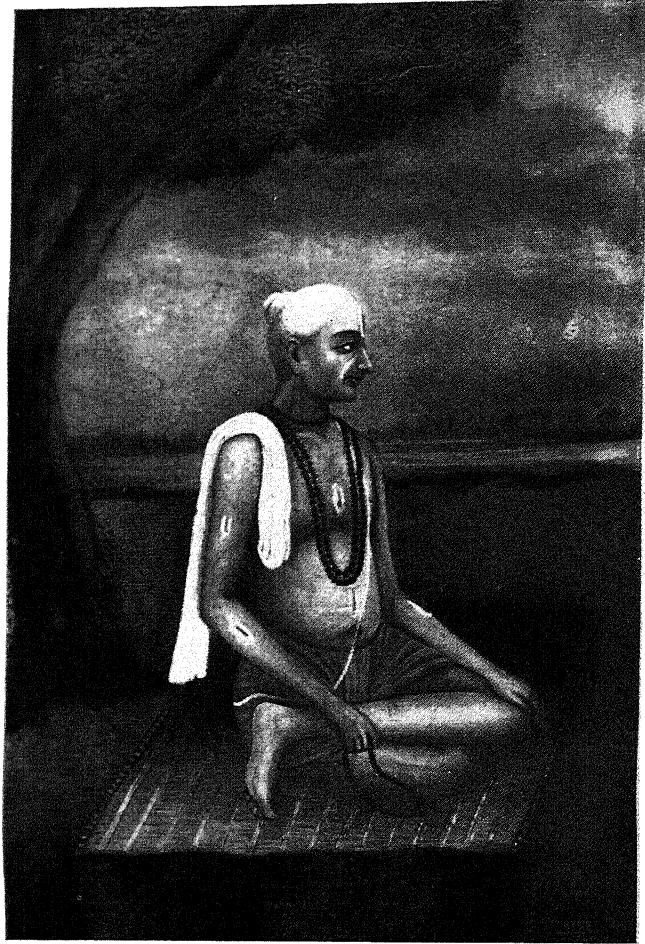
जंगम तुलसी-तरु लसै, आनँद-कानन-खेत ;
जाकी कविता-मंजरी, राम-भँवर रस लेत ।

श्रीजानकी वल्लभो विजयते ।

श्रीहनुमते नमः ।

श्रीमते रामानन्दाय नमः ।

श्रीमद्गोस्वामि-चरितम् ।

अथ मङ्गलाचरणम्

जीवान्मन्दमतीं सुभाग्य रहितां ज्ञात्वा कलेदोंषत-
स्तत्कल्याण परायणः पर कविः श्रीमन्महर्षिस्स्वयम् ।
वाल्मीकिः कृपया सुहृत्सु तुलसीदासेति नाम्ना कला-
वाविर्भूय चकार रामचरितंभाषा प्रबन्धेन वै ॥

कलिकुटिल जीव-निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयौ ।
त्रेता काव्य निबंध करिव सतकोटि रमायन ।
इक अक्षर उद्धरैं ब्रह्महत्यादि परायन ॥
अब भक्तनि सुखदैन बहुरि लीला बिस्तारी ।
रामचरन रस मत्त रटत अहनिसि व्रतधारी ॥
संसार अपार के पार को सुगम रूप नवका लयौ ।
कलिकुटिल जीव-निस्तार हित वाल्मीकि तुलसी भयौ ॥

काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा के विद्वान् सम्पादकों ने “ श्रीरामचरितमानस ” का शुद्ध संस्करण सम्पादित करते समय “ गोस्वामीजी के जीवनचरित्र की उपलब्धि” पर विचार करते हुए लिखा है:—

“ सबसे प्रामाणिक वृत्तान्त बतलानेवाला ग्रन्थ, वेणीमाधवदास कृत “ गोसाईंचरित ” है, जिसका उल्लेख बाबू शिवसिंह सेंगर ने “ शिवसिंहसरोज ” में किया है । परन्तु खेद का विषय है कि न तो अब वह ग्रन्थ ही कहीं मिलता है और न शिवसिंहसरोजकार ने उसका संक्षिप्त वृत्तान्त ही अपने ग्रन्थ में लिखा । वेणीमाधवदास कवि पसका ग्राम निवासी थे और गोसाईंजी के साथ सदा रहते थे । ”

ऊपर जिस प्रामाणिक ग्रन्थ का उल्लेख हुआ है उसका अन्तिम अध्याय, सौभाग्य से, भगवन् की असीम कृपा से, हमें प्राप्त हो गया है। इस अध्याय का नाम "मूल गोसाईंचरित" है। इसमें संक्षेप से बाबा वेणीमाधवदासजी ने नित्य पाठ करने के अभिप्राय से, सम्पूर्ण चरित्र का उल्लेख कर दिया है। अस्तु। आज हम उसी सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ के आधार पर अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार संसार के अद्वितीय ऋषि-कवि, हिन्दी-कवि-सम्राट्, जगद्गुरु, परमाचार्य्य वर्य्य श्री १००८ गोस्वामी तुलसीदासजी का पावन चरित्र अङ्कित करने की चेष्टा करते हैं। इसमें जहाँ तहाँ जो अवतरण दिये गये हैं वे उसी ग्रन्थ के हैं और अन्त में "मूल गोसाईंचरित" भी अविकलरूप से जोड़ दिया गया है।

इति प्रस्तावना।

महर्षि के अवतरित होने के समय

लोक-धर्म्म की अवस्था।

इतिहासवेत्ता इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि विक्रम की पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में भारतीय-धर्म्म रूपी समुद्र में सुप्रसिद्ध भक्ति आन्दोलन की लहरें उठ रही थीं। उसी समय चैतन्य महाप्रभु के भाव-प्रवाह द्वारा बङ्गदेश में और अष्ट-छाप के कवियों के संगीत स्रोतद्वारा उत्तर भारत में प्रेम की धारा प्रवाहित हुई थी। उस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य यह था कि जीवन में बुद्धि के अनुचित और अत्यधिक साम्राज्य का नियमन किया जाय, और उसके स्थान में हृदय का समुचित परिमाण में प्रयोग। उस समय के पण्डितों ने हार्दिक शक्तियों की अवहेलना करके बौद्धिक शक्तियों का विशेष उपयोग किया था, और दार्शनिक की भाँति बाल की खाल निकाल कर कर्मकांड को चरमसीमा तक पहुँचा दिया था। नए-नए सम्प्रदायों की खींच-तान के कारण आर्य-धर्म्म का व्यापक स्वरूप आँखों से ओझल हो रहा था और एक देश-दर्शिता बढ़ रही थी। जो एक कोना देख पाता था, वह दूसरे कोने पर दृष्टि रखनेवालों को बुरा-भला कहता था। शैवों, वैष्णवों, शाक्तों और कर्मठों की "तू-तू-मैं-मैं" तो थी ही, बीच में मुसलमानों से अविरोध प्रदर्शन के लिए भी अपढ़ जनता को अपने साथ में घसीटने वाले कई नए पंथ निकल चुके थे। उनमें एकेश्वर-वाद का कट्टर स्वरूप, उपासना का आशिकी रंग-ढंग, ज्ञान-विज्ञान की निन्दा, विद्वानों का उपहास, वेदान्त के महा वाक्यों का अनधिकार प्रयोग आदि सब कुछ था।

भारतीय महा-युद्ध के अवसर पर दुरात्मा दुर्योधन ने जो कुपाठ पढ़ाया था वह हिन्दू परिवार में अच्छी तरह व्याप्त होगया था। घर-घर भाई-भाई में कलह उपस्थित होगया था जो बढ़ते-बढ़ते सम्पूर्ण राष्ट्र में व्याप्त होकर अनेक जयचन्दों की सृष्टि करके देश को विदेशियों और विधर्म्मियों के आधीन कर दिया था।

ऐसे समय में, जब अन्यप्रकार के अत्याचारों और उत्पातोंकी बात दूर रहे, मत-मतान्तर

के झगड़ों से लोगों की बुद्धि भ्रान्त हो रही थी, जब शैव और वैष्णव लोग परस्पर विरोध रखना ही मानो अपने इष्टदेव की उत्कृष्ट उपासना समझते थे, जब रामोपासक और कृष्णोपासक परस्पर एक दूसरे को नीचा दिखाने ही में अपनी धर्मज्ञता और ईश्वर की प्रसन्नता मानते थे, सर्व-शक्तिमान् परमात्मा ने दुःखियों का दुःख दूर करने, सुखियों को अधिकतर सुखी बनाने, धर्म-विरोध की ज्वाला शान्त करने, धर्म-जिज्ञासुओं की तृष्णा को बुझाने और वर्त्तमान तथा भविष्य के युवकों एवं उदार चेताओं को देखने, सोचने और अनुभव करने की योग्यता देकर उन्हें परम उत्साही, साहसी तथा पक्का धार्मिक बनाने के लिए आदि कवि महर्षि वाल्मीकि को मनुष्यलोक में भेजने का उपयुक्त अवसर निश्चित किया।

प्रादुर्भावना।

प्रकृति के साम्राज्य में विना कारण के कोई कार्य नहीं होता, यह अटल और व्यापक नियम है। अस्तु। पवित्र वेदों के आचार्य्य सृष्टिकर्त्ता चतुर्मुख ब्रह्मा हैं और शतकोटि रामायण के आचार्य्य आदि कवि महर्षि वाल्मीकि हैं। सच तो यह है कि समष्टि सृष्टि के ब्रह्मा एवं व्यष्टि सृष्टि के वाल्मीकि एक ही हैं। पुनीत वेदों में जिस परम तत्व का सूक्ष्मरूपेण निरूपण हुआ है उसी का आख्यान रामायण में है *। ज्ञान-शक्ति कौशल्या, उपासना-शक्ति सुमित्रा और क्रिया-शक्ति कैकेयी युक्त दशाङ्ग परिपूर्ण वेद स्वयम् महाराज दशरथ हैं †। निजांश युक्त (तीनों भाइयों के सहित) श्रीरामचन्द्रजी प्रणव (ॐकार) के स्वरूप हैं। इसी अभिप्राय को लक्ष्य करके महर्षि वाल्मीकि ने श्रीमद्रामायण का निर्माण किया, भगवत् ने अवतार लेकर उसीके अनुसार पवित्र लीला विस्तार किया और परम भागवत भगवान् शिवजीने त्रिलोकीमें शतकोटि रामचरित्र का वितरण करके सारतत्त्व "श्रीरामनाम" स्वयम् ग्रहण किया ‡।

श्रीरामनाम प्रणव का प्राण है और प्रणव के शीर्षस्थान में रेफ-बिन्दुरूप से सुशोभित है। श्रीहनुमान्‌जीने, जो वास्तव में शिवजी ही हैं, श्रीरामचरित का वर्णन करते हुये उसी प्रणव के प्राणस्वरूप श्रीरामपरत्व का प्रतिपादन किया। इस गूढ आध्यात्मिक तत्त्व युक्त अद्भुत रचना को देखकर महर्षि वाल्मीकि आनन्दमग्न होगए। महामुनिकी यह प्रेम पूर्ण दशा देखकर श्रीपवनकुमार ने प्रसन्न होकर उनसे वर मांगने को कहा। अस्तु, महर्षि ने भगवान् आञ्जनेय से प्रार्थना की—"भगवन्! यह गुप्त रहस्य है, इसे प्रकाशित मत कीजिये। मैं आप से यही वर मांगता हूं।" श्रीमारुतनन्दनजी ने उस प्रार्थना को स्वीकार तो कर लिया परन्तु उस वरदान के अन्तर्गत स्पर्द्धा का भाव निहित समझकर उन्हें कलियुग में जन्म

---

* वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे। वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना॥

† तासां क्रिया तु कैकेयी सुमित्रोपासनात्मिका। ज्ञानशक्तिश्च कौशल्या वेदो दशरथो नृपः॥

‡ "रामचरित शतकोटि महँ लिय महेश जग जान।"

लेने का शाप भी देदिया। महामुनि ने इस शाप को सहर्ष अङ्गीकार करलिया। मुनि की सहनशीलता से प्रसन्न होकर यह कहकर उन्हें आश्वासन दिया कि "कलि में जन्म लेने पर मैं कलि-प्रपञ्च से आपकी रक्षा करूंगा" *।

उसी शाप के कारण आदि-कविरूपी बाल-मार्तण्ड ने हुलसीरूपणी उदयाटी से उदय होकर कलि-कलुषरूपी तिमिर-पुञ्ज का नाश कर दिया और सुर-सन्तरूपी कमलकुल को विकसित किया। साहित्याचार्य्य स्वर्गीय पं० अम्बिकादत्त व्यास ने ठीक ही कहा है:—

"डगर-डगर अरु नगर-नगर माहिं कहनि पसारी राम-चरित-अवलि की।
कहैं 'कवि अम्बादत्त' रामही की लीलन सों भरि दीनी भीर सबै चहलि-पहलि की॥
शूद्रन ते ब्राह्मण लौं मूरख ते पण्डित लौं रसना डुलाई सबै 'जय-जय' बलि बलि की।
यम को भगाय, पाप-पुंज को नशाय, आज तुलसी गोसाईं नाक काट लीनी कलि की॥

अस्तु। प्रसिद्ध नगर रामापुर से सम्बद्ध दूबे-पुरवा ("दूबन को पुरवा") यमुना किनारे अवस्थित था। उसमें सभी जाति के लोग बसते थे। उसी ग्राम में राजापुर रियासत के राजगुरु भी रहते थे। वे पराशर गोत्री सरयूपारी ब्राह्मण थे। उनके पूर्वज पतेजी स्थान में रहते थे। अतः वे पतेजी अथवा पत्योंजा के दुबे कहलाते थे और 'झुरखे' उनके कुल का "अल्ल" था। वे बड़े पुण्यात्मा, विद्वान् धन-धान्य से सम्पन्न और सत्पात्र ब्राह्मण थे। वे वहां के प्रतिष्ठित पुरुषों में मुख्य थे। उन्हीं के घर अर्थात् उनकी धर्मपत्नी हुलसी माता के गर्भ से, बारह मास से भी अधिक गर्भवासके उपरान्त †। संवत् १५५४ में श्रावण शुक्ला सप्तमी शनिवार को सन्ध्या समय, जब कर्क के बृहस्पति और चन्द्रमा, सप्तम मंगल और अष्टम शनैश्वर पड़े थे, श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी ने जन्म लिया ‡।

साधारण गर्भकाल से ज्यों ज्यों दिन अधिक बीतते जाते थे, त्यों त्यों राजगुरु-परिवार में चिन्ता और व्याकुलता बढ़ती जाती थी। ऐसी दशा में पुत्रोत्पत्ति के शुभ समाचार ने सबके हृदय में उत्साह और आनन्द भर दिया। बधावा बजने लगे, स्त्रियां सोहर गाने लगीं और अन्य माङ्गलिक व्यवहार होने लगे। नेगी-योगी आने लगे और सबका उचित सत्कार होने लगा। परन्तु यह उल्लास-लहरी समुद्र-तटकी लहर की तरह क्षणिक थी। राजगुरु बरोठे में बैठे हुये मोछें सँवार रहे थे। ग्रामवासी भी दो चार पास में बैठे हुए थे। मंगन दान-मान

* यह प्रसंग कुछ हेर-फेर के साथ "आनन्दरामायण में भी आया है।

† श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु का जन्म भी प्रलम्बित सुदीर्घ काल तक गर्भवासके उपरान्त हुआ था।

‡ मूल इस प्रकार है:—

सर वार सुदेश के विप्र बड़े। शुचि गोत पराशर टेक कड़े॥
शुभ थान पतेजि रहे पुरखे। तेहिते कुल नाम पड्यो झुरखे॥
यमुना तट दूबन को पुरवा। बसते सब जातिन के कुरवा॥
सुकृती सत्पात्र सुधी सुखिया। रजिया पुर राज गुरू मुखिया॥
तिनके घर द्वादश मास परे। जब कर्क के जीव हिमांशु चरे॥
कुज सप्तम अष्टम भानु-तनय। अभिजित शनि सुन्दर सांझ समय॥

से सन्तुष्ट किये जा रहे थे। इतने में एक दासी भीतर से आई और कहने लगी—"महाराज! घर में चलिये, बुलाने आई हूं। कारण यह है कि आपका पुत्र एक तो अन्य बच्चों की तरह जन्मतेही रोया नहीं, दूसरे पृथ्वी पर गिरते ही उसने स्पष्टरूप से "राम," ऐसा शब्द कहा। अब देखने से मालूम हुआ कि बत्तीसों दांत उसके मुँह में जमे हुये हैं, पंक्ति में कोई भी स्थान रिक्त नहीं है। जान पड़ता है कि वह आज का जन्मा नहीं प्रत्युत पांच वर्ष का बालक है। मैं दुनियां देखती देखती बूढ़ी होगई परन्तु अब तक कहीं भी मैंने ऐसा शिशु नहीं देखा। महरी (चमाइन) कहती है कि जब उसने शिशु का नाल काटा था तब उसे ऊपर से शङ्ख-ध्वनि सुनाई पड़ी थी। जो स्त्रियाँ वहाँ बैठी हुई हैं, यह आश्चर्य्यजनक दृश्य देखकर मारे डर के कांप रही हैं, झँख रही हैं और कह रही हैं कि अवश्यही किसी राक्षस ने जन्म लिया है। यह सब देख-सुनकर प्रसूती के मन में जितना दुःख होरहा है उसका अनुमान करना भी कठिन ही है। अतएव, अब आप निर्विलम्ब भीतर चलें और प्रसूती को समझा-बुझाकर, आश्वासन देकर उसके हृदयस्थ दारुण ताप को शान्त करें।"

दासी के वचन को सुनकर राजगुरु तुरत उठे, भीतर गये और प्रसूतीगृह-द्वार पर खड़े हुए। शिशु को देखकर बहुत दुःखी हुए और पूर्व जन्मार्जित पाप का परिणाम समझते हुये बाहर चले गए। तदुपरान्त इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु और ज्योतिर्विद् सभी जमा हुये और विचारने लगे कि इस शिशु को क्या किया जाय। बहुत वाद-विवाद के अनन्तर यह निश्चय हुआ कि तीन दिन के बाद यदि बच्चा जीवित रहे तो फिर से इस प्रश्न पर विचार करके उचित कर्तव्य निर्धारित किया जायगा।

पन्द्रह सै चउअन विषै, कालिन्दी के तीर। श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरेउ शरीर॥

शिशु-स्थानान्तरीकरण

माता का शरीर-त्याग!

दशमी के उपरान्त जब एकादशी लगी और आठ घड़ी रात बीत गई तब माता हुलसी ने अपनी प्रिय दासी से कहा-"सखि! अब शरीर-पञ्जर को छोड़कर यह प्राण-पखेरू उड़ना चाहता है। सो, तुम इस प्यारे शिशु को लेकर अभी हरिपुर अपनी सास के पास चली जाव। वहां जाकर मेरे इस प्यारे पुत्र को पालना, सब प्रकार से इसकी रक्षा करना। भगवान् तुम्हारा कल्याण करेंगे। नहीं तो यह निश्चय जान रक्खो कि मेरे मरने पर वे पठित-मूर्ख इस बच्चे को जरूर फेंक देंगे। सखि! इस बात को कोई जानने न पावे, रात ही में रास्ता कट जाय और दिन चढ़ते चढ़ते तुम वहां पहुँच जाव, तभी अच्छा है *।"

* इसी स्थानान्तरीकरण की बात नहीं मालूम होने के कारण श्रद्धेय स्वर्गीय महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी आदि महानुभावों को 'अभुक्त मूल' की कल्पना करनी पड़ी थी, क्योंकि और कोई उपाय ही नहीं था। अब सब बातें स्पष्ट होगईं और "जायो कुल मंगल बधावनो बजायो सुनि भयो परिताप-पाप जननी-जनक को" एवं "सुकुल जनम" तथा "मातु-पिता जग जाइ तज्यो विधिहू न लिख्यो कछु भाल भलाई।"—इन सब वचनों की संगति लग गई।

इस प्रकार अन्तिम विनय कर, भली भांति आश्वासन देकर तथा अपना भूषण प्रदान कर माता हुलसी ने उसकी गोद में बच्चे को सौंप दिया और उसे बिदा कर दिया। वह तो शिशु को लेकर चुप-चाप चली गई यह पुत्र-वियोग में माता का और बुरा हाल हो गया। उन्होंने विधि-हरि-हर को स्मरण करके प्रार्थना की—"भगवन्! मेरे सर्वस्व की रक्षा कीजिएगा।" यह अन्तिम प्रार्थना थी। उसी एकादशी को ब्रह्ममुहूर्त्त में माता हुलसी ने शरीर त्याग कर स्वर्गारोहण किया। प्रातःकाल यमुना-तट पर उनकी अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न हुई।

हरिपुरप्रसङ्ग

दैवी-रक्षा।

पांच घड़ी दिन चढ़े चुनिया दासी हरिपुर में अपनी सास के पास पहुँची। पालागन के बाद उसने सब हाल अपनी सास से कह सुनाया। सुनकर सास ने कहा—"बहू! तू ने बड़ा ही अच्छा काम किया। तेरे घर कलोर गाय है। उसका दूध पिलाकर इस मातृहीन शिशु को जिला ले।"

अस्तु, वह दासी शिशु को प्रेम-पूर्वक पालने लगी। उसकी रीझ-बूझ, बाल हठ और लाड़-प्यार पर भी पूर्णरूप से ध्यान देती रही। ६५ महीने अर्थात् पांच वर्ष और पांच महीने इसी प्रकार बीत गए और बालक बोलने और चलने-फिरने लग गया। परन्तु दुर्दैव से यह भी देखा नहीं गया। एक दिन चुनिया कोरार में गई, वहां एक विषधर सर्प ने उसे डस दिया और वह बात की बात में स्वर्ग को सिधार गई। द्विज-बालक सचमुच अनाथावस्था को प्राप्त होगया। अब कोई भी उसे पूछनेवाला नहीं रह गया। ग्रामवासियों ने एक नाई के द्वारा चुनिया दासी की आकस्मिक मृत्यु का समाचार राजगुरु से कहला भेजा और बालक को अपने पास बुलालेने की प्रार्थना की। दयाहीन, वज्रहृदय, नृशंस पिता ने कोरा जवाब दे दिया। उन्होंने कहा—"हम ऐसे बालक को लेकर क्या करेंगे जो अपने पालन-पोषण-कर्त्ता का ही नाश कर देता है।" पिता के इस तिरस्कार का प्रभाव हरिपुर ग्रामवासियों पर ऐसा पड़ा कि बालक के प्रति उनके हृदय में रही-सही सहानुभूति भी जाती रही। इस पर चरित्रकार कहते हैं:—

"बेणी पूरब जनम कर करम-विपाक प्रचंड।
बिना भोगाये टरत नहिं यह सिद्धान्त अखंड॥
छं०—सिद्धान्त अटल अखंड भरि ब्रह्मंड व्यापित सत यथा।
जहँ मुनिवरन की यह दशा तहँ पामरन की का कथा॥
निज छति विचारि न राख कोऊ दया दृग पाछे दियो।
डोलत सो बालक द्वार-द्वार विलोकि तेहि विहरत हियो॥"

(मू० गो० च०)

अर्थात् पूर्व जन्मार्जित कर्मों के बन्धन से बिना भोगे छुट्टी नहीं मिलती। यह अखण्ड सिद्धान्त सत्य की तरह ब्रह्माण्ड भर में व्याप रहा है। बड़े-बड़े मुनियों की जब यह दशा है तब

पामर जीवों की कौन चर्चा ! गीता में भगवान् ने कहाहै कि "गहना कर्मणो गतिः"—तात्पर्य्य यह कि कर्म की गति कठिन है; इतना ही नहीं किन्तु कर्म का बन्धन भी बड़ा कठिन है। कर्म किसी से भी नहीं छूट सकता। वायु कर्म से ही चलती है, सूर्य चन्द्रादिक कर्म से ही घूमा करते हैं और ब्रह्मादि सगुण देवता भी कर्मों में ही बँधे हुए हैं। इन्द्र आदि का क्या पूछना है।

जान पड़ता है कि यह महर्षि वाल्मीकि के जीवन की आद्यवस्था पर लक्ष्य करके लिखा गया है जब वे द्विजकुल में उत्पन्न होनेपर भी शूद्रा से प्रीति करके बटपारी किया करते थे और सप्तर्षिके उपदेश से उन्होंने एक बारगी पत्नी-परिवार को त्याग दिया था। क्योंकि महाभारत में लिखा है:—

येषां ये यानि कर्माणि प्राक्सृष्ट्यां प्रतिपेदिरे।
तान्येव प्रतिपद्यन्ते सृज्यमानाः पुनः पुनः॥

(म.भा. शां. २३१. ४८-४९)

अर्थात् 'पूर्व की सृष्टि में प्रत्येक प्राणी ने जो-जो कर्म किये होंगे, ठीक वेही कर्म उस (चाहे इच्छा हो या न हो) फिर फिर यथापूर्व प्राप्त होते रहते हैं।"

संसार में पिता-माता से बढ़कर बालक का रक्षक कोई नहीं है। माता तो पहिले ही चल बसी थी। रहे पिता, सो उन्हों ने मिथ्या लाञ्छन लगाकर अपने उचित कर्त्तव्य के पालन से भी इनकार कर दिया। अब भला कौन उसे अपनावे ? यह बात नहीं कि ग्राम-वासियों को उसकी दशा पर दया न आती हो ! आती जरूर थी, परन्तु अपने हित की हानि विचार कर वे दयाभाव से अपना मुँह फेर लेते थे। उसे अपने घर आश्रय देने का साहस नहीं करते थे; क्योंकि यह बात उनके मन में बैठ गई थी कि जो उससे संसर्ग रक्खेगा उसका सर्वनाश होजायगा। अस्तु, वह अनाथ बालक कभी इस द्वार पर, कभी उस द्वार पर भटकता फिरता था। कभी कोई कुछ देदेता तो लेकर खालेता*।

बालक की दीन दशा देखकर जगज्जननी गौरीजी को दया लगी। वे ब्राह्मणी का रूप धारण कर नित्य आतीं और उसे पवाकर चलीजातीं†। इस तरह दो वर्ष और बीते। अब कतिपय ग्राम-वासियों की दृष्टि उस ब्राह्मणी पर आकर्षित हुई। लोग पता लगाने लगे, परन्तु बहुत चेष्टा करने पर भी वे उसका परिचय न पासके। सुतराम् एक चार-नारी (गुप्त बातों का पता लगाने वाली दूती) कई दिनों से ताक में लगी हुई थी, उसे परख रही थी। ज्यों ही माता बालक को खिला-पिला कर जाने लगीं त्योंही वह वहाँ पहुँची और देवी के चरणों में लिपट गई और परिचय पूछने लगी। उसने बहुत हठ किया, देवी को जाने ही नहीं देती थी। तब जगदम्बा अदृश्य होगईं। इस चरित्र से ग्रामवासियों के भाव बदले। वे समझ गए कि दीन जनों की सुध दीनबन्धु परमात्मा अवश्य लेते हैं।

---

* अपनी हीनता दिखाने के लिये गोस्वामीजी ने जो कहीं कहीं आत्म-चरित्र का उल्लेख किया है उसमें इस दशा का स्पष्ट वर्णन है, यथाः—

"बारे ते ललात बिललात द्वार द्वार दीन जानत हौं चारि फल चारिये चनक को।"

† गुरु-पितु-मातु महेश-भवानी। प्रणवौं दीनबन्धु दिन-दानी॥

"दीनबन्धु बिनु दीन की को रहीम सुधि लेइ ।"

उपनयन-संस्कार और मंत्रोपदेश, शूकर-खेत सत्सङ्ग।

दिव्य ब्राह्मणी का आना-जाना उसी दिन से बन्द होगया। तब भगवान् शङ्कर ने अपनी प्रिया की रुचि जानकर द्विज-बालक के कल्याण के लिए मानव-जन-सुलभ लौकिक व्यवस्था करदी। चित्रकूट में स्वामी अनन्तानन्दजी के प्रिय शिष्य स्वामी नरहर्य्यानन्दजी, ※ कुटी

※ श्रीनरहर्य्यानन्दजी श्रीअनन्तानन्द स्वामी के एक सुयोग्य और प्रिय शिष्य थे, जैसा श्रीगोसाईं-चरितकार बाबा वेणीमाधवदासजी लिखते हैं— "प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते। नरहर्य्यानन्द सुनाम छते॥" यही नरहर्य्यानन्दजी जिनको नरहरिदास भी कहते हैं गोस्वामी तुलसीदासजी के गुरु थे तथा उनके दादा गुरु श्रीअनन्तानन्दजी श्रीमद्यतीन्द्र रामानन्द स्वामी के द्वादश शिष्यों में मुख्य थे। बाबा वेणीमाधवदासजी की लिखी परम्पराकी पुष्टि नाभास्वामी भी करते हैं, यथा—"योगानन्द गणेश करमचन्द अल्हू पैहारी। सारी रामदास श्रीरङ्ग अवधि गुण महिमा भारी॥ तिनके नरहरि उदित मुदित महामङ्गल तन। रघुवर यदुवर गाय विमल कीरति सञ्च्यो धन॥ हरिभक्ति सिन्धु वेला रचे पानिपद्मक सिर दिये। अनन्तानन्द पद परसि के लोकपाल से ते भये॥" अर्थात् श्रीनरहरिदासजी श्रीअनन्तानन्दजी के अष्ट शिष्यों में से थे। "रघुवर-यदुवर गाय विमल कीरति सञ्च्यो धन" से स्पष्ट है कि वे श्रीराम कृष्ण की कथा कहने के लिए प्रसिद्ध थे। रघुवर-यदुवर का यशोगान करके विमल कीर्त्ति-रूप धन का सञ्चय किया। "विमल कीरति" का "रघुवर-यदुवर" एवम् "सञ्च्यो धन" इन दोनों पदों में देहली-दीपकन्याय के अनुसार अन्वय होगा। वह इस तरह कि "रघुवर-यदुवर विमल कीरति गाय विमल कीरति धन सञ्च्यो।" ऐसी पदयोजना न करने से पुनरुक्ति अथवा कथित पद दोष के आजाने का भय था। अस्तु। श्रीनरहरिदासजी के प्रसिद्ध तथा यशस्वी कथा वाचक होने की ध्वनि गोस्वामीजी की इस उक्ति से भी निकलती है—"मैं पुनि-निज गुरुसन सुनी कथा सुसूकर खेत।"

गोस्वामीजी की इस प्रकार स्पष्ट गुरु-परम्परा लिखने वाले ये दोनों लब्धप्रतिष्ठ महात्मा बाबा वेणी-माधवदासजी एवम् श्रीनाभास्वामी उनके समसामयिक थे। अतः उनका गोस्वामीजी के सम्बन्ध में कुछ लिखना परम प्रामाणिक एवम् सर्व्वमान्य है। बाबा वेणीमाधवदासजी तो गोस्वामीजी के बराबर साथ ही रहे हैं और निम्नस्थ परम्परानुसार नाभास्वामी गोस्वामीजी के भतीजे चेले थे। अस्तु; उनकी निर्दिष्ट गोस्वामिपाद-सम्बन्धिनी गुरु-परम्परा असंदिग्ध, निर्विवाद अत एव ग्राह्य है। श्रीअयोध्याजी के प्रसिद्ध रामायणी बाबा रामबालकदासजीने अपने सम्पादित श्रीरामचरितमानस में भी यही परम्परा दी है।
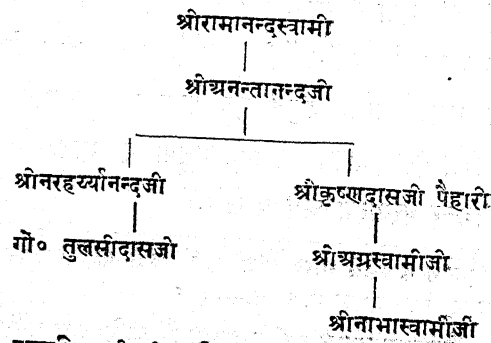
गोस्वामीजी की कोई प्रामाणिक जीवनी न मिलने से उनकें जीवनकी अनेक घटनाओं एवम् गुरु-

बनाकर रहते थे। वे भगवत् के अनन्यभक्त थे और सदा तल्लीनदशा में प्राप्त रहते थे। वे श्रीहरिके परम प्रिय थे। भगवान् ने उन्हें साक्षात् दर्शन देकर कृतार्थ किया और श्रीरामचरितमानस उन्हें सुनाकर कहा—"यहां से थोड़ी दूर पर हरिपुर ग्राम में एक अनाथ द्विज-बालक है। वह वास्तव में महर्षि वाल्मीकि का अवतार है। उसकी रक्षा, शिक्षा और दीक्षा के लिए मैंने तुम्हें उपयुक्त पात्र समझा है। अतः तुम अभी वहां जाव और उसे लेकर श्रीअवध चले जाव। वहां उसे विधिपूर्वक श्रीराममन्त्रराज का उपदेश करके मम निर्मित श्रीरामचरितमानस, जिसे अभी मैंने तुम्हें सुना-समझा दिया है, उसे बार-बार सुनाओ और समझावो, अच्छी तरह से उसकी बुद्धि और मन में जमा दो। सयाने होने पर जब उसकी हृदयकी आंखें खुलेंगी तब वह उसे विस्तारपूर्वक वर्णन करेगा। बालकपन में जो संस्कार पड़ जाता है वह आजन्म बना रहता है। लड़कपन में जो तैरना सीख लेता है, उत्तर जीवन में अवसर पड़ने पर उसको उससे बड़ी सहायता मिलती है।" इस प्रकार उपदेश देकर भगवान् भूतनाथ अन्तर्हित होगए।

भगवान् शङ्कर के गम्भीर वचन को सुनकर स्वामी नरहर्य्यानन्द प्रफुल्लित होगए। अपने इष्टदेव श्रीरामचन्द्रजी का स्मरण करके वे उसी समय हरिपुर के लिए रवाना हुए। वहां पहुँचकर उन्होंने द्विज-पुत्रका पता लगाया। उसे पाकर और अपनी गोद में बैठाकर उस अनाथ-बालक को सनाथ कर दिया। उन्हों ने कहा—"राम बोला! ※ तू सोच मत कर। भगवान् सब भांति से तेरा पालन-पोषण करेंगे।" अनन्तर उन्हों ने ग्रामवासियों से सम्मति लेकर बालकसहित वहां से प्रस्थान किया। कुछ दिनों में वे अयोध्यापुरी में पहुँचगए। उपयुक्त स्थानपर टिक कर उन्होंने पुरी की गलियों में भ्रमण किया अर्थात् अन्तर्गृह की परिक्रमा की। तत्पश्चात् माघसुदी ५ (वसन्त पञ्चमी) सं० १५६१ शुक्रवार को सरयू-तट पर उपनयन यज्ञ कराकर विप्रकुमार को यज्ञोपवीत प्रदान किया। जब आचार्य्य ने गायत्री मंत्र का उपदेश किया तब उपनीत बालकने विना सिखे-सिखाये सावित्री मंत्र का उच्चारण आपसे आप ऐसी शुद्धता से किया कि सब पण्डित विस्मित

परम्परा के सम्बन्ध में बहुत भ्रम फैल गया है। डाक्टर ग्रियर्सन ने भी उनकी गुरु-परम्परा दी है। उन्हें दो परम्पराएँ मिली हैं। दोनों प्रायः मिलती-जुलती हैं। उनमें कोई विशेष अन्तर नहीं। पटने में जो मिली है उसमें रामानुजस्वामी के पूर्व की परम्परा नहीं है। दूसरी पूरी है। उनमें नामों में कुछ अन्तर है एवम् पटनेवाली में कोई कोई नाम नहीं हैं। परन्तु उनमें रामानुजस्वामी के बाद (उनका शिष्य) शठकोप स्वामी को लिखा है जो सर्वथा अशुद्ध और विरुद्ध है रामानुजी परम्परा के अनुसार पहले शठ-कोपजी, पीछे उनकी सातवीं पीढ़ी में रामानुजस्वामी हुए हैं। इसी प्रकार श्रीरामानन्द सम्प्रदाय से भी वे सर्वथा भिन्न हैं। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित श्रीरामचरितमानस की भूमिका में इन परम्पराओं का खण्डन कर दिया गया है।

※ राम को गुलाम, नाम "रामबोला" राख्यौ राम काम यहै नाम द्वै हौं कबहूं कहत हौं।
बूझ्यो ज्योंही, कह्यो मैं हूँ चेरो ह्वै हौ रावरोजू मेरो कोऊ कहूँ नाहिं, चरन गहत हौं॥ मींजो गुरु
पीठ अपनाइ गहि बाँह बोलि सेवक-सुखद सदा विरद बहत हौं।

(विनयपत्रिका)

और चकित होगये। वे कह पड़े—"देखने ही में यह बालक अज्ञान मालूम होता है; परन्तु वास्तव में यह बड़ा ही विज्ञ और पूर्व जन्म के दिव्य संस्कारों से भूषित प्रतीत होता है।" तत्पश्चात् स्वामीजी ने वैष्णवोचित पञ्च संस्कार करके उसे श्रीराममंत्रराज का उपदेश दिया जिसे पाकर मनुष्य जन्म-मरण के चक्र से छूट कर मुक्त होजाता है।

वहां श्रीहनुमान्टीले पर स्वामीजी दश महीने रहे। अपने शिष्य को विद्या पढ़ाते रहे, अष्टाध्यायी कण्ठ कराते रहे। उस लघु बालक की धारणा-शक्ति जागृत हुई, भक्ति सहित अनुरक्ति की छटा दिखाने लगी। इन दिव्य गुणों का विकास देखकर मुनिराज बहुत प्रसन्न हुए और चरणसेवा करते समय शिष्य को उन्होंने बहुत आशीर्वाद दिए। उस समय शिष्य ने दिल खोल कर जन्म से लेकर अब तक की अपनी करुण-कथा गुरुवर से कह सुनाई। उसे सुन कर वे आश्चर्य्य-चकित होगए। क्योंकि अत्यन्त अज्ञानावस्था की घटनाओं को स्मरण रखना उस नन्हें बालक के लिए अभूतपूर्व बात थी। करुणारसने उनके विशाल हृदय को व्यथित कर दिया। धीर मुनि के नेत्र अश्रुपूर्ण होगये। गुरु-शिष्यकी, उस समय की, दशा का वर्णन कौन कवि कर सकता है? गुरु ने शिष्य को हृदय से लगाया, बहुत समझा-बुझाकर, भावी कल्याण की बात बताकर उसे शान्ति प्रदान किया।

अनन्तर हेमन्त ऋतु के लगते ही स्वामीजी शिष्य सहित वहां से चलपड़े और मार्गमें कथा-पुराण कहते हुए सरयू-घाघरा के संगम पर शूकर-खेत (वाराहक्षेत्र) में पहुँचे। वहाँ पौष भर कल्पवास होता है और पौर्णमासी को नहान लगता है। वहाँ आप पाँच वर्ष तक जप-तप में संलग्न रहे और शिष्य को शिक्षा भी देते रहे। जब उसको कुछ-कुछ बोध हुआ और उसकी बुद्धि युक्तिवाद में प्रवीणता को पहुँची तब आपको भगवान् शङ्कर का निदेश स्मरण आया। आपने तुरंत "श्रीरामचरितमानस" स्वशिष्य को सुनाना आरम्भ कर दिया। उसके श्रवण से बालक को तत्त्वज्ञान का बोध होने लगा। आपने उस चरित्र को अनेक बार आद्योपान्त सुनाया, उसके तात्पर्य्य को, गूढ़ रहस्य को अच्छी तरह समझाया।*

इस प्रकार भली भांति प्रबोध करके पर्वयोग लगने पर आप शिष्य समेत काशीजी गए रास्ते में कई जगह टिकना पड़ा था क्योंकि अन्न जल बड़ा प्रबल होता है। कहीं पुण्यात्मा जनों को उपदेश देते, और कहीं दीन जनों का दुःख दूर करते थे। अस्तु, प्रसन्न मन से विचरते हुए आप काशीपुरी में पहुँच गए। वहाँ अपने परम गुरु (श्री १००८ स्वामी रामानन्दजी) के शुभ स्थान पर आसन जमाया।

शिक्षा।

काशीपुरी में पञ्चगंगाघाट बड़ा मनोहर है। वह भगवती भागीरथी का केलिकुञ्ज है। सिद्धपृष्ठों में प्रतिष्ठित है। वहाँ यतीन्द्र श्रीस्वामी रामानन्दजी ने बहुत दिनों तक निवास

* "मैं पुनि निज गुरुसन सुनी कथा सो शूकर खेत। समुझी नहिं तसि बालपन तब अति रहेउं अचेत॥
तदपि कही गुरु बारहिं बारा। समुझि परी कछु बुधि अनुसारा॥

किया है। अतएव उसे बारम्बार नमस्कार है। उसी सुरम्य घाट पर महात्मा शेष-सनातनजी रहते थे। उनका शरीर तो वृद्ध था किन्तु उनका मन तरुण था। वे निगम-आगम के अद्वितीय ज्ञाता थे। उनके मुखचन्द्र से ज्योति की किरणें निकलती थीं। वे अपनी सिद्धाई और तपस्या के लिए सभी श्रेणी के लोगों में प्रसिद्ध थे। उन्हों ने हमारे चरितनायक बाल-ब्रह्मचारी के सुन्दर सरल स्वभाव पर मुग्ध होकर अपनी सम्पूर्ण विद्याओं का एक मात्र अधिकारी और सुयोग्य पात्र उन्हीं को ठहराया। उन्हों ने श्रीस्वामी नरहर्य्यानन्दजी से क्या ही अच्छी बात कही। वे बोले—"हे मुनिराज! आप अपने शिष्य को कृपा-पूर्वक मुझे दीजिए। उसकी वृत्ति सांसारिक नहीं है किन्तु धुनि-ध्यान में संलग्न रहनेवाली है। मैं उसको चारों वेद और षट् शास्त्र पढ़ाऊँगा। तंत्र की शिक्षा दूंगा। इतिहास-पुराण, काव्य-शास्त्र और अपना अनुभव किया हुआ दुर्लभ प्रतीकों (उपासना एवं योग के ध्येय स्वरूप) का फल, सब सिखला दूंगा। इस प्रकार मैं उसे ऐसा प्रकाण्ड विद्वान् बना दूंगा कि आप भी उसका यशोगान सुनकर प्रसन्न होंगे।"

आचार्य्य की हितैषिता से पूर्ण विनय को सुनकर मुनिराज प्रफुल्लित होगए और उसी समय पवित्र गङ्गा तट पर उस ब्रह्मचारी को बुलाकर उन्हें सौंप दिया। इसके बाद कुछ दिनों तक आप वहाँ विराजते रहे। प्रिय शिष्य के पठन-पाठन पर दृष्टि रखते रहे। जब वह भाष्य पढ़ने लगा, उसका चित्त अध्ययन में खूब लगने लगा और सब तरह से सुपास होने से जब उसके सम्बन्ध में किसी बात की चिन्ता नहीं रहगई तब मुनिराज चित्रकूट को चले गए।

हमारे बाल-ब्रह्मचारीजी वहाँ पन्द्रह वर्ष तक अध्ययन करते रहे। उन्हों ने सम्पूर्ण शास्त्रों के तत्त्व को अच्छी तरह मन्थन किया और उनके सार-सिद्धान्त को ग्रहण किया। विद्यागुरु की सेवा भी सदा तन-मन से करते रहे और उनके शरीरपात पर उनकी अन्त्येष्टि क्रिया भी शुद्ध मन से करके आचार्य्य-ऋण से निवृत्त हुए।

गुरु के तिरोधान के पश्चात् उनका मन विषाद से पूर्ण होगया। वहाँ से उनका जी उचट गया। तब मन-बहलाव के लिए वे अपनी जन्म-भूमि को चल पड़े।

विवाह

कुछ दिनों में रमते-घूमते वे राजापुर में पहुँच गए। वहाँ उन्हों ने अपने भवन को देखा। वह गिर गया था, केवल चिह्न मात्र कुछ भग्नावशिष्ट अंश उसका बचगया था। साथ ही वहाँ उनका प्रेमपूर्वक स्वागत करनेवाला कोई व्यक्ति भी नहीं था। तात्पर्य्य यह कि परिवार का नाश होगया था। हाँ, एक भाट से भेंट हुई। उसने ग्राम की वार्ता कह सुनाई और यह भी बताया कि विप्रवंश का विनाश किस प्रकार हुआ। उसने कहा—"जिस दिन आपके पिता राजगुरु ने हरिपुर के नाई से आप के सम्बन्ध में तिरस्कार युक्त वचन कहा उसी दिन से उनके कुलपर विपत्ति आन पड़ी। उस समय वहाँ पर कोई तेजस्वी तपस्वी बैठा हुआ था। उससे

नहीं सुनागया। उसने घोर शाप दे दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि छः महीने के भीतर ही भीतर राजगुरु स्वर्गवासी होगये और दस वर्ष के भीतर समस्त कुल का नाश होगया।"

इस वार्त्ता को सुनकर हमारे चरितनायक कुछ देरतक शोकमग्न होगये। अनन्तर उन्हों ने विधिपूर्व्वक श्राद्ध किया पिण्डदान दिया। ग्रामवासियों के अनुरोध से उन्होंने मकान भी बनवा लिया। उसीमें रहने लगे और नित्य श्रीमद्रामायण की कथा बाँचने लगे।

यमुनाजी के उसपार तारिपतो नामक ग्राम में भरद्वाज गोत्रीय एक सरयूपारी ब्राह्मण रहते थे। वे कार्त्तिक शु० द्वितीया (यमद्वितीया) के पर्व पर सकुटुम्ब स्नान करने आये। स्नान-दान से निवृत्त होकर वे उस स्थान पर गए जहां हुलसी-सुत पं० तुलसीदासजी कथा कहते थे। वे व्यासजी को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उनके विषय में लोगों से पूछ-पांछ करके अपने घर चलगये। फिर वे वैशाख में वहाँ आये और हाथ जोड़कर इस प्रकार सुन्दर वचन कहने लगेः— " गत महारात्रि के अन्तिम भाग में जगदम्बा ने मुझे स्वप्न में सचेत करके आपका शुभ नाम और ठाम बतलाया और आज्ञा की कि आप ही को अपनी कन्या अर्पण करूं। अस्तु, मैं ढूँढ़ता और पता लगाता हुआ यहाँ पहुँचा। सो अब देवीजी की आज्ञा-नुसार मेरी कन्या को अपनी किंकरी बनाइए। अर्थात् उससे विवाह कर लीजिये और मुझे इस संसार में रख लीजिये। क्योंकि यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो देवी के कोप से मेरा सर्वनाश होजायगा। अब मैं श्रीचरण को छोड़ कर कहीं जाही नहीं सकता।"

विप्र के वचन को सुनकर पण्डितजी विचार में मग्न होगए। कुछ देर बाद सङ्कोच सहित बोले—" मुझे विवाह करने की इच्छा नहीं है, आप किसी अन्य स्थान पर पधारें।" परन्तु उस ब्राह्मण ने नहीं माना और धरना पड़ा। दूसरे दिन जब उन्हों ने विवाह करना स्वीकार कर लिया तब उसने अन्न-जल ग्रहण किया।

उसने अपने घर जाकर ज्योतिषी से लग्न ठहराकर अपने उपरोहित द्वारा उसकी सूचना भेजदी। इधर ग्रामवासियों ने बरात की सब तैयारी करदी और ज्येष्ठ सुदी १३ सं० १५८३ गुरुवार को अर्द्धरात्रि के समय भाँवरी फेरी गईं। अनन्तर कोहवर में स्त्रियों ने मिलकर विद्वान्-दूल्हा को हास्य-परिहास में हरा दिया। तीसरे दिन माड़ो (मण्डप) का विधि-विधान सम्पन्न हुआ। विप्र ने श्रद्धा-भक्तिपूर्वक दान-दहेज देकर संतुष्ट किया। दुलही को बिदा कराकर महान् पण्डितराज घर लौटे और विवाहोत्तर विधि-व्यवहार को सम्पन्न किये।

पुर की स्त्रियां गुरुगृह में जाकर और दुलही के मुख को देखकर निहाल होगईं। सोहाग की रात में पण्डितराज ने जब घूँघट हटाकर उस चन्द्रवदनी का मुख देखा तब जिस प्रकार मेनका को देखकर महर्षि विश्वामित्र की दशा हुई थी उसी तरह उनकी भी हुई। उन्हों ने प्राण-प्रिया के ऊपर अपना मन न्यवछावर कर दिया। दिन रात उसी रंग में रँगे रहते। विषय-सुख का उपभोग करते, पर तृप्ति नहीं होती। इस प्रकार पांच वर्ष काम-सुख-भोग-विलास में एक पल के समान बीत गए। अपनी भार्य्या पर उनकी आसक्ति इतनी बढ़ी-चढ़ी हुई थी कि वे उसे

आँख की ओट नहीं होने देते थे। न स्वयम् कहीं जाते थे और न उसे कहीं जाने देते थे। प्रिया के विना उन्हें एक पल भी चैन नहीं।

विराग

कईबार उसके मैहर से बुलावा आया परन्तु उन्हों ने बिदा नहीं की। एक दिन उसका भाई आया और यह समाचार लाया कि उसकी माता बहुत रुग्न है। एक बार देख-देखा लेना चाहती है। इस समाचार का प्रभाव उसके अन्तःकरण पर बहुत पड़ा। माता के प्रेम ने पति-व्रता को पति से दुराव करने के लिये आतुर किया। संयोग से उस दिन पण्डितजी अत्यन्त आवश्यक कार्य से बरखासन ग्राम को गए हुए थे। अस्तु, माता का मुख देखने और सखियों-सहेलियों से मिलने की इच्छा से सती विना पति की आज्ञा लिये अपने भाई के साथ मैहर चली गई। सन्ध्या समय जब पण्डितजी घर आये तब उसे सूना पाकर बहुत दुःखी हुए। पूछने पर दासी ने कहा—"अपने भाई के सङ्ग मैके गई हैं।" इस बात को सुनकर वे उठकर श्वशुरालय को चल पड़े। घोर आसक्ति की गोद में उनका मन-रूपी-शिशु सविशेष लाड़-प्यार से पला था। वे एक क्षण के लिये भी रुक नहीं सकते थे। किसी तरह वे नदी को पार करके कई कोस पैदल चलकर ससुराल पहुँचे। आधीरात होचुकी थी। सब लोग कपाट बन्द करके तरुण-निद्रा में सोये हुए थे। बहुत पुकारने पर सती सगबगाकर उठी और स्वर पहचानकर उसने द्वार-पट खोल दिया। उस कामिनी ने विमल उपदेश पूर्ण वचन हँसकर कहा—"नाथ! आप कैसे प्रेमान्ध की तरह चल पड़े, अन्धेरी रात का भी ख़्याल आपको नहीं हुआ! हा! जिस शरीर पर मुग्ध होकर आपने इतना कष्ट उठाया वह हाड़-मांस का ही पुतला है। इस नश्वर शरीर पर आपकी जितनी प्रीति है यदि उसकी आधी भी श्रीराम में होती तो इस संसार के बन्धन से अवश्य छूट जाते।"

ये वचन गुसाईंजी के हृदय में बाण की तरह चुभ गए। वे उसी समय लौट पड़े, एक क्षण के लिये भी नहीं रुके। उन्हें अपने सच्चे कल्याण की बात सूझ गई और गुरुका सार-गर्भित अमृतोपम उपदेश चित्त पर चढ़ गया। वह उपदेश यह है:—

'नरहरि' कंचन कामिनी, रहिये इनते दूर।
जो चाहिय कल्याण निज, राम दरस भरपूर॥

पति के रुख को देखकर सती कोप-गर्भित वचन बोली—"पाणिगृहीता भार्य्या का त्याग किसी प्रकार भी उचित नहीं है। स्त्री के मुख में खरिया पोतकर ही ऐसा कर सकते हैं।

गुसाईंजी का साला दौड़कर पीछे पीछे गया। जब सबेरा हुआ और बहुत अनुनय-विनय करने पर भी वे नहीं लौटे तब वह निराश होकर घर लौट आया। यहाँ उसने देखा कि उसकी प्यारी बहन मूर्च्छित पड़ी है। कुछ देरतक उपचार करने पर उसकी मूर्च्छा भङ्ग हुई। सती बोली—"प्रियतम को सन्मार्ग का उपदेश देने के लिये आई हुई थी। सो प्रियतम तो वनको

चले गए, अब मैं क्या करूँ ? अब मैं इस शरीर को त्याग कर प्राण को प्राण-प्यारे के पास भेज-दूंगी ।'' यह कहकर सती ने शरीर त्याग दिया वह पतिव्रताओं में श्रेष्ठ पति-भक्ति की ध्वजा फह-राती हुई स्वर्ग को गई । संवत् पन्द्रह सौ नवासी १५८९ में आषाढ बदी १० (तदुपरान्त एकादशी) बुधवार को यह प्रसिद्ध घटना घटित हुई । वह घड़ी धन्य है, वह मुहूर्त्त धन्य है और वह संवत्सर, मास, तिथि एवं दिन धन्य है, इस बात की ख्याति सर्वत्र होगई । सब लोग इस घटना पर विचार करने लगे । किसी परमार्थवादी तत्त्वज्ञानी सिद्ध ने इसपर विचार करके कहा–''स्वयम् शारदाजी ने विप्रकुल में जन्म लिया था । उन्हों ने अपने अपार सौन्दर्य्य और दिव्य गुणों से पति की चित्तवृत्ति को एकाग्र करके उसे अपने में पूर्ण-रूप से आसक्त कर लिया था और प्रेम की पराकाष्ठा तक पहुँचा कर उसे अपने अपूर्व उपदेश से राग-रहित करके भगवत् के अनुराग में पुष्ट कर दिया । अपना काम करके वे दिव्य लोक को चली गई ।'' इसी तरह एक दूसरे सन्त ने कहा–' उस स्त्री के मुख से आपरूप भगवान् ने वे उपदेश पूर्ण वचन कहे थे । उस शीलनिधान प्रभु ने ऐसा करके अपने प्यारे भक्त का मोह निवारण किया।''

तीर्थाटन

गुसाईंजी सब से पहले तीर्थराज प्रयाग में गए । वहाँ त्रिवेणी में स्नान करके उन्होंने अपने को कृतार्थ माना । वहीं उन्होंने गृहस्थ वेष का विसर्जन करके मुनिवेष धारण किया । वहाँ से चलकर फफहागढ़ होते हुए गोमती और तमसा को पार करके वे श्रीरघुनन्दन की पुरी अयोध्याजी में आये । चातुर्मास्य (आषाढ़ शु० ११ से कार्त्तिक शु० ११ तक) सन्त-भगवन्त की सेवा में वहीं बिताया । वहाँ से प्रसिद्ध महाधाम जगन्नाथ पुरी को चले और कम से कम पचीस जगह टिकते-टिकाते पुरी में पहुँचे । उन पचीसों विश्राम-स्थलों में दो प्रधान हैं । क्योंकि एक जगह उन्हों ने एक व्यक्ति को शाप और दूसरी जगह दूसरे व्यक्ति को वर दिया था । दुबौली में हरिराम नामक विप्रकुमार को शाप देदिया था * । परिणाम-

---

* ''वह खेलता कुएँ पर हमजोलियों के साथ । सब को चपत जमाता सब जोड़ते हैं हाथ ॥

*

बचपन में बालकों को खिलवाड़ प्राण है । देखा उन्हों ने बैठा इक मुनि सुजान है ॥
मुँह पर दुपट्टा डाले वह मग्न ध्यान है । सब ने चलाये ढेले जो दुष्ट बान है ॥

*

जब मुनि के मुखकमल से वह चादरा हटा । सब भग गए थे एक हरीराम था डटा ॥
मुनिनाथ यों तड़प कर बोले अरे निडर । निज दुष्टता से मुझ को सताता है ठान कर ॥

*

यह राक्षसीय कर्म है राक्षस हो तू विचर । यह घोर शाप सुनकर दौड़े सभीत नर ॥
बालक को मुनिचरण पर बरबस लेटा दिया । बहु विध विनय भी शापोनुग्रह निमित किया ॥

*

मुनिराज जिनके कोप से उनका अहित हुआ । गोस्वामि तुलसीदास थे पीछे विदित हुआ ॥

—हरिराम ब्रह्म-चरित ॥

स्वरूप वह प्रेत-योनि को प्राप्त हुआ था और उसी प्रेत की सहायता से आप को श्रीहनुमान्‌जी के दर्शन हुए थे । दूसरे प्रधानस्थान पर आपने चारुकुँवरि को वरदान दिया था जिसके प्रभाव से उसने साधु-सेवा व्रत लिया और करके दिखला दिया । *

जगन्नाथ पुरी में कुछ दिन वास करके गुसाईंजी ने श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण की एक प्रति अपने हाथ से लिखकर तैय्यार की । पश्चात् वे रामेश्वर को चले । वहाँ से द्वारकापुरी पधारे फिर बदरिकाश्रम में गये । वहाँ नारायण ऋषि और महर्षि व्यास ने दर्शन देकर मानस की बड़ी प्रशंसा की । अस्तु, गोस्वामीजी ने अत्यन्त दुर्गम मार्ग से मानस सरोवर की यात्रा की । ठीक है, जो अपने प्राण का लोभ संवरण कर सकेगा वही मानस सरोवर पर पहुँच कर कृतार्थ होसकेगा । उस परम पुनीत स्थान पर दिव्य सन्तों के भवभ्रमहारी सत्सङ्ग से लाभ उठाते हुए कुछ दिन वहां रहगए । पुनः दिव्य सहायता पाकर वे सुमेरुपर्वत पर गए । वहाँ नीलाचल के दर्शन किए और परम सुजान काकभुशुण्डि से सुपरिचित हुए फिर वहाँ से मानस सरोवर पर लौट आये और कैलासजी की परिक्रमा की ।

इस प्रकार चौदह वर्ष, दस महीने और सत्तरह दिन में तीर्थाटन करके वे भववन में आकर रहे । चातुर्मास्य वहीं समाप्त किया । वहाँ बड़े उत्साह से श्रीमद्रामायण की कथा कहते थे और वनवासी सन्त आकर प्रेमपूर्वक उसे सुनते थे । उस वन में एक पिप्पल का वृक्ष था । उस पर एक प्रेत रहता था । गोस्वामीजी शौच के शेष जल को उसी वृक्ष के नीचे डाल दिया करते थे और उस प्रेत की प्यास उससे शान्त होती थी । उस प्रेत ने पहचान लिया कि जिस मुनि के शाप से वह उस योनि को प्राप्त हुआ था वे महात्मा यही हैं । अस्तु एक दिन उसने प्रत्यक्ष प्रकट होकर कहा–"आज्ञा कीजिए सेवा योग्य कार्य बतलाइए, मैं उसे करने को तैयार हूँ ।" तब गुसाईंजी ने कहा–"मेरे मन में तो एक मात्र श्रीराम-दर्शन की ही लालसा है, और मैं कुछ नहीं चाहता ।" यह सुनकर उस प्रेत ने कहा–"भगवान् मारुतनन्दन नित्य कोढ़ी के रूप में आपकी कथा सुनने आते हैं । सबसे पहले आते हैं और सबसे पीछे जाते हैं । सुअवसर विचार कर आप उनके चरण पकड़ लीजिए। और प्रेम पूर्ण हठसे उन्हें रिझाइये, बस काम बन जायगा"। गुसाईंजी ने ऐसा ही किया । अनेक प्रकार से विनय-प्रार्थना की और चरण पकड़कर पड़गए । भगवान् आञ्जनेय ने कहा– 'कहो, तुम क्या चाहते हो ?" गोस्वामीजी बोले–' श्रीरघुनाथजी का दर्शन करा दीजिए । यही मेरी इच्छा है"। श्रीपवनकुमार ने यह सुनकर गद्गद कण्ठ से कहा– 'तुम चित्रकूट में जाकर भजन करो, वहाँ तुम्हें प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त होगा ।"

---

* चेंकुल ग्राम में चारुकुँवरि नामक एक विधवा ब्राह्मणी रहती थी । वह वृद्धा और दरिद्रा थी । परन्तु उसका चित्त उदार था । वह भीख मांग कर और चरखा कातकर अपना निर्वाह करती और अतिथि-सत्कार भो करती थी । गोस्वामीजी भी उसके अतिथि हुए थे और उसके सात्विक अन्न की बड़ी प्रशंसा की थी । उसके दुःख पर दया करके आपने उसे यह वर दे दिया कि "जिस वस्तु पर तू अपना हाथ रखदेगी वह ख़र्च होने पर भी ज्यों की त्यों बनी रहेगी ।" (धरणीधर चरितावली)

श्रीहनुमन्त प्रसंग यह, विमल चरित विस्तार।
लहेउ गोसाईं दरस रस, विदित सकल संसार॥

अनन्तर "अब चित चेति चित्रकूटहिं चलु" "सब सोच विमोचन चित्रकूट" आदि पदों में तत्कालीन अवस्था का वर्णन करते हुए गोस्वामीजी श्रीचित्रकूट के लिए चले। मार्ग में जाते हुए जब जब उन्हें निज कृत मन्द कर्मों का स्मरण आता था तब तब पैर पीछे हट जाते थे और धैर्य छूट जाता था। परन्तु साथ ही जब श्रीरामचन्द्रजी के सुन्दर शील स्वभाव की याद आती तब दर्शन के लिए आतुर हो मार्ग में दौड़ने लगते थे। इस प्रकार गुसांईजी वहाँ पहुँचे। उन्हों ने श्रीरामघाट पर आसन जमाया। कुछ समय तक वहाँ निवास करने के उपरान्त एक दिन गोस्वामीजी परिक्रमा करने गये। वहाँ उन्हों ने देखा कि दो अत्यन्त सुन्दर राजकुमार घोड़े पर सवार मृगया के लिए वन में चले जारहे हैं। अतुलित छवि देखकर उनका मन मुग्ध होगया। परन्तु उन्हों ने यह नहीं जाना कि वे कौन हैं। पीछे श्रीहनुमन्त ने भेद बताया। सुनकर बहुत पछताये और पुनर्वार दर्शन के लिए बहुत लालायित हुए। श्रीपवनकुमार ने उन्हें यह कहकर विश्वास दिलाया और धीरज बँधाया कि "प्रातःकाल फिर दर्शन होंगे।"

अस्तु संवत् १६०७ की मौनी अमावास्या को प्रातःकाल गुसाईंजी, श्रीरामघाट पर युगल राजकुमारों की प्रतीक्षा में बैठ गए। उस दिन वहाँ बड़ी भीड़ थी। पर्व लगा था। सन्त महात्माओं की प्रचुरता थी। गोस्वामीजी बड़े प्रेम से चन्दन घिस रहे थे। भक्त-वत्सल भगवान् प्रकट हुए। और बोले—"बाबाजी! मुझे भी चन्दन लगादो।" उसी समय श्रीमारुतनन्दनजी ने शुक का रूप धारण करके एक वृक्ष के ऊपर बैठकर गोस्वामीजी को चेताने के लिए, यह दोहा पढ़ाः—

"चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर।
तुलसिदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुवीर॥

गुसाईंजी इस दोहे के मर्म को समझकर अत्यन्त विह्वल होगए। सुध बुध जाती रही। चन्दन घिसना छोड़कर अपार छविको निहारते हुए तल्लीन होगए। भगवान् ने श्रीमुखवचन को फिर दुहराया:—"बाबाजी! मुझे भी चन्दन लगादो।" जब बाबाजी का ध्यान फिर भी आकर्षित नहीं हुआ तब भगवान् ने स्वयम् अपने करकमल से चन्दन होरसे पर से लेकर तिलक लगाया और उसी समय वे अन्तर्हित होगए। तब कहीं गुसांईजी को होश हुआ। विरह से कातर हो वहीं पड़ गए। आँखों के मार्ग से उस दिव्य मूर्त्ति की झाँकी हृदय में प्रतिष्ठित होचुकी थी। उसी में निमग्न होगए। रात में श्रीहनुमान्जी ने आकर जगाया, उनका समाधान किया और श्रीरामरहस्य वर्णन करके उन्हें सन्तुष्ट किया।

सर्पयोनि में प्राप्त मुनि योगश्री का उद्धार

श्रीहनुमान्जी ने शुक के रूप में जिस दोहे का उच्चारण किया था वह इतना प्रसिद्ध हुआ और लोगों ने उसे इतना पसन्द किया कि प्रायः नर-नारी हथेली पर पिंजड़ा लिए अपने अपने पालतू शुक को वही दोहा रटाने लगे। अब तक यह पाठ जारी है।

गोस्वामीजी की विमल भक्ति की महामहिमा तत्काल भूमण्डल पर फैल गई। एक दिन की बात है, गुसाईंजी श्रीकामद गिरि की परिक्रमा करते हुए श्रीलक्ष्मण पहाड़ी पर पहुँचे। तहाँ उन्हों ने मार्ग में पड़े हुए एक मनोहर श्वेत सर्प को देखा। उसे अच्छी तरह अवलोकन करने के बाद आपने कहा—"यह तो चन्द्रमा के समान् उज्ज्वल बड़ा ही सुन्दर नाग है। भगवदीय सृष्टि की विचित्रता का वर्णन कौन कर सकता है। वेद-शास्त्र शेष और शारदा इसका वर्णन किया ही करते हैं पर पार नहीं पाते।" ऋषि की दृष्टि पड़ते ही उसका पाप छूट गया और इससे प्रभावान्वित होकर वह बोला—"नाथ! मुझे स्पर्श कीजिए, ऐसा करने पर मैं अभी तर जाऊंगा। अस्तु, गुसाईंजी के स्पर्श करते ही वह नाग अदृश्य होगया और उसके बदले मुनि योगश्री प्रकट होगए। उन्हों ने अपनी पूर्व कथा सुनाकर सुख-शान्ति प्राप्त की।

सन्त समागम

इस समाचार को सुनकर और इस पर विचार कर बड़े बड़े सुजान सन्त दर्शनार्थ आने लगे और ऋषि के स्थान पर बड़ी भीड़ होने लगी। उस भीड़ को देखकर और बाहरी-भीतरी हानि विचारकर गुसाईंजी गुफा में छिप गए। मुनि, योगी, तपस्वी और यती दर्शनार्थ आते और निराश होकर चले जाते थे। एक दिन स्वामी दरियानन्दजी भी आये। उन्हें भी दर्शन नहीं प्राप्त हुआ। पर वे औरों की तरह लौट नहीं गए बल्कि वहीं टिक गए। जब गुसाईंजी लघुशङ्का के लिये बाहर निकले तब वे हाथ जोड़कर सामने खड़े होगए। और बोले—" नाथ! बड़ी अनीति होरही है। मेरे इस कटु वचन को क्षमा कीजिए। देखिये, आप लघु-शङ्का के लिये तो बाहर निकलते हैं परन्तु साधु-सन्तों को दर्शन देने के लिये बाहर निकलना आवश्यक नहीं समझते। गुफाही में छिपे रहना अच्छा समझते हैं। इस कारण सज्जनों को महान् दुःख है। अतः मेरी प्रार्थना पर ध्यान दीजिए मैं अभी मचान बनवाये देता हूँ। उसी पर दिन में आपका आसन रहे ताकि सबको दर्शन का सुख प्राप्त होता रहे।"

स्वामी दरियानन्द की प्रार्थना स्वीकार की गई। मचान बना और गुसाईंजी उस पर दिनभर बैठे रहते थे और साधक, सिद्ध, सुजान सभी श्रेणी के लोग दर्शन से लाभ उठाते रहे। सत्संग का उमङ्ग नित्य नूतन चाव से बढ़ने लगा और सन्तों के पवित्र मन पर रसात्मिका भक्तिका रंग चढ़ने लगा। साथ ही गुसाईंजी भगवत् के नित्य विहार मृगयादि को देखकर कृतार्थ होते रहे।

वृन्दावन के महात्मा श्रीहित हरिवंशजी ने अपने प्रियशिष्य श्रीनवलदासजी को गुसाईंजी की सेवा में भेजा। वे आये, दण्डवत् प्रणाम किया और निज गुरु की दी हुई पुस्तकें "श्रीयमुनाष्टक" "श्रीराधासुधानिधि," और "श्रीराधिकातंत्र" सेवा में अर्पण किये। उसके साथ संवत् १६०८ श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी की लिखी हुई एक चिट्ठी भी थी। उसमें एक प्रार्थना थी। वही बिनती श्रीनवलदासजी ने अपने मुख से दोहराई। उसका आशय यह था–'मेरे चित्त को ललचानेवाली महारास की राकारजनी (शरदूपूर्णिमा) अब आनाही चाहती है। मेरी एकान्त इच्छा है कि उसी महारास के पुण्यरस से रसावेशित होकर इस नश्वर शरीर का त्याग करूँ और श्रीकुञ्ज में प्रवेश करूँ। आपके शुभाशीष का अभिलाषी हूँ।" इस विनयपत्र को सुनकर गुसाईंजी ने "एवमस्तु" कहा और तदनुसार महात्मा श्रीहित हरिवंशजी ने शरीर त्याग कर नित्यनिकुञ्ज में प्रवेश किया।

अनन्तर श्रीस्वामी नन्दलालजी संडीले से आये और भक्तों के परम रक्षक "श्रीरामरक्षा स्तोत्र" की व्याख्या गुसाईंजी से पढ़ने लगे। छे महीने तक टिककर सत्संग से लाभ उठाते रहे। चलते समय स्मृति-चिह्न के लिए प्रार्थी हुए। गुसाईंजी ने उन्हें एक शालग्रामजी की सुन्दर मूर्ति, निज हस्तलिखित "कवच" और कम्बल देकर बिदा किया।

इसीतरह महात्मा यादवप्रकाशजी, अनन्यमाधवजी, वेणीमाधवदासजी, चित्सुखाचार्य्यजी, करुणेशजी, सदानन्दजी, तपस्वी मुरारिजी, दिगम्बर परमहंसजी, विरही भगवन्तजी, सौभाग्यवती देवीजी, त्रिभवानन्दजी, देवजी, दिनेशजी और दाक्षिणात्य पिल्ले स्वामीजी क्रमशः आते गए और दर्शन से कृतार्थ होते गए। सभी अपने रँग में रँगे हुए सत्संग-परायण होकर अहमादिक प्रगाढ़ निद्रा से जाग कर परम सुख और शान्ति के अधिकारी हुए। सब यही कहते थे कि "गुसाईंजी" धन्य हैं कि इस पृथ्वी पर जन्म लेकर और हमें दर्शन देकर उन्हों ने हमें कृतकृत्य कर दिया। बिदा होते हुए उनके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित थी, विह्वलता के कारण वे बोल नहीं सकते थे। प्रेम-प्रमोद से उनका हृदय परिपूर्ण था वे इसी अलौकिक दशा में प्राप्त होकर अपने अपने स्थान को गए।

इस प्रकार साधु समागम में आठ वर्ष बीत गए और जान न पड़ा कि किस तीव्र गति से समय कट गया। जब सोलह सौ सोलह संवत् लगा और गुसाईंजी श्रीकामद गिरि के निकट रहने लगे थे तब उस एकान्त प्रदेश में परम भागवत श्रीसूरदासजी आकर मिले। उन्हें श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीकृष्ण-भक्तिरूपी सुन्दर रंग में अच्छी तरह रँगकर भेजा था। परन्तु गुसाईंजी ने एक ही कटाक्ष में उनकी सब चतुराई छीन ली।

महात्मा सूरदासजी ने नटनागर की पवित्र प्रेमकथा से पूर्ण स्वरचित "सूरसागर" दिखलाया। और उसमें से दो पद चुनकर, उन्हें गाकर, सुनाया। अनन्तर गोस्वामीजी के चरणकमलों पर मस्तक रखकर उन्हों ने प्रार्थना की–"भगवन्! कृपया यह आशीष दीजिए कि श्यामसुन्दर मुझपर रीझें और यह मेरी कृति सर्वत्र प्रचरित होजाय।" सुकोमल विनीत

वचनावलि को सुनकर श्रीगोस्वामिपाद ने उत्कृष्ट कविता के लिए उन्हें बधाई दी और उस पुस्तक को उठाकर हृदय से लगाया। हमारे चरित-नायक ने कहा—"भगवान् श्यामसुन्दर तो सदा आपकी कविता का रस चखते रहते हैं और सेवक की रुचि रखना तो उनका सहज स्वभाव है। इसमें रत्ती भर भी संशय नहीं है, श्रुति और शेष इस दिव्य गुण की महिमा वर्णन करते हैं।"

महात्मा सूरदासजी वहां एक सप्ताह रहे और सत्संग से लाभ उठाते रहे। जब चलने लगे तब चरणकमलों में पड़ गए। गुसाईंजी ने बांह पकड़ उन्हें हृदय से लगाया, आश्वासन दिया और श्रीगोकुलनाथजी के नाम पत्र देकर उन्हें बिदा किया।

जब गुसाईंजी के प्रसाद से भगवान् श्यामसुन्दर की बांकी छवि हृदय में बसाकर और पत्रिका लेकर महात्मा सूरदासजी चले गए, तब मेवाड़ से सुखपाल नामक ब्राह्मण आया। वह श्रीमीराबाई का पत्र लेकर आया * गोस्वामीजी ने उस पत्र को पढ़कर उसके उत्तर में एक गीत † और एक कवित्त ‡ बनाकर लिखा। उत्तर-पत्र उस ब्राह्मण को देकर बिदा किया और ज़बानी भी कहला भेजा कि सब कुछ छोड़कर भगवद्भजन करने में ही भलाई है।

प्रयाग-काशी होते हुए श्रीअवध जाना।

कुछ दिनों के पश्चात् नित्य प्रातःकाल एक बालक आने लगा और सुन्दर कण्ठ से गीत गाकर सुनाने लगा। उसके गानपर गुसाईंजी रीझ गए और चार नवीन पद बनाकर उसे दिया। दूसरे दिन उसने कण्ठ करके उन्हें सुना दिया। इसी तरह वह नित्य नया पद कण्ठ करता और दूसरे दिन गाकर सुनाता। प्रतिदिन नूतन पद के लिये अड़जाता और गोस्वामीजी को उसकी रुचि रखनी पड़ती। इसी बहाने गीतों की रचना होने लगी। महाकवि के

---

* स्वस्ति श्रीतुलसी गुण दूषण हरण गोसाईं। बारहिं बार प्रणाम करहुँ अब हरहु शोक समुदाई॥
घर के स्वजन हमारे जेते सबन उपाधि बढ़ाई। साधु संग अरु भजन करत मोहि देत कलेस महाई॥
बालपने से मीरा कीन्हीं गिरिधरलाल मिताई। सो तो अब छूटत नहिं क्योंहूँ लगी लगन बरिआई॥
मेरे मात पिताके सम हौ हरिभक्तन सुखदाई। हमको कहा उचित करिबो है सो लिखिये समुझाई॥

† जाके प्रिय न राम वैदेही। सो छाँड़िये कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही॥
तात मातभ्राता सुतपतिहितइनसमानकोउनाहीं। रघुपति विमुख जानि लघु तृन इव तजत न सुकृत डेराहीं॥
तज्यो पिता प्रह्लाद विभीषण बन्धु भरत महतारी। बलिगुरु तज्यो कंत ब्रज बनितन भे मुदमंगलकारी॥
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं। अजन कहा आँखि जौ फूटे बहुतक कहौं कहां लौं॥
तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्रानते प्यारो। जासों होय सनेह रामपद एतो मतो हमारो॥

‡ सो जननी सो पिता सोइ भ्रात सो भामिनि सो सुत सो हित मेरो।
सोइ सगो सो सखा सोइ सेवक सो गुरु सो सुर साहब चेरो॥
सो तुलसी प्रिय प्रान समान कहाँ लों बनाय कहौं बहु तेरो।
जो तजि देह को गेह को नेह सनेह सो राम को होय सबेरो॥

हृदय में सुन्दर सुन्दर भाव उदित होने लगे। जब सोलह सौ अट्ठाइस संवत् लगा तब सब गीतों का सङ्कलन करके गोस्वामीजी ने एक ग्रन्थ तैयार किया और उसका नाम "श्रीरामगीतावली" रक्खा। फिर "श्रीकृष्णगीतावली" की रचना हुई। पुनः उभय ग्रन्थों का संशोधन और सम्पादन करके उन्हें बड़े प्रेम से लिखकर तैयार किया। अनन्तर उन्हें श्रीहनुमान्जी को सुनाया। श्रीमारुतनन्दन ने प्रसन्न होकर कहा—"अब तुम यहाँ से श्रीअवध को जाव और वहीं कुछ दिन निवास करो।"

इष्ट की आज्ञा पाकर वे चले और तीर्थराज प्रयाग में ठहरे। उसी समय मकर स्नान के लिए योगी, तपस्वी, संन्यासी और सत्पुरुष एवं चतुर और मूर्ख सभी श्रेणी के लोग आये हुए थे। पर्व बीत जाने पर छै दिन के बाद उन्हों ने देखा कि सुन्दर अक्षयवटकी सुखद छाया में दो मुनि बैठे हुए हैं। दोनों तपोपुञ्ज हैं और उनके मुख की कान्ति प्रदीप्त है। उसके सामने चन्द्रमा की समुज्ज्वल छवि छिप जाती है। दूरही से दण्डवत् प्रणाम करके वहीं हाथ जोड़कर खड़े होगए। उनमें से एक मुनि ने इशारे सें उन्हें बुला लिया और अपने निकट आसन दिया। उस श्रेष्ठ आसन को हटाकर गुसाईंजी पृथ्वी परही बैठ गए। उन्हों ने अपना परिचय दिया और उनका परिचय प्राप्त किया। उन महात्माओं के एकान्त सत्संग में उसी श्रीरामकथा की चर्चा होरही थी जिसे उनके गुरु (श्रीनरहर्य्यानन्दजी) ने बालपन में, शूकरखेत में, वर्णन किया था। आश्चर्य्यचकित होकर गोस्वामीजी ने उसका गुप्त रहस्य उनसे पूछा। महर्षि याज्ञवल्क्य ने उत्तर में कहा—' देव देव महादेवजी ने इसकी रचना की, पीछे समय पाकर उसे भवानी को सुनाया। फिर भुशुण्डिजी को उसका उपदेश किया। मैंने जाकर भुशुण्डिजी से उसे प्राप्त किया और ऋषि भरद्वाज को सुनाया।"

इस प्रकार मुनिराज से गुह्य रामचरितमानस तत्त्व की परम्परा सुनकर वे चरणों में पड़े, युगल मुनीश्वर बहुत प्रसन्न हुए। तब सावधानतापूर्वक युगल मुनिवरों का विमल संवाद उन्होंने श्रवण किया।

दूसरे दिन जब वे उस स्थान पर गए तब उसे सूना पाया। न युगल मुनि थे न वह वट छाँह और न पर्णकुटी थी। वे विस्मय की बाढ़ में बह चले।

अस्तु, युगल मुनिवरों के शीलस्वभाव को स्मरण करते हुए वे वहाँ से चले। परन्तु भगवदिच्छा से वे काशी की ओर निकल पड़े। कुछ दूर चले जाने पर उन्हें विदित हुआ कि मार्ग भूल गये। तब यह विचारने लगे कि अब क्या करें, लौट चलें या इसी मार्ग का अवलम्बन करें। अन्त में उन्होंने यही निश्चय किया कि जो हुआ सो हुआ, अब इसी मार्ग से चलें, काशी में भगवान् शङ्कर का दर्शन करके श्रीअवध चले चलेंगे। यह सोचकर वे आगे बढ़े और चलते चलते गंगातट पर पहुँचे। फिर किनारे किनारे चलते रहे। जहाँ सन्ध्या

होजाती वहाँ टिक जाते । अस्तु, वे वारिपुर और दिगपुरके बीच में अवस्थित श्रीसीतामढ़ी * में पहुँचे । वहाँ आसन लगाते ही उनकी चित्त-वृत्ति केन्द्र-च्युत होगई । न भूख न प्यास और न निद्रा । विक्षिप्त की सी दशा होगई । साथ ही उनके हृदय में पूर्वजन्म के संस्कार जाग्रत् होगये । वहाँ श्रीसीतावट के नीचे तीन दिन रह गए और सुन्दर कवित्त † बनाकर, मानसिक उद्गार निकाल कर आगे बढ़े ।

मार्ग में विन्ध्याचल (चुनारगढ़) के राजा को बन्दीगृह से छुड़ाते हुए मुनिराज काशी पहुँचे । वहाँ प्रह्लादघाट पर एक ब्राह्मण के घर पर टिके । अनन्तर उनके हृदय में उमङ्ग की तरङ्ग उमड़ी और वे श्रीरामचरित का वर्णन करने लगे । परन्तु दिन में रची हुई कविता सावधानतापूर्वक सुरक्षित रखने पर भी रात को लोप होजाती थी । प्रतिदिन यह लोप-क्रिया होती रही । इस कारण वे बड़ी चिन्ता में पड़े । क्या करना चाहिये, कुछ समझ में नहीं आता था । आठवें दिन महादेवजी ने स्वप्न में आज्ञा दी कि "तुम अपनी मातृभाषा में काव्य की रचना करो ।" निद्रा भङ्ग हुई और वे उठकर बैठ गए । मन में वही स्वप्न की ध्वनि गूँज रही थी । तत्क्षण भगवान् भूतनाथ भवानीजी के सहित प्रकट होगए । गुसाईंजी ने साष्टाङ्ग प्रणाम किया । शिवजी ने कहा—" तुम अपनी मातृभाषा ही में काव्य की रचना करो । देववाणी संस्कृत के पीछे क्यों पड़े हो ? जिसमें सबका कल्याण हो वही करना चाहिए । केवल पूर्व प्रथा अथवा रूढ़ि का आदर करने के नाते सबके कल्याण की उपेक्षा करना कोई बुद्धिमानी का कार्य नहीं है । अब तुम अयोध्याजी में जाकर वास करो और वहीं अपने काव्य

---

* यह स्थान बी. एन. डब्ल्यू. रेलवे (B. N. W. R.) की बनारस-इलाहाबाद शाखा में भीठा स्टेशन के पास है । अबतक वारिपुर और दिगपुर दोनों ग्रामों का वही नाम चलाजाता है । वहाँ काशिराज के बनवाए हुए दो मन्दिर हैं । वहाँ एक खेत है जिसमें केश की तरह श्याम बारीक घास उपजती है । उस घास को कोई भी पशु-पक्षी नहीं खाते । लोग कहते हैं कि वे श्रीसीताजी के केश हैं । सचमुच यह स्थल अवश्य दर्शनीय है ।

† जहाँ वाल्मीकि भये ब्याध तें मुनीन्द्र साधु मरा मरा जपे सिख सुनि ऋषि सात की ।
सिय को निवास लव-कुश को जनम-थल 'तुलसी' छुवत छांह ताप गरै गात की ॥
बिपट महीप सुर सरित समीप सोहै सीतावट पेखत पुनीत होत पात की ।
बारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि अंकित जो जानकी चरण जलजात की ॥
मरकत बरन परन फल मानिक से लसै जटाजूट जनु रूप बेष हरु है ।
सुषमा को ढेरु कैधौं सुकृत सुमेरु कैधौं सम्पदा सकल मुद मंगल को घरु है ॥
देत अभिमत जो समेत प्रीति सेइये प्रतीति मानि तुलसी बिचारि काको थरु है ।
सुरसरि निकट सोहावनी अवनि सोहै राम रवनी के वट कलि कामतरु है ॥
देव धुनी पास मुनिबास श्रीनिवास जहाँ प्राकृतहुँ बट बूट बसत पुरारि है ।
योग जप यागँ को बिराग को पुनीत पीठि रागिन पै सीठि डीठि बाहरी निहारि है ॥
आयसु आदेश बाबू भलो भलो भाव सिद्ध 'तुलसी' बिचारि योगि कहत पुकारि है ।
राम भगतन को तो कामतरु तें अधिक सीयबट सेये करतल फल चारि है ॥
कवितावली ।

की रचना करो। मेरे प्रसाद से वह काव्य-रचना सामवेद की ऋचा के समान सफला होगी।" *

इस प्रकार उपदेश देकर श्रीउमा-महेश्वर अन्तर्हित होगए। अपने भाग्य की सराहना करते हुए गुसाईंजी अयोध्यापुरी को चले। जिस दिन बादशाही दरबार में उदयसिंह को सम्मान प्राप्त हुआ उसी दिन भगवान् गोस्वामिपाद श्रीअवध में पहुँचे।

श्रीरामचरितमानस का निर्माण।

अपराह्न में विमल सरयू-धारा में स्नान करके सरयू-पुलिन, वन-वाटिका और वीथियों में विचरने लगे। एक सन्त से भेंट हुई। वे कहने लगे—"चलिये, श्रीहनुमान्‌गढ़ी के निकट में आपको एक सुरम्य स्थान दिखलाऊँ।" अस्तु, वे सन्त गोस्वामीजी को लिवाकर वहाँ गए। उन्होंने उस रमणीक स्थल को दिखलाया। उस स्थान पर सुन्दर वटवृक्षों की विटपावली थी। उन वृक्षों में एक सुविशाल वटवृक्ष था। उसकी जड़ में सुन्दर वेदिका बनी हुई थी। उस वेदीपर अग्नि के समान तेजस्वी एक सुप्रसिद्ध सिद्ध सन्त सिद्धासन से बैठे हुए थे। उस मनोहर स्थल को देख कर गुसाईंजी का मन लुभा गया। वहाँ कुटीर बनाकर बसने की इच्छा उनके मन में स्वतः जाग्रत् हुई। जब वे टहलते टहलते उस सिद्ध सन्त के निकट पहुँचे तब उसने आसन छोड़कर जयजयकार की और कहा--"मेरे गुरु ने मुझे आज्ञा दी और उसी के अनुसार मैंने यहाँ वास किया। मेरे गुरु ने इसका मर्म भी मुझे बतलादिया था और उसे आज मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूँ। श्रीगुरु भगवान् ने कहा था कि 'कुछ दिन बीतने पर गोस्वामी तुलसीदासजी यहाँ आकर श्रीरामचरित वर्णन करेंगे। वे आदि कवि वाल्मीकिजी के अवतार होंगे और श्रीपवनकुमार की सहायता से इस महान् कार्य को करेंगे। यही जानकर राजराज (कुवेर) ने इस स्थान पर वटवृक्ष लगाकर इसकी सर्वोत्तम मर्यादा बांध दी। अस्तु तू मेरी आज्ञा मानकर इस स्थान को परिस्कृत करके यहीं भजन कर। जब इस स्थान पर गोस्वामीजी उस महान् कार्य के निमित्त आवेंगे तब कुटी और आराम उन्हें सौंप कर तनु त्याग करके मेरे पास आना। गुरुजी का उपदेश मुझे अच्छा लगा और अनेक जन्मार्जित पुण्य का उदय हुआ। यहाँ वास करके, यहाँ के सुख का अनुभव करते हुए तपस्यापूर्वक मैं आपके आगमनकी बाट जोहता रहा हूँ। अस्तु, हे स्वामी! आप यहाँ सुखपूर्वक निवास करें। अब मैं अपने गुरु के पास जाता हूँ।"

ऐसा कहकर वे सिद्ध सन्त वेदिका पर से उतर पड़े, नमन करते हुए कुछ दूर चले गए। वहाँ आसन लगाकर ध्यानावस्थित होगए और योगाग्नि प्रकट करके एवं शरीर को उसमें भस्म करके परधाम को गए। इस लीलाको देखकर गुसाईंजी ने कहा—"हे धनुर्धर! तेरी बलिहारी है।"

* सपनेहु सांचेहु मोहिपै जो हर-गौरि पसाव। तो फुर होइ जो कहेउँ सब भाषा भनित प्रभाव॥

अस्तु, वहाँ सुख-सुपास पाकर गुसाईंजी बस गए। दृढ़ संयमपूर्वक समय बिताने लगे। एक समय थोड़ा सा दूध पी लिया करते थे। उन्हें केवल श्रीरघुनाथजी का भरोसा था। और किसी का डर नहीं था। इस तरह दो वर्ष बीत गए। परन्तु उनकी वृत्ति नहीं डिगी और संवत् १६३१ का आरम्भ होगया।

त्रेतायुग में श्रीरामजन्म तिथि पर जो ग्रह राशि, लग्न योग आदि पड़े थ वेही संवत् १६३१ की श्रीरामनवमी को भी पड़े। उस दिन प्रातःकाल भौमवार को श्रीहनुमान्‌जी प्रकट हुए और संसार के कल्याण के निमित्त सबसे पहले उन्हीं ने गोस्वामीजी को अभिषिक्त किया। अनन्तर उमा-महेश्वर, गणेशजी, सरस्वतीजी, नारदजी, शेषजी, सूर्य-नारयण, शुक्राचार्य्य और बृहस्पतिजी ने मंगलमय आशीष दिए। इस विधि से विमल रामचरितमानस का आरम्भ हुआ जिसके श्रवण करने से मद, दम्भ, कामादिक विकार और सब प्रकार के संशय मिट जाते हैं।

दो वर्ष सात महीने और छब्बीस दिनों में अर्थात् संवत् १६३३ के मार्गशीर्ष मास में श्रीरामविवाह के दिन भवसागर से पार उतारने के लिए सात जहाज बनकर तैयार होगए। पाखण्ड और प्रपञ्च को दूर बहाने, पवित्र सात्त्विक धर्म के चलाने, कलिकाल के पाप-कलाप को नाश करने, हरिभक्तिकी छटा दिखलाने, मतमतान्तर के वाद-विवाद को मिटाने, प्रेमका पाठ पढ़ाने, सन्तों के चित्त में भजन की लगन उत्पन्न करने, सज्जनों के हृदय में प्रमोद बढ़ाने, हरिभक्ति शिवजी के हाथ में है—इस रहस्य को समझाने और वैदिक भक्ति-मार्ग को सुझाने के लिए सप्त सोपानयुक्त सद्ग्रन्थ बनकर तैयार होगया। भौमवार को मध्याह्न के समय "शुभमिति" "हरि ॐ तत्सत्" लिखा गया अर्थात् पुस्तक समाप्त हुई। देवताओं ने जयजयकार की और फूल बरसाये।

यह ग्रन्थ तो उसी दिन बनकर तैयार होगया था जिस दिन इसका आरम्भ हुआ था; परन्तु मनुष्य की निर्बल लेखनी ने उसे लिखने में इतने दिन लगा दिये।

श्रीगणेशजी ने उसी समय इस ग्रन्थकी पांच प्रतियाँ दिव्य लेखनी से लिखकर तैयार कीं। और सत्यलोक, कैलास, नागलोक, द्युलोक एवं दिग्पाललोक में वे तत्काल पहुँच गईं। यह रचना सबको पसन्द आई, सबके मनमें श्रीरामचरितमानस ने अपना स्थान प्राप्त कर लिया। देवताओं तक ने उसे प्रेमसे अपनाया। अस्तु, अमर, नर-नाग, सभी सम्प्रदाय के उदार चेता महात्माओं और सहृदय सज्जनों ने उसे शिरोधार्य्य किया और सबने शुद्ध मन, वचन और कर्म से गुसाईंजी के चरणकमलों की वन्दना की।

बन्दों तुलसी के चरण, जिन कीन्हें जग काज।
कलि समुद्र बूड़त लख्यो, प्रकटेउ सप्त जहाज॥

और ग्रन्थ के विषय में उनकी उक्ति इस प्रकार है—

परम मधुर पावनि करनि, चार पदारथ दानि ।
तुलसीकृत रघुपतिकथा, कै सुरसरि रस खानि ॥

अनन्तर श्रीहनुमान्‌जी प्रकट हुए । उन्हों ने अथ से इति तक सब सुना और सुन्दर वर दिया कि "यह कीर्त्ति त्रिभुवन को वश करनेवाली हो।"

उस समय जनकपुर के प्रसिद्ध सन्त स्वामी श्रीरूपारुणाजी श्रीअवध में आये हुए थे। वे विदेहराज के भाव के, वात्सल्य रसके सन्त थे । उन्हीं ने सबसे पहले श्रीरामचरितमानस को सुना । उन्हीं को मनुष्यलोक में गुसाईंजी ने सर्वप्रथम अधिकारी समझा ।

उनके पीछे स्वामी नन्दलालजी संडीलेवाले के शिष्य श्रीदयालुदासजी एक प्रति लिखकर अपने गुरु के पास ले गए । उन्हें सुनाया और फिर यमुनातट पर रसखानजी को तीन वर्ष तक सुनाते रहे । तब से उस ग्रन्थ की अनेक प्रतियाँ लिखी गईं । कुछ औरों ने और कुछ स्वयं ग्रन्थकार ने लिखीं ।

एक दिन श्रीगोस्वामीजी कनकभवन में बैठे हुए थे । शयन का समय था । श्रीमुक्तामणिदासजी ने भगवत् के शयनसम्बन्धी एक गीत * गाया । उसपर आप रीझ गए और कृपादृष्टि फेर कर एक क्षण में उन्हें सिद्ध सन्त बना दिया ।

तत्पश्चात् श्रीरघुनाथजी की आज्ञा से आप काशीपुरी में गए और उमामहेश्वर को पोथी सुनाई । पाठ समाप्त करके आपने रात में शिवलिङ्ग के पास पोथी रख दी । सवेरे जब मन्दिर का पट खुला तब वहाँ पण्डित, मूर्ख, तपस्वी, और सिद्ध देखने के लिए जमा होगए थे । सबने सतृष्ण दृष्टि से देखा कि महादेवजी ने पुस्तक पर सही करदी है और दिव्याक्षरों में उसपर "सत्यं शिवं सुन्दरम्" लिखा हुआ है । साथ ही साथ मन्दिर खुलते ही उन्हें इसी प्रकार की दिव्य वाणी भी सुन पड़ी थी ।

कलिकाल का उपद्रव ।

शिवजी की नगरी सर्व रसरंगमयी है । इस अद्भुत घटना का वृत्तान्त घर घर पट गया । सब नर-नारी प्रसन्न हुए, दौड़े हुए गुसाईंजी के पास गए, चरण वन्दना करके जय-जयकार करने और बलैयाँ लेने लगे ।

---

* यह गीत इस प्रकार है—

सैन करहु रघुवीर पियारे ।

हौं पठई आई कौसिल्या, बड़े भूप उठि सदन सिधारे ॥ युगल वाम यामिनि बाती है, नयनन नीर भरे रतनारे ॥ प्रफुलित शरद कोक नद मानो, मन्द समीर मलय कर धारे ॥ रतन जटित मणिमय मन्दिर महँ रचि शुचि शोभित जनक सुतारे ॥ मग जोवति सहचरी सिया की, सैन उचित सब सौंज संवारे ॥ अति आलस युत भये हैं भरत युत, लखनलाल रिपुहन उजियारे ॥ सुनत सबहिं दै पान बिदा करि, उठे दास मुक्ता मणि वारे ॥

परन्तु पण्डित मण्डली चिन्ता ग्रस्त होगई। उन्हों ने समझा (कालकी प्रेरणा से) कि अब तो हमारा मान और माहात्म्य उठ जायगा और जीविका में भी बाधा पड़ेगी; क्योंकि जब इस प्रसादमयी पोथी को लोग पढ़ेंगे तब कोई भी हमें नहीं पूछेगा। अस्तु, वे दलबांधकर उसकी निन्दा करने लगे और देववाणी की महिमा गाने लगे एवं प्राचीन रूढ़ि की दुहाई देने लगे। उन्हों ने उस ग्रन्थ के चुराने के लिए षड्यन्त्र रचा और वे अनेक प्रपञ्च किये। अन्ततो गत्वा निधुआ और सिखुआ नामक दो चोर रात में चोरी करने की इच्छा से गोस्वामीजी के स्थान पर गए और वहाँ के रक्षक त्रिभुवनधनी का दर्शन करके निहाल होगए। दूसरे दिन उन्हों ने गुसाईंजी से पूछा—" आप के स्थान में धनुष-बाण धारण किये हुए दो श्याम-गौर किशोर रक्षक कौन हैं जो रातभर जागकर पहरा देते हैं ?" इस प्रश्न को सुनकर, नेत्रों में जल भर कर गुसाईंजी ने कहा—" तुम धन्य हो कि तुम्हें साक्षात् भगवान् का दर्शन प्राप्त हुआ।"

इस वार्त्ता से चोरों को ज्ञान होगया। वे दुष्कर्म को छोड़कर और भगवद्भजन में तत्पर होकर तर गए। और गुसाईंजी ने सब वस्तुओं को लुटा दिया एवं श्रीरामचरितमानस की मौलिक प्रति (जिसपर भगवान् शङ्कर के हस्ताक्षर रहे) अपने प्रेमी टोडरमल के घर यत्नपूर्वक सुरक्षित रखदी *।

गोस्वामीजी ने एक दूसरी प्रति उस पुस्तक की तैयार की और उसी से अनेक प्रतियाँ लोगों ने लिखीं और लिखवाईं। उसका प्रचार प्रतिदिन बढ़ता हुआ देखकर पण्डितों के हृदय में बड़ा संताप उत्पन्न हुआ। उन लोगों ने वटेश्वर मिश्र नामक एक सुप्रसिद्ध तान्त्रिक से अपना दुःख रोकर सुनाया। उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके उस तान्त्रिक ने गुसाईंजी पर मारण-प्रयोग साधा और अपने इष्टदेव भैरवजी को हठपूर्व्वक भेजा। भैरवजी गये पर बजरंगबली जैसे रक्षक को देखकर भयभीत हो गए और लौट कर उन साधु लक्ष्य के बदले वटेश्वर मिश्र, अपने सेवक का प्राण लेकर ही सन्तुष्ट हुए।

पण्डितों का यह प्रयत्न भी विफल हुआ। तब वे अपना दल सजकर श्रीमधुसूदन सरस्वती के मठ पर गए। उन्हों ने उक्त स्वामीजी से कहा—"महादेवजी ने 'श्रीरामचरितमानस' को प्रामाणिक ग्रन्थ माना है सही परन्तु उन्हों ने यह नहीं बतलाया कि वह किस कोटि का है। वेद, शास्त्र, पुराण, इतिहास में से वह किसके समकक्ष है, इस बात का

---

* श्रीयुत टोडरमलजी, रईस बनारस, के घर वह अमूल्य पुस्तक चाँदी की मञ्जूषा में रक्खी गई थी और उसकी पूजा नित्य हुआ करती थी। उसके बारे में गुसाईंजी ने कह रक्खा था कि जिस दिन वह पुस्तक तुम्हारे घर से निकल कर दूसरे के घर जायगी, उसी दिन वह इस लोक से लोप होजायगी। ऐसा हुआ भी। कई पीढ़ियों के पीछे उस परिवार के नायक अनन्तमलजी हुए। उनकी एक परम प्यारी कन्या थी। उस पुस्तक में उसका अविचल प्रेम था; क्योंकि बालपन से वह नित्य उसकी पूजा किया करती थी। जब उसका विवाह हुआ और वह बिदा होकर ससुराल जाने लगी तब चुपके से उसने उसे अपनी डोली में रख लिया। रास्ते भर तो वह पुस्तक विद्यमान थी पर जब वह पति के गृह में उतरी तब वह लोप होगई। उसके वियोग में उस कन्या ने अपना शरीर ही त्याग दिया।

निर्णय होजाना चाहिये।" इसके उत्तर में यतिराज ने कहा—"मैं उस पुस्तक को मँगाकर पहले देख लूँ तब बताऊँ।" अस्तु, उन्हों ने उस ग्रन्थ को गुसाईंजी से मांग कर पढ़ा और परमानन्द को प्राप्त हुए। उसको लौटाते हुए स्वामीजी ने यह श्लोक बनाकर उस पर लिख दिया—

"जयति सच्चिदानन्दः।
आनन्दकानने ह्यस्मिन् जंगमस्तुलसीतरुः।
कविता मञ्जरी भाति रामभ्रमरभूषिता॥"

जब पण्डित लोग फिर आये और उन्हों ने निर्णयार्थ प्रार्थना की तब स्वामीजी ने उनसे कहा कि "इस बात को सदाशिवजी ही से क्यों न पूछ लीजिए।" तब सबके ऊपर वेद, उसके नीचे शास्त्र, फिर पुराण और सबके नीचे "मानस" रखकर मन्दिर में शिवजी के सामने रखदिया गया।

प्रातःकाल मन्दिर का पट खुला। सब लोग देखने के लिए टूट पड़े। परम पुनीत वेद के ऊपर "मानस" को देखकर पण्डितगण बहुत लज्जित हुए। वे गोस्वामीजी के चरणों में पड़े, अपराध क्षमा कराये और चरणोदक लेकर अपने अपने घर गए।

अनन्तर नदिया-शान्तिपुर के पं० रविदत्त शास्त्री आये। वे सभी शास्त्रों के ज्ञाता और आशु कवि थे। उन्हों ने हठपूर्वक गोस्वामीजी से विवाद किया और परास्त हुए। पराजित होने के कारण उनके मन में बड़ा दुःख उत्पन्न हुआ। क्रोध की वृत्ति जाग्रत् हुई। वे इतने क्रोधान्ध होगए कि गुसाईंजी को मारने पर उतारू हुए। वे घात में लगे। अवसर निकल आया। जब गोस्वामीजी अपने आश्रम से स्नान करने को निकले तब वे भी लट्ठ लिए पीछे पीछे चले। परन्तु जब उन्हों ने देखा कि स्वयं श्रीहनुमान्जी उनकी रक्षा कर रहे हैं तब वे भयभीत होकर भागे और अपनी करनी पर लज्जित हुए। इतना होने पर भी उनकी क्षुब्धवृत्ति शान्त नहीं हुई। उन्हों ने उस विषम मनोवृत्ति की तृप्ति के लिए दूसरी तदबीर ढूँढ़ ली। वे गोस्वामीजी की सेवा में गए। इधर वे प्रतिभाशाली विद्वान् और उधर गुसाईंजी सरल स्वभाव सन्त। महापुरुष को रिझा कर वर के लिए हठ करने लगे। गुसाईंजी वर देने पर राज़ी होगए। तब पण्डित ने यही वर मांगा कि आप काशीपुरी छोड़कर कहीं अन्यत्र चले जायँ। वर देने पर मुनिराज काशी छोड़ने के लिए विवश हुए। उन्हों ने "काशीनाथ कहे निवरत हौं" * वाली कविता लिखकर और उसे श्रीविश्वनाथजी

* देवसरि सेवौं वामदेव गाँव रावरे ही नाम राम ही के मांगि उदर भरत हौं।
दीबे योग 'तुलसी' न लेत काहू की कछुक लिखी न भलाई भाल पोच न करत हौं॥
येते पर हूँ जो कोऊ रावरो ह्वै जोर करै ताको जोर देव दीन द्वारे गुदरत हौं।
पाइकै उराहनो उराहनो न दीजै मोहि काल-कला काशीनाथ कहे निबरत हौं॥

के मन्दिर में देकर दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान किया। अभी बहुत दूर नहीं गए थे कि भगवान् भोलानाथ ने साक्षात् दर्शन देकर, आश्वासनपूर्व्वक समझा-बुझाकर उन्हें लौटा लिया।

उधर उस पण्डितराज ने सुना कि गुसाईंजी काशी छोड़कर चले गए। वे बहुत प्रसन्न हुए और उल्लसित हृदय से भगवान् के दर्शन को गए। ज्यों ही वे पहुँचे त्यों ही मन्दिर का पट बन्द होगया और आकाशवाणी हुई—"जाव, गुसाईंजी के चरणों पर गिरो, अनेक भाँति से अनुनय-विनय करके उन्हें मना लाओ और पुरी में बसाओ, नहीं तो तुम्हारा सर्वनाश होजायगा।"

गुसाईंजी लौट कर आगये। इस शुभ समाचार को सुनकर परमभक्त टोडरमलजी सेवा में उपस्थित हुए। उन्हों ने प्रार्थना की—"भगवन्! इस सेवक की बिनती सुनिये। असी पर वाटसहित भवन बन कर तैयार होगया है। अब वहीं सुखपूर्व्वक वास करके सबको सुख दीजिए। हम भी चरणकमलों की सेवा करके कृतार्थ हों।" इस विनय पर आप प्रसन्न हुए और उसी स्थान पर जाकर बसे और श्रीरघुनन्दन के गुणगान में तत्पर रहे।

रात्रि में कलिराज खड्गहस्त होकर पहुँचे और मुनिराज को त्रस्त करने लगे। कलिराज ने कहा—"आप अपनी पोथीको गंगाजी में फेंक दीजिए नहीं तो मैं अनेक प्रकार से ताड़ना देता रहूँगा। सावधान रहना।" इस प्रकार त्रस्त करके जब कलिराज चले गए तब मुनिराज भगवत् के ध्यान में तत्पर हुए।

श्रीहनुमान्‌जी प्रकट हुए। उन्हों ने कहा—"कलि मानेगा नहीं। वही इस समय शासन कर रहा है। यदि मैं उसे मना करता हूं तो वह और भी तुमसे वैर मान जायगा। इसलिए यही उचित है कि तुम विनयावली लिखकर मुझे दो। मैं सरकार में पेश करके उसे दण्ड दिलाऊंगा।" इस प्रकार मुनिराज द्वारा "श्रीरामविनयावली" की रचना हुई। उसे मान्य पार्षदों के साक्ष्य सहित सुनकर करुणावरुणालय श्रीरघुनाथजी ने मुनिराज को अभय कर दिया।*

मिथिलापुरी की यात्रा।

अनन्तर गुसाईंजी ने मिथिलापुरी के लिये प्रस्थान किया और सुकृतीजनों को सुख-शान्ति प्रदान की। भृगुआश्रम में आप चारदिन रहे। वहाँ "बुआ" नाम से प्रसिद्ध, कुष्ठरोग के कारण करहीन वृद्धा के पापपुञ्ज को नाश करके आपने उसे कृतार्थ कर दिया।

---

* मारुति मन रुचि भरत की लखि लषन कही है।
कलिकालहुँ नाथ! नाम सों प्रतीति प्रीति एक किंकर की निबही है॥ १॥
सकल सभा सुनि लै उठी जानी रीति रही है।
कृपा गरीबनिवाज की देखत गरीब को साहब बाँह गही है॥ २॥
बिहँसि राम कह्यो सत्य है, सुधि मैं हूँ लही है।
मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ की परी रघुनाथ हाथ सही है॥ ३॥

फिर हंसपुरा में आप एक दिन टिके। वहाँ परसी नामक एक रमणी उसी दिन वैधव्य को प्राप्त हुई थी। उसके करुण-क्रन्दन पर द्रवित होकर आपने उसके मृत पतिको जिलाकर उसका सोहाग बहुरा दिया।

अनन्तर गायघाट ग्राम में राजा गम्भीरदेव के अतिथि हुए। वहाँ दो दिन ठहरे। श्रीब्रह्मेश्वरनाथ महादेवजी का दर्शन करके चले और कांत-ब्रह्मपुर में गए। वहां पर प्रसिद्ध साधुसेवी सँवरू अहीर का पुत्र मँगरू मिला। उसने आपको दूध दुहकर श्रद्धापूर्व्वक प्रदान किया। आप प्रसन्न हुए और उसे वर दिया कि "यदि चोरीका व्यसन छूट जायगा तो तेरे वंश का नाश कभी नहीं होगा।" अबतक उसका वंश वर्त्तमान है।

वहाँ से चलकर बेलापतार नामक ग्राम में पहुँचे। श्रीधनीदासजी के मठ में उतरे। बाबा धनीदासजी मानसिक कष्ट से बहुत कष्टित रहे। उन्हों ने गुसाईंजी से इस तरह अपनी विपत्ति सुनाई—"भगवन्! कल मेरे प्राण हरण किये जायँगे। मैं बड़ाभारी पातकी हूँ। जब मैं राज-भोग थाल-भोग लगजाने पर बाहर निकालता था तब उसमें से बहुत कुछ खाया हुआ रहता था। उसे मैं सती-सेवकों को दिखाता था और सौगन्ध खाकर कहता था कि स्वयं भगवान् ने आपरूप प्रसाद पाया है। लोग आश्चर्य्य-चकित होजाते थे। इस बातकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैल गई। लोग दर्शनार्थ आने लगे। समाचार पाकर भूमिपति रघुनाथसिंह भी आये। वे भी, देखकर आश्चर्य्य में पड़े। उनके मन में कुछ सन्देह हुआ। उन्हों ने मन्दिर में पैठकर अच्छी तरह देखा। एक आले पर उनकी दृष्टि गई जिसपर परदा पड़ा हुआ था। परदे को हटाकर उन्हों ने देखा कि एक मोटा चूहा उसमें बैठा हुआ है। उनके सन्देह की पुष्टि हुई। वे ताड़ गये कि यही चूहा असल में नित्यप्रति भोग लगाया करता है। अस्तु, मन्दिर से बाहर निकल कर उन्हों ने कोपयुक्त ये वचन कहे—'आज से एक मास के बाद मैं फिर यहाँ आऊँगा। उसदिन विना परदा डाले भोग-थाल रक्खा जायगा। यदि सबके सामने ठाकुरजी प्रसाद पावेंगे तो मैं अपना सर्वस्व ठाकुरजी के चरणों में अर्पण करदूँगा और यदि नहीं तो तुम्हें फाँसी दीजायगी।' सो हे नाथ! वह अवधि कल पूरी होगी और निश्चय ही मैं दण्ड-भाजन बनूँगा। इसी कारण मैं इतना चिन्तित हूँ।"

साधु की कारुणिक दशा पर मुनिराज को दया आई। उन्हों ने धनीदास को आश्वासन दिया। दूसरे दिन रघुनाथसिंह दलबल सहित आ धमके। साधु ने रसोई की। भोग-थाल मन्दिर में रक्खा गया। गोस्वामीजी की प्रार्थना पर श्रीठाकुरजी ने सबके सामने भोजन किया, साधु की पत रह गई। भगवान् की इस लीला को देखकर गुसाईंजी ने कहा—

"तुलसी झूठे भगतकी, पति राखत भगवान।
जस मूरख उपरोहितहिं, देत दान जजमान॥

गोस्वामीजी की महिमा से परिचित होकर रघुनाथसिंह आग्रहपूर्व्वक उन्हे अपना घर पवित्र कराने के लिये ले गए। वहाँ भक्तवर गोविन्द्रमिश्र मिले जिनकी दृष्टि पड़ते ही कठिन लोहा भी

पानी पानी होजाता था। खूब सत्संग का रंग जमा। मुनिराज ने बेलापतार का नाम बदलकर "रघुनाथपुर" रख दिया। अबतक यही नाम प्रचलित है।

वहाँ से चलकर आप हरिहरक्षेत्र में आये। संगम पर स्नान करके शीघ्र चल दिये और षट्पदी (षट्कोण पर प्रतिष्ठित) विदेहपुरी के निकट पहुँच गए। श्रीमिथिलेशनन्दनी ने एक बालिका का रूप धारण करके उन्हें भुलावा देकर खीर खिलाया और चलती बनीं। जब गोस्वामीजी को यह रहस्य विदित हुआ तब जैसी दशा उनकी हुई उसको कोई वर्णन नहीं कर सकता। श्रीकृपा को सोच-समझकर मनहीमन में आनन्दित होते रहे।

गुसाईंजी का आगमन सुनकर मिथिला के ब्राह्मण सेवा में आये। उन्हों ने अपनी विपत्ति इस प्रकार कह सुनाई कि "श्रीरामचन्द्रजी के विवाहोत्सव के उपलक्ष में हमारे पूर्व्वजों को दानस्वरूप हाला आदि बारह गाँव मिले थे, उन्हें इस सूबे के नवाब ने, जो बड़ा ज़िद्दी है, अपहरण कर लिया है। इस कारण हम सब बहुत कष्टित होरहे हैं।" ब्राह्मणों के मुख से आर्त्तनाद सुनकर गुसाईंजी को बड़ी दया आई। उन्होंने श्रीहनुमान्जी से कहकर उक्त नवाब को दण्ड दिलाया और बारहों गाँव की वृत्ति फिर दिलवा दी। विप्रवृन्द सुखपूर्व्वक परिवार सहित रहने लगे और गोस्वामीजी की कीर्त्ति गाने लगे।

अनन्तर गोस्वामीजी संवत् १६४० के लगतेही मिथिला से काशीपुरी को वापस आगए।

साहित्यसेवा, महामारीशमन, सम्मिलन, प्रेतोद्धार।

महर्षि ने विमल अनुराग के साथ दोहावली का सङ्कलन किया। फिर सं० १६४१ में मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी रविवार को एक प्रति श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण की लिखकर तैयार की। पुनः सं० १६४२ में वैशाखशुक्ला श्रीजानकीनवमी को प्रेमाम्बु से सींचकर "सतसई" लिखना आरम्भ किया।

तत्पश्चात् मीन के शनैश्चर के उतरते उतरते * काशीपुरी में महामारी का प्रकोप हुआ। लोग बहुत दुःखी हुए और ऋषिराजके पास जाकर पुकार की। करुणामय मुनि उनकी पीड़ा सुनकर द्रवीभूत हुए और एक कवित्त † बनाकर भगवत् से उसके शमनार्थ प्रार्थी हुए। श्रीकृपा से महामारी उसी समय शान्त होगई।

रसिक कवि केशवदासजी एवं सूक्ष्म भावरूपी आकाश में विचरनेवाले कविवर घनश्याम शुक्लजी गोस्वामीजी को कवि समझकर दर्शनार्थ आश्रम पर आये। बाहर बैठकर अपने आगमन की सूचना भेज दी। सूचना पाकर गुसाईंजी ने इतना ही कहा—"प्राकृत कवि केशव को

---

* महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी ने निश्चय किया है कि चैत्र सुदी ९ सं० १६४० से ज्येष्ठ सं० १६४२ तक मीन के शनैश्चर रहे।

† एक तो कराल कलिकाल शूलमूल तामें कोढ़ में की खाजसी शनीचरी है मीन की।
वेद धर्म दूरि गये भूमिचोर भूप भये साधु सिद्यमान जात बोते पाप पीन की॥
दूसरे को दूसरो न द्वार राम दयाधाम रावरोई गति बलि विभव विहीन की।
लागैगी पै लाज वा विराजमान विरुदहिं महाराज आज जो न देत दादि दीन की॥

भीतर आने दो।" इस वाक्य को सुनतेही केशवदासजी अपने मनमें अपनी तुच्छता विचार कर लौट चले। सेवकों ने उन्हें पुकारा, परन्तु यह कहकर कि कल भेंट करेंगे वे चले गए। घनश्यामजी, घासीरामजी तथा बलभद्रजी ठहरगए और दर्शन-सत्सङ्ग से लाभ उठाते रहे। रात-भर में रामचन्द्रिका तैयार करके केशवदासजी दूसरे दिन उसे लेकर पहुँचे। खूब सत्सङ्ग जमा, नवरसों के तरह-तरह के भाव-विभाव पर विचार प्रकट किये गये एवं प्राकृत और दिव्य विभूतियों के चित्र खींचे गए। केशवदासजी के मन का सङ्कोच मिट गया और हृदय में प्रीति उत्पन्न होगई।

कुछ दिनों के बाद आदिलशाही राज्य के दानधर्म विभाग के अध्यक्ष पं० दत्तात्रेयजी श्रीतुलसी आश्रम पर आये। उन्हों ने महर्षि के चरणकमलों की विधिवत् पूजा की। आशीष पाकर उन्हों ने पुण्यप्रसाद के लिए प्रार्थना की। महामुनि ने अपनी हस्तलिखित पुस्तक श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण उन्हें प्रदान की। ※

अमरनाथ योगी की स्त्री को किसी वैरागी ने हर लिया था। इस पर वह योगी क्रुद्ध हुआ और अपनी सिद्धाई के बल से उसने सब वैरागियों की कण्ठी-माला उतारली। साधुओं में बड़ा कोलाहल मचा। वे दौड़े हुए गोस्वामीजी के पास आये। सब हाल निवेदन कर वे उचित शासन के लिए प्रार्थी हुए। महर्षि ने सबको अपने अपने आसन पर चले जाने की आज्ञा दी। वे चुपचाप चले गए। आसन पर पहुँचने पर उन्हों ने अपनी कण्ठी-माला अपने आसन ही पर पाई।

पुनः एक अघोरपंथी सिद्ध "अलख" "अलख" कहता हुआ आया। गुसाईंजी ने उसकी सिद्धाई एक क्षण में हरली और वेद के सार तत्त्व का उपदेश दिया। †

नैमिषारण्य में एक धर्मात्मा ब्राह्मण रहते थे। संसार के मोह-द्रोह से परे उनकी वृत्ति थी। उनका शुभ नाम वनखण्डी था। वे नैमिषारण्य के लुप्त तीर्थों को फिर से स्थापित करना चाहते थे। तदर्थ वे सदाशिव मंत्र जपा करते थे। एक दिन धन्ना नामक एक प्रेत उनके पास आया। उसने उन्हें बहुत सा पृथ्वी में गड़ा हुआ धन देकर कहा—"आप इस

※ यह वही प्रति श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण की मालूम होती है जिसे गोस्वामीजी ने संवत् १६४१ में लिखी थी; क्योंकि क्विन्स कालेज, बनारस के संस्कृत पुस्तक भाण्डार में जो उत्तरकाण्ड की एक प्रति सुरक्षित है उसके अन्त में लिखा हुआ है—

" इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये चतुर्विंशतिसाहस्र्यां संहितायां उत्तर काण्डे स्वर्गारोहणकं नाम सर्गः॥ शुभमस्तु ॥ समाप्तं चेदं महाकाव्यं श्रीरामायणमिति संवत् १६४१ समये मार्ग सुदि ७ रवौ लिः तुलसीदासेन"।

और उस प्रति के अन्तिम पृष्ठ की पीठपर यह श्लोक लिखा हुआ है—

" श्रीमद्येदिलशाहभूमिपसभा सभ्येन्द्रभूमीसुरः श्रेणीमंडनमंडलीधुरिदयादानादिभाजिप्रभुः ॥ वाल्मीकेः कृतिमुत्तमं पुररिपोः पुर्यां पुरोगः कृतिः दत्तात्रेयसमाह्वयो लिपि कृते कर्मत्वमाचीकरत्र ॥"

† हम लखु हमहिं हमार लखु, हम हमार के बीच।
तुलसी अलखहिं का लखै, राम नाम जपु नीच ॥

[illegible]न से शुभ का[illegible] कीजिए और इस योनि से हमारा उद्धार कीजिये।" इस पर उस ब्राह्मण ने कहा "[illegible]च्छा, मुझे चारो धाम और सब तीर्थों में घुमा-फिराकर काशी में गुसाईं तुलसीदासजी के पास ले चलो। उन्हीं के दर्शन से तुम्हारा कल्याण होगा।" उस प्रेत ने वैसा ही किया अर्थात् आकाशमार्ग से सब तीर्थों का दर्शन कराकर असीघाट पर अधर में मड़राने लगा। इस अभूत-पूर्व दृश्य को देखने के लिए बड़ी भीड़ एकत्र होगई। बड़ा कोलाहल मचा। सभी उस दृश्य को देखने लगे। गुसाईंजी भी आश्रम से बाहर निकल आये। उनके मैदान में आते ही आकाश में जयजयकार की ध्वनि हुई। दिव्य रूप धारण करके विमान पर चढ़कर वह प्रेत वैकुण्ठ को गया। गोस्वामीजी के दर्शन के प्रताप से विधि की वामता मिट गई। वनखण्डी पृथ्वी पर उतर आये। उन्हों ने मुनिराज के चरणकमल को छूकर प्रणाम किया, सब वृत्तान्त कह सुनाया और सेवा में रहने लगे।

नैमिषारण्य, वृन्दावनादि की यात्रा।

एक दिन वनखण्डी ने प्रार्थना की—"नैमिषारण्य प्राचीन सिद्ध पृष्ठ है। उसके प्रायः सब तीर्थ लुप्त होगये हैं। उनके पुनः स्थापन की मेरी एकान्त इच्छा है। यह कार्य बड़ा कठिन था। परन्तु भगवत् की दया से मेरा मार्ग प्रशस्त होगया है। प्रेत का दिया हुआ द्रव्य इस कार्य के लिये पर्याप्त है और लुप्त तीर्थों का पता बताने के लिए जो आप्त पुरुषों की आवश्यकता होती है वह भी श्रीचरण के दर्शन से पूरी होगई। अब आप कृपापूर्वक वहाँ चलें और अपने कर कमल से उन्हें स्थापित करें।"

उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके मुनिराज काशी से चले। श्रीअवध में पहुँचकर वहाँ पाँच दिन टिक गए। वहाँ मन्दिरों में गानेवाले गायकों को आपने निज निर्मित "श्रीरामगीतावली" की एक प्रति प्रदान की और मनबोध त्रिपाठी को स्वर्णमयी अयोध्यापुरी का दिव्य दर्शन करा दिया।

वहाँ से चलकर रवनाही में टिके। पुनः शूकरखेत में गए। वहाँ से चलकर सियावार ग्राम में बसे। वहाँ श्रीसीताकूप का मधुरजल पान करके चले और लखनऊ में पहुँचे। गोमती के किनारे उतरे। वहाँ रहते हुए वे कहीं तो दुःखियों का दुःख दूर करते थे, कहीं साधुओं का हृदय आनन्द से भर देते थे, कहीं श्रीलषनलालजी का यशोगान करते थे, कहीं प्रेम में विह्वल होकर नाचने लगते थे, कहीं रामायण का गान कराते थे जिसमें बड़ा उत्साह प्रदर्शित होता था और कोलाहल मचता था, कहीं आर्त्तजनों का ताप हरते थे और कहीं अज्ञानियों के हृदय में ज्ञान का प्रकाश करते थे। जैसे, दामोदर नामक एक भाट को आशीष देकर कवि बना दिया। वह काव्यकला में प्रवीण होकर बहुत धन और सम्मान प्राप्त करने में समर्थशील हुए।

वहाँ से आप मलिहाबाद में आये। वहाँ भक्त व्रजवल्लभ भाट को 'श्रीरामचरित्रमानस' की एक प्रति दी।

फिर कोटरा ग्राम में जाकर भक्तवर अनन्य माधवजी से मिले। "माता प्रति शिक्षा"* सम्बन्धी उनकी कविता सुनकर प्रसन्न हुए और उन्हें भक्ति का स्वरूप बतलाया।

वहाँ से आप बिठूर में गए। वहाँ रात भर रहे। सवेरे स्नान करते हुए पैर पङ्क में फँस गए। तुरत गंगाजी ने हाथ पकड़ कर खींच लिया; क्योंकि वृद्धावस्था ने शरीर को तपा कर उसका रस शुष्क कर दिया था और इस कारण शरीर शक्तिहीन होगया था।

वहाँ से आप संडीले गए। वहाँ गौरीशङ्कर मिश्र के घर को आपने इस लिए प्रणाम किया था कि आगे उसी घरमें स्वयं भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी के सखा मनसुखा का जन्म होगा। कुछ दिनों के बाद सचमुच उसी घर में वंशीधर नामक एक पुत्र पैदा हुआ। वह बालकवि हुआ और गुसांईजी की सरणि से लोगों को उपदेश किया † एवं रास का पद सुनकर शरीर त्याग दिया ‡।

उसको विमान पर चढ़कर स्वर्गारोहण करते हुए खैराबाद के प्रसिद्ध सिद्ध प्रवीण हलवाई ने देखा और अपने सत्संगियों को दिखलाया। वे देखकर निहाल होगए और सनातन उपदेश से कृतार्थ हुए।

मुनिराज जब संडीले से चले तब मार्ग में ठाकुर क्षितिपाल मिले। उन्हों ने अभिमान में चूर होकर दण्डवत् प्रणाम नहीं किया। इसी कारण वे दरिद्रावस्था को प्राप्त हुए। इसी तरह

---

* ऐसो सोच न करिये माता। देवलोक सुर देह धरी जिन किन पाई कुशलाता॥
पराक्रमी को भीषम से करन दानी से दाता। जिनके चक्र चलत है अजहूँ घरी न भई बिलाता॥
मृत्यु बांधि रावण बस राखौ भरो गर्भ भरो हाथा। तेऊ उड़ि उड़ि भये काल बस ज्यों तरुवर के पाता॥
सुनु जननी अब सावधान ह्वै परम पुरातन बाता। माधव अनन्य दास राम कियो कौन काहि से नाता॥

† वंशीधर के उपदेश—

"सुत बित नारि भवन परिवारा। दुखरूपी तोहि सब संसारा॥
जेहि तू मगन सो काम न ऐहैं। अजहुँ अरावत तबहुँ जरैहैं॥"
जिन्हें तू मगन तेरे तिन्हें ताकि देखो नगन कै निकार कै चढ़ाइबे को जीता है।
स्वप्ने की संपदा सुलभ साथ सबही के सोई हित लाग्यो हरिनाम अनहीता है॥
कहै मिश्र बंशीधर कबहूँ न आई मति जैसे चहूँ छहूँ ठहराइ गावै गीता है।
चैन नाहिं परै मोपै तरी ताको चलौ हो अब सीताराम जपि ले जनम जात बीता है॥

‡ रासधारी वचन—

सुधि करत कमलदल नयनन की। वे दिन बिसरि गये मोहन को बाँह उसीसे सयनन की॥

इसी पद को सुनकर वंशीधर ने शरीर त्याग दिया। उनके वंशधर अब भी वर्त्तमान हैं। वह घर भी अबतक उसी रूप में है। वे लोग कहते हैं कि जब वंशीधर सात वर्ष के हुए तब कोई ब्राह्मण जगन्नाथजी के दर्शनार्थ गया। उसे दर्शन नहीं प्राप्त हुआ। स्वप्न हुआ कि जब तू संडीले में जाकर मेरे सखा मनसुखा (जो वंशीधर नाम से जन्मा है) का सीथ प्रसाद खाकर आवेगा तब तुझे दर्शन होगा। वह ब्राह्मण आया और उसने मनसुखा नाम लेकर पुकारा। वंशीधर उस समय सोया हुआ था। चौंक कर उठा, और प्रसाद देकर उसे बिदा किया।

वहाँ के ब्राह्मणों ने गुसाईंजी का अपमान किया, इसलिये वे भी धनहीन होगए और कायस्थों ने सम्मान किया, इससे वे धन-धान्य एवं वंश पाकर सुखी हुए। वहाँ के जुलाहे भी भेंट लेकर आए, मुनिराज के आशीष से वे भी धन-धान्य से सम्पन्न हुए।

इस प्रकार सर्वमान्य ऋषि नैमिषारण्य में पहुँचे। वहाँ तीन महीने रहकर शोधपूर्वक उन्हों ने सब तीर्थों को स्थापित किया और संवत् १६४९ के लगते ही वे पिहानी के शुक्लजी से मिले। वहाँ से खैराबाद में सिद्ध प्रवीण हलवाई को दर्शन देते हुए मिसिरिख को गए। साथ में वनखण्डी और दोचार शिष्य भी थे।

अनन्तर नावपर चढ़कर चले। एक ग्राम का नाम रामपुर सुनकर वहाँ उतर पड़े। परन्तु वहाँ के राजकर्मचारियों ने दुर्व्यवहार किया। अस्तु, सब माल-असबाब वहीं छोड़कर चल-दिये। जब राजा रामसिंह को इसका समाचार मिला तब वे दौड़े और चरणों में पड़े, बिनती करके गुसाईंजी को मना लाये। राजा ने उनका बड़ा सत्कार किया। मुनिराज ने वहाँ श्रीहनुमान्‌जी की स्थापना की और एक वटवृक्ष लगाया। उसका नाम 'वंशीवट' रक्खा और आज्ञा दी कि वहाँ प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष सुदि ५ को रासलीला हुआ करे जो अबतक जारी है।

वहाँ से आप वृन्दावन को गए और श्रीरामघाट पर उतरे। लोग पहले ही से दर्शन के लिये उत्सुक थे। धूम मचगई। अच्छे अच्छे सन्त दर्शनार्थ आये और साधारण नर नारी भी दर्शन पाकर कृतार्थ हुए।

एक दिन श्रीनाभास्वामी से मिलने के लिये आप उनके स्थान पर गए। उन्हों ने आपका बड़ा सम्मान किया। उच्चासन पर पधरा कर विधिवत् पूजा की। पुनः ब्राह्मण, सन्त और स्वामी नाभाजी के साथ आप श्रीमदनमोहनजी के मन्दिर में गए। गोसाईंजी को श्रीरामोपासक जानकर भक्तवत्सल भगवान् ने धनुष बाण धारण करके दर्शन दिया और उन्हें कृतार्थ किया। *

---

* इसके सम्बन्ध में यह दोहा प्रसिद्ध है—

"का बरनउँ छवि आजकी, भले विराजेउ नाथ। तुलसी मस्तक तब नवै, (जब) धनुषबान लेउ हाथ॥"

इसपर आधुनिक लेखकों ने सन्देह प्रकट किया है और लिखा है कि "गुसाईंजी ने कृष्णगीतावली बनाया, सैकड़ों स्थानों पर कृष्णगुणानुवाद किया और स्वयं कृष्णलीला कराते थे, फिर ऐसी द्वेष की बात क्योंकर करें-गे।" परन्तु अब गोसाईंचरित से यह बात स्पष्ट होगई कि गुसाईंजी ने इस विषय में कुछ नहीं कहा। स्वयम् भगवान् ने उनकी निष्ठा का आदर करते हुए श्रीरामरूप से दर्शन दिया। गरुड़ गर्वमोचन के समय श्रीहनुमान्‌जी के आने पर भी भगवान् ने ऐसाही किया था, यह बात पुराण-प्रसिद्ध है। इसके कारण यह घटना असत्य नहीं मानी जासकती। क्योंकि भक्तमाल के टीकाकारने भी इसका उल्लेख किया है और महाराष्ट्र कवि मोरोपन्त ने 'केकावलि' के अन्तर्गत 'तुलसीदासस्तव' में लिखा है "श्रीकृष्ण मूर्ति जेणें केली, श्रीराममूर्ति, सजन हो, रामसुत मयूरम्हणे, त्याच्यां सुयशोमृतान्त मजन हो।" अर्थात् रामसुत मयूर कवि कहते हैं कि सज्जनो! जिन्हों ने (अपनी उत्कट भक्ति के बल पर) कृष्णमूर्ति को राममूर्ति बना दिया; उन (तुलसीदासजी) की उत्तम कीर्ति के अमृत-समुद्र में मैं सदा निमज्जन करूँ, यही मेरी इच्छा है।

इस अद्भुत लीला का समाचार जब बरसाने में पहुँचा तब मुनिराज के आसन पर बड़ी भीड़ लगगई। कुछ श्रीकृष्णोपासकों को, जिनके हृदय में साम्प्रदायिक द्वेष भरा हुआ था, भगवान् के धनुष-बाण धारण करने पर मोह उत्पन्न हुआ। गुसाईंजी ने "जन को प्रण राम न राख्यो कहाँ" * वाली कविता सुनाकर उनका समाधान कर दिया।

अनन्तर श्रीअवध में स्थापित करने के लिये दक्षिण देश से श्रीरामजी की मूर्ति लोग लिये जाते थे। यमुनातट पर, जहाँ गुसाईंजी ठहरे हुए थे, उन लोगों ने विश्राम किया। उदयप्रकाश नामक एक भक्त ब्राह्मण उस मनोहर मूर्ति को देखकर मोहित होगया। उसके मनमें इस बात की प्रबल इच्छा हुई कि वह मूर्ति वहीं स्थापित हो। उसने गुसाईंजी के पास जाकर अपनी इच्छा प्रकट की। अस्तु, जब दक्षिणी लोग श्रीअवध जाने के लिये उस श्रीविग्रह को उठाने लगे तब वह प्रतिमा उनके उठाये उठी ही नहीं। लाचार होकर उन्हें उस मूर्त्ति को वहीं स्थापित करना पड़ा और गुसाईंजी का बताया हुआ "श्रीकौशल्यानन्दन" नाम रक्खा गया।

पुनः कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्रीनन्ददासजी, जो आचार्य्य शेष-सनातनजी के पास पढ़े थे और इस नाते गुसाईंजी के गुरुभाई होते थे, आकर बड़े प्रेम से मिले।

अनन्तर महात्मा हित हरिवंशजी के पुत्र श्रीगोपीनाथजी आये। उनसे गुसाईंजी ने श्रीअवधकी महिमा वर्णन करते हुए कहा कि जिनका कहीं ठिकाना नहीं लगता उन्हें ही श्रीरघुनाथजी अपनी पुरी में बसाते हैं। घर जाकर श्रीगोपीनाथजी ने गोस्वामीजी के भोजन के लिए अमनिया भेजा। गुसाईंजी ने उसे यह कहकर लौटा दिया कि यह सखरा है, अमनिया नहीं है। जब उक्त महान्तजी ने आग्रहपूर्व्वक कहा कि नहीं, ऐसा नहीं है, अभी बाजार से मँगाया है तब गुसाईंजी ने हलवाइयों और वणिकों की दूकानों पर भगवान् बालकृष्ण को सब पदार्थ खाते हुए दिखला दिया।

इस प्रकार लीला दिखलाकर और भक्तों का हृदय आनन्द से भरकर मुनिराज ने श्रीचित्रकूट में जाकर वहाँ कुछ दिन निवास किया।

वहाँ सत्यकाम नामक एक ब्राह्मण गुसाईंजी के पास दीक्षा लेने के लिए आया। परन्तु उसके मन में काम-विकार देखकर आपने उसे शिष्य नहीं किया। वह हठ करके वहाँ टिक गया। एक दिन रात में रानी कदम्बलता दर्शनार्थ आई। उनका सुन्दर मुख अच्छी तरह देखने के लिए उस ब्राह्मण ने दीपक की बत्ती और तेज कर दी। उसकी चपलता देखकर मुनिराज ने उसे उचित शिक्षा दी। वह लज्जित होकर चरणों में पड़ा। मुनि ने कृपा करके उसके मन से उस विकार को दूर कर दिया।

---

* प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रकटे नर केहरि खम्भ महाँ।
ऋषराज ग्रस्यो गजराज कृपा तत्काल विलम्ब किये न तहाँ॥
सुर साखी दैराखी है पाण्डु बधू पट लूटत कोटिन भूप जहाँ।
तुलसी भजु सोच बिमोचन को जन को प्रण राम न राख्यो कहाँ॥

पुनः एक वृद्ध और दरिद्र ब्राह्मण जीवन के कष्ट से तंग आकर श्रीमन्दाकिनीजी में डूबने चला। उसने जरा और दरिद्रता से छुट्टी पाने के लिए आत्महत्या करना ही उचित समझा। उसकी प्राणरक्षा के लिये ऋषि ने उसके हेतु दरिद्रमोचन शिला प्रकट कर दी।

अनन्तर दिल्ली से बादशाह ने अपना ख़वास गुसाईंजी को बुलाने के लिए भेजा। अस्तु, आप दिल्ली के लिये रवाने हुए। मार्ग में यमुनाजी के तट पर एक राजा को उपदेश देकर आपने उसे साधु बना दिया। उसे आपने श्रीराधावल्लभजी की उपासना बतलाई। उसने मन्दिर बनवाकर "श्रीश्यामाश्याम" को उसमें पधराकर भजन किया और भगवत् को रिझा लिया।

आगे चलकर ओड़छे में केशवदासजी ने, जो प्रेतयोनि को प्राप्त होगये थे, मुनिराज को घेरा। आपने दया करके उस योनि से उनका उद्धार कर दिया और वे विमान पर चढ़कर स्वर्ग को गए।

पुनः चरवारि के ठाकुर की कन्या का विवाह एक स्त्री ही से होगया था। जब उसने जाना तब उसे बड़ा दुःख हुआ। कारण यह था कि वरकी माता ने (वह पुत्रहीना थी) उसके जन्म से ही उसे पुत्र कहकर प्रसिद्ध किया था। उसीके अनुसार उसने वेष-भूषा भी रक्खी। जो लोग जान जाते थे उन्हें कुछ द्रव्य देकर अपनी ओर कर लेती थी इसी कारण से धोखा हुआ। विवाह होजाने पर सब हाथ मलमल कर पछताते और रोते थे। उन लोगों ने गुसाईंजी की शरण ली। सन्त को दया लगी। आपने निम्नलिखित क्रम से विश्राम लगाकर तदर्थ 'श्रीरामचरित्रमानस' का नवाह्निक पाठ किया। विश्राम के प्रथम शब्द इस प्रकार हैं:—(१) हिय (२) सत (३) कीन्ह (४) श्यामल (५) रामशैल (६) हारिपरा (७) कह मारुतसुत (८) जहँ तहँ (९) पुण्यं। पाठ समाप्त होतेही वह नारी से नर होगई *। सब लोग आनन्दित हो "जय तुलसी" और "जयजय सीताराम" कहने लगे।

वहाँ से चलकर पांचवें दिन मुनिराज दिल्ली पहुँचे। ख़बर पाकर बादशाह जहांगीर ने तुरन्त दरबार में बुला लिया। सम्मानपूर्वक आसन देकर करामात दिखलाने के लिये बादशाह ने बहुत आग्रह किया। गुसाईंजी के इन्कार करने पर उन्हें क़ैद कर दिया। श्रीहनुमान्‌जी की प्रेरणा से वहाँ असंख्य वानर प्रकट होकर उत्पात मचाने लगे। बेगमों के कपड़े फाड़ डाले और उन्हें नग्न कर दिया। बादशाह को पकड़ कर धड़ाम से पृथ्वी पर पटक दिया। राजमहल में हाहाकार मचगया। बादशाह ने उसी समय गुसाईंजीको बन्दी-गृह से मुक्त कर दिया, चरणों पर गिर कर अपराध क्षमा कराया और पीनस पर चढ़ाकर सम्मान-पूर्वक बिदा किया।

दिल्ली से चलकर आप महावन में आये। रात में आपने अहीरों की टोली में वास किया।

* तुलसी रघुवर सेवतहिं मिटिगो कालो काल। नारि पलटि सो नर भई ऐसे दीनदयाल॥

भगीरथ नामक ग्वाल पर आप रीझ गये और उसे सिद्ध सन्त बना दिया। दसवें दिन आप श्रीअवध पहुँचे। वहाँ दो सप्ताह तक रहकर मार्गश्रम दूर करते रहे।

एक दिन भक्त हरिदासजी ने एक पद गाया। उसमें कुछ अशुद्धियाँ थीं। आपने उसे सुधार दिया और शुद्ध पद गाने का निदेश किया। परन्तु भक्तजी को बोध नहीं हुआ और उन्हों ने कीर्त्तन करना ही बन्द कर दिया। श्रीरघुनाथजी ने गुसाईंजी से स्वप्न में कहा—"मैं हृदय के सुन्दर भाव को ग्रहण करता हूं। मेरी दृष्टि पद के शुद्धाशुद्ध पर नहीं रहती।" तब मुनिराज ने भक्तजी से जाकर कहा—"आप जैसा गाते हैं उसी तरह गाया कीजिए। भगवत् को वही पसन्द है।"

पुनः किसी गायक ने बालचरित्रसम्बन्धी कोई पद गाया। उसे सुनकर आप प्रेम में मग्न होगये और एक पाटाम्बर देकर आपने उसे सन्तुष्ट किया।

अस्तु महात्मा देव मुरारीजी एवं उनके शिष्य मलूकदासजी से मिलते हुए आपने काशी में अपने आश्रम पर पहुँच कर अखण्ड वास किया।

काशी में अखण्डवास

एक बार माघ के महीने में महर्षि गंगाजी में स्नान करके नदी के भीतर ही मंत्र जप रहे थे। वृद्ध शरीर कांप रहा था और रोम खड़े हो गए थे। एक वेश्या किनारे पर खड़ी होकर देख रही थी। जब आप जल से बाहर निकले और वस्त्र पर जल छींटने लगे तब दो बूंद गणिका के ऊपर भी पड़ गए। उसके प्रभाव से वेश्या के मन में वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसको नरक के विचित्र दृश्य दिखने लगे। उसने पाप-कर्म छोड़ दिया और उपदेश लेकर हरिभजन करने लगी।

पुनः हरिदत्त नामक एक महादरिद्र ब्राह्मण, जो गंगाजी के उस पार रहता था, मुनिराज के निकट आया। उसने अपनी विपत्ति कह सुनाई। उसकी दीन दशा पर दया करके ऋषि ने गंगाजीकी स्तुति* की और भगवती भागीरथी ने बहुत सी जमीन उसके लिये छोड़ दी।

गोस्वामीजी तथा भक्तिमार्ग का निन्दक भुलई साहु कलार मर गया। टिकठी पर उसे रखकर लोग उसे फूंकने के लिये ले गए। उसकी स्त्री विलाप करती हुई पीछे पीछे चली। मुनिराज बाहर ही बैठे हुए थे। उसने महाराज को प्रणाम किया। आपने उसे सदासोहागिन रहने का आशीष दिया। तब उसने रोकर अपने वैधव्य की बात जनाई। मुनिराज ने शव को वापस मँगाया और उसके मुख में चरणामृत देकर उसे जिला दिया।

उसी दिन से आपने बाहर बैठना बिल्कुल बन्द कर दिया। तीन कुमार बड़े सुकृती रहे और हमारे ऋषिराज के चरणों में उनकी बड़ी भक्ति थी। एक का नाम हृषीकेश था और वह

---

* बारि तिहारो निहारि मुरारि भये परसे पद पाप लहौंगो।
ईश ह्वै शीश धरौं पै डरौं प्रभु की समता बड़े दोष दहौंगो॥
बरु बारहि बार शरीर धरौं रघुबीर को ह्वै तव तीर रहौंगो।
भागीरथी बिनयों कर जोरि बहोरि न खोरि लगै सो कहौं गो॥

मणिकर्णिका पर रहता था। दूसरे का नाम शान्तिपद था और वह विश्वनाथजी के मन्दिर में रहता था। तीसरे का नाम दातादीन था और वह अन्नपूर्णाजी के मन्दिर में रहता था। तीनों की रहनी-सहनी समान थी। वे नित्य मुनिदर्शन को आते और चरणोदक लेकर घर जाते थे। उनके टेक-विवेक और प्रेम को पहचान कर मुनिराज केवल उन्हीं को कृतार्थ करने के लिये बाहर निकलते थे। उन्हें दर्शन देकर फिर भीतर चले जाते थे। यह देखकर अन्य दर्शक मुनिराज पर पक्षपात का दोष लगाते थे। एक दिन आपने परीक्षा ली और बाहर नहीं निकले। दर्शन के विना व्याकुल होकर तीनों कुमारों ने शरीर त्याग दिया। तब आपने चरणोदक देकर उन्हें जिलाया।

अनन्तर संवत् १६६९ में वैशाखी पूर्णिमा को पूर्ण आयु भोगकर भक्तवर टोडरमलजी ने शरीर त्याग किया। मित्र के विरह में सुधीर मुनि तीन दिनों तक बहुत दुःखी रहे। नेत्रों में जल भर कर मित्र के गुणों को मनहीमन समझते रहे * पांच महीने के बाद आश्विन सुदि त्रयोदशी को स्वर्गीय टोडरमलजी के दोनों पुत्रों के बीच आपने सब जायदाद बाँट कर पंचनामा लिख दिया †

मड़ियाहू के रहनेवाले आशु कवि एवं नख-शिख के कर्त्ता श्रीभीष्मसिंहजी क़ानूनगोय

* चार गाँव को ठाकुरो मन के महामहीप। तुलसी या कलिकाल में अथये टोडर दीप ॥
तुलसी राम सनेह को सिर पर भारी भार। टोडर कांधा ना दियो सब कहि रहे उतार ॥
तुलसी उर थाला विमल टोडर गुनगन बाग। ये दोउ नयनन सींचिहौं समुझि समुझि अनुराग॥
राम धाम टोडर गये तुलसी भये असोच। जियबो मीत पुनीत बिनु यही जानि संकोच ॥

पंचनामे की नकल

† द्विश्शरं नाभिसंधत्ते द्विस्स्थापयति नाश्रितान्। द्विर्ददाति न चार्थिभ्यो रामो द्विर्नैव भाषते॥ १॥
तुलसी जान्यो दशरथहिं धरम न सत्य समान। राम तजो जेहि लागि बिनु राम परिहरे प्रान ॥ २॥
धर्म्मो जयति नाधर्म्मस्सत्यं जयति नानृतम्। क्षमा जयति न क्रोधो विष्णुर्जयति नासुरः॥ ३॥

श्रीपरमेश्वर

सवत् १६६९ समए कुआर सुदि तेरसी वार शुभ दीने लिषीतं पत्र अनंदराम तथा कन्हई के अंश विभाग पूर्वमु आगे जे आग्य दुनहु जने मागा जे आग्य भैशे प्रमान माना दुनहु जने विदित तफसीलु अंश टोडरमलु के माह जे विभाग पदु होतरा—

अंश अनंदराम	अंश कन्हई
मौजे भदैनी मह अंश पाँच तेहि मह	मौजै भदैनी मह अंश पाँच तेहि मह
अंश दुहु आनन्दराम तथा लहरतारा	तीनि अंश कन्हई तथा मौजै शिपुरा
सगरेउ तथा छितुपुरा अंश टोडर मलुक	तथा नदेसरी अंश टोडर मलुक हील
तथा नयपुरा अंश टोडर मलुक हील	हुज्जती नास्ती
हुज्जती नास्ती	
लिषीतं अनंदरामजे ऊपर लिखा से सही	लिषीतं अनंदरामजे ऊपर लिखा से सही
साक्षी राघवराम रामदत्तसुत	साक्षी रामसिंह उद्धवसुत
इत्यादि	इत्यादि

× × × × ×

मुनिराज के दर्शनार्थ आये। दर्शन करके भगवत् को स्मरण करते हुए उन्हों ने शरीर त्याग दिया।

कविगंग आये। उनके अन्तःकरण में स्पर्द्धा के कारण द्वेष भरा हुआ था। उसी द्वेष से प्रेरित होकर उन्होंने गोस्वामीजी को "कठमलिया वञ्चकभक्त" कहा और "हाथी कौन माला जपता था" यह वाक्य रोष-सहित कहते हुए चले गए। मुनिराज शान्तिरस में रँगे हुए थे। न कुछ बोले और न शाप दिया। क्षमा कर गए। उन्हों ने अपने मन में कहा—

[शील गहनि सबकी सहनि कहनि हीय मुखराम।
तुलसी रहिये यहि रहनि सन्त जनन को काम॥]

अनन्तर इस प्रकार भागवतापचार करके जब कविगंग जारहे थे तब मार्ग में एक हाथी मिला। उसने तुरत सूँड से लपेट कर उन्हें यमलोक को भेज दिया।

अब्दुर्रहीमखाँ खानखाना "कवि रहीम" ने बरवै छन्द में रचना करके गोस्वामीजी के पास भेजा। आपने भी उस छन्द को पसन्द किया और उसी सुन्दर सुकोमल वृत्त में "बरवै-रामायण" की रचना की।

पुनः मिथिलायात्रा में रचे हुए "श्रीरामललानहछू" "श्रीपार्वतीमङ्गल" और "श्रीजानकीमङ्गल"—इन तीन ग्रन्थों का सम्पादन करके उन्हें मन्त्रित किया ताकि उनके पाठ से सब लोगों को सुख प्राप्त हो।

अनन्तर आप बाहुपीर से व्याकुल हुए और उसके निवारणार्थ "श्रीहनुमान्बाहुक" की रचना हुई। फिर "वैराग्यसंदीपनी" और "श्रीरामाज्ञाशकुनावली" की रचना हुई।

धीर मुनि ने पहले के रचे हुए छोटे-छोटे ग्रन्थों को फिरसे दुहराया और उन्हें दूसरे से लिखवाया; क्योंकि वृद्धावस्था के कारण आपका शरीर बहुत शिथिल होगया था और उन्हें आप स्वयम् नहीं लिख सकते थे।

संवत् सोलह सौ सत्तर की समाप्ति पर बादशाह जहाँगीर दर्शनार्थ आये। उन्हों ने बहुत धन और धरती देने की इच्छा प्रकट की। परन्तु गुसाईंजी ने उसे अपनी वृत्ति के प्रतिकूल समझकर लेने से इन्कार कर दिया। फिर महाराज बीरबल की चर्चा चली। बादशाह ने उनकी वाग्विलास-पटुता और तीव्र बुद्धि की बड़ी प्रशंसा की। गुसाईंजी ने कहा—"ऐसी अच्छी बुद्धि पाकर भी उन्हों ने अपने को नहीं पहचाना और भगवत्भजन नहीं किया, इसका मुझे दुःख है।"

एक दिन अयोध्यापुरी का एक चोहड़ा (मेहतर) मिला। उसे आपने प्रिय अवधवासी जानकर और साक्षात् उसे रामरूप मानकर प्रेम में विह्वल हो हृदय से लगाया।

एक बार गिरनार के सिद्धवृन्द आकाशमार्ग से जाते हुए श्रीतुलसीआश्रम पर उतरे। गुसाईंजी का दर्शन करके निहाल होगए और सद्भाव से उन्हों ने प्रश्न किया—

" तुमहिं न व्यापे काम, अति कराल कारन कवन ।
कहिय तात सुख धाम, योगप्रभाव कि भक्तिबल ॥"

गोस्वामीजी ने उत्तर दिया—

" योग न भक्ति न ज्ञान बल केवल नाम अधार ।"

इस उपर्युक्त उत्तर को सुनकर प्रसन्नचित्त सिद्ध लोग गिरनार को चले गए ।

एक दिन मुनिराज घाट पर बैठे हुए थे । वहाँ बहुत लोग जमा थे । सत्संग होरहा था । इतने में चन्द्रमणि नामक एक भाट आया और चरण बन्दना करके उसने इस प्रकार बिनती की ।

" पन दो इक भोग विषय अरुभान अब जो रह्यो सो न खसाइयेजू ।
अबलों सब इन्द्रिन लोग हँस्यो अब तो जनि नाथ हँसाइयेजू ॥
मद मोह महाखल काम अनी मम मानस ते निकसाइयेजू ।
रघुनन्दन के पद के सद के तुलसी मोहि काशी बसाइयेजू ॥"

इस विनय को सुनकर गुसाईंजी बहुत प्रसन्न हुए और बोले—" तुम यहाँ सदा सुखपूर्वक वास करके भगवत् गुण गान करते रहो ।

विप्रचन्द्र नामक एक हत्यारा आया । उसने दूर खड़ा होकर तीन बार " श्रीराम नाम " का उच्चारण किया । इष्ट का प्यारा नाम सुनकर आप मगन होगए और तुरन्त उसे हृदयसे लगा लिया । फिर आदरपूर्वक उसे भोजन कराया । और गद्गद कण्ठ से बोले:—

"तुलसी जाके मुखनिते धोखेउ निकसे राम ।
ताके पग की पैतरी मेरे तनु को चाम ॥"

यह समाचार काशी के प्रत्येक गली-कूचे में व्याप्त होगया । ज्ञानी, ध्यानी, वेदपाठी उद्भट विद्वान् सब लोग सन्ध्या समय वहाँ पहुँचे । उन्हों ने पूछा—"भगवन् ! वह हत्यारा विना प्रायश्चित्त के किस प्रकार शुद्ध हुआ ?" श्रीगोस्वामीजी ने कहा:—"श्रीरामनाम के प्रताप से ऐसा हुआ । आप वेद-पुराण में श्रीनाममाहात्म्य बाँच लें ।"

पण्डितोंने कहा—"वेद-पुराण में इसका उल्लेख है सही, परन्तु, उस पर विश्वास नहीं जमता ।"

गोस्वामीजी—"अच्छा, तो जिस प्रकार आप का मन माने वही उपाय बतलाइये ।"

तब पण्डितों ने इसके उत्तर में कहा—"यदि विश्वनाथजी का नाँदिया उसके हाथ से भोजन करले तो सब के मनमें विश्वास जमजाय ।"

मुनिराज के प्रभाव से ऐसा ही हुआ । चारों तरफ से जयजय की ध्वनि होने लगी और निन्दकों* ने बार बार चरणों पर पड़ पड़ कर अपना अपराध क्षमा कराया ।

---

* इसी अवसर पर निन्दकों की निन्दा सुनकर गोस्वामीजी ने यह कविता लिखी थी—

"धूत कहो अवधूत कहो रजपूत कहो जोलहा कहो कोऊ । काहू की बेटी से बेटा न ब्याहब काहू की जाति बिगार न सोऊ ॥ तुलसी सरनाम गुलाम है राम को चाहे कोऊ तो कहै कछु ओऊ । मांगि के खाब मजीठ में सोउब लेबे को एक न देबे को दोऊ ॥

एक ब्राह्मण गुसाईंजी के स्थान पर प्रतिदिन दिनभर लोभवश श्रीरामनाम रटता रहा और सन्ध्या समय स्वयम् श्रीहनुमान्‌जी उसे द्रव्य प्रदान करते रहे।

कमलभव नामक एक भगवत्-दर्शनाभिलाषी ने श्रीराम के दर्शन करा देने के लिये बहुत हठ किया। गुसाईंजीने उससे कहा—"वृक्ष पर से यदि त्रिशूल पर कूदसको अर्थात् यदि प्राण का लोभ संवरण करसको तो क्यों नहीं दर्शन होंगे?" उसने एक विशाल वृक्ष के नीचे त्रिशूल स्थापित किया। फिर उस वृक्ष पर चढ़कर उसपर कूदने के लिये बार बार चेष्टा करता रहा परन्तु उसकी हिम्मत नहीं होती थी। एक पछाहीं अश्वारोही ने उसके इस व्यापार को देखा। उसने उससे उसके विफल उद्योग का कारण पूछा। कमलभव ने अपनी कथा कह सुनाई। सुनकर उसने अपने मनमें विचारपूर्वक निश्चय किया कि महात्मा के वचन कभी असत्य नहीं होसकते। ऐसा विश्वास करके वह पेड़ पर चढ़गया और राम का नाम लेकर त्रिशूल पर कूद पड़ा। भगवान् ने उसी समय उसे दर्शन देकर कृतार्थ कर दिया।

अन्तसमय श्रीहनुमान्‌जी ने गुसाईंजी को तत्त्व-ज्ञान का बोध कराया जिसका सारांश यह है कि श्रीरामनाम वटबीज है और सारी सृष्टि सुविशाल वट वृक्ष के समान उसीमें निहित है।

परधाम यात्रा का शुभ मुहूर्त्त अत्यन्त निकट विचार कर और अपनी दशा पर ध्यान देकर गोस्वामीजी ने पुकारकर कहा—

"रामचन्द्र यश बरनि कै भयो चहत अब मौन।
तुलसी के मुख दीजिये अबहीं तुलसी सोन॥"

इस प्रकार संवत् १६८० में गंगाकिनारे असीघाट पर श्रावण बदि तीज शनिवार को श्रीगोस्वामीजी ने नश्वर शरीर त्याग कर परधाम यात्रा की। *

'मूल गोसाईंचरित" का जो नित्य पाठ करेगा वह गौरीजी, शिवजी और हनुमान्‌जी का कृपाभाजन बनकर अवश्य श्रीरामपरायण होगा।

संवत् १६८७ में कार्तिक शुक्ला नवमी को अपने पाठ करने के लिए श्री वेणीमाधव-दासजी ने इस ग्रन्थ की रचना की।

इति। हरिः ॐ तत्सत्।

बालकरामविनायक
श्रीकनकभवन अयोध्या

---

* अबतक सब लोग यहीं जानते और मानते थे कि श्रावण शुक्ला सप्तमी ही गोस्वामीजीकी निर्वाण तिथि है परन्तु "मूल गुसाईंचरित्रकार के अनुसार वह तिथि श्रावणकृष्ण तीज है। यही ठीक है क्योंकि गोस्वामीजी के परमभक्त और मित्र टोडरमलजी के कुल में अबतक उसी तिथि को गोस्वामीजी का श्राद्ध होता चला आया है। यह बात हमें असी-काशीनिवासी श्रीयुत पं० बिजयानन्द त्रिपाठी से मालूम हुई है और हमनें स्वयम् भी असी पर जाकर इसका अनुसंधान किया और ठीक पाया।

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

अथ मूल गोसाईंचरित

(बाबा वेणीमाधवदासकृत)

सो० सन्तन कहेउ बुझाय, मूलचरित पुनि भाषिये ।
अति संक्षेप सोहाय, कहौं सुनिय नित पाठ हित ॥ १ ॥
चरित गोसाइँ उदार, बरनिसकहिंनहिंसहसफनि ।
हौं मति-मन्द गँवार, किमि बरनौं तुलसी सुयश ॥ २ ॥

ऋषि आदिकवीश्वर ज्ञाननिधी । अवतरित भये जनु आपुबिधी ॥
शत कोटि बखानेउ रामकथा । तिहुँ लोक में बांटेउ शंभु यथा ॥
दश-स्यन्दन वेद दशांगमयं । श्रुति त्रै विधि तीनिउ रानिजयं ॥
श्रीराम प्रणव श्रुति तत्त्व परं । निज अंशनि युत नरदेह धरं ॥
इमि कीन्ह प्रबन्ध मुनीश यथा । हरि कीन्ह चरित्र पवित्र तथा ॥
हनुमन्त प्रणव-प्रिय-प्राण रसै । परतत्त्व रमै तिसु सीस लसै ॥
यहि भांति परात्पर भाव लिये । शुचि राम परत्त्व बखान किये ॥
मुनिराज लखे अद्भुत रचना । कपिराज सों कीन्ह इहै जँचना ॥
यह गुप्त रहस्य है गोइ धरैं । बिनती हमरी न प्रकाश करैं ॥
तब अंजनि-नंदन शाप दियौ । हँसिकै मुनि धारण सीस कियौ ॥

दो० सहन शीलता मुनि निरखि, पवन-कुमार सुजान ।
बहुविधि मुनिहिं प्रशंसि पुनि, दिये अभयवरदान ॥ १ ॥

कलिकाल में लैहहु जन्म जबै । कलिते तव त्राण सदा करबै ॥
तेहि शाप के कारण आदि कवी । तमपुंज निवारन हेतु रवी ॥
उदये हुलसी उदघाटिहिते । सुर सन्त सरोरुह से विकसे ॥
सरवार सुदेश के विप्र बड़े । शुचिगोत पराशर टेक कड़े ॥

शुभ थान पतेजि रहे पुरखे। तेहिते कुल नाम पड़्यो भुरखे॥
यमुना तट दूबन को पुरवा। बसते सब जातिन को कुरवा॥
सुकृती सतपात्र सुधी सुखिया। रजियापुर राजगुरू मुखिया॥
तिनके घर द्वादश मास परे। जब कर्क के जीव हिमांशु चरे॥
कुजसत्तम अष्टमभानु-तनय। अभिजितशनिसुन्दरसांझसमय॥

दो० पन्द्रह सै चउवन विषै, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरेउ शरीर॥ २॥

सुत जन्म बधाव लग्यो बजने। सजने छजने रजने गजने॥
इक दासि कढ़ी तेहि अवसर में। कहिदेव बुलावत हैं घरमें॥
शिशु जन्मत रंचहु रोओ नहीं।सोतोबोलेउरामगिरेउज्योंमहीं॥
अब देखिय दन्त बतीसी जमी। नहिं खोल्हड़ पांति में नेक कमी॥
जस बालक पांच को देखिय जू। तस जन्मतु आ निज लेखियजू॥
अब बूढ़ि भई भरि जन्म नहीं। शिशु ऐसो मैं देखिउं तात कहीं॥
महरी कहती सुनि शंख धुनी। जबहीं सो सभय शिशुनार छुनी॥
जो लुगाइ हतीं कपतीं बकतीं। कोउराकसजामेउकहि भखतीं॥
महराज चलिय अब वेगि घरैं। समुझाय प्रसूति को ताप हरैं॥

दो० उठे तुरत भृगुवंशमणि, सुनत चेरि के वैन।
ठाढ़ प्रसूती द्वार भे, पूरित जल सों नैन॥ ३॥

छंद

पूरित सलिल दृग निरखि शिशु परिताप युत मानस भये।
मनमहँ पुराकृत पाप को परिनाम गुनि बाहिर गये॥
तब जुरे सब हित मित्र बान्धव गणक आदि प्रसिद्ध जे।
लागे विचारन का करिअ नवजात शिशु कहँ कहहिं ते॥ १॥

दो० पंचन यह निर्णय किये, तीन दिवस पश्चात।
जियतरहै शिशु तब करिअ, लौकिक वैदिक बात॥४॥

दशमी पर लागेउ ग्यारस ज्यों। घड़ि आठकरातिगईजबत्यों॥
हुलसी प्रिय दासि सों लागि कहै। सखि प्राण-पखेरु उड़ान चहै॥
अबहीं शिशु लै गवनहु हरिपुर। बसते जहँ तोरिउ सास-ससुर॥
तहँ जोइबि पालबि मोर लला। हरिजू करिहैं सखि तोर भला॥
नाहिं तो ध्रुव जानहु मोरे मुये। शिशु फेंकि पँवारहिं गे भकुये॥
सखि जान न पावै कोऊ बतियां। चलिजाइहु मग रतियांरतियां॥
तेहि गोद दियो शिशु ढारसदै। निज भूषण दैदियो ताहि पठै॥
चुप चाप चली सो गई शिशु लै। हुलसी उर सूनु-वियोग फबै॥
गोहराइ रमेश महेश विधी। विनती करि राखबि मोर निधी॥

दो० ब्रह्ममूहूर्त्त एकादशी, हुलसी तजेउ शरीर।
होत प्रात अन्त्येष्टि हित, लैगे यमुना तीर॥५॥

घड़ि पाँचक बार चढ़े मुनियाँ। निज सासके पायँ गही चुनियाँ॥
सब हाल-हवाल बताय चली। सुनि सास कही बहु कीन्ह भली॥
घर माहिं कलोर को दूध पिया। बिनुमायकोहौशिशुलोसिजिया॥
तहँ पालन सो लगि नेह भरे। जेहिते शिशु रीझइ सोइ करै॥
यहि भांति सों पैंसठ मास गये। शिशु बोलन डोलन योग भये॥
चुनियाँ सुरलोक सिधार गई। डस्योपन्नगज्यों सो कोरार गई॥
तब राजगुरू को कहाव गयो। सुनिकै तिनहूँ दुख मानि कह्यो॥
हम का करिबै अस बालक लै। जेहि पालै जो तासु करै सोइ छै॥
जन्मेउ सुत मोर अभागो महीं। सो जियै वा मरै मोहिं शोच नहीं॥

दो० वेणी पूरब जन्मकर, कर्मविपाक प्रचण्ड।

बिना भोगाए टरत नहिं, यह सिद्धान्त अखण्ड ॥ ६ ॥

छंद

सिद्धान्त अटल अखण्ड भरि ब्रह्मण्ड व्यापित सत यथा।
जहँ मुनिवरन की यह दशा तहँ पामरन की का कथा ॥
निज छति बिचारि न राख कोऊ दया दृग पाछे दियो।
डोलत सो बालक द्वार द्वार बिलोकि तेहि बिहरत हियो ॥ २॥

सो० बालक दशा निहारि, गौरा माई जग-जननि।
द्विज-तिय रूप सँवारि, नितहिं पवाजावहि अशन ॥३॥

दुइ वत्सर बीतेउ याहि रसे। पुर लोगन कौतुक देखि कसे ॥
जिन जोह-जसूस पै आय जकै। परिचय द्विज नारि न पाय थकै॥
चर-नारि हती तहँ सो परखी। जब माय खवाय लला टरखी ॥
परिपायँ करी हठ जान न दे। जगदम्ब अदृश्य भई तब ते ॥
शिव जानि प्रिया व्रत हेतु हियो। जनलौकिकसुलभउपायकियो॥
प्रिय शिष्य अनन्तानन्द हते। नरहरियानन्द सुनाम छते ॥
बसै रामसुशैल कुटी करिकै। तल्लीन दशा अतिप्रिय हरिकै ॥
तिन कहँ भव दर्शन आपु दिये। उपदेशहुँ दै कृतकृत्य किये ॥
प्रिय मानस-रामचरित्र कहे। पठये तहँ जहँ द्विजपुत्र रहे ॥

दो० लै बालक गवनहु अवध, विधिवत मंत्र सुनाय।
मम भाषित रघुपति कथा, ताहि प्रबोधहु जाय ॥ ७ ॥
जब उघरहिं अन्तर्दृगनि, तब सो कहिहि बनाय।
लरिकाईं को पैरिबो, आगे होत सहाय ॥ ८ ॥

सो० शम्भु वचन गम्भीर, सुनि मुनि अति पुलकित भये।
सुमिरि राम रघुवीर, तुरत चले हरिपुर तके ॥ ४ ॥

पुर हेरि के बालक गोद लिये । द्विजपुत्र अनाथ सनाथ किये ॥
कह्यो रामबोला जनि सोच करै । पलिहैं पोसिहैं सब भांति हरे ॥
सो तो जानेउ दीन-दयालु हरी । मम हेतु सुसन्त को रूप धरी ॥
पुरलोगन केर रजाय लिये । सह बालक सन्त पयान किये ॥
पन्द्रह सै इकसठ माघ सुदी । तिथि पंचमि औ भृगुवार उदी ॥
सरयू तट विप्रन यज्ञ किये । द्विजबालक कहँ उपवीत दिये ॥
सिखये बिनु आपुइ सो बरुआ । द्विजमंत्र सवित्रि सुउच्चरुआ ॥
विस्मययुत पंडित लोग भये । कहे देखत बालक विज्ञ ठये ॥

दो० नरहरि स्वामी तब किये, संस्कार विधि पांच ।
रामंत्र दिये जेहि छुटै, चौरासी को नाच ॥ ९ ॥

दस मास रहे मुनिराज तहाँ । हनुमान सुटीला विराज जहाँ ॥
निज शिष्यहिं विद्या पढ़ाय रहे । अरु पानिनि सूत्र घोषाय रहे ॥
लघु बालक धारनशक्ति जगी । अनुरक्ति सभक्ति दिखान लगी ॥
हरषे गुण ग्राम विचारि हिये । पद चापत आशिष भूरि दिये ॥
जबते जन्मेउ तबते अबलों । निज दीन दशा कहिगो गुरु सों ॥
ठक से रहिगे सुनि बालकथा । करुणा उरमें उपजाइ व्यथा ॥
मुनि धीर भरे दृग नीर रहे । गुरु शिष्य दशा कवि कौन कहे ॥
समुझाय बुझाय लगाय हिये । कहि भावि भलाइ प्रशांत किये ॥
हरिप्रिय ऋतु लाग हेमन्त जबै । सिख संग लै कीन्ह पयान सबै ॥

दो० कहत कथा इतिहास बहु, आये शूकरखेत ।
संगम सरयू घाघरा, सन्त जनन सुख देत ॥ १० ॥

तहँवाँ पुनि पांचउ वर्ष बसे । तपमें जप में सब भांति रसे ॥
जब शिष्य सुबोध भयो पढ़िकै । मति युक्ति-प्रवीन भई गाढ़िकै ॥

सुधि आइ महेश सिखावनकी। परतत्त्व प्रबन्ध सुनावन की॥
तब मानस-राम-चरित्र कहे। सुनिकै मुनि बालक तत्त्व गहे॥
पुनि-पुनि मुनि ताहि सुनावतभे। अतिगूढ़ कथा समुझावत भे॥
यहि भांति प्रबोधि मुनीश भले। वसुपर्व लगे सह शिष्य चले॥
विश्राम अनेक किये मगमें। जल-अन्नको खेल मच्योजगमें॥
कतहूं सुकृतिन उपदेश करैं। कतहूँ दुखिया दुखदाप हरैं॥

दो० विचरत विहरत मुदित मन, आये काशी धाम।
परम गुरू सुस्थान पर, जाय कीन्ह विश्राम॥ ११॥

सुठि घाट मनोहर पंच पगा। गाँगिया कर कौतुक-केलि भगा॥
पुनि सिद्ध सुप्रष्ठ प्रतिष्ठित सो। बहुकाल यतीन्द्र रहे जु नमो॥
तहँवाँ हते शेष सनातन जू। वपुवृद्ध वरञ्च युवा मनजू॥
निगमागम पारग ज्योति फबै। मुनिसिद्ध तपोधन जान सबै॥
तिन रीझ गए बटुपै जबही। गुरुस्वामिसों सुन्दर बात कही॥
निज शिष्यहिं देइये मोहि मुनी। तिसु वृत्ति दुनी नहिं ध्यान धुनी
हौं ताहि पढ़ाउब वेद चहूँ। अरु आगम दर्शन पाठ छहूँ॥
इतिहास पुराण रु काव्यकला॥ अनुभूत अलभ्य प्रतीक फला॥
विद्वान महान बनाउब जू। सुनि आपु महासुख पाउब जू॥

दो० आचारज बिनती सुनत, पुलकित भे मुनिधीर।
बटु बुलाय सौंपत भये, पावन गंगा तीर॥ १२॥
कछु दिन रहिगे यति प्रवर, पढ़न लग्यो बटुभास।
चित्रकूट कहँ तब गये, लखि सब भांति सुपास॥ १३॥

बटु पन्द्रह वर्ष तहाँ रहिकै। पढ़ि शास्त्र सबै महिकै गहिकै॥
करिकै गुरु-सेवा सदय तनसे। गत देह क्रिया करि सौ मनसे॥

चले जन्म थलीको विषादभरे । पहुँचे रजियापुर के बगरे ॥
निज भौन विलोकेउ ढूह्-ढहा । कोउ जोवन जोग न लोग रहा॥
इक भाट बखानेउ ग्राम कथा । द्विजवंशको नाश भयो जु यथा ॥
कह्यौ जादिन नाइ से राज-गुरू । तब त्यागकी बोलेउ बात करू ॥
तहँ बैठु रह्यौ तप तेज-धनी । तिन शाप दियो गहि नागफनी ॥
षट मासके भीतर राजगुरू । दस वर्ष के भीतर वंश मरू ॥
सुनि कै तुलसी मन शोक छये । करि श्राद्ध यथा विधि पिंड दये ॥

दो० पुर लोगन अनुरोध ते, दियो भवन बनवाय ।
रहन लगे अरु कहत भे, रघुपति कथा सुहाय ॥ १४ ॥

यमुना पर तीर मों तारिपतो । भरद्वाज सुगोत को विप्र हतो ॥
कातिकी दुतिया कर न्हान लगे । सकुटुम्ब सो आयउ संग सगे ॥
करि मज्जन दान गए तहँवां । हुलसी-सुत बांच कथा जहँवां ॥
छवि व्यास विलोकि प्रसन्न भये । सब लोगन बूझि स्वठाम गये ॥
पुनि माधव मासमें आय रहै । कर जोरि कै सुन्दर बात कहै ॥
महराति जबै निगिचाय रही । सपने जगदम्ब चेताय रही ॥
शुभ राउर नाँव बताय रही । सब ठांव-ठिकान जताय रही ॥
हौं हेरत हेरत आयों इतै । मोहिं राखिय हौं अब जाउँ कितै॥
दुहिता मम व्याहिय देवि कहै । कहि कै अस सो पद कंज गहै ॥

दो० सुनत विनय सोचन लगे, पुनि बोले सकुचाय ।
ब्याह बरेखी ना चहौं, अनत पधारिय पाय ॥ १५ ॥

द्विज मानै नहीं धरना धरिकै । नहिं खाय-पियै ससना करिकै ॥
दुसरे दिन जब स्वीकार कियो । तब विप्र हठी जल अन्न लियो ॥
घर जाय सोधाय के लग्न धरो । उपरोहित भेजि प्रशस्त करो ॥

इतते पुरलोगन योग दिये । सब साज समान बरात किये ॥
पन्द्रह से पार तिरासि विषै । शुभ जेठ सुदी गुरु तेरस पै ॥
अधिराति लगै जु फिरी भँवरी । दुलहा दुलही की पड़ी पँवरी ॥
ललना मिलि कोहबर माहिं रसीं । वरनायक पंडित सो विहसीं ॥
तिसरे दिन मांडवचार भयो । शुचिभक्ति सोदान-दहेज दयो ॥

दो० बिदा करा दुलही चले, पंडितराज महान ।
आये निज पुर अरु किये, लौकिकचार विधान ॥१६॥

पुर नारि जुरीं गुरुभौन गईं । दुलही मुख देखि निहाल भईं ॥
हुलसीसुत देखेउ नारि छटा । मुख-इन्दु ते घूँघट कोर हटा ॥
मन प्राण-प्रिया पर वारि दये । जस कौशिक मेनका देखि भये ॥
दिन राति सदा रँग राते रहैं । सुख पाते रहैं ललचाते रहैं ॥
शर वर्ष पुरस्मर चाव चये । पल ज्यों रसकेलि में बीत गये ॥
नहिं जान दें आपु न जाय कहीं । पल एक प्रिया बिनु चैन नहीं ॥
दुखिया जननी मुख देखन को । पितु ग्राम सुआसिनि पेखन को ॥
सह बन्धु गई चुपके सो सती । बरखासन ग्राम हते जु पती ॥
जब सांझ समय निज गेह गये । घर सून निहारि ससोच भये ॥
तब दासि जनायउ सौं कै कै । निज बन्धु के संग गई मैकै ॥
सुनते उठि कै ससुराल चले । अति प्रेम प्रगाढ़ विशेष पले ॥
कौनिउ विधि ते सरि पार किये । पहुँचे सब सोवत द्वार दिये ॥

छंद

दै द्वार सोवहिं लोग नींद तुराइ गोहरावन लगै ।
स्वर चीन्हि द्वार कपाट खोली झमकि भामिनि सगबगै ॥
बोली बिहँसि बानी बिमल उपदेश सानी कामिनी ।

कस बस चले प्रेमांध ज्यों नहिं सुधि अँधेरी यामिनी ॥३॥

दो० हाड़-मांस को देह मम, तापर जितनी प्रीति ।
तिसु आधो जो रामप्रति, अवशि मिटिहि भवभीति ॥१७

सो० लाग वचन जिमि बान, तुरत फिरे बिरमे न छिन ।
सोचेउ निज कल्यान, तब चित चढ़ेउ जो गुरु कहेउ ५॥

दो० "नरहरि कंचन-कामिनी, रहिये इनते दूर ।
जो चाहिय कल्यान निज, राम दरस भरि पूर" ॥८॥

सो० लखि रुख तिय अकुलाय, बोली वचन सकोप तब ।
त्याग न उचित कहाय, बिनु तिय मुख खरिया खचे ॥६॥

उठि दौरि मनावन सार गयो । पिछु आये रह्यो जब भोर भयो ॥
नहिं फेरे फिरे फिरि आयो घरे । भगिनी निज मूर्च्छित देख्यो परे ॥
मुर्च्छा जु हटी उठि बोली सती । पिय को उपदेशन आइ हती ॥
पिय मोर पयान कियो बन को । हौं प्रान पठाउँ तजौं तनु को ॥
कहिकै अस सो निज देह तजी । सुर लोक गई पति धर्म ध्वजी ॥
शत पन्द्रह युक्त नवासि सरै । सु अषाढ़ बदी दसमीहुँ परै ॥
बुध बासर धन्य सो धन्य घरी । उपदेसि सती तनु त्याग करी ॥
भयो सोर कहैं कोउ सिद्ध मुनी । परमारथबिन्दक तत्त्व गुनी ॥
द्विजगेह में शारद देह धरी । रति रंग रमा रस राग हरी ॥

दो० कोउ कह तियकी मुखनि ते, बोलेउ श्रीभगवान ।
मोह निवारेउ भक्त कर, साहिब शील निधान ॥१६॥

हुलसी-सुत तीरथराज गये । अरु मंजि त्रिवेनि कृतार्थ भये ॥
गृहिवेष विसर्जन कीन्ह तहाँ । मुनिवेष सँवारि चले फफहाँ ॥
गढ़ हेलि रु धेनुमती तमसा । पहुँचे रघुवीरपुरी सहसा ॥

तहँवाँ चौमासकलौं बसिकै। प्रिय सन्त-अनन्त विभूरसिकै ॥
चले वेगि पुरी कहँ धाम महा। विश्राम पचीसक बीच रहा ॥
तिनमा दुइ ठाम प्रधान गुनो। वरदान रु शापकी बात सुनो ॥
घड़ि चारि दुबौलिमें वास किये। हरिराम कुमारहिं शाप दिये ॥
सो प्रसिद्ध सुप्रेत भयो तेहिते। हरिदर्शन आपु लही जेहिते ॥
पुनि चारु कुँवरि वरदान दियो। जिन सन्त सुसेवा लियो रु कियो॥

दो० जगन्नाथ सुखधाम में, कछुक दिना करि वास।
लिखे वाल्मीकी स्वकर, जब तब लहि अवकास ॥२०॥

रामेश्वर कहँ कीन्ह पयाना। तहँते द्वारावति जग जाना ॥
बहुरि तहांते चलि हरषाई। बदरी धामहिं पहुँचे जाई ॥
नारायण ऋषि व्यास सोहाये। दरस दिये मानस गुन गाये ॥
तहँते अति दुर्गम पथ लयऊ। मानसरोवर कहँ चलिगयऊ॥
जियको लोभ तजै जो कोई। सो तहँ जाइ कृतारथ होई ॥
तहँ करि दिव्य सन्त सत्संगा। जाते होवै भवरस भंगा ॥
दिव्य सहाय पाय मुनिराई। जात रुपाचल देखेउ जाई ॥
नीलाचल कर दर्शन कीन्हे। परम सुजान भुशुंडिहि चीन्हे ॥
लौटि सरोवर पै पुनि आये। गिरि कैलास प्रदच्छिन लाये ॥

दो० इमि करि तीर्थाटन सफल, निवसे भववन आय।
चौदह बरिस रु मासदस, सतरह दिवस बिताय॥२१॥

टिकिके तहँ चातुर्मास किये। नित रामकथा कहि हर्ष हिये ॥
वनवासि सुसन्त सुनै नित सो। मुनि होहिं अनन्दित ते चितसों॥
वनमां इक पिप्पल रूख हतो। तिसु ऊपर प्रेत निवास छतो ॥
जल शौच गिरावहिं तासु तरे। सोइ पानिय प्रेत पियास हरे ॥

जब जानेउ सो कि अहैं मुनिये । जिनबालपने मोहि शापदिये ॥
तब एकदिना सो प्रतच्छ कह्यो । कहिये सो करौं जस भाव अह्यो ॥
तुलसीसुत बोलेउ मोरे मना । रघुनन्दन दर्शन को चहना ॥
सुनि प्रेत कह्यौ जु कथा सुनिबै । नित आवत अंजनिपूत अजै ॥
सबते प्रथमे सो तो आवहिं जू । सब लोगन पाछे सो जावहिं जू ॥

सो० वेष अमंगल धारि, कुष्ठी को वपु जानियहि ।
अवसर नीक विचारि, चरणगहियहठठानियहि ॥ ७॥

छंद

हठठानि तेहि पहिचानि मुनिवर विनय बहुविधि भाषेऊ ।
पद गहि न छाड़ेउ पवनसुत कह कहहु जो अभिलाषेऊ ॥
रघुवीर दर्शन मोहि कराइय मुनि कहेउ गद्गद वचन ।
तुम जाइ सेवहु चित्रकूट तहां दरस पैहहु चखन ॥ ४ ॥

दो० श्री हनुमन्त प्रसंग यह, विमल चरित विस्तार ।
लहेउ गोसाईं दरसरस, विदित सकल संसार ॥ २२ ॥

चित चेति चले चितकूट चितय । मन माहिं मनोरथ को उपचय ॥
जब सोचहिं आपन मंद कृती । पग पाछ पड़ै न रहैजु धृती ॥
सुधि आवत राम स्वभाव जबै । तब धावत मारग आतुर ह्वै ॥
इहि भांति गोसाइँ तहां पहुँचै । किय आसन राम सुघाटहि पै ॥
इक बार प्रदच्छिन देन गये । तहँ देखत रूप अनूप भये ॥
युग राजकुमार सु अश्व चढ़े । मृगया वन खेलन जात कढ़े ॥
छवि सो लखि कै मन मोहेउ पै । अस को तनुधारि न जानि सकै ॥
हनुमन्त बतायउ भेद सबै । पछिताइ रहे ललचाइल वै ॥
तब धीरज दीन्हेउ वायुतनय । पुनि होइहि दरसन प्रातसमय ॥

दो० सुखद अमावस मौनिया, बुध सोरह सै सात।
जा बैठे तिसु घाट पै, विरही होतहि प्रात॥ २३॥

सो० प्रकटे राम सुजान, कहेउ देहु बाबा मलय।
शुक वपु धरि हनुमान, पढ़ेउ चेतावनि दोहरा॥ ८॥

दो० चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर।
तुलसिदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुवीर॥ २४॥

छंद

रघुवीर छवि निरखन लगे बिसरी सबै सुधि देह की।
को घिसै चन्दन दृगन ते बहि चली सरित सनेह की॥
प्रभु कहेउ सो नाहिं चेतेउ स्वकर चंदन लै लिये।
दै तिलक रुचिर ललाट पै निज रूप अन्तर्हित किये॥ ५॥

दो० विरह व्यथा तलफत पड़े, मगन ध्यान इकतार।
रैनि जगायउ वायुसुत, दीन्ही दशा सुधार॥ २५॥

शुक पाठ पढ़ावत नारि नरा। करतल पर लै शुक को पिंजरा॥
हुलसीसुत भक्ति महामहिमा। तत्कालहिं छाय रही महि मां॥
दिन एक प्रदच्छिन कामद दै। पहुँचे सौमित्र पहाड़िहिं पै॥
तहँ श्वेतक सर्प पड़्यो मगमें। सित गात मनोहर या जगमें॥
तिसु ओर विलोकि गोसाइँ कहै। चन्द्रोपम सुन्दर नाग अहै॥
हरि सृष्टि विचित्र कहै न बनै। निगमागम शारद शेष भनै॥
ऋषि दृष्टि पड़े तिसु पाप गयो। तब पन्नग-ज्ञानि ललात भयो॥
मोहि छूइकै तारिय नाथ अबै। छुअतेहि गयो सो भुजंग अथै॥
योगश्रिमुनी तहँ छीत भये। निज पूर्व कथा कहि वास लये॥

दो० यह प्रभाव मुनिनाथ कर, सुनि गुनि सन्त सुजान।
आवन लागे दरस हित, भीर भयो ऋषि थान ॥२६॥

बड़ि भीर निहारि गुफा में ढुके। बहिरन्तर हानि विचारि लुके ॥
मुनि आवहिं योगि तपी रु यती। बिनु दर्शन जाहिं निरास अती ॥
दरियानँद स्वामि हुँ आय रहे। निज आसन टेकि जमाय रहे ॥
लघुशंका के हेतु गोसाइँ कढ़े। करजोरि सो स्वामि भये जु ठढ़े ॥
कहे नाथ है होत अनीति बड़ी। छमिये कहिबो मम बात कड़ी ॥
लघुशंका लगै बहिरात हैं जू। सुनि साधु गिरा छिपि जात हैं जू ॥
दुख पावत सज्जन हैं तेहिते। बिनती हौं करौं सुनिये यहिते ॥
हौं देव मचान बँधाय अबै। तेहि ऊपर आसन नाथ फबै ॥
करि दर्शन होब निहाल सबै। सुठि सन्त समागम होइ जबै ॥

दो० बिनती दरियानन्द की, मानि सजाय मचान।
बैठत दिनभर लहत सुख, साधक सिद्ध सुजान ॥२७॥

नित नव सत्संग उमाह बढ़ै। शुचि सन्त हृदय रसरंग चढ़ै ॥
नित नित्य विहारहुँ देखत हैं। मृगया कर कौतुक पेखत हैं ॥
वृन्दावन ते हरिवंश हितू। प्रियदासनवलनिजशिष्यभृतू ॥
पठये तिन आय जोहार किये। गुरुदत्त सुपोथि सप्रेम दिये ॥
यमुनाष्टक राधा सुधानिधि जू। अरु राधिक तंत्र महा विधि जू ॥
अरु पाति दये हित-हाथ लिखी। सोरह सै नव जन्माष्टमि की ॥
तेहि माहिं लिख्यो बिनती लहुरी। सोइ बात मुखागर सो कहुरी ॥
रजनी महरास की आवत जू। चित मोर सदय ललचावत जू ॥
रसिकै रस मों तनु-त्याग चहौं। मोहि आसिष देइय कुंज लहौं ॥

सो० सुनि बिनती मुनि नाथ, एवमस्तु इति भाषेऊ।

तनु तजि भये सनाथ, नित्य निकुंज प्रवेश करि ॥ ६ ॥

दो॰ संडीला ते आय कै, वसु स्वामी नँदलाल ।
पढ़े राम रक्षा विवृति, जो भक्तन को ढाल ॥ २८ ॥

षट मास रहै सत्संग लहै । चलती बिरियाँ कछु चिह्न चहै ॥
दियो सालग्राम की मूर्त्ति भली ॥ निजहस्तलिखितकवचऔकमली
इमि यादव माधव वेणि उभय । चित्सुखकरुणेश आनंदसदय ॥
तपसी सुमुरारि उधार यती । विरही भगवन्त सुभाग्यवती ॥
विभवानँद देव दिनेश मिले । अरुदक्षिण देश केस्वामि पिले ॥
सब रंग रँगे सत्संग पगे । अहमादि कुनींद सुषुप्त जगे ॥
कहे धन्य गोसाइँ जु जन्म लये । लहि दर्शन हौं कृतकृत्य भये ॥
दृग नीर ढरै नहिं बोल सरै । सब जाहिं सुप्रेम प्रमोद भरे ॥
वसु संवत साधु समागम मों । कटिगोनहिंजानिपस्योकिमिधों ॥

दो॰ सोरह से सोरह लगे, कामद गिरि ढिग वास ।
शुभ एकान्त प्रदेश महँ, आये सूर सुदास ॥ २९ ॥
पठये गोकुलनाथ जी, कृष्ण रंग में बोरि ।
दृग फेरत चित चातुरी, लीन्ह गोसाईं छोरि ॥ ३० ॥

कवि सूर दिखायउ सागर को । शुचि प्रेम कथा नट नागरको ॥
पद द्वय पुनि गाय सुनाय रहै । पदपंकज पै सिर नाय कहे ॥
अस आसिष देइय श्याम ढरैं । यहि कीरति मोरि दिगन्त चरै ॥
सुनि कोमल बैन सुदादि दिये । पद-पोथि उठाइ लगाये हिये ॥
कहै श्याम सदा रस चाखत हैं । रुचि सेवक की हरि राखत हैं ॥
तनिको नाहिं संशय है यहि मा । श्रुति शेष बखानत हैं महिमा ॥
दिन सात रहै सत्संग पगे । पदकंज गहै जब जान लगे ॥

गहि बांह गोसाइँ प्रबोध किये । पुनि गोकुलनाथ को पत्र दिये ॥
लै पाति गये जब सूर कवी । उर में पधराय के श्याम छवी ॥
दो॰ तब आयो मेवाड़ ते, विप्र नाम सुखपाल ।
मीरा बाई पत्रिका, लायो प्रेम प्रवाल ॥ ३१ ॥
पढ़ि पाती उत्तर लिखे, गीत कवित्त बनाय ।
सब तजि हरि भजिबो भलो, कहि दिय विप्र पठाय ॥ ३२ ॥
तड़के इक बालक आन लग्यो । सुठि सुन्दर कंठ सों गान लग्यो ॥
तिसु गान पै रीझि गोसाइँ गये । लिखि दीन्ह तबै पद चारि नये ॥
करि कंठ सुनायउ दूजे दिना । अरि जाय सो नूतन गीत विना ॥
मिशु याहि बनावन गीत लगे । उर भीतर सुन्दर भाव जगे ॥
जब सोरह से बसु बीस चढ़यो । पद जोरि सबै शुचि ग्रन्थ गढ़्यो ॥
तिसु रामगितावलि नाम धर्यो । अरु कृष्णगितावलि रांचि सर्यो ॥
दोउ ग्रन्थ सुधारि लिखै रुचि सों । हनुमन्तहिं दीन सुनाय जिसों ॥
तब मारुति ह्वै कै प्रसन्न कह्यौ । करि प्यान अवधपुर जाइ रह्यौ ॥
इमि इष्ट को आयसु पाइ चले । बिरमे सुठि तीरथराज थले ॥
दो॰ तेहि अवसर उत्तम परब, लागो मकर नहान ।
योगी तपी यती सती, जुरैं सयान अजान ॥ ३३ ॥
तेहि पर्व ते पाछे गये दिन छै । वट छांह तरे जु लख्यो मुनि द्वै ॥
तपपुंज दोऊ मुख कांति तपै । छवि छाय छपाकर छंद छपै ॥
करि दंड प्रणाम सुदूरहिं ते । करजोरि कै ठाढ़ भये तहिं ते ॥
मुनि सैन सों एक हँकारि लियो । अपने ढिग आसन चारु दियो ॥
तेहि टारि कै भूमि में बैठि गये । परिचय निज दै परिचाय लये ॥
सोइ रामकथा तहँ होत रह्यौ । गुरु शूकरखेत में जौन कह्यौ ॥

विस्मय युत बूझेउ गुप्त मता । कहि जागबलिक मुनि दीन्ह बता ॥
हर रंचि भवानिहिं दीन्ह सोई । पुनि दीन्ह भुशुण्डिहिं तत्तगोई ॥
हौं जाइ भुशुण्डिते ताहि लहेउँ । भरद्वाज मुनी प्रति आइ कहेउँ ॥

दो० यहि विधि मुनि परितोष लहि, पद गहि पाय प्रसाद ।
सुनै युगल मुनिवर्य कर, तहाँ विमल संवाद ॥ ३४ ॥

तेहि ठांव गये जब दूजे दिना । थल सून निहारु मुनीस विना ॥
वट छांह न सो नहिं पर्णकुटी । मन विस्मय बाढ़ेउ मर्म पुटी ॥
उर राखि उभय मुनि शील चले । हरि प्रेरित काशि की ओर ढले ॥
कछु दूरि गये सुधि आइ जबै । मन सोचत का करिये जु अबै ॥
जो भया सो भया अब याहि सधै । हर दर्शन कै चलि हौं अवधै ॥
मन ठीक किये मग आगु बढ़े । चलिकै पुनि सुरसरि तीर कढ़े ॥
तब तीरहिं तीर चले चित दे । भइ सांझ जहां सो तहां टिकिगे ॥
दिग वारि पुरा बिच सीतामढ़ी । तहँ आसन डारत वृत्ति चढ़ी ॥
नहिं भूख न नींद विछिप्त दशा । उर पूरब जन्म प्रसंग बसा ॥

दो० सीतावटतर तीन दिन, बसि सुकवित्त बनाय ।
बंदि छोड़ावत बिंध नृप, पहुँचे काशी जाय ॥ ३५ ॥
भगत शिरोमणि घाटपै, विप्रगेह करि वास ।
रामविमल यश कहि चले, उपज्यो हृदय हुलास ॥ ३६ ॥

दिन में जितनी रचना रचते । निसि माहिं सुसंचित ना बचते ॥
यह लोपक्रिया प्रतिद्यौस सरै । करिये सो कहा नहिं बूझि परै ॥
अठयें दिन शम्भु दिये सपना । निज बोलि में काव्य करो अपना ॥
उचटी निंदिया उठि बैठु मुनी । उर गूँजि रह्यौ सपने की धुनी ॥
प्रगटे शिव संग भवानि लिये । मुनि आठहु अंग प्रणाम किये ॥

शिव भाषेउ भाषा मेंकाव्य रचो। सुर वानि केपीछे न तात पचो॥
सब कर हित होइ सोई करिये। अरु पूर्व प्रथा मत आचरिये॥
तुम जाइ अवधपुर वास करो। तहँई निज काव्य प्रकाश करो॥
ममपुण्य प्रसाद सोंकाव्य-कला। होइ है समसामऋचा सफला॥

सो॰ कहि अस शम्भु भवानि, अन्तर्धान भये तुरत।
आपन भाग्य बखानि, चले गोसाईं अवधपुर॥१०॥

दो॰ जेहि दिन साहि सभानमें, उदय लह्यो सन्मान।
तेहि दिन पहुँचे अवध में, श्रीगोसाईं भगवान॥३७॥

सरयू करि मज्जन गव दिन में। विचरे पुलि नारन वीथिन में॥
एक सन्त मिले कहने सो लगे। थल रम्य लखैं महवीरि लगे॥
लै संग सो ठाम दिखायो भले। वटकी विटपावलि पुण्य थले॥
तिन मां वट एक विशाल थही। तिसु मूल में वेदिका सोहि रही॥
तिसु ऊपर बैठु सिधासन से। इक सिद्ध प्रसिद्ध हुतासन से॥
थल देखि लोभायो गोसाईं मना। बसिये यहि ठाँव कुटीर बना॥
जब सिद्ध के सन्निधि मों गुदरे। तजि आसन सो जय जय उचरे॥
सो कह्यो गुरु मोर निदेश दियो। तेहि कारन हौं यह वास लियो॥
गुरु मोर बतायउ मर्म सबै। सो तो देखत हौं परतच्छ अबै॥

कुं॰ ममगुरु कहेउ कि करहि किन सिद्ध पृष्ठ थल वास।
कछु दिन बीते कहहिंगे हरियश तुलसीदास॥
हरियश तुलसीदास कहहिंगे यहि थल आई।
आदि कवी अवतार वायुनन्दन बल पाई॥
राजराज वट रोपि दियो मरजाद समूचम।
बसि यहँ ठाहर ठाटु मानि अति हित शासन मम॥१॥

सो० जब ऐहैं यहि ठाम, हुलसीसुत तिसु हेतु हित।
सौंपि कुटी आराम, तनु तजि ऐहहु मम निकट॥ ११॥

उपदेश गुरू मोहि नीक लग्यो। बहु जन्म पुरातन पुण्य जग्यो॥
बसिकै रसिकै तपिकै चउरी। हौं जोहत बाट रह्यौं रउरी॥
अब राजिय गाजिय नाथ यहाँ। हौं जाब बसे गुरु मोर जहाँ॥
कहिके अस वेदिका ते उतर्‍यो। सिर नाइ सिधारेउ दूरि पर्‍यो॥
तहँ आसन मारिकै ध्यान धर्‍यो। तिसु योग हुतासन गात जर्‍यो॥
यह कौतुक देखि गोसाईं कहै। धनुधारि! तेरी बलिहारि अहै॥
निवसे तहँ सौख्य सुपास लहै। दृढ़ संयम जो मम योग गहै॥
पय पान करैं सोउ एक समय। रघुवीर भरोस न काहुक भय॥
युग वत्सर बीते न वृत्ति डग्यो। इकतीस को संवत आइ लग्यो॥

दो० रामजन्म तिथि बार सब, जस त्रेता महँ भास।
तस यकतीसा महँ जुरै, योग लग्न ग्रह रास॥ ३८॥
नौमी मंगल वार शुभ, प्रात समय हनुमान।
प्रगटि प्रथम अभिषेक किय, करन जगत कल्यान॥ ३९॥
हर, गौरी, गनपति, गिरा, नारद, शेष सुजान।
मंगलमय आशिष दिये, रवि, कवि, गुरु गिर्वान॥ ४०॥

सो० यहि विधि भा आरम्भ, रामचरितमानस विमल।
सुनत मिटत मद दम्भ, कामादिक संशय सकल॥ १२॥

दुइ वत्सर सातके मास परे। दिन छब्बिस मांझ सो पूर करे॥
तैंतीस को संवत औ मगसर। शुभ द्यौस सुराम विवाहहि पर॥
सुठि सप्त जहाज तयार भयो। भवसागर पार उतारन को॥
पाखण्ड प्रपञ्च बहावन को। शुचि सात्त्विक धर्म चलावन को॥

कलिपाप कलाप नशावन को। हरिभक्ति छटा दरसावन को॥
मत वाद विवाद मिटावन को। अरु प्रेम को पाठ पढ़ावन को॥
सन्तन चित चाव चढ़ावन को। सज्जन उर मोद बढ़ावन को॥
हरिरस हर बस समुझावन को। श्रुति सम्मत मार्ग सुझावन को॥
युत सप्त सोपान समाप्त भयो। सदग्रन्थ बन्यो सुप्रबन्ध नयो॥

दो० महिसुत बासर मध्य दिन, शुभमिति तत्सत कूल।
सुर समूह जय जय किये, हर्षित वर्षे फूल॥४१॥
जेहि छिन यह आरम्भ भो, तेहि छिन पूरेउ पूर।
निर्बल मानव लेखनी, खींचि लियो अति दूर॥४२॥
पांच पात गनपति लिखे, दिव्य लेखनी चाल।
सत, शिव, नाग, अरुघ्र, दिशप, लोकगय उतत्काल॥४३॥
सब के मानस में बसेउ, मानस रामचरित्र।
बन्दत ऋषि-कवि पद कमल, मन क्रम वचन पवित्र॥४४॥
बन्दौं तुलसी के चरण, जिन कीन्हों जग काज।
कलि समुद्र बूड़त लख्यो, प्रगटेउ सप्त जहाज॥४५॥
परम मधुर पावन करनि, चार पदारथ दानि।
तुलसीकृत रघुपति कथा, कै सुरसरि रसखानि॥४६॥

सो० प्रगटे श्रीहनुमान, अथ सों इति लौं सब सुनै।
दिये सुभग वरदान, कीरति त्रिभुवन वश करी॥१३॥

मिथिला के सुसन्त सुजान हते। मिथिलाधिप भाव पगे रहते॥
शुचि नाम रुपारुण स्वामि जुतो। तेहि अवसर औधमें आयो हुतो॥
प्रथमै यह मानस तेई सुनै। तिनहीं अधिकारी गोसाईं गुनै॥
स्वामिनंद सुलालको शिष्यपुनी। तिसु नाम दयाल सुदास गुनी॥

लिखिकैसोइ पोथि स्वठामगयो। गुरु के ढिग जाय सुनाय दयो॥
यमुना तट पै त्रय वत्सर लों। रस खानहिं जाइ सुनावत भो॥
तब ते बहु संख्यक पात लिखै। कछु लोगन औ निजहाथ ऋषै॥
मुकुता मणि दास जु आयो हतो। हरि शयनको गीत सुनायो हतो॥
तिसु भावहि पै मुनि रीझि गये। पल मों पल भांजत सिद्धि दये॥

दो० तब हरि अनुशासन लहै, पहुँचे काशी जाय।
विश्वनाथ जगदम्ब प्रति, पोथी दियो सुनाय॥ ४७॥

छंद

पोथी पाठ समाप्त कै के धरे, शिवलिङ्ग ढिग रात में।
मूरख पंडित सिद्ध तापस जुरे, जबपट खुलेउ प्रात में॥
देखिन तिरषित दृष्टि ते सब जने, कीन्ही सही शंकरम्।
दिव्याक्षर सों लिखो पढ़े धुनि सुने, "सत्यं शिवं सुन्दरम्" ६॥
शिव की नगरी रसरंग भरी। यह लीला जु पाटि गई सगरी॥
हरषे नर नारि जोहारि किये। जय जय धुनि बोलि बलैयाँ लिये॥
पै पंडित लोगन सोच भयो। सब मान महातम जीव गयो॥
पढ़िहैं यह पोथि प्रसादमयी। तब पूछिहैं कौन हमें मनयी॥
दल बांधि ते निन्दत बागत भे। सुर बानि सराहत पागत भे॥
कोउ ग्रन्थ चोरावन हेतु रचे। फरफन्द अनेक प्रपञ्च पचे॥
निधुआ सिखुआ युग चोरगये। रखवार विलोकि निहाल भये॥
तेहि पूछे गोसाइँ ते कौन धुही। युग श्यामल गौर धरे धनुही॥
सुनि बैन भरै जल नैन कहै। तुम धन्य हते हरि दर्श लहै॥

दो० तजि कुकरम तस्कर तरै, दिय सब वस्तु लुटाय।
जाय धरे टोडर सदन, पोथी यतन कराय॥ ४८॥

पुनि दूसर पात लिखै रुचि सों। तेहिते लिपिपैलिपि होन लग्यो॥
दिन दून प्रचार बढ़्यो लखि कै। सब पंडित हारे हिया झँखि कै॥
तब मिश्र बटेसर तान्त्रिक हीं। दुख दाह सुधीगन रोय कही॥
तिन मारन केर प्रयोग कियो। हठि भैरव प्रेरि पठाय दियो॥
हनुमन्त से रक्षक देखि डरे। उलिटे सुबटेसर प्रान हरे॥
तब हारि चले दल को सजि कै। मधुसूदन सरस्वति के मठ पै॥
कहै कीन्ह प्रमाण महेश सही। किसु कोटिको है सो न बात कही॥
श्रुति शास्त्र पुराण इतिहास इये। केहिके समकक्ष तिसै कहिये॥
यति राज कहै मँगवाउब जू। तब पोथि विलोकि बताउब जू॥

दो० ते मँगाय पोथी पढ़ै, उपज्यो परमानन्द।
फेरि दिये लिखि श्लोक यह, जयति सच्चिदानंद॥४६॥

श्लो० आनन्दकानने ह्यस्मिन् जंगमस्तुलसीतरुः।
कविता मञ्जरी भाति रामभ्रमरभूषिता॥

जब पंडित आये कहै तिन ते। किन बूझियबात सदा शिव से॥
निगमागम शास्त्र पुराण सबै। क्रम ते धरि मानस नीचे फबै॥
जब होत बिहान खुलेउ पट तो। सब टूटि परे तेहि देखन को॥
लखि वेद के ऊपर मानसहीं। सब पंडित लाज गरे तितहीं॥
चरणों पै पड़े चरणोदक लै। अपराध कराइ क्षमा घर गै॥
नदिया को सुपंडित दत्त रवी। सब शास्त्रविशारद आशुकवी॥
मुनि ते हठि बाद विवाद कियो। अरु हारि विषाद बढ़ायो हियो॥
जब न्हान गोसाइँ चले मठ ते। तब मारन हेतु गयो लठ ले॥
हनुमन्त सुरक्षक देखि भज्यो। अपनी करनी पर आपु लज्यो॥
पुनि जाइ गोसाइँ रिझाय लियो। वर हेतु सुधीहठ भूरि कियो॥

छंद

मांगेउ सो वर तजिये पुरी मुनि विवश भे वर के दिये ।
'काशिनाथ कहि निवरत हौं' कवित्त बनाय दृढ़ निश्चय किये ॥
सो लिखि धरे हर मन्दिरहिं प्रस्थान दक्षिण दिशि किये ।
शिव दै दरस समुझाय फेरे क्षुभित मन धीरज दिये ॥ ७ ॥

दो० सुनि प्रस्थान मुदित भयो, गयो दरस हित धीर ।
बन्द भयो पट धुनि भई, कोप सहित गम्भीर ॥ ५० ॥

सो० जाइ गोसाइँ मनाउ, पग परि बहु विधि विनय करि ।
पुरि महँ लाइ बसाउ, नातो होइहि नाश तव ॥ १४ ॥

सुनि टोडर आय कियो बिनती । मुनि मानिय सेवक की मिनती ॥
प्रिय घाट असीपर भौन नयो । बनिकै सह घाट तयार भयो ॥
बसिकै सुखसों सुख देइयजू । पदकंज सदा हम सेइय जू ॥
सुख मानि गये तेहि ठाम बसे । रघुवीर गुणावलि माहिं रसे ॥
कलि आयउ राति कृपान लिये । मुनिकहँ बहु भांति से त्रास दिये ॥
सो कह्यौ जल बोरहु पोथिनिजै । न तो दाढ़िहों ताड़िहौं चेतु अबै ॥
कहिके अस सो जु सिधारो जबै । सुनि ध्यान धरेउ हरि हेतु तबै ॥
हनुमन्त कहेउ कलिना मनि है । मम वरजे सो वैर महाठनिहै ॥
लिखिकै विनयावलि देहु मोही । तब दण्ड दियाउब तात ओही ॥

दो० विदित राम विनयावली, मुनि तब निर्मित कीन्ह ।
सुनि तेहि साखी युतप्रभू, मुनिहिं अभयकर दीन्ह ५१ ॥

मिथिलापुर हेतु पयान किये । सुकृती जन को सुख शान्तिदिये ॥
भृगु आश्रम में दिन चारि रहे । करहीन बुआ कर पाप दहे ॥
दिन एक बसे मुनि हंसपुरा । परसी को सुहाग दिये बहुरा ॥

गऊघाट में राउ गँभीर धरे। दुइ बासर लों तहँवाँ ठहरे॥
ब्रह्मेश सुदर्शन कै के चले। पुनि कांत ब्रह्मपुर मां निकले॥
सँवरूसुत मांगरु ग्वाल हतो। दुहि दूध दियो सुर साधु रतो॥
वर दीन तजे चोरहाई सहूँ। निर्वंश न होवहुगे कबहूँ॥
तब बेलापतार में आय रहे। तहँ दास धनी निज कष्ट कहे॥

छंद

कहे कष्ट आपन कालिह जाइहि प्रान मम पातक बयों।
मूसहिं खवायों भोग कहि कहि खात हरि सौंहें कियों॥
रघुनाथसिंह जानेउ दगा करि कोप सो बोलेउ मुने॥
नहिं खाहिं ठाकुर सामुहे मम तोपि वध निश्चय गुने॥८॥

सो० मुनिवर धीरज दीन्ह, कियो रसोई साधु तब।
सन्मुख भोजन कीन्ह, ठाकुर लखि इमि ऋषि कहेउ १५

दो० तुलसी झूठे भगत की, पति राखत भगवान।
जैसे मूर्ख उपरोहितहिं, देत दान जजमान॥ ५२॥

निज गेह पवित्र करावन को। लै गो मुनि को नरनायक सो॥
तहँ भक्त सुगोविंद मिश्र मिले। जिसु दृष्टि ते लोह घना पिघिले॥
मुनि गांव के नाँव में फेर करे। रघुनाथ पुरा तिसु नाम धरे॥
तहँ ते चलिकै विचरे विचरे। ऋषि हरिहरखेत में जा पधरे॥
पुनि संगम मंजि चले सपदी। नियराये विदेहपुरी छपदी॥
धरि बालिकारूप विदेहलली। बहराय कै खीर खवाय चली॥
जब जानेउ मर्म कहा कहिये। मनही मन सोचि कृपा रहिये॥
द्विज लोगन हाला के घेरि रहै। अरु आपन घोर बिपत्ति कहै॥
छत सूबा नवाब बड़ो रगरी। सो तो बारह गाँव की वृत्ति हरी॥

दो० दया लागि कर्त्तव्य गुनि, सुमिरे वायुकुमार।

दण्डित करि बहुरायऊ, सुखयुत द्विज परिवार ॥ ५३ ॥
मिथिलाते काशी गये चालिस संवत लाग ।
दोहावलि संग्रह किये, सहित विमल अनुराग ॥ ५४ ॥
लिखे वाल्मीकी बहुरि, इकतालिस के मांहि ।
मगसर सुदि सतिमी रवौ, पाठ करन हित ताहि ॥ ५५ ॥
माधव सित सिय जन्म तिथि, ब्यालिस संवत बीच ।
सत्सैया वरणै लगे, प्रेम वारि ते सींच ॥ ५६ ॥
सो० उतरु सनीचरि मीन, मरी परी काशीपुरी ।
लोगन ह्वै अति दीन, जाइ पुकारे ऋषि निकट ॥ १६ ॥
दो० करुणामय मुनि सुनि व्यथा, तंत्र कवित्त बनाय ।
करुणानिधि सों विनय करि, दीन्ही मरी भगाय ॥ ५७ ॥
कवि केशवदास बड़े रसिया । घनश्याम सुकुल नभके बसिया ॥
कवि जानि के दर्शन हेतु गये । रहि बाहिर सूचन भेजि दये ॥
सुनिकै जु गोसाइं कहै इतनो । कवि प्राकृत केशव आवन दो ॥
फिरिगे भट केशव सो सुनिकै । निज तुच्छता आपुइ ते गुनिकै ॥
जब सेवक टेरेउ गे कहिकै । हौं भेंटिहौं कालिह विनयगहिकै ॥
घनश्याम रहै घासिराम रहै । बलभद्र रहै विसराम लहै ॥
रचि राम सुचन्द्रिका रातिहिमें । जुरे केशव जू आसि घाटिहिमें ॥
सतसंग जम्यो रस रंग मच्यो । दोउ प्राकृतादिव्य विभूति खच्यो ॥
मिटि केशव को संकोच गयो । उर भीतर प्रीति की रीति रयो ॥
दो० आदिल शाही राज के, भाजक दान बनेत ।
दत्तात्रेय सुविप्रवर, आये ऋषय निकेत ॥ ५८ ॥
करि पूजा, आशिष लहै, मांगे पुण्य प्रसाद ।

लिखित वाल्मीकी स्वकर, दिये सहित अह्लाद ॥ ५९ ॥
अमरनाथ योगी तिया, वैरागी हरि लीन ।
ताते कोपि तिनहिं रहित, कंठी माला कीन ॥ ६० ॥
मच्यो कोलाहल साधुसब, आये मुनिवर पास ।
फेरि मिल्यो सो आसननि, ऋषयकृपाअनयास ॥ ६१ ॥
दो० आयो सिद्ध अघोरिया, अलख जगावत द्वार ।
छिन महँ सिद्धाई हरी, उपदेशेउ श्रुति सार ॥ ६२ ॥
निमिषार को विप्र सुधर्मरता । वनखंडि सुनाम विमोह गता ॥
सब तीरथ लुप्तहिं चाहु थपै । तिसु हेतु सदाशिव मंत्र जपै ॥
इक प्रेत धना ढिग ठाढ़ भयो । बहु द्रव्य गड़ो सो दिखाइ दयो ॥
सो कह्यो धन लै शुभ काज सरो । यहि योनि ते मोर उबार करो ॥
मन हर्षित विप्र कह्यो मोहि कां । चौधाम घुमाय सुतीरथ मां ॥
तब काशि गुसाइँ के तीर चलो । तिसु दर्शन होइ तुम्हार भलो ॥
सुख मानि कै तै सोइ प्रेत कियो । नभ मांझ असीपर छेंकछियो ॥
जन सोर मच्यो बहु लोग जुरै । सब कौतुक देखहि अंग फुरै ॥
निज आश्रम ते कढ़ि आये मुनी । नभ ते भयो जय जयकार धुनी ॥
दो० दिव्य रूप धरि यान चढ़ि, प्रेत गयो हरिधाम ।
तुलसी दरश प्रताप ते, सो झभयो विधिवाम ॥ ६३ ॥
वनखंडी महि पै गिर्‍यो, पग छुइ कियो प्रणाम ।
मुनिसन सब व्यवरा कह्यो, बसेउ रसेउ तेहि ठाम ॥ ६४ ॥
तासु विनय सुनि मुनि चले, तीरथ थापन काज ।
पहुँचे अवधहिं पांच दिन, तहां टिके ऋषिराज ॥ ६५ ॥
दै रामगीतावलि गायक को । जे गावहिं यश रघुनायक को ॥

मनबोध तिवारिहिं औध छटा। सब कंचन मय वन भूमि अटा॥
दिखरा के चले खनाही टिके। पुनि शूकरखेत में जाय थिके॥
सियावार सुगाँव में वास लिये। तहँ सीता सुकूप को पाथ पिये॥
पहुँचे लखनैपुर मोद भरे। अरु धेनुमती तट पै उतरे॥
कहुँ दीनन को प्रतिपाल करैं। कहुँ साधुन के मन मोद भरैं॥
कहुँ लखनलाल को चरित बचैं। कहुँ प्रेम मगन ह्वै आपु नचैं॥
कहुँ रामायन कल गान सचैं। उत्साह कोलाहल भूरि मचैं॥
कहुँ आरत जन को ताप हरैं। कहुँ अज्ञानिन उर ज्ञान धरैं॥

दो० निर्धन भाट दमोदरहिं, आशिष दै कवि कीन।
लहेउ विपुल धनमानबहु, भा कविकला प्रवीन॥६६॥
तहँ ते मलिहाबाद में, आय सन्त सिरताज।
रामायण निजकृत दिये, ब्रजवल्लभ भटराज॥६७॥
पुनि अनन्य माधव मिले, कोटरा ग्रामहिं जाय।
माता प्रति शिक्षा सुने, भक्ति दियेबतलाय॥६८॥

पुनि जाय बिठूर में रैनि बसे। सरि मज्जन पांक में जाइ धसे॥
गहि बांह निकारेउ जन्हुसुता। तन तायो जरा न रही जु बुता॥
तहँते चलि जाय सँडीले परे। गउरीशंकर गृह माथ धरे॥
कहे या घर में लीन्हे जन्म पखा। मनसूखा स्वयं श्रीकृष्णा सखा॥
कलुकाल गये सोइ जन्म धर्‌यो। वंशीधर ताकर नाम पर्‌यो॥
कवि भो मुनिरव उपदेश कियो। पद रास सुने तनु त्याग दियो॥
तेहि व्योम विमान पै जात लख्यो। हलुवाइ सुसिद्ध प्रवीन मख्यो॥
सत्संगिन देखि निहाल भये। उपदेश सनातन पूर लये॥

दो० संडीले ते मुनि चले, मग ठाकुर क्षितिपाल।

न मन कियो नहिं मद मतो, तुरत भयो कंगाल॥६९॥
सो० विप्रन किय अपमान, ताते ते निर्धन भये।
कैथन किय सन्मान, सुखी भये धन वंश लहि॥१७॥
दो० जुरै जुलाहे भेंटधरि, लहै विपुल धन धान्य।
पहुँचे नैमिष वन मुनी, सर्व तंत्र सम्मान्य॥७०॥
सोधि सकल तीरथ थपै, किय त्रयमास निवास।
मिले पिहानीके सुकुल, सम्वत लगु उनचास॥७१॥
खैराबाद को सिद्ध प्रवीन घरे। मुनि आयुइ योग ते जाइ परे॥
करि ताहि निहाल चले मिसरिष। सँगमें वन खंडि दुचारिक सिष॥
पुनि नाव चढ़े सुख सों विचरे। पुर राम सुनै तुरतै उतरे॥
नृप सेवक टंटा बेसाहि रहे। सब मालमता तजि राह गहे॥
सिंहराम सुन्यो पग दौरि गह्यो। करिके जु विनय पद टेकि रह्यो॥
तब लौटि परे तिसु धाम बसे। हनुमन्तहिं थापि तहाँ विलसे॥
वंशीवट नाम धर्‍यो वटरय। मगसर सुदि पंचमी रासरचय॥
वृन्दावन में तहँते जु गये। सुठि राम सुघाट पै वास लये॥
बड़ धूम मचो शुचि सन्त घुरे। मुनि दर्शन को नर नारि जुरे॥
दो० स्वामी नाभा ढिग गये, ते किय बहु सम्मान।
उच्चासन पधराइ मुनि, पूजे सहित विधान॥७२॥
विप्र सन्त नाभा सहित, हरि दर्शन के हेतु।
गये गोसाईं मुदित मन, मोहन मदन निकेत॥७३॥
राम उपासक जानि प्रभु, तुरत धरे धनुबान।
दर्शन दिये सनाथ किय, भक्तबछल भगवान॥७४॥
बरसाने में लीला सो व्यापि गई। मुनि आसन पै बड़ि भीर भई॥

कछु कृष्ण उपासक द्वेष भरे। धनुबान धरे पर मोह सरे॥
तिनको समुझाये सुतत्त्व महा। जनको प्रण राम न राख्यो कहा॥
शुभ दक्षिण देश से जात हतो। हरि मूरति अवधहिं थापनको॥
विश्राम भयो यमुनातट पै। लखि मूरति मोहे विप्र उदै॥
सो चहो हरि विग्रह वाईं थपै। बिनती किय जाइ गोसाइहिं पै॥
न उठाये उठे जब सो प्रतिमा। तब थापित कीन्ह तहें जिजिमां॥
तिसु नाम कौसिल्या नन्दन जू। मुनिराज धरे जग बन्दन जू॥
नंददास कनौजिया प्रेम मढ़े। जिन शेष सनातन तीर पढ़े॥
शिक्षा गुरु बन्धु भये तेहिते। अतिप्रेमसों आय मिले यहिते॥

दो० हित सुत गोपीनाथ प्रति, महिमा अवध बखानि।
जेहि नहिं ठाँव-ठिकान कहुँ, तिनहिं बसावत आनि ७५॥
फेरि अमनिया दिये पुनि, सखरा ताहि बताय।
हलवाई बनिकन सदन, बालकृष्ण दिखराय॥ ७६॥

सो० इमि लीला दरसाय, भक्तन उर आनन्द भरि।
चित्रकूट महँ जाय, किये कछुक दिन वास तहँ॥ १८॥

सतकाम सुविप्र गोसाइँ लगे। दीक्षाहित आयो सुवृत्ति जगे॥
लखि कामविकार न शिष्य किये। टिकिगो तहँ सो हठठानि हिये॥
जब रात में रानि कदम्ब लता। आइ तासु विलोकन सुन्दरता॥
तिन दीपक बाति बढ़ाय लियो। लखिकै मुनि सुन्दर सीख दियो॥
सो विप्र लजाइ कै पांय परयो। करिकै मुनि छोह विकार हरयो॥
पुनि विप्र दरिद्र महाजलपा। मंदाकिनि डूबन हेतु चला॥
तिसु प्राण बचावन हेतु ऋषय। सुठि दारिदमोचशिला प्रगटय॥
पुनि साहि खवास पठायउ जू। मुनिराजहिं दिल्ली बुलायउ जू॥

दो० चले यमुन तट नृप तिलक, साधु कियो सरनाम।
राधा बल्लभ भक्ति दिय, रीझे श्यामा श्याम॥
सो० उड़छै केशव दास, प्रेत हते घेरे मुनिहिं।
उधरे बिनहिं प्रयास, चढ़ि विमान स्वर्गहिं गयो॥
चरवारि के ठाकुर की दुहिता। जिसु सुन्दरता पै जग मुहिता॥
इक नारिहिते तिसु ब्याहभयो। जब जानेउ दारुण दाह भयो॥
वर की जननी जनमावत ही। सो प्रसिद्ध कियो तेहि पुत्र कही॥
अनुकूलहिं साज समान कियो। जे जानत भे तिहि पूजि दियो॥
यहि कारन धोखा भयो बहुतै। अब रोअत मींजत हाथ सबै॥
तिन घेरे दया लगि सन्त हिये। तिसु हेतु नवाह्निक पाठ किये॥
विश्राम लगायो सो जानिय जू। तिसु शब्द प्रथम यहँ आनिय जू॥
हिय, सत, अरु कीन्ह रु श्याम लगा। औ राम शैल पुनि हारि पगा॥
कह मारुतसुत, जहँ तहँ, पुण्यं। इति पाठनवाह्निक ठाम अयं॥
दो० नारी ते नर होइ गयो, करतहि पाठ विराम।
पुलकित जय तुलसी कहै, जय जय सीताराम॥ ७८॥
तहँ ते पँचयें दिन मुनी, पहुँचे दिल्ली जाय।
खबरि पाय तुरतहिं नृपति, लिय दरबार बुलाय॥ ७९॥
दिल्लीपति बिनती करी, दिखरावहु करमात।
मुकरि गये बन्दी किये, कीन्हे कपि उत्पात॥ ८०॥
बेगम को पट फारेऊ, नगन भई सब बाम।
हाहाकार मच्यो महल, पटको नृपहिं धड़ाम॥ ८१॥
मुनिहिं मुक्त तत्छन किये, क्षमाऽपराध कराय।
बिदा कीन्ह सन्मान युत, पीनस पै पधराय॥ ८२॥

चलि दिल्लीते आये महावनमें । निशि वास किये जु अहीरन में ॥
इक ग्वार भगीरथ पै ढुरिगे । तेहि सिद्ध सुसन्त बनावत भे ॥
दसयें दिन औधहिं आय रहे । भरि पाख तहां सुसुताय रहे ॥
हरिदास सुभक्त सुगीत रयो । तेहि मां कछु शब्द अशुद्ध भयो ॥
सुधराये मुनी पै न बोध भयो । तिसु कीर्त्तन में अवरोध भयो ॥
सपने मुनि ते रघुवीर कह्यो । नहिं शुद्ध अशुद्ध सुभाव गह्यो ॥
तब जाइ मुनी तिसु भाव भरो । जस गावत हौ तस गाया करो ॥
सुनि बालचरित्र अनन्दित ह्वै । मुनि तुष्ट किये सुपटम्बर दै ॥

दो० देव मुरारी भेंट मिलि, सहित मलूकादास ।
पहुँचे काशी में ऋषय, किये अखण्ड निवास ॥ ८३ ॥

शुचि माघ में गंग नहाय हते । सरि भीतर मंत्र महा जपते ॥
तनु वृद्ध सो कांपत रोम अड़े । गनिका रहि देखत तीर खड़े ॥
कढ़िकै मुनि सींचेउ वस्त्र धरे । दुइ बुंद सोई गनिका पै परे ॥
वेश्या मन में निर्वेद जगो । बहु दृश्य निरय दिखरान लगो ॥
सब पाप प्रपञ्च से दूर भगी । उपदेश ले हरिगुन गान लगी ॥
हरिदत्त सु विप्र दरिद्र महा । तिसु गंग के पार में बास रहा ॥
मुनिके ढिग आय विपत्ति कही । जस दीन दशा घर केर रही ॥
ऋषि अस्तुति गंग बनायकरी । सुरसरि दै भूमि विपत्ति हरी ॥

दो० निन्दकमुनि अरु भक्तिपथ, मुलई साहु कलार ।
निधन भयउ टिकठी धरे, लैगे फूँकन हार ॥ ८४ ॥
तासु तिया रोवत चली, मुनिढिग नायउ सीस ।
सदा सोहागिन रहहु तुम, मुनिवर दीन्ह असीस ॥ ८५ ॥
बिलखिकही सो निजदशा, शव मुनि लीन्ह मँगाय ।

चरणामृत मुख देइकै, तुरतै दिये जिआय ॥ ८६ ॥
तेहि बासर ते मुनि नेम लिये । अरु बाहर बैठब त्याग दिये ॥
रहे तीन कुमार बड़े सुकृती । मुनि चरनन में तिनकी भगती ॥
ऋषिकेश रह्यो मनिकर्निका पै । विश्वनाथ के मन्दिर शांतिपदै ॥
अनपूर्णा में दाता दीन रहै । रहनी गहनी सम साम गहै ॥
मुनि दर्शनको नित आवत जू । चरणोदक लै घर जावत जू ॥
पहिचानि सुप्रीति मुनी तिनकी । शुचि टेक विवेक समीचिनकी ॥
तिनके हितही बहिरायँ मुनी । दैके दरशन भितरायँ पुनी ॥
सब दर्शक वृन्द चवाव करें । मुनि पै पछपात को दोष धरें ॥
दिन एक परीक्षा लीन्ह मुनी । बहिराये नहीं सोइ भाव गुनी ॥
तनु तीनिउ ताछिन त्याग किये । चरणोदक जीवन दान दिये ॥

दो० सोरहसौ उनहत्तरो, माधव सित तिथि थीर ।
पूरन आयू पाइकै, टोडर तजै शरीर ॥ ८७ ॥
मीत विरह में तीन दिन, दुखित भये मुनि धीर ।
समुझिसमुझिगुनमीतके, भर्यो विलोचन नीर ॥ ८८ ॥
पांच मास बीते परे, तेरस सुदी कुआर ।
युग सुत टोडर बीच मुनि, बांट दिये घर बार ॥ ८९ ॥
नख-शिखकर्ताआशुकवि, भीषमासिंह कनगोय ।
आयो मुनिदर्शन कियो, त्यागेउ तनु हरि जोय ॥ ९० ॥
गंग कहेउ हाथी कवन, माला जपेउ सुजान ।
कठमलिया वञ्चक भगत, कहिसो गयो रिसान ॥ ९१ ॥
क्षमाकिये नहिं शापदिय, रँगे शान्ति रस रंग ।
मारग में हाथी कियो, झपटि गंगतनु भंग ॥ ९२ ॥

कवि रहीम बरवै रचे, पठये मुनिवर पास।
लखि तेइ सुन्दर छन्द में, रचना कियेउ प्रकास॥९३॥
मिथिला में रचना किये, नहछू मंगल दोय।
पुनि प्रांचे मंत्रित किये, सुख पावें सब लोय॥९४॥
बाहु पीर व्याकुल भये, बाहुक रचे सुधीर।
पुनि विराग, संदीपनी, रामाज्ञा शकुनीर॥९५॥
पूर्वरचित लघु ग्रन्थमनि, दुहराये मुनिधीर।
लिखवाये सब आन ते, भो अति खीन शरीर॥९६॥
जहांगीर आयो तहां, सत्तर सम्बत बीत।
धन धरती दीबो चहै, गहै न गुनि विपरीत॥९७॥
बिरबल की चर्चा चली, जो पटु वागविलास।
बुद्धि पाइ नहिं हरि भजे, मुनि किय खेदप्रकास॥९८॥
अवधपुरी को चोहड़ा, अवधवासि प्रिय जानि।
हृदय लगाये प्रेमवश, रामरूप तेहि मानि॥९९॥
सिद्ध वृन्द गिरनार के, नभ ते उतरे आय।
करि दर्शन पुलकित भये, प्रश्न किये सतिभाय॥१००॥

सो० तुमहिं न व्यापै काम, अति कराल कारन कवन।
कहिय तात सुखधाम, योगप्रभाव कि भक्तिबल॥२०॥

दो० योग न भक्ति न ज्ञानबल, केवल नाम अधार।
मुनि उत्तर सुनि मुदितमन, सिद्ध गये गिरनार॥१०१॥
बैठि रहे मुनि घाट पर, जुर लोग बहुताय।
आयो भाट सुचन्द्रमणि, विनय कियो परिपाय॥१०२॥

कवित्त

पन दोइक भोग विषय अरुझान अब जो रह्यो सो न खसाइय जू ।
अबलों सब इन्द्रिन लोग हँस्यो अब तो जनि नाथ हँसाइय जू ॥
मद मोह महा खल काम अनी मम मानस ते निकसाइय जू ।
रघुनन्दन के पद के सद के तुलसी मोहि काशि बसाइय जू ॥ २ ॥

दो० विनय सुनत पुलकित भये, कहि ऋषिराज महान ।
बसहु सुखेन इतै सदा, करहु राम गुन गान ॥ १०३ ॥
हत्यारा ढिग आयऊ, विप्र चन्द तिसु नाम ।
दूर ठाढ़ बोलत भयो, राम राम पुनि राम ॥ १०४ ॥
इष्टनाम सुनि मगन भे, तुरत लिये उर लाय ।
आदर युत भोजन दिये, हरषि कहे ऋषिराय ॥ १०५ ॥
तुलसी जाके मुखनि ते, धोखेहु निकसे राम ।
ताके पगकी पैंतरी, मेरे तनु को चाम ॥ १०६ ॥
समाचार व्याप्यो तुरत, वीथिन वीथिन मांझ ।
ज्ञानी ध्यानी विप्र भट, सुधी जुरै भइ सांझ ॥ १०७ ॥
कैसे घातक शुद्ध भो, कहिये सन्त महान ।
कहे जु नाम प्रताप से, बांचहु वेद पुरान ॥ १०८ ॥
कह्यो लिखो तो है सही, होत न पै विश्वास ।
मन माने जाते कहिय, सोइ कर्त्तव्य प्रकास ॥ १०९ ॥
कहे जो शिवको नादिया, गहै तासु कर ग्रास ।
तब तो निश्चय उपजही, सबके मन विश्वास ॥ ११० ॥
मुनि प्रसाद ऐसहि भयो, चहुँदिशि जय जयकार ।
निन्दक मांगे क्षमा सब, पग परि बारम्बार ॥ १११ ॥

राम नाम दिन भर रटै, लोभ विवश मुनि थान।
सांझ समय तिसु विप्रको, द्रव्य देत हनुमान ॥ ११२ ॥
रामदरस हित कमलभव, हठेउ कहेउ मुनिराय।
तरुते कूदि त्रिशूल पै, दरस लेहु किन जाय ॥ ११३ ॥
गाड़ि शूल अरु विटपचढ़ि, हिम्मत हारेउ पात।
लखेउ पछाहीं वीर इक, अश्व चढ़े मग जात ॥ ११४ ॥
पूछेउ मर्म कहेउ कथा, सो चढ़ि विटप तुरन्त।
कूदेउ उर विश्वासधरि, दरस दीन्हभगवन्त ॥ ११५ ॥
अन्तसमय हनुमतादिये, तत्त्व ज्ञान को बोध।
राम नाम ही बीज है, सृष्टि वृक्षमय गोध ॥ ११६ ॥
पर प्रस्थान की शुभघड़ी, आयो निकट विचारि।
कहेउ प्रचारि मुनीश तब, आपनदशा निहारि ॥ ११७ ॥
रामचन्द्र यश बरनिकै, भयो चहत अब मोन।
तुलसी के मुख दीजिये, अबही तुलसी सोन ॥ ११८ ॥
सम्बत सोरह सै असी, असी गंग के तीर।
श्रावणश्यामातीजशनि, तुलसी तज्योशरीर ॥ ११९ ॥
मूल गोसाईंचरित नित, पाठ करै जो कोय।
गौरी शिव हनुमत कृपा, राम परायन होय ॥ १२० ॥
सोरह सै सत्तासि सित, नवमी कातिक मास।
विरच्योयहि नित पाठ हित, वेणी माधवदास ॥ १२१ ॥

इति ॥

इसमें १ कवित्त, १ कुण्डलिया, ८ छन्द, ६ चौपाई, २० सोरठा, १२१ दोहा और तोटक ४३२ हैं।

श्रीरामजानकी ।

सो०—प्रकृति-पुरुष सिय-राम, जगदुद्भव-पालक-हरण ।
करैं भक्तहिय धाम, सत्य प्रेम पहिंचान कर ॥
दो०—जनकसुता श्रीजानकी, श्रीरूपा जगदम्ब ।
जिनके दर्शन ते मिटैं, भव भय दुःख कदम्ब ॥
जगदीश्वर जन-मन-सुखद, परब्रह्म श्रीराम ।
बाईं दिशि श्रीजानकी, शोभित सर्व ललाम ॥
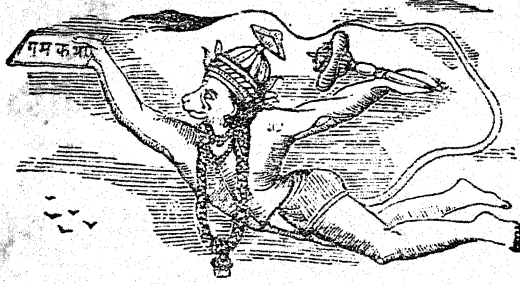
श्रीगणेशाय नमः

श्रीरामचरितमानस

प्रथम सोपान

बालकाण्ड

वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥
भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम् ॥
वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम् ।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥
सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥
उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥
यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाऽहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां

वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ॥
नानापुराणनिगमागमसम्मतं य-
द्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।
स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥

सो० जो सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिबरबदन ।
करौ अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभगुनसदन ॥
मूक होइ बाचाल, पंगु चढ़ै गिरिबर गहन ।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवौ सकलकलिमलदहन ॥
नीलसरोरुहस्याम, तरुनअरुनबारिजनयन ।
करौ सो मम उर धाम, सदा छीरसागरसयन ॥
कुन्दइन्दुसम देह, उमारमन करुनाअयन ।
जाहि दीन पर नेह, करौ कृपा मर्दनमयन ॥
बन्दौं गुरुपदकञ्ज, कृपासिन्धु नररूप हरि ।
महामोह तमपुञ्ज, जासु बचन रबिकरनिकर ॥

बन्दौं गुरुपदपदुमपरागा * सुरुचि सुबास सरस अनुरागा
अमियमूरिमय चूरन चारू * समन सकलभवरुजपरिवारू
सुकृत संभुतन बिमल बिभूती * मंजुल मङ्गल मोदप्रसूती
जनमन मंजु मुकुरमलहरनी * किये तिलक गुनगनबसकरनी
श्रीगुरुपदनषमनिगन जोती * सुमिरत दिब्य दृष्टि हिय होती
दलन मोहतम सोसुप्रकासू * बड़े भाग उर आवै जासू
उघरहिं बिमल बिलोचन ही के * मिटहिं दोष दुष भवरजनी के
सूझहिं रामचरित मनिमानिक * गुप्त प्रकट जहँ जो जेहि षानिक

दो० जथा सुअञ्जन अंजि दृग, साधक सिद्ध सुजान ।

कौतुक देषहिं सयल बन, भूतल भूरि निधान ॥
गुरुपद मृदु मंजुल रज अञ्जन * नयनअमिय दृगदोषबिभञ्जन
तेहिकरिबिमलबिबेकबिलोचन * बरनौं रामचरित भवमोचन
बंदौं प्रथम महीसुरचरना * मोहजनित संसय सब हरना
सुजनसमाज सकलगुनखानी * करौं प्रनाम सप्रेम सुबानी
साधुचरित सुभ चरितकपासू * निरस बिसद गुनमयफल जासू
जो सहि दुष परछिद्र दुरावा * बंदनीय जेहि जग जस पावा
मुदमङ्गलमय संतसमाजू * जो जग जङ्गम तीरथराजू
रामभगति जहँ सुरसरिधारा * सरसइ ब्रह्मबिचार प्रचारा
बिधिनिषेदमय कलिमलहरनी * करमकथा रबिनन्दिनि बरनी
हरिहरकथा बिराजति बेनी * सुनत सकल मुद मङ्गलदेनी
बट बिस्वासु अचल निजधर्मा * तीरथसाज समाज सुकर्मा
सबहि सुलभ सबदिन सबदेसा * सेवत सादर समन कलेसा
अकथ अलौकिक तीरथराऊ * देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ

दो० सुनि समझहिं जनमुदितमन, मज्जहिं अति अनुराग ।
लहहिं चारि फल अछत तनु; साधु समाज प्रयाग ॥

मज्जन फल पेषिय ततकाला * काक होहिं पिक बकहु मराला
सुनि आचरज करै जनि कोई * सतसंगतिमाहिमा नहिं गोई
बालमीकि नारद घटजोनी * निजनिजमुखनकहीनिजहोनी
जलचरथलचर नभचर नाना * जे जड़ चेतन जीव जहाना
मतिकीरति गति भूति भलाई * जब जेहि जतन जहां जेहिपाई
सो जानब सतसंग प्रभाऊ * लोकहु बेद न आन उपाऊ
बिनु सतसंग बिबेक न होई * रामकृपा बिनु सुलभ न सोई

सतसंगति मुदमङ्गलमूला * सोइफलसिधि सबसाधनफूला
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई * पारस परसि कुधातु सोहाई
बिधिबस सुजन कुसंगतिपरहीं * फनिमनिसमनिजगुनअनुसरहीं
बिधिहरिहरकबिकोबिदबानी * कहत साधु महिमा सकुचानी
सो मो सन कहि जात न कैसे * साकबनिक मनिगनगुन जैसे
दो० बन्दौं सन्त समानचित, हित अनहित नहिं कोउ ।
अंजुलिगत सुभ सुमनजिमि, सम सुगन्ध कर दोउ ॥
सन्त सरलचित जगतहित, जानि सुभाव सनेहु ।
बालबिनय सुनि करि कृपा, रामचरनरति देहु ॥
बहुरि बंदि षलगन सतिभाये * जे बिनु काज दाहिनेहु बांये
परहित हानि लाभ जिन्ह केरे * उजरे हरष बिषाद बसेरे
हरिहरजसराकेस राहु से * परअकाज भट सहसबाहु से
जे परदोष लषहिं सहसाषी * परहितघृत जिन्हके मन माषी
तेज कृसानु रोष महिषेसा * अघऔगुनधनधनी धनेसा
उदै केतुसम हित सबही के * कुम्भकरन सम सोवत नीके
परअकाज लगि तनुपरिहरहीं * जिमि हिमिउपलकृषीदलिगरहीं
बन्दौं षल जस सेष सरोषा * सहस बदन बरनैं परदोषा
पुनि प्रनवों पृथुराजसमाना * परअघ सुनै सहसदस काना
बहुरि सक्रसम बिनवउँ तेही * सन्तत सुरानीक हित जेही
बचनबज्र जेहि सदा पिआरा * सहसनयन परदोष निहारा
दो० उदासीनअरिमीतहित, सुनत जरहिं खलरीति ।
जानि पानिजुग जोरिजन, बिनती करै सप्रीति ॥
मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा * तिन्ह निजओर न लाउब भोरा

बायसपालियहि अतिअनुरागा * होहि निरामिष कबहिं कि कागा
बंदौं सन्त असज्जन चरना * दुषप्रद उभयबीच कछु बरना
बिछुरत एक प्रान हरिलेई * मिलत एक दुष दारुन देई
उपजहिं एकसंग जगमाहीं * जलजजोंक जिमि गुनबिलगाहीं
सुधासुरासम साधु असाधू * जनक एक जग जलधि अगाधू
भलअनभलनिजनिजकरतूती * लहत सुजस अपलोक बिभूती
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू * गरलअनलकलिमलसरिब्याधू
गुन अवगुन जानत सबकोई * जो जेहि भाव नीक तेहि सोई

दो॰ भलो भलाई पै लहै, लहै निचाई नीचु ।
सुधा सराहिय अमरता, गरल सराहिय मीचु ॥

षल अघ अगुनसाधुगुनगाहा * उभय अपार उदधि अवगाहा
तेहितें कछु गुन दोष बषाने * संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने
भलउ पोच सब बिधि उपजाये * गनि गुन दोष बेद बिलगाये
कहहिं बेद इतिहास पुराना * बिधिप्रपंच गुनऔगुनसाना
दुष सुष पाप पुन्य दिन राती * साधु असाधु सुजाति कुजाती
दानव देव ऊँच अरु नीचू * अमिय सजीवन माहुर मीचू
माया ब्रह्म जीव जगदीसा * लक्षि अलक्षि रंक अवनीसा
कासी मग सुरसरि कविनासा * मरु मारव महिदेव गवासा
सरग नरक अनुराग बिरागा * निगमअगम गुनदोषबिभागा

दो॰ जड़ चेतन गुनदोषमय, बिस्व कीन्ह करतार ।
संत हंस गुन ग्रहहिं पय, परिहरि बारिबिकार ॥

अस बिबेक जब देइ बिधाता * तब तजि दोष गुनहिं मनराता
काल सुभाव करम बरिआई * भलउ प्रकृतिबस चुकै भलाई

सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं * दलि दुष दोष बिमल जस देहीं
खलउ करहि भल पाइ सुसंगू * मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू
लषि सुबेष जगबंचक जेऊ * बेषप्रताप पूजिअहि तेऊ
उघरहिं अन्त न होइ निबाहू * कालनेमि जिमि रावन राहू
कियहु कुबेष साधु सनमानू * जिमि जग जामवन्त हनुमानू
हानि कुसंग सुसंगति लाहू * लोकहु बेद बिदित सब काहू
गगन चढ़ै रज पवनप्रसंगा * कीचहिं मिलै नीचजलसंगा
साधुअसाधुसदन सुक सारी * सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी
धूम कुसंगति कारिष होई * लिषिय पुरान मंजु मसि सोई
सोइ जल अनल अनिलसंघाता * होइ जलद जगजीवनदाता

दो० ग्रह भेखज जल पवन पट, पाय कुजोग सुजोग।
होहिं कुबस्तु सुबस्तु जग, लषहिं सुलच्छन लोग॥
समप्रकास तम पाष दुहुँ, नामभेद बिधि कीन्ह।
ससि पोषक सोषक समुझि, जग जस अपजस दीन्ह॥
जड़ चेतन जग जीव जत, सकल राममय जानि।
बंदौं सबके पदकमल, सदा जोरि जुग पानि॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गन्धर्ब।
बंदौं किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्ब॥

आकर चारि लाख चौरासी * जाति जीव नभजलथलबासी
सीय राममय सब जग जानी * करौं प्रनाम जोरि जुग पानी
जानि कृपाकर किंकर मोहू * सब मिलि करहु छाँड़ि छलछोहू
निजबुधिबल भरोस मोहिं नाहीं * तातें बिनय करौं सब पाहीं
करन चहौं रघुपतिगुनगाहा * लघुमति मोरि चरित अवगाहा

सूझ न एकौ अंग उपाऊ * मन मति रंक मनोरथ राऊ
मतिअतिनीचिऊँचिरुचिआछी * चहियअमियजगजुरइ न छाछी
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई * सुनिहहिं बालबचन मनलाई
जो बालक कह तोतरि बाता * सुनहिंमुदितमनपितुअरुमाता
हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी * जे परदूषनभूषनधारी
निजकबित्तकेहि लाग न नीका * सरस होइ अथवा अतिफीका
जे परभनित सुनत हरषाहीं * ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं
जग बहु नर सरसरिसम भाई * जे निज बाढ़ि बढ़हिं जल पाई
सज्जन सकृत सिन्धुसम कोई * देखि पूर बिधु बाढ़इ जोई

दो० भाग छोट अभिलाष बड़, करउँ एक बिस्वास।
पैहहिं सुष सुनि सुजन जन, षल करिहहिं उपहास ॥

षलपरिहास होइ हित मोरा * काक कहहिं कलकंठ कठोरा
हंसहि बक गादुर चातकही * हँसहिं मलिन षल बिमलबतकही
कबितरासिक न रामपद नेहू * तिनकहँ सुखद हासरस एहू
भाषाभनित भोरि मति मोरी * हँसिबे जोग हँसे नहिं षोरी
प्रभुपदप्रीति न सामुझिनीकी *तिन्हहिं कथा सुनिलागिहि फीकी
हरिहरपदरति मति न कुतरकी * तिन्हकहँ मधुरकथा रघुबरकी
रामभगतिभूषित जिअ जानी * सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कबि न होउँ नहिं चतुरप्रबीनू * सकल कला सब बिद्याहीनू
आषर अरथ अलंकृत नाना * छन्दप्रबन्ध अनेक बिधाना
भावभेद रसभेद अपारा * कबितदोषगुन बिबिध प्रकारा
कबितबिबेक एक नहिं मोरे * सत्य कहौं लिषि कागद कोरे

दो० भनित मोरि सबगुनरहित, बिस्वबिदित गुनएक।

सो विचारि सुनिहहिं सुमति, जिन्हके बिमल बिबेक ॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा * अति पावन पुरान श्रुतिसारा
मंगलभवन अमंगलहारी * उमासहित जेहि जपत पुरारी
भनिति बिचित्र सुकबिकृत जोऊ * रामनाम बिनु सोह न सोऊ
बिधुबदनी सब भाँति सँवारी * सोह न बसन बिना बर नारी
सबगुनरहित कुकबिकृत बानी * रामनामजसअंकित जानी
सादरकहहिं सुनहिं बुध ताही * मधुकरसरिस संत गुनग्राही
जदपि कबितरस एकौ नाहीं * रामप्रताप प्रगट एहि माहीं
सोइ भरोस मोरे मन आवा * केहि न सुसंग बड़प्पन पावा
धूमौ तजै सहज करुआई * अगरप्रसंग सुगंध बसाई
भनित भदेसबस्तु भलि बरनी * रामकथा जग मंगलकरनी

हरिगीतिका छंद।

मंगलकरनि कलिमलहरनि तुलसी कथा रघुनाथकी।
गति कूर कबितासरित की ज्यों सरितपावनिपाथ की ॥
प्रभुसुजससंगति भनिति भलि होइहि सुजनमनभावनी।
भवअंग बिभूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

दो० प्रिय लागिहि अति सबहि मम, भनित रामजससंग।
दारुबिचार कि करै कोउ, बंदिय मलयप्रसंग ॥
स्याम सुरभि पय बिसद अति, गुनद करहिं सब पान।
गिराग्राम्य सियरामजस, गावहिं सुनहिं सुजान ॥

मनिमानिकमुकताछबि जैसी * अहिगिरिगजसिर सोह न तैसी
नृपकिरीट तरुनीतन पाई * लहहिं सकल सोभा अधिकाई
तैसेहि सुकबिकबित बुध कहहीं * उपजहिं अनत अनत छबि लहहीं

भगतिहेतु बिधिभवन बिहाई * सुमिरत सारद आवति धाई
रामचरितसर बिनु अन्हवाए * सो श्रम जाइ न कोटि उपाए
कबि कोबिद अस हृदै बिचारी * गावहिं हरिजस कलिमलहारी
कीन्हे प्राकृत जनगुनगाना * सिरधुनि गिरालगति पछिताना
हृदयसिन्धु मति सीपसमाना * स्वाती सारद कहहिं सुजाना
जो बरषै बरबारि बिचारू * होहिं कबित मुकता मनि चारू

दो० जुगुति बेधि पुनि पोहिअहि, रामचरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमलउर, सोभा अति अनुराग॥

जो जनमे कलिकाल कराला * करतब बायस बेष मराला
चलत कुपंथ बेदमग छाँडे * कपटकलेवर कलिमल भाँडे
बंचक भगत कहाइ रामके * किंकर कंचन कोहकाम के
तिन्हमहँ प्रथम रेष जगमोरी * धिग धरमध्वज धंधकधोरी
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ * बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊँ
ताते मैं अति अलप बषाने * थोरेहिं महँ जानिहहिं सयाने
समुझिबिबिधिबिनतीअबमोरी * कोउ न कथा सुनि देइहि षोरी
एतेहु पर करिहहिं जे असंका * मोहुते अधिक ते जड़मतिरंका
कबि न होउँ नहिं चतुर कहावौं * मतिअनरूप रामगुन गावौं
कहँ रघुपति के चरित अपारा * कहँ मति मोरि निरत संसारा
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं * कहहु तूल केहि लेषे माहीं
समुझत अमिति रामप्रभुताई * करत कथा मन अति कदराई

दो० सारद सेष महेस बिधि, आगम निगम पुरान।
नेति नेति कहि जासु गुन, करहिं निरंतर गान॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई * तदपि कहे बिनु रहा न कोई

तहाँ बेद अस कारन राषा * भजनप्रभाउ भाँति बहु भाषा
एक अनीह अरूप अनामा * अज सच्चिदानन्द परधामा
ब्यापक बिश्वरूप भगवाना * तेहिं धर देहँ चरित कृत नाना
सो केवल भगतन्ह हित लागी * परमकृपाल प्रनतअनुरागी
जेहि जनपर ममता अति छोहू * जेहि करुना करि कीन्ह न कोहू
गई बहोर गरीब निवाजू * सरल सबल साहिब रघुराजू
बुधबरनहिं हरिजसअसजानी * करहिं पुनीत सुफल निजबानी
तेहि बल मैं रघुपतिगुनगाथा * कहिहौं नाइ रामपद माथा
मुनिन्ह प्रथम हरिकीरति गाई * तेहि मगचलतसुगममोहिंभाई

दो॰ अति अपार जे सरितबर, जौं नृप सेतु कराहिं।
चढ़ि पिपीलिकउ परम लघु, बिनु श्रम पारहि जाहिं॥

एहि प्रकार बल मनहिं देषाई * करिहौं रघुपतिकथा सुहाई
ब्यास आदि कबिपुंगव नाना * जिन्ह सादर हरि सुजस बषाना
चरनकमल बन्दौं तिन्ह केरे * पूरहु सकल मनोरथ मेरे
कलिके कबिन्ह करौं परनामा * जिन्ह बरने रघुपतिगुनग्रामा
जे प्राकृतकबि परम सयाने * भाषा जिन्ह हरिचरित बषाने
भयेजे अहहिं जे होइहहिं आगे * प्रनवौं सबनि कपटछलत्यागे
होहु प्रसन्न देहु बरदानू * साधुसमाज भनिति सनमानू
जो प्रबन्ध बुध नहिं आदरहीं * सो श्रम बादि बालकबि करहीं
कीरति भनिति भूति भलि सोई * सुरसरिसम सबकहँ हित होई
रामसुकीरति भनिति भदेसा * असमंजस अस मोहिं अँदेसा
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे * सिअनि सोहावनि टाट पटोरे
करहु अनुग्रह अस जिअ जानी * बिमल जसहि अनुहरै सुबानी

दो० सरल कबित कीरति बिमल, सोइ आदरहिं सुजान।
सहज बैर बिसराइ रिपु, जो सुनि करहिं बषान॥
सोइ न होइ बिनु बिमल मति, मोहिं मतिबल अति थोरि।
करहु कृपा हरिजस कहउँ, पुनि पुनि करौं निहोरि॥
कबि कोबिद रघुबरचरित, मानसमंजुमराल।
बालबिनय सुनि सुरुचि लषि, मोपर होहु कृपाल॥
सो० बन्दौं मुनिपदकंजु, रामायन जेहि निरमयेउ।
सषर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषन सहित॥
बन्दौं चारिउ बेद, भवबारिधिबोहितसरिस।
जिन्हहिं न सपनेहु षेद, बरनत रघुबरबिसद जस॥
बन्दौं बिधिपदरेनु, भवसागर जेहिं कीन्ह जहँ।
सन्त सुधा ससि धेनु, प्रगटे षल बिषबारुनी॥
बिबुध बिप्र बुध ग्रहचरन, बन्दि कहौं कर जोरि।
ह्वै प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोरि॥

पुनि बंदौं सार सुरसरिता * जुगल पुनीत मनोहरचरिता
मज्जन पान पाप हर एका * कहत सुनत एक हर अबिबेका
गुरु पितु मातु महेसभवानी * प्रनवौं दीनबन्धु दिनदानी
सेवक स्वामि सखा सिअपीके * हितनिरुपधिसबबिधितुलसी के
कलिबिलोकिजगहितहरगिरिजा * साबरमन्त्रजाल जिन्हसिरिजा
अनमिल आषर अर्थ न जापू * प्रगट प्रभाउ महेसप्रतापू
सोउ महेस मोहिंपर अनकूला * करउँ कथा मुदमंगलमूला
सुमिरि सिवासिव पाइ पसाऊ * बरनउँ रामचरित चितचाऊ
भनिति मोरि सिवकृपाबिभाती * ससिसमाज मिलि मनहुँसुराती

जे येहि कथहिं सनेहसमेता * कहिहहिं सुनिहहिंसमुझिसचेता
होइहहिं रामचरनअनुरागी * कलिमलरहित सुमंगलभागी

दो॰ सपनेहु सांचेहु मोहिपर, जौं हरगौरिपसाउ।
तौ फुर होइ जो कहेउँ सब, भाषाभनित प्रभाउ॥

बन्दौं अवधपुरी अति पावनि * सरजूसरिकलिकलुष नसावनि
प्रनवौं पुरनरनारि बहोरी * ममता जिन्हपर प्रभुहि न थोरी
सियनिन्दकअघवोघ नसाए * लोक बिसोक बनाय बसाए
बन्दौं कौसल्या दिसि प्राची * कीरति जासु सकल जग माची
प्रगटेउ जहँ रघुपतिससिचारू * बिश्वसुखद षलकमलतुसारू
दसरथराउ सहित सब रानी * सुकृतसुमंगलमूरति मानी
करौं प्रनाम करम मनबानी * करहु कृपा सुतसेवक जानी
जिन्हहिबिरचिबड़भयउबिधाता * महिमाअवधि रामपितुमाता

सो॰ बन्दौं अवधभुआल, सत्य प्रेम जेहि रामपद।
बिछुरत दीनदयाल, प्रिय तन तृन इव परिहरेउ॥

प्रनवौं परिजनसहित बिदेहू * जाहि रामपद गूढ़ सनेहू
जोग भोग महँ राषेउ गोई * राम बिलोकत प्रगटेउ सोई
प्रनवौं प्रथम भरत के चरना * जासु नेम ब्रत जाइ न बरना
रामचरनपंकज मन जासू * लुबुध मधुप इव तजै न पासू
बन्दौं लछिमनपदजलजाता * सीतल सुभग भगतसुषदाता
रघुपतिकीरति बिमल पताका * दण्डसमान भयेउ जसजाका
सेष सहस्रसीस जगकारन * जो अवतरेउ भूमिभयटारन
सदा सो सानकूल रह मो पर * कृपासिन्धु सौमित्रि गुनाकर
रिपुसूदन पदकमल नमामी * सूर सुसील भरतअनुगामी

महाबीर बिनवौं हनुमाना * राम जासु जस आपु बषाना

सो० प्रनवौं पवनकुमार, षलबनपावक ज्ञानघन।
जासु हृदयआगार, बसहिं राम सरचापधर॥

कपिपति रीछ निसाचरराजा * अङ्गदादि जे कीससमाजा
बन्दौं सबके चरन सुहाए * अधमसरीर राम जिह्न पाए
रघुपतिचरनउपासक जेते * षग मृग सुर नर असुर समेते
बन्दौं पदसरोज सब केरे * जे बिनु काम राम के चेरे
सुकसनकादि भगत मुनिनारद * जे मुनिबर बिज्ञान बिसारद
प्रनवौं सबहि धरनि धरि सीसा * करहु कृपा जन जानि मुनीसा
जनकसुता जगजननि जानकी * अतिसय प्रिय करुनानिधानकी
ताके जुग पदकमल मनावौं * जासु कृपा निरमल मति पावौं
पुनि मनबचनकरम रघुनायक * चरनकमल बन्दौं सब लायक
राजिवनयन धरे धनुसायक * भक्तबिपतिभंजन सुषदायक

दो० गिराअर्थ जलबीचिसम, कहियत भिन्न न भिन्न।
बन्दौं सीतारामपद, जिन्हहि परम प्रिय खिन्न॥

बन्दौं रामनाम रघुबर को * हेतु कृसानुभानुहिमिकर को
बिधिहरिहरमय बेदप्रानसो * अगुन अनूपम गुननिधानसो
महामंत्र जोइ जपत महेसू * कासीमुक्तिहेतु उपदेसू
महिमा जासु जान गनराऊ * प्रथम पूजियत नाम प्रभाऊ
जान आदिकबि नामप्रतापू * भयउ सुद्ध कहि उलटा जापू
सहसनामसम सुनि सिवबानी * जपि जेईं पियसंग भवानी
हरषे हेतु हेरि हर ही को * किय भूषन तियभूषन ती को
नाम प्रभाव जान सिव नीको * कालकूट फल दीन्ह अमीको

दो॰ बरषारितु रघुपतिभगति, तुलसी सालि सुदास।
रामनाम बर बरन जुग, सावन भादौं मास॥

आषर मधुर मनोहर दोऊ * बरन बिलोचन जन जिय जोऊ
सुमिरत सुलभ सुषद सब काहू * लोकलाहु परलोक निबाहू
कहत सुनत समुझत सुठिनीके * रामलषन सम प्रिय तुलसीके
बरनत बरनप्रीति बिलगाती * ब्रह्मजीवसम सहज सँघाती
नरनारायनसरिस सुभ्राता * जगपालक बिसेष जनत्राता
भगतिसुतियकलकरनबिभूषन * जगहितहेतु बिमल बिधुपूषन
स्वादतोषसम सुगति सुधा के * कमठसेषसम धर बसुधा के
जनमनकंजमंजुमधुकर से * जीहजसोमति हरिहलधर से

दो॰ एक छत्र एक मुकुटमनि, सब बरनन्हि पर जोउ।
तुलसी रघुबर नाम के, बरन बिराजत दोउ॥

समुझतसरिस नाम अरुनामी * प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी
नाम रूप दुइ ईस उपाधी * अकथअनादि सुसामुझिसाधी
को बड़ छोट कहत अपराधू * सुनि गुनभेद समुझिहहिं साधू
देषिअहि रूप नाम आधीना * रूपज्ञान नहिं नाम बिहीना
रूपबिसेष नाम बिनु जाने * करतलगत न परहिं पहिचाने
सुमिरिय नाम रूप बिनु देषे * आवत हृदय सनेह बिसेषे
नामरूप गुन अकथ कहानी * समुझत सुषद न परतिबषानी
अगुनसगुनबिच नाम सुसाषी * उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी

दो॰ रामनाममनिदीप धरु, जीहदेहरीद्वार।
तुलसी भीतर बाहर, जौ चाहसि उजिआर॥

नाम जीह जपि जागहिं जोगी * बिरति बिरञ्चि प्रपञ्चबियोगी

ब्रह्मसुषहिं अनुभवहिं अनूपा * अकथ अनामय नाम न रूपा
जानी चहहिं गूढ़गति जेऊ * नाम जीह जपि जानहिं तेऊ
साधक नाम जपहिं लय लाए * होहिं सिद्ध अनिमादिक पाए
जपहिं नाम जन आरत भारी * मिटहिं कुसङ्कट होहिं सुषारी
रामभगत जग चारि प्रकारा * सुकृती चारिउ अनघ उदारा
चहूँ चतुर कहँ नाम अधारा * ज्ञानी प्रभुहिं बिसेष पियारा
चहुँजुग चहुँश्रुति नाम प्रभाऊ * कलिबिसेषि नहिं आन उपाऊ

दो॰ सकलकामनाहीन जे, रामभक्तिरसलीन ।
नाम प्रेमपीयूषह्रद, तिन्हहुँ किये मनमीन ॥

अगुनसगुन दुइ ब्रह्मसरूपा * अकथ अगाध अनादि अनूपा
हमरे मत बड नाम दुहूँते * किय जेहि जुग निजबस निजबूते
प्रौढिसुजन जनि जानहिं जनकी * कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मनकी
एक दारुगत देषिय एकू * पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू
उभय अगम जुग सुगम नामतें * कहेउँ नाम बड ब्रह्म रामतें
ब्यापक एक ब्रह्म अबिनासी * सत चेतनघन आनँदरासी
असप्रभुहृदय अछतअबिकारी * सकल जीव जग दीन दुषारी
नामनिरूपन नामजतन तें * सोउ प्रगटत जिमि मोलरतनतें

दो॰ निर्गुन तें येहि भांति बड, नामप्रभाव अपार ।
कहउँ नाम बड राम तें, निज बिचार अनुसार ॥

राम भगत हित नरतनु धारी * सहि संकट किये साधु सुषारी
नाम सप्रेम जपत अनयासा * भगत होहिं मुदमंगलबासा
राम एक तापसतिय तारी * नाम कोटिषल कुमति सुधारी
रिषिहित राम सुकेतुसुता की * सहितसेनसुत कीन्ह बिबाकी

सहितदोषदुष दासदुरासा * दलइ नाम जिमि रबिनिसिनासा
भंजेउ राम आपु भवचापू * भवभयभंजन नाम प्रतापू
दंडक बन प्रभु कीन्ह सोहावन * जनमनअमितिनामकियेपावन
निसिचरनिकर दले रघुनंदन * नाम सकलकलिकलुषनिकंदन
दो० सबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्हि रघुनाथ।
नाम उधारे अमितखल, बेदबिदित गुनगाथ॥
राम सुकंठ बिभीषन दोऊ * राखे सरन जान सब कोऊ
नाम गरीब अनेक निवाजे * लोक बेद बर बिरद बिराजे
राम भालुकपिकटक बटोरा * सेतुहेतु श्रम कीन्ह न थोरा
नाम लेत भवसिन्धु सुखाहीं * करहु बिचार सुजन मन माहीं
राम सकल कुल रावन मारा * सीयसहित निजपुर पगु धारा
राजा राम अवध रजधानी * गावत सुर मुनिबर बर बानी
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती * बिनु श्रम प्रबल मोहदल जीती
फिरत सनेहमगन सुष अपने * नाम प्रसाद सोच नहिं सपने
दो० ब्रह्म राम तें नाम बड़, बरदायक बरदानि।
रामचरित सतकोटि महँ, लिये महेस जिअजानि॥

मास पारायण १ दिन

नाम प्रसाद संभु अबिनासी * साज अमंगल मंगल रासी
सुक सनकादि सिद्धमुनिजोगी * नामप्रसाद ब्रह्मसुषभोगी
नारद जानेउ नाम प्रतापू * जगप्रियहरि हरिहर प्रिय आपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू * भक्तसिरोमनि भे प्रहलादू
ध्रुव सगलानि जपेउ हरिनाऊँ * पायेउ अचल अनूपम ठाऊँ
सुमिरि पवनसुत पावन नामू * अपने बस करि राखे रामू

अपत अजामिल गज गनिकाऊ * भए मुक्त हरिनाम प्रभाऊ
कहउँ कहां लगि नाम बड़ाई * राम न सकहिं नाम गुन गाई
दो० नाम राम को कल्पतरु, कलि कल्याननिवास।
जो सुमिरत भयो भाँग ते, तुलसी तुलसीदास॥
चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका * भये नाम जपि जीव बिसोका
बेद पुरान सन्त मत एहू * सकल सुकृत फल रामसनेहू
ध्यान प्रथम जुग मख बिधि दूजे * द्वापर परितोषन प्रभु पूजे
कलि केवल मलमूल मलीना * पाप पयोनिधि जन मन मीना
नाम कामतरु काल कराला * सुमिरत समन सकल जगजाला
रामनाम कलि अभिमतदाता * हित परलोक लोक पितुमाता
नहिं कलि करम न भक्ति बिबेकू * रामनाम अवलम्बन एकू
कालनेमि कलि कपटनिधानू * नाम सुमति समरथ हनुमानू
दो० रामनाम नरकेसरी, कनककसिपु कलिकाल।
जापक जन प्रहलाद जिमि, पालिहि दलि सुरसाल॥
भाय कुभाय अनख आलसहूँ * नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ
सुमिरि सो नाम राम गुनगाथा * करौं नाइ रघुनाथहिं माथा
मोरि सुधारिहि सो सब भांती * जासु कृपा नहिं कृपा अघाती
राम सुस्वामि कुसेवक मो सो * निज दिसि देखि दयानिधि पोसो
लोकहु बेद सुसाहेब रीती * बिनय सुनत पहिचानत प्रीती
गनी गरीब ग्राम नर नागर * पंडित मूढ मलीन उजागर
सुकबि कुकबि निज मति अनुहारी * नृपहि सराहत सब नर नारी
साधु सुजान सुसील नृपाला * ईस अंस भव परमकृपाला
सुनि सनमानहिं सबहि सुबानी * भनिति भगति नति गति पहिचानी

एह प्राकृत महिपाल सुभाऊ * जान सिरोमनि कोसलराऊ
रीझत राम सनेह निसोतें * को जग मंद मलिनमन मोतें

दो॰ सठ सेवककी प्रीति रुचि, रषिहहिं राम कृपालु।
उपल किये जलजान जेहिं, सचिव सुमति कपि भालु॥
होंहुँ कहावत सब कहत, राम सहत उपहाँस।
साहेब सीतानाथ से, सेवक तुलसीदास॥

अति बडि मोरि ढिठाई षोरी * सुनि अघ नरकहु नाक सकोरी
समुझिसहममोहिंअपडरअपने * सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने
सुनि अवलोकि सुचित चषु चाही * भगतिमोरिमतिस्वामिसराही
कहत नसाइ होइ हिय नीकी * रीझत राम जानि जनजीकी
रहति न प्रभुचित चूक किये की * करत सुरति सयबार हियेकी
जेहि अघ बधेउ ब्याध जिमि बाली * फिरि सुकंठ सोइ कीन्हि कुचाली
सोइ करतूति बिभीषन केरी * सपनेहुँ सो न राम हिय हेरी
ते भरतहि भेंटत सनमाने * राजसभा रघुबीर बषाने

दो॰ प्रभु तरु तर कपिडार पर, ते किय आपु समान।
तुलसी कहीं न रामसे, साहिब सीलनिधान॥
राम निकाई रावरी, है सबही को नीक।
जौं यह सांची है सदा, तौ नीको तुलसीक॥
एहि बिधि निज गुन दोष कहि, सबहि बहुरि सिर नाइ।
बरनौं रघुबर बिसदजस, सुनि कलिकलुष नसाइ॥

जागवलिक जो कथा सुहाई * भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई
कहिहौं सोइ संबाद बषानी * सुनहु सकल सज्जन सुषमानी
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा * बहुरि कृपाकरि उमाहिं सुनावा

सोइ सिव कागभसुंडिहि दीन्हा * रामभगत अधिकारी चीन्हा
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा * तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा
ते श्रोता बकता समसीला * सबदरसी जानहिं हरिलीला
जानहिं तीनि काल निज ज्ञाना * करतलगत आमलक समाना
औरौ जे हरिभगति सुजाना * कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधि नाना

दो० मैं पुनि निजगुरु सन सुनी, कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहिं तसि बालपन, तब अति रहेउँ अचेत ॥
श्रोता बकता ज्ञाननिधि, कथा राम कै गूढ़।
किमि समुझौं मैं जीवजड, कलिमलग्रसित बिमूढ़ ॥

तदपि कही गुरु बारहिं बारा * समुझि परी कछु मति अनुसारा
भाषाबद्ध करबि मैं सोई * मोरे मन प्रबोध जेहि होई
जस कछु बुधिबिबेकबल मेरे * तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे
निज संदेह मोहभ्रमहरनी * करौं कथा भवसरिता तरनी
बुधबिश्राम सकल जनरंजनि * रामकथा कलिकलुषबिभंजनि
रामकथा कलिपन्नगभरनी * पुनि बिबेकपावक कहँ अरनी
रामकथा कलि कामद गाई * सुजन सजीवनमूरि सोहाई
सोइ बसुधातल सुधातरंगिनि * भयभंजनि भ्रमभेकभुअंगिनि
असुरसेनसम नरकनिकंदिनि * साधुबिबुधकुलहितागिरिनंदिनि
संतसमाज पयोधि रमासी * बिस्वभारभर अचल छमासी
जमगन मुहमसि जग जमुनासी * जीवनमुक्ति हेतु जनु कासी
रामहिं प्रिय पावनि तुलसी सी * तुलसिदास हित हिय हुलसी सी
सिवप्रिय मेकलसैलसुता सी * सकल सिद्धि सुखसंपतिरासी
सदगुन सुरगन अम्ब अदिति सी * रघुबरभक्ति प्रेमपरिमिति सी

दो० रामकथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु।
तुलसी सुभग सनेह बन, सिय रघुबीर बिहारु॥

रामचरित चिंतामनि चारू * संतसुमतितिय सुभगसिंगारू
जगमंगल गुनग्राम राम के * दानि मुक्ति धन धरम धाम के
सद्गुरु ज्ञान बिराग जोग के * बिबुधबैद भव भीम रोग के
जननिजनक सिय राम प्रेम के * बीज सकल ब्रत धरम नेम के
समन पाप संताप सोक के * प्रियपालक परलोक लोक के
सचिवसुभट भूपति बिचार के * कुंभज लोभउदधि अपार के
काम कोहकलिमल करिगन के * केहरिसावक जनमन बन के
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के * कामदघन दारिद दवारि के
मन्त्रमहामनि बिषय ब्याल के * मेटत कठिन कुअंक भाल के
हरन मोहतम दिनकर कर से * सेवकसालिपाल जलधर से
अभिमतदानि देव तरु बर से * सेवत सुलभ सुषद हरिहर से
सुकबि सरद नभ मन उडगन से * रामभगत जन जीवन धन से
सकल सुकृतफल भूरि भोग से * जगहितनिरुपधिसाधुलोग से
सेवक मनमानसमराल से * पावन गंगतरंगमाल से

दो० कुपथ कुतरक कुचालि कलि, कपट दंभ पाषंड।
दहन रामगुनग्राम जिमि, ईंधन अनल प्रचंड॥
रामचरित राकेसकर, सरिस सुषद सब काहु।
सज्जनकुमुदचकोरचित, हित बिसेष बडलाहु॥

कीन्हि प्रस्न जेहि भांति भवानी * जेहि बिधि संकर कहा बषानी
सो सब हेतु कहब मैं गाई * कथाप्रबन्ध बिचित्र बनाई
जेहि यह कथा सुनी नहिं होई * जनि आचरज करै सुनि सोई

कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी * नहिं आचरजु करहिं अस जानी
रामकथा कै मिति जग नाहीं * असिप्रतीति तिन्हके मनमाहीं
नाना भांति राम अवतारा * रामायन सतकोटि अपारा
कलपभेद हरिचरित सोहाये * भांति अनेक मुनीसन्ह गाये
करिअ न संसय अस उर आनी * सुनिय कथा सादर रतिमानी

दो० रामअनंत अनंत गुन, अमिति कथा बिस्तार।
सुनि आचरज न मानिहैं, जिन्ह के बिमल बिचार॥

येहि बिधि सब संसय करि दूरी * सिर धरि गुरुपदपंकजधूरी
पुनि सबही बिनवौं कर जोरी * करतकथा जेहि लाग न षोरी
सादर सिवहि नाइ अब माथा * बरनौं बिसद रामगुनगाथा
संवत सोरह सै येकतीसा * करौं कथा हरिपद धरि सीसा
नौमी भौमबार मधुमासा * अवधपुरी येह चरित प्रकासा
जेहि दिन रामजन्म श्रुतिगावहिं * तीरथसकलतहांचलिआवहिं
असुर नाग षग नर मुनि देवा * आइ करैं रघुनायक सेवा
जन्ममहोत्सव रचहिं सुजाना * करहिं राम कल कीरति गाना

दो० मज्जहिं सज्जनबृंद बहु, पावन सरजूनीर।
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुन्दर स्याम सरीर॥

दरस परस मज्जन अरु पाना * हरै पाप कह बेद पुराना
नदी पुनीत अमिति महिमा अति * कहि न सकै सारदा बिमलमति
रामधामदा पुरी सोहावनि * लोकसमस्तबिदितिजगपावनि
चारि षानि जग जीव अपारा * अवध तजें तन नहिं संसारा
सब बिधि पुरी मनोहर जानी * सकलसिद्धिप्रद मंगलषानी
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा * सुनत नसाहिं काम मद दंभा

रामचरितमानस येह नामा * सुनत श्रवन पाइय बिश्रामा
मनकरि बिषयअनलबन जरई * होइ सुषी जौं येहि सर परई
रामचरितमानस मुनिभावन * बिरचेउ संभु सुहावन पावन
त्रिबिधिदोष दुषदारिद दावन * कलिकुचालिकुलिकलुषनसावन
रचि महेस निज मानस राषा * पाइ सुसमउ सिवासन भाषा
तातें रामचरितमानस बर * धरेउ नाम हिय हेरिहरषि हर
कहौं कथा सोइ सुषद सुहाई * सादर सुनहु सुजन मनलाई

दो० जस मानस जेहि बिधि भएउ, जग प्रचार जेहि हेतु।
अब सोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमा बृषकेतु॥

संभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी * रामचरितमानसकबितुलसी
करइ मनोहर मति अनुहारी * सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू * बेद पुरान उदधि घन साधू
बरषहिं राम सुजस बर बारी * मधुर मनोहर मंगलकारी
लीला सगुन जो कहहिं बषानी * सोइ स्वच्छता करै मलहानी
प्रेम भगति जो बरनि न जाई * सोइ मधुरता सुसीतलताई
सो जल सुकृत सालि हित होई * रामभगत जनजीवन सोई
मेधामहिगत सो जल पावन * सकिलिश्रवनमगचलेउसोहावन
भरेउ सुमानस सुथल थिराना * सुषद सीत रुचि चारु चिराना

दो० सुठि सुन्दर संबाद बर, बिरचे बुद्धि बिचारि।
ते एहि पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि॥

सप्तप्रबंध सुभग सोपाना * ज्ञाननयन निरषत मनमाना
रघुपतिमहिमा अगुन अबाधा * बरनब सोइ बर बारि अगाधा
रामसीयजस सलिल सुधासम * उपमा बीचिबिलास मनोरम

पुरइनि सघन चारु चौपाई * जुक्ति मंजुमनि सीप सोहाई
छंद सोरठा सुंदर दोहा * सोइ बहुरंगकमलकुल सोहा
अरथ अनूप सुभाव सुभासा * सोइ पराग मकरंद सुबासा
सुकृतपुंज मंजुल अलिमाला * ज्ञान बिराग बिचार मराला
धुनि अवरेब कबित गुन जाती * मीन मनोहर ते बहुभांती
अरथ धरम कामादिक चारी * कहब ज्ञान बिज्ञान बिचारी
नवरस जप तप जोग बिरागा * ते सब जलचर चारु तडागा
सुकृती साधु नामगुन गाना * ते बिचित्र जलबिहँग समाना
संतसभा चहुँदिसि अमराई * सरधा रितुबसंतसम गाई
भगतिनिरूपनबिबिधिबिधाना * छमा दया दम लता बिताना
समजम नियम फूल फल ज्ञाना * हरिपदरति रस बेद बषाना
औरौ कथा अनेक प्रसंगा * ते सुक पिक बहु बरन बिहंगा

दो० पुलकबाटिका बाग बन, सुख सुबिहँग बिहारु।
माली सुमन सनेह जल, सींचत लोचन चारु॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे * ते येहि ताल चतुर रषवारे
सदा सुनहिं सादर नर नारी * ते सुरबर मानसअधिकारी
अतिषल जे बिषयी बक कागा * एहिसरनिकटनजाहिं अभागा
संबुक भेक सिवार समाना * इहां न बिषयकथा रस नाना
तेहि कारन आवत हियहारे * कामी काक बलाक बिचारे
आवत एहि सर अति कठिनाई * रामकृपा बिनु आइ न जाई
कठिन कुसंग कुपंथ कराला * तिन्हके बचन बाघ हरि ब्याला
गृहकारज नाना जंजाला * तेइ अति दुर्गम सैल बिसाला
बन बहु बिषम मोह मद माना * नदी कुतर्क भयंकर नाना

दो॰ जे श्रद्धा संबल रहित, नहिं संतन्ह कर साथ।
तिन्हकहँ मानस अगम अति, जिन्हहिं न प्रिय रघुनाथ॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई * जातहिं नींद जुड़ाई होई
जडता जाड बिषम उर लागा * गएहुँ न मज्जन पाव अभागा
करि न जाइ सर मज्जन पाना * फिरि आवै समेत अभिमाना
जौं बहोरि कोउ पूँछन आवा * सरनिंदा करि ताहि बुझावा
सकल बिघ्न ब्यापहिं नहिं तेही * राम सुकृपा बिलोकहिं जेही
सोइ सादर सर मज्जन करई * महाघोर त्रैताप न जरई
ते नर एह सर तजहिं न काऊ * जिन्हकें रामचरन भल भाऊ
जो नहाइ चह येहि सर भाई * सो सतसंग करौ मनलाई
अस मानस मानसचष चाही * भइ कबिबुद्धि बिमल अवगाही
भयउ हृदय आनंद उछाहू * उमगेउ प्रेम प्रमोदप्रबाहू
चली सुभग कबिता सरितासो * राम बिमलजस जलभरि तासो
सरजू नाम सुमंगलमूला * लोक बेद मत मंजुल कूला
नदी पुनीत सुमानसनंदिनि * कलिमलतृनतरुमूलनिकंदिनि

दो॰ श्रोता त्रिबिध समाज पुर, ग्राम नगर दुहुँ कूल।
संतसभा अनुपम अवध, सकल सुमंगलमूल॥

रामभगति सुरसरितहि जाई * मिली सुकीरति सरजु सुहाई
सानुज रामसमर जस पावन * मिलेउ महानद सोन सुहावन
जुग बिचभगति देवधुनि धारा * सोहतिसाहित सुबिरति बिचारा
त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी * रामसरूप सिंधु समुहानी
मानसमूल मिली सुरसरिही * सुनत सुजनमन पावन करिही
बिचबिचकथा बिचित्रबिभागा * जनु सरि तीर तीर बन बागा

उमा महेस बिबाह बराती * ते जलचर अगनित बहुभांती
रघुबर जनम अनंद बधाई * भँवर तरंग मनोहरताई

दो॰ बालचरित चहुँ बंधु के, बनज बिपुल बहुरंग।
नृप रानी परिजन सुकृत, मधुकर बारिबिहंग॥

सीयस्वयंबर कथा सोहाई * सरित सोहावनि सो छबि छाई
नदी नाव पटु प्रश्न अनेका * केवट कुसल उतर सबिबेका
सुनि अनुकथन परस्पर होई * पथिकसमाज सोह सरि सोई
घोर धार भृगुनाथ रिसानी * घाट सबंधु राम बर बानी
सानुज रामबिबाह उछाहू * सो सुभ उमग सुषद सबकाहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं * ते सुकृती मन मुदित नहाहीं
रामतिलक हित मंगल साजा * परबजोग जनु जुरेउ समाजा
काई कुमति कैकई केरी * परी जासु फल बिपति घनेरी

दो॰ समन अमित उतपात सब, भरतचरित जप जाग।
कलि षल अघ अवगुन कथन, ते जलमल बग काग॥

कीरति सरित छहूँरितु रूरी * समय सोहावनि पावनि भूरी
हिमिहिमिसैलसुता सिवब्याहू * सिसिर सुषद प्रभुजनमउछाहू
बरनब राम बिबाह समाजू * सो मुद मंगलमय रितुराजू
ग्रीषम दुसह राम बन गवनू * पंथकथा षर आतप पवनू
बरषा घोर निसाचर रारी * सुरकुल सालि सुमंगलकारी
रामराज सुष बिनय बडाई * बिसद सुषद सोइ सरद सोहाई
सतीसिरोमनि सिय गुनगाथा * सोइगुन अमल अनूपम पाथा
भरत सुभाउ सुसीतलताई * सदा एकरस बरनि न जाई

दो॰ अवलोकनि बोलनि मिलनि, प्रीति परस्पर हास।,

भायप भलि चहुँबंधुकी, जलमाधुरी सुबास ॥
आरति बिनय दीनता मोरी * लघुता ललित सुबारि न खोरी
अद्भुत सलिल सुनत गुनकारी * आस पिआस मनोमलहारी
राम सुप्रेमहिं पोषत पानी * हरत सकल कलिकलुषगलानी
भवश्रम सोषक तोषक तोषा * समन दुरित दुष दारिद दोषा
काम कोह मद मोह नसावन * बिमल बिबेक बिराग बढावन
सादर मज्जन पान कियेते * मिटहिं पाप परिताप हियेते
जिन्ह एहिं बारि न मानस धोए * ते कायर कलिकाल बिगोए
तृषित निरषि रबिकरभव बारी * फिरिहहिं मृग जिमि जीवदुषारी
दो० मति अनुहारि सुबारिगुन, गन गनि मन अन्हवाइ ।
सुमिरि भवानी संकरहि, कह कबि कथा सोहाइ ॥
अब रघुपतिपदपंकरुह, हिय धरि पाय प्रसाद ।
कहौं जुगल मुनिबर्जकर, मिलन सुभग संबाद ॥
भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा * तिन्हहिं रामपद अतिअनुरागा
तापस सम दम दयानिधाना * परमारथपथ परम सुजाना
माघ मकर गत रबि जब होई * तीरथपतिहि आव सब कोई
देव दनुज किन्नर नर श्रेनी * सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी
पूजहिं माधव पद जलजाता * परसि अषयबट हरषहिं गाता
भरद्वाजआश्रम अति पावन * परम रम्य मुनिबर मनभावन
तहां होइ मुनि रिषय समाजा * जाहिं जे मज्जन तीरथराजा
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा * कहहिं परसपर हरिगुनगाहा
दो० ब्रह्मनिरूपन धर्मबिधि, बरनहिं तत्त्वबिभाग ।
कहहिं भक्ति भगवंतकै, संजुत ज्ञान बिराग ॥

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं * पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं
प्रति संबत अति होइ अनंदा * मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृंदा
एकबार भरि मकर नहाए * सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए
जागबलिक मुनि परम बिबेकी * भरद्वाज राखे पद टेकी
सादर चरनसरोज पखारे * अति पुनीत आसन बैठारे
करि पूजा मुनि सुजस बखानी * बोले अति पुनीत मृदु बानी
नाथ एक संसउ बड मोरे * करगत बेदतत्त्व सब तोरे
कहतसोमोहिलागत भयलाजा * जौं न कहौं बड होइ अकाजा

दो० संत कहहिं असि नीति प्रभु, श्रुतिपुरान मुनि गाव।
होइ न बिमल बिबेक उर, गुरुसन किये दुराव॥

अस बिचारि प्रगटौं निज मोहू * हरहु नाथ करि जनपर छोहू
राम नाम कर अमिति प्रभावा * संत पुरान उपनिषद गावा
संतत जपत संभु अबिनासी * सिव भगवान ज्ञान गुनरासी
आकर चारि जीव जग अहहीं * कासी मरत परम पद लहहीं
सोपि राम महिमा मुनिराया * सिव उपदेस करत करि दाया
राम कवन प्रभु पूछौं तोही * कहिय बुझाइ कृपानिधि मोही
एक राम अवधेसकुमारा * तिन्हकर चरित बिदित संसारा
नारिबिरह दुख लहेउ अपारा * भएँ रोष रन रावन मारा

दो० प्रभु सोइ राम कि अपरकोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि।
सत्यधाम सर्बज्ञ तुम्ह, कहहु बिबेक बिचारि॥

जैसें मिटै मोह भ्रम भारी * कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी
जागबलिक बोले मुसुकाई * तुम्हहिं बिदित रघुपति प्रभुताई
राम भगत तुम्ह मन क्रम बानी * चतुराई तुम्हारि मै जानी

चाहहु सुनैं रामगुन गूढा * कीन्हेहुँ प्रश्न मनहुँ अतिमूढा
तात सुनहुँ सादर मनलाई * कहउँ राम कै कथा सोहाई
महामोह महिषेस बिसाला * रामकथा कालिका कराला
रामकथा ससिकिरिनि समाना * संतचकोर करहिं जेहि पाना
ऐसेइँ संसय कीन्ह भवानी * महादेव तब कहा बषानी

दो॰ कहौं सो मति अनुहारि अब, उमासंभु संबाद।
भएउसमयजेहिहेतुजेहि, सुनुमुनिमिटहिबिषाद॥

एकबार त्रेताजुग माँहीं * संभु गए कुंभज रिषि पाँहीं
संग सती जगजननि भवानी * पूजे रिषि अषिलेस्वर जानी
रामकथा मुनि बर्ज बषानी * सुनी महेस परम सुष मानी
रिषि पूछी हरि भगति सुहाई * कही संभु अधिकारी पाई
कहत सुनत रघुपति गुनगाथा * कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा
मुनिसन बिदा मागि त्रिपुरारी * चले भवन सँग दक्षकुमारी
तेहिं अवसर भंजन महिभारा * हरि रघुबंस लीन्ह अवतारा
पिताबचन तजि राज उदासी * दंडकबन बिचरत अबिनासी

दो॰ हृदय बिचारत जात हर, केहि बिधि दरसन होइ।
गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु, गये जान सब कोइ॥

सो॰ संकरउर अति छोभ[1], सती न जानहिं मरम सोइ।
तुलसी दरसन लोभ, मन डर लोचन लालची॥

रावन मरन मनुजकर जाँचा * प्रभु बिधिबचनकीन्हचहसाँचा
जौं नहिं जाउँ रहै पछितावा * करत बिचार न बनत बनावा
यहि बिधि भए सोचबस ईसा * तेही समय जाइ दससीसा

१—क्षुभ संचलने॥

लीन्ह नीच मारीचहि संगा * भएउ तुरत सोइ कपटकुरंगा
करि छल मूढ हरी बैदेही * प्रभुप्रभाव तस बिदित न तेही
मृगबधि बंधुसहित प्रभु आये * आश्रम देषि नयन जल छाये
बिरहबिकल इव नर रघुराई * षोजत बिपिन फिरत दोउभाई
कबहूं जोग बियोग न जाके * देषा प्रगट बिरहदुष ताके

दो॰ अति बिचित्र रघुपतिचरित, जानहिं परम सुजान।
जे मतिमंद बिमोहबस, हृदय धरहिं कछु आन॥

संभु समय तेहि रामहिं देषा * उपजा हिय अतिहरष बिसेषा
भरिलोचन छबिसिंधु निहारी * कुसमय जानि न कीन्हचिन्हारी
जय सच्चिदानंद जगपावन * असकहि चलेउमनोजनसावन
चले जात सिव सतीसमेता * पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता
सती सो दसा संभु कै देषी * उर उपजा संदेह बिसेषी
संकर जगतबंद्य जगदीसा * सुर नर मुनि सब नावहिं सीसा
तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा * कहि सच्चिदानंद परधामा
भए मगन छबि तासु बिलोकी * अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी

दो॰ ब्रह्म जो ब्यापक बिरज अज, अकल अनीह अभेद।
सोकि देहँ धरि होइ नर, जाहि न जानत बेद॥

बिस्नु जो सुरहित नरतनु धारी * सोउ सरबज्ञ जथा त्रिपुरारी
षोजै सोकि अज्ञ इव नारी * ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी
संभुगिरा पुनि मृषा न होई * सिव सरबज्ञ जान सब कोई
अस संसय मन भएउ अपारा * होइ न हृदय प्रबोध प्रचारा
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी * हर अंतरजामी सब जानी
सुनहि सती तव नारिस्वभाऊ * संसय अस न धरिय तन काऊ

जासु कथा कुंभज रिषि गाई * भगति जासु मैं मुनिहिं सुनाई
सो मम इष्टदेव रघुबीरा * सेवत जाहि सदा मुनि धीरा

छं० मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमलमन जेहि ध्यावहीं।
कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं॥
सोइ राम ब्यापक ब्रह्म भुवननिकायपति मायाधनी।
अवतरेउ अपने भगतहित निजतंत्र नित रघुकुलमनी॥

सो० लाग न उर उपदेस, जदपि कहेउ सिव बारबहु।
बोले बिहँसि महेस, हरिमायाबल जानि जिअ॥

जौं तुम्हरे मन अति संदेहू * तौ किन जाइ परिक्षा लेहू
तबलगि बैठ अहौं बट छाँहीं * जबलगि तुम ऐहौ मोहिंपाँहीं
जैसें जाइ मोह भ्रम भारी * करेहु सो जतन बिबेक बिचारी
चली सती सिवआयसु पाई * करइ बिचार करौं का भाई
इहाँ संभु अस मन अनुमाना * दक्षसुताकहँ नहिं कल्याना
मोरेहु कहें न संसय जाहीं * बिधि बिपरीत भलाई नाहीं
होइहि सोइ जो राम रचिराषा * को करि तर्क बढावै साषा
अस कहि जपन लगे हरिनामा * गई सती जहँ प्रभु सुषधामा

दो० पुनि पुनि हृदय बिचार करि, धरि सीताकर रूप।
आगे ह्वै चलि पंथ तेहि, जेहि आवत नरभूप॥

लछिमन दीष उमाकृत बेषा * चकित भये भ्रम हृदय बिसेषा
कहि न सकत कछु अतिगंभीरा * प्रभुप्रभाव जानत मतिधीरा
सतीकपट जान्यौ सुरस्वामी * सबदरसी सब अंतरजामी
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना * सोइ सरबज्ञ राम भगवाना
सती कीन्ह चह तहँ दुराऊ * देषहु नारिसुभाउ प्रभाऊ

निजमायाबल हृदय बषानी * बोले बिहँसि राम मृदुबानी
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू * पितासमेत लीन्ह निज नामू
कहेउ बहोरि कहाँ बृषकेतू * बिपिन अकेलि फिरहु केहिहेतू

दो॰ रामबचन मृदु गूढ सुनि, उपजा अति संकोच।
सती सभीत महेस पहिं, चली हृदय बड सोच॥

मैं संकर कर कहा न माना * निज अज्ञान राम पर आना
जाइ उतर अब देहौं काहा * उर उपजा अति दारुन दाहा
जाना राम सती दुष पावा * निजप्रभाव कछु प्रगटि जनावा
सती दीष कौतुक मग जाता * आगे राम सहित श्री भ्राता
फिरि चितवा पाछे प्रभु देषा * सहित बंधु सिय सुंदर बेषा
जहँ चितवहि तहँ प्रभु आसीना * सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना
देषे सिव बिधि बिस्नु अनेका * अमित प्रभाव एकतें एका
बंदत चरन करत प्रभु सेवा * बिबिधि बेष देषे सब देवा

दो॰ सती बिधात्री इंदिरा, देषी अमिति अनूप।
जेहि जेहि बेष अजादिसुर, तेहि तेहि तनअनुरूप॥

देषे जहँ तहँ रघुपति जेते * सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते
जीव चराचर जे संसारा * देषे सकल अनेक प्रकारा
पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा * राम रूप दूसर नहिं देषा
अवलोके रघुपति बहुतेरे * सीतासहित न बेष घनेरे
सोइ रघुबर सोइ लछिमन सीता * देषि सती अति भई सभीता
हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं * नयन मूँदि बैठी मग माहीं

१—किं वाच्या दनुजा नागा वानरा किन्नरा नराः। वत्स लक्ष्मण पश्यैतां मायां माया विमोहिताम्॥ नमस्ते दक्षतनये नमस्ते शम्भुभामिनि। किमर्थं धूर्जटीं देवं त्यक्त्वा भ्रमसि कानने॥ इति वीरभद्र चम्पू॥

बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी * कछु न दीष तहँ दक्षकुमारी
पुनि पुनि नाइ रामपद सीसा * चली तहाँ जहँ रहे गिरीसा
दो० गई समीप महेस तब, हँसि पूछी कुसलात।
लीन्हि परिक्षा कवनि बिधि, कहहु सत्य सब बात॥

मास पारायण २ दिन

सती समुझि रघुबीर प्रभाऊ * भयबस प्रभुसन कीन्ह दुराऊ
कछु न परिक्षा लीन्हि गुसाँई * कीन्ह प्रनाम तुम्हारिहि नाँई
जो तुम कहा सो मृषा न होई * मोरे मन प्रतीति अति सोई
तब संकर देषेउ धरि ध्याना * सती जोकीन्ह चरितसब जाना
बहुरि राम मायहि सिरनावा * प्रेरि सतिहि जेहि झूँठ कहावा
हरि इच्छा भावी बलवाना * हृदय बिचारत संभु सुजाना
सती कीन्ह सीता कर बेषा * सिवउर भएउ बिषाद बिसेषा
जौं अब करौं सतीसन प्रीती * मिटइ भगति पथ होइ अनीती
दो० परम पुनीत न जाइ तजि, किये प्रेम बडपाप।
प्रगटि न कहत महेस कछु, हृदय अधिक संताप॥
तब संकर प्रभुपद सिरनावा * सुमिरत राम हृदय अस आवा
एहि तन सतिहि भेंट मोहिंनाहीं * सिव संकल्प कीन्ह मन माहीं
अस बिचारि संकर मतिधीरा * चले भवन सुमिरत रघुबीरा
चलत गगन भइ गिरा सोहाई * जय महेस भलि भक्ति दृढाई
असप्रन तुम्हबिनु करै को आना * रामभक्त समरथ भगवाना
सुनि नभगिरा सती उर सोचा * पूँछा सिवहि समेत सकोचा
कीन्ह कवन प्रन कहहु कृपाला * सत्यधाम प्रभु दीनदयाला
जदपि सती पूँछा बहुभाँती * तदपि न कहेउ त्रिपुरआराती

दो० सती हृदय अनुमान किय, सब जानेउ सरबज्ञ ।
कीन्ह कपट मैं संभुसन, नारि सहज जड अज्ञ ॥
सो० जल पय सरिस बिकाइ, देखहु प्रीति कि रीति भलि ।
बिलग होत रस जाइ, कपट षटाई परतहीं ॥
हृदयसोचसमुझतनिजकरनी * चिंता अमिति जाइ नहिं बरनी
कृपासिंधु सिव परम अगाधा * प्रगट न कहेउ मोर अपराधा
संकररुष अवलोकि भवानी * प्रभुमोहितजेउहृदयअकुलानी
निजअघसमुझिनकछुकहिजाई * तपै अवाँ इव उर अधिकाई
सतिहि ससोच जानि बृषकेतू * कही कथा सुंदर सुषहेतू
बरनत पंथ बिबिधि इतिहाँसा * बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा
तहँपुनिसंभुसमुझि प्रनआपन * बैठे बटतर करि कमलासन
संकर सहज सरूप सँभारा * लागि समाधि[1] अषंड अपारा
दो० सती बसे कैलास तब, अधिक सोच मन माहिं ।
मरम न कोऊ जान कछु, जुगसम देवस सिराहिं ॥
नितिनव सोच सती उर भारा * कब जैहौं दुषसागर पारा
मै जो कीन्ह रघुपति अपमाना * पुनि पतिबचन मृषाकरि जाना
सो फल मोहि बिधाता दीन्हा * जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा
अबबिधिअसबूझियेनहिंतोही * संकर बिमुष जिआवसि मोही
कहि न जाइ कछुहृदयगलानी * मनमहँ रामहिं सुमिरि सयानी
जौं प्रभु दीनदयाल कहावा * आरतिहरन बेद जस गावा
तौ मै बिनय करौं कर जोरी * छूटै बेगि देह यह मोरी
जो मोरे सिवचरन सनेहू * मन क्रम बचन सत्यब्रत एहू

१—समाधीयते चित्तमस्मिन्निति समाधिः ॥

दो० तौ सबदरसी सुनिय प्रभु, करौ सो बेगि उपाइ।
होइ मरन जेहिबिनहिंश्रम, दुसह बिपत्ति बिहाइ॥

एहिबिधि दुषित प्रजेसकुमारी * अकथनीय दारुन दुष भारी
बीते संबत सहस सतासी * तजी समाधि संभु अबिनासी
रामनाम सिव सुमिरन लागे * जानेउँ सती जगतपति जागे
जाइ संभुपद बंदन कीन्हा * सन्मुख संकर आसन दीन्हा
लगे कहन हरिकथा रसाला * दक्ष प्रजेस भये तेहि काला
देषा बिधि बिचारि सब लायक * दक्षहि कीन्ह प्रजापतिनायक
बड अधिकार दक्ष जब पावा * अतिअभिमान हृदयतबआवा
नहिं कोउ अस जनमा जगमाहीं * प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं

दो० दक्ष लिये मुनि बोलि सब, करन लगे बडजाग।
नेवते सादर सकल सुर, जो पावत मषभाग॥

किन्नर नाग सिद्ध गंधर्बा * बधुन समेत चले सुर सर्बा
बिस्नु बिरंचि महेस बिहाई * चले सकल सुर जान बनाई
सती बिलोके ब्योम बिमाना * जात चले सुंदर बिधिनाना
सुरसुंदरी करहिं कल गाना * सुनत श्रवन छूटहिं मुनिध्याना
पूछेउ तब सिव कहेउ बषानी * पिता जज्ञ सुनि कछु हरषानी
जौं महेस मोहि आयसु देहीं * कछु दिन जाइ रहौं मिसु एहीं
पतिपरित्याग हृदय दुष भारी * कहइ न निज अपराध बिचारी
बोली सती मनोहर बानी * भय संकोच प्रेमरस सानी

दो० पिताभवन उत्सव परम, जौं प्रभु आयसु होइ।
तौ मै जाउँ कृपाअयन, सादर देषन सोइ॥

कहेउ नीक मोरे मन भावा * एह अनुचित नहिं नेवत पठावा

दक्ष सकल निजसुता बोलाई * हमरे बयर तुमहिं बिसराई
ब्रह्मसभा हम सन दुष माना * तेहितें अजहुँ करहिं अपमाना
जौं बिनु बोले जाहु भवानी * रहै न सील सनेह न कानी
जदपि मित्र प्रभु पितु गुरु गेहा * जाइय बिन बोले न सँदेहा
तदपि बिरोध मान जहँ कोई * तहाँ गयें कल्यान न होई
भाँति अनेक संभु समुझावा * भावीबस न ज्ञान उर आवा
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बोलाए * नहिं भलि बात हमारेहि भाए

दो० कहि देषा हर जतन बहु, रहै न दक्षकुमारि।
दिए मुष्यगन संग तब, बिदा कीन्हि त्रिपुरारि॥

पिताभवन जब गई भवानी * दक्षत्रास काहुँ न सनमानी
सादर भलेहिं मिली एक माता * भगनी मिलीं बहुत मुसुकाता
दक्ष न कछु पूँछी कुसलाता * सतिहि बिलोकि जरे सब गाता
सती जाइ देषेउ तब जागा * कतहुँ न दीष संभुकर भागा
तब चित चढ़ेउ जो संकर कहेऊ * प्रभु अपमान समुझि उर दहेऊ
पाछिलदुष अस हृदय न ब्यापा * जस यह भएउ महा परितापा
जद्यपि जग दारुन दुष नाना * सबतें कठिन जाति अपमाना
समुझि सो सतिहि भएउ अति क्रोधा * बहुबिधि जननी कीन्ह प्रबोधा

दो० सिव अपमान न जाइ सहि, हृदय न होइ प्रबोध।
सकलसभहि हठि हटकि तब, बोली बचन सक्रोध॥

सुनहुँ सभासद सकल मुनिंदा * कही सुनी जिन्ह संकर निंदा
सो फल तुरत लहब सब काहू * भलीभाँति पछताब पिताहू
संत संभु श्रीपति अपबादा * सुनिय जहाँ तहँ असि मरजादा
काढिय तासु जीभ जो बसाई * श्रवन मूँदि नत चलिय पराई

जगदातमा महेस पुरारी * जगतजनक सबके हितकारी
पिता मंदमति निंदत तेही * दक्षसुक्रसंभव यह देही
तजिहौं तुरत देहँ तेहि हेतू * उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू
असकहिजोगअगिनितनजारा * भएउ सकल मष हाहाकारा

दो० सती मरन सुनि संभुगन, लगे करन मषषीस।
जज्ञबिधंस बिलोकि भृगु, रक्षा कीन्हि मुनीस॥

समाचार सब संकर पाए * बीरभद्र करि कोप पठाए
जज्ञबिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा * सकल सुरन्हबिधिवतफल दीन्हा
भइ जग बिदित दक्षगति सोई * जस कछु संभुबिमुषकै होई
एह इतिहाँससकलजग जानी * तातें मै संछेप बषानी
सती मरत हरिसन बर मांगा * जन्म जन्म सिवपद अनुरागा
तेहि कारन हिमगिरिगृह जाई * जनमीं पारबती तन पाई
जबतें उमा सैल गृह जाई * सकल सिद्धि संपति तहँ छाई
जहँजहँमुनिन्ह सुआश्रमकीन्हे * उचित बास हिमभूधर दीन्हे

दो० सदा सुमन फलसहित सब, द्रुम नव नाना जाति।
प्रगटीं सुंदर सैल पर, मनि आकर बहु भाँति॥

सरिता सब पुनीतजल बहहीं * षग मृग मधुप सुखी सब रहहीं
सहज बैर सब जीवन्ह त्यागा * गिरिपरसकल करहिं अनुरागा
सोह सैल गिरिजा गृह आये * जिमि जन रामभगति के पाये
नित नूतन मंगल गृह तासू * ब्रह्मादिक गावहिं जस जासू
नारद समाचार सब पाए * कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए
सैलराज बड आदर कीन्हा * पद पषारि बर आसन दीन्हा
नारि सहित मुनिपद सिरनावा * चरनसलिल सब भवन सिंचावा

निज सौभाग्य बहुतबिधि बरना * सुता बोलि मेली मुनिचरना

दो० त्रिकालज्ञ सर्बज्ञ तुम्ह, गति सर्बत्र तुम्हारि।
कहहु सुताके दोष गुन, मुनिबर हृदय बिचारि॥

कह मुनि बिहँसि गूढ मृदुबानी * सुता तुम्हारि सकल गुन षानी
सुंदरि सहज सुसील सयानी * नाम उमा अंबिका भवानी
सब लक्षन संपन्न कुमारी * होइहि संतत पिअहि पिआरी
सदाँअचलयेहिकरअहिबाता * एहितें जस पैहहिं पितुमाता
होइहि पूज्य सकल जगमाहीं * एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
एहिकर नाम सुमिरि संसारा * तिअचढिहहिं पतिब्रतअसिधारा
सैल सुलक्षन सुता तुम्हारी * सुनहुँ जे अब अवगुन दुइचारी
अगुन अमान मातुपितुहीना * उदासीन सब संसय छीना

दो० जोगी जटिल अकाम मन, नगन अमंगल बेष।
अस स्वामी एहिकहँ मिलिहि, परी हस्त असि रेष॥

सुनिमुनिगिरा सत्यजिअजानी * दुष दंपतिहि उमा हरषानी
नारदहूँ यह भेद न जाना * दसा एक समुझब बिलगाना
सकल सषी गिरिजा गिरि मैना * पुलक सरीर भरे जल नैना
होइ न मृषा देव रिषि भाषा * उमा सो बचन हृदय धरिराषा
उपजेउ सिवपदकमल सनेहू * मिलन कठिन मन भा संदेहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई * सषी उछंग बैठि पुनि जाई
झूँठ न होइ देवरिषि बानी * सोचहिं दंपति सषी सयानी
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ * कहहु नाथ का करिय उपाऊ

दो० कह मुनीस हिमवंत सुनु, जो बिधि लिषा लिलार।
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनहार॥

तदपि एक मै कहौं उपाई * होइ करै जौं दैव सहाई
जस बर मै बरनेउँ तुम्ह पाहीं * मिलिहि उमहिं तस संसय नाहीं
जे जे बर के दोष बषाने * ते सब सिवपहिं मै अनुमाने
जौं बिबाह संकर सन होई * दोषौ गुनसम कह सब कोई
जौं अहिसेज सयन हरि करहीं * बुध कछु तिन्हकर दोष न धरहीं
भानु कृसानु सर्बरस षाहीं * तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं
सुभअरुअसुभसलिलसबबहहीं * सुरसरिकोउ अपुनीत न कहहीं
समरथ कहँ नहिं दोस गोसाँई * रबि पावक सुरसरि की नाईं
दो॰ जौं असि हिसिषा करहिं नर, जड बिबेक अभिमान।
परहिं कल्पभरि नर्क महँ, जीव कि ईस समान॥
सुरसरिजल कृत बारुनि जाना * कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना
सुरसरि मिले सो पावन जैसे * ईस अनीसहि अंतर तैसे
संभु सहज समरथ भगवाना * एहिबिबाह सबबिधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेसू * आसुतोष पुनि किएँ कलेसू
जौं तप करै कुमारि तुम्हारी * भाबिउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी
जद्यपि बर अनेक जग माहीं * एहिकहँ सिवतजि दूसर नाहीं
बरदायक प्रनतारतिभंजन * कृपासिंधु सेवकमनरंजन
इक्षितफल बिनु सिव अवराधे * लहिय न कोटि जोग जप साधे
दो॰ असकहि नारद सुमिरिहरि, गिरजहि दीन्ह असीस।
होइहि अब कल्यान सब, संसय तजहु गिरीस॥
असकहि ब्रह्मभवनमुनिगएऊ * आगिलचरित सुनहुँजसभएऊ
पतिहि एकांत पाइ कह मैना * नाथ न मै समुझे मुनि बैना
जौं घर बर कुल होइ अनूपा * करिअ बिबाह सुताअनुरूपा

नत कन्या बरु रहै कुँआरी * कंत उमा मम प्रानपिआरी
जौं न मिलिहि बर गिरिजहि जोगू * गिरि जड सहज कहिहि सब लोगू
सोइ बिचारि पति करेहु बिबाहू * जेहि न बहोरि होइ उर दाहू
अस कहि परी चरन धरि सीसा * बोले सहित सनेह गिरीसा
बरु पावक प्रगटै ससि माहीं * नारदबचन अन्यथा नाहीं

दो० प्रिआ सोच परिहरहु अब, सुमिरहु श्रीभगवान।
पारबतिहि निरमएउ जेहिं, सोइ करिहि कल्यान॥

अब जौं तुम्हहिं सुतापर नेहू * तौ अस जाइ सिषावन देहू
करै सो तप जेहि मिलहिं महेसू * आँन उपाय न मिटिहि कलेसू
नारदबचन सगर्भ सहेतू * सुंदर सब गुननिधि बृषकेतू
असबिचारि तुम्ह तजहु असंका * सबहि भाँति संकर अकलंका
सुनि पतिबचन हरषि मन माहीं * गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं
उमहिं बिलोकि नयन भरे बारी * सहित सनेह गोद बैठारी
बारहिं बार लेति उरलाई * गदगद कंठ न कछु कहि जाई
जगतमातु सर्बज्ञ भवानी * मातुसुषद बोली मृदुबानी

दो० सुनहि मातु मै दीष अस, सपन सुनावों तोहि।
सुंदर गौर सुबिप्र बर, अस उपदेसेउ मोहि॥

करहि जाइ तप सैलकुमारी * नारद कहा सो सत्य बिचारी
मातु पितहि पुनि यह मत भावा * तप सुषप्रद दुष दोस नषावा
तपबल रचै प्रपंच बिधाता * तपबल बिस्नु सकलजगत्राता
तपबल संभु करहिं संघारा * तपबल सेष धरै महि भारा
तप अधार सब सृष्टि भवानी * करहि जाइ तप अस जिअ जानी
सुनत बचन बिसमित महतारी * सपन सुनाएउ गिरिहि हँकारी

मातु पिताहि बहुबिधि समुझाई * चली उमा तपहित हरषाई
प्रिअ परिवार पिता अरु माता * भये बिकल मुष आव न बाता
दो॰ बेदसिरामुनि आइ तब, सबहि कहा समुझाइ।
पारबती महिमा सुनत, रहे प्रबोधहि पाइ॥
उरधरि उमा प्रानपति चरना * जाइ बिपिन लागी तपकरना
अति सुकुमारि न तन तपजोगू * पतिपद सुमिरि तजेउ सब भोगू
निति नव चरन उपज अनुरागा * बिसरी देह तपहि मन लागा
संबत सहस मूल फल षाए * साक षाइ सत बरष गँवाए
कछु दिन भोजन बारि बतासा * किये कठिन कछु दिन उपबासा
बेलपाति महि परै सुषाई * तीनि सहस संबत सोइ षाई
पुनि परिहरे सुषाने परना * उमहिं नाम तब भएउ अपरना
देखि उमहिं तपषीन सरीरा * ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा
दो॰ भएउ मनोरथ सुफल तब, सुनु गिरिराजकुमारि।
परिहरु दुसह कलेस सब, अब मिलिहहिं त्रिपुरारि॥
अस तप काहुँ न कीन्ह भवानी * भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी
अब उर धरहु ब्रह्मबर बानी * सत्य सदाँ संतत सुचि जानी
आवै पिता बोलावँन जबहीं * हठ परिहरि घर जाएहु तबहीं
मिलहिं तुमहिं जब सप्तरिषीसा * जानेहुँ तब प्रमान बागीसा
सुनत गिरा बिधि गगन बषानी * पुलकगात गिरिजा हरषानी
उमाचरित सुंदर मै गावा * सुनहुँ संभुकर चरित सोहावा
जबतें सती जाइ तन त्यागा * तबतें सिवमन भएउ बिरागा
जपहिं सदाँ रघुनायक नामा * जहँ तहँ सुनहिं रामगुनग्रामा
दो॰ चिदानंद सुषधाम सिव, बिगत मोह मद काम।

बिचरहिं महि धरि हृदय हरि, सकललोक आराम ॥
कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ज्ञाना * कतहुँ रामगुन करहिं बषाना
जदपि अकाम तदपि भगवाना * भगतबिरहदुषदुषित सुजाना
एहिबिधि गएउ काल बहु बीती * नित नइ होइ रामपद प्रीती
नेम प्रेम संकर कर देषा * अबिचल हृदय भगति कै रेषा
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला * रूप सीलनिधि तेज बिसाला
बहु प्रकार संकरहि सराहा * तुम्ह बिनुअसहितकोनिरवाहा
बहुबिधिराम सिवहि समुझावा * पारबती कर जन्म सुनावा
अति पुनीत गिरिजा कै करनी * बिस्तरसहित कृपानिधि बरनी
दो० अब बिनती मम सुनहुँ सिव, जौं मोपर निजनेहुँ।
जाइ बिबाहहु सैलजहि, एह मोहि मागे देहु ॥
कह सिवजदपिउचितअसनाहीं * नाथबचन पुनि मेटि न जाहीं
सिरधरिआयसुकरिअ तुम्हारा * परमधरम यह नाथ हमारा
मातु पिता प्रभु गुरुकै बानी * बिनहिंबिचार करिअसुभजानी
तुम्ह सब भाँति परमहितकारी * अज्ञा सिरपर नाथ तुम्हारी
प्रभु तोषेउ सुनि संकर बचना * भक्ति बिबेक धर्मजुत रचना
कह प्रभु हर तुम्हार प्रन रहेऊ * अब उर राषेहु हम जो कहेऊ
अंतरधान भए अस भाषी * संकर सोइ मूरति उर राषी
तबहिं सप्तरिषि सिव पहिं आये * बोले प्रभु अति बचन सोहाये
दो० पारबती पहिं जाइ तुम्ह, प्रेम परीक्षा लेहु।
गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन, दूरि करेहु संदेहु ॥
रिषिन्ह गौरि देषी तहँ कैसी * मूरतिमंत तपस्या जैसी
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी * करहु कवन कारन तप भारी

केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू * हमसन सत्य मरम सब कहहू
सुनत रिषिन्ह के बचन भवानी * बोली गूढ मनोहर बानी
कहत मरम मन अति सकुचाई * हसिहहु सुनि हमारि जडताई
मन हठ परा न सुनै सिषावा * चहत बारिपर भीति उठावा
नारद कहा सत्य हम जाना * बिनु पंषन हम चहहिं उडाना
देषहु मुनि अबिबेक हमारा * चाहिअ सिवहि सदाँ भरतारा

दो० सुनत बचन बिहँसे रिषय, गिरिसंभव तव देहँ।
नारद कर उपदेस सुनि, कहहु बसेउ किसु गेह ॥

दक्षसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई * तिन्ह फिरि भवन न देषा आई
चित्रकेतु कर घर उन्ह घाला * कनककसिपु कर पुनि असहाला
नारदसिष जु सुनहिं नर नारी * अवसि होहिं तजि भवनभिषारी
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा * आपु सरिस सबही चह कीन्हा
तेहिके बचन मानि बिस्वासा * तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुन निलज कुबेष कपाली * अकुल अगेह दिगंबर ब्याली
कहहु कवन सुष अस बर पाएँ * भल भूलिहु ठग के बौराएँ
पंच कहें सिव सती बिबाही * पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही

दो० अब सुष सोवत सोच नहिं, भीषि मांगि भव षाहिं।
सहज एकाकिन्हके भवन, कबहुँकि नारि षटाहि ॥

अजहूं मानहुँ कहा हमारा * हम तुम्हकह बर नीक बिचारा
अति सुन्दर सुचि सुषद सुसीला * गावहिं बेद जासु जस लीला
दूषनरहित सकल गुनरासी * श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी
अस बर तुम्हहिं मिलाउब आनी * सुनत बचन कह बिहँसि भवानी
सत्य कहेहु गिरिभव तन एहा * हठ न छूट छूटै बरु देहा

कनकौ पुनि पषान तें होई * जारेहुँ सहज न परिहर सोई
नारदबचन न मैं परिहरऊँ * बसौ भवन उजरौ नहिं डरऊँ
गुरु के बचन प्रतीति न जेही *सपनेहुँ सुगम न सुष सिधि तेही
दो० महादेव अवगुन भवन, बिस्नु सकल गुनधाम।
जेहिकर मनरम जाहिसन, तेहि तेहीसन काम॥
जौं तुहँ मिलतेहु प्रथम मुनीसा * सुनतिउँसिषतुम्हारिधरिसीसा
अब मैं जन्म संभु हित हारा * को गुन दूषन करै बिचारा
जौं तुम्हरे हठ हृदय बिसेषी * रहि न जाइ बिनु कियें बरेषी
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं * बर कन्या अनेक जगमाहीं
जनम कोटि लगि रगरि हमारी * बरैं संभु नत रहौं कुआँरी
तजौं न नारद कर उपदेसा * आपु कहहिं सत बार महेसा
मैं पाँ परौं कहै जगदम्बा *तुम्ह गृह गवनहुँ भएउ बिलंबा
देषि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी * जय जय जगदंबिके भवानी
दो० तुम्ह माया भगवान सिव, सकल जगत पितु मातु।
नाइ चरन सिर मुनि चले, पुनि पुनि हरषित गातु॥
जाइ मुनिन्ह हिमवंत पठाये *करि बिनती गिरिजहि गृह ल्याये
बहुरि सप्तरिषि सिवपहिं जाई * कथा उमाकै सकल सुनाई
भये मगन सिव सुनत सनेहा * हरषि सप्तरिषि गवने गेहा
मन करि थिर तब संभु सुजाना * लगे करन रघुनायक ध्याना
तारक असुर भएउ तेहि काला* भुज प्रताप बल तेज बिसाला
तेहिं सब लोक लोकपति जीते * भये देव सुष संपति रीते
अजर अमर सो जीति न जाई * हारे सुर करि बिबिधि लराई
तब बिरंचि पहिं जाइ पुकारे * देषे बिधि सब देव दुषारे

दो॰ सबसन कहा बुझाइ बिधि, दनुजनिधन तब होइ।
संभु सुक्रसंभूत सुत, एहि जीतै रन सोइ ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई * होइहि ईस्वर करिहि सहाई
सती जो तजी दक्षमष देहा * जनमी जाइ हिमाचल गेहा
तेहिं तप कीन्ह संभु पति लागी * सिव समाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असमंजस भारी * तदपि बात एक सुनहुँ हमारी
पठवहु काम जाइ सिव पाहीं * करै छोभ संकर मनमाहीं
तब हम जाइ सिवहि सिर नाई * करवाउब बिबाह बरिआई
एहि बिधि भलेहि देव हितहोई * मत अति नीकि कहै सबकोई
अस्तुति सुरन्ह कीन्ह अति हेतू * प्रगटेउ बिषम बान झषकेतू

दो॰ सुरन्ह कही निज बिपति सब, सुनि मन कीन्ह बिचार।
संभुबिरोध न कुसल मोहि, बिहँसि कह्यो अस मार ॥

तदपि करब मै काज तुम्हारा * श्रुति कह परमधरम उपकारा
परहित लागि तजै जो देही * संतत संत प्रसंसहिं तेही
असकहि चलेउ सबहि सिरुनाई * सुमन धनुष कर सहितसहाई
चलत मार अस हृदय बिचारा * सिव बिरोध ध्रुव मरन हमारा
तब आपन प्रभाव बिस्तारा * निजबस कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं बारिचर केतू * छन महँ मिटे सकल श्रुतिसेतू
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना * धीरज धरम ज्ञान बिज्ञाना
सदाचार जप जोग बिरागा * सभय बिबेक कटक सब भागा

छंद

भागेउ बिबेक सहाइ सहित सो सुभट संजुग महि मुरे।
सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महँ जाइ तेहि अवँसर दुरे।

होनिहार का करतार को रषवार जग षर भर परा।
दुइमाथ केहि रतिनाथ जेहि कहँ कोपि कर धनु सरधरा॥
दो० जे सजीव जग चर अचर, नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि, भये सकल बस काम॥
सबके हृदय मदन अभिलाषा * लता निहारि नवहिं तरुसाषा
नदी उमगि अंबुधि कहँ धाईं * संगम करहिं तलाव तलाईं
जहँ असि दसा जडनकै बरनी * को कहि सकै सचेतन करनी
पसु पक्षी नभ जल थल चारी * भये कामबस समय बिसारी
मदन अंध ब्याकुल सबलोका * निसिदिननहिं अवलोकहिं कोका
देव दनुज नर किन्नर ब्याला * प्रेत पिसाच भूत बेताला
इन्हकी दशा न कहेउँ बषानी * सदाँ काम के चेरे जानी
सिद्ध बिरक्त महा मुनि जोगी * तेपि कामबस भए बियोगी

छंद

भये कामबस जोगीस तापस पावरन्हि की को कहै।
देषहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देषत रहैं॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामयं।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं॥
सो० धरी न काहू धीर, सब के मन मनसिज हरे।
जेहि राषे रघुबीर, ते उबरे तेहि काल महँ॥
उभयघरी अस कौतुक भएऊ * जबलगि काम संभुपहँ गएऊ
सिवहि बिलोकि ससंकेउ मारू * भए जथाथिति सब संसारू
भए तुरत सब जीव सुषारे * जिमि मद उतरि गये मतवारे
रुद्रहि देषि मदन भय माना * दुराधरष दुर्गम भगवाना

फिरत लाज कछु करि नहिं जाई * मरन ठानि मन रचेसि उपाई
प्रगटेसि तुरित रुचिर रितुराजू * कुसुमित नव तरुराजि बिराजू
बन उपबन बापिका तडागा * परमसुभगसबदिसा बिभागा
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा * देषि मुएहु मन मनसिजजागा

छन्द

जागेउ मनोभव मुएहु मन बन सुभगता न परै कही।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सषा सही॥
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहिं अप्सरा॥

दो० सकल कला करि कोटि बिधि, हारेउ सेन समेत।
चली न अचल समाधि सिव, कोपेउ हृदयनिकेत॥

देषि रसाल बिटप बर साषा * तेहिपर चढेउ मदन मनमाषा
सुमन चाँप निज सर संधाने * अतिरिसताकिश्रवनलगिताने
छाडे बिषम बिसिष उर लागे * छूटि समाधि संभु तब जागे
भएउ ईस मन छोभ बिसेषी * नयन उघारि सकलदिसिदेषी
सौरभ पल्लव मदन बिलोका * भएउ कोप कंपेउ त्रैलोका
तब सिव तीसर नयन उघारा * चितवत काम भएउ जरिछारा
हाहाकार भएउ जग भारी * डरपे सुर भए असुर सुषारी
समुझि कामसुष सोचहिं भोगी * भये अकंटक साधक जोगी

छन्द

जोगी अकंटक भए पतिगति सुनत रति मूरछित भई।
रोदति बदति बहुभाँति करुना करति संकरपाहिं गई॥

१–उन्मादस्तापनश्चैव सोषणस्तंभनस्तथा। संमोहनश्च कामस्य बाणाः पञ्च प्रकीर्तिताः॥ पुष्पमयः–अरविन्दमशोकं च चूतं चम्पकमाल्लिका॥ इति कोशे॥

मदन-दहन ।
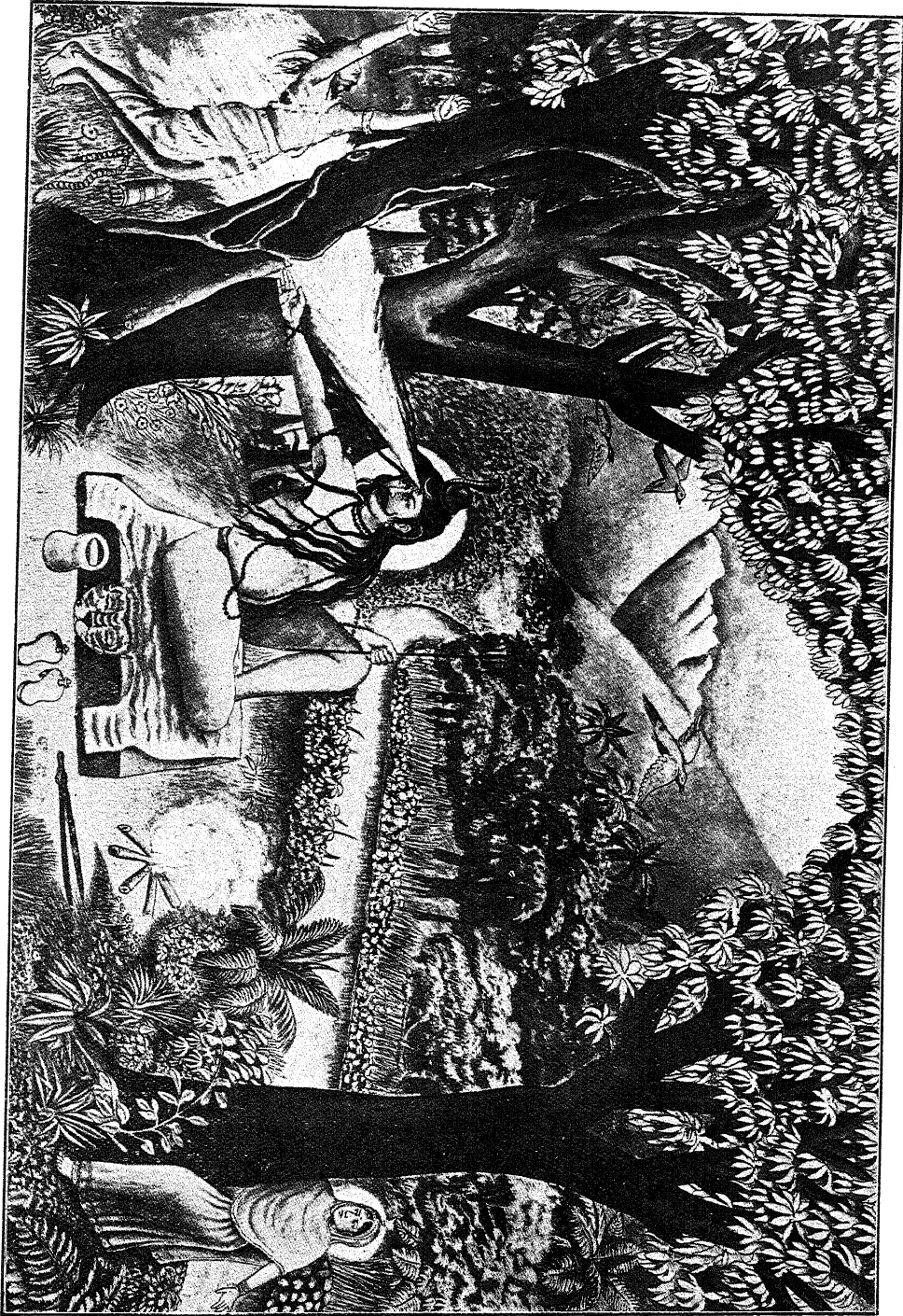
सौरभ पल्लव मदन बिलोका । भयो कोप कम्पेउ त्रयलोका ॥
तब शिव तीसर नयन उघारा । चितवत काम भयउ जरि छारा ॥

अतिप्रेम करि बिनती बिबिधिबिधि जोरिकर सन्मुष रही।
प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरषि बोले सही॥
दो० अबतें रति तव नाथ कर, होइहि नाम अनंग।
बिनबपु ब्यापिहि सबहि पुनि, सुनु निजमिलनप्रसंग॥
जब जदुबंस कृस्न अवतारा * होइहि हरन महा महिभारा
कृस्नतनय होइहि पति तोरा * बचन अन्यथा होइ न मोरा
रति गवनी सुनि संकरबानी * कथा अपर अब कहौं बषानी
देवन्ह समाचार सब पाए * ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाए
सब सुर बिस्नु बिरंचि समेता * गये जहां सिव कृपानिकेता
पृथकपृथक तिन्ह कीन्ह प्रसंसा * भए प्रसन्न चंद्रअवतंसा
बोले कृपासिंधु बृषकेतू * कहहु अमर आएहु केहि हेतू
कह बिधि प्रभु तुम्ह अंतरजामी * तदपिभगतिबसबिनवौं स्वामी
दो० सकल सुरन्ह के हृदय अस, संकर परम उछाह।
निज नयनन्हि देषा चहहिं, नाथ तुम्हार बिबाह॥
एह उत्सव देषिय भरिलोचन * सोइ कछु करहु मदनमदमोचन
काम जारि रति कहँ बर दीन्हा * कृपासिंधु यह अतिभल कीन्हा
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ * नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ
पारबती तप कीन्ह अपारा * करहु तासु अब अंगीकारा
सुनिबिधिबिनयसमुझिप्रभुबानी * ऐसय होउ कहा सुषमानी
तब देवन्ह दुंदुभीं बजाई * बरषि सुमन जय जय सुरसाँई
अवसर जानि सप्तरिषि आए * तुरतहि बिधि गिरिभवन पठाये
प्रथम गए जहँ रहीं भवानी * बोले मधुर बचन छलसानी
दो० कहा हमार न सुनेहुँ तब, नारद के उपदेस।

अब भा झूँठ तुम्हार पन, जारेउ काम महेस ॥

मास पारायण ३ दिन

सुनि बोली मुसकाइ भवानी * उचित कहेउ मुनिबर बिज्ञानी
तुम्हरें जान काम अब जारा * अब लागि संभु रहे सबिकारा
हमरे जान सदा सिव जोगी * अज अनवद्य अकाम अभोगी
जौं मै सिव सेये अस जानी * प्रीतिसमेत कर्म मन बानी
तौ हमार पन सुनहुँ मुनीसा * करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा
तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा * सोइ अतिबड अबिबेक तुम्हारा
तात अनलकर सहज सुभाऊ * हिमि तेहि निकट जाइ नहिं काऊ
गयें समीप सो अवसि नसाई * अस महेस मन्मथ कै नाई

दो० हिय हरषे मुनि बचन सुनि, देषि प्रीति बिस्वास ।
चले भवानिहिं नाइ सिर, गये हिमाचल पास ॥

सब प्रसंग गिरिपतिहि सुनावा * मदनदहन सुनि अतिदुष पावा
बहुरि कहेउ रतिकर बरदाना * सुनि हिमवन्त बहुत सुषमाना
हृदय बिचारि संभुप्रभुताई * सादर मुनिबर लिये बोलाई
सुदिन सुनषत सुघरी सोचाई * बेगि बेदबिधि लगन धराई
पत्री सप्तरिषिन्ह सो दीन्ही * गहिपदबिनयहिमाचलकीन्ही
जाइ बिधिहि तिन्हदीन्हिसोपाती * बाँचत प्रीति न हृदय समाती
लगन बाँचि अज सबहि सुनाई * हरषे मुनि सब सुरसमुदाई
सुमनबृष्टि नभ बाजन बाजे * मंगलकलस दसहुँ दिसि साजे

दो० लगे सँवारन सकल सुर, बाहन बिबिधि बिमान ।
होहिं सगुन मंगल सुभद, करहिं अप्सरा गान ॥

सिवहि संभुगन करहिं सिंगारा * जटामुकुट अहिमौर सँवारा

कुंडल कंकन पहिरे ब्याला * तन बिभूति कटि केहरि छाला
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा * नयन तीनि उपबीत भुजंगा
गरल कंठ उर नरसिरमाला * असिवबेष सिवधाम कृपाला
कर त्रिशूल अरु डमरु बिराजा * चले बसहचढि बाजहिं बाजा
देषि सिवहि सुरत्रिअमुसुकाहीं * बरलायक दुलहिनि जग नाहीं
बिस्नु बिरंचि आदि सुरत्राता * चढि चढि बाहन चले बराता
सुरसमाज सब भाँति अनूपा * नहिं बरात दूलहअनुरूपा

दो॰ बिस्नु कहा तब बिहँसि करि, बोलि सकल दिसिराज।
बिलगबिलग होइ चलहु अब, निजनिजसहितसमाज॥

बर अनुहारि बरात न भाई * हँसी करैहहु पर पुर जाई
बिस्नु बचन सुनि सुर मुसकाने * निजनिज सेनसहित बिलगाने
मनहीं मन महेस मुसकाहीं * हरिके ब्यंग बचन नहिं जाहीं
अतिप्रिअबचनसुनतप्रिअकेरे * भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे
सिव अनुसासन सुनि सबआए * प्रभुपदजलज सीस तिन्हनाए
नाना बाहन नाना बेषा * बिहँसे सिव समाज निजदेषा
कोउ मुषहीन बिपुल मुष काहू * बिनु पदकर कोउ बहु पदबाहू
बिपुलनयन कोउ नयनबिहीना * रिष्टपुष्ट कोउ अतितन षीना

छंद

तन षीन कोउ अतिपीन पावन कोउ अपावन गति धरे।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य शोनित तन भरे॥
षर स्वान सुअर शृकालमुष गन बेष अगिनित को गनै।
बहुजिनिस प्रेत पिसाच जोगि जमाति बरनत नहिं बनै॥
सो॰ नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब।

देषिअत अति बिपरीत, बोलहिं बचन बिचित्र बिधि ॥
जस दूलह तसि बनी बराता * कौतुक बिबिधिहोहिं मगजाता
यहां हिमाचल रचेउ बिताना * अति बिचित्र नहिं जाइबषाना
सैल सकल जहँलगि जगमाहीं * लघु बिसाल नहिंबरनिसिराहीं
बन सागर सब नदी तलावा * हिमिगिरिसबकहँनेवतिपठावा
कामरूप सुंदर तन धारी * सहित समाज सहितबरनारी
गये सकल तुहिनाचल गेहा * गावहिं मंगल सहित सनेहा
प्रथमहिं गिरि सब गृह सँवराए * जथा जोग जहँ तहँ सब छाए
पुर सोभा अवलोकि सोहाई * लागै लघु बिरंचि निपुनाई

छंद

लघु लागि बिधि की निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही।
बन बाग कूप तडाग सरिता सुभग सब सक को कही ॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं।
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छबि देषि मुनिमन मोहहीं ॥
दो॰ जगदंबा जहँ अवतरी, सो पुर बरनि कि जाइ।
रिधिसिधिसंपातिसकलसुष, नित नूतन अधिकाइ ॥
नगर निकट बरात सुनि आई * पुर षर भर सोभा अधिकाई
करि बनाव साजि बाहन नाना * चले लेन सादर अगवाना
हिय हरषे सुरसेन निहारी * हरिहि देषि अति भए सुषारी
सिव समाज जब देषन लागे * बिडंरि चले बाहँन सब भागे
धरि धीरज तहँ रहे सयाने * बालक सब लै जीव पराने
गये भवन पूछहिं पितु माता * कहहिं बचन भयकंपित गाता
कहिअ कहा कहि जाइ न बाता * जमकरधारिकिधौं बरिआता

शिवविवाह ।
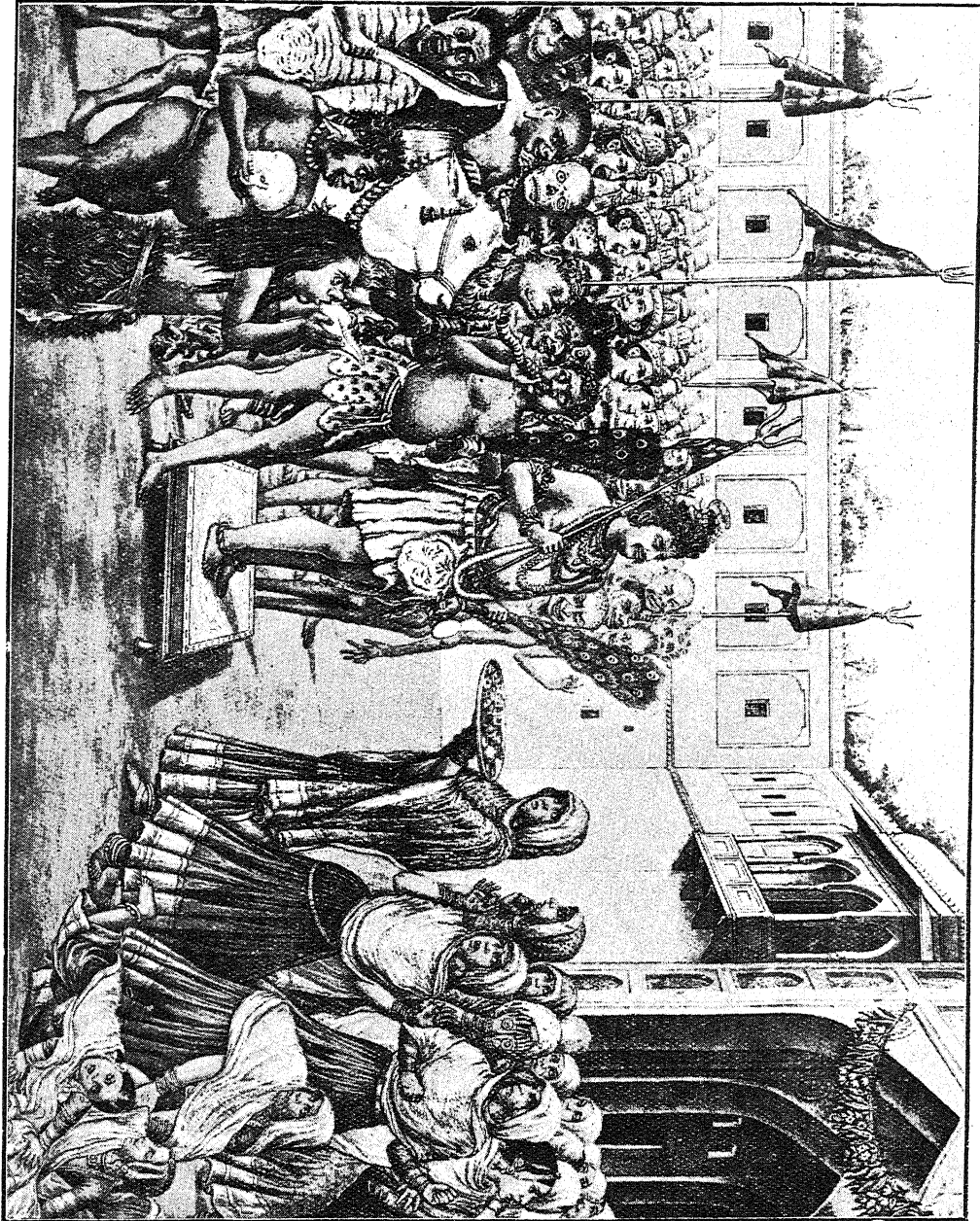
कञ्चन थार सोह वर पानी । परिछन चलीं हरहिं हरषानी ॥
विकट वेष जब रुद्रहिं देखा । अवलन उर भय भयउ विशेखा ॥

बर बौराह बसह असवारा * ब्याल कपाल बिभूषण छारा

छंद

तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जटित भयंकरा।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि बिकटमुष रजनीचरा॥
जो जिअत रहिहि बरात देषत पुन्य बड तेहिकर सही।
देषिहि सो उमा बिबाह घर घर बात अस लरिकन्ह कही॥

दो० समुझि महेस समाज सब, जननि जनक मुसुकाहिं।
बाल बुझाये बिबिधि बिधि, निडर होहु डर नाहिं॥

लै अगवान बरातहि आये * दिये सबहि जनवास सोहाये
मैना सुभ आरती सवारी * संग सुमंगल गावहिं नारी
कंचन थार सोह बर पानी * परिछन चली हरहि हरषानी
बिकटबेष रुद्रहि जब देषा * अबलन्हउरभयभयेउ बिसेषा
भागि भवन पैठीं अति त्रासा * गये महेस जहां जनवासा
मैना हृदय भएउ दुष भारी * लीन्ही बोलि गिरीस कुमारी
अधिक सनेह गोद बैठारी * स्याम सरोज नयन भरे बारी
जेहिंबिधितुम्हहिंरूपअसदीन्हा* तेहिं जड बरबाउर कसकीन्हा

छंद

कस कीन्ह बर बौराह बिधि जेहिं तुमहिं सुंदरता दई।
जो फल चहिय सुरतरुहि सो बरबस बबूरहि लागई॥
तुम्ह सहित गिरितें गिरौं पावक जरौं जलनिधिमहँ परौं।
घर जाउ अपजस होउ जग जीवत बिबाह न हौं करौं॥

दो० भईं बिकल अबला सकल, दुषित देषि गिरि नारि।
करि बिलाप रोदति बदति, सुता सनेह सँभारि॥

नारद कर मैं कहा बिगारा * भवन मोर जिन्ह बसत उजारा
अस उपदेस उमाहिं जिन्ह दीन्हा * बौरे बरहि लागि तप कीन्हा
सांचेहु उन्हके मोह न माया * उदासीन धन धाम न जाया
परघरघालक लाज न भीरा * बाँझ कि जान प्रसवकी पीरा
जननिहिं बिकल बिलोकि भवानी * बोली जुत बिबेक मृदुबानी
असबिचारि सोचहि मति माता * सो न टरै जो रचै बिधाता
करम लिषा जौ बाउर नाहू * तौ कत दोस लगाइअ काहू
तुम्हसन मिटिहि कि बिधिके अंका * मातु ब्यर्थ जनि लेहु कलंका

छन्द

जनि लेहु मातु कलंक करुना परिहरहु अँवसर नहीं।
दुष सुष जो लिषा लिलार हमरें जाब जहँ पाउब तहीं॥
सुनि उमाबचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं।
बहुभाँति बिधिहि लगाइ दूषन नयनबारि बिमोचहीं॥

दो॰ तेहि अँवसर नारद सहित, अरु रिषिसप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि, गवने तुरत निकेत॥

तब नारद सबही समुझावा * पूरब कथा प्रसंग सुनावा
मयना सत्य सुनहुँ मम बानी * जगदंबा तव सुता भवानी
अजा अनादि सक्ति अबिनासिनि * सदा संभु अरधंग निवासिनि
जग संभव पालन लयकारिनि * निज इच्छा लीलाबपुधारिनि
जनमी प्रथम दक्षगृह जाई * नाम सती सुंदर तन पाई
तहउँ सती संकरहि बिबाही * कथा प्रसिद्ध सकल जगमाही
एकबार आवत सिवसंगा * देषेउ रबिकुल कमल पतंगा
भएउ मोह सिवकहा न कीन्हा * भ्रमबस बेष सीअकर लीन्हा

छंद

सियबेष सती जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरी।
हरबिरह जाइ बहोरि पितु के जज्ञजोगानल जरी॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निजपति लागि दारुन तप किअा।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्बदा संकरप्रिआ॥
दो० सुनि नारद के बचन तब, सबकर मिटा बिषाद।
क्षनमहँ ब्यापेउ सकलपुर, घर घर यह संबाद॥

तब मयना हिमिवंत अनंदे * पुनि पुनि पारबतीपद बंदे
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने * नगर लोग सब अतिहरषाने
लगे होन पुर मंगल गाना * सजे सबहिं हाटक घट नाना
भाँति अनेक भई जेवनारा * सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा
सो जेवनार कि जाइ बषानी * बसहि भवन जेहि मातुभवानी
सादर बोले सकल बराती * बिस्नु बिरंचि देव सब जाती
बिबिधि पाँति बैठी जेवनारा * लागे परुसन निपुन सुआरा
नारिबृंद सुर जेंवत जानी * लगीं देन गारी मृदुबानी

छंद

गारी मधुर स्वर देहिं सुंदरि ब्यंग बचन सुनावहीं।
भोजन करहिं सुर अति बिलंब बिनोद सुनि सचुपावहीं॥
जेंवत जो बढ़्यो अनंद सो मुष कोटिहू न परै कह्यो।
अँचवाइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो॥
दो० बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ, लगन जनाई आइ।
समय बिलोकि बिबाह कर, पठए देव बोलाइ॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे * सबहि जथोचित आसनदीन्हे

बेदी बेद बिधान सवाँरी * सुभग सुमंगल गावहिं नारी
सिंघासन अति दिब्य सुहावा * जाइ न बरनि बिरंचि बनावा
बैठे सिव बिप्रन्ह सिर नाई * हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई * करि सिंगार सखी लै आई
देषत रूप सकल सुर मोहे * बरनै छबि अस कबि जग को है
जगदंबिका जानि भव भामा * सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा
सुंदरता मरजाद भवानी * जाइ न कोटिहु बदन बषानी

छंद

कोटिहु बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंद मति तुलसी कहा॥
छबिषानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ।
अवलोकि सकहि न सकुच पतिपद कमल मन मधुकर तहाँ॥

दो० मुनि अनुसासन गनपतिहि, पूजे संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करै जनि, सुर अनादि जिअ जानि॥

जस बिबाह कै बिधि श्रुति गाई * महा मुनिन्ह सो सब करवाई
गहि गिरीस कुस कन्या पानी * भवहि समर्पीं जानि भवानी
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा * हिअ हरषे तब सकल सुरेसा
बेदमंत्र मुनिबर उच्चरहीं * जय जय जय संकर सुर करहीं
बाजहिं बाजन बिबिधि बिधाना * सुमनबृष्टि नभ भै बिधि नाना
हरगिरिजा कर भएउ बिबाहू * सकल भुवन भरि रहा उछाहू
दासी दास तुरग रथ नागा * धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा
अन्न कनकभाजन भरि जाना * दाइज दीन्ह न जाइ बषाना

छंद

दाइज दियो बहु भाँति पुनि करजोरि हिमभूधर कह्यो।
का देउँ पूरनकाम संकरचरनपंकज गहि रह्यो॥
सिव कृपासागर ससुर कर संतोष सब भाँतिहि कियो।
पुनि गहे पदपाथोज मयना प्रेमपरिपूरन हियो॥

दो० नाथ उमा मम प्रानसम, गृहकिंकरी करेहु।
छमेहु सकल अपराध अब, होइ प्रसन्न बर देहु॥

बहुबिधि संभु सासु समुझाई * गवनी भवन चरन सिरनाई
जननी उमा बोलि तब लीन्ही * लै उछंग सुंदर सिष दीन्ही
करेहु सदां संकरपदपूजा * नारिधरम पतिदेव न दूजा
बचन कहति भरि लोचन बारी * बहुरि लाइ उर लीन्हि कुमारी
कत बिधि सृजी नारि जगमाहीं * पराधीन सपनेहुँ सुष नाहीं
भइ अति प्रेमबिकल महतारी * धीरज कीन्ह कुसमय बिचारी
पुनिपुनि मिलति परति गहिचरना * परम प्रेम कछु जाइ न बरना
सब नारिन्ह मिलि भेंटि भवानी * जाइ जननिउर पुनि लपटानी

छंद

जननिहि बहुरि मिलि चली उचित असीस सबकाहूँ दई।
फिरि फिरि बिलोकति मातुतन जबसखी लै सिव पहिं गई॥
जाचक सकल संतोषि संकर उमासहित भवन चले।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले॥

दो० चले संग हिमवंत तब, पहुँचावन अति हेतु।
बिबिधि भाँति परितोष करि, बिदा कीन्ह बृषकेतु॥

तुरत भवन आये गिरिराई * सकल सैल सर लिये बोलाई

आदर दान बिनय बहु माना * सब कर बिदा कीन्हि हिमवाना
जबहिं संभु कैलासहि आये * सुर सब निज निज लोकसिधाये
जगतमातुपितु संभु भवानी * तेहि सिंगार न कह्यों बषानी
करहिंबिबिधिबिधिभोगबिलासा * गनन्हसमेत बसहिं कैलासा
हरागिरिजा बिहार नित नयऊ *यहिबिधिबिपुलकालचलिगयऊ
तब जनमेउँ षटबदन कुमारा * तारक असुर समर जेहिं मारा
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * षन्मुष जन्म सकल जग जाना

छंद

जग जान षन्मुष जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथ महा।
तेहि हेतु मैं बृषकेतुसुत कर चरित संछेपहिं कहा॥
येह उमासंभुबिबाह जे नर नारि सुनहिं जे गावहीं।
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्बदा सुष पावहीं॥
दो० चरितसिंधु गिरजारवन, बेद न पावहिं पार।
बरनै तुलसीदास किमि, अतिमतिमंद गँवार॥

संभुचरित सुनि सरस सुहावा * भरद्वाजमुनि अतिसुष पावा
बहु लालसा कथापर बाढी * नयनन्ह नीर रोमावलि ठाढी
प्रेमबिबश मुष आउ न बानी * दसा देषि हरषे मुनि ज्ञानी
अहो धन्य तव जन्म मुनीसा * तुम्हहिं प्रानसम प्रिअ गौरीसा
सिवपदकमलजिन्हहिंरातिनाहीं * रामहिं ते सपनेहुँ न सोहाहीं
बिनु छल बिश्वनाथपद नेहू * रामभगत कर लक्षन एहू
सिव सम को रघुपतिब्रतधारी * बिनु अघ तजी सती असि नारी
पनकरि रघुपतिभगति देषाई * को सिवसम रामहिं प्रिअ भाई
दो० प्रथमहिं कहि मैं सिवचरित, बूझा मरम तुम्हार।

सुचिसेवक तुम्ह राम के, रहित समस्त बिकार ॥

मैं जाना तुम्हार गुन सीला * कहौं सुनहुँ अब रघुपतिलीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे * कहि न जाइ जस सुष मन मोरे
रामचरित अति अमिति मुनीसा * कहि न सकहिं सतकोटि अहीसा
तदपि जथाश्रुत कहौं बषानी * सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी
सारद दारुनारि सम स्वामी * राम सूत्रधर अंतरजामी
जेहिपर कृपा करहिं जन जानी * कबिउरअजिर नचावहिं वानी
प्रनवौं सोइ कृपाल रघुनाथा * बरनौं बिसद जासु गुनगाथा
परमरम्य गिरिबर कैलासू * सदां जहां सिवउमानिवासू

दो॰ सिद्ध तपोधन जोगिजन, सुर किन्नर मुनिबृंद ।
बसहिं तहां सुकृती सकल, सेवहिं सिव सुषकंद ॥

हरिहरबिमुष धर्मरति नाहीं * ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं
तेहि गिरिपर बटबिटप बिसाला * नित नूतन सुंदर सब काला
त्रिबिधि समीर सुशीतल छाया * सिवबिश्रामबिटप श्रुति गाया
एकबार तेहितर प्रभु गएऊ * तरु बिलोकि उर अति सुष भएऊ
निजकर डासि नागरिपुछाला * बैठे सहजहिं संभु कृपाला
कुंद इंदु दर गौर सरीरा * भुजप्रलंब परिधनमुनिचीरा
तरुनअरुनअंबुज सम चरना * नषदुति भगतहृदयतम हरना
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी * आनन सरदचंद छबिहारी

दो॰ जटा मुकुट सुरसरित सिर, लोचन नलिनबिसाल ।
नीलकंठ लावन्यनिधि, सोह बालबिधु भाल ॥

बैठे सोह कामरिपु कैसे * धरे सरीर सांतरस[1] जैसे

१—सम्यग्ज्ञानसमुद्भूतः शान्तो निस्पृहनायकः । रागद्वेषपरित्यागात्सम्यग्ज्ञानसमुद्भवः ॥ इति रसरत्नहारे ॥

पारबती भल अवसर जानी * गईं संभु पहिं मातु भवानी
जानि प्रिआ आदर अति कीन्हा * बाम भाग आसन हर दीन्हा
बैठी सिवसमीप हरषाई * पूरब जन्मकथा चित आई
पतिहि अहेतु अधिक मनमाहीं * बिहँसि उमा बोली हरपाहीं
कथा जो सकल लोक हितकारी * सोइ पूँछन चह सैलकुमारी
बिश्वनाथ ममनाथ पुरारी * त्रिभुअनमहिंमा बिदित तुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा * सकल करहिं पदपंकज सेवा

दो० प्रभु समरथ सर्बज्ञ सिव, सकल कला गुनधाम।
जोग ज्ञान बैराग्यनिधि, प्रनत कलपतरु नाम॥

जो मोपर प्रसन्न सुषरासी * जानिय सत्य मोहि निजदासी
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना * कहि रघुनाथ कथा बिधिनाना
जासु भवन सुरतरु तर होई * सह कि दरिद्रजनित दुष सोई
ससिभूषन अस हृदय बिचारी * हरहु नाथ मम मतिभ्रम भारी
प्रभु जे मुनि परमारथबादी * कहहिं रामकहँ ब्रह्म अनादी
सेष सारदा बेद पुराना * सकलकरहिं रघुपतिगुनगाना
तुम पुनि रामराम दिनराती * सादर जपहु अनंगअराती
राम सो अवधनृपतिसुत सोई * की अजअगुनअलषगतिकोई

दो० जौं नृपतनय तौ ब्रह्म किमि, नारिबिरह मतिभोरि।
देषि चरित महिमा सुनत, भ्रमति बुद्धि अतिमोरि॥

जौं अनीह ब्यापक बिभु कोऊ * कहहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ
अज्ञ जानि रिस उर जनिधरहू * जेहिबिधि मोह मिटइ सोइकरहू
मै बन दीष रामप्रभुताई * अतिभयबिकलनतुम्हहिंसुनाई
तदपि मलिनमन बोध न आवा * सो फल भलीभाँति हम पावा

अजहूं कछु संसउ मन मोरे * करहु कृपा बिनवों करजोरे
प्रभु तबमोहि बहुभाँति प्रबोधा *नाथसोसमुझि करहुजनिक्रोधा
तबकर अस बिमोह अब नाहीं * रामकथापर रुचि मनमाहीं
कहहु पुनीत रामगुनगाथा * भुजगराजभूषन सुरनाथा

दो॰ बंदौं पद धरिधरनिसिर, बिनय करौं करजोरि।
बरनहुँ रघुबरबिसद जस, श्रुति सिद्धांत निचोरि॥

जदपि जोषिता अनअधिकारी * दासी मन क्रम बचन तुम्हारी
गूढौ तत्त्व न साधु दुरावहिं * आरत अधिकारी जहँ पावहिं
अति आरति पूछौं सुरराया * रघुपतिकथा कहहु करिदाया
प्रथम सो कारन कहहु बिचारी * निर्गुन ब्रह्म सगुन बपुधारी
पुनि प्रभु कहहु रामअवतारा * बालचरित पुनि कहहु उदारा
कहहु जथा जानकी बिबाही * राज तजा सो दूषन काही
बन बसि कीन्हे चरित अपारा * कहहु नाथ जिमि रावन मारा
राज बैठि कीन्ही बहु लीला * सकल कहहु संकर सुषसीला

दो॰ बहुरि कहहु करुनायतन, कीन्ह आचरज राम।
प्रजासहित रघुबंसमनि, किमि गवने निजधाम॥

पुनि प्रभु कहहु सो तत्त्वबषानी * जेहि बिज्ञान मगन मुनिज्ञानी
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागा * पुनिसब बरनहु सहितबिभागा
औरौ रामरहस्य अनेका * कहहु नाथ अतिबिमल बिबेका
जो प्रभु मैं पूँछा नहिं होई * सोउ दआल राषेहु जनि गोई
तुम्ह त्रिभुअनगुरु बेद बषाना * आन जीव पाँवर का जाना
प्रश्न उमाकर सहज सुहाई * छलबिहीन सुनि सिव मनभाई
हरहिय रामचरित सब आये * प्रेमपुलक लोचन जल छाये

श्रीरघुनाथ रूप उर आवा * परमानंद अमिति सुष पावा

दो० मगन ध्यानरस दंड जुग, पुनि मन बाहेर कीन्ह ।
रघुपतिचरित महेस तब, हरषित बरनै लीन्ह ॥

झूठउ सत्य जाहि बिनु जाने * जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने
जेहि जाने जग जाइ हेराई * जागे जथा सपन भ्रम जाई
बंदौं बालरूप सोइ रामू * सब सिधि सुलभ जपत जसु नामू
मंगलभवन अमंगलहारी * द्रवौ सो दसरथअजिरबिहारी
करि प्रनाम रामहिं त्रिपुरारी * हरषि सुधासम गिरा उचारी
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी * तुम्हसमान नहिं कोउ उपकारी
पूँछेहु रघुपतिकथा प्रसंगा * सकल लोक जगपावनि गंगा
तुम्ह रघुबीरचरन अनुरागी * कीन्हेहुँ प्रश्न जगत हितलागी

दो० रामकृपा तें हिमसुता, सपनेहुँ तव मन माहिं ।
सोक मोह संदेह भ्रम, मम बिचार कछु नाहिं ॥

तदपि असंका कीन्हेहु सोई * कहत सुनत सबकर हित होई
जिन्ह हरिकथा सुनी नहिं काना * श्रवनरंध्र अहिभवन समाना
नयनन्हि संतदरस नहिं देषा * लोचन मोरपंष कर लेषा
ते सिर कटु तूंबरि सम तूला * जे न नमत हरि गुरुपद मूला
जेन्ह हरिभगति हृदय नहिं आनी * जीवत सवसमान तेइ प्रानी
जो नहिं करै रामगुनगाना * जीह सो दादुरजीह समाना
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती * सुनि हरिचरित न जो हरषाती
गिरिजा सुनहुँ राम कै लीला * सुरहित दनुज बिमोहनसीला

दो० रामकथा सुरधेनु सम, सेवत सब सुषदानि ।
सतसमाज सुरलोक सब, को न सुनै असजानि ॥

रामकथा सुंदर करतारी * संसयबिहग उडावनिहारी
रामकथा कलिबिटप कुठारी * सादर सुनु गिरिराजकुमारी
राम नाम गुन चरित सुहाए * जनम कर्म अगिनित श्रुतिगाए
जथा अनंत राम भगवाना * तथा कथा कीरति गुन नाना
तदपि जथाश्रुत जसि मति मोरी * कहिहौं देषि प्रीति अति तोरी
उमा प्रश्न तव सहज सुहाई * सुषद संतसंमत मोहि भाई
एक बात नहिं मोहि सोहानी * जदपि मोहबस कहेहु भवानी
तुम्ह जो कहा राम कोउ आना * जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना

दो॰ कहहिं सुनहिं अस अधम नर, ग्रसे जे मोह पिसाच।
पाषंडी हरि पद बिमुष, जानहिं झूँठ न साँच॥

अज्ञ अकोबिद अंध अभागी * काई बिषय मुकुर मन लागी
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी * सपनेहुँ संत सभा नहिं देषी
कहहिं ते बेद असंमत बानी * जिन्हहिं न सूझ लाभ नहिं हानी
मुकुरमलिन अरु नयन बिहीना * रामरूप देषहिं किमि दीना
जेन्हके अगुन न सगुन बिबेका * जलपहिं कल्पितबचन अनेका
हरि मायाबस जगत भ्रमाहीं * तिन्हहिं कहत कछु अघटित नाहीं
बातुल भूत बिबस मतवारे * ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे
जिन्ह कृत महा मोह मद पाना * तिन्ह कर कहा करिअ नहिं काना

सो॰ अस निज हृदय बिचारि, तजु संसय भजु राम पद।
सुनु गिरिराजकुमारि, भ्रमतम रबिकर बचन मम॥

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा * गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा
अगुन अरूप अलष अज जोई * भगत प्रेमबस सगुन सो होई
जो गुनरहित सगुन सो कैसें * जलहिम उपल बिलग नहिं जैसें

जासु नाम भ्रमतिमिर पतंगा * तेहिकिमिकहिअबिमोहप्रसंगा
राम सच्चिदानंद दिनेसा * नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा
सहज प्रकासरूप भगवाना * नहिं तहँ पुनि बिज्ञानबिहाना
हरष बिषाद ज्ञान अज्ञाना * जीवधर्म अहमितिअभिमाना
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना * परमानंद परेस पुराना

दो० पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि, प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ, कहिसिवनायउमाथ॥

निजभ्रमनहिंसमुझहिंअज्ञानी * प्रभु पर मोह धरहिंजडप्रानी
जथा गगन घनपटल निहारी * झंपेउ भानु कहहिं कुबिचारी
चितव जो लोचनअंगुलि लाये * प्रगटजुगुल ससितेहिके भाये
उमा राम बिषइक अस मोहा * नभ तम धूम धूरि जिमिसोहा
बिषय करन सुर जीव समेता * सकल एक तें एक सचेता
सब कर परम प्रकासक जोई * राम अनादि अवधपतिसोई
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू * मायाधीस ज्ञान गुन धामू
जासु सत्यता तें जड माया * भास सत्य इव मोह सहाया

दो० रजत सीप महँ भास जिमि, जथा भानु कर बारि।
जदपि मृषा तिहुँ काल सोइ, भ्रमन सकै कोउटारि॥

येहि बिधिजगहरिआश्रितरहई * जदपि असत्य देत दुष अहई
जौं सपने सिर काटै कोई * बिनु जागे न दूरि दुष होई
जासु कृपा अस भ्रम मिटिजाई * गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई
आदि अंत कोउ जासु न पावा * मतिअनुमाननिगमअसगावा
बिनु पद चलै सुनै बिनु काना * कर बिनु करम करै बिधिनाना
आनन रहित सकल रस भोगी * बिनु बानी बकता बड जोगी

तन बिनु परस नयन बिनु देषा * ग्रहै घ्रान बिनु बास बिसेषा
असिसबभाँतिअलौकिककरनी * महिमा जासु जाइ नहिं बरनी
दो० जेहि इमि गावहिं बेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगतहित, कोसलपति भगवान॥
कासी मरत जंतु अवलोकी * जासु नाम बल करौं बिसोकी
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी * रघुबर सब उर अंतरजामी
बिबसहु जासु नाम नर कहहीं * जनम अनेक रचित अघ दहहीं
सादर सुमिरन जे नर करहीं * भव बारिधि गोपद इव तरहीं
राम सो परमातमा भवानी * तहँभ्रम अति अबिहिततवबानी
अस संसय आनत उर माहीं * ज्ञान बिरागसकलगुन जाहीं
सुनि सिव के भ्रम भंजनबचना * मिटिगै सब कुतर्क कै रचना
भइ रघुपतिपद प्रीति प्रतीती * दारुन असंभावना बीती
दो० पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि, जोरि पंकरुह पानि।
बोली गिरिजा बचन बर, मनहुँ प्रेमरस सानि॥
ससिकर सम सुनि गिरा तुम्हारी * मिटा मोह सरदातप भारी
तुम्ह कृपाल सब संसय हरेऊ * राम सरूपजानि मोहि परेऊ
नाथ कृपा अब गयउ बिषादा * सुषी भइउँ प्रभु चरण प्रसादा
अब मोहिआपनि किंकरि जानी * जदपि सहजजडनारिअयानी
प्रथम जो मै पूँछा सोइ कहहू * जौं मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू
राम ब्रह्म चिन्मय अबिनासी * सर्ब रहित सब उरपुरबासी
नाथ धरेउ नर तन केहिहेतू * मोहि समुझाइ कहौ बृषकेतू
उमा बचन सुनि परम बिनीता * राम कथा पर प्रीति पुनीता
दो० हिअ हरषे कामारि तब, संकर सहज सुजान।

बहुबिधिउमहिप्रसंसिपुनि, बोले कृपा निधान ॥

नवाह्नपारायण १ दिन

मासपारायण ३ दिन

सो० सुनु सुभ कथा भवानि, रामचरित मानस बिमल।
कहा भुसुंडि बषानि, सुना बिहग नायक गरुड ॥
सो संबाद उदार, जेहि बिधि भा आगे कहब।
सुनहु राम अवतार, चरित परम सुंदर अनघ ॥
हरि गुन नाम अपार, कथा रूपअगिनित अमित।
मै निज मतिअनुसार, कहउँ उमा सादर सुनहु ॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सोहावा * बिपुलबिसद निगमागमगावा
हरि अवतार हेतु जेहि होई * इदमित्थं कहिजाइ न सोई
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी * मत हमार अस सुनहु सयानी
तदपि संत मुनि बेद पुराना *जसकछुकहहिंस्वमतिअनुमाना
तस मै सुमुषि सुनावौं तोही * समुझि परै जस कारन मोही
जब जब होय धरम कै हानी *बाढहिंअसुरअधमअभिमानी
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी * सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी
तब तब प्रभु धरि बिबिधिसरीरा* हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा

दो० असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राषहिं निज श्रुति सेतु।
जगबिस्तारहिं बिसद जस, राम जनम कर हेतु ॥

सोइ जस गाइ भगत भवतरहीं * कृपासिंधु जन हित तनुधरहीं
राम जनम कै हेतु अनेका * परम बिचित्र एक तें एका
जनम एक दुइ कहौं बषानी * सावधान सुनु सुमति भवानी
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ *जय अरु बिजय जानसब कोऊ

बिप्र साप तें दूनौ भाई * तामस असुर देहँ तिन्ह पाई
कनककसिपु अरु हाटक लोचन * जगतबिदितसुरपतिमदमोचन
बिजयी समर बीर बिष्याता * धरि बराहबपु एक निपाता
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा * जन प्रहलाद सुजस बिस्तारा

दो० भए निसाचर जाइ तेइ, महाबीर बलवान ।
कुंभकरन रावन सुभट, सुर बिजई जगजान ॥

मुकुत न भये हते भगवाना * तीनि जनम द्विज बचनप्रमाना
एक बार तिन्ह के हित लागी * धरेउ सरीर भगत अनुरागी
कस्यप अदिति तहां पितु माता * दसरथ कौसल्या बिष्याता
एक कलप यहिबिधि अवतारा * चरित पबित्र किये संसारा
एक कलप सुर देषि दुषारे * समर जलंधर सों सब हारे
संभु कीन्ह संग्राम अपारा * दनुज महाबल मरइ न मारा
परम सती असुराधिपनारी * तेहिबलताहि न जितहिंपुरारी

दो० छलकरि टारेउ तासुब्रत, प्रभु सुर कारज कीन्ह ।
जब तेहिंजानेउमरमतब, साप कोपकरि दीन्ह ॥

तासु साप हरि कीन्ह प्रवाना * कौतुकनिधि कृपाल भगवाना
तहाँ जलंधर रावन भयेऊ * रन हति राम परमपद दयेऊ
एक जनम कर कारन येहा * जेहि लगि राम धरी नरदेहा
प्रति अवतार कथा प्रभु केरी * सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी
नारद साप दीन्ह एक बारा * कलप एकतेहिलागि अवतारा
गिरिजा चकित भई सुनि बानी * नारद बिस्नु भगत पुनि ज्ञानी
कारन कवन साप मुनि दीन्हा * का अपराध रमापति कीन्हा
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी * मुनि मनमोह आचरज भारी

दो॰ बोले बिहँसि महेस तब, ज्ञानी मूढ न कोइ।
जेहिजसरघुपतिकरहिं जब, सो तस तेहि छन होइ॥
सो॰ कहौं रामगुन गाथ, भरद्वाज सादर सुनहु।
भव भंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मानमद॥
हिमगिरिगुहा एक अतिपावनि * बह समीप सुरसरी सुहावनि
आश्रम परम पुनीत सुहावा * देषि देव रिषि अति मन भावा
निरषि सैल सरि बिपिन बिभागा * भएउ रमापतिपद अनुरागा
सुमिरत हरिहि साप गति बाधी * सहजबिमलमनलागिसमाधी
मुनिगति देषि सुरेस डराना * कामहिं बोलि कीन्ह सनमाना
सहित समाय जाहु मम हेतू * चलेउ हरषि हिय जलचरकेतू
सुनासीर मनमहँ असि त्रासा * चहत देवरिषि मम पुरबासा
जे कामी लोलुप जगमाहीं * कुटिल कागइव सबहि डेराहीं
दो॰ सूष हाड लै भाग सठ, स्वान निरषि मृगराज।
छीनलेइ जानि जानजड, तिमि सुरपतिहि न लाज॥
तेहि आश्रमहिं मदन जब गएऊ * निज माया बसंत निर्मएऊ
कुसमित बिबिध बिटप बहुरंगा * कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा
चली सुहावनि त्रिबिधि बयारी * काम कृसानु जगावनिहारी
रंभादिक सुरनारि नबीना * सकल असमसरकलाप्रबीना
करहिं गान बहुतान तरंगा * बहुबिधि क्रीडहिं पानिपतंगा
देषि सहाय मदन हरषाना * कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधिनाना
कामकला किछु मुनिहिं न ब्यापी * निज भय डरेउ मनोभव पापी
सींम की चाँपिसकै कोउ तासू * बड रषवार रमापति जासू
दो॰ सहित सहाय सभीत अति, मानि हारि मन मयन।

गहेसि जाय मुनिचरण कहि, सुठि आरतमृदुबयन ॥

भएउ न नारदमन कछु रोषा * कहिप्रिय बचन काम परितोषा

नाइ चरन सिर आयसु पाई * गएउ मदन तब सहित सहाई

मुनिसुसीलता आपनि करनी * सुरपतिसभा जाइ सब बरनी

सुनिसबके मन अचरज आवा * मुनिहिं प्रसंसि हरिहि सिरनावा

तब नारद गवने सिव पाहीं * जिता काम अहमिति मनमाहीं

मारचरित संकरहि सुनाये * अतिप्रिअ जानि महेस सिषाये

बार बार बिनवों मुनि तोही * जिमि यह कथा सुनायेहु मोही

तिमि जनि हरिहि सुनायेहु कबहूं * चलेहुँ प्रसंग दुराएहु तबहूं

दो० संभु दीन्ह उपदेसहित, नहिं नारदहि सुहान।
भरद्वाज कौतुक सुनहुँ, हरिइच्छा बलवान ॥

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई * करइ अन्यथा अस नहिं कोई

संभुबचन मुनि मनहिं न भाए * तब बिरंचि के लोक सिधाए

एक बार करतल बर बीना * गावत हरिगुण गान प्रबीना

छीरसिंधु गमने मुनिनाथा * जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा

हरषि मिले उठि रमा निकेता * बैठे आसन रिषिहि समेता

बोले बिहँसि चराचरराया * बहुते दिनन्हि कीन्हि मुनि दाया

कामचरित नारद सब भाषे * यद्यपि प्रथम बरजि सिव राषे

अतिप्रचंड रघुपति कै माया * जेहि न मोह असको जगजाया

दो० रूष बदन करि बचन मृदु, बोले श्रीभगवान।
तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिं, मोह मार मद मान ॥

१—वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः । तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ॥ इति याज्ञवल्क्यीये ॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके * ज्ञान बिराग हृदय नहिं जाके
ब्रह्मचर्ज[1] ब्रतरत मति धीरा * तुम्हहिं कि करइ मनोभव पीरा
नारद कहेउ सहित अभिमाना * कृपा तुम्हारि सकल भगवाना
करुनानिधि मन दीष बिचारी * उर अंकुरेउ गर्बतरु भारी
बेगि सो मैं डारिहौं उपारी * पन हमार सेवक हितकारी
मुनिकर हित मम कौतुक होई * अवसि उपाइ करबि मैं सोई
तब नारद हरिपद सिरनाई * चले हृदय अहमिति अधिकाई
श्रीपति निज माया तब प्रेरी * सुनहुँ कठिन करनी तेहिकेरी

दो॰ बिरचेउ मगमहँ नगर तेहि, सतजोजन बिस्तार।
श्रीनिवासपुरते अधिक, रचना बिबिध प्रकार॥

बसहिं नगर सुंदर नर नारी * जनु बहु मनसिज रतितनुधारी
तेहिपुर बसै सीलनिधि राजा * अगिनित हय गय सेनसमाजा
सत सुरेससम बिभव बिलासा * रूप तेज बल नीति निवासा
बिश्वमोहनी तासु कुमारी * श्री बिमोह जिसु रूप निहारी
सोइ हरिमाया सब गुनषानी * सोभा तासु कि जाइ बषानी
करइ स्वयंबर सो नृपबाला * आये तहँ अगिनित महिपाला
मुनि कौतुकी नगर तेहि गएऊ * पुरबासिन्ह सब पूंछत भएऊ
सुनि सब चरित भूपगृह आये * करि पूजा मुनि नृप बैठाये

दो॰ आनि देषाई नारदहि, भूपति राजकुमारि।
कहहु नाथ गुन दोष सब, एहिके हृदय बिचारि॥

देषि रूप मुनि बिरति बिसारी * बड़ीबार लागि रहे निहारी

१—स्मरणं कीर्तनं केलि प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्। संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रिया निर्वृत्तिरेव च॥ एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः॥ विपरीतं ब्रह्मचर्यमेतदेवाष्टलक्षणम्॥

लक्षन तासु बिलोकि भुलाने * हृदय हर्ष नहिं प्रगट बषाने
जो यहि बरै अमर सोइ होई * समर भूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही * बरइ सीलनिधिकन्या जाही
लक्षन सब बिचारि उर राषे * कछुक बनाइ भूप सन भाषे
सुता सुलक्षनि कहि नृपपाहीं * नारद चले सोच मन माहीं
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी * जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी
जपतप कछु न होइ यहिकाला * हे बिधि मिलै कवनिबिधिबाला

दो० येहि अवसर चाहिअ परम, सोभा रूप बिसाल।
जो बिलोकि रीझै कुअँरि, अरु मेलै जयमाल॥

हरिसन मागौं सुंदरताई * होइहि जात गहरु अति भाई
मोरे हित हरिसम नहिं कोऊ * येहि अवसर सहाइ सोइ होऊ
बहुबिधिबिनयकीन्हितेहिकाला * प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला
प्रभु बिलोकिमुनिनयन जुडाने * होइहि काज हिये हरषाने
अति आरति कहि कथा सुनाई * करहु कृपा हरि होहु सहाई
आपन रूप देहु प्रभु मोही * आन भाँति नहिं पावौं वोही
जेहि बिधिहोय नाथ हित मोरा * करहु सो बेगि दास मै तोरा
निज माया बल देषि बिसाला * हिय हँसि बोले दीनदयाला

दो० जेहि बिधि होइहि परमहित, नारद सुनहुँ तुम्हार।
सोइ हम करब न आनकछु, बचन न मृषा हमार॥

कुपथ माग रुज ब्याकुल रोगी * बैद न देइ सुनहु मुनिजोगी
एहिबिधि हित तुम्हार मै ठयेऊ * कहि अस अंतरहित प्रभुभयेऊ
मायाबिबस भए मुनि मूढा * समुझी नहिं हरिगिरा निगूढा
गवने तुरत तहां रिषिराई * जहां स्वयंबरभूमि बनाई

निज निज आसन बैठे राजा * बहु बनाव करि सहित समाजा
मुनिमन हरष रूप अति मोरे * मोहि तजि आनहिं बरहि न भोरे
मुनिहित कारन कृपानिधाना * दीन्ह कुरूप न जाइ बषाना
सो चरित्र लषि काहुँ न पावा * नारद जानि सबहि सिरनावा

दो० रहे तहां दुइ रुद्रगन, ते जानहिं सब भेउ।
बिप्रबेष देषत फिरहिं; परम कौतुकी तेउ॥

जेहि समाज बैठे मुनिजाई * हृदयरूप अहमिति अधिकाई
तहँ बैठे महेसगन दोऊ * बिप्रबेष गति लषै न कोऊ
करहिं कूटि नारदहि सुनाई * नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई
रीझिहि राजकुअँरि छबि देषी * इन्हहिंबरिहिहरि जानिबिसेषी
मुनिहिं मोह मन हाथ पराये * हसहिं संभुगन अतिसचुपाये
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी * समुझि न परै बुद्धिभ्रमसानी
काहुँ न लषा सो चरित बिसेषा * सो सरूप नृप कन्या देषा
मर्कटबदन भयंकर देही * देषत हृदय क्रोध भा तेही

दो० सषी संगलै कुअँरि तब, चलि जनु राजमराल।
देषत फिरइ महीप सब, कर सरोज जयमाल॥

जेहि दिसि बैठे नारद फूली * सो दिसि तेहिं न बिलोकी भूली
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं * देषि दसा हरगन मुसुकाहीं
धरि नृपतन तहँ गयेउ कृपाला * कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला
दुलहिनि लैगये लक्षिनिवासा * नृपसमाज सब भए निरासा
मुनि अति बिकलमोहमतिनाठी * मनि गिरिगई छूटि जनु गाठी
तब हरगन बोले मुसुकाई * निजमुष मुकुर बिलोकहु जाई
असकहि दोउ भागे भय भारी * बदन दीष मुनि बारि निहारी

विश्वमोहिनी-स्वयंवर ।
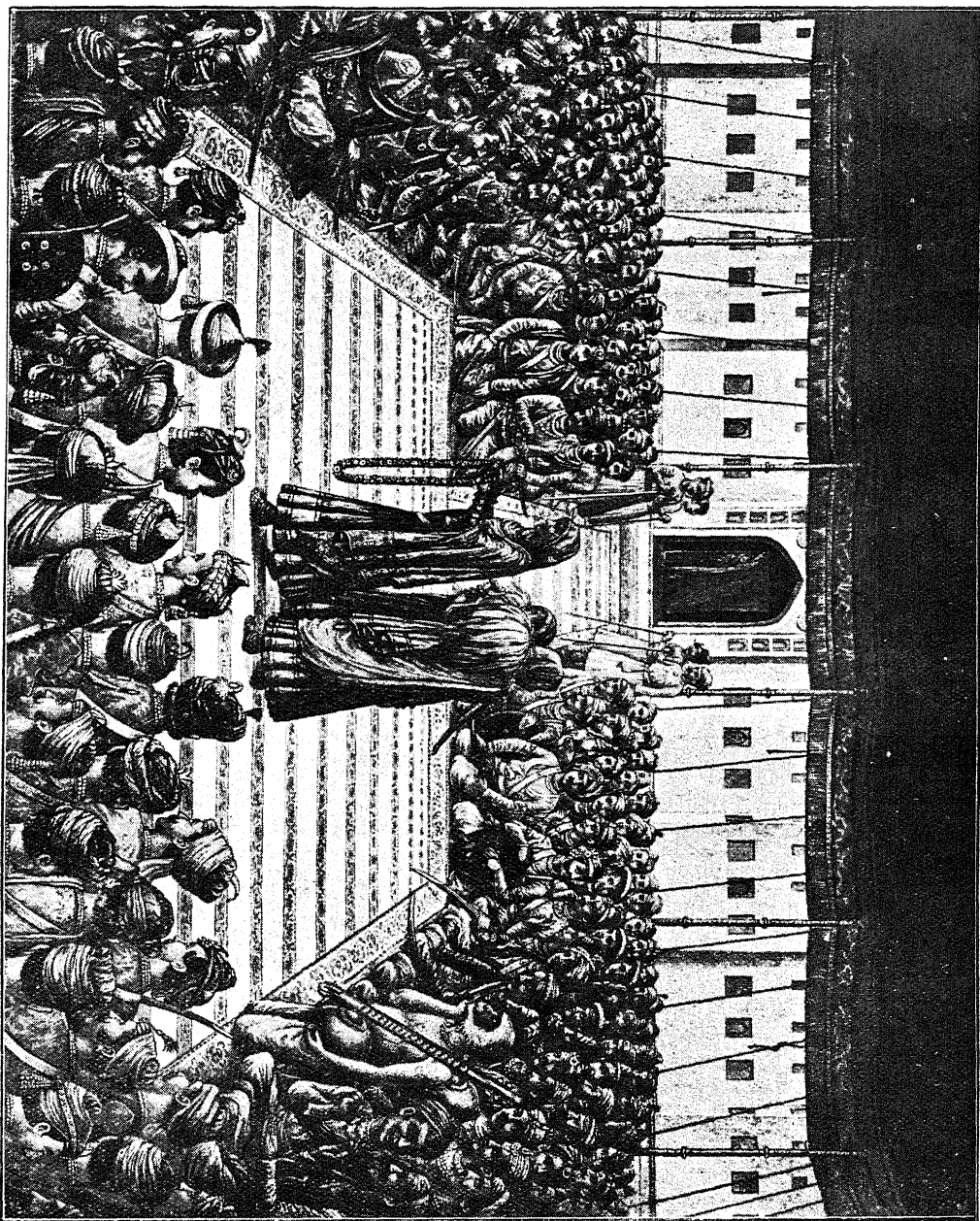
सखी सङ्ग लै कुँवरि तब, चलि जनु राजमराल ।
देखत फिरै महीप सब, करसरोज जयमाल ॥
जेहि दिशि बैठे नारद फूली । सो दिशि तेइँ न बिलोकेउ भूली ॥

बेष बिलोकि क्रोध अतिबाढा * तिनहिं सराप दीन्ह अतिगाढा

दो० होहु निसाचर जाइ तुम, कपटी पापी दोउ।
हसेहु हमहिं सो लेहु फल, बहुरि हसेहु मुनि कोउ॥

पुनि जल दीष रूप निज पावा * तदपि हृदय संतोष न आवा
फरकत अधर कोप मनमाहीं * सपदि चले कमलापति पाहीं
देहौं साप कि मरिहौं जाई * जगत मोरि उपहास कराई
बीचहिं पंथ मिले दनुजारी * संग रमा सोइ राजकुमारी
बोले मधुर बचन सुरसाईं * मुनि कहँ चले बिकल की नाईं
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा * मायाबस न रहा मन बोधा
परसंपदा सकहु नहिं देषी * तुम्हरे ईरषा कपट बिसेषी
मथंत सिंधु रुद्रहि बौरायेहु * सुरन्ह प्रेरि बिषपान करायेहु

दो० असुर सुरा बिष संकरहिं, आपु रमा मनिचारु।
स्वारथसाधककुटिलतुम्ह, सदा कपट ब्यौहारु॥

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई * भावै मनहिं करहु तुम्ह सोई
भलेहि मंद मंदहि भल करहू * बिस्मय हरष न हिय कछु धरहू
डहँकि डहँकि परचेहु सब काहू * अतिअसंक मन सदा उछाहू
कर्म सुभासुभ तुम्हहिं न बाधा * अबलगि तुम्हहिं न काहूँ साधा
भले भवन अब बायन दीन्हा * पावहुगे फल आपन कीन्हा
बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा * सोइ तन धरहु साप मम एहा
कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी * करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी * नारि बिरह तुम्ह होब दुषारी

१—लक्ष्मीः कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरी चन्द्रमा गावः कामदुघा सुरेश्वरगजाः रम्भादिदेवाङ्गना अश्वः सप्तमुखः तथा हरिधनुः शंखो विषं चामृतं रत्नानीति चतुर्दशं प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥

दो॰ साप सीसधरि हरषिहिय, प्रभु बहु बिनती कीन्हि।
निज माया कै प्रबलता, करषि कृपानिधि लीन्हि॥
जब हरि माया दूरि निवारी * नहिं तहँ रमा न राजकुमारी
तब मुनि अतिसभीत हरिचरना * गहे पाहि प्रनतारति हरना
मृषा होउ मम साप कृपाला * मम इच्छा कह दीनदयाला
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे * कह मुनि पाप मिटिहि किमि मेरे
जपहु जाइ संकर सत नामा * होइहि हृदय तुरत बिश्रामा
कोउ नहिं सिवसमान प्रिय मोरे * असि परतीति तजहु जनि भोरे
जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी * सो न पाव मुनि भगति हमारी
अस उर धरि महि बिचरहु जाई * अब न तुम्हहिं माया निअराई

दो॰ बहुबिधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु, तब भये अंतरधान।
सत्यलोक नारद चले, करत रामगुनगान॥
हरगन मुनिहिं जात पथ देषी * बिगत मोह मन हरष बिसेषी
अति सभीत नारद पहि आये * गहि पद आरत बचन सुनाये
हरगन हम न बिप्र मुनिराया * बड अपराध कीन्ह फल पाया
साप अनुग्रह करहु कृपाला * बोले नारद दीनदयाला
निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ * वैभव बिपुल तेज बल होऊ
भुजबल बिश्वजित बतुम्ह जहिया * धरिहहिं बिस्नु मनुज तन तहिया
समर मरन हरिहाँथ तुम्हारा * होइहहु मुक्त न पुनि संसारा
चले जुगल मुनिपद सिरनाई * भये निसाचर कालहि पाई

दो॰ एक कलप एहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार।
सुररंजन सज्जन सुषद, हरि भंजन भुबिभार॥
एहि बिधि जनम करम हरि केरे * सुंदर सुषद बिचित्र घनेरे

कलपकलपप्रतिप्रभुअवतरहीं * चारु चरित नानाबिधि करहीं
तब तब कथा मुनीसन्ह गाई * परम बिचित्र प्रबन्ध बनाई
बिबिधि प्रसंग अनूप बषाने * करहिं न कछु आचरज सयाने
हरि अनंत हरिकथा अनंता * कहहिं सुनहिं बहुबिधि सबसंता
रामचंद्र के चरित सोहाये * कलप कोटि लगि जाहिं न गाये
येह प्रसंग मै कहा भवानी * हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी
प्रभु कौतुकी प्रनतहितकारी * सेवत सुलभ सकल दुषहारी

सो० सुरनरमुनि कोउ नाहिं, जेहि न मोह माया प्रबल।
असबिचारि मनमाहिं, कसन भजिअ मायापतिहि॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी * कहौं बिचित्र कथा बिस्तारी
जेहि कारन अज अगुन अनूपा * ब्रह्म भयेउ कोसलपुरभूपा
जो प्रभु बिपिन फिरत तुम्ह देषा * बंधु समेत धरे मुनिबेषा
जासु चरित अवलोकि भवानी * सतीसरीर रहिहु बौरानी
अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी * तासु चरित सुनु भ्रमरुजहारी
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा * सो सब कहिहौं मतिअनुसारा
भरद्वाज सुनि संकरबानी * सकुचि सप्रेम उमा हरषानी
लगे बहुरि बरनै बृषकेतू * सो अवतार भयो जेहि हेतू

दो० सो मै तुम्हसन कहौं सब, सुनु मुनीस मनलाइ।
राम कथा कलिमलहरनि, मंगलकरनि सुहाइ॥

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा * जेन्हते भइ नरश्रृष्टि अनूपा
दंपति परम आचरन नीका * अजहु गाव श्रुति जेन्हकै लीका
नृप उत्तानपाद सुत जासू * ध्रुव हरिभगत भयेउ सुत तासू
लघुसुत नाम प्रियब्रत ताही * बेद पुरान प्रसंसहिं जाही

देवहुती पुनि तासु कुमारी * जो मुनि कर्दमकै प्रिय नारी
आदिदेव प्रभु दीनदयाला * जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला
सांख्यसास्त्र जिन्ह प्रगट बषाना * तत्त्वबिचारनिपुन भगवाना
तेहि मनु राज कीन्ह बहुकाला * प्रभुआयसु बहुबिधि प्रतिपाला

सो॰ होइ न बिषयबिराग, भवन बसत भा चौथपन।
हृदय बहुत दुष लाग, जनमगयउ हरिभगतिबिन॥

बरबस राज सुतहिं नृप दीन्हा * नारिसमेत गवन बन कीन्हा
तीरथबर नैमिष बिष्याता * अतिपुनीत साधक सिधिदाता
बसहिं तहां मुनि सिद्धसमाजा * तहँ हिय हरषि चले मनुराजा
पंथ जात सोहहिं मतिधीरा * ज्ञान भगति जनु धरे सरीरा
पहुँचे जाइ धेनुमतितीरा * हरषि नहाने निर्मल नीरा
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी * धरमधुरंधर नृप रिषि जानी
जहँ जहँ तीरथ रहे सुहाये * मुनिन्ह सकल सादर करवाये
कृससरीर मुनिपट परिधाना * संतसभा नित सुनहिं पुराना

दो॰ द्वादस अक्षर मंत्रपुनि, जपहिं सहित अनुराग।
बासुदेव पद पंकरुह, दंपति मन अति लाग॥

करहिं अहार साक फल कंदा * सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा
पुनि हरिहेतु करन तप लागे * बारिअहार मूल फल त्यागे
उर अभिलाष निरंतर होई * देषिय नयन परम प्रभु सोई
अगुन अषण्ड अनंत अनादी * जेहि चिंतहिं परमारथबादी
नेति नेति जेहि बेद निरूपा * निजानंद निरुपाधि अनूपा
संभु[1] बिरंचि बिस्नु भगवाना * उपजहिं जासु अंसते नाना

१—यस्यांशेनैव ब्रह्माविष्णुमहेश्वरापि जाता महाविष्णुर्यस्य दिव्य गुणाश्च स एव कार्य-कारणयोः परः परमपुरुषो रामो दाशरथी बभूव ॥ इति अथर्वणे उत्तरार्द्धे श्रुतिः ॥

ऐसउ प्रभु सेवकबस अहई * भगत हेतु लीला तनु गहई
जौं यह बचन सत्य श्रुतिभाषा * तौ हमार पूजिहि अभिलाषा

दो० येहि बिधि बीते बरष षट, सहस बारि आहार।
संबत सप्त सहस्र पुनि, रहे समीर अधार॥

बरष सहसदस त्यागेउ सोऊ * ठाढे रहे एक पद दोऊ
बिधि हरि हर तप देषि अपारा * मनुसमीप आये बहुबारा
मागहु बर बहुभाँति लोभाये * परमधीर नहिं चलहिं चलाये
अस्थिमात्र ह्वै रहे सरीरा * तदपि मनागमनहिं नहिं पीरा
प्रभु सरबज्ञ दास निज जानी * गति अनन्य तापस नृपरानी
मागु मागु बर भै नभबानी * परम गँभीर कृपामृत सानी
मृतक जिआवनि गिरा सुहाई * श्रवनरंध्र होइ उर जब आई
रिष्ट पुष्ट तन भये सोहाये * मानौं अबहिं भवन तें आये

दो० श्रवन सुधासम बचन सुनि, पुलक प्रफुल्लित गात।
बोले मनु करि दंडवत, प्रेम न हृदय समात॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू * बिधि हरि हर बंदित पदरेनू
सेवत सुलभ सकल सुषदायक * प्रनतपाल सचराचर नायक
जौं अनाथ हित हमपर नेहू * तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू
जो सरूप बस सिव मनमाहीं * जेहि कारन मुनि जतन कराहीं
जो भसुंडि मनमानस हंसा * सगुनअगुन जेहि निगमप्रसंसा
देषहिं हम सो रूप भरिलोचन * कृपा करहु प्रनतारतिमोचन
दंपति बचन परमप्रिअ लागे * मृदुल बिनीत प्रेमरस पागे
भगतबछल प्रभु कृपानिधाना * बिश्वबास प्रगटे भगवाना

१—ईषत्

दो॰ नीलसरोरुह नीलमनि, नीलनीरधर स्याम ।
लाजहिं तनुसोभा निरषि, कोटि कोटि सत काम ॥
सरदमयंक बदन छबि सींवां * चारु कपोल चिबुक दरग्रीवां
अधर अरुन रद सुंदर नासा * बिधुकरनिकर बिनिंदक हाँसा
नवअंबुज अंबकछबि नीकी * चितवनि ललित भावती जीकी
भृकुटि मनोजचाप छबिहारी * तिलक ललाटपटल दुतिकारी
कुंडलमकर मुकुट सिर भ्राजा * कुटिलकेस जनु मधुप समाजा
उर श्रीवत्स रुचिर बनमाला * पदिकहार भूषन मनिजाला
केहरिकंधर चारु जनेऊ * बाँहु बिभूषन सुंदर तेऊ
करिकरसरिस सुभग भुजदंडा * कटि निषंग कर सर कोदंडा
दो॰ तडितबिनिंदक पीतपट, उदर रेषबर तीनि ।
नाभि मनोहर लेति जनु, जमुनभँवरछबि छीनि ॥
पद राजीव बरनि नहिं जाहीं * मुनिमनमधुप बसहिं जिन्हमाहीं
बामभाग सोभित अनुकूला * आदिसक्ति छबिनिधि जगमूला
जासुअंस उपजहिं गुनषानी * अगिनित लक्षि उमा ब्रह्मानी
भृकुटिबिलास जासु जग होई * रामबामदिसि सीता सोई
छबिसमुद्र हरिरूप बिलोकी * एकटक रहे नयनपट रोकी
चितवहिं सादर रूप अनूपा * तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा
हरषबिबस तनदसा भुलानी * परे दंडइव गहि पद पानी
सिर परसे प्रभु निजकरकंजा * तुरत उठाये करुनापुंजा
दो॰ बोले कृपानिधान पुनि, अति प्रसन्न मोहिं जानि ।
माँगहु बर जोइ भावमन, महादानि अनुमानि ॥
सुनि प्रभुबचन जोरि जुग पानी * धरि धीरज बोले मृदुबानी

नाथ देषि पदकमल तुम्हारे * अब पूरे सब काम हमारे
एक लालसा बडि उरमाहीं * सुगम अगम कहि जात सो नाहीं
तुम्हहिं देत अति सुगम गोसांई * अगमलागमोहिनिजकृपिनाई
जथा दरिद्र बिबुधतरु पाई * बहु संपति माँगत सकुचाई
तासु प्रभाव न जानै सोई * तथा हृदय मम संसय होई
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी * पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी
सकुच बिहाइ मागु नृप मोही * मोरे नहिं अदेय कछु तोही

दो॰ दानिसिरोमनि कृपानिधि, नाथ कहौं सतिभाउ।
चाहौं तुम्हहिं समान सुत, प्रभुसन कवन दुराउ॥

देषि प्रीति सुनि बचन अमोले * एवमस्तु करुनानिधि बोले
आपु सरिस षोजौं कहँ जाई * नृप तव तनय होब मै आई
सतरूपहि बिलोकि करजोरे * देबि मागु बर जो रुचि तोरे
जो बर नाथ चतुर नृप मागा * सोइकृपालमोहिअतिप्रिअलागा
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई * यदपि भगतहित तुम्हहिं सोहाई
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जगस्वामी * ब्रह्म सकल उर अंतरजामी
अस समुझत उर संसय होई * कहा जो प्रभु प्रमान पुनि होई
जे निज भगत नाथ तव अहहीं * जो सुष पावहिं जो गति लहहीं

दो॰ सोइसुष सोइगति सोइभगति, सोइ निजचरनसनेहु।
सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु, हमहिं कृपाकरि देहु॥

सुनि मृदु गूढ रुचिर बच[1] रचना * कृपासिंधु बोले मृदु बचना
जो कछु रुचि तुम्हरे मनमाहीं * मै सो दीन्ह सब संसय नाहीं
मातु बिबेक अलौकिक तोरे * कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे

१—उक्तिराभाषणं वाक्यमादेशो वचनं वचरिति शब्दार्णव॥

बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी * अवर एक बिनती प्रभु मोरी
सुत बिषइक तव पद रति होऊ * मोहिं बड मूढ कहै किन कोऊ
मनिबिनुफनिजिमिजलबिनुमीना*ममजीवनतिमि तुम्हहिंअधीना
अस बर माँगि चरन गहि रहेऊ * एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ
अब तुम्ह मम अनुसासन मानी * बसहु जाइ सुरपति रजधानी

सो॰ तहँ करि भोग बिसाल, तात गयें कछु काल पुनि।
होइहहु अवधभुआल, तब मै होब तुम्हार सुत॥

इच्छामय नर बेष सवारे * होइहौं प्रगट निकेत तुम्हारे
अंसन सहित देहँ धरि ताता * करिहौं चरित भगत सुषदाता
जे सुनि सादर नर बड़भागी * भव तरिहहिं ममता मद त्यागी
आदिसक्ति जेहिं जग उपजाया * सोउअवतरिहि मोरि यह माया
पूरब मैं अभिलाष तुम्हारा * सत्य सत्य पन सत्य हमारा
पुनिपुनिअसकहिकृपानिधाना * अंतरद्धान भए भगवाना
दंपति उर धरि भगति कृपाला * तेहि आश्रम निवसे कछु काला
समय पाइ तन तजि अनयासा * जाइ कीन्ह अमरावति बासा

दो॰ एह इतिहाँस पुनीत अति, उमहिं कही बृषकेतु।
भरद्वाज सुनु अपर पुनि, रामजनम कर हेतु॥

मा॰ पा॰ ५ दिन

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी * जो गिरिजा प्रति संभु बषानी
बिश्वबिदित एक कैकय देसू * सत्यकेतु तहँ बसै नरेसू
धरम धुरंधर नीतिनिधाना * तेज प्रताप सील बलवाना
तेहिके भये जुगल सुत बीरा * सबगुन धाम महा रनधीरा
राजधनी जो जेठ सुत आही * नाम प्रतापभानु अस ताही

अपर सुतहि अरिमर्दननामा * भुजबल अतुल अचल संग्रामा
भाइहि भाइहि परम समीती * सकल दोष छल बरजित प्रीती
जेठे सुतहि राज नृप दीन्हा * हरिहित आपु गवन बन कीन्हा

दो० जब प्रतापरबि भएउ नृप, फिरी दोहाई देस।
प्रजापाल अति बेदबिधि, कतहुँ नहीं अघलेस॥

नृपहितकारक सचिव सयाना * नाम धरमरुचि सुक्र समाना
सचिव सयान बंधु बलबीरा * आपु प्रतापपुंज रनधीरा
सेन संग चतुरंग अपारा * अमित सुभट सब समर जुझारा
सेन बिलोकि राउ हरषाना * अरु बाजे गहगहे निसाना
बिजय हेतु कटकई बनाई * सुदिन सोधि नृप चलेउ बजाई
जहँ तहँ परी अनेक लराई * जीते सकल भूप बरिआई
सप्तदीप भुजबल बस कीन्हे * लैलै दंड छाडि सब दीन्हे
सकल अवनिमंडल तेहि काला * येक प्रतापभानु महिपाला

दो० स्वबस बिस्वकरि बाहुँबल, निज पुर कीन्ह प्रबेस।
अर्थ धर्म कामादि सुष, सेवै समय नरेस॥

भूप प्रतापभानु बल पाई * कामधेनु भइ भूमि सुहाई
सब दुष बरजित प्रजासुषारी * धर्मसील सुन्दर नर नारी
सचिव धरमरुचि हरिपद प्रीती * नृप हित हेतु सिषवनित नीती
गुरु सुर संत पितर महिदेवा * करइ सदां नृप सब कै सेवा
भूपधरम जे बेद बषाने * सकल करै सादर सुष माने
दिनप्रतिदेइ बिबिधि बिधि दाना * सुनै सास्त्र बर बेद पुराना
नाना बापी कूप तडागा * सुमनबाटिका सुंदर बागा
बिप्रभवन सुरभवन सोहाये * सब तीरथन बिचित्र बनाये

दो० जहँ लगि कहे पुरानश्रुति, येक येक सबजाग।
बार सहस्र सहस्र नृप, किये सहित अनुराग॥

हृदय न कछु फल अनुसंधाना * भूप बिबेकी परम सुजाना
करइ जे धरम करम मन बानी * बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी
चढि बरबाजि बार येक राजा * मृगयाकर सब साजि समाजा
बिंध्याचल गँभीर बन गयेऊ * मृगपुनीत बहु मारत भयेऊ
फिरत बिपिन नृप दीष बराहू * जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसिराहू
बडबिधु नहिं समात मुषमाहीं * मनहुँ क्रोधबस उगिलत नाहीं
कोल कराल दसन छबिगाई * तन बिसाल पीवर[1] अधिकाई
घुरघुरात हय आरव पाये * चकित बिलोकत कान उठाये

दो० नील महीधर सिषर सम, देषि बिसाल बराहु।
चपरिचलेउ हय सुटुकि नृप, हांकि न होइ निबाहु॥

आवत देषि अधिक रंय[2] बाजी * चलेउ बराह मरुतगति भाजी
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना * महिमिलिगयेउबिलोकतबाना
तकि तकि तीर महीस चलावा * करि छल सुअर सरीर बचावा
प्रगटत दुरत जाइ मग भागा * रिसबस भूप चलेउ सँग लागा
गएउ दूरि बन गहन बराहू * जहँ नाहिंन गजबाजि निबाहू
अति अकेल बन बिपुल कलेसू * तदपि न मृग मग तजइनरेसू
कोल बिलोकि भूप बड धीरा * भागि पैठ गिरिगुहा गँभीरा
अगम देषि नृप अति पछिताई * फिरेउ महाबन परेउ भुलाई

दो० षेद षिन्न छुधित तृषित, राजा बाजि समेत।
षोजत ब्याकुल सरित सर, जल बिनु भयेउ अचेत॥

१—पीनस्तु स्थूलपीवरावित्यमरः। २—रयो वेगः॥

फिरत बिपिन आश्रम एक देषा * जहँ बस नृपति जती के बेषा
जासु देस नृप लीन्ह छोडाई * समर सेन तजि गएउ पराई
समय प्रतापभानुकर जानी * आपन अति असमय अनुमानी
गयेउ न गृह मन बहुत गलानी * मिला न राजहिं नृप अभिमानी
रिसि उर मारि रंक जिमि राजा * बिपिन बसै तापस के साजा
तासु समीप गवन नृप कीन्हा * यह प्रतापरबि तेहिं तब चीन्हा
राव तृषित नहिं सो पहिंचाना * देषि सुबेष महामुनि जाना
उतरि तुरँग तें कीन्ह प्रनामा * परमचतुर न कहेउ निजनामा

दो० भूपति तृषित बिलोकि तेहिं, सरवर दीन्ह दिषाइ।
मज्जन पान समेत हय, कीन्ह नृपति हरषाइ॥

गै श्रम सकल सुषी नृप भयेऊ * निज आश्रम तापस लैगयेऊ
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी * पुनि तापस बोलेउ मृदुबानी
को तुम्ह कस बन फिरहु अकेले * सुंदर जुवा जीव पर हेले
चक्रवती के लच्छन तोरे * देषत दया लागि अति मोरे
नाम प्रतापभानु अवनीसा * तासु सचिव मै सुनहुँ मुनीसा
फिरत अहेरे परेउँ भुलाई * बडे भाग देषेउँ पग आई
हँमकह दुर्लभ दरस तुम्हारा * जानत हौं कछु भल होनिहारा
कह मुनि तात भएउ अँधिआरा * जोजन सत्तरि नगर तुम्हारा

दो० निसा घोर गंभीर बन, पंथ न सुनहुँ सुजान।
बसहु आजु अस जानि तुम्ह, जाएहु होत बिहान॥
तुलसी जसि भवितब्यता, तैसी मिलै सहाइ।
आपु न आवै ताहि पहिं, ताहि तहां लै जाइ॥

भलेहि नाथ आयसु धरि सीसा * बांधि तुरग तरु बैठ महीसा

नृप बहु भाँति प्रसंसेउ ताही * चरनबंदि निज भाग्य सराही
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सोहाई * जानि पिता प्रभु करौं ढिठाई
मोहि मुनीस सुत सेवक जानी * नाथ नाम निज कहहु बषानी
तेहिं न जान नृप नृपहि सोजाना * भूप सुहृद सो कपट सयाना
बैरी पुनि छत्री पुनि राजा * छलबल कीन्ह चहै निजकाजा
समुझि राज सुष दुषित अराती * अवां अनल इव सुलगै छाती
सरल बचन नृपके सुनि काना * बैर सँभारि हृदय हरषाना

दो० कपट बोरि बानी मृदुल, बोलेउ जुगुति समेत।
नाम हमार भिषारि अब, निर्धन रहितनिकेत ॥

कह नृप जे बिज्ञाननिधाना * तुम्ह सारिषे गलित अभिमाना
सदा अपनपौ रहहिं दुरायें * सब बिधि कुसल कुबेष बनायें
तेहितें कहहिं संत श्रुति टेरे * परम अकिंचन प्रिय हरि केरे
तुम सम अधन भिषारि अगेहा * होत बिरंचि सिवहि संदेहा
जोसि सोसि तव चरन नमामी * मोपर कृपा करिअ अब स्वामी
सहज प्रीति भूपति कै देषी * आप बिषै बिस्वास बिसेषी
सब प्रकार राजहि अपनाई * बोलेउ अधिक सनेह जनाई
सुनु सतिभाव कहौं महिपाला * इहां बसत बीते बहुकाला

दो० अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ, मैं न जनावौं काहु।
लोकमानता अनल सम, कर तपकाननदाहु ॥
सो० तुलसी देषि सुबेषु, भूलहि मूढ न चतुर नर।
सुंदर केकिहि पेषु, बचन सुधासम असनअहि ॥

ताते गुप्त रहौं जग माहीं * हरितजि किमपिप्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब बिनहिं जनायें * कहहुकवन सिधि लोकरिझायें

तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरे * प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे
अब जौं तात दुरावौं तोही * दारुन दोष घटै अति मोही
जिमि जिमि तापस कथै उदासा * तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा
देषा स्वबस कर्म मन बानी * तब बोला तापस बगध्यानी
नाम हमार एकतन भाई * सुनि नृप बोलेउ पुनि सिरनाई
कहहु नाम कर अरथ बषानी * मोहि सेवक अति आपन जानी

दो॰ आदिशृष्टि उपजी जबहिं, तब उतपति भइ मोरि।
नाम एकतन हेतु तेहि, देहँ न धरी बहोरि॥

जनि आचरज करहु मन माहीं * सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं
तपबल तें जग शृजै बिधाता * तपबल बिस्नु भये परित्राता
तपबल संभु करहिं संहारा * तप[1] तें अगम न कछु संसारा
भयेउ नृपहि सुनि अति अनुरागा * कथा पुरातन कहइ सो लागा
करम धरम इतिहास अनेका * करइ निरूपन बिरति बिबेका
उदभव पालन प्रलय कहानी * कहेसि अमित आचरज बषानी
सुनि महीप तापस बस भएऊ * आपन नाम कहन तब लएऊ
कह तापस नृप जानौं तोही * कीन्हेहु कपट लाग भल मोही

सो॰ सुनि महीस असि नीति, जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप।
मोहि तोहि पर अति प्रीति, सोइ चतुरता बिचारि तव॥

नाम तुम्हार प्रतापदिनेसा * सत्यकेतु तव पिता नरेसा
गुरुप्रसाद सब जानिअ राजा * कहिय न आपन जानि अकाजा
देषि तात तव सहज सुधाई * प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई
उपजि परी ममता मन मोरे * कहेउँ कथा निज पूंछे तोरे

१—यद्दुस्तरं यद्दुरापं यद्दुर्गं यच्च दुष्करम्। सर्वं तु तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमः॥ —[illegible] संहितायाम्॥

अब प्रसन्न मै संसय नाहीं * मागु जो भूप भाव मनमाहीं
सुनि सुबचन भूपति हरषाना * गहिपदबिनयकीन्ह बिधिनाना
कृपासिंधु मुनि दरसन तोरे * चारि पदारथ करतल मोरे
प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी * मांगि अगमबर होउँ बिसोकी

दो० जरामरन दुषरहित तन, समर जितौ जनि कोउ।
एकछत्र रिपुहीन महि, राज कलपसत होउ॥

कह तापस नृप ऐसै होऊ * कारन एक कठिन सुनु सोऊ
कालौ तुअपद नाइहि सीसा * एक बिप्रकुल छाडि महीसा
तपबल बिप्र सदा बरिआरा * तिन्हके कोप न कोउ रषवारा
जौं बिप्रन बस करहु नरेसा * तौ तुअ बस बिधि बिस्नु महेसा
चल न ब्रह्मकुलसन बरिआई * सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई
बिप्रसाप बिनु सुनु महिपाला * तोर नास नहिं कौनेहु काला
हरषेउ राउ बचन सुनि तासू * नाथ न होइ मोर अब नासू
तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना * मो कहँ सर्बकाल कल्याना

दो० एवमस्तु कहि कपटमुनि, बोला कुटिल बहोरि।
मिलब हमार भुलाब निज, कहहु तौ हमहिं न षोरि॥

तातें मै तोहि बरजौं राजा * कहे कथा तव परम अकाजा
छठे श्रवन यह परत कहानी * नास तुम्हार सत्य मम बानी
यह प्रगटे अथवां द्विज सापा * नास तोर सुनु भानुप्रतापा
आन उपाय बिघन तव नाहीं * जौं हरि हर कोपहिं मनमाहीं
सत्य नाथ पदगहि नृप भाषा * द्विज गुरु कोप कहहु केहि राषा
राषै गुरु जौं कोप बिधाता * गुरुबिरोध नहिं कोउ जगत्राता
जौं न चलब हम कहे तुम्हारे * होउ नास नहिं सोच हमारे

एकहिं डर डरपत मन मोरा * प्रभु महिदेव साप अति घोरा

दो० होहिं बिप्र बस कवनिबिधि, कहहु कृपाकरि सोउ।
तुम तजि दीनदयाल निज, हितू न देखौं कोउ॥

सुनु नृपबिबिधिजतनजगमाहीं * कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाहीं
अहै एक अति सुगम उपाई * तहां परंतु एक कठिनाई
मम आधीन जुगति नृप सोई * मोर जाब तव नगर न होई
आजु लगे अरु जबते भयेऊं * काहू के गृह ग्राम न गयेऊं
जौं न जाउँ तौ होइ अकाजू * बना आइ असमंजस आजू
सुनि महीस बोलेउ मृदुबानी * नाथ निगम अस नीति बषानी
बडे सनेह लघुन पर करहीं * गिरिनिजसिरनिसदांतृनधरहीं
जलधि अगाधमौलि बह फेनू * संतत धरनि धरत सिररेनू

दो० अस कहि गहे नरेस पद, स्वामी होहु कृपाल।
मोहिलागिदुषसहिअप्रभु, सज्जन दीनदयाल॥

जानि नृपहि आपन आधीना * बोला तापस कपटप्रबीना
सत्य कहौं भूपति सुनु तोहीं * जग नाहिन दुर्लभ कछु मोहीं
अवसि काज मैं करिहौं तोरा * मन तन बचन भगत तैं मोरा
जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ * फलै तबहिं जब करिअ दुराऊ
जो नरेस मैं करौं रसोई * तुम परसहु मोहि जान न कोई
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई * सोइसोइ तव आयसु अनुसरई
पुनि तिनके गृह जेंवइं जोई * तव बस होइँ भूप सुनु सोई
जाइ उपाइ रचहु नृप एहू * संबत भरि संकल्प करेहू

दो० नितनूतन द्विज सहससत, बरेहु सहित परिवार।

१—विधियज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः। उपांशु स्याच्छतगुणः साहस्रो मानसस्मृतः॥ इति मनुस्मृतौ॥

मै तुम्हरे संकल्प लागि, दिनहिं करब जेवनार ॥

एहि बिधि भूप कष्ट अति थोरे * होइहहिं सकल बिप्र बस तोरे
करिहहिं बिप्र होम मष सेवा * तेहि प्रसंग सहजहि बस देवा
और एक तोहिं कहौं लषाऊ * मै यहि बेष न आउब काऊ
तुम्हरे उपरोहित कहँ राया * हरिआनब मै करि निज माया
तपबल तेहि करि आपु समाना * रषिहौं इहां बरष परमाना
मै धरि तासु बेष सुनु राजा * सब बिधि तोर सँवारब काजा
गै निसि बहुत सयन अब कीजे * मोहिं तोहिं भूप भेंट दिन तीजे
मै तपबल तोहि तुरग समेता * पहुँचैहौं सोवतहि निकेता

दो॰ मै आउब सोइ बेष धरि, पहिंचानेहु तब मोहिं ।
जब एकांत बुलाइ सब, कथा सुनावौं तोहिं ॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी * आसन जाइ बैठ छलज्ञानी
श्रमित भूप निद्रा अति आई * सो किमि सोव सोच अधिकाई
कालकेतु निसिचर तहँ आवा * जेइ सूकर होइ नृपहिं भुलावा
परममित्र तापसनृप केरा * जानै सो अति कपट घनेरा
तेहिके सत सुत अरु दस भाई * षल अति अजय देव दुषदाई
प्रथमहिं भूप समर सब मारे * बिप्र संत सुर देषि दुषारे
तेहिं षल पाछिल बयरु सँभारा * तापसनृप मिलि मंत्र बिचारा
जेहि रिपुछय सोइ रचेन्हि उपाऊ * भावीबस न जान कछु राऊ

दो॰ रिपु तेजसी अकेल अपि, लघु करि गनिय न ताहु ।
अजहुँ देत दुष रबिससिहि, सिर अवसोषित राहु ॥

१—संतन्येपि बृहस्पतिप्रभृतयः संभाविताः पंचशस्तान्प्रत्येषाविशेषविक्रमरुची राहुर्न वैरायते । द्वावेव ग्रसते दिनेश्वरनिशाप्राणेश्वरौ भास्करौ भ्रान्तः पर्वणि पश्य दानवपतिः शीर्षावशेषाकृतिः ॥

तापसनृप निजसषहिं निहारी ✻ हरषिमिलेउ उठिभयउसुषारी
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई ✻ जातुधान बोला सुष पाई
अब साधेउ नृप सुनहु नरेसा ✻ जौं तुम कीन्ह मोर उपदेसा
परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई ✻ बिन औषधबिआधिबिधिषोई
कुल समेत रिपु मूल बहाई ✻ चौथे दिवस मिलब मै आई
तापस नृपहि बहुत परितोषी ✻ चला महाकपटी अतिरोषी
भानुप्रताप हि बाजिसमेता ✻ पहुँचायेसि छनमाझ निकेता
नृपहि नारिपहिं सयन कराई ✻ हयगृह बांधेसि बाजि बनाई

दो॰ राजा के उपरोहितहि, हरि लैगयउ बहोरि।
लै राषेसि गिरिषोहमहँ, करि माया मति भोरि॥

आपु बिरचि उपरोहित रूपा ✻ परेउजाइ तेहि सेज अनूपा
जागेउ नृप अनभएउ बिहाना ✻ देषि भवन अतिअचरज माना
मुनिमहिमा मन महँ अनुमानी ✻ उठेउ गवहिं जेहि जान नरानी
कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही ✻ पुर नर नारि न जानेउ केही
गये जाम जुग भूपति आवा ✻ घर घर उतसव बाजु बधावा
उपरोहितहि दीष जब राजा ✻ चकितबिलोकिसुमिरिसोइकाजा
जुगसम नृपहि गये दिन तीनी ✻ कपटीमुनिपद रहि मतिलीनी
समय जानि उपरोहित आवा ✻ नृपहि मते सब कहि समुझावा

दो॰ नृप हरषेउ पहिंचानि गुरु, भ्रमबस रहा न चेत।
बरे तुरत सत सहस सब, बिप्र कुटुंब समेत॥

उपरोहित जेवनार बनाई ✻ छरस चारि बिधि जस श्रुतिगाई
मायामय तेहिं कीन्ह रसोई ✻ बिंजन बहु गनि सकै न कोई
बिबिधि मृगन्हकर आमिष रांधा ✻ तेहि महँ बिप्रमांसु षल सांधा

भोजन कहँ सब बिप्र बोलाये * पद पषारि सादर बैठाये
परुसन जबहिं लाग महिपाला * भइ अकासबानी तेहि काला
बिप्रबृंद उठि उठि गृह जाहू * है बडि हानि अन्न जनि षाहू
भयउ रसोईं भूसुर मासू * सब द्विज उठे मानि बिस्वासू
भूप बिकलमति मोह भुलानी * भावीबस मुष आव न बानी

दो० बोले बिप्र सकोप तब, नहिं कछु कीन्ह बिचार।
जाइ निशाचर होहु नृप, मूढ सहित परिवार॥

छत्रबंस तैं बिप्र बोलाई * घालै लिये सहित समुदाई
ईस्वर राषा धरम हमारा * जैहसि तैं समेत परिवारा
संबत मध्य नास तव होऊ * जलदाता न रहौ कुल कोऊ
नृपसुनिसापबिकलअतित्रासा * भै बहोरि बर गिरा अकासा
बिप्रहु साप बिचारि न दीन्हा * नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी * भूप गयेउ जहँ भोजनषानी
तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा * फिरेउ राउ मन सोच अपारा
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई * त्रसित परेउ अवनी अकुलाई

दो० भूपति भावी मिटै नहिं, जदपि न दूषन तोर।
किये अन्यथा होइ नहिं, बिप्रसाप अतिघोर॥

अस कहि सब महिदेव सिधाये * समाचार पुरलोगन्ह पाये
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं * बिरचत हंस काग किय जेहीं
उपरोहितहि भवन पहुँचाई * असुर तापसहि षबरि जनाई
तेहिं षल जहँ तहँ पत्र पठाये * सजि सजि सेन भूप सब धाये
घेरेन्हि नगर निशान बजाई * बिबिधिभाँतिनितिहोतिलराई
जूझे सकल सुभट करि करनी * बंधु समेत परेउ नृप धरनी

सत्यकेतु कुल कोउ नहिं बांचा * बिप्रसाप किमि होइ असांचा
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई * निज पुर गवने जय जसु पाई

दो० भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ बिधाता बाम।
धूरि मेरुसम जनक जम, ताहि ब्यालसम दाम॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा * भएउ निसाचर सहित समाजा
दससिर ताहि बीस भुजदंडा * रावन नाम बीर बरबंडा
भूप अनुज अरिमर्दन नामा * भएउ सो कुंभकरन बलधामा
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू * भयेउ बिमात्रि बंधु लघु तासू
नाम बिभीषन जेहि जग जाना * बिस्नुभगति बिज्ञान निधाना
रहे जे सुत सेवक नृपकेरे * भए निसाचर घोर घनेरे
कामरूप षल जिनिस अनेका * कुटिल भयंकर बिगत बिबेका
कृपारहित हिंसक सब पापी * बरनि न जाहिं बिस्वपरितापी

दो० उपजे जदपि पुलस्तिकुल, पावन अमल अनूप।
तदपि महीसुरसापबस, भये सकल अघरूप॥

कीन्ह बिबिधि तप तीनिउँ भाई * परम उग्र सो बरनि न जाई
गएउ निकट तप देषि बिधाता * मागहु बर प्रसन्न मै ताता
करि बिनती पदगहि दससीसा * बोलेउ बचन सुनहुँ जगदीसा
हम काहू के मरहिं न मारे * बानर मनुज जाति दुइ बारे
एवमस्तु तुम्ह बड तप कीन्हा * मै ब्रह्मा मिलि तेहि बर दीन्हा
पुनि प्रभु कुंभकरन पहँ गएऊ * तेहि बिलोकि मन बिस्मय भएऊ
जौं यह खल निति करब अहारू * होइहि सब उजारि संसारू

१-कालाच्चयवन्ति भूतानि कालाद्वृद्धिं प्रयान्ति च। काले चास्तं नियच्छन्ति कालो मूर्तिरमूर्तिमान्॥ इति मैत्रायणीये॥

सारद प्रेरि तासु मति फेरी * मागेसि नीद मास षटकेरी

दो० गये बिभीषन पास पुनि, कहेउ पुत्र बर मांगु।
तेहिं मागेउ भगवंत पद, कमल अमल अनुरागु॥

तिन्हहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये * हरषित ते अपने गृह आये
मयतनुजा मंदोदरि नामा * परम सुंदरी नारि ललामा
सोइ मय दीन्हि रावनहिं आनी * होइहि जातुधानपति जानी
हरषित भएउ नारि भलि पाई * पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई
गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी * बिधिनिर्मित दुर्गम अतिभारी
सोइ मय दानव बहुरि सँवाँरा * कनकरचित मनिभवन अपारा
भोगावति जसि अहिकुलबासा * अँमरावति जसि सक्रनिवासा
तिनते अधिक रम्य अतिबंका * जगबिष्यात नाम तेहि लंका

दो० षाई सिंधु गभीर अति, चारिउदिसि फिरि आव।
कनककोटमनिषचितदृढ, बरनि न जाइ बनाव॥
हरिप्रेरित जेहि कलप जोइ, जातुधानपति होइ।
सूर प्रतापी अतुल बल, दलसमेत बस सोइ॥

रहे तहां निसिचर भट भारे * ते सब सुरन्ह समर संहारे
अब तहँ रहहिं सक्र के प्रेरे * रक्षक कोटि जक्षपति केरे
दसमुष कतहुँ षबरि असिपाई * सेनसाजि गढ घेरेसि जाई
देषि बिकट भट बडि कटकाई * जक्ष जीव लै गये पराई
फिरि सब नगर दसानन देषा * गयेउ सोच सुषभएउ बिसेषा
सुंदर सहज अगम अनुमानी * कीन्ह तहां रावन रजधानी
जेहिजस जोग बांटि गृह दीन्हे * सुषी सकल रजनीचर कीन्हे
एक बार कुबेर पर धावा * पुष्पकजान जीति लै आवा

दो॰ कौतुकहीं कैलास पुनि, लीन्हेसि जाइ उठाइ।
मनहुँ तौलिनिज बाँहुबल, चला बहुत सुषपाइ॥
सुष संपति सुत सेन सहाई * जय प्रताप बल बुद्धि बडाई
नित नूतन सब बाढत जाई * जिमिप्रतिलाभलोभअधिकाई
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता * जेहिकहँनहिंप्रतिभटजगजाता
करइ पान सोवइ षटमासा * जागत होइ तिहूंपुर त्रासा
जौं दिनप्रति अहार कर सोई * बिस्व बेगि सब चौपट होई
समरधीर नहिं जाइ बषाना * तेहि सम अमितबीर बलवाना
बारिदनाद जेठ सुत तासू * भट महँ प्रथम लीक जग जासू
जेहि न होइ रन सनमुष कोई * सुरपुर नितहिं परावन होई
दो॰ कुमुष अकंपन कुलिसरद, धूम्रकेतु अतिकाय।
एक एक जग जीति सक, ऐसे सुभट निकाय॥
कामरूप जानहिं सब माया * सपनेहुँ जिनके धरम न दाया
दसमुष बैठि सभा एक बारा * देषि अमिति आपन परिवारा
सुतसमूह जन परिजन नाती * गनै को पार निसाचरजाती
सैन बिलोकि सहजअभिमानी * बोला बचन क्रोधमदसानी
सुनहु सकल रजनीचरजूथा * हमरे बैरी बिबुधबरूथा
ते सनमुष नहिं करहिं लराई * देषि सबलरिपु जाहिं पराई
तिन्हकर मरन एक बिधि होई * कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई
द्विजभोजन मष होम सराधा * सबकै जाइ करहु तुम्ह बाधा
दो॰ छुधाछीन बलहीन सुर, सहजहिं मिलिहहिं आइ।
तब मारिहौं कि छांडिहौं, भली भाँति अपनाइ॥
मेघनाद कहँ पुनि हँकरावा * दीन्ही सिष बल बयर बढावा

जे सुर समरधीर बलवाना * जिन्हके लरिबे कर अभिमाना
तिन्हहिं जीति रन आनेसु बांधी * उठि सुत पितुअनुसासनकांधी
एहि बिधि सबही अज्ञा दीन्ही * आपहु चला गदा कर लीन्ही
चलत दसानन डोलत अवनी * गर्जत गर्भ श्रवत सुररवनी
रावन आवत सुनेउँ सकोहा * देवन्ह तके मेरुगिरि षोहा
दिगपालन्ह के लोक सोहाये * सूने सकल दसानन पाये
पुनि पुनि सिंहनाद कर भारी * देइ देवतन्ह गारि प्रचारी
रन मदमत्त फिरै जग धावा * प्रतिभट षोजत कतहुँ न पावा
रबि ससि पवन बरुण धनधारी * अगिनिकालजमसबअधिकारी
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा * हठि सबही के पंथहि लागा
ब्रह्मश्रृष्टि जहँ लगि तनुधारी * दसमुषबसबरती नर नारी
आयसु करहिं सकल भयभीता * नवहिं आइ नित चरनविनीता

दो० भुजबल बिश्व बस्य करि, राषेसि कोउ न स्वतंत्र।
मंडलीकमनि रावन, राज करै निज मंत्र॥
देव जक्ष गंधर्ब नर, किन्नर नाग कुमारि।
जीति बरी निज बाँहुबल, बहु सुंदरि बरनारि॥

इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ * सो सब जनु पहिलेहि करिरहेऊ
प्रथमहिंजिन्हकहँआयसुदीन्हा * तिन्हकरचरितसुनहुजो कीन्हा
देषत भीमरूप सब पापी * निसिचरनिकर देवपरितापी
करहिं उपद्रव असुरनिकाया * नानारूप धरहिं करि माया
जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला * सो सब करहिं बेदप्रतिकूला
जेहि जेहि देसधेनुद्विजपावँहिं * नगर गाँव पुर आगि लगावँहिं
सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई * देव बिप्र गुरु मान न कोई

नहिं हरिभगति जज्ञ तप ज्ञाना * सपनेहुँ सुनिअ न बेदपुराना

छंद

जपजोग बिरागा तपमषभागा श्रवणसुनै दससीसा।
आपुन उठि धावै रहै न पावै धरि सब घालै षीसा॥
अस भ्रष्टअचारा भा संसारा धर्म सुनिय नहिं काना।
तेहि बहुबिधि त्रासै देसनिकासै जो कह बेदपुराना॥
सो० बरनि न जाइ अनीति, घोरनिसाचर जो करहिं।
हिंसापर अति प्रीति, तिन्हकेपापहि कवन मिति॥

मा० पा० ६ दिन

बाढे षल बहु चोर जुआरा * जे लंपट परधन परदारा
मानहिं मातु पिता नहिं देवा * साधुन्ह सन करवावँहि सेवा
जिन्हके यह आचरन भवानी * ते जानहु निसिचरसम प्रानी
अतिसय देषि धर्म कै हानी * परम सभीति धरा अकुलानी
गिरिसरिसिन्धुभार नहिं मोही * जस मोहिं गरुव एक परद्रोही
सकल धर्म देषै बिपरीता * कहि न सकै रावन भयभीता
धेनुरूप धरि हृदय बिचारी * गई तहां जहँ सुर मुनि झारी
निज संताप सुनायेसि रोई * काहूतें कछु काज न होई

छंद

सुर मुनि गंधर्बा मिलिकरि सर्बा गे बिरंचिके लोका।
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परमबिकल भय सोका॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोरौ कछु न बसाई।
जाकरि तैं दासी सो अबिनासी हमरौ तोर सहाई॥
सो० धरनि धरहि मन धीर, कह बिरंचि हरिपद सुमिरु।
जानत जनकी पीर, प्रभु भंजिहि दारुनबिपति॥

बैठे सुर सब करहिं बिचारा * कहँ पाइय प्रभु करिअ पुकारा
पुर बैकुंठ जान कह कोई * कोउ कह पयनिधिबसप्रभुसोई
जाके हृदय भगति जसि प्रीती * प्रभु तेहिं प्रगट सदा यह नीती
तेहि समाज गिरिजा मै रहेऊं * अवँसर पाइ बचन एक कहेऊं
हरि ब्यापक सर्बत्र समाना * प्रेमतें प्रगट होहिं मै जाना
देसकाल दिसि बिदिसिहु माहीं * कहहु सो कहां जहां प्रभु नाहीं
अगजगमय सबरहित बिरागी * प्रेमतें प्रभु प्रगटै जिमि आगी
मोर बचन सब के मन माना * साधु साधु कहि ब्रह्म बषाना

दो० सुनि बिरंचि मन हरष तन, पुलक नयन बहनीर ।
अस्तुति करत जोरिकर, सावधान मतिधीर ॥

छंद

जय जय सुरनायक जनसुषदायक प्रनतपाल भगवंता ।
गोद्विजहितकारी जय असुरारी सिंधुसुताप्रियकंता ॥
पालन सुरधरनी अद्भुत करनी मर्म न जानै कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई ॥
जय जय अबिनासी सब घटबासी ब्यापक परमानंदा ।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहिलागि बिरागी अतिअनुरागी बिगतमोह मुनिवृंदा ।
निसिबासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिधि बनाई संग सहाइ न दूजा ।
सो करहु अघारी चिंतहमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भवभयभंजन मुनिमनरंजन गंजन बिपतिबरूथा ।
मनबच क्रम बानी छाडि सयानी सरनसकलसुरजूथा ॥

सारद श्रुतिसेषा रिषयअसेषा जाकहँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवौ सो श्रीभगवाना॥
भवबारिधिमंदर सबबिधिसुंदर गुनमंदिर सुषपुंजा।
मुनिसिद्ध सकलसुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

दो॰ जानि सभय सुर भूमि सुनि, बचन समेत सनेह।
गगन गिरा गंभीर भइ, हरनि सोक संदेह॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा * तुम्हहिं लागि धरिहौं नरबेसा
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा * लेहौं दिनकर बंस उदारा
कस्यप अदिति महातप कीन्हा * तिन्हकहँ मैं पूरब बर दीन्हा
ते दसरथ कौसल्या रूपा * कोसलपुरी प्रगट नरभूपा
तिन्हके गृह अवतरिहौं जाई * रघुकुलतिलकसो चारिउ भाई
नारद बचन सत्य सब करिहौं * परमसक्ति समेत अवतरिहौं
हरिहौं सकल भूमिगरुआई * निर्भय होहु देवसमुदाई
गगन ब्रह्मबानी सुनि काना * तुरत फिरे सुर हृदय जुडाना
तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा * अभय भई भरोस जियआवा

दो॰ निज लोकहि बिरंचि गे, देवन्ह इहै सिषाइ।
बानरतन धरि धरि महि, हरिपद सेवहु जाइ॥

गये देव सब निज निज धामा * भूमिसहित मन कहँ बिश्रामा
जो कछु आयसु ब्रह्मा दीन्हा * हरषे देव बिलंब न कीन्हा
बनचर देहँ धरी छिति माहीं * अतुलितबल प्रताप तिन्हपाहीं
गिरि तरु नष आयुध सबबीरा * हरिमारग चितवहिं मतिधीरा
गिरि कानन जहँ तहँ महिपूरी * रहे निजनिज अनीकरुचिरूरी
यह सब रुचिर चरित मैं भाषा * अबसो सुनहुँ जो बीचहिं राषा

अवधपुरी रघुकुलमनि राऊ * बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊ
धर्मधुरंधर गुननिधि ज्ञानी * हृदय भगति मति सारँगपानी

दो० कौसल्यादि नारि सब, प्रिअ आचरन पुनीत।
पतिअनुकूल प्रेमदृढ, हरिपदकमल बिनीत॥

येक समै भूपति मनमाहीं * भइ गलानि मोरें सुत नाहीं
गुरुगृह गयेउ तुरत महिपाला *चरन लागिकरि बिनय बिसाला
निजदुषसुष सब गुरुहि सुनायेउ*कहिबसिष्ट बहुबिधि समुझायेउ
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी *त्रिभुअन बिदित भगत भयहारी
शृंगीऋषिहि बसिष्ट बोलावा * पुत्र काम लागि जज्ञ करावा
भगतिसहित मुनि आहुति दीन्हे*प्रगटे अगिनि चरू कर लीन्हे
जो बसिष्ट कछु हृदय बिचारा * सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा
एह हबि बांटि देहु नृप जाई * जथाजोग जेहि भाग बनाई

दो० तब अदृस्य भए पावक, सकल सभहि समुझाइ।
परमानंद मगन नृप, हरष न हृदय समाइ॥

तबहिं राय प्रिय नारि बुलाई * कौसल्यादि तहां चलिआई
अर्धभाग कौसल्यहि दीन्हा * उभय भाग आधेकर कीन्हा
कैकेई कहँ नृप सो दयेऊ * रह्योसो उभय भाग पुनि भयेऊ
कौसल्या कैकई हाथधरि * दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि
एहिबिधि गर्भसहित सब नारी * भई हृदय हरषित सुषभारी
जादिनतैं हरि गर्भहि आए * सकललोक सुष संपतिछाए
मंदिरमहँ सब राजहिं रानी * सोभा सील तेज की षानी
सुषजुत कछुक काल चलिगयेऊ*जेहिप्रभुप्रगटसो अवसर भयेऊ

दो० जोग लगन ग्रह बारातिथि, सकल भये अनुकूल।

चर अरु अचर हरषयुत, रामजन्म सुषमूल ॥
नौमी तिथि मधुमास पुनीता * सुकलपक्ष अभिजित हरिप्रीता
मध्यदिवस अति सीत न घामा * पावन सकल लोकबिश्रामा
सीतल मंद सुरभि बह बाऊँ * हरषित सुर संतन्ह मन चाऊँ
बनकुसमितगिरिगनमनिआरा * श्रवैं सकल सरितामृतधारा
सो अवसर बिरंचि जब जाना * चले सकल सुर साजि बिमाना
गगन बिमल संकुल सुरजूथा * गावहिं गुन गंधर्बबरूथा
बर्षहिं सुमन सुअंजलि साजी * गहगह गगन दुंदुभी बाजी
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा * बहुबिधिलावहिं निज निजसेवा

दो० सुरसमूह बिनती करि, पहुँचे निज निज धाम ।
जगनिवास प्रभु प्रगटे, अषिल लोकबिश्राम ॥

छंद

भये प्रगट कृपाला परमदयाला कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी मुनिमनहारी अद्भुत रूप बिचारी ॥
लोचनअभिरामं तनघनश्यामं निजआयुधभुजचारी ।
भूषनबनमाला नयनबिसाला सोभासिंधु षरारी ॥
कह दुइकरजोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता ।
माया गुन ज्ञानातीत अमाना बेदपुरान भनंता ॥
करुनासुषसागर सब गुनआगर जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो ममहितलागी जनअनुरागी भयेउ प्रगट श्रीकंता ॥
ब्रह्मांडनिकाया निर्मित माया रोमरोमप्रति बेद कहै ।
सो ममउर बासी एह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहै ॥
उपजा जब ज्ञाना प्रभुमुसुकाना चरित बहुतबिधि कीन्ह चहै ।

कहि कथा सोहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात येह रूपा ।
कीजै सिसुलीला अतिप्रियसीला एह सुष परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

दो० बिप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुजअवतार ।
निज इक्षा निर्मित तन, माया गुन गोपार ॥

सुनि सिसुरुदन परमप्रिय बानी * संभ्रम चलि आईं सब रानी
हरषित जहँ तहँ धांई दासी * आनँदमगन सकल पुरबासी
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना * मानहुँ ब्रह्मानंद समाना
परम प्रेम मन पुलक सरीरा * चाहत उठन करत मतिधीरा
जाकर नाम सुनत सुभ होई * मोरे गृह आवा प्रभु सोई
परमानंद पूरि मन राजा * कहा बोलाइ बजावहु बाजा
गुरु बसिष्ट कहँ गयउ हँकारा * आये द्विजन सहित नृपद्वारा
अनुपम बालक देखिन्ह जाई * रूपरासि गुन कहि न सिराई

दो० नंदीमुष सराध करि, जातकर्म सब कीन्ह ।
हाटक धेनु बसन मनि, नृप बिप्रन कहँ दीन्ह ॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा * कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा
सुमन बृष्टि अकास तें होई * ब्रह्मानंद मगन नर लोई
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं * सहज सिंगार किये उठि धाईं
कनककलस मंगल भरि थारा * गावत पैठहिं भूप दुआरा
करि आरती निछावरि करहीं * बार बार सिसुचरनन्हि परहीं
मागध सूत बंदिगन गायक * पावन गुन गावहिं रघुनायक

सर्बस दान दीन्ह सबकाहूँ * जेहिं पावा राषा नहिं ताहूँ
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा * मची सकल बीथिन्ह बिचबीचा
दो॰ गृह गृह बाज बधाव सुभ, प्रभु प्रगटेउ सुषकंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ, नगर नारि नर बृंद॥
कैकयसुता सुमित्रा दोऊ * सुंदरसुत जनमत भइँ वोऊ
वोह सुषसंपति समय समाजा * कहि न सकै सारद अहिराजा
अवधपुरी सोहै एहि भाँती * प्रभुहि मिलन आई जनु राती
देषि भानु जनु मन सकुचानी * तदपि बनी संध्या अनुमानी
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी * उडै अबीर मनहुँ अरुनारी
मंदिर मनिसमूह जनु तारा * नृपगृह कलस सो इंदु उदारा
भवन बेद धुनि अतिमृदु बानी * जनु षगमुषर समय जनुसानी
कौतुक देषि पतंग भुलाना * एक मास तेइँ जात न जाना
दो॰ मासदेवसकर देवसभा, मरम न जानै कोइ।
रथ समेत रबि थाकेउ, निसा कवनिबिधि होइ॥
येह रहस्य काहूँ नहिं जाना * दिनमनि चले करत गुनगाना
देषि महोत्सव सुर मुनिनागा * चले भवन वर्नत निज भागा
औरौ एक कहौं निज चोरी * सुनु गिरिजा अतिदृढमतितोरी
कागभुसुंडि संग हम दोऊ * मनुजरूप जानै नहिं कोऊ
परमानंद प्रेम सुष फूले * बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले
यह सुभचरित जान पै सोई * कृपा राम कै जापर होई
तेहिअवँसरजोजेहिबिधिआवा * दीन्ह भूप जो जेहि मनभावा
गज रथ तुरग हेम गो हीरा * दीन्हे नृप नानाबिधि चीरा
दो॰ मन संतोष सबन्हि के, जहँ तहँ देहिं असीस।

सकल तनय चिरजीवहु, तुलसिदास के ईस ॥

कछुक दिवस बीते एहि भाँती * जात न जानिय दिन अरु राती
नामकरनकर अवँसर जानी * भूप बोलि पठए मुनि ज्ञानी
करि पूजा भूपति अस भाषा * धरिअ नाम जो मुनि गुनिराषा
इन्हके नाम अनेक अनूपा * मैं नृप कहब स्वमति अनुरूपा
जो आनंदसिंधु सुषरासी * सीकर ते त्रैलोक सुपासी
सो सुषधाम राम अस नामा * अषिल लोकदायक बिश्रामा
बिस्व भरन पोषन कर जोई * ताकर नाम भरत अस होई
जाके सुमिरन ते रिपु नासा * नाम सत्रुहन बेद प्रकासा

दो॰ लछन[1] धाम रामप्रिय, सकल जगत आधार।
गुरुबसिष्ट तेहि राखा, लछिमन नाम उदार[2] ॥

धरे नाम गुरु हृदय बिचारी * बेद तत्त्व नृप तव सुत चारी
मुनि धन जन सर्बस सिवप्राना * बालकेलि रस तेहिं सुष माना
बारहिं तें निज हित पति जानी * लछिमन रामचरन रति मानी
भरत सत्रुहन दूनौ भाई * प्रभु सेवक जसि प्रीति बडाई
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी * निरषहिं छबि जननी तृन तोरी
चारिउ सील रूप गुन धामा * तदपि अधिक सुषसागर रामा
हृदय अनुग्रह इंदु प्रकासा * सूचत किरिन मनोहर हाँसा
कबहुँ उछंग कबहुँ वर पलना * मातुदुलारै कहि प्रियललना

दो॰ ब्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुन बिगतबिनोद।
सो अज प्रेम भगतबस, कौसल्या के गोद ॥

१—कलंकांकौ लांछनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ॥ इत्यमरः ॥ २— उदारो दात्रिमहतो इति मेदिनीकोशे ॥

काम कोटि छबि स्याम सरीरा * नीलकंज बारिद गंभीरा
अरुन चरन पंकज नष जोती * कमलदलन्हि बैठे जनु मोती
रेष कुलिस ध्वज अंकुस सोहै * नूपुर धुनि सुनि मुनिमन मोहै
कटि किंकिनी उदर त्रय रेषा * नाभि गँभीर जान जिन्ह देषा
भुज बिसाल भूषनजुत भूरी * हिय हरिनष अति सोभा रूरी
उर मनिहार पदिक की सोभा * बिप्रचरन देषत मन लोभा
कंबुकंठ अति चिबुक सोहाई * आनन अमित मदन छबिछाई
दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे * नासा तिलक को बरनै पारे
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला * अतिप्रिय मधुर तोतरे बोला
चिक्कनकच कुंचित गभुआरे * बहुप्रकार रचि मातु सवाँरे
पीत भँगुलिया तन पहिराई * जानु पानि बिचरनि मोहि भाई
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा * सो जानै सपनेहुँ जेहिं देषा

दो॰ सुष संदोह मोहपर, ज्ञान गिरा गोतीत।
दंपति परम प्रेमबस, कर सिसुचरित पुनीत॥

यहि बिधि राम जगतपितुमाता * कोसलपुरबासिन्ह सुषदाता
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी * तिनकी यह गति प्रगट भवानी
रघुपतिबिमुष जतन कर कोरी * कवन सकै भव बंधन छोरी
जीव चराचर बस करि राषे * सो माया प्रभु सों भय भाषे
भृकुटिबिलास नचावहिं ताही * असप्रभुछाँडि भजिय कहु काही
मन क्रम बचन छाँडि चतुराई * भजत कृपा करिहहिं रघुराई
एहिबिधिसिसुबिनोदप्रभुकीन्हा * सकल नगरबासिन्ह सुषदीन्हा
लै उछंग कबहुँक हलरावै * कबहुँ पालने घालि भुलावै

दो॰ प्रेममगन कौसल्या, निसि दिन जात न जान।

सुतसनेहबस माता, बालचरित कर गान ॥

एक बार जननी अन्हवाये * करि सिंगार पलना पौढाये
निजकुल इष्टदेव भगवाना * पूजाहेत कीन्ह असनाना
करि पूजा नैबेद चढावा * आपु गई जहँ पाक बनावा
बहुरि मातु तहँवां चलिआई * भोजन करत देषि सुत जाई
गई जननि सिसुपहँ भयभीता * देषा बालक तहँ पुनि सूता
बहुरि आइ देषा सुत सोई * हृदय कंप मन धीर न होई
इहां उहां दुइ बालक देषा * मतिभ्रम मोरि कि आनबिसेषा
देखी राम जननि अकुलानी * प्रभु हँसिदीन्ह मधुर मुसुकानी

दो॰ देषरावा मातहि निज, अद्भुत रूप अषंड ।
रोम रोम प्रति लागे, कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥

अगिनितरबिससिसिवचतुरानन * बहुगिरिसरितसिंधुमहिकानन
काल कर्म गुन ज्ञान सुभाऊ * सोउ देषा जो सुना न काऊ
देषी माया सब बिधि गाढी * अति सभीत जोरे कर ठाढी
देषा जीव नचावै जाही * देषी भगति जो छोरै ताही
तनपुलकित मुषबचन न आवा * नयन मूंदि चरननि सिरनावा
बिस्मयवंत देषि महतारी * भये बहुरि सिसुरूप षरारी
अस्तुति करि न जाइ भयमाना * जगतपिता मैं सुत करि जाना
हरि जननिहिं बहुबिधिसमुझाई * एह जनि कतहुँ कहसि सुनुमाई

दो॰ बार बार कौसल्या, बिनय करै कर जोरि ।
अब जनि कबहूं ब्यापै, प्रभु मोहि माया तोरि ॥

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा * अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा
कछुक काल बीते सब भाई * बडे भये परिजन सुषदाई

चूडाकरन कीन्ह गुरु जाई * बिप्रन पुनि दछिना बहु पाई
परम मनोहर चरित अपारा * करत फिरत चारिउ सुकुमारा
मन क्रम बचन अगोचर जोई * दसरथअजिर बिचर प्रभु सोई
भोजन करत बोल जब राजा * नहिं आवत तजि बालसमाजा
कौसल्या जब बोलन जाई * ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई
निगम नेति सिव अंत न पावा * ताहि धरै जननी हठि धावा
धूसर धूरि भरे तन आये * भूपति बिहँसि गोद बैठाये

दो० भोजन करत चपलचित, इत उत अवँसर पाइ।
भागि चले किलकत मुष, दधि ओदन लपटाइ॥

बालचरित अति सरल सोहाये * सारद सेष संभु श्रुति गाये
जिन्हकर मनइन्हसन नहिंराता * ते जनबंचित किये बिधाता
भये कुमार जबहिं सब भ्राता * दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता
गुरुगृह गये पढन रघुराई * अलपकाल सब बिद्या आई
जाकी सहज स्वास श्रुति चारी * सो हरि पढ यह कौतुक भारी
बिद्या बिनय निपुन गुन सीला * षेलहिं षेल सकल नृपलीला
करतल बान धनुष अति सोहा * देषत रूप चराचर मोहा
जिन्हबीथिन्ह बिहरहिं सब भाई * थकित होहिं सब लोग लुगाई

दो० कोसलपुरबासी नर, नारि बृद्ध अरु बाल।
प्रानहुँ तें प्रिअ लागत, सब कहँ राम कृपाल॥

बंधु सषा सँग लेहिं बोलाई * बन मृगया नित षेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जिय जानी * दिनप्रति नृपहि देषावहिं आनी
जे मृग राम बान के मारे * ते तन तजि सुरलोक सिधारे

१-ईषत्पाण्डुस्तु धूसररित्यमरः॥

अनुज सषासँग भोजन करहीं * मातु पिता अज्ञा अनुसरहीं
जेहिबिधि सुषी होहिं पुर लोगा * करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा
बेद पुरान सुनहिं मन लाई * आपु कहहिं अनुजन समुझाई
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा * मातु पिता गुरु नावँहिं माथा
आयसु मागि करहिं पुरकाजा * देषि चरित हरषै मन राजा

दो० ब्यापकअकल अनीहअज, निर्गुन नाम न रूप।
भगतहेतु नाना बिधि, करत चरित्र अनूप॥

यह सब चरित कहा मै गाई * आगिलि कथा सुनहुँ मनलाई
विस्वामित्र महामुनि ज्ञानी * बसहिंबिपिनसुभआश्रमजानी
जहँजपजोगजज्ञ मुनिकरहीं * अति मारीच सुबाहुहि डरहीं
देषत जज्ञ निसाचर धावँहिं * करहिं उपद्रव मुनि दुष पावँहिं
गाधितनय मन चिंता ब्यापी * हरिबिनुमरहिं न निसिचरपापी
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा * प्रभु अवतरेउ हरन महिभारा
एहू मिस देषौं पद जाई * करि बिनती आनौं दोउभाई
ज्ञान बिराग सकल गुनअयना * सो प्रभु मै देषौं भरि नयना

दो० बहु बिधि करत मनोरथ, जात लागि नहिं बार।
करि मज्जन सरजूजल, गये भूपदरबार॥

मुनिआगमन सुना जब राजा * मिलन गएउ लै बिप्रसमाजा
करिदंडवत मुनिहिं सनमानी * निज आसन बैठारेन्हि आनी
चरन पषारि कीन्हि अति पूजा * मोसम आजु धन्य नहिं दूजा
बिबिध भाँति भोजन करवावा * मुनिबर हृदय हरष अति पावा
पुनि चरननि मेले सुत चारी * राम देषि मुनि देहँ बिसारी
भये मगन देषत मुषसोभा * जनु चकोर पूरन ससि लोभा

तब मन हरष बचन कह राऊ * मुनि अस कृपा न कीन्हेहु काऊ
केहि कारन आगमन तुम्हारा * कहहु सो करत न लावौं बारा
असुरसमूह सतावहिं मोही * मै जाचन आयेउँ नृप तोही
अनुजसमेत देहु रघुनाथा * निसिचर बध मै होब सनाथा

दो० देहु भूप मन हरषित, तजहु मोह अज्ञान।
धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं, इन्ह कहँ अतिकल्यान॥

सुनि राजा अति अप्रियबानी * हृदय कंपमुष दुति कुँभिलानी
चौथेपन पायउँ सुत चारी * बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी
मागहु भूमि धेनु धन कोसा * सर्बस देउँ आजु सहरोसा
देहँ प्रान तें प्रिय कछु नाहीं * सोउ मुनि देउँ निमिष एकमाहीं
सब सुत प्रिय मोहिं प्रान कि नाईं * राम देत नहिं बनै गोसाईं
कहँ निसिचर अतिघोर कठोरा * कहँ सुंदर सुत परम किसोरा
सुनि नृपगिरा प्रेमरससानी * हृदय हरष माना मुनि ज्ञानी
तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा * नृपसंदेह नास कहँ पावा
अति आदर दोउ तनय बोलाये * हृदय लाइ बहुभाँति सिषाये
मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ * तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ

दो० सौंपे भूप रिषिहि सुत, बहु बिधि देइ असीस।
जननी भवन गये प्रभु, चले नाइ पदसीस॥

सो० पुरुषसिंह दोउ बीर, हरषि चले मुनिभयहरन।
कृपासिंधु मतिधीर, अषिल बिस्वकारनकरन॥

अरुननयन उर बाहुँ बिसाला * नीलजलज तन स्याम तमाला
कटि पट पीत कसे बरभाथा * रुचिर चाँप सायक दुहुँ हाँथा
स्याम गौर सुंदर दोउ भाई * बिस्वामित्र महानिधि पाई

प्रभु ब्रह्मन्यदेव मै जाना * मोहि निति पिता तजेउ भगवाना
चले जात मुनि दीन्हि दिषाई * सुनि ताडका क्रोध करि धाई
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा * दनि जानि तेहि निजपद दीन्हा
तब रिषि निजनाथहि जियचीन्ही * बिद्यानिधिकहँ बिद्या दीन्ही
जाते लाग न छुधा पिआसा * अतुलितबल तन तेज प्रकासा

दो॰ आयुध सर्ब समर्पिकै, प्रभु निजआश्रम आनि ।
कंद मूल फल भोजन, दीन्ह भगतिहित जानि ॥

प्रात कहा मुनिसन रघुराई * निर्भय जज्ञ करहु तुम्ह जाई
होम करन लागे मुनि झारी * आपु रहे मष की रषवारी
सुनि मारीच निसाचर कोही * लेइ सहाइ धावा मुनिद्रोही
बिनु फर बान राम तेहि मारा * सतजोजन गा सागर पारा
पावकसर सुबाँहुँ पुनि जारा * अनुज निसाचरकटक सँघारा
मारि असुर द्विजनिर्भयकारी * अस्तुति करहिं देव मुनि झारी
तहँ पुनि कछुक देवस रघुराया * रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया
भगति हेतु बहु कथा पुराना * कहैं रिषय जद्यपि प्रभु जाना
तब मुनि सादर कहा बुझाई * चरित येक प्रभु देषिअ जाई
धनुषजज्ञ सुनि रघुकुलनाथा * हरषि चले मुनिबर के साथा
आश्रम एक दीष मगमाहीं * षग मृग जीवजंतु तहँ नाहीं
पूंछा मुनिहिं सिला प्रभु देषी * सकलकथा मुनि कही बिसेषी

दो॰ गौतम नारि सापबस, उपल देहँ धरि धीर ।
चरनकमलरज चाहति, कृपा करहु रघुबीर ॥

छंद त्रिभंगी

परसतपदपावन सोकनसावन प्रगटभई तपपुंजसही ।

देषत रघुनायक जनसुषदायक सन्मुख होइ करजोरि रही ॥
अतिप्रेमअधीरा पुलकसरीरा मुष नहिं आवै बचन कही ।
अतिसय बडभागी चरनन्हिलागी जुगनयनन्हिजलधारबही॥
धीरज मन कीन्हा प्रभुकहँ चीन्हा रघुपतिकृपाभक्तिपाई ।
अतिनिर्मलबानी अस्तुतिठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ॥
मैं नारि अपावनि प्रभुजगपावन रावनरिपुजन सुषदाई ।
राजीवबिलोचन भवभयमोचन पाहि पाहि सरनहिं आई ॥
मुनिसाप जो दीन्हा अतिभल कीन्हा परमअनुग्रहमैमाना ।
देषेउँ भरिलोचन हरिभवमोचन इहै लाभ संकर जाना ॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मतिभोरी नाथ न मागौं बर आना ।
पदकमलपरागा रसअनुरागा मम मनमधुप करै पाना ॥
जेहिपदसुरसरिता परमपुनीता प्रगटभई सिवसीसधरी ।
सोई पदपंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपालहरी ॥
एहि भाँति सिधारी गौतमनारी बारबार हरिचरनपरी ।
जो अतिमनभावा सो बर पावा गै पतिलोक अनंदभरी ॥

दो॰ अस प्रभु दीनबंधु हरि, कारनरहित दयाल ।
तुलसिदास सठ ताहिभजु, छांडि कपट जंजाल ॥

मा॰ पा॰ ७ दिन ॥

चले राम लछिमन मुनि संगा * गये जहां जगपावनि गंगा
गाधिसूनु सब कथा सुनाई * जेहि प्रकार सुरसरि महि आई
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाये * बिबिध दान महिदेवन्ह पाये
हरषि चले मुनिबृंद सहाया * बेगि बिदेहनगर निअराया
पुररम्यता राम जब देषी * हरषे अनुजसमेत बिसेषी

बापी कूप सरित सर नाना * सलिल सुधासम मनिसोपाना
गुंजत मत्त रहत रस भृंगा * कूजत कल बहु बरन बिहंगा
बरन बरन बिकसे बनजाता * त्रिबिधि समीर सदां सुषदाता

दो॰ सुमनबाटिका बाग बन, बिपुल बिहंग निवास।
फूलत फलत सुपल्लवत, सोहत पुर चहुँपास॥

बनै न बरनत नगरनिकाई * जहां जाइ मन तहइँ लुभाई
चारु बजार बिचित्र अवाँरी * मनिमय बिधि जनु स्वकरसवाँरी
धनिक बनिक बर धनद समाना * बैठे सकल बस्तु लै नाना
चौहट सुंदर गली सोहाई * संतत रहहिं सुगंध सिचाई
मंगलमय मंदिर सब केरे * चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे
पुर नर नारि सुभग सुचि संता * धरमसील[1] ज्ञानी गुनवंता
अति अनुपम जहँ जनक निवासू * बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू
होत चकितचित कोट बिलोकी * सकल भुअन सोभा जनु रोकी

दो॰ धवल धाम मनि पुरटपटु, सुघटित नाना भाँति।
सियनिवाँस सुंदर सदन, सोभाकिमिकहिजाति॥

सुभगद्वार सब कुलिसकपाटा * भूप भीर नट मागध भाटा
बनी बिसाल बाजिगजसाला * हय गय रथ संकुल सब काला
सूर सचिव सेनप बहुतेरे * नृपगृहसरिस सदन सब केरे
पुर बाहेर सर सरित समीपा * उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा
देषि अनूप एक अमराई * सब सुपास सबभाँति सोहाई

१–क्षमा सत्यं दमः शौचं दानमिन्द्रियसंयमः । अहिंसा गुरुशुश्रूषा तीर्थानुसरणं दया ॥ आर्यवं लोभशून्यत्वं देवब्राह्मणपूजनम् । अनभ्यसूया च तथा धर्मः सामान्य उच्यते ॥ इति विष्णुस्मृतौ ॥ दया क्षमानसूया च शौचानायासमंगलम् । अकार्पण्यमस्पृहत्वं सर्व साधारणानि च ॥ इति वृहस्पातिस्मृतौ ॥

कौसिक कहेउ मोर मनमाना * इहां रहिय रघुबीर सुजाना
भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता * उतरे तहँ मुनिबृंद समेता
बिस्वामित्र महामुनि आये * समाचार मिथिलापति पाये

दो० संग सचिव सुचि भूरिभट, भूसुरबर गुरु ज्ञाति।
चले मिलन मुनिनायक हि, मुदित राउ एहि भाँति।

कीन्ह प्रनाम चरन धरि माथा * दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा
बिप्रबृंद सब सादर बंदे * जानि भाग्य बड राउ अनंदे
कुसल प्रस्न कहि बारहिंबारा * बिस्वामित्र नृपहि बैठारा
तेहि अवँसर आये दोउ भाई * गये रहे देषन फुलवाई
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा * लोचनसुषद बिस्वचितचोरा
उठे सकल जब रघुपति आये * बिस्वामित्र निकट बैठाये
भे सब सुषी देषि दोउ भ्राता * बारिबिलोचन पुलकित गाता
मूरति मधुर मनोहर देषी * भये बिदेह बिदेह बिसेषी

दो० प्रेममगन मन जानि नृप, करि बिबेक धरि धीर।
बोलेउ मुनिपद नाइ सिर, गदगद गिरा गँभीर॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक * मुनिकुलतिलक कि नृपकुलपालक
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा * उभय बेष धरि की सोइ आवा
सहज बिरागरूप मन मोरा * थकित होत जिमि चंद चकोरा
तातें प्रभु पूंछौं सति भाऊ * कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ
इन्हहिं बिलोकत अति अनुरागा * बरबस ब्रह्मसुषहि मन त्यागा
कह मुनि बिहँसि कहेहु नृप नीका * बचन तुम्हार न होइ अलीका
ये प्रिअ सबहि जहाँ लगि प्रानी * मन मुसुकाँहिं राम सुनि बानी
रघुकुलमनि दसरथ के जाये * मम हित लागि नरेस पठाये

दो० राम लषन दोउ बंधुबर, रूपसील बलधाम।
मष राषेउ सब साषि जग, जीति असुर संग्राम॥

मुनि तव चरन देषि कह राऊ * कहि न सकौं निज पुन्यप्रभाऊ
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता * आनदहू के आनददाता
इन्हकै प्रीति परस्पर पावनि * कहि न जाइ मनभाव सुहावनि
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू * ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू
पुनि पुनि प्रभुहिं चितव नरनाहू * पुलकगात उर अधिक उछाहू
मुनिहिं प्रसंसि नाइ पद सीसू * चलेउ लेवाइ नगर अवनीसू
सुंदर सदन सुषद सब काला * तहां बास लै दीन्ह भुआला
करि पूजा सब बिधि सेवकाई * गयेउ राउ गृह बिदा कराई

दो० रिषयसंग रघुबंसमनि, करि भोजन बिश्राम।
बैठे प्रभु भ्राता सहित, दिवस रहा भरिजाम॥

लषनहृदय लालसा बिसेषी * जाइ जनकपुर आइअ देषी
प्रभुभय बहुरि मुनिहिं सकुचाहीं * प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं
राम अनुजमनकी गति जानी * भगतबछलता हिय हुलसानी
परम बिनीत सकुचि मुसुकाई * बोले गुरुअनुसासन पाई
नाथ लषन पुर देषन चहहीं * प्रभु सकोच उर प्रगट न कहहीं
जौं राउर मैं आयसु पावौं * नगर देषाइ तुरत लै आवौं
सुनि मुनीस कह बचन सप्रीती * कस न राम राषहु तुम्ह नीती
धरमसेतुपालक तुम ताता * प्रेमबिबस सेवकसुषदाता

दो० जाइ देषि आवहु नगर, सुषनिधान दोउ भाइ।
करहु सफल सबके नयन, सुंदर बदन देषाइ॥

मुनिपदकमल बंदि दोउ भ्राता * चले लोकलोचनसुषदाता

बालकबृंद देषि अतिसोभा * लगें संग लोचनमनलोभा
पीतबसन परिकर कटि भाथा * चारुचाँप सर सोहत हाँथा
तन अनुहरत सुचंदन षोरी * स्यामल गौर मनोहर जोरी
केहरिकंधर बाहु बिसाला * उर अतिरुचिर नागमनिमाला
सुभग सोन[1] सरसीरुहलोचन * बदनमयंक तापत्रयमोचन
कानन्हि कनकफूल छबि देहीं * चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं
चितवनि चारुभृकुटिबर बांकी * तिलक रेष सोभा जनु चांकी

दो॰ रुचिर चौतनी सुभग सिर, मेचक कुंचित केस।
नषसिषसुंदर बंधु दोउ, सोभासकल सुदेस॥

देषन नगर भूपसुत आये * समाचार पुरबासिन्ह पाये
धाये धामकाम सब त्यागी * मनहुँ रंक निधि लूटन लागी
निरषि सहज सुंदर दोउ भाई * होहिं सुषी लोचनफल पाई
जुबती भवन झरोषे लागीं * निरषहिं रामरूप अनुरागीं
कहहिं परस्पर बचन सप्रीती * सषि इन्ह कोटिकामछबि जीती
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं * सोभा असि कहुँ सुनिअत नाहीं
बिस्नु चारिभुज बिधिमुषचारी * बिकटबेष मुषपंच पुरारी
अपरदेव अस कोऊ नाही * एह छबि सषी पटतरिअ जाहीं

दो॰ बयकिसोरसुषमासदन, स्याम गौर सुषधाम।
अंग अंग पर वारिअहि, कोटि कोटि सत काम॥

कहहु सषी अस को तनुधारी * जो न मोह यह रूप निहारी
कोउ सप्रेम बोली मृदुबानी * जो मैं सुना सो सुनहु सयानी
ए दोऊ दसरथ के ढोटा * बालमरालन्ह के कल जोटा

[1] सोन लाल रंग। यथा—शोनः कोकनदच्छविरित्यमरः॥

मुनि कौसिक मष के रषवारे * जिन्ह रनअजिर निसाचर मारे
स्यामगात कलकंजबिलोचन * जो मारीच सुभुज मदमोचन
कौसल्यासुत सो सुषषानी * नाम राम धनुसायक पानी
गौर किसोर बेष बर काछे * कर सर चाँप राम के पाछे
लछिमन नाम रामलघुभ्राता * सुनु सषि तासु सुमित्रा माता

दो० बिप्रकाज करि बंधु दोउ, मग मुनिबधू उधारि।
आये देषन चाँपमष, सुनि हरषीं सब नारि॥

देषि रामछबि कोउ एक कहई * जोग जानकिहि यह बर अहई
जौं सषि इन्हहिं देष नरनाहू * पनपरिहरि हठि करइ बिबाहू
कोउ कह ये भूपति पहिचाने * मुनिसमेत सादर सनमाने
सषि परंतु पन राउ न तजई * बिधिबस हठि अबिबेकहि भजई
कोउ कह जौं भल अहै बिधाता * सबकहँसुनिअउचितफलदाता
तौ जानकिहि मिलिहि बर येहू * नाहिन आलि इहां संदेहू
जौं बिधिबस अस बनइ संजोगू * तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू
सखी हमरे आरति अति ताते * कबहुँक ए आवहिं एहि नाते

दो० नाहितहमकहँ सुनहु सषि, इन्हकर दरसन दूरि।
एह संघट तब होइ जब, पुन्य पुराकृत भूरि॥

बोली अपर कहेहु सषि नीका * एहि बिबाह अतिहित सबहीका
कोउ कह संकरचाँप कठोरा * ए स्यामल मृदुगात किसोरा
सब असमंजस अहै सयानी * यह सुनि अपर कहइ मृदुबानी
सषिइनकहँकोउकोउअसकहहीं * बड़प्रभाव देषत लघु अहहीं
परसि जासु पद पंकज धूरी * तरी अहल्या कृत अघभूरी
सो किरहहिं बिन सिवधनु तोरे * एह प्रतीति परिहरिअ न भोरे

जेहिं बिरंचि रचि सीय सवाँरी * तेहिं स्यामलबर रचेउ बिचारी
तासु बचन सुनि सब हरषानी * ऐसइ होउ कहहिं मृदुबानी

दो० हियहरषहिं बरषहिं सुमन, सुमुषि सुलोचनिबृंद।
जाहिं जहां जहां बंधु दोउ, तहँ तहँ परमानंद॥

पुर पूरबदिसि गे दोउ भाई * जहँ धनुष मष हित भूमि बनाई
अति बिस्तार चारु गच ढारी * बिमल बेदिका उचित सँवारी
चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला * रचे जहां बैठहिं महिपाला
तेहि पाछे समीप चहुँ पासा * अपर मंचमण्डली बिलासा
कछुक ऊंचि सब भाँति सोहाई * बैठहिं नगर लोग जहँ जाई
तिन्हके निकट बिसाल सोहाये * धवलधाम बहुबरन बनाये
जहँ बैठी देषहिं सब नारी * जथाजोग्य निजकुल अनुहारी
पुरबालककहि कहि मृदुबचना * सादर प्रभुहि देषावहिं रचना

दो० सब सिसु यहि मिसु प्रेमबस, परसि मनोहर गात।
तनपुलकहिं हियहर्ष अति, देषि देषि दोउ भ्रात॥

सिसु सब राम प्रेमबस जाने * प्रीति समेत निकेत बषाने
निजनिज रुचि सब लेहिं बोलाई * सहितसनेह जाहिं दोउ भाई
राम दिषावहिं अनुजहि रचना * कहि मृदु मधुर मनोहर बचना
लवनिमेष महँ भुवननिकाया * रचै जासु अनुसासन माया[1]
भगति हेतु सोइ दीनदयाला * चितवतचकित धनुषमषसाला
कौतुक देषि चले गुरु पाहीं * जानि बिलंब त्रास मन माहीं
जासु त्रास डरकहँ डर होई * भजनप्रभाव देषावत सोई

१-उत्कृष्टोपाधितया विशुद्धसत्त्वप्रधाना माया अखिलकारणत्वात्॥ इति वेदान्तसंज्ञा॥ व्यष्ट्यव्यष्ट्यज्ञानं जीवोपाधिः॥

कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई * किये बिदा बालक बरिआई

दो० समय सप्रेम बिनीत अति, सकुचसहित दोउ भाइ।
गुरुपद पंकज नाइ सिर, बैठे आयसु पाइ॥

निसि प्रबेस गुरु आयसु दीन्हा * सबही संध्याबंदन कीन्हा
कहत कथा इतिहास पुराना * रुचिर रजनि जुगजाम सिराना
मुनिबर सयन कीन्ह तब जाई * लगे चरन चापन दोउ भाई
जिन्हके चरन सरोरुह लागी * करत बिबिधि बिधि जोग बिरागी
ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते * गुरुपद पदुम पलोटत प्रीते
बार बार मुनि आज्ञा दीन्ही * रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही
चाँपत चरन लषन उर लाये * सभय सप्रेम परम सुष पाये
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता * पौढे धरि उर पदजलजाता

दो० उठे लषन निसि बिगत सुनि, अरुनसिषाधुनि कान।
गुरुते पहिलेहि जगतपति, जागे राम सुजान॥

सकल सौच[1] करि जाइ नहाये * नित्य निबाहि मुनिहिं सिरनाये
समय जानि गुरु आयसु पाई * लेन प्रसून चले दोउ भाई
बाग भूप कर देषेउ जाई * जहँ बसंत रितु रही लोभाई
लागे बिटप मनोहर नाना * बरन बरन बर बेलि बिताना
नव पल्लव फल सुमन सोहाये * निज संपति सुररूष लजाये
चातक कोकिल कीर चकोरा * कूजत बिहग नटत कलमोरा
मध्य बाग सर सोह सोहावा * मनि सोपान बिचित्र बनावा

१-शौचमपि बाह्याभ्यन्तरभेदेन दिव्य अदिव्य दिव्यादिव्यवर्णनभेदेन ॥ अभक्षपरिहारश्च संसर्गश्चाप्यनिर्गुणैः । स्वधर्मे च व्यवस्थानं शौचमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ मधुसूदनीटीकायाम् ॥ शौचं च द्विविधं प्रोक्तं बाह्यमाभ्यन्तरं तथा । मृज्जलाभ्यां स्मृतं बाह्यं भावशुद्धिस्तथान्तरम् ॥ इति स्मृतौ ॥

बिमलसलिल सरसिज बहुरंगा * जलषग कूजत गुंजत भृंगा
दो० बाग तडाग बिलोकि प्रभु, हरषे बंधु समेत।
परम रम्य आराम यह, जो रामहिं सुष देत ॥
चहुँ दिसि चितै पूंछि मालीगन * लगे लेन दलफूल मुदितमन
तेहिं अवसर सीता तहँ आई * गिरिजा पूजन जननि पठाई
संग सषी सब सुभग सयानी * गावहिं गीत मनोहर बानी
सरसमीप गिरजागृह सोहा * बरनि न जाय देषि मन मोहा
मज्जन करि सर सषिन्ह समेता * गई मुदितमन गौरि निकेता
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा * निजअनरूप सुभग बर मांगा
एक सषी सियसंग बिहाई * गई रही देषन फुलवाई
तेइँ दोउ बंधु बिलोके जाई * प्रेमबिबस सीतापहिं आई
दो० तासु दसा देषी सषिन्ह, पुलकगात जलनैन।
कहु कारण निजहरषकर, पूँछहिं सब मृदुबैन ॥
देषन बाग कुँवर दोउ आये * बय किसोर सब भाँति सोहाये
स्याम गौर किमि कहौं बषानी * गिरा अनयन नयन बिनु बानी
सुनि हरषीं सब सषी सयानी * सिय हिय अति उतकंठा जानी
एक कहहिं नृपसुत ते आली * सुने जो मुनिसँग आये काली
जिन्ह निज रूप मोहनी डारी * कीन्हे स्वबस नगर नर नारी
बरनत छबि जहँ तहँ सब लोगू * अवसि देषिअहि देषनजोगू
तासु बचन अति सियहि सुहाने * दरस लागि लोचन अकुलाने
चली अग्र करि प्रिअ सषि सोई * प्रीति पुरातन लषै न कोई
दो० सुमिरि सीय नारदबचन, उपजी प्रीति पुनीत।
चकितबिलोकति सकलदिसि, जनुसिसुमृगीसभीत॥

कंकन किंकिन नूपुरधुनि सुनि * कहत लषनसन राम हृदय गुनि
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्हीं * मनसा बिस्वबिजय कहँ कीन्हीं
असकहि फिरि चितये तेहि ओरा * सियमुषससि भये नयनचकोरा
भये बिलोचन चारु अचंचल * मनहुँ सकुचिनिमितजेदगंचल
देषि सीयसोभा सुष पावा * हृदय सराहत बचन न आवा
जनु बिरंचि सब निजनिपुनाई * बिरचि बिश्व कहँ प्रगटि देषाई
सुंदरता कहँ सुंदर करई * छबिगृह दीपसिषा जनु बरई
सब उपमा कबि रहे जुठारी * केहि पटतरौं बिदेहँ कुमारी

दो० सियसोभा हिय बरनि प्रभु, आपनि दसा बिचारि।
बोले सुचिमन अनुजसन, बचन समयअनुहारि॥

तात जनकतनया यह सोई * धनुषजज्ञ जेहि कारन होई
पूजन गौरि सषी लै आई * करति प्रकास फिरहि फुलवाई
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा * सहज पुनीत मोर मन छोभा
सो सब कारन जान बिधाता * फरकहिं सुभद अंग सुनु भ्राता
रघुबंसिन्हकर सहज सुभाऊ * भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
मोहिं अतिसय प्रतीति जियकेरी * जेहि सपनेहुँ परनारि न हेरी
जिन्हकै लहहिं न रिपु रनपीठी * नहिं पावहिं परतिय मनदीठी
मंगन लहैं न जिनकै नाहीं * ते नरबर थोरे जगमाहीं

दो० करत बतकही अनुजसन, मन सियरूप लोभान।
मुषसरोज मकरंद छबि, करै मधुप इव पान॥

चितवतिचकित चहूंदिसि सीता * कहँ गये नृपकिसोर मनचीता
जहँ बिलोक मृगसावकनैनी * जनु तहँ बरिष कमलसितश्रेनी
लता ओट तब सषिन लषाये * स्यामल गौर किसोर सोहाये

फुलवाड़ी ।
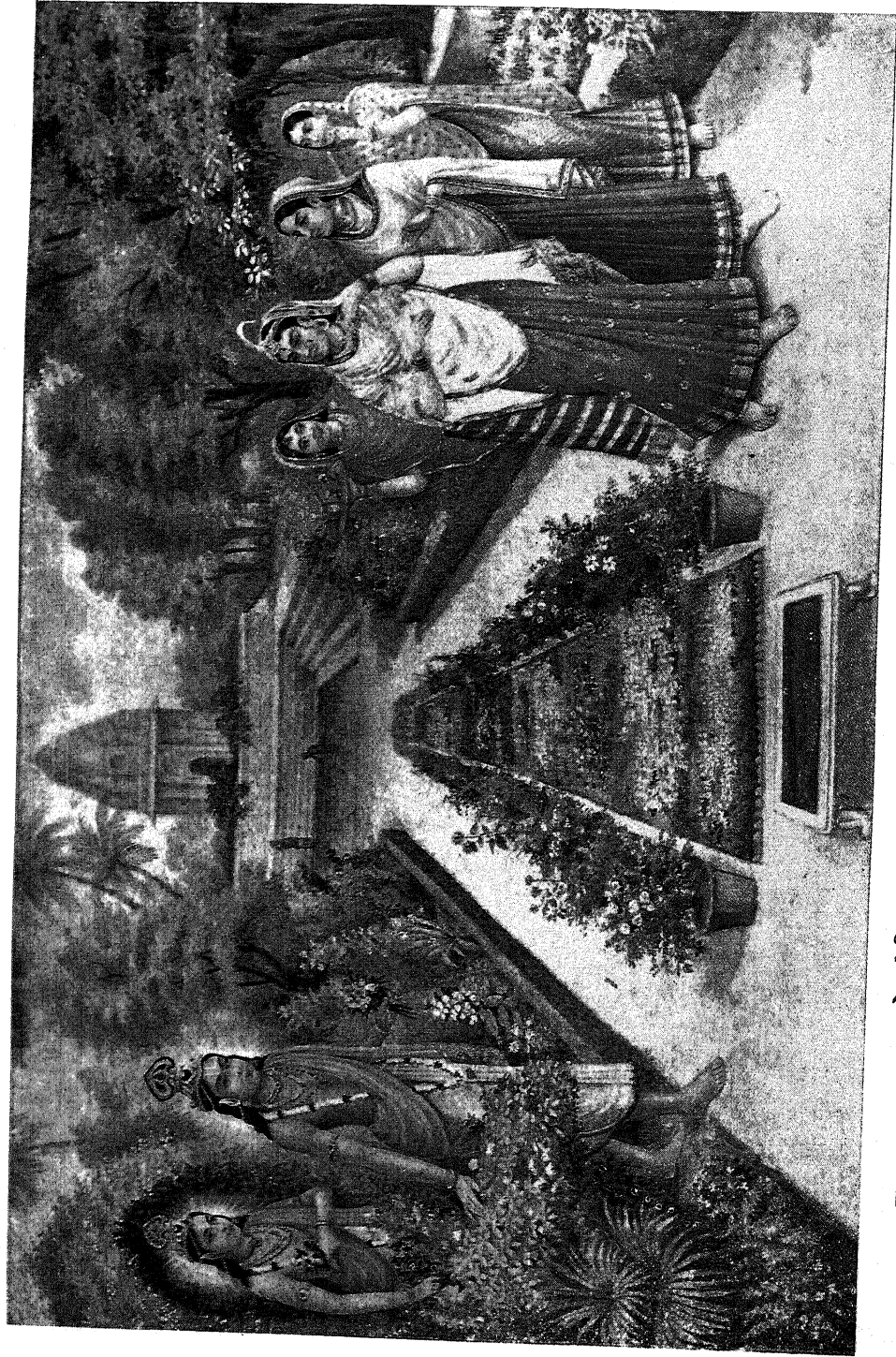
लता-भवन ते प्रगट भे, तेहि अवसर दोउ भाइ । निकसे जनु जुग विमल विधु, जलद-पटल बिलगाइ ॥

देषि रूप लोचन ललचाने * हरषे जनु निज निधि पहिंचाने
थके नयन रघुपतिछबि देषे * पलकनहू परिहरी निमेषे
अधिक सनेहँ देह भइ भोरी *सरदससिहि जनु चितवचकोरी
लोचन मग रामहिं उर आनी * दीन्हे पलक कपाट सयानी
जब सियसषिन्ह प्रेमबस जानी *कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी

दो॰ लताभवन ते प्रगट भे, तेहि अवँसर दोउभाइ।
निकसेजनुजुग बिमलबिधु, जलदपटल बिलगाइ॥

सोभासींव सुभग दोउ बीरा * नील पीत जल जात सरीरा
मोरपंष सिर सोहत नीके * गुच्छा बिचबिच कुसुमकलीके
भाल तिलक श्रमबिंदु सोहाये * श्रवण सुभग भूषन छबिछाये
बिकट भृकुटि कच घूंघरवारे * नव सरोज लोचन रतनारे
चारु चिबुक नासिका कपोला * हाँस बिलास लेत मन मोला
मुषछबि कहि न जाइ मोहिंपाहीं * जो बिलोकि बहुकाम लजाहीं
उर मनिमाल कंबुकल ग्रीवा * काम कलभकर भुजबलसीवा
सुमन समेत बामकर दोना * सांवँर कुँअर सषी सुठिलोना

दो॰ केहरि कटि पट पीतधर, सुषमा सीलनिधान।
देषि भानुकुलभूषनहिं, बिसरा सषिन अपान॥

धरि धीरज एक आलि सयानी * सीतासन बोली गहिपानी
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू * भूपकिसोर देषि किनलेहू
सकुचि सीय तब नयन उघारे * सन्मुष दोउ रघुबंस निहारे
नषसिष देषि रामकै सोभा *सुमिरिपितापन मन अतिछोभा
परबस सषिन लषी जब सीता * भएउ गहर सब कहहिं सभीता
पुनि आउब एहि बेरिआँ काली *असकहि मन बिहसीएकआली

गूढगिरा सुनि सिय सकुचानी * भयेउ बिलंब मातु भयमानी
धरि बडधीर राम उरआने * फिरी अपनपउ पितुबस जाने

दो० देषन मिसु मृग विहग तरु, फिरइ बहोरि बहोरि।
निरषि निरषि रघुबीरछबि, बाढ़ै प्रीति न थोरि॥

जानि कठिन सिवचाँप बिसूरति * चली राषि उर स्यामल मूरति
प्रभु जब जात जानकी जानी * सुष सनेह सोभा गुण षानी
परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही * चारु चित्र भीतर लिषि लीन्ही
गई भवानी भवन बहोरी * बंदि चरण बोली कर जोरी
जय जय गिरिबर राजकिसोरी * जय महेस मुष चन्द चकोरी
जय गजबदन षडानन माता * जगतजननि दामिनिदुतिगाता
नहिं तव आदि मध्य अवसाना * अमिति प्रभाव बेद नहिं जाना
भवभव विभव पराभव कारनि * बिस्वबिमोहनि स्वबसबिहारनि

दो० पतिदेवता सुतीअ महँ, मातु प्रथम तव रेष।
महिमाअमितिनसकहिंकहि, सहस सारदा सेष॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी * बरदायिनी पुरारिपियारी
देबि पूजि पदकमल तुम्हारे * सुर नर मुनि सब होहिं सुषारे
मोर मनोरथ जानहु नीके * बसहु सदां उरपुर सबहीके
कीन्हेउँ प्रगट न कारन तेही * अस कहि चरन गहे बैदेही
बिनय प्रेमबस भई भवानी * षसी माल मूरति मुसुकानी
सादर सिय प्रसाद सिर धरेऊ * बोली गौरि हरष हिय भरेऊ
सुनु सिय सत्य असीस हमारी * पूजिहि मनकामना तुम्हारी
नारदबचन सदां सुचि सांचा * सो बर मिलहि जाहि मनरांचा

छंद

मन जाहि राँचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर साँवरो।
करुनानिधान सुजान सील सनेह जानत रावरो॥
येहिभाँति गौरि असीस सुनि सियसहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनिपुनि मुदितमन मंदिर चलीं॥

सो॰ जानि गौरि अनुकूल, सियहियहरष न जाइकहि।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे॥

हृदय सराहत सीय लोनाई * गुरुसमीप गवने दोउ भाई
राम कहा सब कौसिक पाहीं * सरलसुभाव छुआ छल नाहीं
सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्हीं * पुनि असीस दुहुँ भाइन्ह दीन्हीं
सुफल मनोरथ होहु तुम्हारे * राम लषन सुनि भये सुषारे
करि भोजन मुनिबर बिज्ञानी * लगे कहन कछु कथा पुरानी
बिगत दिवस गुरु आयसु पाई * संध्या करन चले दोउ भाई
प्राची दिसि ससि उएउ सोहावा * सियमुषसरिस देषि सुषपावा
बहुरि बिचार कीन्ह मनमाहीं * सीयबदन सम हिमकर नाहीं

दो॰ जनमसिंधु पुनि बंधु बिष, दिनमलीन सकलंक।
सियमुषसमता पाव किमि, चंद बापुरो रंक॥

बढै घटै बिरहिन्हि दुषदाई * ग्रसै राहु निज संधिहि पाई
कोकसोकप्रद पंकजद्रोही * अवगुन बहुत चंद्रमा तोही
बैदेही मुष पटतर दीन्हे * होइ दोष बड अनुचित कीन्हे
सिय मुषछबि बिधुब्याज बषानी * गुरुपहँ चले निसा बडि जानी
करि मुनि चरनसरोज प्रनामा * आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा
बिगतनिसा रघुनायक जागे * बंधुबिलोकि कहन अस लागे

उगेउ अरुन अवलोकहु ताता * पंकज कोक लोक सुषदाता
बोले लषन जोरि जुगपानी * प्रभुप्रभावसूचक मृदुबानी

दो० अरुनोदय सकुचे कुमुद, उडगन जोति मलीन।
तिमि तुम्हार आगवनसुनि, भये नृपति बलहीन॥

नृपसब नषत करहिं उजिआरी * टारि न सकहिं चाँपतमभारी
कमलकोक मधुकर षग नाना * हरषे सकल निसा अवसाना
ऐसेहिं सब प्रभु भगत तुम्हारे * होइहहिं टूटे धनुष सुषारे
उदय भानु बिनुश्रम तमनासा * दुरे नषत जग तेज प्रकासा
रबि निज उदय ब्याज रघुराया * प्रभु प्रताप सब नृपन्ह देषाया
तव भुजबल महिमा उदघाटी * प्रगटी धनुबिघटन परिपाटी
बंधुबचन सुनि प्रभु मुसुकाने * होइ सुचि सहज पुनीत नहाने
नित्यक्रिया करि गुरुपहिं आये * चरनसरोज सुभग सिरनाये
सतानन्द तब जनक बोलाये * कौसिकमुनि पहिं तुरत पठाये
जनकविनय तिन्ह आइ सुनाई * हरषे बोलि लिये दोउ भाई

दो० सतानंदपद वंदि प्रभु, बैठे गुरुपहिं जाइ।
चलहु तात मुनि कहेउ तब, पठवा जनक बोलाइ॥

मा० पा० ८ दिन नवाह्न २ दिन

सीयस्वयंबर देषिय जाई * ईस काहि धौं देइ बडाई
लषन कहा जसभाजन सोई * नाथ कृपा तव जापर होई
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी * दीन्हि असीस सबहिं सुषमानी
पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला * देषन चले धनुषमषसाला
रंगभूमि आये दोउ भाई * असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई
चले सकल गृहकाज बिसारी * बाल जुवान जरठ नर नारी

देषी जनक भीर भइ भारी * सुचि सेवक सब लिये हँकारी
तुरत सकललोगन्ह पहिं जाहू * आसन उचित देहु सबकाहू

दो० कहि मृदुबचन बिनीत तिन्ह, बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु, निजनिजथलअनुहारि॥

राजकुँअर तेहि अवँसर आये * मनहुँ मनोहरता तन छाये
गुनसागर नागर बर बीरा * सुंदर स्यामल गौरसरीरा
राजसमाज बिराजत रूरे * उडगन महुँ जनु जुगबिधु पूरे
जिन्हके रही भावना जैसी * प्रभुमूरति तिन्ह देषी तैसी
देषहिं भूप महारनधीरा * मनहुँ बीररस धरे सरीरा
डरे कुटिलनृप प्रभुहि निहारी * मनहुँ भयानक मूरति भारी
रहे असुर छल छोनिपबेषा * तिनप्रभु प्रगट कालसम देषा
पुरबासिन्ह देषे दोउ भाई * नरभूषन लोचनसुषदाई

दो० नारि बिलोकहिं हरषिहिय, निज निजरुचि अनुरूप।
जनु सोहत सिंगार धरि, मूरति परम अनूप॥

बिदुषन प्रभु बिराटमय दीसा * बहु मुष कर पग लोचन सीसा
जनकजाति अवलोकहिं कैसे * सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे
सहित बिदेह बिलोकहिं रानी * सिसुसमप्रीति न जाति बषानी
जोगिन्ह परमतत्त्वमय भासा * सांत सुद्ध सम सहजप्रकासा
हरि भगतन्ह देषे दोउ भ्राता * इष्टदेव इव सब सुषदाता
रामहिं चितय भाव जेहि सीया * सो सनेह सुष नहिं कथनीया
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ * कवन प्रकार कहै कबि कोऊ
येहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ * तेहिं तस देषेउ कोसलराऊ

दो० राजत राजसमाज महँ, कोसलराजकिसोर।

सुंदर स्यामल गौरतन, बिस्वबिलोचनचोर ॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ * कोटिकाम उपमा लघु सोऊ
सरदचंदनिंदक मुष नीके * नीरजनयन भावते जीके
चितवनि चारु मारमनहरनी * भावति हृदय जाति नहिं बरनी
कलकपोल श्रुतिकुंडल लोला * चिबुक अधर सुंदर मृदुबोला
कुमुदबंधुकर निंदक हाँसा * भृकुटी बिकट मनोहर नासा
भालबिसालतिलकझलकाहीं * कचबिलोकिअलिअवलिलजाहीं
पीत चौतनी सिरन सोहाई * कुसुमकली बिच बीच बनाई
रेषैं रुचिर कंबुकल ग्रींवाँ * जनु त्रिभुअनसुषमा की सींवाँ

दो० कुंजरमनिकंठाकलित, उरन्ह तुलसिकामाल ।
वृषभकंध केहरिठवनि, बलनिधि बाँहुबिसाल ॥

कटि तूनीर पीतपट बांधे * कर सर धनुष बाम बर कांधे
पीत जज्ञउपबीत सोहाये * नषसिष मंजु महाछबि छाये
देषि लोग सब भये सुषारे * एकटक लोचन टरत न टारे
हरषे जनक देषि दोउ भाई * मुनिपदकमल गहे तब जाई
करि बिनती निज कथा सुनाई * रंगअवनि सब मुनिहिं देषाई
जहँ जहँ जाहिं कुँअरबर दोऊ * तहँतहँ चकित चितव सबकोऊ
निजनिज रुष रामहिं सब देषा * कोउ न जान कछु मरम बिसेषा
भलि रचना मुनि नृपसन कहेऊ * राजा मुदित महासुष लहेऊ

दो० सब मंचनते मंच एक, सुंदर बिसद बिसाल ।
मुनिसमेत दोउबंधु तहँ, बैठारे महिपाल ॥

प्रभुहि देषि सब नृप हिय हारे * जनु राकेस उदय भये तारे
असि प्रतीति सबके मनमाहीं * राम चाँप तोरब सक नाहीं

बिन भंजेहु भवधनुष बिसाला * मेलिहि सीय राम उर माला
अस बिचारि गवनहुँ घर भाई * जस प्रताप बल तेज गवाँई
बिहँसे अपर भूप सुनि बानी * जे अबिबेक अंध अभिमानी
तोरेहु धनुष ब्याह अवगाहा * बिन तोरे को कुँअरि बिआहा
एकबार कालहु किन होऊ * सियहित समर जितब हम सोऊ
यह सुनि अपर महिप मुसुकाने * धरमसील हरिभगति सयाने

सो० सीय बिआहबि राम, गरम दूरिकरि नृपन्ह को।
जीति को सक संग्राम, दसरथ के रनबांकुरे॥

ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई * मनमोदकन्हि कि भूष बुताई
सिष हमारि सुनि परम पुनीता * जगदंबा जानहु जिय सीता
जगतपिता रघुपतिहि बिचारी * भरिलोचन छबि लेहु निहारी
सुंदर सुषद सकल गुनरासी * ए दोउ बंधु संभुउरबासी
सुधासमुद्र समीप बिहाई * मृगजल निरषि मरहु कत धाई
करहु जाइ जाकहँ जो भावा * हम तौ आजु जन्मफल पावा
अस कहि भले भूप अनुरागे * रूप अनूप बिलोकन लागे
देषहिं सुर नभ चढे बिमाना * बरषहिं सुमन करहिं कलगाना

दो० जानि सुअवसर सीय तब, पठई जनक बोलाइ।
चतुरि सषी सुंदरि सकल, सादर चलीं लवाइ॥

सिय सोभा नहिं जाइ बषानी * जगदंबिका रूपगुनषानी
उपमा मोहिं सकल लघुलागी * प्राकृतनारि अंग अनुरागी
सिय बरनिय तेइ उपमा देई * कुकबि कहाइ अजस को लेई
जौं पटतरिअ तीय सम सीया * जग असि जुबति कहा कमनीया
गिरा मुषर तनु अरध भवानी * रति अति दुषित अतनपति जानी

बिष बारुनी बंधु प्रिय जेही * कहिय रमासम किमि बैदेही
जौं छबिसुधा पयोनिधि होई * परमरूपमय कच्छप सोई
सोभा रजु मंदर सिंगारू * मथै पानि पंकज निज मारू

दो॰ एहिबिधि उपजै लक्षि जब, सुंदरता सुषमूल।
तदपि समेत सकोच कबि, कहहि सीयसमतूल॥

चलीं संगलै सषी सयानी * गावत गीत मनोहर बानी
सोह नवलतन सुंदरसारी * जगतजननिअतुलितछबिभारी
भूषन सकल सुदेस सोहाये * अंग अंग रचि सषिन्ह बनाये
रंगभूमि जब सिअ पगुधारी * देषि रूप मोहे नर नारी
हरषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई * बरषि प्रसून अप्सरा गाई
पानि सरोज सोह जयमाला * अवचट चितये सकल भुआला
सीय चकित चित रामहिं चाहा * भये मोहबस सब नरनाहा
मुनि समीप देषे दोउ भाई * लगे ललकि लोचन निधि पाई

दो॰ गुरुजन लाज समाजबड, देषि सीय सकुचानि।
लागि बिलोकन सषिन्हतन, रघुबीरहि उर आनि॥

रामरूप अरु सियछबि देषे * नर नारिन्ह परिहरी निमेषे
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं * बिधिसन बिनयकरहिं मनमाहीं
हरु बिधि बेगि जनक जडताई * मति हमारिआसि देहि सोहाई
बिनु बिचार पन तजि नरनाहू * सीय रामकर करइ बिबाहू
जग भल कहहि भाव सब काहू * हठ कीन्हे अंतहुँ उर दाहू
यह लालसाँ मगन सब लोगू * बर साँवरो जानकी जोगू
तब बंदीजन जनक बोलाये * बिरदावली कहत चलि आये
कह नृप जाइ कहहु पन मोरा * चले भाट हिय हरष न थोरा

दो० बोले बंदी बचन बर, सुनहुँ सकल महिपाल।
पन बिदेहँकर कहहिं हम, भुजा उठाइ बिसाल॥

नृपभुजबलबिधु सिवधनुराहू * गरुअ कठोर बिदित सब काहू
रावन बान महाभट भारे * देषि सरासन गवहिं सिधारे
सोइ पुरारि कोदंड कठोरा * राजसमाज आजु जोइ तोरा
त्रिभुअन जय समेत बैदेहीं * बिनहिं बिचार बरै हठितेहीं
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे * भट मानी अतिसय मनमाषे
परिकर बाँधि उठे अकुलाई * चले इष्टदेवन्हि सिर नाई
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं * उठइ न कोटि भाँति बल करहीं
जिन्हके कछु बिचार मनमाहीं * चाँपसमीप महीप न जाहीं

दो० तमकि धरहिं धनु मूढ नृप, उठै न चलहिं लजाइ।
मनहुँ पाइ भट बाहुबल, अधिक अधिक गरुआइ॥

भूप सहस दस एकहिंबारा * लगे उठावन टरै न टारा
डगै न संभुसरासन कैसे * कामीबचन सती मन जैसे
सब नृप भए जोग उपहासी * जैसे बिनु बिराग संन्यासी
कीरति बिजय बीरता भारी * चले चाँपकर बरबस हारी
श्रीहत भये हारि हिय राजा * बैठे निज निज जाइ समाजा
नृपन्हबिलोकि जनक अकुलाने * बोले बचन रोष जनु साने
दीप दीप के भूपति नाना * आये सुनि हम जो पन ठाना
देव दनुज धरि मनुज सरीरा * बिपुल बीर आये रनधीरा

दो० कुँअरिमनोहरिबिजयबडि, कीरति अतिकमनीय।

१-एकदा सम्मतं कृत्वा भूपानां शतमुत्तमम्। उत्थापयामासुरव्यग्रा न चचाल धनुस्तदा॥१॥
प्रोचुस्तदानीं ते सर्वे महः किं चापरूपधृक्॥ इति सत्योपाख्याने॥

पावनिहार बिरंचि जनु, रचेउ न धनुदमनीय॥

कहहु काहि यह लाभ न भावा * काहु न संकरचाँप चढावा
रहौ चढाउब तोरब भाई * तिलभरि भूमि न सकेउ छुडाई
अब जनि कोउ माषै भट मानी * बीरबिहीन मही मैं जानी
तजहु आस निज निज गृह जाहू * लिषा न बिधि बैदेहिं बिबाहू
सुकृत जाय जौं पन परिहरऊं * कुँअरि कुँआरि रहौ का करऊँ
जौं जनतेउँ भुबि भट बिन भाई * तौ पन करि होतेउ न हँसाई
जनकबचन सुनि सब नरनारी * देषि जानकिहि भये दुषारी
माषे लषन कुटिल भइ भौंहैं * रदपट फरकत नयन रिसोहैं

दो० कहि न सकत रघुबीरडर, लगे बचन जनु बान।
नाइ रामपदकमल सिर, बोले गिरा प्रमान॥

रघुबंसिन्ह महँ जहँ कोउ होई * तेहि समाज अस कहइ न कोई
कही जनक जासि अनुचितबानी * बिद्यमान रघुकुलमनि जानी
सुनहुँ भानुकुलपंकजभानू * कहउँ सुभाव न कछु अभिमानू
जौं तुम्हार अनुसासन पावौं * कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं
कांचे घट इमि डारौं फोरी * सकौं मेरु मूलक इव तोरी
तव प्रतापमहिमा भगवाना * का बापुरो पिनाक पुराना
नाथ जानि अस आयसु होऊ * कौतुक करौं बिलोकिअ सोऊ
कमलनाल इमि चाँप चढावौं * जोजन सत प्रमान लैधावौं

दो० तोरौं छत्रकदंड जिमि, तव प्रताप बल नाथ।
जौं न करौं प्रभुपदसपथ, कर न धरौं धनु भाथ॥

लषण सकोप बचन जब बोले * डगमगात महि दिग्गज डोले
सकल लोग सब भूप डेराने * सियहियहरष जनक सकुचाने

गुरु रघुपति सब मुनि मन माहीं * मुदित भये पुनिपुनि पुलकाहीं
सयनहिं रघुपति लषन निवारे * प्रेमसमेत निकट बैठारे
बिस्वामित्र समय सुभ जानी * बोले अतिसनेह मय बानी
उठहु राम भंजहु भवचापा * मेटहु तात जनक परितापा
सुनि गुरुबचन चरन सिरनावा * हरष बिषाद न कछु उर आवा
ठाढ भये उठि सहज सुभाये * ठवनि जुवा मृगराज लजाये

दो० उदित उदयगिरिमंचपर, रघुबर बाल पतंग।
बिकसे संतसरोजसब, हरषे लोचनभृंग ॥

नृपन केरि आसा निसि नासी * बचन नषत अवली न प्रकासी
मानी महिप कुमुद सकुचाने * कपटी भूप उलूक लुकाने
भये बिसोक कोक मुनि देवा * बरषहिं सुमन जनावहिं सेवा
गुरुपद बंदि सहित अनुरागा * राम मुनिनसन आयसु मागा
सहजाहिं चले सकलजगस्वामी * मत्तमंजु बर कुंजर गामी
चलत राम सब पुर नर नारी * पुलक पूरि तन भये सुषारी
बंदि पितर सुर सुकृत संभारे * जौं कछु पुन्यप्रभाव हमारे
तव सिवधनुष मृनाल की नाईं * तोरहिं राम गनेस गोसाँईं

दो० रामहिं प्रेमसमेत लषि, सषिन्ह समीप बोलाइ।
सीतामातु सनेहबस, बचन कहै बिलषाइ ॥

सषि सभ कौतुक देषनिहारे * जेउ कहावत हितू हमारे
कोउ न बुझाइ कहै नृप पाहीं * ए बालक असि हठ भलि नाहीं
रावन बान छुआ नहिं चापा * हारे सकल भूप करि दापा
सो धनु राजकुँअरकर देहीं * बाल मराल कि मंदर लेहीं
भूपसयानप सकल सिरानी * सषिबिधिगतिकछुजाइ न जानी

बोली चतुर सषी मृदु बानी * तेजवंत लघु गनिय न रानी
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा * सोषेउ सुजस सकल संसारा
रबिमंडल देषत लघु लागा * उदय तासु त्रिभुवनतम भागा

दो॰ मंत्र परम लघु जासु बस, बिधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराजकहँ, बस कर अंकुस षर्ब॥

काम कुसुमधनुसायक लीन्हे * सकल भुवन अपने बस कीन्हे
देबि तजिअ संसय अस जानी * भंजब धनुष राम सुनु रानी
सषीबचन सुनि भइ परतीती * मिटा बिषाद भई मनप्रीती
तब रामहिं बिलोकि बैदेही * सभयहृदय बिनवति जेहि तेही
मनही मन मनाव अकुलानी * होहु प्रसन्न महेस भवानी
करहु सुफल आपनि सेवकाई * करि हितु हरहु चाँपगरुआई
गननायक बरदायक देवा * आजु लगे कीन्हिउँ तुअ सेवा
बार बार बिनती सुनि मोरी * करहु चाँपगरुता अति थोरी

दो॰ देषि देषि रघुबीर तन, सुर मनाव धरि धीर।
भरे बिलोचन प्रेम जल, पुलकावली सरीर॥

नीके निरषि नयन भरि सोभा * पितुपनसुमिरि बहुरि मन छोभा
अहह तात दारुन हठ ठानी * समुझत नहिं कछु लाभ न हानी
सचिव सभय सिष देइ न कोई * बुधसमाज बड अनुचित होई
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा * कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा * सिरससुमन कन बेधिय हीरा

१—मण्डलं राजचक्रे स्याद्बिम्बे चैव स्वमण्डले ॥ कान्ताकुचप्रदेशे च मण्डलं वर्तुलेति विश्वः ॥

सकल सभाकै मति भइ भोरी * अब मोहिं संभुचाँप गति तोरी
निज जडता लोगन्ह पर डारी * होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी
अति परिताप सीयमनमाहीं * लवनिमेष जुगसतसम जाहीं

दो॰ प्रभुहि चितय पुनि चितव महि, राजत लोचन लोल।
षेलत मनसिजमीन जुग, जनु बिधुमंडलडोल॥

गिराअलिनि मुषपंकज रोकी * प्रगट न लाजनिसा अवलोकी
लोचनजलरह लोचनकोना * जैसे परम कृपिन कर सोना
सकुची ब्याकुलता बडि जानी * धरि धीरज प्रतीति उर आनी
तन मन बचन मोर पन सांचा * रघुपतिपदसरोज चितु रांचा
तौ भगवान सकल उरवासी * करिहि मोहि रघुपतिकै दासी
जेहिके जेहिपर सत्यसनेहू * सो तेहि मिलै न कछु संदेहू
प्रभुतन चितइ प्रेमपन ठाना * कृपानिधान राम सब जाना
सिअहिबिलोकितकेउधनु कैसे * चितवगरुड लघुब्यालहिं जैसे

दो॰ लषन लषेउ रघुबंसमनि, ताकेउ हरकोदंड।
पुलकिगात बोले बचन, चरनचाँपि ब्रह्मंड॥

दिसिकुंजरहु कमठ अहि कोला * धरहु धरनि धरिधीर न डोला
राम चहहिं संकरधनु तोरा * होहुसजग सुनि आयसु मोरा
चाँपसमीप राम जब आये * नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाये
सब कर संसय अरु अज्ञानू * मंद महीपन्ह कर अभिमानू
भृगुपति केरि गर्बगरुआई * सुर मुनिबरन्ह केरि कदराई
सियकर सोच जनकपछितावा * रानिन्ह कर दारुन दुषदावा
संभुचाँप बड बोहित पाई * चढे जाइ सब संग बनाई
राम बाँहुबल सिंधु अपारू * चहत पार नहिं कोउ कडिहारू

दो॰ राम बिलोके लोग सब, चित्र लिपेसे देषि।
चितई सीय कृपायतन, जानी बिकल बिसेषि ॥
देषी बिकल बिपुल बैदेहीं * निमिष बिहात कलपसम तेहीं
तृषित बारि बिनु जो तन त्यागा * मुएं करइ का सुधातडागा
का बरषा सब कृषी सुषाने * समय चुके पुनि का पछिताने
अस जिअजानि जानकी देषी * प्रभु पुलके लषि प्रीति बिसेषी
गुरुहि प्रनाम मनहि मन कीन्हा * अतिलाघव उठाइ धनु लीन्हा
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयेऊ * पुनि नभ धनु मंडलसम भयेऊ
लेत चढावत षैंचत गाढे * काहु न लषा देष सब ठाढे
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा * भरे भुअन धुनि घोर कठोरा

छंद

भरे भुअन घोर कठोर रव रबिबाजि तजि मारग चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले ॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल बिकल बिचारहीं।
कोदंड षंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ॥

सो॰ संकरचाँप जहाज, सागर रघुबरबाँहुँबल।
बूड सो सकल समाज, चढा जो प्रथमहिं मोहबस ॥

प्रभु दोउ चाँप षंड महि डारे * देषि लोग सब भये सुषारे
कौसिक रूप पयोनिधि पावन * प्रेमबारि अवगाह सोहावन
रामरूप राकेस निहारी * बढत बीचि पुलकावलि भारी
बाजत नभ गहगहे निसाना * देवबधू नाचहिं करि गाना
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा * प्रभुहि प्रसंसहिं देहिं असीसा

१–गाढबाढदृढानि च इत्यमरः ॥

बरिषहि सुमन रंग बहु माला * गावहिं किन्नर गीत रसाला
रही भुवनभरि जय जय बानी * धनुषभंगधुनि जात न जानी
मुदित कहहिं जहँ तहँ नर नारी * भंजेउ राम संभुधनु भारी

दो० बंदी मागध सूतगन, बिरद बदहिं मतिधीर।
करहिं निछावरि लोग सब, हय गय धन मनि चीर॥

झांझ मृदंग संष सहनाई * भेरि ढोल दुंदुभी सोहाई
बाजहिं बहु बाजने सोहाये * जहँ तहँ जुवतिन्ह मंगल गाये
सषिनसहित हरषीं अति रानी * सूषत धान परा जनु पानी
जनक लहेउ सुष सोच बिहाई * पैरत थके थाह जनु पाई
श्रीहत भये भूप धनु टूटे * जैसे दिवस दीप छबि छूटे
सीय सुषहि बरनिय केहि भाँती * जनु चातकी पाइ जल स्वाती
रामहिं लषन बिलोकहिं कैसे * ससिहि चकोर किसोरक जैसे
सतानंद तब आयसु दीन्हा * सीता गवन रामपहिं कीन्हा

दो० संग सषी सुंदरि चतुरि, गावहिं मंगलचार।
गवनीं बालमराल गति, सुषमा अंग अपार॥

सषिन्ह मध्य सिय सोहति कैसी * छबिगन मध्य महाछबि जैसी
करसरोज जयमाल सोहाई * बिस्वबिजय सोभा जेहि छाई
तन सकोच मन परम उछाहू * गूढ प्रेम लषि परै न काहू
जाय समीप रामछबि देषी * रहि जनु कुअँरि चित्र अवरेषी
चतुरि सषी लषि कहा बुझाई * पहिरावहु जयमाल सोहाई
सुनत जुगल कर माल उठाई * प्रेमबिबस पहिराइ न जाई
सोहत जनु जुग जलज सनाला * ससिहि सभीत देत जयमाला
गावहिं छबि अवलोकि सहेली * सिय जयमाल रामउर मेली

सो० रघुबर उर जयमाल, देषि देव बरिषहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल, जिमि बिलोकि रबि कुमुदगन॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे * षल भए मलिन साधु सब राजे
सुर किन्नर नर नाग मुनीसा * जय जय जय कहि देहिं असीसा
नाचहिं गावहिं बिबुधबधूटी * बार बार कुसुमावलि छूटी
जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं * बंदी बिरदावलि उच्चरहीं
महि पाताल ब्योम जस ब्यापा * राम बरी सिय भंजेउ चाँपा
करहिं आरती पुर नर नारी * देहिं निछावरि बित्त बिसारी
सोहति सीय रामकै जोरी * छबि सिंगार मनहुँ एकठोरी
सषी कहहि प्रभुपद गहु सीता * करति न चरन परस अतिभीता

दो० गौतमतियगति सुरति करि, नहिं परसति पगपानि।
हिय हरषे रघुबंसमनि, प्रीति अलौकिक जानि॥

तब सिय देषि भूप अभिलाषे * कूर कपूत मूढ मन माषे
उठिउठि पहिरि सनाहँ अभागे * जहँ तहँ गाल बजावन लागे
लेहु छडाइ सीय कह कोऊ * धरि बाँधहु नृपबालक दोऊ
तोरे धनुष चाड नहिं सरई * जीअत हमहिं कुअँरि को बरई
जौं बिदेह कछु करइ सहाई * जीतहु समर सहित दोउ भाई
साधु भूप बोले सुनि बानी * राजसमाजहि लाज लजानी
बल प्रताप बीरता बडाई * नाक पिनाकहिं संग सिधाई
सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई * असिबुधितौबिधि मुहँमसिलाई

दो० देषहु रामहिं नयन भरि, तजि इरषा मद कोहु।
लषन रोष पावक प्रबल, जानि सलभ जनि होहु॥

बैनतेयबलि जिमि चह कागू * जिमि ससचहै नागअरि भागू

जिमिचह कुसल अकारनकोही * सब संपदा चहै सिवद्रोही
लोभी लोलुप कीरति चहई * अकलंकता कि कामी लहई
हरिपदबिमुष परमगति चाहा * तस तुम्हार लालच नरनाहा
कोलाहल सुनि सीय सकानी * सषी लेवाय गई जहँ रानी
राम सुभाय चले गुरुपाहीं * सिय सनेह बरनत मनमाहीं
रानिन्ह सहित सोचबस सीया * अबधौं बिधिहि काह करनीया
भूपबचन सुनि इत उत तकहीं * लषन रामडर बोलि न सकहीं

दो० अरुननयनभृकुटीकुटिल, चितवत नृपन्ह सकोप।
मनहुँ मत्तगजगन निरषि, सिंहकिसोरहि चोप॥

षरभर देषि बिकल नर नारी * सबमिलि देहिं महीपन्ह गारी
तेहिअवँसर सुनि सिवधनुभंगा * आएउ भृगुकुल कमलपतंगा
देषि महीप सकल सकुचाने * बाज झपट जनु लवा लुकाने
गौर सरीर भूति भलि भ्राजा * भाल बिसाल त्रिपुंड़ बिराजा
सीस जटा ससि बदन सोहावा * रिसबस कछुक अरुन होइ आवा
भृकुटी कुटिल नयन रिसराते * सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते
बृषभकंध उर बाहुँ बिसाला * चारु जनेउ माल मृगछाला
कटि मुनिबसन तून दुइ बाँधे * धनुसर कर कुठार कलकाँधे

दो० सांतबेष करनी कठिन, बरनि न जाइ सरूप।
धरि मुनितन जनु बीररस, आयेउ जहँ सब भूप॥

देषत भृगुपतिबेष कराला * उठे सकल भयबिकल भुआला
पितुसमेत कहिकहि निजनामा * लगे करन सब दंडप्रनामा
जेहि स्वभाय चितवहिं हित जानी * सो जानै जनु आइ षुटानी
जनक बहोरि आइ सिर नावा * सीय बोलाइ प्रनाम करावा

आसिष दीन्हि सखी हरषानी * निज समाज लेगई सयानी
बिस्वामित्र मिले पुनि आई * पदसरोज मेले दोउ भाई
राम लषन दसरथ के ढोटा * दीन्हि असीस देषि भल जोटा
रामहिं चितइ रहे थकि लोचन * रूप अपार मारमदमोचन

दो० बहुरि बिलोकि बिदेह सन, कहहु काह अति भीर।
पूंछत जानि अजान जिमि, ब्यापेउ कोप सरीर॥

समाचार कहि जनक सुनाये * जेहि कारन महीप सब आये
सुनत बचन फिरि अनत निहारे * देषे चाँपषंड महि डारे
अति रिस बोले बचन कठोरा * कहु जड जनक धनुष केइँ तोरा
बेगि दिषाउ मूढ नत आजू * उलटौं महि जहँलगि तव राजू
अति डर उतर देत नृप नाहीं * कुटिल भूप हरषे मन माहीं
सुर मुनि नाग सिद्ध नर नारी * सोचहिं सकल त्रास उर भारी
मन पछिताति सीयमहतारी * बिधि सवाँरि सब बात बिगारी
भृगुपतिकर सुभाव सुनि सीता * अरध निमेष कलपसम बीता

दो० सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीरु।
हृदय न हरष बिषाद कछु, बोले श्रीरघुबीरु॥

मा० पा० ६ दिन

नाथ संभुधनु भंजनिहारा * होइहि कोउ एक दास तुम्हारा
आयसु काह कहिय किन मोही * सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही
सेवक सो जो करै सेवकाई * अरिकरनी करि करिअ लराई
सुनहु राम जेइँ सिवधनु तोरा * सहसबाँहुसम सो रिपु मोरा
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा * नत मारे जैहहिं सब राजा
सुनि मुनिबचन लषन मुसुकाने * बोले परसुधरहिं अपमाने

बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं * कबहुँन असि रिसकीन्हिगोसाईं
एहि धनुपर ममता केहिहेतू * सुनि रिसाइ कह भृगुपतिकेतू

दो० रे नृपबालक कालबस, बोलत तोहि न सँभार।
धनुहींसम त्रिपुरारिधनु, बिदित सकल संसार॥

लषन कहा हँसि हमरे जाना * सुनहुँ देव सब धनुष समाना
का छति लाभ जून धनु तोरे * देषा राम नये के भोरे
छुअत टूट रघुपतिहि न दोषू * मुनि बिनु काज करिय कत रोषू
बोले चितै परसुकी ओरा * रे सठ सुनेहि सुभाव न मोरा
बालक बोलि बधौं नहिं तोही * केवल मुनि जड जानहि मोही
बाल ब्रह्मचारी अतिकोही * बिस्वबिदित छत्री कुलद्रोही
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं * बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्हीं
सहसबाँहु भुज छेदनिहारा * परसु बिलोकु महीपकुमारा

दो० मातुपितहिजनिसोचबस, करसि महीपकिसोर।
गर्भन के अर्भकदलन, परसु मोर अतिघोर॥

बिहसि लषन बोले मृदुबानी * अहो मुनीस महाभटमानी
पुनि पुनि मोहि दिषावकुठारू * चहत उडावन फूंकि पहारू
इहां कुम्हडबतिआ कोउ नाहीं * जे तर्जनी देषि मरिजाहीं
देषि कुठार सरासन बाना * मै कछु कहा सहित अभिमाना
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी * जो कछु कहहु सहउँ रिसरोकी
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई * हमरे कुल इन्ह पर न सुराई
बधे पाप अपकीरति हारे * मारतहूँ पांपरिअ तुम्हारे

१-कार्प्पासमुपवीतं स्याद्विप्रस्योर्ध्ववृतान्त्रवृत्। शणसूत्रमयं राज्ञो वश्यस्याविकसांत्रिकम्१॥ इति मनुसंहितायाम्॥

२-अवध्यो ब्राह्मणो गावः स्त्रिया बालाश्च ज्ञातयः। येषां चान्नानि भुंजीथ ये चास्य शरणांगताः १॥

कोटिकुलिससम बचन तुम्हारा * ब्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा

दो० जो बिलोकि अनुचित कहेउँ, छमहुँ महामुनि धीर।
सुनि सरोष भृगुबंसमनि, बोले गिरा गँभीर॥

कौसिक सुनहु मंद एह बालक * कुटिलकालबस निजकुलघालक
भानुबंस राकेस कलंकू * निपट निरंकुस अबुध असंकू
कालकवल होइहि छनमाहीं * कहौं पुकारि षोरि मोहिं नाहीं
तुम्ह हटकहु जो चहहु उबारा * कहि प्रताप बल रोष हमारा
लषन कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा * तुम्हहिं अछत को बरनै पारा
अपने मुष तुम आपनि करनी * बार अनेक भाँति बहु बरनी
नहिं संतोष तौ पुनि कछु कहहू * जिनि रिसि रोकि दुसह दुख सहहू
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा * गारी देत न पावहु सोभा

दो० सूर समर करनी करहिं, कहि न जनावहिं आपु।
विद्यमान रन पाइ रिपु, कायर करहिं प्रलापु॥

तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा * बार बार मोहि लागि बोलावा
सुनत लषन के बचन कठोरा * फरस सुधारि धरेउ कर घोरा
अब जनि देइ दोस मोहि लोगू * कटुबादी बालक बधजोगू
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा * अब यहँ मरनिहार भा साँचा
कौसिक कहा छमिअ अपराधू * बालदोषगुन गनहिं न साधू
कर कुठार मैं अकरन कोही * आगे अपराधी गुरुद्रोही
उतर देत छाँडौं बिनु मारे * केवल कौशिक सील तुम्हारे
नत इहि काटि कुठार कठोरे * गुरुहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे

दो० गाधिसूनु कह हृदय हँसि, मुनिहिं हरि अरइ सूझ।
अयमय षांड न ऊषमय, अजहुँ न बूझ अबूझ॥

कहेउ लषन मुनि सील तुम्हारा * को नहिं जान बिदित संसारा
माता पितहि उरिन भये नीके * गुरुरिन रहा सोच बड जीके
सो जनु हमरेहि माथे काढा * दिन चलिगये ब्याज बडबाढा
अबआनिअ ब्यवहरिआबोली * तुरत देउँ मैं थैली षोली
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा * हाइ हाइ सब सभा पुकारा
भृगुबर परसु देषावहु मोही * बिप्र बिचारि बचौ नृपद्रोही
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढे * द्विज देवता घरहि के बाढे
अनुचित कहि सब लोग पुकारे * रघुपति सैनहिं लषन नेवारे

दो० लषनउतर आहुतिसरिस, भृगुबरकोप कृसानु।
बढत देषि जलसम बचन, बोले रघुकुलभानु॥

नाथ करहु बालक पर छोहू * सूध दूध मुष करिअ न कोहू
जौंपै प्रभुप्रभाव कछु जाना * तौ कि बराबरि करइ अयाना
जौं लरिका कछु अचगरि करहीं * गुरु पितु मातु मोद मन भरहीं
करिअ कृपा सिसु सेवक जानी * तुम्ह सम सील धीर मुनि ज्ञानी
रामबचन सुनि कछुक जुडाने * कहि किछु लषन बहुरि मुसुकाने
हसत देषि नषसिष रिसब्यापी * राम तोर भ्राता बडपापी
गौर सरीर स्याम मनमाहीं * कालकूटमुष पयमुष नाहीं
सहज टेढ अनुहरै न तोही * नीचु मीचुसम देष न मोही

दो० लषन कहेउ हँसि सुनहु मुनि, क्रोध पापकर मूल।
जेहिबस जन अनुचितकरहिं, होहिं बिस्वप्रतिकूल॥

मै तुम्हार अनुचर मुनिराया * परिहरि कोप करिअ अब दाया
टूट चाँप नहिं जुरहि रिसाने * बैठिय होइहहिं पाय पिराने
जौं अतिप्रिय तौ करिअ उपाई * जोरिअ कोइ बडगुनी बोलाई

बोलत लषनहिं जनक डेराहीं * मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं
थर थर कापहिं पुर नर नारी * छोट कुमार खोट अतिभारी
भृगुपति सुनि सुनि निर्भयबानी * रिस तन जरै होइ बलहानी
बोले रामहि देइ निहोरा * बचौं बिचारि बंधु लघु तोरा
मन मलीन तन सुंदर कैसे * बिषरस भरा कनकघट जैसे

दो० सुनि लछिमन बिहसे बहुरि, नयन तरेरे राम।
गुरु समीप गवने सकुचि, परिहरि बानी बाम॥

अतिबिनती मृदु सीतल बानी * बोले राम जोरि जुग पानी
सुनहुँ नाथ तुम्ह सहज सुजाना * बालकबचन करिअ नहिं काना
बररै बालक एक सुभाऊ * इन्हहिं न बिदुष बिदूषहिं काऊ
तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा * अपराधी मै नाथ तुम्हारा
कृपा कोप बध बंधु गोसाँई * मोपर करिअ दास की नाईं
कहिअ बेगि जेहि बिधि रिस जाई * मुनिनायक सोइ करउँ उपाई
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे * अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे
एहिके कंठ कुठार न दीन्हा * तौ मै काह कोप करि कीन्हा

दो० गर्भस्रवहिं अवनिपरवनि, सुनि कुठारगति घोर।
परसु अछत देषौं जिअत, बैरी भूपकिशोर॥

बहै न हाथ दहै रिस छाती * भा कुठार कुंठित नृपघाती
भयेउ बाम बिधि फिरेउ सुभाऊ * मोरे हृदय कृपा कसि काऊ
आजु दया[1] दुष दुसह सहावा * सुनि सौमित्रि बिहँसि सिरनावा
बाउ कृपा मूरति अनुकूला * बोलत बचन झरत जनु फूला

१-अनिर्हेतुपरदुःखनिवारणेच्छा दया। परे वा बन्धुवर्गे वा मित्रे द्वेष्टरि वा सदा॥ आपन्ने रक्षितव्यं तु दयैषा परिकीर्तिता॥ १॥

जौं पै कृपा जरहिं मुनि गाता * क्रोध भयें तन राष बिधाता
देषु जनक हठि बालक येहू * कीन्ह चहत जड जमपुर गेहू
बेगि करहु किन आंषिन ओटा * देषत छोट षोट नृपढोटा
बिहसे लषन कहा मन माहीं * मूंदे आंषि कतहुँ कोउ नाहीं

दो॰ परसुराम तब राम प्रति, बोले उर अतिक्रोध।
संभुसरासन तोरि सठ, करसि हमार प्रबोध ॥

बंधु कहै कटु संमत तोरे * तूं छलबिनय करसि करजोरे
करु परितोष मोर संग्रामा * नाहिंतौ छाडु कहाउब रामा
छलतजि करहि समर सिवद्रोही * बंधुसहित नत मारौं तोही
भृगुपति बकहिं कुठार उठाये * मनमुसुकाहिं राम सिरनाये
गुनहुँ लषन कर हमपर रोषू * कतहुँ सुधाइउ तें बड दोषू
टेढ जानि संका सब काहू * बक्र चंद्रमहिं ग्रसइ न राहू
राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा * करकुठार आगे यह सीसा
जेहिरिसजाइ करिअ सोइस्वामी * मोहिं जानि आपन अनुगामी

दो॰ प्रभुहि सेवकहि समर कस, तजहु बिप्रबर रोस।
बेष बिलोकि कहेसि कछु, बालकहू नहिं दोस ॥

देषि कुठार बान धनुधारी * भइलरिकहि रिस बीर बिचारी
नाम जान पै तुम्हहिं न चीन्हा * बंससुभाउ उतर तेइँ दीन्हा
जो तुम्ह अउतेहु मुनि की नाईं * पदरज सिर सिसु धरत गोसाईं
छमहु चूक अनजानत केरी * चहिअ बिप्रउर कृपा घनेरी
हमहिंतुम्हहिं सरबरिकसनाथा * कहहु न कहां चरन कहँ माथा
राममात्र लघु नाम हमारा * परसुसहित बडनाम तुम्हारा

देव एक गुन धनुष हमारे * नव गुन परम पुनीत तुम्हारे
सब प्रकार हम तुम्हसन हारे * छमहु बिप्र अपराध हमारे

दो० बार बार मुनि बिप्रबर, कहा रामसन राम।
बोले भृगुपति सरुष हसि, तहूं बंधुसम बाम॥

निपटाहद्विजकरि जानेहिमोही * मै जस बिप्र सुनावौं तोही
चाँप श्रुवा सर आहुति जानू * कोप मोर अतिघोर कृसानू
समिध सेन चतुरंग सोहाई * महामहीप भये पसु आई
मै यहि परसु काटि बलि दीन्हे * समरजज्ञ जग कोटिन्ह कीन्हे
मोर प्रभाव बिदित नहिं तोरे * बोलसि निदरि बिप्रके भोरे
भंजेउ चाँप दाप बड बाढा * अहमित मनहुँ जीति जग ठाढा
राम कहा मुनि कहहु बिचारी * रिस अतिबडि लघुचूक हमारी
छुअतहिं टूट पिनाक पुराना * मै केहि हेतु करौं अभिमाना

दो० जौं हम निदरहिं बिप्रबदि, सत्य सुनहुँ भृगुनाथ।
तौ अस को जगसुभट जेहि, भयबस नावहिं माथ॥

देव दनुज भूपति भट नाना * समबल अधिक होउ बलवाना
जौं रन हमहिं प्रचारै कोऊ * लरहिं सुखेन काल किन होऊ
छत्रियतन धरि समर सकाना * कुलकलंक तेहि पाँवर आना
कहउ सुभाउ न कुलहिप्रसंसी * कालहु डरहिं न रन रघुबंसी
बिप्रबंसकै असि प्रभुताई * अभय होइ जो तुम्हहिं डेराई
सुनि मृदु गूढबचन रघुपतिके * उघरे पटल परसुधरमतिके
राम रमापति कर धनु लेहू * षैंचहु मिटइ मोर संदेहू

१—ऋजुस्तपस्वी सन्तुष्टः शुचिर्दान्तो जितेन्द्रियः॥
दाता विद्वान् दयालुश्च ब्राह्मणो नवभिर्गुणैः॥ १॥

देत चाँप आपुहिं चलि गयेऊ * परसुराममन बिसमय भयेऊ

दो॰ जाना रामप्रभाव तब, पुलक प्रफुल्लित गात।
जोरि पानि बोले बचन, हृदय न प्रेम समात॥

जय रघुबंसबनजबनभानू * गहन दनुजकुलदहनकृसानू
जय सुर बिप्र धेनु हितकारी * जय मद मोह कोह भ्रमहारी
बिनय सील करुनागुनसागर * जयति बचनरचना अतिनागर
सेवकसुषद सुभग सब अंगा * जय सरीर छबि कोटि अनंगा
करौं काह मुष एक प्रसंसा * जय महेस मन मानस हंसा
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता * छमहुँ छमामंदिर दोउ भ्राता
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू * भृगुपति गये बनहिं तपहेतू
अपभय कुटिल महीप डेराने * जहँ तहँ कायर गवहिं पराने

दो॰ देवन दीन्हीं दुंदुभी, प्रभुपर बरषहिं फूल।
हरषे पुर नर नारि सब, मिटी मोह मय सूल॥

अतिगहगहे बाजने बाजे * सबहिं मनोहर मंगल साजे
जूथजूथ मिलि सुमुषिसुनयनी * करहिं गान कलकोकिलबयनी
सुष बिदेहकर बरनि न जाई * जन्मदरिद्र मनहुँ निधि पाई
बिगतत्रास भइ सीय सुषारी * जनु बिधु उदय चकोरकुमारी
जनककीन्हकौसिकहि प्रनामा * प्रभुप्रसाद धनु भंजेउ रामा
मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दोहुँ भाई * अबजोउचितसोकहियगोसांई
कह मुनि सुनु नरनाथ प्रबीना * रहा बिबाह चाँप आधीना
टूटतहीं धनु भयउ बिबाहू * सुर नर नाग बिदित सब काहू

दो॰ तदपि जाइ तुम करहु अब, जथाबंस ब्यवहार।
बूझि बिप्र कुलबृद्ध गुरु, बेदबिदित आचार॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई * आनहिं नृप दसरथहिं बोलाई
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला * पठये दूत बोलि तेहि काला
बहुरि महाजन सकल बोलाये * आइ सबन्हि सादर सिरु नाये
हाट बाट मंदिर सुर बासा * नगर सँवारहु चारिहु पासा
हरषि चले निज निज गृह आये * पुनि परिचारक बोलिपठाये
रचहु बिचित्र बितान बनाई * सिर धरि बचन चले सचुपाई
पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना * जे बितानबिधिकुसल सुजाना
बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा * बिरचे कनक कदलि के षंभा

दो० हरित मनिन्हके पत्र फल, पदुमराग के फूल।
रचना देषि बिचित्र अति, मनबिरंचिकर भूल॥

बेनु हरित मनिमय सब कीन्हे * सरल सपर्ब परहिं नहिं चीन्हे
कनक कलित अहिबेलि बनाई * लषि नहिं परै सपरन सोहाई
तेहिके रचि पचि बंध बनाये * बिच बिच मुकुतादाम सुहाये
मानिक मरकत कुलिसपिरोजा * चीरि कोरि पचि रचे सरोजा
किये भृंग बहुरंग बिहंगा * गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा
सुरप्रतिमा षंभन्हि गढि काढी * मंगलद्रब्य लिये सब ठाढी
चौकैं भाँति अनेक पुराई * सिंधुरमनिमय सहज सोहाई

दो० सौरभ पल्लव सुभग सुठि, किये नीलमनि कोरि।
हेम बौर मरकत घवर, लसति पाटमय डोरि॥

रचे रुचिर बर बंदनिवारे * मनहुँ मनोभव फंद सँवारे
मंगल कलस अनेक बनाये * ध्वज पताक पटचमर सोहाये
दीप मनोहर मनिमय नाना * जाइ न बरनि बिचित्र बिताना
जेहि मंडप दुलहिनि बैदेही * सो बरनै असि मति कबि केही

दूलह राम रूपगुनसागर * सो बितान तिहुँलोक उजागर
जनकभवनकै सोभा जैसी * गृह गृह प्रति पुर देषिअ तैसी
जेहिंतेरहुति तेहिसमय निहारी * तेहि लघु लाग भुअन दसचारी
जो संपदा नीच गृह सोहा * सो बिलोकि सुरनायक मोहा

दो० बसै नगर जेहि लक्षिकरि, कपट नारिबर बेष।
तेहि पुरकै सोभा कहत, सकुचहिं सारद सेष॥

पहुँचे दूत रामपुर पावन * हरषे नगर बिलोकि सोहावन
भूपद्वार तिन्ह षबरि जनाई * दसरथ नृप सुनि लिये बोलाई
करि प्रनाम तिन्ह पाती दीन्हीं * मुदित महीप आपु उठि लीन्हीं
बारि बिलोचन बांचत पाती * पुलकगात आई भरि छाती
राम लषन उर कर बर चीठी * रहिगए कहत न षाटी मीठी
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची * हरषी सभा बात सुनि साँची
षेलत रहे तहाँ सुधि पाई * आये भरत सहित हित भाई
पूछत अति सनेह सकुचाई * तात कहां तें पाती आई

दो० कुसलप्रानप्रियबंधुदोउ, अहहिं कहहु केहि देस।
सुनि सनेहसाने बचन, बाँची बहुरि नरेस॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता * अधिक सनेह समात न गाता
प्रीति पुनीत भरत कै देषी * सकल सभा सुष लहेउ बिसेषी
तब नृप दूत निकट बैठारे * मधुर मनोहर बचन उचारे
भइआ कहहु कुसल दोउ बारे * तुम्ह नीके निज नयन निहारे
स्यामल गौर धरे धनु भाथा * बयकिसोर कौसिक मुनि साथा
पहिचानहुँ तुम्ह कहहु सुभाऊ * प्रेमबिबस पुनि पुनि कह राऊ
जादिनतें मुनि गये लवाई * तबतें आजु सांचि सुधि पाई

कहहु बिदेह कवन बिधि जाने * सुनि प्रियबचन दूत मुसुकाने

दो० सुनहुँमहीपतिमुकुटमनि, तुम्ह सम धन्य न कोउ।
राम लषन जाके तनय, बिस्वबिभूषन दोउ॥

पूँछन जोग न तनय तुम्हारे * पुरुषसिंह तिहुँपुर उँजियारे
जिन्हके जस प्रतापके आगे * ससि मलीन रबि सीतललागे
तिन्हकहँ कहियनाथ किमिचीन्हे * देषिय रबि कि दीप करलीन्हे
सीयस्वयंबर भूप अनेका * समटे सुभट एकतें एका
संभुसरासन काहु न टारा * हारे सकल भूप बरिआरा
तीनिलोक महँ जे भटमानी * सबकै सक्ति संभुधनु भानी
सकइ उठाइ सुरासुर मेरू * सोउ हियहारि गयउ करि फेरू
जेहिं कौतुक सिवसैल उठावा * सोउ तेहि सभा पराभव पावा

दो० तहां राम रघुबंसमनि, सुनिअ महामहिपाल।
भंजेउ चाँप प्रयास बिनु, जिमि गज पंकजनाल॥

सुनि सरोष भृगुनायक आये * बहुत भाँति तिन्ह आंषि देषाये
देषि रामबल निजधनु दीन्हा * करि बहु बिनय गवन बन कीन्हा
राजन राम अतुलबल जैसे * तेजनिधान लषण पुनि तैसे
कंपहिं भूप बिलोकत जाके * जिमि गज हरिकिसोर के ताके
देव देषि तव बालक दोऊ * अब न आँषितर आवत कोऊ
दूत बचनरचना प्रिय लागी * प्रेम प्रताप बीर रस पागी
सभा समेत राउ अनुरागे * सबमिलि देन निछावरि लागे
कहि अनीति ते मूंदहिं काना * धर्मबिचारि सबहिं सुष माना

दो० तब उठि भूप बसिष्ट कहँ, दीन्हि पत्रिका जाइ।
कथा सुनाई गुरुहिं सब, सादर दूत बोलाइ॥

सुनि बोले गुरु अतिसुष पाई * पुन्यपुरुष कहुँ महि सुष छाई
जिमि सरिता सागरमहँ जाहीं * जद्यपि ताहि कामना नाहीं
तिमि सुषसंपति बिनहिं बोलायें * धरम सील पहिं जाहि सुहायें
तुम्ह गुरु बिप्र धेनु सुर सेवी * तसि पुनीत कौसल्या देवी
सुकृती तुम्हसमान जगमाहीं * भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं
तुम्हतें अधिक पुन्य बड काके * राजन रामसरिस सुत जाके
बीर बिनीत धरम ब्रतधारी * गुनसागर बर बालक चारी
तुम्हकहुँ सर्ब काल कल्याना * सजहु बरात बजाइ निसाना

दो॰ चलहु बेगि सुनि गुरुबचन, भलेहिं नाथ सिरनाइ।
भूपति गवने भवन तब, दूतन्हि बास देवाइ॥

राजा सब रनिवाँस बोलाई * जनक पत्रिका बांचि सुनाई
सुनि संदेश सकल हरषानी * अपर कथा सब भूप बषानी
प्रेमप्रफुल्लित राजहिं रानी * मनहुँ सिषिनिसुनिबारिदबानी
मुदित असीष देहिं गुरुनारी * अति आनंदमगन महतारी
लेहिं परस्पर अतिप्रिअ पाती * हृदय लगाय जुडावहिं छाती
राम लषन कै कीरति करनी * बारहिं बार भूपबर बरनी
मुनिप्रसाद कहि द्वार सिधाये * रानिन्ह तब महिदेव बोलाये
दिये दान आनंद समेता * चले बिप्रबर आसिष देता

सो॰ जाचक लिये हँकारि, दीन्हि निछावरि कोटिबिधि।
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दसरथ्थ के॥

कहत चले पहिरे पट नाना * हरषि हने गहगहे निसाना
समाचार सब लोगन्ह पाये * लागे घर घर होन बधाये
भुअन चारिदस भरा उछाहू * जनकसुता रघुबीर बिबाहू

सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे * मग गृह गली सवाँरन लागे
जद्यपि अवध सदैव सोहावनि * रामपुरी मंगलमय पावनि
तदपि प्रीति की रीति सोहाई * मंगल रचना रची बनाई
ध्वज पताक पट चामर चारू * छावा परम बिचित्र बजारू
कनककलस तोरन मनिजाला * हरदि दूब दधि अक्षत माला

दो० मंगलमय निजनिज भवन, लोगन्ह रचे बनाइ।
बीथी सींची चतुर सम, चौकैं चारु पुराइ॥

जहँतहँ जूथजूथ मिलि भामिनि * सजिनवसप्तसकलदुतिदामिनि
बिधुबदनी मृगसावकलोचनि * निजसरूपरतिमान बिमोचनि
गावहिं मंगल मंजुल बानी * सुनि कलरव कलकंठ लजानी
भूपभवन किमि जाइ बषाना * बिस्वबिमोहन रचेउ बिताना
मंगल द्रब्य मनोहर नाना * राजत बाजत बिपुल निसाना
कतहुँ बिरद बंदी उच्चरहीं * कतहुँ बेदधुनि भूसुर करहीं
गावहिं सुंदरि मंगल गीता * लै लै नाम राम अरु सीता
बहुत उछाह भवन अति थोरा * मानहुँ उमँगि चला चहुँओरा

दो० सोभा दसरथभवन कै, को कबि बरनै पार।
जहां सकलसुरसीसमनि, राम लीन्ह अवतार॥

भूप भरत पुनि लिये बोलाई * हय गज स्यंदन साजहु जाई
चलहु बेगि रघुबीर बराता * सुनत पुलक पूरे दोउ भ्राता
भरत सकल साहनी बोलाये * आयसु दीन्ह मुदित उठिधाये
रचि रुचि जीन तुरग तिन साजे * बरन बरन बर बाजि बिराजे
सुभगसंकलसुठि चंचलकरनी * अय इव जरत धरत पगधरनी
नाना जाति न जाहिं बषाने * निदरि पवन जनु चहत उड़ाने

तिन्ह सब छैल भये असवारा * भरत सरिस बय राजकुमारा
सब सुंदर सब भूषन धारी * कर सर चाँप तून कटि भारी
दो० छरे छबीले छयल सब, सूर सुजान नबीन।
जुग पदचर असवार प्रति, जे असिकला प्रबीन॥
बांधे बिरद बीर रन गाढे * निकसि भये पुर बाहेर ठाढे
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना * हरषहिं सुनि सुनि पनव निशाना
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाये * ध्वज पताक मनि भूषन लाये
चवर चारु किंकिनि धुनि करहीं * भानु जानु सोभा अपहरहीं
सावकरन अगिनित हय होते * ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते
सुंदर सकल अलंकृत सोहे * जिन्हहिं बिलोकत मुनिमन मोहे
जे जल चलहिं थलहि की नाई * टाप न बूड बेग अधिकाई
अस्त्र सस्त्र सब साज बनाई * रथी सारथिन्ह लिये बोलाई
दो० चढि चढि रथ बाहेर नगर, लागी जुरन बरात।
होत सगुन सुंदर सबनि, जो जेहि कारज जात॥
कलित करिवरन्हि परी अँबारी * कहि न जाइ जेहि भाँति सँवारी
चले मत्त गज घंट बिराजी * मनहुँ सुभग सावन घनराजी
बाहन अपर अनेक बिधाना * सिबिका सुभग सुषासनु जाना
तिन्ह चढि चले बिप्रबरबृंदा * जनु तनु धरे सकल श्रुतिछंदा
मागध सूत बंदि गुनगायक * चले जान चढि जो जेहि लायक
बेसर ऊंट बृषभ बहु जाती * चले बस्तु भरि अगिनित भाँती
कोटिन्ह कांवरि चले कँहारा * बिबिधि बस्तु को बरनै पारा
चले सकल सेवक समुदाई * निज निज साज समाज बनाई
दो० सबके उर निर्भर हरष, पूरित पुलक सरीर।

कबहिं देषिबे नयनभरि, राम लषन दोउ बीर ॥

गरजहिं गज घंटा धुनिघोरा * रथरव बाजिहिंस चहुँ ओरा
निदरि घनहिं घुम्मरहिं निसाना * निजपराइ कछु सुनिअ न काना
महाभीर भूपति के द्वारे * रज होइ जाइ पषान पवारे
चढीं अटारिन्ह देषहिं नारी * लिये आरती मंगल थारी
गावहिं गीत मनोहर नाना * अति आनंद न जाइ बषाना
तब सुमंत्र दुइ स्यंदन साजी * जोते रबिहयनिंदक बाजी
दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने * नहिं सारद पहिं जाहिं बषाने
राजसमाज एक रथ साजा * दूसर तेजपुंज अति भ्राजा

दो० तेहि रथ रुचिर बसिष्ट कहँ, हरषि चढाइ नरेस ।
आपु चढेउ स्यंदन सुमिरि, हर गुरु गौरि गणेस ॥

सहित बसिष्ट सोह नृप कैसे * सुरगुरु संग पुरंदर जैसे
करि कुलरीति बेदबिधि राऊ * देषि सबहि सब भाँति बनाऊ
सुमिरि राम गुरुआयसु पाई * चले महीपति संष बजाई
हरषे बिबुध बिलोकि बराता * बरषहिं सुमन सुमंगलदाता
भयउ कोलाहल हय गय गाजे * ब्योम बरात बाजने बाजे
पुर नर नारि सुमंगल गाई * सरस राग बाजहिं सहनाई
घंटघंटिधुनि बरनि न जाहीं * सरब करहिं पाइक फहराहीं
करहिं बिदूषक कौतुक नाना * हाँसकुसल कलगान सुजाना

दो० तुरग नचावँहि कुँअर बर, अकनि मृदंग निसान ।
नागरनट चितवहिं चकित, डगहिं न तालबँधान ॥

बनै न बरनत बनी बराता * होहिं सगुन सुंदर सुभदाता
चारा चाष बामदिसि लेई * मनहुँ सकल मंगल कहि देई

दाहिन काग सुषेत सोहावा * नकुल दरस सबकाहूँ पावा
सानुकूल बह त्रिबिधि बयारी * सघट सबाल आव बर नारी
लोवा फिरि फिरि दरस देषावा * सुरभी सन्मुष सिसुहि पियावा
मृगमाला दाहिन दिसि आई * मंगलगन जनु दीन्हि देषाई
छेमकरी कह छेम बिसेषी * स्यामा बाम सुतरु पर देषी
सन्मुष आयेउ दधि अरु मीना * कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना

दो० मंगलमय कल्यानमय, अभिमित फलदातार।
जनु सब साँचे होन हित, भये सगुन एकबार॥

मंगल सगुन सुगम सब ताके * सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाके
रामसरिस बर दुलहिनि सीता * समधी दसरथ जनक पुनीता
सुनि अस ब्याह सकुन सब नाचे * अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे
एहि बिधि कीन्ह बरात पयाना * हय गय गाजे हने निसाना
आवत जानि भानुकुलकेतू * सरितन्ह जनक बँधाये सेतू
बीच बीच बर बास बनाये * सुरपुर सरिस संपदा छाये
असन सयन बरबसन सोहाये * पावहिं सब निज निज मनभाये
नित नूतन सुष लषि अनकूले * सकल बरातिन्ह मंदिर भूले

दो० आवत जानि बरात बर, सुनि गहगहे निसान।
सजि गज रथ पदचर तुरग, लेन चले अगवान॥

मा० पा० १० दिन

कनक कलस कल कोंपर थारा * भाजन ललित अनेक प्रकारा
भरे सुधा सम सब पकवाने * भाँति भाँति नहिं जाहिं बषाने
फल अनेक बर बस्तु सोहाई * हरषि भेट हित भूप पठाई

१—भेरीमृदंगमृदुमर्दलशंखवीणा वेदध्वनिमधुरमंगलगीतघोषाः॥ पुत्रान्विता च युवती सुरभी सवत्सा धौताम्बरश्च रजकोभिमुखाः प्रशस्ताः॥ १॥ इति रत्नमालायाम्॥

भूषन बसन महामनि नाना * षगमृगहयगय बहुबिधि जाना
मंगल सगुन सुगन्ध सोहाये * बहुतभाँति महिपाल पठाये
दधि चिउरा उपहार अपारा * भरि भरि काँवरि चले कँहारा
अगवानन्ह जब दीष बराता * उर आनंद पुलक भरे गाता
देषि बनावसहित अगवाना * मुदित बरातिन्ह हने निसाना

दो॰ हरषि परस्पर मिलनहित, कछुक चले बगमेल।
जनु आनंद समुद्र दुइ, मिलत बिहाय सुबेल॥

बरषि सुमन सुरसुदंरि गावहिं * मुदित देव दुंदुभी बजावहिं
वस्तु सकल राषी नृप आगे * बिनयकीन्हतिन्ह अतिअनुरागे
प्रेम समेत राय सब लीन्हा * भै बकसीस जाचकन्ह दीन्हा
करि पूजा मान्यता बडाई * जनवासे कहँ चले लवाई
बसन बिचित्र पावडे परहीं * देषि धनद धनमद परिहरहीं
अतिसुंदर दीन्हेउँ जनवासा * जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई * कछु निजमहिमा प्रगटि जनाई
हृदयसुमिरि सबसिद्धि बोलाई * भूप पहुनई करन पठाई

दो॰ सिधिसब सियआयसु अकनि, गईं जहां जनवास।
लिये संपदा सकल सुष, सुरपुरभोग बिलास॥

निजनिज बास बिलोकि बराती * सुरसुष सकल सुलभसब भाँती
बिभव भेद कछु कोउ न जाना * सकल जनककर करहिं बषाना
सिय महिमा रघुनायक जानी * हरषे हृदय हेतु पहिंचानी
पितु आगमन सुनत दोउ भाई * हृदय न अति आनंद समाई
सकुचन कहि न सकत गुरुपाहीं * पितु दरसन लालच मनमाहीं
बिस्वामित्र बिनय बडि देषी * उपजा उर संतोष बिसेषी

हरषि बंधु दोउ हृदय लगाये * पुलक अंग अंबक जल छाये
चले जहां दसरथ जनवासे * मनहुँ सरोवर तके पियासे

दो॰ भूप बिलोके जबहिं मुनि, आवत सुतन्ह समेत ।
उठे हरषि सुषसिंधु महँ, चले थाहसी लेत ॥

मुनिहिं दंडवत कीन्ह महीसा * बार बार पदरज धरि सीसा
कौसिक राउ लिये उर लाई * कहि असीस पूंछी कुसलाई
पुनि दंडवत करत दोउ भाई * देषि नृपति उर सुष न समाई
सुत उर लाइ दुसह दुष मेटे * मृतक सरीर प्रान जनु भेटे
पुनिबसिष्टपद सिर तिन्ह नाये * प्रेम मुदित मुनि वर उर लाये
बिप्र बृंद बंदे दोउ भाई * मनभावती असीसैं पाई
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा * लिये उठाइ लाइ उर रामा
हरषे लषन देखि दोउ भ्राता * मिले प्रेमपरिपूरित गाता

दो॰ पुरजन परिजन जातिजन, जाचक मंत्री मीत ।
मिले जथाबिधि सबहिं प्रभु, परम कृपाल बिनीत ॥

रामहिं देषि बरात जुडानी * प्रीति कि रीति न जाति बषानी
नृपसमीप सोहहिं सुत चारी * जनु धन धरमादिक तनुधारी
सुतन्ह समेत दसरथहि देषी * मुदित नगर नर नारि बिसेषी
सुमन बरषि सुर हनहिं निसाना * नाकनटी नाचहिं करि गाना
सतानंद अरु बिप्र सचिवगन * मागध सूत बिदुष बंदीजन
सहित बरात राव सनमाना * आयसु मांगि फिरे अगवाना
प्रथम बरात लगन ते आई * ताते पुर प्रमोद अधिकाई
ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं * बढउ दिवस निसि बिधिसन कहहीं

दो॰ राम सीय सोभा अवधि, सुकृत अवधि दोउ राज ।

जहँ तहँ पुरजन कहहिं अस, मिलि नरनारि समाज ॥

जनक सुकृत मूरति बैदेही * दसरथ सुकृत राम धरे देही
इन्हसम काहुँ न सिव अवराधे * काहुँ न इनसमान फललाधे
इन्हसम कोउ न भएउ जगमाहीं * है नहिं कतहूँ होनेउँ नाहीं
हम सब सकल सुकृतके रासी * भए जगजनमि जनकपुरबासी
जिन्ह जानकी राम छबि देषी * को सुकृती हमसरिस बिसेषी
पुनि देषब रघुबीरबिबाहू * लेब भली बिधि लोचनलाहू
कहहिं परस्पर कोकिलबयनी * एहि बिबाह बडलाभ सुनयनी
बडे भाग बिधि बात बनाई * नयनअतिथि होइहहि दोउ भाई

दो० बारहि बार सनेहबस, जनक बोलाउब सीय ।
लेन आइहहिं बन्धु दोउ, कोटि काम कमनीय ॥

बिबिधि भांति होइहि पहुनाई * प्रिअ न काहि अस सासुर माई
तब तब रामलषनहिं निहारी * होइहहिं सब पुरलोग सुषारी
सषी जस राम लषनकर जोटा * तैसई भूप संग दुइ ढोटा
स्याम गौर सब अंग सोहाये * ते सब कहहिं देषि जे आये
कहा एक मैं आजु निहारे * जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे
भरत रामहीं की अनुहारी * सहसा लषि न सकहिं नरनारी
लषन सत्रुसूदन एक रूपा * नषसिषते सब अंग अनूपा
मनभावहिं मुष बरनि न जाहीं * उपमाकहँ त्रिभुअन कोउ नाहीं

छंद

उपमा न कोउ कह दासतुलसी कतहुँ कबि कोबिद कहैं ।
बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु इन सम एइ अहैं ॥
पुर नारि सकल पसारि अंचल बिधिहिं बचन सुनावहीं ।

ब्याहिअहु चारिहु भाइ येहि पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

सो० कहहिं परस्पर नारि, बारि बिलोचन पुलकतन ।
सषि सबकरब पुरारि, पुन्यपयोनिधि भूप दोउ ॥

एहिबिधि सकल मनोरथ करहीं * आनद उमगि उमगि उर भरहीं
जे नृप सीयस्वयंबर आये * देषि बंधु सब तिन्ह सुष पाये
कहत रामजस बिसद बिसाला * निजनिज गेह गये महिपाला
गए बीति कछुदिन एहि भाँती * प्रमुदित पुरजन सकल बराती
मंगलमूल लगन दिन आवा * हिमरितु अगहन मास सोहावा
ग्रह तिथि नषत जोग बरबारू * लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू
पठै दीन्हि नारद सन सोई * गनी जनक के गनकन्ह जोई
सुनी सकल लोगन यह बाता * कहहिं जोतिषी अपर बिधाता

दो० धेनु धूरि बेला बिमल, सकल सुमंगल मूल ।
बिप्रन्ह कहेउ बिदेहसन, जानि सगुन अनकूल ॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा * अब बिलंब कर कारन काहा
सतानंद तब सचिव बोलाये * मंगल सकल साजि सब ल्याये
संष निसान पनव बहु बाजे * मंगल कलस सगुन सुभ साजे
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता * करहिं बेदधुनि बिप्र पुनीता
लेन चले सादर एहि भाँती * गये जहां जनवास बराती
कोसलपति कर देषि समाजू * अतिलघु लाग तिन्हहिं सुरराजू
भएउ समउ अब धारिय पाऊ * एह सुनि परा निसानहिं घाऊ
गुरुहि पूंछि करि कुलबिधि राजा * चले संग मुनि साधु समाजा

१—मंगलेषु विवाहेषु कन्यासंवरणेषु च ॥ दश मासाः प्रशस्यंते चैत्रपौषविवर्जिताः ॥
२—शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी मुख्यता चाङ्ग मध्येस्य तेनोच्यते ॥ संयुतोऽपीतरैः कर्ण-नासादिभिः चक्षुषाङ्गेन हीनो न किंचित्करोति ॥ १ ॥ सिद्धान्तशिरोमणौ ॥

दो० भाग्य बिभव अवधेसकर, देषि देव ब्रह्मादि ।
लगे सराहन सहसमुष, जानि जनम निज बादि ॥

सुरन्ह सुमंगल अवसर जाना * बरषहिं सुमन बजाइ निसाना
सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा * चढे बिमानन्हि नाना जूथा
प्रेम पुलक तन हृदय उछाहू * चले बिलोकन रामबिबाहू
देषि जनकपुर सुर अनुरागे * निजनिजलोक सबहिंलघुलागे
चितवहि चकित बिचित्र बिताना * रचना सकल अलौकिक नाना
नगर नारि नर रूपनिधाना * सुघर सुधरम सुसील सुजाना
तिन्हहिं देषि सब सुर सुर नारी * भये नषत जनु बिधु उजियारी
बिधिहि भयउ आचरज बिसेषी * निजकरनी कछु कतहुँ न देषी

दो० सिव समुझाये देव सब, जनिआचरज भुलाहु ।
हृदय बिचारहु धीर धरि, सिय रघुबीर बिबाहु ॥

जिन्हकर नाम लेत जग माहीं * सकल अमंगल मूल नसाहीं
करतल होहिं पदारथ चारी * तेइ सिय राम कहेउ कामारी
एहिबिधिसम्भुसुरन्हसमुझावा * पुनि आगे बर बसह चलावा
देवन्ह देषे दसरथ जाता * महामोद मन पुलकित गाता
साधु समाज संग महिदेवा * जनु तन धरे करहिं सुर सेवा
सोहत साथ सुभग सुत चारी * जनु अपबर्ग सकल तनधारी
मरकत कनक बरन तन जोरी * देषि सुरन्ह भइ प्रीति न थोरी
पुनि रामहिं बिलोकि हियहरषे * नृपहिसराहि सुमन तिन्हबरषे

दो० रामरूप नष सिष सुभग, बारहिं बार निहारि ।
पुलकगात लोचनसजल, उमा समेत पुरारि ॥

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा * तडितबिनिंदक बसन सुरंगा

ब्याह बिभूषन बिबिध बनाये * मंगलमय सब भाँति सोहाये
सरदबिमल बिधुबदन सोहावन * नयन नवल राजीव लजावन
सकल अलौकिक सुंदरताई * कहि न जाइ मनहीं मन भाई
बंधु मनोहर सोहहिं संगा * जात नचावत चपल तुरंगा
राजकुँअर बर बाजि देषावहिं * बंसप्रसंसक बिरद सुनावहिं
जेहि तुरंग पर राम बिराजे * गति बिलोकि षगनायक लाजे
कहि न जाइ सब भाँति सोहावा * बाजिबेष जनु काम बनावा

छंद

जनु बाजिबेष बनाय मनसिज रामहित अति सोहई।
आपनेबय बल रूप गुन गति सकल भुअन बिमोहई॥
जगमगति जीनजराव जोति सुमोतिमनिमानिक लगे।
किंकिनि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे॥

दो० प्रभुमनसहि लयलीनमन, चलत चाल छबिपाव।
भूषित उडगन तडितघन, जनु बर बरहि नचाव॥

जेहि बर बाजि राम असवारा * तेहि सारदउ न बरनै पारा
संकर रामरूप अनुरागे * नयन पंचदस अतिप्रिअ लागे
हरि हित सहित राम जब जोहे * रमासमेत रमापति मोहे
निरषि रामछबि बिधि हरषाने * आठै नयन जानि पछिताने
सुरसेनप उर बहुत उछाहू * बिधि ते डेवढ सुलोचन लाहू
रामहिं चितव सुरेस सुजाना * गौतम साप परमहित माना
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं * आजु पुरंदर सम कोउ नाहीं
मुदित देवगन रामहिं देषी * नृप समाज दुहुँ हरष बिसेषी

छंद

अतिहरष राजसमाज दुहुँ दिसि दुंदुभी बाजहि घनी।
बरषहिंसुमनसुर हरषि कहि जयजयातिजयरघुकुलमनी॥
येहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं।
रानी सुवासिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं॥

दो० सजि आरती अनेक बिधि, मंगल सकल सवारि।
चलीं मुदित परिछनि करन, गजगामिनि बरनारि॥

बिधुबदनीसब सब मृगलोचनि * सबनिजतनछबिरतिमदमोचनि
पहिरे बरन बरन बर चीरा * सकल बिभूषन सजे सरीरा
सकल सुमंगल अंग बनाये * करहिं गान कलकंठ लजाये
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं * चालबिलोकिकामगजलाजहिं
बाजहिं बाजन बिबिधि प्रकारा * नभ अरु नगर सुमंगलचारा
सची सारदा रमा भवानी * जे सुरतिअसुचिसहजसयानी
कपट नारि बर बेष बनाई * मिलीं सकल रनिवासहि जाई
करहिं गान कल मंगल बानी * हरष बिबश सब काहु न जानी

छंद

को जान केहि आनंदबस सब ब्रह्म बर परिछनि चलीं।
कलगान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भलीं॥
आनंदकंद बिलोकि दूलह सकल हिय हरषित भईं।
अंभोज अंबक अंबु उमँगि सुअंग पुलकावलि छईं॥

दो० जो सुष भा सियमातुमन, देषि राम बरबेष।
सो न सकहिं कहि कलपसत, सहस सारदा सेष॥

नयन नीर हठि मंगल जानी * परिछनि करहिं मुदितमन रानी

बेदबिदित अरु कुलआचारू * कीन्ह भलीबिधिसब ब्यवहारू
पंचसब्द धुनि मंगल गाना * पट पाँवडे परहिं बिधि नाना
करिआरती अरघ तिन्ह दीन्हा * राम गमन मंडप तब कीन्हा
दसरथ सहित समाज बिराजे * बिभवबिलोकि लोकपति लाजे
समयसमय सुर बरषहिं फूला * सांति पढहि महिसुर अनकूला
नभ अरु नगर कोलाहल होई * आपन पर कछु सुनइ न कोई
एहि बिधि राम मंडपहि आये * अरघ देइ आसन बैठाये

छंद

बैठारि आसन आरती करि निरषि बर सुष पावहीं।
मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं॥
ब्रह्मादि सुर बर बिप्रबेष बनाइ कौतुक देषहीं।
अवलोकि रघुकुलकमलरबिछबि सफल जीवनलेषहीं॥

दो० नाऊ बारी भाट नट, राम निछावरि पाइ।
मुदित असीसहिंनाइ सिर, हरष न हृदय समाइ॥

मिले जनक दसरथ अतिप्रीती * करि बैदिक लौकिक सब रीती
मिलत महा दोउ राज बिराजे * उपमा षोजि षोजि कबि लाजे
लही न कतहुँ हारि हिय मानी * इन्हसम एइ उपमा उर आनी
समधी देषि देव अनुरागे * सुमन बरषि जस गावन लागे
जग बिरंचि उपजावा जबते * देषे सुने ब्याह बहु तबते
सकलभाँतिसम साज समाजू * सम समधी देषे हम आजू
देवगिरा सुनि सुंदरि साँची * प्रीति अलौकिक दुहुँदिसि माची
देत पाँवडे अरघ सोहाये * सादर जनक मंडपहि ल्याये

छंद

मंडप बिलोकि बिचित्र रचना रुचिरता मुनिमन हरे।
निजपानि जनक सुजान सब कहँ आनि सिंहासन धरे॥
कुलइष्ट सरिस बसिष्ठ पूजे बिनयकरि आसिष लही।
कौसिकहि पूजत परमप्रीति कि रीति तौ न परै कही॥
दो॰ बामदेव आदिक रिषय, पूजे मुदित महीस।
दिये दिब्य आसन सबहि, सबसन लही असीस॥

बहुरि कीन्हि कोसलपति पूजा * जानि ईससम भाव न दूजा
कीन्ह जोरि कर बिनय बडाई * कहि निज भाग्य बिभव बहुताई
पूजे भूपति सकल बराती * समधी सम सादर सब भाँती
आसन उचित दिये सब काहू * कहौं कहा मुष एक उछाहू
सकल बरात जनक सनमानी * दान मान बिनती बर बानी
बिधिहरिहरदिसिपातिदिनराऊ * जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ
कपट बिप्रबर बेष बनाये * कौतुक देषहिं अति सचुपाये
पूजे जनक देवसम जाने * दिये सुआसन बिनु पहिचाने

छंद

पहिंचान को केहि जान सबहि अपान सुधि भोरी भई।
आनंदकंद बिलोकि दूलह उभय दिसि आनँदमई॥
सुर लषे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दये।
अवलोकि सीलसुभाउ प्रभुको बिबुध मनप्रमुदित भये॥
दो॰ रामचंद्र मुषचंद्रछबि, लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल, प्रेम प्रमोद न थोर॥

समउ बिलोकि बसिष्ट बोलाये * सादर सतानंद सुनि आये

बेगि कुअँरि अब आनहु जाई * चले मुदित मुनि आयसु पाई
रानी सुनि उपरोहित बानी * प्रमुदित सषिन समेत सयानी
बिप्रबधू कुलबृद्ध बोलाई * करि कुलरीति सुमंगल गाई
नारिबेष जे सुर बर बामा * सकल सुभाय सुंदरी स्यामा
तिन्हहिं देषि सुष पावहिं नारी * बिनु पहिचान प्रान ते प्यारी
बार बार सनमानहिं रानी * उमा रमा सारद सम जानी
सीय सवारि समाज बनाई * मुदित मंडपहि चली लवाई

छंद

चलिं ल्याइ सीतहि सषी सादर सजि सुमंगल भामिनी।
नव सप्त साजे सुंदरी सब मत्त कुंजरगामिनी॥
कलगान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन तालगति बर बाजहीं॥

दो० सोहति बनिताबृन्दमहँ, सहज सोहावनि सीय।
छबि ललनागन मध्यजनु, सुषमा तियकमनीय॥

सिय सुंदरता बरनि न जाई * लघुमति बहुत मनोहरताई
आवत देषि बरातिन्ह सीता * रूपरासि सब भाँति पुनीता
सबहि मनहिमन किए प्रनामा * देषि राम भये पूरनकामा
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता * कहि न जाइ उर आनँद जेता
सुर प्रनाम करि बरिषहिं फूला * मुनिअसीसधुनि मंगलमूला
गान निसान कोलाहल भारी * प्रेम प्रमोद मगन नर नारी
येहि बिधि सीय मंडपहि आई * प्रमुदित सांति पढहिं मुनिराई
तेहि अवँसर करबिधि ब्यवहारू * दुहुँ कुलगुरु सबकीन्ह अचारू

छंद

आचार करि गुरु गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अतिसुष पावहीं॥
मधुपर्क मंगल द्रब्य जो जेहि समय मुनि मनमहँ चहैं।
भरे कनक कोपर कलस सो तब लिये परिचारक रहैं॥
कुलरीति प्रीतिसमेत रबि कहि देत सब सादर कियो।
येहि भाँति देव पुजाइ सीतहिं सुभग सिंहासन दियो॥
सिय राम अवलोकनि परस्पर प्रेम काहु न लषि परै।
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कबि कैसे करै॥

दो॰ होमसमय तनुधरि अनल, अतिसुष आहुति लेहिं।
बिप्र बेष धरि बेद सब, कहि बिबाहबिधि देहिं॥

जनक पाटमहिषी जगजानी * सीयमातु किमि जाइ बषानी
सुजस सुकृत सुष सुंदरताई * सब समेटि बिधि रची बनाई
समौ जानि मुनिबरन्हबोलाई * सुनत सुआसिनि सादर ल्याई
जनकबामदिसि सोह सुनयना * हिमिगिरिसंग बनी जनु मयना
कनककलस मनिकोपर रूरे * सुचि सुगंध मंगल जल पूरे
निजकर मुदित राय अरु रानी * धरे राम के आगे आनी
पढहिं बेद मुनि मंगल बानी * गगन सुमनभरि अवँसर जानी
बर बिलोकि दंपति अनुरागे * पाँयँ पुनीत पषारन लागे

छंद

लागे पषारन पाँयँ पंकज प्रेमतन पुलकावली।
नभनगरगाननिसानजयधुनिउमँगिजनुचहुँदिसिचली॥
जे पदसरोज मनोजअरिउरसर सदैव बिराजहीं।

जे सकृत सुमिरत बिमलता मन सकलकलिमल भाजहीं ॥
जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकमई ।
मकरंद जिन्हको संभुसिर सुचिता अवधि सुरबरनई ॥
करि मधुपमन मुनि जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहैं।
ते पद पषारत भाग्यभाजन जनक जय जय सब कहैं ॥
बरकुआँरि करतल जोरि साषोचार दोउकुलगुरु करैं ।
भयो पानिग्रहन बिलोकिबिधि सुर मनुजमुनि आनदभरैं ॥
सुषमूल दूलह देषि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो ।
करि लोकबेद बिधान कन्यादान नृपभूषन कियो ॥
हिमवन्ताजिमि गिरिजामहेसहि हरिहि श्रीसागरदई ।
तिमिजनक रामहिं सिय समर्पी बिस्वकलकीरति नई ॥
क्यों करै बिनय बिदेह कियो बिदेह मूरति साँवरी ।
करि होम बिधिवत गाठि जोरी होनलागी भाँवरी ॥
दो० जयधुनि बंदी बेदधुनि, मंगलगान निसान ।
सुनि हरषहिं बरषहिं बिबुध, सुरतरुसुमन सुजान ॥
कुअँर कुआँरि कल भाँवरि देहीं * नयनलाभ सब सादर लेहीं
जाइ न बरनि मनोहर जोरी * जो उपमा कछु कहउँ सो थोरी
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं * जगमगानिमनिषंभन्ह माहीं
मनहुँ मदन रति धरि बहुरूपा * देषत राम बिबाह अनूपा
दरस लालसा सकुच न थोरी * प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी
भये मगन सब देषनहारे * जनक समान अपान बिसारे
प्रमुदित मुनिन्ह भाँवरी फेरी * नेगसहित सब रीति निबेरी
राम सीय सिर सेंदुर देहीं * सोभा कहि न जात बिधि केहीं

अरुनपराग जलज भरिनीके * ससिहिभूष अहि लोभ अमीके
बहुरि बसिष्ट दीन्ह अनुसासन * बर दुलहिनि बैठे एक आसन

छंद

बैठे बरासन राम जानकि मुदित मन दसरथ भए।
तन पुलक पुनिपुनि देषि अपने सुकृत सुरतरुफल नए॥
भरि भुअन रहा उछाह राम बिबाह भा सबही कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यह मंगलमहा॥
तब जनक पाइ बसिष्ट आयसु ब्याह साज सवाँरिकै।
मांडवी श्रुतिकीरति उर्मिला कुआँरि लईं हँकारिकै॥
कुसकेतुकन्या प्रथम जो गुन सील सुष सोभामई।
सब रीति प्रीति समेतकरि सो ब्याहि नृप भरतहि दई॥
जानकी लघुभगनी सकलसुंदरिसिरोमनि जानिकै।
सो जनक दीन्हीं ब्याहि लषनहिं सकलबिधि सनमानिकै॥
जेहि नाम श्रुतिकीरति सुलोचनि सुमुषि सबगुनआगरी।
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूपसीलउजागरी॥
अनुरूप बर दुलहिनि परस्पर लषि सकुचि हियहरषहीं।
सब मुदित सुंदरता सराहहिं सुमन सुरगन बरषहीं॥
सुंदरी सुंदर बरन सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीवउर चारिउ अवस्था बिभुन सहित बिराजहीं॥
दो॰ मुदित अवधपति सकलसुत, बधुनसमेत निहारि।
जनु पाए महिपालमनि, क्रियनसहितफलचारि॥
जस रघुबीर ब्याहबिधिबरनी * सकल कुआँर ब्याहे तेहिकरनी
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी * रहा कनक मनि मंडप पूरी

कंबल बसन बिचित्र पटोरे * भाँति भाँति बहुमोल न थोरे
गज रथ तुरग दास अरु दासी * धेनु अलंकृत कामदुहासी
बस्तु अनेक करि अकिमि लेषा * कहि न जाइ जानहिं जिन्ह देषा
लोकपाल अवलोकि सिहाने * लीन्ह अवधपति सब सुषमाने
दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा * उबरा सो जनवासहि आवा
तब करजोरि जनक मृदुबानी * बोले सब बरात सनमानी

छंद

सनमानि सकल बरात आदर दान बिनय बड़ाइकै।
प्रमुदित महामुनिबृंद बंदे पूजि प्रेम लड़ाइकै॥
सिरनाइ देव मनाइ सबसन कहत कर संपुट किये।
सुर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जलअंजलि दिये॥
करजोरि जनक बहोरि बंधु समेत कोसलरायसों।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभायसों॥
संबंध राजन रावरे हम बड़े अब सब बिधि भये।
यह राज साजसमेत सेवक जानिबी बिनु गथ लये॥
ये दारिका परिचारिका करि पालवी करुनामई।
अपराध छमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठ्यो दई॥
सुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान निधि समधी किये।
कहिजाति नहिं बिनती परस्पर प्रेमपरिपूरन हिये॥
बृंदारका गन सुमन बरषहिं राउ जनवासेहि चले।
दुंदुभी जयधुनि बेदधुनि नभ नगर कौतूहल भले॥
तब सषी मंगलगान करत मुनीस आयसु पाइकै।
दूलहदुलहिनिन्ह सहित सुंदरि चलीं कुहबर ल्याइकै॥

दो॰ पुनिपुनि रामहिं चितव सिय, सकुचति मनसकुचैन।
हरत मनोहर मीन छबि, प्रेम पियासे नैन॥

मा॰ पा॰ ११ दिन।

स्याम सरीर सुभाय सोहावन * सोभा कोटि मनोजलजावन
जावक जुत पदकमल सोहाये * मुनिमन मधुप रहत जिन्ह छाये
पीत पुनीत मनोहर धोती * हरति बालरबि दामिनि जोती
कल किंकिनि कटिसूत्र मनोहर * बाहुँ बिसाल बिभूषन सुंदर
पीत जनेउ महाछबि देई * कर मुद्रिका चोरि चित लेई
सोहत ब्याह साजसब साजे * उर आयत भूषन उर राजे
पीअर उपरना कांषा सोती * दुहुँ आँचरन्ह लगे मनि मोती
नयन कमलकल कुंडलकाना * बदन सकल सौंदर्यनिधाना
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा * भालतिलक रुचिरता निवासा
सोहत मौर मनोहर माथे * मंगल मय मुकता मनि गाथे

छंद

गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुरनारि सुर सुंदरी बरहि बिलोकि सब तृन तोरहीं॥
मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहीं।
सुर सुमन बरषहिं सूत मागध बंदि सुजस सुनावहीं॥
कुहबरहि आने कुअँर कुअँरि सुआसिनिन्ह सुषपाइकै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइकै॥
लहकौरि गौरि सिषाव रामहिं सीयसन सारद कहैं।
रनिवास हास बिलास रसबस जन्मको फल सब लहैं॥
निजपानि मनिमहँ देषि प्रतिमूरति सरूपनिधानकी।

चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह भयबस जानकी ॥
कौतुक बिनोद प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अलीं ।
बर कुअँरि सुंदरि सकल सषी लेवाइ जनवासहि चलीं ॥
तेहिं समय सुनिय असीस जहँ तहँ नगर नभ आनदमहा ।
चिरजीव जोरी चारु चार्‌यो मुदितमन सबहीं कहा ॥
जोगींद्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी ।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जयजयजय भनी॥

दो॰ सहित बधूटिन्ह कुअँर सब, तब आये पितु पास ।
सोभा मंगल मोद भरि, उमँगेउ जनुजनवास॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती * पठए जनक बोलाइ बराती
परत पावडे बसन अनूपा * सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा
सादर सबके पाय पषारे * जथाजोग पीढन्ह बैठारे
धोये जनक अवधपति चरना * सील सनेह जाइ नहिं बरना
बहुरि रामपदपंकज धोये * जे हरहृदयकमल महँ गोये
तीनिउँ भाइ रामसम जानी * धोये चरन जनक निजपानी
आसन उचित सबहिं नृपदीन्हे * बोलि सूपकारक सब लीन्हे
सादर लगे परन पनवारे * कनककीलमनि पान सँवारे

दो॰ सूपोदन सुरभी रपि[1], सुंदर स्वाद पुनीत ।
छनमहुँ सबके परुसिगे, चतुर सुवार बिनीत ॥

पंच कवलि करि जेंवन लागे * गारी गान सुन अतिअनुरागे
भाँति अनेक परे पकवाने * सुधासरिस नहिं जाइ बषाने
परुसन लगे सुवार सुजाना * बिंजन बिबिधि नामको जाना

१—घृतमाज्यं हविः सर्पिर्नवनीतं नवोद्धृतमित्यमरः ॥

चारिभाँति भोजनविधि गाई * एक एक बिधि बरनि न जाई
छरस रुचिर बिंजन बहुजाती * एक एक रस अगिनित भाँती
जेंवत देहिं मधुरधुनि गारी * लै लै नाम पुरुष अरु नारी
समय सोहावनि गारि बिराजा * हँसत राउ सुनि सहितसमाजा
एहि बिधि सबहीं भोजन कीन्हा * आदरसहित आचमन लीन्हा

दो० देइ पान पूजे जनक, दसरथ सहितसमाज।
जनवासेहि गवने मुदित, सकलभूप सिरताज॥

नित नूतन मंगल पुरमाहीं *निमिषसरिसदिनजामिनिजाहीं
बडे भोर भूपतिमनि जागे * जाचक गुनगन गावन लागे
देषि कुअँर बर बधुन्ह समेता * कहि किमि जात मोद मन जेता
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं * महाप्रमोद प्रेम मनमाहीं
करि प्रनाम पूजा कर जोरी * बोले गिरा अमिय जनु बोरी
तुम्हरी कृपा सुनहुँ मुनिराजा * भएउँ आजु मैं पूरन काजा
अब सब बिप्र बोलाइ गोसाईं * देहु धेनु सब भाँति बनाईं
सुनि गुरु करि महिपाल बडाई * पुनि पठए मुनिबृंद बोलाई

दो० बामदेव अरु देवरिषि, बाल्मीकि जाबालि।
आये मुनिबरनिकर तब, कौंसिकादितपसालि॥

दंडप्रनाम सबहि नृप कीन्हे * पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे
चारि लक्ष बर धेनु मगाईं * कामसुरभिसम सील सोहाईं
सबबिधिसकलअलंकृत कीन्हीं* मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं
करत बिनय बहु बिधि नरनाहू* लहेउँ आजु जग जीवनलाहू
पाइ असीस महीस अनंदा * लिये बोलि पुनि जाचकबृंदा
कनक बसन मनिहयगयस्यंदन* दिये बूझि रुचि रबिकुलनंदन

चले पढत गावत गुनगाथा * जयजयजय दिनकरकुलनाथा
एहि बिधि रामबिबाहउछाहू * सकइ न बरनि सहसमुष जाहू

दो॰ बार बार कौसिक चरन, सीस नाइ कह राउ।
यह सब सुख मुनिराज तव, कृपाकटाक्ष प्रभाउ॥

जनक सनेह सील करतूती * नृप सब राति सराहत बीती
दिन उठि बिदा अवधपति मागा * राषहिं जनक सहित अनुरागा
नित नूतन आदर अधिकाई * दिन प्रति सहसभाँति पहुनाई
नित नव नगर अनंद उछाहू * दसरथगमन सोहात न काहू
बहुत दिवस बीते एहि भाँती * जनु सनेहरजु बँधे बराती
कौसिक सतानंद तब जाई * कहा बिदेहँ नृपहिं समुझाई
अब दसरथ कहँ आयसु देहू * जद्यपि छांडि न सकहु सनेहू
भलेहिंनाथ कहि सचिव बोलाये * कहि जयजीव सीस तिन्ह नाये

दो॰ अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाउ।
भए प्रेमबस सचिव[1] सुनि, बिप्र सभासद राउ॥

पुरबासी सुनि चलिहि बराता * बूझत बिकल परस्पर बाता
सत्य गवन सुनि सबबिलषाने * मनहुँ सांझ सरसिज सकुचाने
जहँ जहँ आवत बसे बराती * तहँ तहँ सिद्ध चला बहुभाँती
बिबिधि भाँति मेवा पकवाना * भोजनसाज न जाइ बषाना
भरि भरि बसह अपार कँहारा * पठये जनक अनेक सुवारा
तुरग लाख रथ सहस पचीसा * सकल सँवारे नष अरु सीसा
मत्त सहस दस सिंधुर साजे * जिन्हहिं देषि दिसिकुंजर लाजे
कनक बसन मनिभरिभरि जाना * महिषी धेनु बस्तु बिधि नाना

१—सुदामा आदिक सचिव हैं॥

दो॰ दाइज अमिति न जाइकहि, दीन्ह बिदेहँ बहोरि।
जो अवलोकत लोकपति, लोकसंपदा थोरि॥

सब समाज एहि भाँति बनाई * जनक अवधपुर दीन्ह पठाई
चलिहि बरात सुनतसब रानी * बिकलमीनगन जिमिलघुपानी
पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं * देइ असीस सिषावन देहीं
होयेहु संतत पिअहि पिआरी * चिर अहिबात असीस हमारी
सासु ससुर गुरु सेवा करेहू * पतिरुष लषि आयसुअनुसरेहू
अतिसनेहबस सषी सयानी * नारिधरम सिषवहिं मृदुबानी
सादर सकल कुअँरि समुझाई * रानिन्ह बार बार उरलाई
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी * कहहिं बिरंचि रची कत नारी

दो॰ तेहि अवसर भाइन्ह सहित, राम भानुकुलकेतु।
चले जनकमंदिर मुदित, बिदाकरावन हेतु॥

चारिउ भाइ सुभाय सोहाये * नगर नारि नर देषन धाये
कोउ कहचलनचहतहहिंआजू * कीन्ह बिदेहँ बिदा कर साजू
लेहु नयन भरि रूप निहारी * प्रिय पाहुने भूप सुत चारी
को जानै केहि सुकृत सयानी * नयनअतिथिकीन्हेबिधिआनी
मरनसील जिमि पाउ पियूषा * सुरतरु लहै जनमकर भूषा
पाव नारकी हरिपद जैसे * इन्ह कर दर्सन हम कहँ तैसे
निरषि राम सोभा उर धरहू * निजमन फनि मूरतिमनि करहू
येहिबिधिसबहिंनयनफल देता * गये कुअँर सब राजनिकेता

दो॰ रूपसिंधु सब बंधु लषि, हरषि उठेउ रनिवासु।
करहिं निछावरि आरती, महामुदित मन सासु॥

देषि रामछबि अतिअनुरागीं * प्रेमबिबस पुनि पुनि पद लागीं

रही न लाज प्रीति उर छाई * सहज सनेह बरनि किमि जाई
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए * छरस असन अतिहेतु जेवाए
बोले राम सुअवसर जानी * सील सनेह सकुचमय बानी
राउ अवधपुर चहत सिधाये * बिदा होनहित हमहिं पठाये
मातु मुदित मन आयसु देहू * बालक जानि करब नित नेहू
सुनत बचन बिलषेउ रनिवासू * बोलि न सकहिं प्रेमबस आसू
हृदयलगाइ कुअँरि सबलीन्हीं * पतिन्हसौंपिबिनतीअतिकीन्ही

छंद

करि बिनय सिय रामहिं समर्पी जोरि कर पुनि पुनि कहै ।
बलिजाउँ तात सुजान तुम कहँ बिदितगति सबकी अहै ॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानवी ।
तुलसी सुसील सनेह लषि निजकिंकरी करि मानवी ॥

सो० तुम्ह परिपूरनकाम, जानसिरोमनि भावप्रिय ।
जनगुनग्राहँक राम, दोषदलन करुनाअयन ॥

अस कहि रही चरन गहि रानी * प्रेमपंक जनु गिरा समानी
सुनि सनेहसानी बर बानी * बहु बिधि राम सासु सनमानी
राम बिदा मागा कर जोरी * कीन्ह प्रनाम बहोरि बहोरी
पाइ असीस बहुरि सिर नाई * भाइन्हसहित चले रघुराई
मंजु मधुर मूरति उर आनी * भई सनेहसिथिल सब रानी
पुनि धीरज धरि कुअँरि हँकारी * बार बार भेंटहि महतारी
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी * बढी परस्पर प्रीति न थोरी
पुनिपुनिमिलति सषिनबिलगाई * बालबत्स जिमि धेनु लवाई

दो० प्रेमबिबस नर नारि सब, सषिनसहित रनिवासु ।

मानहुँ कीन्ह बिदेहँपुर, करुना बिरह निवासु ॥
सुक सारिका जानकी ज्याये * कनकपींजरन्हि राषि पढाये
ब्याकुल कहहिं कहां बैदेही * सुनि धीरज परिहरै न केही
भये बिकल मृग षग एहिभाँती * मनुजदसा कैसे कहि जाती
बंधुसमेत जनक तब आये * प्रेम पुलक लोचन जल छाये
सीय बिलोकि धीरता भागी * रहे कहावत परमबिरागी
लीन्हि राइ उर लाइ जानकी * मिटी महामरजाद ज्ञानकी
समुझावत सब सचिव सयाने * कीन्ह बिचार अनवसर जाने
बारहिं बार सुता उर लाई * सजि सुंदरि पालकी मगाई
दो० प्रेमबिबस परिवार सब, जानि सुलगन नरेस ।
कुअँरि चढाई पालकिन्ह, सुमिरे सिद्धगनेस ॥
बहुबिधि भूप सुता समुझाई * नारिधरम कुलरीति सिषाई
दासी दास दिये बहुतेरे * सुचि सेवक जे प्रिय सियकेरे
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी * होहिं सगुन सुभ मंगलरासी
भूसुर सचिव समेत समाजा * संग चले पहुँचावन राजा
समय बिलोकि बाजने बाजे * रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे
दसरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे * दान मान परिपूरन कीन्हे
चरनसरोजधूरि धरि सीसा * मुदित महीपति पाइ असीसा
सुमिरि गजानन कीन्ह पयाना * मंगलमूल सगुन भये नाना
दो० सुर प्रसून बरषहिं हरषि, करहिं अप्सरा गान ।
चले अवधपति अवधपुर, मुदित बजाइ निसान ॥
नृप करि बिनय महाजन फेरे * सादर सकल मागने टेरे
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे * प्रेम पोषि ठाढे सब कीन्हे

बार बार विरदावलि भाषी * फिरे सकल रामहिं उर राषी
बहुरि बहुरि कोसलपति कहँहीं * जनक प्रेमबस फिरन न चहँहीं
पुनि कह भूपति बचन सोहाये * फिरिअ महीस दूरि बडि आये
राउ बहोरि उतरि भए ठाढे * प्रेमप्रवाह विलोचन बाढे
तब विदेहँ बोले करजोरी * बचन सनेह सुधा जनु बोरी
करौं कवन विधि विनय बनाई * महाराज मोहि दीन्हि बडाई

दो० कोसलपति समधी सजन, सनमाने सब भाँति।
मिलनि परस्पर विनयअति, प्रीति न हृदय समाति॥

मुनिमंडलिहि जनकु सिरुनावा * आसिरबाद सबहि सन पावा
सादर पुनि भेंटे जामाता * रूपसील गुननिधि सब भ्राता
जोरि पंकरुहपानि सोहाये * बोले बचन प्रेम जनु छाये
राम करौं केहि भाँति प्रसंसा * मुनि महेस मनमानस हंसा
करहिं जोग जोगी जेहि लागी * कोह मोह ममता मद त्यागी
व्यापकब्रह्म अलष अबिनासी * चिदानंद निरगुन गुनरासी
मन समेत जेहि जान न बानी * तरकिनसकहिंसकलअनुमानी
महिमा निगम नेति नित कहई * जो तिहुँकाल एकरस रहई

दो० नयनबिषय मोकह भयेउ, सो समस्त सुषमूल।
सबुइ सुलभ जगजीवकहँ, भये ईस अनुकूल॥

सबहि भाँति मोहि दीन्हि बडाई * निजजन जानि लीन्ह अपनाई
होहिं सहसदस सारद सेषा * करहिं कलपकोटिक भरि लेषा
मोरभाग्य रउरे गुनगाथा * कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा
मैं कछु कहौं एक बल मोरे * तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरे

बार बार मागौं कर जोरे * मन परिहरै चरन जनि भोरे
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे * पूरनकाम राम परितोषे
करि बर बिनय ससुर सनमाने * पितु कौसिक बसिष्टसम जाने
बिनती बहुत भरतसन कीन्ही * मिलिसप्रेम पुनिआसिषदीन्ही

दो॰ मिले लषन रिपुसूदनहिं, दीन्हि असीस महीस।
भए परस्पर प्रेमबस, फिरिफिरि नावहिं सीस॥

बार बार करि बिनय बडाई * रघुपति चले संग सब भाई
जनक गहे कौसिकपग जाई * चरनरेनु सिर नयनन्हि लाई
सुनु मुनीसबर दरसन तोरे * अगम न कछु प्रतीति मन मोरे
जो सुष सुजस लोकपति चहहीं * करत मनोरथ सकुचत अहहीं
सोसुखसुजससुलभमोहिस्वामी * सबसिधितवदरसनअनुगामी
कीन्ह बिनय पुनि पुनि सिरनाई * फिरे महीस आसिषा पाई
चली बरात निसान बजाई * मुदित छोट बड सब समुदाई
रामहिं निरषि ग्रामनरनारी * पाइ नयनफल होहिं सुषारी

दो॰ बीच बीच बर बास करि, मगलोगन्ह सुष देत।
अवधसमीप पुनीत दिन, पहुँची आइ जनेत॥

हने निशान पणव बर बाजे * भेरि संषधुनि हय गय गाजे
झाँझि बीन डिंडिमी सोहाई * सरस राग बाजहिं सहनाई
पुरजन आवत अकनि बराता * मुदित सकल पुलकावलिगाता
निज निज सुंदर सदन सवारे * हाट बाट चौहट पुरद्वारे
गली सकल अरगजा सिचाई * जहँ तहँ चौकैं चारु पुराई
बना बजार न जाइ बषाना * तोरन केतु पताक बिताना
सफल पुंगफल कदलि रसाला * रोपे बकुल कदंब तमाला

लगे सुभग तरु परसत धरनी ✱ मनिमय आलबाल कलकरनी

दो० बिबिधिभाँति मंगलकलस, गृह गृह रचे सवारि ।
सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघुबरपुरी निहारि ॥

भूपभवन तेहि अवसर सोहा ✱ रचना देषि मदनमन मोहा
मंगल सगुन मनोहरताई ✱ रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई
जनु उछाह सब सहज सोहाये ✱ तनु धरि धरि दसरथगृह आये
देषनहेतु राम बैदेही ✱ कहहु लालसा होइ न केही
जूथजूथमिलि चलींसुआसिनि ✱ निजछबिनिदरहिंमदनबिलासिनि
कलस सुमंगल सजे आरती ✱ गावहिं जनु बहु बेष भारती
भूपतिभवन कोलाहल होई ✱ जाइ न बरनि समउ सुष सोई
कौसल्यादि राममहँतारी ✱ प्रेमबिबस तनदसा बिसारी

दो० दिये दान्ह बिप्रन बिपुल, पूजि गनेस पुरारि ।
प्रमुदित परमदरिद्र जनु, पाइ पदारथ चारि ॥

प्रेमप्रमोदबिबस सब माता ✱ चलहिं न चरनसिथिलभएगाता
रामदरसहित अतिअनुरागीं ✱ परिछनिसाज सजन सब लागीं
बिबिधि बिधान बाजने बाजे ✱ मंगल मुदित सुमित्रा साजे
हरद दूब दधि पल्लव फूला ✱ पान पुंगफल मंगलमूला
अक्षत अंकुर रोचन लाजा ✱ मंजुलमंगल तुलसि बिराजा
छुहे पुरटघट सहज सोहाये ✱ मदनसकुन जनु नीड बनाये
सगुन सुगन्ध न जाहिं बषानी ✱ मंगल सकल सजहिं सबरानी
रची आरती बहुत बिधाना ✱ मुदित करहिं कलमंगलगाना

दो० कनकथार भरि मंगलन्हि, कमलकरन्हि लिये मातु ।
चलीं मुदित परिछनि करन, पुलक पल्लवित गातु ॥

धूप धूम नभ मेचक भएऊ * सावन घन घमंड जनु छएऊ
सुरतरु सुमनमाल सुर बरषहिं * मनहुँबलाकअवलिमनकरषहिं
मंजुल मनिमय बंदनिवारे * मनहुँ पाकरिपु चाँप सवाँरे
प्रगटहिंदुरहिंअटन्हिपरभामिनि*चारुचपलजनुदमकहिंदामिनि
दुंदुभिधुनि घन गरजहिं घोरा * जाचक चातक दादुर मोरा
सुर सुगंध सुचि बरषहिं बारी * सुषी सकल ससि पुरनरनारी
समउ जानि गुरु आयसु दीन्हा * पुरप्रवेस रघुकुलमनि कीन्हा
सुमिरि संभु गिरिजा गनराजा * मुदित महीपति सहित समाजा

दो॰ होहिं सगुन बरषहिं सुमन, सुर दुंदुभी बजाइ।
बिबुधबधू नाचहिं मुदित, मंजुल मंगल गाइ॥

मागध सूत बंदि नट नागर * गावहिं जसु तिहुँलोक उजागर
जयधुनि बिमल बेद बरबानी * दसदिसि सुनिय सुमंगलसानी
बिपुल बाजने बाजन लागे * नभ सुर नगरलोग अनुरागे
बने बराती बरनि न जाहीं * महामुदितमन सुष न समाहीं
पुरबासिन्ह तब राउ जोहारे * देषत रामहिं भए सुषारे
करहिं निछावरि मनिगन चीरा * बारिबिलोचन पुलक सरीरा
आरति करहिं मुदित पुरनारी * हरषहिं निरषि कुँअरबर चारी
सिबिका सुभग ओहार उघारी * देषि दुलहिनिन्ह होहिं सुषारी

दो॰ एहि बिधि सबही देत सुष, आये राजदुआर।
मुदित मातु परिछन करहिं, बधुन्हसमेत कुमार॥

करहिं आरती बारहिं बारा * प्रेम प्रमोद कहै को पारा
भूषन मनि पट नाना जाती * करहिं निछावरि अगिनित भाँती
बधुन्ह समेत देषि सुत चारी * परमानंद मगन महतारी

पुनि पुनि सीयरामछबि देषी * मुदित सफल जगजीवन लेषी
सषी सीयमुष पुनि पुनि चाही * गान करहिं निज सुकृत सराही
बरषहिं सुमन छनहिंछन देवा * नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा
देषि मनोहर चारिउ जोरी * सारद उपमा सकल ढढोरी
देत न बनइ निपट लघु लागी * एकटक रही रूपअनुरागी

दो॰ निगमनीति करि मातुसब, अरघ पांवडे देत।
बधुन्हसहित सुतपरछि सब, चलीं लवाइ निकेत॥

चारि सिंहासन सहज सोहाये * जनु मनोज निज हाँथ बनाये
तिन्हपर कुआँरि कुआँर बैठारे * सादर पाय पुनीत पषारे
धूप दीप नैबेद बेदबिधि * पूजे बर दुलहिन मंगलनिधि
बारहिं बार आरती करहीं * ब्यजन चारुचामर सिरढरहीं
बस्तु अनेक निछावरि होहीं * भरी प्रमोद मातु सब सोहीं
पावा परमतत्त्व जनु जोगी * अमृत लहेउ जनु संततरोगी
जनमरंक जनु पारस पावा * अंधहि लोचनलाभ सोहावा
मूकबदन जनु सारद छाई * मानहु समर सूर जय पाई

दो॰ येहि सुषतें सतकोटिगुन, पावहिं मातु अनंद।
भाइन्ह सहित बिआहि घर, आये रघुकुलचंद॥
लोकरीति जननी करहिं, बर दुलहिनि सकुचाहिं।
मोद बिनोद बिलोकि बड़, राम मनहिं मुसुकाहिं॥

देव पितर पूजे बिधि नीकी * पूजी सकल बासना जीकी
सबहि बंदि मागहिं बरदाना * भाइन्ह सहित राम कल्याना
अंतरहित सुर आसिष देहीं * मुदित मातु अंचल भरि लेहीं
भूपति बोलि बराती लीन्हे * जान बसन मनि भूषन दीन्हे

आयसु पाइ राषि उर रामहिं * मुदितगये सबनिजनिजधामहिं
पुरनरनारि सकल पहिराये * घर घर बाजन लगे बधाये
जाचकजन जाचहिं जोइ जोई * प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई
सेवक सकल बजनिआं नाना * पूरन किये दान सनमाना

दो० देहिं असीस जुहारि सब, गावहिं गुनगनगाथ।
तब गुरु भूसुरसहित गृह, गवन कीन्ह रघुनाथ॥

जो बसिष्ट अनुसासन दीन्हा * लोक बेद बिधि सादर कीन्हा
भूसुरभीर देषि सब रानी * सादर उठीं भाग्य बडि जानी
पाय पषारि सकल अन्हवाये * पूजि भलीबिधि भूप जेवाये
आदर दान प्रेम परिपोषे * देत असीस सकल मन तोषे
बहुबिधि कीन्हि गाधिसुतपूजा * नाथ मोहिंसम धन्य न दूजा
कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी * रानिन्हसहित लीन्हि पगधूरी
भीतर भवन दीन्ह बरबासू * मन जोगवत सब नृप रनिवासू
पूजे गुरुपदकमल बहोरी * कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी

दो० बधुन्हसमेत कुमार सब, रानिन्हसहित महीस।
पुनि पुनि बंदत गुरुचरन, देत असीस मुनीस॥

बिनय कीन्ह उर अतिअनुरागे * सुत संपदा राषि सब आगे
नेग मागि मुनिनायक लीन्हा * आसिर्बाद बहुतबिधि दीन्हा
उरधरि रामहिं सीयसमेता * हरषिकीन्ह गुरु गवन निकेता
बिप्रबधू सब भूप बोलाई * चीर चारु भूषन पहिराई
बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं * रुचि[१] बिचारिपहिरावनि दीन्हीं
नेंगी नेगजोग सब लेहीं * रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं

१—रुचिरमयूषे शोभायामभिष्वंगाभिलाषयोरिति विश्वे॥

प्रिय पाहुने भूप जे जाने * ते सब भलीभाँति सनमाने
देव देषि रघुबीर बिबाहू * बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू

दो० चले निसान बजाइ सुर, निज निज पुर सुषपाइ।
कहत परस्पर रामजसु, प्रेम न हृदय समाइ॥

सबबिधि सबहि समदि नरनाहू * रहा हृदय भरि पूरि उछाहू
जहँ रनिवास तहां पगुधारे * सहित बधूटिन्ह कुअँर निहारे
लिये गोद करि मोदसमेता * को कहिसकै भयेउ सुष जेता
बधू सप्रेम गोद बैठारी * बार बार हिय हरषि दुलारी
देषि समाज मुदित रनिवासू * सबके उर अनंद कियो बासू
कहेउ भूप जिमि भएउ बिबाहू * सुनि सुनि हरष होइ सबकाहू
जनकराज गुन सील बडाई * प्रीति रीति संपदा सोहाई
बहुबिधि भूप भाट जिमि बरनी * रानी सब प्रमुदित सुनि करनी

दो० सुतन्ह समेत नहाइ नृप, बोलि बिप्र गुरुज्ञाति।
भोजन कीन्ह अनेकबिधि, घरी पंच गइ राति॥

मंगलगान करहिं बरभामिनि * भइ सुषमूल मनोहर जामिनि
अचै पान सबकाहूँ पाये * स्रग सुगंधभूषित छबिछाये
रामहिं देषि रजायसु पाई * निज निज भवन चले सिरनाई
प्रेम प्रमोद बिनोद बडाई * समउ समाज मनोहरताई
कहि न सकहिं सत सारद सेसू * बेद बिरंचि महेस गनेसू
सो मैं कहौं कवनबिधि बरनी * भूमिनाग सिर धरहिं कि धरनी
नृप सबभाँति सबहिं सनमानी * कहि मृदुबचन बोलाईं रानी
बधू लरिकिनी परघर आईं * राषेहु नयन पलककी नाईं

१-भूमि नाग=केचुवा। २-वधूर्जाया स्नुषा स्त्री चेत्यमरः॥

दो॰ लरिका अमित नींदबस, सयन करावहु जाइ।
अस कहि गे बिश्रामगृह, रामचरन चितु लाइ॥

भूपबचन सुनि सहज सोहाये * जटितकनकमनि पलँग डसाये
सुभग सुरभिपयफेन समाना * कोमल कलित सुपेती नाना
उपबरहन बर बरनि न जाहीं * स्रगसुगंधमनि मंदिर माहीं
रतन दीप सुठि चारु चदोवा * कहत न बनइ जान जेइँ जोवा
सेज रुचिर रचि राम उठाये * प्रेम समेत पलँग पौढाये
अज्ञा पुनि पुनि भाइन्ह दीन्हीं * निजनिजसेजसयनतिन्हकीन्हीं
देषि स्याम मृदु मंजुल गाता * कहहिं सप्रेम बचन सब माता
मारग जात भयावनि भारी * केहि बिधि तात ताडका मारी

दो॰ घोर निसाचर बिकट भट, समर गनहिं नहिं काहु।
मारे सहितसहाइ किमि, षल मारीच सुबाहु॥

मुनिप्रसादबलि तात तुम्हारी * ईश अनेक करबरे टारी
मषरषवारी करि दोउ भाई * गुरुप्रसाद सब बिद्या पाई
मुनितिअ तरी लगत पगधूरी * कीरति[1] रही भुवन भरिपूरी
कमठ पीठ पबि कूट कठोरा * नृपसमाज महँ सिवधनु तोरा
बिस्वबिजैयजस[2] जानकि पाई * आये भवन ब्याहि सब भाई
सकल अमानुष करम तुम्हारे * केवल कौसिककृपा सुधारे
आजु सुफल जग जनम हमारा * देषि तात बिधुबदन तुम्हारा
जे दिन गये तुम्हहिं बिनु देषे * ते बिरंचि जनि पारहिं लेषे

दो॰ राम प्रतोषी मातु सब, कहि बिनती बर बयन।

१, २–दोहा। होत जो अस्तुति दान ते, कीरति कहिअत ताहि।
होत बाहुबल ते सुजस, कबिकुल कहत सराहि॥

सुमिरि सम्भु गुरु बिप्रपद, किये नींदबस नयन ॥

नींदेउ बदन सोह सुठि लोना * मनहुँ सांझ सरसीरुह सोना
घर घर करहिं जागरन नारी * देहिं परस्पर मंगलगारी
पुरी बिराजति राजति रजनी * रानी कहहिं बिलोकहु सजनी
सुंदरि बधू सासु लै सोई * फनिकन्हजनु सिरमनिउरगोई
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे * अरुनचूड बर बोलन लागे
बंदी मागध गुनगन गाये * पुरजन द्वार जोहारन आये
बंदि बिप्र गुरु सुर पितु माता * पाइ असीस मुदित सब भ्राता
जननिन्ह सादर बदन निहारे * भूपतिसंग द्वार पगु धारे

दो० कीन्ह सौच सब सहजसुचि, सरित पुनीत नहाइ ।
प्रातक्रिया करि तात पहिं, आये चारिउ भाइ ॥

नवाह ३ दिन

भूप बिलोकि लिये उरलाई * बैठे हरषि रजायसु पाई
देषि राम सब सभा जुडानी * लोचन लाभ अवधि अनुमानी
पुनि बसिष्टमुनि कौसिक आये * सुभग आसननि मुनि बैठाये
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे * निरषि राम दोउ गुरु अनुरागे
कहहिं बसिष्ट धर्म इतिहाँसा * सुनहिं महीस सहित रनिवासा
मुनिमनअगमगाधिसुतकरनी * मुदितबसिष्ट बिपुलबिधिबरनी
बोले बामदेव सब साँची * कीरति कलित लोकतिहुँमाची
सुनि आनंद भयउ सबकाहू * राम लषन उर अतिहि उछाहू

१-शोणः कोकनदच्छविरित्यमरः ॥ रक्तोत्पलं कोकनदमित्यमरः ॥ चिन्तयामि तदाननं कुटिलभ्रूरोषभरेण । शोणपद्ममिवोपरि भ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥ इति गीतगोविन्दे ॥ टीकायामपि ॥ अथ रोषारुणे मुखशोणपद्मसाम्यं बोध्यम् ॥ शुचिस्मितां बिम्बफलाधरद्युतिशोणायमानद्विजकुंदकुड्मलाम् ॥ यदा चलन्ती कलहंसगामिनां सिंजत्कलानूपुरधामशोभिना ॥ १ ॥ भागवते दशमस्कन्धे उत्तरार्द्धे ॥

दो० मंगल मोद उछाह नित, जाहिं दिवस येहि भाँति।
उमगि अवध अनंदभरि, अधिकअधिकअधिकाति॥

सुदिन साधि कल कंकन छोरे * मंगल मोद बिनोद न थोरे
नित नव सुष सुर देषि सिहाहीं * अवधजनमजाचहिं बिधिपाहीं
बिस्वामित्र चलन नित चहहीं * राम सप्रेम बिनयबस रहहीं
दिन दिन सयगुन भूपतिभाऊ * देषि सराह महामुनिराऊ
मागत बिदा राउ अनुरागे * सुतन्ह समेत ठाढ भए आगे
नाथ सकल संपदा तुम्हारी * मै सेवक समेत सुत चारी
करबि सदाँ लरिकन्ह पर छोहू * दरसन देत रहब मुनि मोहू
अस कहि राउ सहित सुत रानी * परेउ चरन मुष आउ न बानी
दीन्हि असीस बिप्र बहुभाँती * चले न प्रीति रीति कहिजाती
राम सप्रेम संग सब भाई * आयसु पाइ फिरे पहुचाई

दो० रामरूप भूपति भगति, ब्याहउछाह अनंद।
जात सराहत मनहिंमन, मुदित गाधिकुलचंद॥

बामदेव रघुकुलगुरु ज्ञानी * बहुरि गाधिसुतकथा बषानी
सुनि मुनिसुजस मनहिमन राऊ * बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ
बहुरे लोग रजायसु भयेऊ * सुतन्ह समेत नृपति गृह गयेऊ
जहँ तहँ रामब्याहसब गावा * सुजस पुनीत लोक तिहुँ छावा
आये राम ब्याहि घर जबतें * बसे अनंद अवध सब तबतें
प्रभुबिबाह जस भएउ उछाहू * सकहिंन बरनि गिरा अहिनाहू
कबिकुल जीवन पावन जानी * राम सीय जस मंगलषानी
तेहितें मै कछु कहा बषानी * करन पुनीत हेतु निज बानी

छंद

निजगिरा पावनि करन कारन रामजस तुलसी कह्यो।
रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कबि कवनै लह्यो॥
उपबीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं।
बैदेहिं राम प्रसादते जन सर्बदाँ सुष पावहीं॥
सो० सिअ रघुबीर बिबाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्हकहँ सदाँ उछाह, मंगलायतन रामजस॥

मा० पा० १२ दिन

इति श्रीरामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल-
संतोषसंपादनोनाम प्रथमः सोपानः ॥

१—प्रशस्ताचरणं नित्यमप्रशस्ताविसर्जनम् ॥ एतद्धि मङ्गलं प्रोक्तं मुनयस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ बृहस्पतिः ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीरामचरितमानस

द्वितीय सोपान

अयोध्याकाण्ड

वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥

प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्ले वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य मे सदाऽस्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम्
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

दो० श्रीगुरुचरन सरोज रज, निज मनमुकुर सुधारि ।
बरनौं रघुबरबिमलजस, जो दायक फलचारि १ ॥

जबतें राम ब्याहि घर आये * नित नव मंगल मोद बधाये
भुवन चारि दस भूधर भारी * सुकृतमेघ बरषहिं सुषबारी
रिधि सिधि संपति नदी सोहाई * उमगि अवध अंबुधिकहँ आई

मनिगन पुर नर नारि सुजाती * सुचि अमोल सुंदर सब भाँती
कहि न जाइ कछु नगरबिभूती * जनु इतिनिय बिरंचि करतूती
सब बिधि सब पुरलोग सुषारी * रामचंद मुखचंद निहारी
मुदित मातु सब सषी सहेली * फलित बिलोकि मनोरथबेली
रामरूप गुन सील सुभाऊ * प्रमुदित होइं देषि सुनि राऊ

दो० सबके उर अभिलाष अस, कहहिं मनाइ महेस ।
आपु अछत जुबराजपद, रामहिं देहिं नरेस २ ॥

येक समय सब सहित समाजा * राजसभा रघुराज बिराजा
सकल सुकृत मूरति नरनाहू * रामसुजस सुनि अतिहि उछाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाषे * लोकप करहिं प्रीति रुष राषे
त्रिभुवन तीनि काल जगमाहीं * भूरिभाग दसरथ सम नाहीं
मंगलमूल राम सुत जासू * जो कछु कहिय थोर सब तासू
राय सुभाय मुकुर कर लीन्हा *बदन बिलोकि मुकुट सम कीन्हा
श्रवनसमीप भये सितकेसा * मनहुँ जरठपन अस उपदेसा
नृप जुबराज राम कहँ देहू * जीवन जनम लाहु किन लेहू

दो० यह बिचार उर आनि नृप, सुदिन सुअवसर पाइ ।
प्रेम पुलकितन मुदितमन, गुरहि सुनायेउ जाइ ३ ॥

कहै भुआल सुनिय मुनिनायक * भये राम सब बिधि सबलायक
सेवक सचिव सकल पुरबासी * जे हमरे अरि मित्र उदासी
सबहि रामप्रिय जेहि बिधि मोही * प्रभुअसीसजनुतनु धरि सोही
बिप्र सहित परिवार गोसाईं * करहिं छोह सब रौरेहि नाईं
जे गुरचरनरेनु सिर धरहीं * तेजनु सकल बिभव बस करहीं
मोहिसम यह अनुभयउ नदूजे * सब पायउँ रज पावनि पूजे

अब अभिलाष एक मन मोरे * पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे
मुनि प्रसन्न लषि सहज सनेहू * कहेउ नरेस रजायसु देहू

दो० राजन राउर नाम जस, सब अभिमत दातार ।
फलअनुगामी महिपमनि, मनअभिलाष तुम्हार ४॥

सब बिधि गुरु प्रसन्नजियजानी * बोलेउ राउ रहसि मृदुबानी
नाथ राम करि अहि जुबराजू * कहिअ कृपा करिकरिअसमाजू
मोहि अछत यह होइ उछाहू * लहहिं लोग सब लोचनलाहू
प्रभुप्रसाद सिव सबइ निबाहीं * यह लालसा एक मन माहीं
पुनि न सोचु तनु रहउ कि जाऊ * जेहि न होइ पाछे पछिताऊ
सुनि मुनि दसरथ बचन सोहाये * मंगल मोद मूल मन भाये
सुनु नृप जासु बिमुष पछिताहीं * जासु भजनबिनुजरनिनजाहीं
भयउ तुम्हार तनय सोइ स्वामी * राम पुनीत प्रेम अनुगामी

दो० बेगि बिलंब न करिय नृप, साजिय सबइ समाज ।
सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होहिं जुबराज ५॥

मुदित महीपति मंदिर आये * सेवक सचिव सुमंत्र बोलाये
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाये * भूप सुमंगल बचन सुनाये
प्रमुदित मोहि कहेउ गुरु आजू * रामहिं राय देहु जुबराजू
जौं पांचहि मत लागइ नीका * करहु हरषि हिय रामहिं टीका
मंत्री मुदित सुनत प्रियबानी * अभिमत बिरव परेउ जनुपानी
बिनती सचिव करहिं करजोरी * जियहु जगतपति बरिसकरोरी
जगमंगल भल काज बिचारा * बेगिहि नाथ न लाइय बारा
नृपहिमोद सुनि सचिवसुभाषा * बढ़त बौड जनु लही सुसाषा

दो० कहेउ भूप मुनिराजकर, जोइ जोइ आयसु होइ ।
रामराज अभिषेकहित, बेगि करहु सोइ सोइ ६ ॥
हरषि मुनीस कहेउ मृदुबानी * आनहुं सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल पाना * कहे नाम गनि मंगल नाना
चामर चमर बसन बहु भांती * रोमपाट पट अगिनित जाती
मनिगन मंगल बस्तु अनेका * जो जग जोग भूप अभिषेका
बेदबिहित कहि सकल बिधाना * कहेउ रचहु पुर बिबिधि बिताना
सफल रसाल पुंगफल केरा * रोपहु बीथिन्ह पुर चहुँ फेरा
रचहु मंजु मनि चौकइ चारू * कहेहु बनावन बेगि बजारू
पूजहु गनपति गुरुकुलदेवा * सब बिधि करहु भूमिसुरसेवा
दो० ध्वज पताक तोरन कलस, सजहु तुरग रथ नाग ।
सिरधरि मुनिबरबचन सब, निजनिज काजहिलाग ७ ॥
जो मुनीस जेहि आयसु दीन्हा * सोतेहिंकाजप्रथम जनु कीन्हा
बिप्र साधु सुर पूजत राजा * करत रामहित मंगल काजा
सुनत रामअभिषेक सोहावा * बाजु गहागह अवध बधावा
राम सीय तन सगुन जनाये * फरकहिं मंगल अंग सोहाये
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं * भरत आगमनसूचक अहहीं
भये बहुतदिन अति अवसेरी * सगुनप्रतीति भेंट प्रियकेरी
भरतसरिस प्रिय को जगमाहीं * इहइ सगुन फल दूसर नाहीं
रामहिं बंधु सोच दिनराती * अंडन कमठहृदउ जेहिंभांती
दो० येहि अवसर मंगल परम, सुनि रहसेउ रनिवासु ।
सोभत लषि बिधुबढतजनु, बारिधिबीचिबिलासु ८ ॥
प्रथम जाइ जिन्ह बचनसुनाये * भूषन बसन भूरि तिन्ह पाये

प्रेमपुलकि तन मन अनुरागीं * मंगल कलस सजन सब लागीं
चौकैं चारु सुमित्रा पूरी * मनिमय बिबिधि भांति अति रूरी
आनँद मगन राममहतारी * दिये दान बहु बिप्र हँकारी
पूजीं ग्रामदेबि सुर नागा * कहे बहोरि देन बलिभागा
जेहि बिधि होइ रामकल्यानू * देहु दया करि सो बरदानू
गावहिं मंगल कोकिलबयनी * बिधुबदनी मृगसावकनयनी

दो० रामराजअभिषेक सुनि, हिय हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब, बिधि अनुकूल बिचारि ९ ॥

तब नरनाहँ बसिष्ट बोलाये * रामधाम सिष देन पठाये
गुरुआगमनु सुनत रघुनाथा * द्वार आइ पद नायेउ माथा
सादर अरघ देइ घर आने * सोरह भांति पूजि सनमाने
गहे चरन सियसहित बहोरी * बोले राम कमल कर जोरी
सेवकसदन स्वामिआगमनू * मंगलमूल अमंगलदमनू
तदपि उचित जन बोलि सप्रीती * पठइअ काज नाथ असि नीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू * भयेउ पुनीत आजु यह गेहू
आयसु होइ सो करौं गोसांई * सेवक लहै स्वामिसेवकाई

दो० सुनि सनेहसाने बचन, मुनि रघुबरहि प्रसंस।
राम कस न तुम्ह कहहु अस, हंसबंसअवतंस १० ॥

बरनि रामगुनसीलसुभाऊ * बोले प्रेमपुलकि मुनिराऊ
भूप सजेउ अभिषेकसमाजू * चाहत देन तुम्हहिं जुबराजू
राम करहु सब संजम आजू * जौं बिधि कुसल निबाहै काजू
गुरु सिष देइ रायपहिं गयेऊ * रामहृदय अस बिसमउ भयेऊ
जनमे एक संग सब भाई * भोजन सयन केलि लरिकाई

करनबेध उपबीत बिआहा * संग संग सब भये उछाहा
बिमलबंस यह अनुचित एकू * बंधुबिहाइ बडेहि अभिषेकू
प्रभु सप्रेम पछितानि सोहाई * हरउ भगतमनकै कुटिलाई

दो० तेहिं अवसर आये लषन, मगन प्रेम आनंद ।
सनमाने प्रिअ बचन कहि, रबिकुलकैरवचंद ११ ॥

बाजहिं बाजन बिबिधि बिधाना * पुरप्रमोद नहिं जाइ बषाना
भरतआगमन सकल मनावहिं * आवहिं बेगि नयनफल पावहिं
हाट बाट घर गली अथाई * कहहिं परस्पर लोग लोगाई
कालि लगन भलि केतिकबारा * पूजिहि बिधि अभिलाष हमारा
कनक सिंहासन सीयसमेता * बैठहिं राम होइ चितचेता
सकल कहहिं कब होइहि काली * बिघ्न मनावहिं देव कुचाली
तिन्हहिं सोहाय न अवध बधावा * चोरहि चंदिनि राति न भावा
सारद बोलि बिनय सुर करहीं * बारहिं बार पाय लै परहीं

दो० बिपति हमारि बिलोकि बडि, मातु करिअ सोइ आजु ।
राम जाहिं बन राज तजि, होइ सकल सुरकाजु १२ ॥

सुनि सुरबिनय ठाढि पछिताती * भइउँ सरोजबिपिन हिमिराती
देषि देव पुनि कहहिं निहोरी * मातु तोहि नहिं थोरिउ षोरी
बिसमय हरष रहित रघुराऊ * तुम्ह जानहु सब रामप्रभाऊ
जीव कर्मबस सुष दुषभागी * जाइअ अवध देवहितलागी
बार बार गहि चरन सकोची * चलीबिचारि बिबुधमतिपोची
ऊंच निवास नीच करतूती * देषि न सकहिं पराइ बिभूती
आगिल काज बिचारि बहोरी * करिहहिं चाह कुसलकबि मोरी
हरषि हृदय दसरथपुर आई * जनु ग्रहदसा दुसह दुषदाई

दो० नाम मंथरा मंदमति, चेरी कैकय केरि।
अजसपेटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि १३॥
दीष मंथरा नगर बनावा * मंजुल मंगल बाजु बधावा
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू * रामतिलक सुनि भा उरदाहू
करै बिचार कुबुद्धि कुजाती * होइ अकाज कवनि बिधि राती
देषिलागि मधु कुटिलकिराती * जिमि गवँतकइ लेउँ केहिभांती
भरतमातुपहिं गइ बिलषानी * का अनमनिहसि कह हँसि रानी
उतरु देइ नहिं लेइ उसांसू * नारिचरित करि ढारइ आंसू
हँसि कह रानि गाल बड तोरे * दीन्हि लषन सिष अस मन मोरे
तबहुँ न बोलि चेरि बडिपापिनि * छाडइ स्वास कारिजनु सांपिनि
दो० सभयरानिकह कहसिकिन, कुसल राम महिपाल।
लषन भरत रिपुदमन सुनि, भा कुबरी उरसाल १४॥
कत सिषदेइ हमहिं कोउ माई * गाल करब केहिकर बल पाई
रामहिं छाडि कुसल केहि आजू * जिन्हहिं जनेसु देइ जुबराजू
भयउ कौसिलहिबिधिअतिदाहिन * देषत गरब रहत उर नाहिन
देषहु कस न जाइ सब सोभा * जो अवलोकि मोर मन छोभा
पूत बिदेश न सोच तुम्हारे * जानतिहहु बस नाह हमारे
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई * लषहु न भूपकपटचतुराई
सुनिप्रियबचनमलिनमनजानी * झुकी रानि अवरहु अरगानी
पुनि अस कबहुँ कहसि घरफोरी * तब धरि जीभ कढावौं तोरी
दो० काने षोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि।
तिअबिसेषि पुनि चेरिकहि, भरतमातु मुसुकानि १५॥
प्रिअबादिनि सिषदीन्हेउँतोही * सपनेहुँ तोपर कोप न मोही

सुदिन सुमंगलदायक सोई * तोर कहा फुर जेहिदिन होई
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई * एह दिनकरकुलरीति सोहाई
रामतिलक जौं सांचेहु काली * देउँ मांगु मनभावत आली
कौसल्यासम सब महतारी * रामहिं सहज सुभाय पियारी
मोपर करहिं सनेह बिसेषी * मैं करि प्रीति परीक्षा देषी
जौं बिधि जन्मदेइ करि छोहू * होहिं राम सिय पूतु पतोहू
प्रानते अधिक राम प्रिय मोरे * तिन्हके तिलक छोभ कस तोरे

दो॰ भरतसपथ तोहि सत्य कहु, परिहरि कपट दुराउ।
हरषसमय विसमउ करसि, कारन मोहि सुनाउ १६॥

एकहिंबार आस सब पूजी * अब कछु कहब जीभ करिदूजी
फोरइ जोग कपारु अभागा * भलौ कहत दुष रौरेहिं लागा
कहहिं झूठि फुरि बात बनाई * ते प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई
हमहुँ कहब अब ठकुरसोहाती * नाहिं तौ मौन रहब दिनराती
करिकुरूप बिधि परबस कीन्हा * बवासोलुनिय लहियजो दीन्हा
कोउ नृप होउ हमहिं का हानी * चेरि छांड़ि अब होब कि रानी
जारइ जोग सुभाव हमारा * अनभल देषि न जाइ तुम्हारा
तातें कछुक बात अनुसारी * छमिय देबि बडि चूक हमारी

दो॰ गूढ कपट प्रियबचन सुनि, तीय अधरबुधि रानि।
सुरमायाबस बैरिनिहिं, सुहृदजानि पतिआनि १७॥

सादर पुनि पुनि पूंछति वोही * सबरीगान मृगी जनु मोही
तसि मतिफिरी अहइ जसि भावी * रहसी चेरि घात जनु फावी
तुम्ह पूंछहु मैं कहत डेराऊँ * धरेउ मोर घरफोरी नाऊँ
सजिप्रतीति बहुबिधिगढिछोली * अवध साढसाती तब बोली

प्रिय सियराम कहा तुम्ह रानी * रामहिं तुम्ह प्रिय सो फुर बानी
रहा प्रथम अब ते दिन बीते * समय फिरें रिपु होहिं पिरीते
भानु कमलकुल पोषनिहारा * बिनु जल जारिकरइ सोइ छारा
जर तुम्हारि चह सवति उषारी * रूँधहु करि उपाउ बरबारी

दो० तुम्हहिं न सोच सोहाग बल, निजबस जानहु राउ।
मनमलीन मुहुँ मीठ नृप, राउर सरलसुभाउ १८॥

चतुर गँभीर राममहतारी * बीच पाइ निजबात सँवारी
पठये भरत भूप ननिऔरे * राममातु मत जानब रौरे
सेवहिं सकल सवति मोहि नीके * गरबित भरतमातु बल पीके
साल तुम्हार कौसिलहि माई * कपट चतुर नहिं होइ जनाई
राजहि तुम्हपर प्रेम बिसेषी * सवति सुभाउ सकइ नहिं देषी
रचि प्रपंच भूपहि अपनाई * रामतिलकहित लगन धराई
एह कुल उचित रामकहँ टीका * सबहि सोहाइ मोहि सुठि नीका
आगिलिबात समुझि डर मोही * देइ दैव फिरि सो फल वोही

दो० रचिपचि कोटि कुटिलपन, कीन्हेसि कपटप्रबोध।
कहेसि कथा सत सवति कै, जेहिंबिधि बाढबिरोध १६॥

भावीबस प्रतीति उर आई * पूछ रानि पुनि सपथ देवाई
का पूछहु तुम्ह अजहुँ न जाना * निजहित अनहित पसु पहिचाना
भयउ पाषु दिन सजत समाजू * तुम्ह पाई सुधि मोहिसन आजू
षाइअ पहिरिअ राज तुम्हारे * सत्य कहे नहिं दोषु हमारे
जौं असत्य कछु कहब बनाई * तौ बिधि देइहि हमहिं सजाई
रामहिं तिलक कालि जौं भयेऊ * तुम्हकहँ बिपतिबीजु बिधि बयेऊ
रेष षँचाइ कहौं बलभाषी * भामिनि भइहु दूध कै माषी

जौं सुतसहित करहु सेवकाई * तौ घर रहहु न आन उपाई

दो० कद्रू बिनतहि दीन्ह दुष, तुम्हहिं कौसिला देव।
भरतु बंदिगृह सेइहहिं, लषनु राम के नेव २०॥

कैकयसुता सुनत कटुबानी * कहि न सकइ कछुसहमिसुषानी
तन पसेउ कदली जिमि कांपी * कुबरी दसन जीभ तब चांपी
कहि कहि कोटिक कपटकहानी * धीरज धरहु प्रबोधेसि रानी
कीन्हेसि कठिन पढाइ कुपाठू * जिमि न नवइ फिरि उकठाकाठू
फिराकरम प्रियलागि कुचाली * बकिहि सराहइ मानि मराली
सुनु मंथरा बात फुरि तोरी * दहिनआंषि फरकै नित मोरी
दिनप्रति देषौं राति कुसपने * कहउँ न तोहि मोहबस अपने
कहा करौं सषि सूध सुभाऊ * दाहिन बाम न जानउँ काऊ

दो० अपने चलत न आजुलगि, अनभल काहुक कीन्ह।
केहि अघ एकहिंबार मोहि, दैव दुसह दुष दीन्ह२१॥

नैहर जनम भरब बरु जाई * जियत न करबि सवतिसेवकाई
अरिबस दैव जिआवत जाही * मरननीक तेहि जीव न चाही
दीनबचन कह बहुबिधि रानी * सुनि कुबरी तिअ माया ठानी
अस कस कहहु मानिमन ऊना * सुष सोहाग तुम्हकहँ दिनदूना
जेहिं राउर अति अनभल ताका * सोइ पाइहि यह फल परिपाका
जबतें कुमत सुना मैं स्वामिनि * भूष न बासर नींद न जामिनि
पूंछेउँ गुनिन्ह रेष तिन्ह षांची * भरत भुआल होहिं यह सांची
भामिनि करहु तौ कहौं उपाऊ * है तुम्हरी सेवाबस राऊ

दो० परौं कूप तुव बचन पर, सकौं पूत पति त्यागि।
कहसि मोर दुष देषि बड, कस न करब हितलागि २२॥

कुबरी करी कबुली कैकेई * कपट छुरी उर पाहन टेई
लषै न रानि निकट दुष कैसे * चरइ हरिततिन बलिपसु जैसे
सुनत बात मृदु अंत कठोरी * देति मनहुँ मधु माहुर घोरी
कहइ चेरि सुधि अहइ कि नाहीं * स्वामिनि कहेहु कथा मोहि पाहीं
दुइ बरदान भूप सन थाती * मागहु आजु जुडावहु छाती
सुतहि राज रामहिं बनबासू * देहु लेहु सब सवतिहुलासू
भूपति रामसपथ जब करई * तब मागेहु जेहि बचन न टरई
होइ अकाज आजु निसि बीते * बचन मोर फुर मानहु जीते

दो० बड कुघातकरि पातकिनि, कहेसि कोपगृह जाहु।
काज सवारेहु सजग सब, सहसा जनि पतियाहु २३॥

कुबरिहि रानि प्रानप्रिअ जानी * बार बार बडि बुद्धि बषानी
तोहि सम हितु न मोर संसारा * बहेजात कै भइसि अधारा
जौं बिधि पुरव मनोरथ काली * करौं तोहि चषपूतरि आली
बहुबिधि चेरिहि आदर देई * कोपभवन गवनी कैकेई
बिपतिबीजु बरषारितु चेरी * भुइँ भइ कुमति केकई केरी
पाइ कपट जलु अंकुर जामा * बर दोउ दलदुषफल परिनामा
कोप समाज साजि सब सोई * राज करत निज कुमति बिगोई
राउर नगर कोलाहल होई * यह कुचालि कछु जान न कोई

दो० प्रमुदित पुर नर नारि सब, सजहि सुमंगलचार।
इकप्रबिसहिं इकनिर्गमहिं, भीर भूपदरबार २४॥

बालसषा सुनि हिय हरषाहीं * मिलि दसपांच रामपहिंजाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी * पूंछहिं कुसल षेम मृदुबानी
फिरहिं भवन प्रिय आयसु पाई * करत परस्पर राम बडाई

को रघुबीर सरिस संसारा * सील. सनेह निबाहनि हारा
जेहिजेहि जोनिकरमबसभ्रमहीं * तहँ तहँ ईस देउ यह हमहीं
सेवक हम स्वामी सियनाहू * होहु नाथ एहि वोर निबाहू
अस अभिलाष नगर सबकाहू * कैकयसुता हृदय अतिदाहू
को न कुसंगति पाइ नसाई * रहै न नीच मते चतुराई

दो० सांझ समै सानंद नृप, गयउ कैकईगेह।
गवननिठुरतानिकटकिय, जनु धरि देह सनेह २५॥

कोपभवन सुनि सकुचे राऊ * भयबस अगहुँउ परै न पाऊ
सुरपति बसैं बाहँबल जाके * नरपति सकल रहहिं रुषताके
सोसुनितिय रिस गयउ सुषाई * देषहु काम प्रताप बडाई
सूल कुलिस असि अँगवनिहारे * ते रतिनाथ सुमनसर मारे
सभय नरेस प्रिया पहि गयेऊ * देषि दसा दुष दारुन भयेऊ
भूमिसयन पट मोट पुराना * दिये डारि तन भूषन नाना
कुमतिहि कस कुबेषता फाबी * अनअहिबात सूच जस भाबी
जाइ निकट नृप कह मृदुबानी * प्रानप्रिआ केहि हेतु रिसानी

छंद

केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि निवारई।
मानहुँ सरोष भुअंगभामिनि बिषम भांति निहारई॥
दोउ बासना रसना दसनबर मरम ठाहर देषई।
तुलसी नृपति भवतब्यताबस कामकौतुक लेषई॥

सो० बार बार कह राउ, सुमुषि सुलोचनि पिकबचनि।
कारन मोहि सुनाउ, गजगामिनि निजकोपकर २६॥

अनहित तोर प्रिया केइं कीन्हा * केहिदुइसिर केहिजमु चहलीन्हा

कहु केहि रंकहि करौं नरेसू * कहु केहि नृपहि निकासौं देसू
सकौं तोर अरि अमरउ मारी * काह कीट बपुरे नर नारी
जानसि मोर सुभाउ बरोरू * मन तव आनन चंद चकोरू
प्रिया प्रान सुत सरबस मोरे * परिजन प्रजा सकल बस तोरे
जौं कछु कहउँ कपट करि तोही * भामिनि रामसपथ सत मोही
बिहँसि मांगु मनभावति बाता * भूषन सजहि मनोहर गाता
घरी कुघरी समुझि जिअ देषू * बेगि प्रिआ परिहरहि कुबेषू

दो० एहसुनि मनगुनि सपथबडि, बिहँसि उठी मतिमंद।
भूषन सजति बिलोकि मृग, मनहुँ किरातिनिफंद २७॥

पुनि कह राउ सुहृद जिअ जानी * प्रेम पुलकि मृदु मंजुल बानी
भामिनि भएउ तोर मनभावा * घर घर नगर अनंदबधावा
रामहिं देउँ कालि जुबराजू * सजहि सुलोचनि मंगलसाजू
दलकि उठेउ सुनि हृदय कठोरू * जनु छुइ गयउ पाक बरतोरू
ऐसिउ पीर बिहँसि तेहि गोई * चोरनारि जिमि प्रगट न रोई
लषी न भूप कपटचतुराई * कोटि कुटिल मनि गुरू पढाई
जद्यपि नीतिनिपुन नरनाहू *नारिचरित जलनिधि अवगाहू
कपट सनेह बढाइ बहोरी * बोली बिहँसि नयन मुहँ मोरी

दो० मांगु मांगु पै कहहु पिअ, कबहुं न देहु न लेहु।
देन कहेउ बरदान दुइ, तेउ पावत संदेहु २८॥

जानेउँ मरम राउ हँसि कहई * तुम्हहिं कोहाब परमप्रिअ अहई
थाती राषि न मांगेहु काऊ * बिसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ
झूठेहु हमहिं दोस जनि देहू * दुइ कै चारि मांगि मकु लेहू
रघुकुलरीति सदां चलि आई * प्रान जाउ बरु बचन न जाई

नहिं असत्यसम पातकपुंजा * गिरिसम होहिं कि कोटिक गुंजा
सत्यमूल सब सुकृत सोहाये * बेद पुरान बिदित मुनि गाये
तेहिपर रामशपथ करिआई * सुकृत सनेह अवधि रघुराई
बात दिढाइ कुमति हँसि बोली * कुमतु कुबिहग कुलह जनु षोली

दो० भूपमनोरथ सुभग बनु, सुष सुबिहंगसमाजु।
भिल्लिनि जिमिछांडनचहति, बचनु भयंकर बाजु २९॥

मा० पा० ॥ १३ ॥

सुनहु प्रानप्रिअ भावत जीका * देहु एक बर भरतहि टीका
मांगहुँ दूसर बर कर जोरी * पुरवहु नाथ मनोरथ मोरी
तापस बेष बिसेष उदासी * चौदह बरिष राम बनबासी
सुनि सो बचन भूप हिअ सोकू * ससिकर छुअत बिकलजिमिकोकू
गयेउ सहमि नहिं कछु कहि आवा * जनु सचान बन झपटेउ लावा
बिबरन भयेउ निपट नरपालू * दामिनि हनेउँ मनहुँ तरुतालू
माथे हाँथ मूंदि दोउ लोचन * तनुधरि सोचलागु जनु सोचन
मोर मनोरथ सुरतरुफूला * फरतकरिनि जिमि हतेउ समूला
अवध उजारि कीन्ह कैकेई * दीन्हेसि अचल बिपति कै नेई

दो० कवने अवँसर का भएउ, गएउँ नारि बिस्वास।
जोगसिद्धिफलसमयजिमि, जतिहि अबिद्यानास ३०॥

येहिबिधि राउ मनहिंमन झाषा * देषि कुभांति कुमति मनमाषा
भरत कि राउर पूत न होहीं * आनेहुँ मोल बेसाहि कि मोहीं
जो सुनि सर अस लाग तुम्हारे * काहे न बोलेहु बचन सँभारे
देहु उतरु अरु कहहु कि नाहीं * सत्यसन्ध तुम्ह रघुकुलमाहीं
देन कहेहु अब जनि बरु देहू * तजहु सत्य जग अपजस लेहू

सत्य सराहि कहेउ बर देना * जानेहुँ लेइहि मांगि चबेना
सिबिदधीचिबलि जोकछुभाषा * तनु धनु तजेउ बचनु पनु राषा
अति कटुबचन कहति कैकेई * मानहुँ लोन जरे पर देई

दो॰ धरमधुरंधर धीर धरि, नयन उघारे राय।
सिरधुनि लीन्हि उसास असि, मारेसि मोहिं कुठाय३१॥

आगे दीष जरति रिस भारी * मनहुँ रोष तरवारि उघारी
मूठि कुबुद्धि धार निठुराई * धरी कूबरी सान बनाई
लषी महीप कराल कठोरा * सत्य कि जीवन लेइहि मोरा
बोलेउ राउ कठिन करि छाती * बानी सबिनय तासु सोहाती
प्रिआ बचन कस कहसि कुभांती * भीरु प्रतीति प्रीति करि हांती
मोरे भरत राम दुइ आंषी * सत्य कहौं करि संकर साषी
अवसि दूत मैं पठउब प्राता * ऐहहिं बेगि सुनत दोउ भ्राता
सुदिन सोधि सब साजु सजाई * देउँ भरतकहँ राजु बजाई

दो॰ लोभु न रामहिं राजुकर, बहुत भरत पर प्रीति।
मैं बड़ छोट बिचारि जिअ, करत रहेउँ नृपनीति ३२॥

रामसपथ सत कहउ सुभाऊ * राममातु कछु कहेउ न काऊ
मैं सब कीन्ह तोहि बिनु पूँछे * तेहिंते परेउ मनोरथ छूँछे
रिस परिहरु अब मंगलसाजू * कछु दिन गये भरत जुबराजू
येकहि बात मोहिं दुष लागा * बर दूसर असमंजस मागा
अजहूँ हृदय जरत त्यहि आँचा * रिस परिहाँस कि साँचेहु साँचा
कहु तजि रोष रामअपराधू * सब कोउ कहइ राम सुठि साधू
तुहूं सराहसि करसि सनेहू * अब सुनि मोहिं भयउ संदेहू
जासु सुभाव अरिहु अनुकूला * सो किमि करिहि मातु प्रतिकूला

दो० प्रिया हाँस रिस परिहरहि, मांगु बिचारि बिबेकु।
जेहि देषउँ अब नयनभरि, भरतराजुअभिषेकु ३३ ॥

जिऐ मीन बरु बारिबिहीना * मनिबिनुफनिक जिऐ दुषदीना
कहउँ सुभाउ न छलु मनमाहीं * जीवन मोर राम बिनु नाहीं
समुझि देषु जिअ प्रिया प्रबीना * जीवन राम दरस आधीना
सुनिमृदुबचनकुमतिअतिजरई * मनहुँ अनल आहुतिघृत परई
कहइ करहु किन कोटि उपाया * इहां न लागिहि राउरि माया
देहु कि लेहु अजस करि नाहीं * मोहि न बहुत परपंच सोहाँहीं
राम साधु तुम्ह साधु सयाने * राममातु भलि सब पहिंचाने
जस कौसिला मोर भल ताका * तसफलउन्हहिं देउँकरि साका

दो० होत प्रात मुनिबेष धरि, जौं न राम बन जाहिं।
मोर मरन राउर अजसु, नृप समुझिय मनमाहिं ३४ ॥

अस कहि कुटिल भई उठिठाढी * मानहु रोषतरंगिनि बाढी
पाप पहार प्रगट भइ सोई * भरी क्रोधजल जाइ न जोई
दोउ बर कूल कठिन हठधारा * भँवर कूबरी बचन प्रचारा
ढाहत भूपरूप तरु मूला * चली बिपतिबारिधि अनुकूला
लषी नरेस बात सब सांची * तिअमिसु मीचु सीसपर नाची
गहि पद बिनय कीन्हि बैठारी * जनिदिनकरकुल होसि कुठारी
मांगु माथ अबहीं देउँ तोही * रामबिरह जनि मारसि मोही
राषु रामकहँ जेहि तेहिभांती * नाहिंतौजरिहिजनमभरिछाती

दो० देषीब्याधि असाधि नृप, परेउ धरनि धुनिमाथ।
कहत परम आरतबचन, राम राम रघुनाथ ३५ ॥

ब्याकुल राउ सिथिल सबगाता * करिनिकलपतरुमनहुँ निपाता

कंठसूष मुष आउ न बानी * जिनु पाठीन दीन बिनु पानी
पुनि कह कटु कठोर कैकेई * मनहुँ घावमहँ माहुर देई
जौं अंतहु अस करतब रहेउ * माँगु माँगु तुम्ह केहिबल कहेऊ
दुइ कि होहिं एकसमै भुआला * हँसब ठठाइ फुलाउब गाला
दानि कहाउब अरु कृपिनाई * होइ कि छेम कुसल रौताई
छांडहु बचन कि धीरजु धरहू * जनि अबलाजिमि करुना करहू
तनु तिअ तनय धाम धनधरनी * सत्यसंध कहँ त्रिनसम बरनी

दो० मरमबचन सुनि राउ कह, कहु कछु दोष न तोर।
लागेउ तोहि पिसाचजिमि, काल कहावत मोर ३६॥

चहत न भरत भूपतहि भोरें * बिधिबसकुमतिबसीजिअतोरें
सो सब मोर पाप परिनामू * भएउ कुठाहर जेहि बिधि बामू
सुबसबसिहिफिरिअवधसोहाई * सब गुनधाम रामप्रभुताई
करिहहिं भाइ सकल सेवकाई * होइहि तिहुँ पुर रामबडाई
तोर कलङ्क मोर पछिताऊ * मुएहुँ न मिटिहि न जाइहिकाऊ
अब तोहि नीक लागु करु सोई * लोचन ओट बैठु मुहँ गोई
जबलगि जिअउँ कहौं करजोरी * तबलगिजनिकछुकहसिबहोरी
फिरि पछितैहसि अंत अभागी * मारसि गाइ नहारू लागी

दो० परेउ राउ कहि कोटि बिधि, काहें करसि निदान।
कपटसयानि न कहति कछु, जागतिमनहुँ मसान ३७॥

राम राम रटि बिकल भुआलू * जनु बिनु पंष बिहंग बिहालू
हृदय मनाव भोर जनि होई * रामहिं जाइ कहै जनि कोई
उदउ करहु जनि रबि रघुकुलगुर * अवध बिलोकिसूलहोइहिउर
भूप प्रीति कैकेइ कठिनाई * उभयअवधि बिधि रची बनाई

त्रिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा * बीना बेनु संषधुनि द्वारा
पढहिं भाट गुन गावहिं गायक * सुनतनृपहिजनुलागहिंसायक
मंगल सकल सोहाहिं न कैसे * सहगामिनिहिं बिभूषन जैसे
तेहि निसि नींद परी नहिं काहू * राम दरस लालसा उछाहू

दो० द्वारभीर सेवक सचिव, कहहिं उदितरबि देषि।
जागेउ अजहु न अवधपति, कारन कवन बिसेषि ३८॥

पछिले पहर भूप नित जागा * आजुहमहिंबड अचरजुलागा
जाहु सुमंत जगावहु जाई * कीजिअ काजु रजायसु पाई
गये सुमंत्र तब राउर माहीं * देषि भयावन जात डेराहीं
धाइ षाइ जनु जाइ न हेरा * मानहुँ बिपति बिषाद बसेरा
पूंछे कोउ न ऊतर देई * गये जेहि भवन भूप कैकेई
कहि जयजीव बैठ सिरनाई * देषि भूपगति गयउ सुषाई
सोच बिकल बिबरन महिपरेऊ * मानहुँ कमल मूल परिहरेऊ
सचिव सभीत सकै नहिं पूंछी * बोली असुभ भरी शुभ छूंछी

दो० परी न राजहि नींद निशि, हेतु जान जगदीस।
राम राम रटि भोर किय, कहै न मरम महीस ३९॥

आनहुँ रामहिं बेगि बुलाई * समाचार तब पूंछेहु आई
चलेउ सुमंत्र राय रुष जानी * लषी कुचालिकीन्हिकछुरानी
सोचबिकल मग परइ न पाऊ * रामहिं बोलि कहिहि का राऊ
उर धरि धीरजु गयेउ दुआरे * पूंछहिं सकल देषि मनमारे
समाधानु करि सो सबहीका * गयेउ जहां दिनकरकुलटीका
राम सुमंत्रहि आवत देषा * आदर कीन्ह पितासम लेषा
निरषि बदन कहि भूप रजाई * रघुकुल दीपहि चलेउ लेवाई

राम कुभांति सचिव सँगजाहीं * देषि लोग जहँतहँ बिलषाहीं

दो० जाइ दीष रघुबंसमनि, नरपति निपट कुसाजु।
सहमिपरेउ लषि सिंहिनिहिं, मनहुँ बृद्ध गजराजु ४०॥

सूषहिं अधर जरइ सब अंगू * मनहुँ दीन मनिहीन भुअंगू
सरुष समीप दीष कैकेई * मानहुँ मीचु घरी गनि लेई
करुनामय मृदु राम सुभाऊ * प्रथम दीष दुष सुना न काऊ
तदपि धीरधरि समउ बिचारी * पूछी मधुर बचन महतारी
मोहि कहु मातु तातदुषकारन * करिअजतनजेहिंहोइनिवारन
सुनहुँ राम सब कारन एहू * राजहि तुम्हपर बहुत सनेहू
देन कहेन्हि मोहिं दुइ बरदाना * मांगेउँ जो कछु मोहिं सोहाना
सो सुनि भयेउ भूप उर सोचू * छांडि न सकहिंतुम्हार सकोचू

दो० सुतसनेह इत बचन उत, संकट परेउ नरेस।
सकहु तौ आयसुधरहु सिर, मेटहु कठिन कलेस ४१॥

निधरक बैठि कहै कटुबानी * सुनतकठिनताअतिअकुलानी
जीभ कमान बचन सर नाना * मनहुँ महिप मृदु लक्ष समाना
जनु कठोरपनु धरे सरीरू * सिषै धनुषबिद्या बर बीरू
सब प्रसंग रघुपतिहि सुनाई * बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई
मन मुसुकाइ भानुकुलभानू * राम सहज आनंदनिधानू
बोले बचन बिगत सब दूषन * मृदुमंजुल जनु बागबिभूषन
सुनु जननी सोइ सुत बडभागी * जो पितु मातु बचनअनुरागी
तनय मातु पितु तोषनिहारा * दुर्लभ जननि सकल संसारा

दो० मुनिगनमिलन बिसेषि बन, सबहिं भांति हित मोर।
तेहि महँ पितुआयसु बहुरि, संमत जननी तोर ४२॥

भरत प्रानप्रिअ पावहिं राजू * बिधिसबबिधिमोहिसनमुषआजू
जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा * प्रथमगनिअमोहि मूढसमाजा
सेवहिं अरंड कलपतरु त्यागी * परिहरिअमृतलेहिं बिषमांगी
तेऊ न पाइ अस समउ चुकाहीं * देषु बिचारि मातु मनमाहीं
अंब एकु दुष मोहि बिसेषी * निपट बिकल नरनायकु देषी
थोरिहि बात पितहि दुषभारी * होति प्रतीति न मोहि महतारी
राउ धीर गुनउदधि अगाधू * भा मोहिते कछु बड अपराधू
जातें मोहि न कहत कछु राऊ * मोर सपथ तोहि कहु सतिभाऊ

दो० सहज सरल रघुबरबचन, कुमति कुटिलकरि जान।
चलै जोंकजिमि बक्रगति, यद्यपि सलिलु समान ४३॥

रहँसी रानि राम रुष पाई * बोली कपट सनेह जनाई
सपथ तुम्हार भरत कै आना * हेतु न दूसर मैं कछु जाना
तुम्ह अपराध जोग नहिं ताता * जननी जनक बंधु सुषदाता
राम सत्य सब जो कछु कहहू * तुम्ह पितु मातु बचनरत अहहू
पितहिं बुझाय कहहु बलि सोई * चौथेपन जेहिं अजसु न होई
तुम्हसम सुवन सुकृत जेहिं दीन्हे * उचित न तासु निरादर कीन्हे
लागहिं कुमुखबचन सुभ कैसे * मगह गयादिक तीरथ जैसे
रामहिं मातुबचन सब भाये * जिमि सुरसरिगतसलिलसोहाये

दो० गइ मूरछा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवट लीन्हि।
सचिव रामआगमनुकहि, बिनय समयसम कीन्हि ४४॥

अवनिप अकनि राम पगु धारे * धरि धीरजु तब नयन उघारे
सचिव सँभारि राउ बैठारे * चरन परत नृप राम निहारे
लीन्ह सनेह बिकल उर लाई * गइमनि मनहुँ फनिक फिरि पाई

रामहिं चितइ रहेउ नरनाहू * चला बिलोचन बारिप्रबाहू
सोकबिकल कछु कहै न पारा * हृदय लगावत बारहिंबारा
बिधिहि मनाव राउ मनमाहीं * जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं
सुमिरि महेसहि कहइ निहोरी * बिनती सुनहु सदासिव मोरी
आसुतोष तुम्ह अवढर दानी * आरति हरहु दीन जन जानी

दो॰ तुम्ह प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु ।
बचन मोरतजि रहहिं घर, परिहरि सीलसनेहु ४५॥

अजस होउ जग सुजस नसाऊ * नरक परौं बरु सुरपुर जाऊ
सब दुष दुसह सहावहु मोहीं * लोचन ओट राम जनि होहीं
अस मनगुनइ राउ नहिं बोला * पीपरपात सरिस मन डोला
रघुपति पितहि प्रेमबस जानी * पुनि कछु कहिहि मातु अनुमानी
देस काल अवसर अनुसारी * बोले बचन बिनीत बिचारी
तात कहौं कछु करौं ढिठाई * अनुचित छमब जानि लरिकाई
अति लघु बात लागि दुष पावा * काहु न मोहि कहि प्रथम जनावा
देषि गोसाँइहिं पूंछेउँ माता * सुनि प्रसंग भा सीतल गाता

दो॰ मंगलसमय सनेहबस, सोच परिहरिअ तात ।
आयसु देइअ हरषिहिय, कहि पुलके प्रभुगात ४६॥

धन्य जनम जगतीतल तासू * पितहि प्रमोद चरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताके * प्रिय पितु मातु प्रानसम जाके
आयसु पालि जनमफल पाई * ऐहौं बेगिहि होउ रजाई
बिदा मातुसन आवौं मागी * चलिहौं बनहि बहुरि पगु लागी
अस कहि राम गवन तब कीन्हा * भूप सोकबस उतरु न दीन्हा
नगर ब्यापि गइ बात सुतीछी * छुवत चढी जनु सब तन बीछी

सुनि भए बिकल सकल नरनारी * बेलि बिटप जिमि देषि दँवारी
जो जहँ सुनइ धुनइ सिरु सोई * बड बिषाद नहिं धीरज होई

दो० मुषरुषाहिं लोचन स्रवहिं, सोकु न हृदय समाइ।
मनहुँ करुनरस कटकई, उतरी अवध बजाइ ४७॥

मिलेहि माझ बिधि बात बिगारी * जहँ तहँ देहिं कैकइहि गारी
एहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ * छाय भवन पर पावक धरेऊ
निजकर नयन काढि चह दीषा * डारि सुधा बिष चाहति चीषा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी * भइ रघुबंसबेनुबन आगी
पालव बैठि पेड एइं काटा * सुषमहँ सोकठाट धरि ठाटा
सदां राम एहि प्रानसमाना * कारन कवन कुटिल पन ठाना
सत्य कहहिं कबि नारि सुभाऊ * सब बिधि अगम अगाध दुराऊ
निजप्रतिबिंब बरुकु गहिजाई * जानि न जाइ नारिगति भाई

दो० काह न पावक जारिसक, का न समुद्र समाइ।
का न करै अबला प्रबल, केहि जग कालु न षाइ ४८॥

का सुनाइ बिधि काह सुनावा * का दिषाइ चह काह दिषावा
एक कहहिं भल भूप न कीन्हा * बर बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा
जो हठि भयउ सकल दुखभाजनु * अबलाबिबस ज्ञान गुन गाजनु
एक धर्मपरमिति पहिचाने * नृपहि दोषु नहिं देहिं सयाने
शिबि दधीचि हरिचंद कहानी * एक एकसन कहहिं बषानी
एक भरतकर संमत कहँहीं * एक उदास भाय सुनि रहँहीं
कान मूंदि कर रद गहि जीहा * एक कहँहिं यह बात अलीहा
सुकृत जाहिं अस कहततुम्हारे * राम भरतकहँ परम पिआरे

दो० चंद चवै बरु अनलकन, सुधा होइ बिषतूल।

सपनेहुँ कबहुँ न करहिं कछु, भरत रामप्रतिकूल ४९ ॥
येक बिधातहिं दूषन देहीं * सुधा देषाइ दीन्ह बिष जेहीं
घरभर नगर सोच सबकाहू * दुसह दाह उर मिटा उछाहू
बिप्रबधू कुलमान्य जठेरी * जे प्रिय परम कैकई केरी
लगीं देन सिष सील सराही * बचन बानसम लागहिं ताही
भरत न मोहि प्रिअ रामसमाना * सदा कहहु यह सब जग जाना
करहु राम पर सहज सनेहू * केहि अपराध आजु बन देहू
कबहुँ न कियेहु सवति आरेसू * प्रीति प्रतीति जान सब देसू
कौसल्या अब काह बिगारा * तुम जेहिलागि बज्र पुर पारा
दो० सीयकिपिअसँगपरिहिरिहि, लषन कि रहिहहिं धाम ।
राज कि भूँजब भरतपुर, नृपकिजिइहिबिनुराम ५० ॥
अस बिचारि उर छांडहु कोहू * सोककलंककोठि जनि होहू
भरतहिं अवसि देहु जुबराजू * कानन काह रामकर काजू
नाहिन राम राज के भूषे * धरमधुरीन बिषय रस रूषे
गुरुगृह बसहिं राम तजि गेहू * नृपसन अस बर दूसर लेहू
जौं नहिं लगिहहु कहे हमारे * नहिं लागिहि कछु हाँथ तुम्हारे
जौं परिहाँस कीन्ह कछु होई * तौ कहि प्रगट जनावहु सोई
रामसरिस सुत कानन जोगू * काह कहहिं सुनि तुमकाँ लोगू
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई * जेहिबिधि सोकु कलंकु नसाई

छंद

जेहि भांति सोकु कलंकु जाइ उपाइ करि कुल पालही ।
हठि फेरु रामहिं जात बन जनि बात दूसर चालही ॥
जिमिभानुबिनुदिनु प्रानबिनुतनु चंद्रबिनु जिमिजामिनी ।

तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जिअ भामिनी ॥

सो० सषिन सिषावन दीन्ह, सुनत मधुर परिनाम हित ।
तेहिं कछु कान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ५१ ॥

उतर न देइ दुसह रिस रूषी * मृगिन्ह चितव जनु बाघिनि भूषी
ब्याधि असाधि जानि तिन त्यागी * चलीं कहत मतिमंद अभागी
राज करत एहि दैअ बिगोई * कीन्हेसि अस जस करै न कोई
येहिबिधि बिलपहिं पुरनरनारी * देहिं कुचालिहि कोटिक गारी
जरहिं बिषम जर लेहिं उसाँसा * कवन राम बिनु जीवन आसा
बिपुल बियोग प्रजा अकुलानी * जनु जलचरगन सूषत पानी
अति बिषादबस लोग लोगाईं * गये मातु पहिं राम गोसाईं
मुष प्रसन्न चित चौगुन चाऊ * इहै सोच जनि राषइ राऊ

दो० नव गयंद रघुबंसमनि, राज अलान समान ।
छूट जानि बनगवन सुनि, उर अनँद अधिकान ५२ ॥

रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाँथा * मुदित मातुपद नायेउ माथा
दीन्हि असीस लाइ उर लीन्हे * भूषन बसन निछावरि कीन्हे
बारबार मुष चुंबति माता * नयन नेह जल पुलकित गाता
गोद राषि पुनि हृदय लगाये * स्रवत प्रेमरस पयद सोहाये
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई * रंक धनदपदवी जनु पाई
सादर सुंदर बदनु निहारी * बोली मधुर बचन महतारी
कहहु तात जननी बलिहारी * कबहिं लगन मुद मंगलकारी
सुकृतसील सुषसींव सोहाई * जनमलाभ कै अवधि अघाई

दो० जेहि चाहत नर नारि सब, अति आरत एहिं भांति ।
जिमि चातक चातकि तृषित, बृष्टि सरद रितु स्वाति ५३ ॥

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू * जो मनभाव मधुर कछु षाहू
पितु समीप तब जायेहु भैआ * भै बडिबार जाइ बलि मैआ
मातु बचन सुनि अति अनकूला * जनु सनेह सुरतरु के फूला
सुष मकरंद भरे श्रीमूला * निरषि राम मन भँवर न भूला
धरमधुरीन धरम गति जानी * कहेउ मातु सन अतिमृदुबानी
पिता दीन्ह मोहि कानन राजू * जहँ सब भांति मोर बड काजू
आयसु देहि मुदित मन माता * जेहि मुद मंगल कानन जाता
जनि सनेहबस डरपसि मोरे * आनँद अंब अनुग्रह तोरे
दो० बरषचारिदसबिपिनबसि, करि पितुबचनप्रमान।
आइ पांयँ पुनि देखिहौं, मनजनिकरसिमलान ५४॥
बचन बिनीत मधुर रघुबर के * सर सम लगे मातु उर करके
सहमि सूषि सुनि सीतलबानी * जिमि जवासपरे पावस पानी
कहि न जाइ कछु हृदयबिषादू * मनहुँ मृगी सुनि केहरिनादू
नयनसलिल तन थर थर कांपी * माजहिं षाइ मीनजनु मापी
धरि धीरज सुतबदन निहारी * गदगद बचन कहति महतारी
तात पितहि तुम प्रान पिआरे * देषि मुदित नित चरित तुम्हारे
राज देनकहँ सुभ दिन साधा * कहेउ जान बन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहिं निदानू * को दिनकर कुल भएउ कृसानू
दो० निरषि रामरुष सचिवसुत, कारन कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसंग रहि मूकगति, दसा बरनि नहिं जाइ ५५॥
राषि न सकहिं न कहि सक जाहू * दुहूं भांति उर दारुन दाहू
लिषत सुधाकर लिषिगा राहू * बिधिगति बाम सदा सबकाहू
धरम सनेह उभय मति घेरी * भइ गति सांप छछूंदरि केरी

राखौं सुतहि करौं अनुरोधू * धरम जाइ अरु बंधु बिरोधू
कहौं जान बन तौ बडि हानी * संकट सोच बिबसभइ रानी
बहुरि समुझि तिअधर्म सयानी * राम भरत दोउ सुत सम जानी
सरल सुभाव राम महतारी * बोली बचन धीर धरि भारी
तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका * पितु आयसु सब धरमकटीका

दो० राजदेन कहि दीन्ह बन, मोहि न सो दुषलेसु।
तुम्हबिनु भरतहि भूपतिहि, प्रजहि प्रचंड कलेसु ५६॥

जौं केवल पितु आयसु ताता * तौं जनि जाहु जानि बडिमाता
जौं पितु मातु कहेउ बन जाना * तौ कानन सत अवध समाना
पितु बनदेव मातु बनदेवी * षग मृग चरनसरोरुह सेवी
अंतहु उचित नृपहिं बनबासू * बय बिलोकि हिय होइ हरासू
बडभागी बन अवध अभागी * जो रघुबंसतिलक तुम्ह त्यागी
जौं सुत कहौं मोहि सँग लेहू * तुम्हरे हृदय होइ संदेहू
पूत परम प्रिअ तुम सबही के * प्रान प्रान के जीवन जीके
ते तुम्ह कहहु मातु बन जाऊं * मैं सुनि बचन बैठि पछिताऊं

दो० यह बिचारि नहिं करौं हठ, झूंठ सनेह बढाइ।
मानि मातु कर नात बलि, सुरति बिसरि जनिजाइ ५७॥

देव पितर सब तुम्हहिं गोसाईं * राषहिं पलक नयनकी नाईं
अवधि अंबु प्रिअ परिजन मीना * तुम करुनाकर धर्मधुरीना
अस बिचारि सोइ करहु उपाई * सबहि जिअत जेहि भेंटहु आई
जाहु सुषेन बनहिं बलि जाऊं * करि अनाथ जन परिजन गाऊं
सबकर आजु सुकृत फल बीता * भएउ कराल काल बिपरीता
बहुबिधि बिलपि चरनलपटानी * परम अभागिनि आपुहि जानी

माता से विदाई ।

राखि न सकहिं न कहि सक जाहू । दुहूं भाँति उर दारुण दाहू ॥
जाहु सुखेन बनहिं बलि जाऊँ । करि अनाथ जन परिजन गाऊँ ॥

दारुन दुसह दाह उर व्यापा * बरनि न जाय बिलापकलापा
राम उठाइ मातु उर लाई * कहि मृदुबचन बहुरि समुझाई

दो० समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाइ।
जाइ सासु पग कमलजुग, बंदि बैठि सिरुनाइ ५८॥

दीन्हि असीस सासु मृदुबानी * अतिसुकुमारि देषि अकुलानी
बैठि नमितमुष सोचति सीता * रूपरासि पतिप्रेम पुनीता
चलन चहत बन जीवननाथू * केहि सुकृतीसन होइहि साथू
की तन प्रान कि केवल प्राना * बिधिकरतब कछु जाइ न जाना
चारु चरन नष लेषत धरनी * नूपुर मुषर मधुर कबि बरनी
मनहुँ प्रेमबस बिनती करहीं * हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं
मंजु बिलोचन मोचत बारी * बोली देषि राममहतारी
तातसुनहुँ सिअ अतिसुकुमारी * सासु ससुर परिजनहिं पिआरी

दो० पिता जनक भूपालमनि, ससुर भानुकुलभानु।
पति रबिकुलकैरवबिपिन, बिधु गुनरूपनिधानु ५९॥

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई * रूपरासि गुन सील सोहाई
नयनपुतरि करि प्रीति बढाई * राषेउं प्रान जानकिहि लाई
कलपबेलि जिमि बहुबिधि लाली * सींचि सनेहसलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भएउ बिधि बामा * जानि न जाइ काह परिनामा
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा * सिअ न दीन्हपद अवनि कठोरा
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहेऊं * दीपबाति नहिं टारन कहेऊं
सोइ सिअ चलन चहति बन साथा * आयसु काह होइ रघुनाथा
चंद किरनरस रसिक चकोरी * रबिरुष नयन सकै किमि जोरी

दो० करि केहरि निसिचर चरहिं, दुष्टजंतु बन भूरि।

बिषबाटिका कि सोह सुत, सुभगस जीवनिमूरि६०॥
बन हित कोल किरातकिशोरी * रची बिरंचि बिषयसुषभोरी
पाहनकृमिजिमिकठिन सुभाऊ * तिनहिं कलेस न कानन काऊ
कै तापसतिअ कानन जोगू * जिन्ह तपहेतु तजा सब भोगू
सिअबनबसिहितातकेहिभांती * चित्रलिषित कपि देषि डेराती
सुरसर सुभग बनज बनचारी * डाबर जोग कि हंसकुमारी
अस बिचारि जस आयसु होई * मैं सिष देउँ जानकिहि सोई
जौं सिअ भवन रहै कह अंबा * मोहिकहँ होइ बहुत अवलंबा
सुनि रघुबीर मातु प्रिअबानी * सील सनेह सुधा जनु सानी
दो० कहि प्रिअ बचन बिबेकमय, कीन्ह मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रगटि बिपिनगुनदोष६१॥
मा० पा० ॥ १४ ॥
मातु समीप कहत सकुचाहीं * बोले समउ समुझि मनमाहीं
राजकुमारि सिषावन सुनहूं *आनभांतिजिअजनिकछुगुनहूं
आपन मोर नीक जौं चहहू * बचन हमार मानि गृह रहहू
आयसु मोरि सासु सेवकाई * सब बिधिभामिनिभवनभलाई
येहिते अधिक धरम नहिं दूजा * सादर सासु ससुर पदपूजा
जब जब मातुकरिहि सुधिमोरी * होइहि प्रेमबिकल मति भोरी
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी * सुंदरि समुझायेहु मृदुबानी
कहौं सुभाव सपथ सत मोही * सुमुषि मातुहित राषौं तोही
दो० गुरु श्रुति संमत धरमफल, पाइअ बिनहिं कलेस।
हठबस सब संकट सहे, गालव नहुष नरेस ६२॥
मैं पुनि करि प्रमान पितु बानी * बेगि फिरब सुनु सुमुषिसयानी
दिवसजात नहिं लागिहि बारा * सुंदरि सिषवनु सुनहुँ हमारा

जौं हठ करहु प्रेमबस बामा * तौं तुम्ह दुष पाउब परिनामा
कानन कठिन भयंकर भारी * घोर घाम हिम बारि बयारी
कुस कंटक मग काँकर नाना * चलब पयादेहिं बिनु पदत्राना
चरनकमल मृदु मंजु तुम्हारे * मारग अगम भूमिधर भारे
कंदर षोह नदी नद नारे * अगम अगाध न जाहिं निहारे
भालु बाघ बृक केहरि नागा * करहिं नाद सुनि धीरज भागा

दो॰ भूमिसयन बलकल बसन, असन कंद फल मूल।
तेकिसदा सबदिनमिलहिं, सबुइसमय अनकूल ६३॥

नर अहार रजनीचर करहीं * कपटबेष बिधि कोटिक धरहीं
लागै अति पहार कर पानी * बिपिनबिपतिनहिंजाइ बषानी
ब्याल कराल बिहग बन घोरा * निसिचरनिकर नारिनरचोरा
डरपहिं धीर गहन सुधि आयें * मृगलोचनि तुम्ह भीरु सुभायें
हंसगवनि तुम नहिं बनजोगू * सुनिअपजसमोहिंदेइहिलोगू
मानस सलिल सुधा प्रतिपाली * जिअइकिलवनपयोधिमराली
नवरसाल बन बिहरनसीला * सोह किकोकिलबिपिनकरीला
रहहु भवन अस हृदय बिचारी * चंदबदनि दुष कानन भारी

दो॰ सहजसुहृदगुरु स्वामिसिष, जो न करइ सिरमानि।
सो पछिताइ अघाइ उर, अवसि होइ हितहानि ६४॥

सुनि मृदु बचन मनोहर पिअके * लोचनललितभरेजलसिअके
सीतल सिष दाहक भइ कैसे * चकइहि सरदचंद निसि जैसे
उतर न आव बिकल बैदेही * तजनचहतसुचिस्वामिसनेही
बरबस रोंकि बिलोचन बारी * धरि धीरज उर अवनिकुमारी
लागि सासुपग कह करजोरी * छमबिदेबिबडि अबिनय मोरी

दीन्हि प्रानपति मोहि सिष सोई * जेहि बिधि मोर परमहित होई
मैं पुनि समुझि दीष मनमाहीं * पिअबियोगसमदुषजग नाहीं

दो० प्राननाथ करुनायतन, सुंदर सुषद सुजान।
तुम बिनु रघुकुल कुमुदबिधु, सुरपुर नरकसमान ६५॥

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई * प्रिय परिवार सुहृद समुदाई
सासु ससुर गुरु सुजन सहाई * सुत सुंदर सुसील सुषदाई
जहँलगि नाथ नेह अरु नाते * पिअबिनु तिअहितरनितेंताते
तनु धनु धामु धरनि पुरराजू * पतिबिहीन सबु सोकुसमाजू
भोग रोग सम भूषन भारू * जमजातना सरिस संसारू
प्राननाथ तुम्ह बिनु जगमाहीं * मोकहँ सुषद कतहुँ कछु नाहीं
जिअ बिनु देहँ नदी बिनु बारी * तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी
नाथ सकल सुष साथ तुम्हारे * सरद बिमल बिधु बदन निहारे

दो० षगमृग परिजन नगरु बनु, बलकल बिमल दुकूल।
नाथ साथ सुरसदनसम, परनसाल सुषमूल ६६॥

बनदेबी बनदेव उदारा * करिहैं सासु ससुर सम सारा
कुस कृसलय साथरी सोहाई * प्रभु सँग मंजु मनोज तुराई
कंद मूल फल अमी अहारू * अवध सौधसत सरिस पहारू
छिनछिनप्रभुपदकमलबिलोकी * रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी
बनदुष नाथ कहे बहुतेरे * भय बिषाद परिताप घनेरे
प्रभुबियोग लवलेस समाना * सबमिलिहोहिं न कृपानिधाना
असजिअजानिसुजानसिरोमनि * लेइअसंगमोहिं छाडिअ जनि
बिनती बहुत करौं का स्वामी * करुनामय उर अंतरजामी

दो० राषिअ अवध जोअवधिलगि, रहत जानिअहि प्रान।

दीनबंधु सुंदर सुषद, सीलसनेह निधान ६७॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी * छिन छिन चरनसरोज निहारी
सबहि भांति पिअ सेवा करिहौं * मारगजनितसकलश्रमहरिहौं
पाय पषारि बैठि तरु छाहीं * करिहौं बाउ मुदित मनमाहीं
श्रमकन सहित स्याम तनु देषे * कहँ दुषसमउ प्रानपति पेषे
सममहि तृन तरु पल्लव डासी * पाय पलोटिहि सब निसि दासी
बार बार मृदु मूरति जोही * लागिहि ताति बयारि न मोही
को प्रभुसँगमोहिंचितवनिहारा *सिंहबधुहिजिमिससकसिआरा
मैं सुकुमारि नाथ बनजोगू * तुम्हहिं उचित तप मोकहँ भोगू

दो० ऐसेउ बचन कठोर सुनि, जौं न हृदउ बिलगान।
तौ प्रभु बिषमबियोग दुष, सहिहहिं पावर प्रान ६८॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी * बचन बियोग न सकी सँभारी
देषि दसा रघुपति जिअ जाना * हठि राषे नहिं राषिहि प्राना
कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा * परिहरि सोच चलहु बन साथा
नहिं बिषादकर अवसर आजू * बेगि करहु बनगवन समाजू
कहि प्रिअबचनप्रिआसमुझाई * लगे मातुपद आसिष पाई
बेगि प्रजादुष मेटब आई * जननी निठुर बिसरि जनि जाई
फिरिहिदसाबिधिबहुरिकिमोरी * देषिहौं नयन मनोहर जोरी
सुदिन सुघरी तात कब होइहि *जननीजिअतबदनबिधुजोइहि

दो० बहुरि बच्छ कहि लाल कहि, रघुपति रघुबर तात।
कबहिं बुलाइ लगाइ हिय, हरषि निरषिहौं गात ६९॥

लषि सनेहकातरि महतारी * बचन न आव बिकलभइ भारी
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना * समउ सनेह न जाइ बषाना

तब जानकी सासुपगु लागी * सुनिय माय मैं परमअभागी
सेवासमय दइअ बनु दीन्हा * मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा
तजब छोभु जनि छांडिअ छोहू * करम कठिन कछु दोस न मोहू
सुनिसिअबचनसासुअकुलानी * दसा कवन बिधि कहौं बषानी
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही * धरिधीरजु सिष आसिष दीन्ही
अचल होउ अहिवात तुम्हारा * जबलगि गंग जमुन जलधारा

दो० सीतहि सासु असीष सिष, दीन्हि अनेक प्रकार।
चली नाइ पदपदुम सिर, अतिहित बारहिंबार ७०॥

समाचार जब लछिमन पाये * ब्याकुल बिलषबदन उठिधाये
कंप पुलकतन नयन सनीरा * गहे चरन अतिप्रेम अधीरा
कहि न सकत कछु चितवन ठाढे * मीन दीन जनु जलते काढे
सोचु हृदय बिधि का होनिहारा * सब सुष सुकृत सिरान हमारा
मोकहँ कहा कहब रघुनाथा * रषिहहिं भवन कि लेइहहिं साथा
राम बिलोकि बंधु कर जोरे * देह गेह सब सन त्रिन तोरे
बोले बचन राम नयनागर * सील सनेह सरल सुषसागर
तात प्रेमबस जनि कदराहू * समुझि हृदय परिनाम उछाहू

दो० मातुपितागुरुस्वामिसिष, सिरधरि करहिं सुभाय।
लहेउलाभतिन्हजनमकर, नतरुजनमुजगजाय ७१॥

असजिअजानिसुनहुसिषभाई * करहु मातु पितु पद सेवकाई
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं * राउ बृद्ध मम दुष मन माहीं
मैं बन जाउँ तुमहिं लै साथा * होइ सबहिं बिधि अवध अनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू * सब कहँ परइ दुसह दुष भारू
रहहु करहु सबकर परितोषू * नतरु तात होइहि बड दोषू

जासु राज प्रिअ प्रजा दुषारी * सो नृप अवसि नरक अधिकारी
रहहु तात असि नीति बिचारी * सुनत लषन भये व्याकुल भारी
सिअरे बचन सूषि गये कैसे * परसत तुहिन तामरस जैसे

दो० उतर न आवत प्रेमबस, गहे चरन अकुलाइ।
नाथ दास मैं स्वामि तुम्ह, तजहु तौ कहा बसाइ ७२॥

दीन्हि मोहिं सिष नीकि गोसांई * लागि अगम अपनी कदराई
नरबर धीर धरमधुरधारी * निगम नीति कहुँ ते अधिकारी
मैं सिसु प्रभु सनेह प्रतिपाला * मंदर मेरु कि लेहिं मराला
गुरु पितु मातु न जानउं काहू * कहउं सुभाव नाथ पतियाहू
जहँ लगि जगत सनेह सगाई * प्रीति प्रतीति निगम निजु गाई
मोरे सबइ एक तुम्ह स्वामी * दीनबंधु उर अंतरजामी
धरमनीति उपदेसिअ ताही * कीरति भूति सुगति प्रिअ जाही
मन क्रम बचन चरनरत होई * कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई

दो० करुनासिंधु सुबंधु के, सुनि मृदु बचन बिनीत।
समुझाये उर लाइ प्रभु, जानि सनेह सभीत ७३॥

मांगहु बिदा मातु सन जाई * आवहु बेगि चलहु बन भाई
मुदित भये सुनि रघुबरबानी * भयेउ लाभ बड गइ बडि हानी
हरषितहृदय मातु पहिं आये * मनहुँ अंध फिरि लोचन पाये
जाइ जननिपद नायेउ माथा * मनु रघुनंदन जानकि साथा
पूंछेउ मातु मलिन मनु देषी * लषनु कही सब कथा बिसेषी
गई सहमि सुनि बचन कठोरा * मृगी देषि दव जनु चहुँ ओरा
लषन लषेउ भा अनरथ आजू * येहि सनेहबस करब अकाजू
मांगत बिदा सभय सकुचाहीं * जाइ संग बिधि कहिहि कि नाहीं

दो० समुझि सुमित्रा राम सिय, रूप सुसील सुभाउ।
नृपसनेहलषि धुनेउसिरु, पापिनिकीन्ह कुदाउ ७४॥

धीरज धरेउ कुअँवसर जानी * सहज सुहृद बोली मृदुबानी
तात तुम्हारि मातु बैदेही * पिता राम सब भांति सनेही
अवध तहां जहँ रामनिवासू * तहँइ दिवस जहँ भानुप्रकासू
जो पै सीय राम बन जाहीं * अवध तुम्हार काज कछु नाहीं
गुरु पितु मातु बंधु सुर साईं * सेइअहि सकल प्रानकी नाईं
राम प्रानप्रिअ जीवन जीके * स्वारथरहित सषा सबहीके
पूजनीय प्रिय परम जहांतें * सब मानिअहिं रामके नातें
असजिअजानिसंगबन जाहू * लेहु तात जग जीवनलाहू

दो० भूरिभागभाजन भयेउ, मोहि समेत बलिजाउँ।
जौ तुम्हरे मन छांडिछल, कीन्ह रामपद ठाउँ ७५॥

पुत्रवती जुबती जग सोई * रघुपतिभगतु जासु सुत होई
नतरु बांझभलि बादिबिआनी * रामबिमुष सुततें हितजानी
तुम्हरेहिं भाग राम बन जाहीं * दूसर हेतु तात कछु नाहीं
सकल सुकृतकर फल बड येहू * राम सीय पद सहज सनेहू
रागु रोष इरषा मद मोहू * जनि सपनेहुँ इन्हके बस होहू
सकल प्रकार बिकार बिहाई * मन क्रम बचन करेहु सेवकाई
तुम्हकहँ बनसब भांति सुपासू * सँग पितु मातु राम सिय जासू
जेहि न रामबन लहहिं कलेसू * सुत सोइ करेहु इहै उपदेसू

छंद

उपदेस येहु जेहि जात तुम्हते राम सिय सुष पावहीं।
पितु मातु प्रिय परिवारु पुर सुष सुरति बन बिसरावहीं॥

तुलसी सुतहि सिष देइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई ।
रति होउ अबिरल अमल सिअ रघुबीर पद नित नित नई ॥

सो० मातु चरन सिरु नाइ, चले तुरत संकित हृदय ।
बागुर[1] बिषम तोराइ, मनहुँ भाग मृग भागबस ॥

गये लषन जहँ जानकिनाथू * भये मन मुदित पाय प्रिय साथू
बंदि रामसियचरन सोहाये * चले संग नृपमंदिर आये
कहहिं परस्पर पुर नर नारी * भलि बनाय बिधि बात बिगारी
तनकृस मन दुष बदन मलीने * बिकल मनहु माषी मधु छीने
कर मीजहिं सिरु धुनि पछिताहीं * जनु बिनपंष बिहग अकुलाहीं
भइ बडि भीर भूपदरबारा * बरनि न जाइ बिषाद अपारा
सचिव उठाइ राउ बैठारे * कहि प्रिय बचन राम पगुधारे
सिअसमेत दोउ तनय निहारी * ब्याकुल भएउ भूमिपति भारी

दो० सीअसहित सुतसुभग दोउ, देषि देषि अकुलाइ ।
बारहिंबार सनेह बस, राउ लेइ उरलाइ ७६ ॥

सकइ न बोलि बिकल नरनाहू * सोकजनित उर दारुन दाहू
नाइ सीस पद अति अनुरागा * उठि रघुबीर बिदा तब मागा
पितु असीस आयसु मोहि दीजे * हरषसमय बिसमउ कत कीजे
तात किये प्रिअ प्रेम प्रमादू * जस जग जाइ होइ अपबादू
सुनि सनेहबस उठि नरनाहाँ * बैठारे रघुपति गहि बाहाँ
सुनहु तात तुम्ह कहँ मुनि कहहीं * राम चराचरनायक अहहीं
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी[2] * ईस देइ फल हृदय बिचारी

१ बागुरो मृगबंधनः इति कोषे ।
२ मानसं मनसैवाय मुपभुङ्क्ते शुभाशुभम् । वाचावाचाकृतं कर्म कायेनैव च कायकम् । इति मनुसंहितायाम् ॥

करइ जो कर्म पाव फल सोई * निगम नीति अस कह सबकोई

दो० और करै अपराध कोउ, और पाव फल भोगु।
अतिबिचित्र भगवंतगति, को जग जानइ जोगु ७७॥

राय राम राषनहित लागी * बहुत उपाय किये छल त्यागी
लषी रामरुष रहत न जाने * धरमधुरंधर धीर सयाने
तब नृप सीअ लाइ उर लीन्ही *अतिहित बहुत भाँति सिषदीन्ही
कहि बनके दुष दुसह सुनाये * सासु ससुर पितु सुष समुझाये
सियमन रामचरनअनुरागा * घर न सुगम बन बिषम न लागा
औरउ सबहिं सीय समुझाई *कहिकहिबिपिनबिपतिअधिकाई
सचिवनारि गुरुनारि सयानी * सहित सनेह कहहिं मृदुबानी
तुम्ह कहँ तौ न दीन्ह बनबासू * करहु जो कहहिं ससुर गुरुसासू

दो० सिषसीतलि हितमधुरमृदु, सुनि सीतहि न सोहानि।
सरद चंदचंदनि लगत, जनु चकई अकुलानि ७८॥

सीय सकुचबस उतरु न देयी * सो सुनि तमकि उठी कैकेयी
मुनिपट भूषन भाजन आनी * आगे धरि बोली मृदुबानी
नृपहि प्रानप्रिय तुम्ह रघुबीरा * सीलसनेह न छाँडहि भीरा
सुकृत सुजस परलोक नसाऊ * तुम्हहिं जान बन कहिहि न राऊ
असबिचारि सोइ करहु जो भावा *रामजननिसिष सुनि सुषपावा
भूपहि बचन बान समलागे * करहिं न प्रान पयान अभागे
लोग बिकल मुरछित नरनाहू * काह करिअ कछु सूझ न काहू
राम तुरतु मुनिबेषु बनाई * चले जनक जननिहि सिरनाई

दो० सजि बनसाजु समाजु सब, बनिता बंधु समेत।
बंदि बिप्र गुरुचरन प्रभु, चले करि सबहिं अचेत ७९॥

निकसि बसिष्ट द्वार भये ठाढे * देषे लोग बिरह दव दाढे
कहिप्रिअवचनसकलसमुझाये * बिप्रबृंद रघुबीर बुलाये
गुरुसन कहि बर्षासन दीन्हे * आदरदान बिनयबस कीन्हे
जाचक दान मान संतोषे * मीत पुनीत प्रेम परितोषे
दासी दास बुलाइ बहोरी * गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी
सबकै सार सँभार गोसाँई * करबि जनक जननी की नाई
बारहि बार जोरि जुग पानी * कहत राम सबसन मृदुबानी
सोइ सब भाँति मोर हितकारी * जेहितें रहइ भुआल सुषारी

दो० मातु सकल मोरे बिरह, जेहिं न होहिं दुषदीन।
सोइ उपाव तुम्ह करब सब, पुरजन परम प्रबीन ८०॥

यहि बिधि राम सबहिं समुझावा * गुरुपदपदुम हरषि सिरु नावा
गनपति गौरि गिरीस मनाई * चले असीस पाइ रघुराई
राम चलत अति भएउ बिषादू * सुनि न जाइ पुर आरतनादू
कुसगुन लंकअवध अतिसोकू * हरष बिषाद बिबस सुरलोकू
गइ मुरछा तब भूपति जागे * बोलि सुमंतु कहन अस लागे
रामु चले बन प्रान न जाहीं * केहिसुष लागि रहत तनमाहीं
येहितें कवन बिथा बलवाना * जो दुषु पाइ तजिहि तनु प्राना
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू * लइ रथु संग सषा तुम्ह जाहू

दो० सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढाइ दिषराइ बन, फिरेहु गयें दिन चारि ८१॥

जौं नहिं फिरहिं धीर दोउभाई * सत्यसंध दृढब्रत रघुराई
तौ तुम्ह बिनय करेहु करजोरी * फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी

जब सिय कानन देषि डेराई * कहेहु मोरि सिष अवँसर पाई
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू * पुत्रि फिरिअ बन बहुत कलेसू
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी * रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी
यहि बिधि करेहु उपायकदंबा * फिरइ तौ होइ प्रानअवलंबा
नाहीं तौ मोर मरनु परिनामा * कछु न बसाइ भये बिधिबामा
अस कहि मुरछि परा महिराऊ * रामलषनसिय आनि देषाऊ

दो० पाय रजायसु नाइ सिरु, रथु अतिबेग बनाइ।
गयेउ जहाँ बाहेर नगर, सीयसहित दोउ भाइ ८२॥

तब सुमंत्र नृपबचन सुनाये * करि बिनती रथ राम चढाये
चढि रथ सीयसहित दोउभाई * चले हरषि अवधहि सिरुनाई
चलत राम लषि अवधअनाथा * बिकल लोग सब लागे साथा
कृपासिंधु बहुबिधि समुझावहिं * फिरहिंप्रेमबस पुनिफिरिआवहिं
लागति अवध भयावनि भारी * मानहुँ कालराति अँधिआरी
घोर जंतु सम पुरनरनारी * डरपहिं एकहिं एक निहारी
घर मसान परिजन जनु भूता * सुत हित मीत मनहु जमदूता
बागन्ह बिटप बेलि कुँभिलाहीं * सरित सरोबर देषि न जाहीं

दो० हय गय कोटिन्ह केलिमृग, पुर पसु चातक मोर।
पिक रथांग सुक सारिका, सारस हंस चकोर ८३॥

रामबियोग बिकल सब ठाढे * जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिषि काढे
नगर सकल बन गहवर भारी * षग मृग बिपुल सकल नरनारी
बिधि कैकेई किरातिनि कीन्ही * जेहिंदवदुसहदसहुँदिसिदीन्ही
सहि न सके रघुबरबिरहागी * चले लोग सब ब्याकुल भागी

१ अवध के काहे न सिर नावहिं अनंतजी। वन के राव बनावत हैं अतएव॥

सबहि बिचारु कीन्ह मन माहीं * रामलषनसिय बिनु सुष नाहीं
जहाँ रामु तहँ सबइ समाजू * बिनु रघुबीर अवध नहिं काजू
चले साथ अस मंत्र दृढाई * सुरदुर्लभ सुषसदन बिहाई
रामचरनपंकज प्रिअ जिन्हहीं * बिषयभोगबस करहिं कि तिन्हहीं

दो० बालक बृद्ध बिहाइ गृह, लगे लोग सब साथ।
तमसातीर निवास किय, प्रथम दिवस रघुनाथ ८४ ॥

रघुपति प्रजा प्रेमबस देषी * सदय[1] हृदय दुष भयेउ बिसेषी
करुनामय रघुनाथ गोसांई * बेगि पाइ अहि पीर पराई
कहि सप्रेम मृदु बचन सोहाये * बहुबिधि राम लोग समुझाये
किये धरम उपदेस घनेरे * लोग प्रेमबस फिरहिं न फेरे
सील सनेह छाँडि नहिं जाई * असमंजस बस भे रघुराई
लोग सोग श्रमबस गे सोई[2] * कछुक देवमाया मति मोई[3]
जबहिं जामजुग जामिनि बीती * राम सचिवसन कहेउ सप्रीती
षोज मारि रथ हाँकहु ताता * आन उपाय बनिहि नहिं बाता

दो० राम लषन सिय जानचढि, संभुचरन सिरु नाइ।
सचिव चलायेउ तुरत रथ, इत उत षोज दुराइ ८५ ॥

जागे सकल लोग भयें भोरू * गये रघुनाथ भयउ अति सोरू
रथकर षोजु कतहुँ नहिं पावहिं * राम राम कहि चहुँदिसि धावहिं
मनहुँ बारिनिधि बूड जहाजू * भएउ बिकल बड बनिकसमाजू
येकहिं एक देहिं उपदेसू * तजे राम हम जानि कलेसू

---

१ दय दान हिंसागत्यादानेषु इति धात्वर्थः। पुनः सदय हृदय दर्शित पशुघातं इतिगीत-गोविंदे। पुनः दय अय गतौ इति धात्वर्थः।

२अभावप्रत्ययालंबनावृत्तिर्निद्रा इति योगसूत्रे।

३ मोई मिश्रित वा मोही ॥

निंदहिं आपु सराहहिं मीना * धिग जीवन रघुबीर बिहीना
जौंपै प्रिय बियोग बिधि कीन्हा * तौं कस मरन न मागें दीन्हा
एहि बिधि करत प्रलापकलापा * आये अवध भरे परितापा
बिषम बियोग न जाइ बषाना * अवधि आस सब राषहिं प्राना

दो० रामदरसहित नेम ब्रत, लगे करन नर नारि।
मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन बिहीन तमारि ८६ ॥

सीता सचिव सहित दोउभाई * शृंगबेरपुर पहुँचे जाई
उतरे राम देवसरि देषी * कीन्ह दंडवत हरष बिसेषी
लषन सचिव सिय किये प्रनामा * सबहि सहित सुष पायेउ रामा
गंग सकल मुद मंगल मूला * सबसुष करनि हरनि सब सूला
कहिकहि कोटिक कथाप्रसंगा * राम बिलोकहिं गंगतरंगा
सचिवहि अनुजहि प्रियहि सुनाई * बिबुधनदी महिमा अधिकाई
मज्जनु कीन्ह पंथ श्रम गयेऊ *सुचिजलु पिअत मुदित मन भएऊ
सुमिरत जाहि मिटइ श्रमभारू * तेहि श्रम येह लौकिक व्यौहारू

दो० सुद्ध सच्चिदानंदमय, कंद भानुकुलकेतु।
करत चरित नर अनुहरत, संसृति सागर सेतु ८७ ॥

एह सुधि गुह निषाद जब पाई * मुदित लिये प्रियबंधु बोलाई
लिये फल मूल भेंट भरि भारा * मिलन चलेउ हियहरषु अपारा
करि दंडवत भेंट धरि आगे * प्रभुहि बिलोकत अति अनुरागे
सहज सनेह बिबस रघुराई * पूँछी कुसल निकट बैठाई
नाथ कुसल पदपंकज देषे * भएउँ भागभाजन जन लेषे
देव धरनि धनु धामु तुम्हारा * मैं जनु नीच सहित परिवारा

शुचिः शुद्धे पुनः शुक्लः शुभ्रः शुचिश्वेतरित्यमरः ॥

कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ * थापिअ जनु सब लोक सिहाऊ
कहेउ सत्य सब सषा सुजाना * मोहि दीन्ह पितु आयसु आना

दो० बरष चारिदस बासु बन, मुनिब्रत बेषु अहारु।
ग्रामु बासु नहिं उचित सुनि, गुहहि दुःष अति भारु ८८॥

राम लषन सिअ रूप निहारी * कहहिं सप्रेम ग्राम नर नारी
ते पितु मातु कहहु सषि कैसे * जिन्ह पठये बन बालक ऐसे
एक कहहिं भल भूपति कीन्हा * लोयनलाहु हमहिं बिधि दीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना * तरु सिंसुपा[1] मनोहर जाना
लै रघुनाथहि ठाउँ देषावा * कहेउ राम सब भाँति सोहावा
पुरजन करि जोहार घर आये * रघुपति संध्या करन सिधाये
गुह सँवारि साथरी डसाई * कुस कुसलय मय मृदुल सोहाई
सुचि फलमूल मधुरमृदु जानी * दोना भरि भरि राषेसि आनी

दो० सिय सुमंत्र भ्रातासहित, कंद मूल फल षाइ।
सयन कीन्ह रघुबंसमनि, पाय पलोटत भाइ ८९॥

उठे लषन प्रभु सोवत जानी * कहि सचिवहि सोवन मृदुबानी
कछुकदूरि सजि बान सरासन * जागन लगे बैठि बीरासन
गुह बोलाइ पाहरू प्रतीती * ठाँव ठाँव राषे अति प्रीती
आप लषन पहँ बैठेउ जाई * कटि भाथा सर चाँप चढाई
सोवत प्रभुहि निहारि निषादू * भयउ प्रेमबस हृदय बिषादू
तनु पुलकित जल लोचन बहई * बचन सप्रेम लषनसन कहई
भूपति भवनु सुभाय सोहावा * सुरपतिसदनु न पटतर पावा
मनिमय रचित चारु चौबारे * जनु रतिपति निजहाँथ सवारे

---

१ गुग्गुल वा अगर वा असोक वा सीसव का तरु॥

दो० सुचिसुबिचित्र सुभोगमय, सुमन सुगंध सुबास।
पलँग मंजुमनि दीप जहँ, सब बिधि सकल सुपास ९०॥

बिबिधि बसन उपधान तुराई * छीर फेन मृदु बिसद सोहाई
तहँ सिय रामु सयन निसि करहीं * निजछबि रतिमनोजमद हरहीं
तेइ सिय रामु साथरी सोये * श्रमित बसन बिनु जाहिं न जोये
मातु पिता परिजन पुरबासी * सषा सुसील दास अरु दासी
जोगवहिं जिनहिं प्रान की नाईं * महि सोवत तेइ रामु गोसाईं
पिता जनकु जगबिदित प्रभाऊ * ससुर सुरेस सषा रघुराऊ
रामचंद्र पति सो बैदेही * सोवति महि बिधि बाम न केही
सिअ रघुबीर कि काननजोगू * करमु प्रधान सत्य कह लोगू

दो० कैकयनंदिनि मंदमति, कठिन कुटिलपन कीन्ह।
जेंहि रघुनंदन जानकिहि, सुषअवँसर दुष दीन्ह ९१॥

भइ दिनकर कुल बिटप कुठारी * कुमति कीन्ह सब बिस्वदुषारी
भएउ बिषाद निषादहिं[1] भारी * राम सीय महि सयन निहारी
बोले लषन मधुरे[2] मृदु बानी * ज्ञान बिराग भगति रस सानी
कोउ न काहु दुष सुषकर दाता * निज कृत करम भोग सुनु भ्राता
जोग बियोग भोग भल मंदा * हित अनहित मध्यम भ्रमफंदा
जनम मरन जहँलागि जगजालू * संपति बिपति करम अरु कालू
धरनि धामु धनु पुर परिवारू * सरगु नरक जहँलगि ब्यौहारू[3]
देषिअ सुनिअ गुनिअ मनमाहीं * मोहमूल परमारथु नाहीं

१ ब्राह्मणेन शूद्रायां जातो निषादः इति मनुसंहिता। पुनः मत्स्यघातो निषादानां इति मनुसंहिता।

२ तबहिं (पाठांतर)

३ ईशजीवजगत्सृष्टिस्थितिप्रलयमेवच। जाग्रत्स्वप्नसुषाप्तीति संसारो नवधास्मृतः। इति आत्मबोधे॥

दो० सपने होइ भिषारि नृप, रंक नाकपति होइ।
जागे लाभु न हानि कछु, तिमि प्रपंचु जिअ जोइ ९२॥

अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू * काहुहिं बादि न देइअ दोसू
मोहनिसा सब सोवनिहारा * देषिअ पन अनेक प्रकारा[1]
येहि जग जामिनि जागहिं जोगी * परमारथी प्रपंच बियोगी[2]
जानिअँ तबहिं जीव जग जागा * जब सब बिषयबिलास बिरागा[3]
होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा * तब रघुनाथ चरन अनुरागा
सषा परम परमारथ एहू * मन क्रम बचन रामपद नेहू
राम ब्रह्म परमारथरूपा * अबिगत अलष अनादि अनूपा
सकल बिकाररहित गतभेदा * कहि नित नेति निरूपहिं बेदा

दो० भगत भूमि भूसुर सुरभि, सुरहित लागि कृपाल।
करत चरित धरि मनुजतनु, सुनत मिटहिं जगजाल ९३॥

मा० पा० ॥ १५ ॥

सषा समुझि अस परिहरि मोहू * सिअ रघुबीर चरन रत होहू
कहत रामगुन भा भिनुसारा[4] * जागे जगमंगल दातारा
सकल सौंच करि राम नहावा * सुचि सुजान बटछीर मगावा
अनुज सहित सिर जटा बनाये * देषि सुमंत्र नयन जल छाये
हृदय दाह अति बदनमलीना * कह कर जोरि बचन अतिदीना
नाथ कहेउ अस कोसलनाथा * लै रथ जाहु राम के साथा

---

१ संसारो स्वप्नतुल्यो हि रागद्वेषादिसंकुलम्। स्वकाले सत्यवद्भाति प्रबोधेऽसत्यवद्भवेत्। इति आत्मबोधे।

२ या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जागर्ति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने। इति गीतायाम्।

३ अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोधः इति योगसूत्रे।

४ राम सुने से निषाद के विज्ञान-विहान भा आचार्य द्वारा।

बनु देषाइ सुरसरि अन्हवाई * आनेहु फेरि बेगि दोउ भाई
लषन राम सिअ आनेहु फेरी * संसय सकल सकोच निबेरी

दो० नृपअस कहेउ गोसाइँ जस, कहइ करौं बलि सोइ।
करि बिनती पायन्ह परेउ, दीन्ह बाल जिमि रोइ ९४॥

तात कृपाकरि कीजिअ सोई * जाते अवध अनाथ न होई
मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा * तात धरमुमग तुम्ह सब सोधा
सिबि दधीचि हरिचंद नरेसा * सहे धरमुहित कोटि कलेसा
रंतिदेव बलि भूप सुजाना * धरमु धरेउ सहि संकट नाना
धरमु न दूसर सत्य समाना * आगमु निगमु पुरान बषाना
मैं सोइ धरमु सुलभकरि पावा * तजे तिहूँपुर अपजस छावा
संभावित कहँ अपजस लाहू * मरन कोटि सम दारुन दाहू
तुम्हसन तात बहुत का कहऊँ * दिये उतर फिर पातक लहऊँ

दो० पितुपद गहिकहि कोटिनति, बिनय करब करजोरि।
चिंता कवनिहु बात कइ, तात करिअ जनि मोरि॥९५॥

तुम्ह पुनि पितुसम अतिहित मोरें * बिनती करौं तात कर जोरें
सब बिधि सोइ करतव्य तुम्हारे * दुष न पाव पितु सोच हमारे
सुनि रघुनाथ सचिव संबादू * भयउ सपरिजन बिकल निषादू
पुनि कछु लषन कही कटुबानी * प्रभु बरजेउ बड अनुचित जानी
सकुचि राम निज सपथ देवाई * लषनसँदेश कहिअ जनि जाई
कह सुमंत्र पुनि भूपसँदेसू * सहि न सकिहि सिय बिपिन कलेसू
जेहि बिधि अवध आव फिरि सीया * सोइ रघुबरहि तुम्हहि करनीया

१ संभावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते। (गीता)
२ कामी आदि प्र० बा०

नतरु निपट अवलंबविहीना * मैं न जिअब जिमि जलबिनुमीना

दो० मैके ससुरे सकल सुष, जबहिं जहाँ मनुमान।
तहँ तब रहिहि सुषेन सिय, जबलगि बिपति बिहान ९६॥

बिनती भूप कीन्हि जेहिं भाँती * आरति प्रीति न सो कहिजाती
पितुसँदेस सुनि कृपानिधाना * सिअहिं दीन्ह सिष कोटिबिधाना
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू * फिरहु तौ सबकर मिटइ षभारू
सुनि पतिबचन कहति बैदेही * सुनहु प्रानपति परमसनेही
प्रभु करुनामय परमबिबेकी * तनु तजि रहति छाँहँ किमि छेंकी
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई * कहँ चंद्रिका चंद्र तजि जाई
पतिहि प्रेममय बिनय सुनाई * कहति सचिव सन गिरासोहाई
तुम्ह पितु ससुर सरिस हितकारी * उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी

दो० आरतिबस सनमुष भइउँ, बिलग० न मानब तात।
आरजसुतपदकमल बिनु, बादि जहांलगि नात ९७॥

पितुबयभवबिलास मैं डीठा * नृपमनिमुकुटमिलत पदपीठा
सुषनिधान अस पितुगृह मोरें * पिअबिहीन मन भाव न भोरें
ससुर चक्कवै कोसलराऊ * भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ
आगे होइ जेहि सुरपति लेई * अरध सिंहासन आसन देई
ससुर एतादृस अवधनिवासू * प्रिय परिवारु मातुसम सासू
बिनु रघुपति पदपदुमपरागा * मोहिं सपनेहुँ सब सुषद न लागा
अगम पंथ बन भूमि पहारा * करि केहरि सर सरित अपारा
कोल किरात कुरंग बिहंगा * मोहि सब सुषद प्रानपति संगा

दो० सासु ससुर सन मोरि हुति, बिनय करबि परि पाय।
मोर सोचु जनि करिअ कछु, मैं बन सुषी सुभाय ९८

प्राननाथ प्रिय देवर साथा * बीर धुरीन धरें धनु भाथा
नहिं मगश्रम भ्रम दुष मन मोरे * मोहि लगि सोचु करिअ जनि भोरे
सुनि सुमंत्र सिय सीतल बानी * भयेउ बिकल जनु फनि मनि हानी
नयन सूझ नहिं सुनइ न काना * कहि न सकइ कछु अति अकुलाना
राम प्रबोध कीन्ह बहु भाँती * तदपि होत नहिं सीतल छाती
जतन अनेक साथ हित कीन्हे * उचित उतरु रघुनंदन दीन्हे
मेटि जाइ नहिं रामरजाई * कठिन करमगति कछु न बसाई
रामु लषनु सिय पद सिरुनाई * फिरेउ बनिक जिमि मूल गँवाई

दो० रथु हाँकेउ हय रामतनु, हेरि हेरि हिहिनाहिं।
देषि निषाद बिषादबस, धुनहिं सीस पछिताहिं ९९ ॥

जासु बियोगु बिकल पसु ऐसे * प्रजा मातु पितु जीहहिं कैसे
बरबस रामु सुमंत्रु पठाये * सुरसरितीर आपु तब आये
माँगी नाव न केवटु आना * कहइ तुम्हार मरम मैं जाना
चरनकमलरजकहँ सबु कहई * मानुषकरनि मूरि कछु अहई
छुअत सिला भइ नारि सुहाई * पाहन तें न काठ कठिनाई
तरनिउँ मुनिघरनी होइ जाई * बाट परइ मोरि नाव उडाई
येहि प्रतिपालउँ सब परिवारू * नहिं जानउँ कछु और कबारू
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू * मोहि पदपदुम[1] पषारन कहहू

छंद

पदपदुम धोइ चढाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहिं रामु राउरि आन दसरथ सपथ सब साँची कहौं ॥
बरु तीर मारहु लषन पै जबलगि न पाय पषारिहौं।

१ यथा रामपदपदुमपराग परी इति गीतावली, कमल ।

केवट का चरण धोना ।
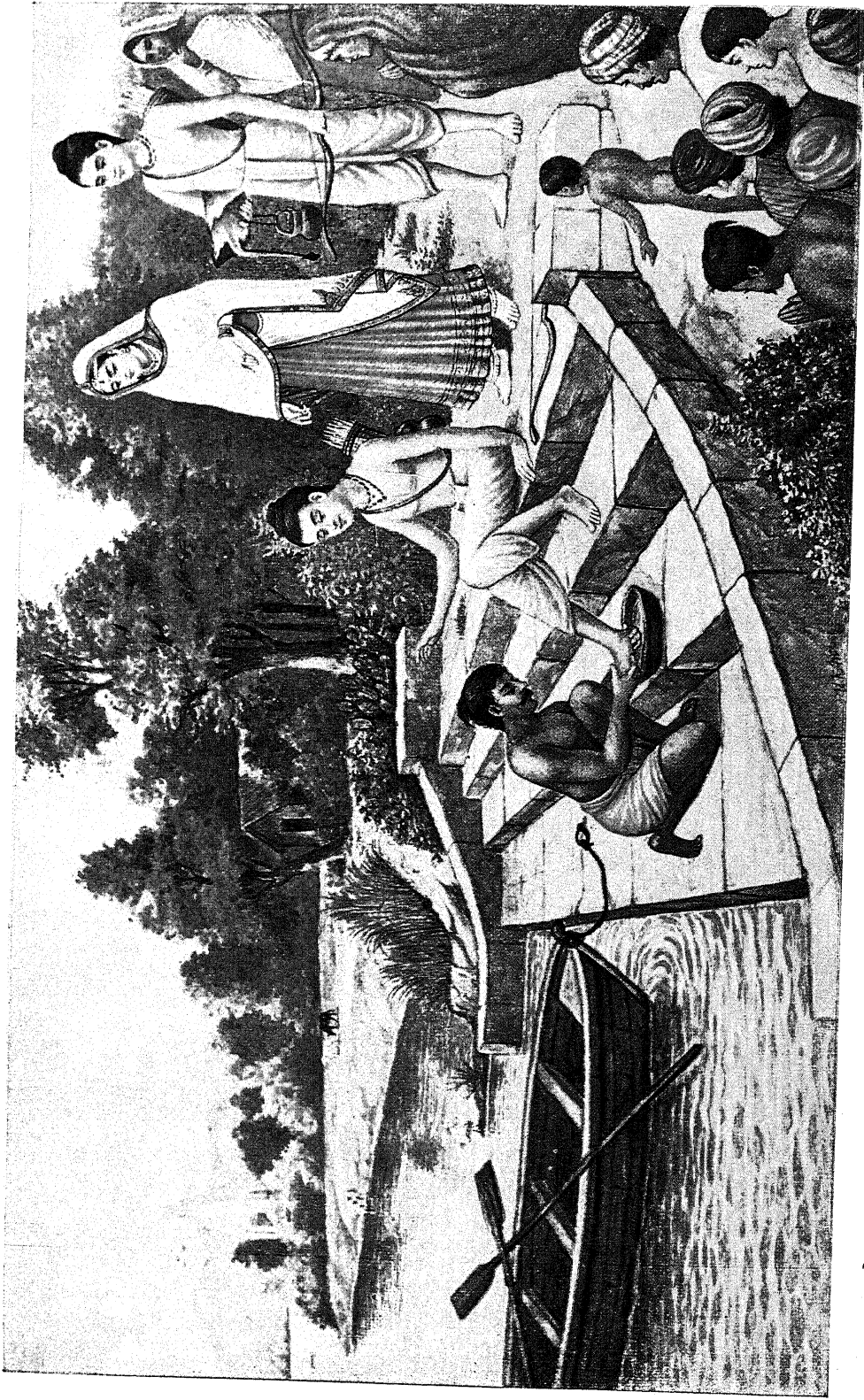
केवट राम रजायसु पावा । पानि कठौता भरि लै आवा ॥ अतिआनंद उमँगि अनुरागा । चरण सरोज पखारन लागा ॥

तबलगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पार उतारिहौं २॥
सो० सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहँसे करुनाऐन, चितै जानकी लषनुतन २॥
कृपासिंधु बोले मुसुकाई * सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई
बेगि आनु जलु पायँ पषारू * होत बिलंबु उतारहि पारू
जासु नाम सुमिरत येकबारा * उतरहिं नर भवसिंधु अपारा
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा *जेहिं जगु किय तिहुँ पगहुँ ते थोरा
पदनष निरषि देवसरि हरषी * सुनि प्रभुबचन मोहँ मतिकरषी
केवट राम रजायसु पावा * पानि कठवता भरि लइ आवा
अति आनंद उमगि अनुरागा * चरनसरोज पषारन लागा
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं * येहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं
दो० पदपषारि जलु पानकरि, आपु सहित परिवार।
पितर पारकरि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लै पार १००
उतरि ठाढ भये सुरसरि रेता * सीय राम गुह लषनु समेता
केवट उतरि दंडवत कीन्हा *प्रभुहि सकुच येहिकछुनहिं दीन्हा
पिय हिय की सिय जाननिहारी * मनिमुदरी मनमुदित उतारी
कहेउ कृपाल लेहि उतराई * केवट चरन गहे अकुलाई
नाथ आजु मै काह न पावा * मिटे दोष दुष दारिद दावा
बहुत काल मइ कीन्ह मजूरी * आजु दीन्हि बिधिबनि भलि भूरी
अब कछु नाथ न चाहिअ मोरे * दीनदयाल अनुग्रह तोरे
फिरती बार मोहि जोइ देबा * सो प्रसादु मै सिर धरि लेबा

१ तु=तुरीय राम, ल=लक्ष्मण, सी=सीता, एकही शब्द में।
२ त्रिविक्रम। ३ विपर्यय ते लगा।
४ अनेकजन्मसंसिद्धि ततो याति परांगतिम् (गीता)

दो०बहुत कीन्ह प्रभु लषन सिय, नहिं कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन, भगति बिमलबर देइ १०१॥
तब मज्जनु करि रघुकुलनाथा * पूजि पारथिव नायेउ माथा
सिय सुरसरिहि कहेउ करजोरी * मातु मनोरथ पुरउबि मोरी
पति देवर सँग कुसल बहोरी * आइ करौं जेहि पूजा तोरी
सुनि सियबिनय प्रेमरससानी * भइ तब बिमल बारिबरबानी
सुनु रघुबीरप्रिआ बैदेही * तव प्रभाव जग बिदित न केही
लोकप होहिं बिलोकत तोरे * तोहि सेवहिं सब सिधि कर जोरे
तुम जो हमहिं बडि बिनय सुनाई * कृपा कीन्हि मोहि दीन्हि बडाई
तदपि देबि मैं देबि असीसा * सुफल होनहित निज बागीसा
दो०प्राननाथ देवर सहित, कुसल कोसला आइ।
पूजिहि सब मनकामना, सुजसु रहिहि जग छाइ १०२॥
गंगबचन सुनि मंगलमूला * मुदित सीय सुरसरि अनुकूला
तब प्रभु गुहहि कहेउ घर जाहू * सुनत सूष मुष भा उर दाहू
दीन बचन गुह कह करजोरी * बिनय सुनहु रघुकुलमनि मोरी
नाथ साथ रहि पंथु दिषाई * करि दिन चारि चरनसेवकाई
जेहि बन जाइ रहब रघुराई * परनकुटी मैं करबि सुहाई
तब मोहि कहँ जस देबि रजाई * सोइ करिहौं रघुबीर दोहाई
सहज सनेहु राम लषि तासू * संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू
पुनि गुह ज्ञाति बोलि सब लीन्हे * करि परितोषु बिदा सब कीन्हे
दो०तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु, नाइ सुरसरिहि माथ।
सषा अनुज सिअसहित बन, गवनु कीन्ह रघुनाथ १०३
तेहि दिन भएउ बिटपतर बासू * लषन सषा सब कीन्ह सुपासू

प्रात प्रातकृत करि रघुराई * तीरथराजु दीष प्रभु जाई
सचिव सत्य श्रद्धा प्रियनारी * माधव सरिस मीत हितकारी
चारि पदारथ भरा भंडारू * पुन्य प्रदेस देस अति चारू
छेत्र अगम गढ गाढ सुहावा * सपनेहुँ नहिं प्रतिपच्छिन्ह पावा
सेन सकल तीरथबर बीरा * कलुष अनीक दलन रनधीरा
संगमु सिंहासनु सुठि सोहा * छत्र अषैबटु मुनि मनमोहा
चवर जमुन अरु गंगतरंगा * देषि होहिं दुष दारिद भंगा

दो॰ सेवहिं सुकृती साधु सुचि, पावहिं सब मनकाम।
बंदी बेद पुरानगन, कहहिं बिमल गुनग्राम १०४॥

को कहि सकइ प्रयाग प्रभाऊ * कलुषपुंज कुंजर मृगराऊ
अस तीरथपति देषि सोहावा * सुषसागर रघुबर सुषु पावा
कहि सिय लषनहिं सबहि सुनाई * श्रीमुष तीरथराजु बडाई
करि प्रनामु देषत बन बागा * कहत महातम अति अनुरागा
येहि बिधि आइ बिलोकी बेनी * सुमिरत सकल सुमंगल देनी
मुदित नहाइ कीन्हि सिवसेवा * पूजि जथाबिधि तीरथदेवा
तब प्रभु भरद्वाज पहिं आये * करत दंडवत मुनि उरलाये
मुनिमन मोद न कछु कहि जाई * ब्रह्मानंद रासि जनु पाई

दो॰ दीन्हि असीस मुनीस उर, अति अनंद अस जानि।
लोचनगोचर सुकृतफल, मनहु किये बिधि आनि १०५

कुसलप्रस्न करि आसनु दीन्हे * पूजि प्रेमपरिपूरन कीन्हे
कंद मूल फल अंकुर नीके * दिये आनि मुनि मनहु अमीके

१ स्वाम्यमात्यौ पुरं राष्ट्रं कोशदंडौ सुहृत्तथा। सप्तप्रकृतयो ह्येताः सप्तांगं राज्यमुच्यते। इति मनुस्मृतौ। गुरूमात्यसुहृत्कोशो राष्ट्रदुर्गबलानि च। इत्यमरः

२ आर्यावर्त्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विंध्यहिमालयोरित्यमरः। तत्र मध्ये महापुण्यं ब्रह्मावर्त्तदेशः।

सीय लषन जन सहित सोहाये * अति रुचि राम मूल फल षाये
भये बिगतश्रम राम सुषारे * भरद्वाज मृदु बचन उचारे
आजु सुफल तपु तीरथु त्यागू * आजु सुफल जप जोग बिरागू
सुफल सकल सुभ साधन साजू * राम तुम्हहिं अवलोकत आजू
लाभ अवधि सुषु अवधि न दूजी * तुम्हरे दरस आस सब पूजी
अब करि कृपा देहु बर येहू * निजपद सरसिज सहज सनेहू

दो० करम बचन मन छाँडि छलु, जबलगि जनु न तुम्हार।
तब लगि सुषु सपनेहुँ नहीं, किये कोटि उपचार १०६

सुनि मुनिबचन राम सकुचाने * भावभगति आनंद अघाने
तब रघुबर मुनिसुजसु सोहावा * कोटिभाँति कहि सबहि सुनावा
सो बड सो सब गुनगन गेहू * जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू
मुनि रघुबीर परस्पर नवहीं * बचन अगोचर[1] सुषु अनुभवहीं
यह सुधि पाइ प्रयागनिवासी * बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी
भरद्वाज आश्रम सब आये * देषन दसरथसुवन सोहाये
राम प्रनाम कीन्ह सबकाहू * मुदित भये लहि लोचनलाहू
देहिं असीस परम सुषु पाई * फिरे सराहत सुंदरताई

दो० राम कीन्ह बिश्राम निसि, प्रात प्रयाग नहाइ।
चले सहित सिय लषनुजन, मुदित मुनिहिं सिरु नाइ १०७

राम सप्रेम कहेउ मुनि पाहीं * नाथ कहिअ हम केहि मगु जाहीं
मुनि मन बिहँसि राम सन कहहीं * सुगम सकल मगु तुम्ह कहँ अहहीं
साथ लागि मुनि सिष्य बोलाये * सुनि मन मुदित पचासक आये
सबहि रामपर प्रेम अपारा * सकल कहहिं मगु दीष हमारा

१ यतो वाचो निवर्तंते। श्रुतिः।

मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे * जिन्ह बहुजनम सुकृत बडकीन्हे
करि प्रनाम ऋषिआयसु पाई * प्रमुदित हृदय चले रघुराई
ग्रामनिकट निकसहिं जब जाई * देषहिं दरस नारि नर धाई
होहिं सनाथ जनमुफल पाई * फिरहिं दुषित मनु संगपठाई

दो० बिदाकिये बटु बिनय करि, फिरे पाइ मनकाम।
उतरि नहाये जमुनजल, जो सरीरसम स्याम १०८॥

सुनत तीरबासी नर नारी * धाये निज निज काज बिसारी
लषनु रामु सिय सुंदरताई * देषि करहिं निजभाग्य बडाई
अति लालसा सबहि मनमाहीं * नाउँ गाउँ बूझत सकुचाहीं
जे तिन्हमहुँ बयबिरिध सयाने * तिन्ह करि जुगुति राम पहिचाने
सकल कथा तिन्ह सबहिं सुनाई * बनहिं चले पितुआयसु पाई
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं * रानी राय कीन्ह भल नाहीं
तेहिं अवसर एक तापसु आवा * तेजपुंज लघु बयसु सोहावा
कबिअलषितगति बेषु बिरागी * मन क्रम बचन रामअनुरागी

दो० सजलनयन तनपुलकि निज, इष्टदेव पहिचानि।
परेउ दंड जिमि धरनितल, दसा न जाइ बषानि १०९

राम सप्रेम पुलकि उर लावा * परम रंकु जनु पारसु पावा
मनहुँ प्रेमु परमारथ दोऊ * मिलत धरें तनु कह सब कोऊ
बहुरि लषन पायन्ह सो लागा * लीन्ह उठाय उमगि अनुरागा
पुनि सियचरनधूरि धरि सीसा * जननिजानिसिसुदीन्हअसीसा

---

१ चारिके चार बेद वा आचार्य वा चतुःपंथ इति प्रमाणे।
२ युक्ति कथा द्वारा वा स्वरूप लक्षण।
३ मुख्य अग्नि वा शिव वा कवि वा चित्रकूट वा ग्रंथकार।

कीन्ह निषाद दंडवत तेही * मिलेउ मुदित लषि रामुसनेही
पिअत नयनपुट रूप पियूषा * मुदित सुअसनु पाइ जिमिभूषा
ते पितु मातु कहहु सषि कैसे * जिन्ह पठये बन बालक ऐसे
राम लषन सिय रूप निहारी * सोच सनेह बिकल नर नारी

दो०तब रघुबीर अनेकबिधि, सषहिं सिषावन दीन्ह।
राम रजायसु सीसधरि, भवनु गवनु तेहिं कीन्ह ११० ॥

पुनि सिय राम लषन करजोरी * जमुनहिं कीन्ह प्रनामु बहोरी
चले ससीय मुदित दोउ भाई * रबितनुजा कै करत बडाई
पथिक अनेक मिलहिं मगु जाता * कहँहिं सप्रेम देषि दोउ भ्राता
राजलछन सब अंग तुम्हारे * देषि सोचु अति हृदय हमारे
मारग चलहु पयादेहि पायें * जोतिषु झूँठ हमारे भायें
अगमु पंथु गिरि कानन भारी * तेहि महँ साथ नारि सुकुमारी
करि केहरि बन जाइ न जोई * हम सँग चलहिं जो आयसु होई
जाब जहां लगि तहँ पहुँचाई * फिरब बहोरि तुम्हहिं सिरु नाई

दो०येहि बिधि पूँछहिं प्रेम बस, पुलक गात जलु नैन।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं, करि बिनीत मृदुबैन १११ ॥

जे पुरु गाँव बसहिं मगुमाहीं * तिन्हहिं नाग सुर नगर सिहाहीं
केहिं सुकृती केहिं घरी बसाये * धन्य पुन्यमय परम सोहाये
जहँ जहँ रामुचरन चलिजाहीं * तिन्ह समान अमरावति नाहीं
पुन्यपुंज मगु निकट निवासी * तिन्हहिं सराहहिं सुरपुरबासी
जे भरिनयनबिलोकहिं रामहिं * सीतालषनसहित घनश्यामहिं
जेहि सरसरितरामअवगाहहिं * तिन्हहिं देवसर सरित सराहहिं
जेहि तरुतर प्रभु बैठहिं जाई * करहिं कलपतरु तासु बडाई

परसि रामपदपदुम परागा * मानति भूमि भूरि निज भागा

दो० छाँहँ करहि घन बिबुधगन, बर्षहिं सुमन सिहांहिं ।
देषत गिरि बन बिहगमृग, राम चले मगु जांहिं ११२॥

सीता लषनु सहित रघुराई * गाँव निकट जब निकसहिं जाई
सुनि सब बाल बृद्ध नरनारी * चलहिं तुरत गृह काज बिसारी
राम लषनु सियरूप निहारी * पाइ नयनफलु होहिं सुषारी
सजल बिलोचन पुलक सरीरा * सब भये मगन देषि दोउ बीरा
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरी * लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी
एकन्ह एक बोलि सिष देहीं * लोचनलाहु लेहु छन येहीं
रामहिं देषि एक अनुरागे * चितवत चले जाहिं सँगलागे
एक नयन मगु छबि उर आनी * होहिं शिथिल तनमनबरबानी

दो० एक देषि बटछाँहँ भलि, डासि मृदुल तृन पात ।
कहहिं गवाइअ छिन कुश्रम, गवनब अबहिं कि प्रात ११३॥

एक कलसभरि आनेहिं पानी * अँचइअ नाथ कहहिं मृदुबानी
सुनि प्रियवचन प्रीति अति देषी * राम कृपाल सुशील बिशेषी
जानी श्रमित सीय मनमाहीं * घरिकु बिलंबु कीन्ह बटछाहीं
मुदित नारि नर देषहिं सोभा * रूप अनूप नयन मन लोभा
एकटक सब सोहहिं चहुँ वोरा * रामुचंद्रु मुषचंद्रु चकोरा
तरुन तमाल बरनु तन सोहा * देषत कोटि मदन मनु मोहा

---

१ न वेदान्ताच्छास्त्रं न मधुमथनात्तत्त्वमधिकं न तद्भक्तातीर्थं न तदभिमतात्सात्त्विकपदम् । न सत्वादारोग्यं न बुधभजनाद्बोधजनकं न मुक्तेः सौख्यं न ह्रयवचनतः क्षेमकरणम् । इति अधिकारसंग्रहे ।

२ राषहिं इति पाठांतर ।

दामिनि बरन लषनु सुठि नीके * नष सिष सुभग भावते जीके
मुनिपट कटिन्ह कसे तूनीरा * सोहहिं करकमलनि धनुतीरा

दो० जटामुकुट सीसन सुभग, उरभुज नयन बिसाल।
सरद परब बिधु बदन बर, लसतस्वेदकनजाल ११४॥

बरनि न जाइ मनोहर जोरी * सोभा बहुत थोरि मति मोरी
राम लषन सिय सुंदरताई * सब चितवहिं चित मति मन लाई
थके नारि नर प्रेम पिआसे * मनहु मृगी मृग देषि दिआसे
सीय समीप ग्राम तिअ जाहीं * पूँछत अति सनेह सकुचाहीं
बार बार सब लागहिं पाये * कहहिं बचन मृदु सरल सुभाये
राजकुमारि बिनय हम करहीं * तिअसुभाव कछु पूँछत डरहीं
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी * बिलग न मानब जानि गवारी
राजकुँअर दोउ सहजसलोने * इन्हते लहि दुति मरकत सोने

दो० स्यामल गौर किसोर बर, सुंदर सुषमा अयन।
सरद सर्बरीनाथ मुष, सरद सरोरुह नयन ११५॥

नवाह ॥ ४ ॥ दिन, मा० पा० ॥ १६ ॥ दिन

कोटि मनोज लजावनिहारे * सुमुषि कहहु को आहिं तुम्हारे
सुनि सनेहमय मंजुल बानी * सकुचि सीय मनमहँ मुसुकानी
तिन्हहिं बिलोकि बिलोकति धरनी * दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी
सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी * बोलीं मधुर बचन पिकबयनी
सहज सुभाय सुभगतन गोरे * नामु लषनु लघु देवर मोरे
बहुरि बदनुबिधु अंचल ढांकी * पिअतन चितइ भौंह करि बांकी

१ पथि पथिकवधूभिः सादरं पृच्छ्यमानां कुवलयदलनीलः कोयमार्य्यै स वेत्ति । स्मित-विकशितगंडं व्रीडविभ्रान्तनेत्रं मुखमवनमयन्ती स्पष्टमाचष्ट सीता। नाटके

खंजन मंजु तिरीछेनयननि * निजपतिकहेउतिनहिंसिअसयननि
भईं मुदित सब ग्रामबधूटी[1] * रंकन्ह रायरासि[2] जनु लूटी

दो० अतिसप्रेमसिय पाय परि, बहुबिधि देहिं असीस।
सदाँसोहागिनिहोहुतुम्ह, जबलगिमहिअहिसीस ११६

पारबती सम पति प्रिय होहू * देबि न हमपर छाँडबि छोहू
पुनिपुनिबिनयकरिअकरजोरी * जौं येहि मारग फिरिअ बहोरी
दरसनु देब जानि निज दासी * लषी सीय सब प्रेम पियासी
मधुरबचनकहि कहि परितोषी * जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी
तबहिं लषनु रघुबर रुष जानी * पूछेउ मग लोगन्हि मृदुबानी
सुनत नारि नर भये दुषारी * पुलकित गात बिलोचन बारी
मिटा मोद मन भये मलीने * बिधि निधिदीन्हि लेतु जनु छीने
समुझिकरमगातिधीरजुकीन्हा * सोधिसुगममगु तिन्ह कहिदीन्हा

दो० लषनु जानकी सहित तब, गवन कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिअ वचन कहि, लिये लाय मनु साथ ११७

फिरत नारि नर अति पछिताहीं * दैअहि दोषु देहिं मनमाहीं
सहित बिषाद परसपर कहहीं * बिधिकरतब उलटेसब अहहीं[3]
निपट निरंकुश निठुर निशंकू * जेहि ससि कीन्ह सरुज सकलंकू
रूष कलपतरु सागरु षारा * तेहिं पठये बन राजकुमारा
जौं पै इन्हहिं दीन्ह बनबासू * कीन्ह बादि बिधि भोगु बिलासू
ये बिचरहिं मगु बिनुपदत्राना * रचे बादि बिधि बाहन नाना

१ वधूटी चिरंटी किशोरी कलभी कुमारी प्रभृतयः अक्षतयोनयः इति कौमुदी स्त्रीप्रत्ययः।
२ रायः कलत्रः पशवः सुतादयः इति भागवते।
३ भूतिर्नीचगृहेषु विप्रसदने दारिद्र्यकोलाहलो नाशो हंत सतामसत्पथमुषामायुः समानां शतम्। दुर्नीतिं तव वक्षिय कोपदहनज्वालाजटालोपिसन् किं कुर्वे जगद्वीश यत्पुनरहं दीनो भवानीश्वरः इति भामिनीविलासे।

ये महि परहिं डासि कुसपाता * सुभग सेज कत सृजत बिधाता
तरुबर बासु इन्हहिं बिधि दीन्हा * धवलधाम रचि रचि श्रमु कीन्हा

दो० जौं ये मुनिपटधर जटिल, सुंदर सुठि सुकुमार ।
बिबिध भाँति भूषन बसन, बादि किये करतार ११८॥

जौं ये कंद मूल फल षाहीं * बादि सुधादि असन जगमाहीं
येक कहहिं ए सहज सोहाये * आप प्रगट भयेबिधि न बनाये
जहँलगि बेद कही बिधिकरनी * श्रवन नयन मन गोचर बरनी
देषहु षोजि भुअन दसचारी * कहँ अस पुरुषु कहाँ असिनारी
इन्हहिं देषि बिधिमनु अनुरागा * पटतर जोगु बनावइ लागा
कीन्ह बहुत श्रमु एक न आये * तेहिं इर्षा बन आनि दुराये
येक कहहिं हम बहुत न जानहिं * आपुहि परम धन्य करि मानहिं
ते पुनि पुन्यपुंज हम लेषे * जे देषहिं देषिहहिं जिन्ह देषे

दो० येहि बिधिकहिकहिबचनप्रिअ, लेहिं नयन भरि नीर ।
किमि चलिहहिं मारग अगम, सुठि सुकुमार सरीर ॥

नारि सनेह विकल वश होहीं * चकई साँझ समय जनु सोहीं
मृदुपद कमल कठिन मगु जानी * गहवरि हृदय कहहिं मृदुबानी
परसत मृदुल चरन अरुनारे * सकुचति महि[1] जिमि हृदय हमारे
जो जगदीस इन्हहिं बनु दीन्हा * कस न सुमनमय मारगु कीन्हा
जो मागा पाइअ बिधि पाहीं * ये रषिअहिं सषि आषिन्ह माहीं
जे नर नारि न अवँसर आये * तिन्ह सिअ रामु न देषन पाये
सुनि सरूप बूझहिं अकुलाई * अब लगि गये कहाँ लगि भाई

१ अरुणदलनलिन्या स्निग्धपादारविंदं कठिनतनुधरिण्या पात्यकस्मात्खलंती । अवनि तव सुतेयं पादविन्यासदेशे त्यज निजकाठिनत्वं जानकी जात्यरण्यम् । नाटके

समरथ धाइ बिलोकहिं जाई * प्रमुदित फिरहिं जनमुफलु पाई

दो० अबला बालक बृद्धजन, कर मीजहिं पछिताहिं।
होहिं प्रेमबस लोग इमि, रामु जहाँ जह जाहिं १२० ॥

गाँवँ गाँवँ अस होइ अनंदू * देषि भानुकुल कैरव चंदू
जे कछु समाचार सुनि पावहिं * ते नृप रानिहिं दोषु लगावहिं
कहहिं एक अति भल नरनाहू * दीन्ह हमहिं जेहिं लोचनलाहू
कहहि परस्पर लोग लोगाईं * बातैं सरल सनेह सुहाईं
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाये * धन्य सो नगरु जहाँतें आये
धन्य सो देसु सइल बनु गाऊँ * जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ
सुषु पायेउ बिरंचिरचि तेही * ये जेहिके सब भाँति सनेही
रामु लषनु पथि कथा सोहाई * रही सकल मगु काननु छाई

दो० येहि बिधि रघुकुलकमलरबि, मगुलोगन्ह सुषुदेत।
जाहिं चले देषत बिपिन, सिअ सौमित्रि समेत १२१॥

आगे रामु लषनु बने पाछें * तापस बेष बिराजत काछें
उभयबीच सिय सोहति कैसे * ब्रह्म जीव बिच माया जैसे
बहुरि कहउँ छबि जसि मन बसई * जनु मधुमदनमध्य रति लसई
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही * जनु बुधबिधुबिच रोहिनि सोई
प्रभु पद रेष बीच बिच सीता * धरति चरन मगु चलति सभीता
सीअ रामु पद अंक बरायें * लषनु चलत मग दाहिन बायें
रामु लषनु सिय प्रीति सोहाई * बचन अगोचर किमि कहिजाई
षग मृग मगन देषि छबि होहीं * लिये चोरि चित रामु बटोहीं

दो० जिन्ह जिन्ह देषे पथिकप्रिअ, सिअ समेत दोउ भाइ।
भव मगु अगमु अनंदतेइ, बिनुश्रमु रहे सिराइ १२२॥

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ * बसहिं लषनु सिय रामु बटाऊ
रामुधामुपथु पाइहि सोई * जो पथु पाव कबहुँ मुनि कोई
तब रघुबीर अमित सिअ जानी * देषि निकट बट सीतलपानी
तहँ बसि कंद मूल फलु षाई * प्रात नहाइ चले रघुराई
देषत बन सर सैल सोहाये * बालमीकि आश्रम प्रभु आये
राम दीष मुनिबास सोहावन * सुंदर गिरि काननु जल पावन
सरनि सरोज बिटप बन फूले * गुंजत मंजु मधुप रस भूले
षग मृग बिपुल कोलाहल करहीं * बिरहित बैर मुदित मन चरहीं

दो० सुचि सुंदर आश्रमु निरषि, हरषे राजिवनैन ।
मुनि रघुबर आगमनु सुनि, आगे आये लेन १२३ ॥

मुनिकहँ रामु दंडवत कीन्हा * आसिर्बाद बिप्रबर दीन्हा
देषि रामुछबि नयन जुडाने * करि सनमान आश्रमहिं आने
मुनिबर अतिथि प्रानप्रिय पाये * कंद मूल फल मधुर मगाये
सिअ सौमित्रि राम फलु षाये * तब मुनि आसन दिये सोहाये
बालमीकि मन आनद भारी * मंगलमूरति नयन निहारी
तब करकमल जोरि रघुराई * बोले बचन श्रवनसुषदाई
तुम्ह त्रिकालदरसी मुनिनाथा * बिस्व बदर जिमि तुम्हरे हाथा
अस कहि प्रभु सब कथा बषानी * जेहि जेहि भाँति दीन्ह बनु रानी

दो० तातबचन पुनि मातुहित, भाइ भरत अस राउ ।
मोकहँ दरस तुम्हार प्रभु, सब मम पुन्य प्रभाउ १२४ ॥

देषि पाय मुनिराय तुम्हारे * भये सुकृत सब सुफल हमारे
अब जहँ राउर आयसु होई * मुनि उदबेग न पावइ कोई
मुनितापस जिन्हते दुषु लहहीं * ते नरेस बिनु पावक दहहीं

मंगल मूल बिप्रपरितोषू * दहइ कोटि कुल भूसुररोषू
असजिअ जानिकहियसोइठाऊँ *सिअ सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ
तहँ रचि रुचिर परन तृनसाला * बास करेउँ कछु काल कृपाला
सहज सरल सुनि रघुबरबानी * साधु साधु बोले मुनिज्ञानी
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू * तुम्ह पालक संतत श्रुतिसेतू

छंद

श्रुतिसेतुपालक रामु तुम्ह जगदीस माया जानकी ।
जो सृजति पालति हरति जग रुषपाइ कृपानिधान की ॥
जो सहस सीस अहीस महिधर लषनु सचराचर धनी ।
सुरकाज धरिनरराजुतनु चले दलनषल निसिचरअनी ३॥

सो० राम सरूप तुम्हार, बचन अगोचर बुद्धिपर ।
अबिगतअकथअपार, नेतिनेतिनिति निगमुकहं ३ ॥

जग पेषन तुम्ह देषनिहारे * बिधि हरि सम्भु नचावनिहारे
तेउ न जानहिं मरमु तुम्हारा * और तुम्हहिं को जाननिहारा
सो जानइ जेहि देहु जनाई * जानत तुम्हहिं तुम्हइँ होइ जोई
तुम्हरिहिकृपातुम्हहिं रघुनंदन * जानहिं भगत भगतउर चंदन
चिदानंदमय देह तुम्हारी * बिगतबिकार जान अधिकारी
नरतनु धरेहु संत सुरकाजा * कहहु करहु जस प्राकृत राजा

---

१ प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणोरपि । रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तम्पुरुषम्परम् । इति मनुस्मृतौ । य एषोऽन्तरादित्ये हिरण्मय इति छांदोग्योपनिषदे । नैवासौ चक्षुषा ग्राह्यो न च शिष्टैरपीन्द्रियैः । मनसा तु प्रसन्नेन गृह्यते सूक्ष्मदर्शिभिः । इति व्यासस्मृतिः ।

२ ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवतीति श्रुतिः ।

३ निर्दोषपूर्णगुणविग्रहमात्मतंत्रो निश्चेतनात्मकशरीरगुणैश्च हीनः । [illegible]दमात्र मुख-पादकरोदरादिसर्वत्र च त्रिविधिभेदविवर्जितात्मा ॥ इति स्वरूपोक्ति । [illegible]धभेद नाम-स्वजाती, विजाती, स्वगतशून्य इति ।

राम देषि सुनि चरित तुम्हारे * जड मोहँहिं बुध होहिं सुषारे
तुम्ह जो कहहु करहु सबु सांचा * जस काछिय तस चाहिअ नाचा

दो० पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ, मै पूँछत सकुचाउँ ।
जहँ न होहु तहँ देहु कहि, तुम्हहिं देषावउँ ठाउँ १२५॥

सुनि मुनिबचन प्रेमरस साने * सकुचि रामु मनमहुँ मुसुकाने
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी * बानी मधुर अमी रस बोरी
सुनहु राम अब कहौं निकेता * जहाँ बसहु सिय लषनु समेता
जिन्हके श्रवन समुद्र समाना * कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे * तिन्हके हिय तुम्ह कहँ गृह रूरे
लोचन चातक जिन्ह करि राषे * रहहिं दरस जलधर अभिलाषे
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी * रूप बिंदु जल होहिं सुषारी
तिन्हके हृदय सदन सुषदायक * बसहु बंधु सिअ सह रघुनायक

दो० जस तुम्हार मानस बिमल, हंसिनि जीहा जासु ।
मुकुताहल गुनगन चुँनइ, रामु बसहु मनु तासु १२६॥

प्रभुप्रसाद सुचि सुभग सुबासा * सादर जासु लहइ नित नासा
तुम्हहिं निबेदित भोजन करहीं * प्रभुप्रसाद पटु भूषन धरहीं
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देषी * प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी
कर नित करहिं रामपद पूजा * राम भरोस हृदय नहिं दूजा
चरन रामतीरथ चलि जाहीं * राम बसहु तिन्ह के मनमाँहीं
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा * पूजहिं तुम्हहिं सहित परिवारा
तरपन होमु करहिं बिधि नाना * बिप्र जेवाइ देइ बहु दाना
तुम्ह ते अधिक गुरुहि जिअ जानी * सकल भाय सेवहिं सनमानी

दो० सबकरि मागहिं एक फलु, रामचरन रति होउ ।

तिन्हके मनमंदिर बसहु, सिय रघुनंदन दोउ १२७॥

काम कोह मद मान न मोहा * लोभु न छोभु न राग न द्रोहा
जिन्हके कपट दंभु नहिं माया * तिन्हके हृदय बसहु रघुराया
सबके प्रिअ सबके हितकारी * दुषु सुषु सरिस प्रसंसा गारी
कहहिं सत्य प्रिअ बचन बिचारी * जागत सोवत सरन तुम्हारी
तुम्हहिं छाँडि गति[1] दूसरि नाहीं * रामु बसहु तिन्हके मन माहीं
जननी सम जानहिं परनारी * धनु पराव बिषतें बिषु भारी
जे हरषहिं परसंपति देषी * दुषित होहिं परबिपति बिसेषी
जिन्हहिं रामु तुम्ह प्रानपिआरे * तिन्हके मन सुभसदन तुम्हारे

दो० स्वामि सषा पितु मातु गुरु, जिन्हके सब तुम तात।
मनमंदिर तिन्हके बसहु, सीयसहित दोउ भ्रात १२८॥

अवगुन तजि सबके गुन गहहीं * बिप्र धेनु हित संकट सहहीं
नीतिनिपुन जिन्ह कर जगलीका * घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका
गुन तुम्हार समुझइ निजदोसा * जेहिं सब भाँति तुम्हार भरोसा
रामभगत प्रिअ लागहिं जेही * तेहि उर बसहु सहित बैदेही
जाति पाँति धनु धर्मु बडाई * प्रिअ परिवार सदनु सुषदाई
सब तजि तुम्हहिं रहइ लयलाई * तिन्हके हृदय रहहु रघुराई
सरगु नरगु अपबरगु समाना[2] * जहँ तहँ देष धरें धनु बाना
करमु बचन मन राउर चेरा * रामु करहु तेहिके उर डेरा

दो० जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु, तुम्हसन सहज सनेहु।
बसहु निरंतर तासु मन, सो राउर निजु गेहु १२९॥

---

१ गतिर्मार्गेदशायां च ज्ञाने शास्त्राभ्युपाययो इति विश्वे।
२ नारायणपराः सर्वे न कुतश्चन बिभ्यति। स्वर्गापवर्गनरकेष्वपितुलार्थदर्शिनः। षष्ठे पार्वतीप्रति शंकरवाक्यम्।

येहि बिधि मुनिबर भवन देषाये * बचन सप्रेम रामु मन भाये
कह मुनि सुनहु भानुकुल नायक * आश्रमु कहउँ समय सुषदायक
चित्रकूट गिरि करहु निवासू * तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू
सैल सोहावन कानन चारू * करि केहरि मृग बिहँग बिहारू
नदी पुनीत पुरान बषानी * अत्रिप्रिया निज तपबल आनी
सुरसरि धार नाम मंदाकिनि * जो सब पातक पोतक डाँकिनि
अत्रि आदि मुनिबर बहु बसहीं * करहिं जोग जप तप तन कसहीं
चलहु सफल श्रमु सबकर करहू * रामु देहु गौरव गिरिबरहू

दो० चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाइ।
आइ नहाये सरितबर, सियसमेत दोउ भाइ १३०॥

रघुबर कहेउ लषनु भल घाटू * करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू
लषनु दीष पय उतर करारा * चहुँ दिसि फिरेउ धनुषजिमि नारा
नदी पनच सर सम दम दाना * सकल कलुष कलि साउज नाना
चित्रकूट जनु अचलु अहेरी * चुकइ न घात मार मुठभेरी
अस कहि लषनु ठाउँ देषरावा * थलु बिलोकि रघुबर सुषु पावा
रमेउँ रामु मन देवन्ह जाना * चले सहित सुरथपति प्रधाना
कोल किरात बेषु सब आये * रचे परन तृन सदन सोहाये
बरनि न जाहिं मंजु दुइ साला * येक ललित लघु येक बिसाला

दो० लषनु जानकी सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत।
सोह मदनु मुनि बेषु जनु, रति रितुराजसमेत १३१॥

मा० पा० ॥ १७ ॥

अमर नाग किन्नर दिसिपाला * चित्रकूट आये तेहि काला
रामु प्रनामु कीन्ह सब काहू * मुदित देव लहि लोचनलाहू

बरषि सुमनु कह देव समाजू * नाथ सनाथ भये हम आजू
करि बिनती दुष दुसह सुनाये * हरषितनिजनिजसदनसिधाये
चित्रकूट रघुनंदन छाये * समाचारसुनि सुनि मुनि आये
आवत देषि मुदित मुनिबृंदा * कीन्ह दंडवत रघुकुलचंदा
मुनि रघुबरहि लाइ उर लेहीं * सुफल होनहित आसिष देहीं
सिय सौमित्रि रामुछबि देषहिं * साधनसकलसफलकरिलेषहिं

दो० जथाजोग सनमानि प्रभु बिदा किये मुनिबृंद।
करहिं जोगजपजागतप,निजआश्रमन्हिसुछंद १३२॥

यह सुधि कोल किरातन्ह पाई * हरषे जनु नव निधि घर आई
कंद मूल फल भरि भरि दोना * चले रंक जनु लूटन सोना
तिन्हमहँ जिन्ह देषे दोउ भ्राता* अपर तिन्हहिं पूछहिं मगु जाता
कहत सुनत रघुबीर निकाई * आइ सबन्हि देषे रघुराई
करहिं जोहार भेंट धरि आगे * प्रभुहिबिलोकहिंअतिअनुरागे
चित्र लिषे जनु जहँ तहँ ठाढे * पुलक सरीर नयन जल बाढे
रामु सनेह मगन सब जाने * कहिप्रियबचनसकल सनमाने
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी * बचन बिनीत कहहिं कर जोरी

दो० अब हम नाथ सनाथ सब, भये देषि प्रभु पाय।
भाग हमारे आगमनु, राउर कोसलराय १३३॥

धन्य भूमि बन पंथ पहारा * जहँ जहँ नाथ पाउँ तुम्ह धारा
धन्य बिहग मृग काननचारी *सफलजनम भये तुम्हहिं निहारी
हम सब धन्य सहित परिवारा * दीष दरस भरि नयन तुम्हारा
कीन्ह बासु भल ठाउँ बिचारी * इहाँ सकल रितु रहब सुषारी
हम सब भाँति करब सेवकाई * करि केहरि अहि बाघ बराई

बन बेहड़ गिरि कंदर षोहा * सब हमार प्रभु पग पग जोहा
तहँ तहँ तुम्हहिं अहेर षिलाउब * सर निरझर भल ठाँउँ देषाउब
हम सेवक परिवार समेता * नाथ न सकुचब आयसु देता

दो० बेदबचन मुनिमन अगम, ते प्रभु करुनाअयन।
बचनकिरातन्हके सुनत. जिमि पितु बालकबयन १३४

रामहिं केवल प्रेम पिआरा * जानि लेउ जो जाननिहारा
राम सकल बनचर तब तोषे * कहि मृदुबचन प्रेम परिपोषे
बिदा किये सिर नाइ सिधाये * प्रभुगुन कहत सुनत घर आये
येहि बिधि सिअ समेत दोउभाई * बसहिं बिपिनसुरमुनिसुषदाई
जबतें आइ रहे रघुनायकु * तबतें भएउ बन मंगलदायकु
फूलहिं फलहिं बिटप बिधि नाना * मंजु बलित बर बेलिबिताना
सुरतरु सरिस सुभाय सोहाये * मनहुँ बिबुध बन परिहरि आये
गुंज मंजुतर मधुकर श्रेनी * त्रिबिध बयारि बहइ सुषदेनी

दो० नीलकंठ[1] कलकंठ सुक, चातक चक्र चकोर।
भाँति भाँति बोलहिं बिहग, श्रवनसुषद चितचोर १३५॥

करि केहरि कपि कोल कुरंगा * बिगत बैर बिचरहिं सब संगा
फिरत अहेर रामछबि देषी * होहिं मुदित मृगबृंद बिसेषी
बिबुधबिपिन जहँलगिजगमाहीं * देषि रामबनु सकल सिहाहीं
सुरसरि सरसइ दिनकर कन्या * मेकलसुता गोदावरि धन्या
सब सर सिंधु नदी नद नाना * मंदाकिनि कर करहिं बषाना
उदय अस्त गिरि अरु कयलासू * मंदर मेरु सकल सुर बासू
सैल हिमाचल आदिक जेते * चित्रकूट जस गावहिं तेते

१ मयूरो बर्हिणो बर्हीं नीलकण्ठो भुजङ्गभुगित्यमरः।

बिंधि मुदित मन सुष न समाई * बिनु श्रमु बिपुल बडाई पाई

दो० चित्रकूटके बिहग मृग, बेलि बिटप तृनजाति।
पुन्यपुंज सब धन्यअस, कहहिं देव दिनराति १३६॥

नयनवंत रघुबरहि बिलोकी * पाइ जनमुफलु होंहिं बिसोकी
परसि चरनरज अचर सुषारी * भये परम पद के अधिकारी
सो बनु सैल सुभाय सोहावन * मंगलमय अति पावन पावन
महिमा कहिअ कवन बिधि तासू * सुषसागर जहँ कीन्ह निवासू
पय पयोधि तजि अवध बिहाई * जहँ सिअ रामु लषनु रहे आई
कहि न सकहिं सुषमा जसि कानन * जौ सतसहस होहिं सहसानन
सो मैं बरनि कहौं बिधि केही * डाबर कमठ कि मंदर लेही
सेवहिं लषनु करमु मनु बानी * जाइ न सीलु सनेहु बषानी

दो० छिनु छिनु लषि सिय रामुपद, जानि आपुपर नेहु।
करत न सपनेहुँ लषनु चितु, बंधु मातु पितु गेहु १३७॥

रामसंग सिअ रहति सुषारी * पुर परिजन गृह सुरति बिसारी
छिनुछिनु पिअ बिधुबदन निहारी * प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी
नाहँ नेहुँ नित बढत बिलोकी * हरषितरहति दिवसजिमिकोकी
सिअमनु रामुचरन अनुरागा * अवधसहससमबनुप्रिअलागा।
परनकुटी प्रिअ पीतमु संगा * प्रिअ परिवारु कुरंग बिहंगा
सासुससुरसममुनितिअमुनिबर * असनु अमीसम कंद मूल फर
नाथ साथ साथरी सोहाई * मयन सयन सयसम सुषदाई
लोकप होहिं बिलोकत जासू * तेहिकिमोहिसकबिषयबिलासू

दो० सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृनसम बिषय बिलासु।
रामप्रियाजगजननि सिअ, कछुनआचरजुतासु १३८

सीय लषनु जेहिबिधि सुषुलहहीं * सोइरघुनाथकरहिं सोइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी * सुनहिंलषनुसिअअतिसुषुमानी
जब जब राम अवधसुधि करहीं * तब तब बारि बिलोचन भरहीं
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई * भरत सनेहु सील सेवकाई
कृपासिंधु प्रभु होहिं दुषारी * धीरजु धरहिं कुसमउ बिचारी
लषि सिअ लषनु बिकलह्वैजाहीं * जिमिपुरुषहिअनुसरपरिछाहीं
प्रिआ बंधु गति लषि रघुनंदनु * धीर कृपालु भगतउरचंदनु
लगे कहन कछु कथा पुनीता * सुनिसुषलहहिंलषनुअरुसीता

दो० राम लषनु सीता सहित, सोहत परननिकेत।
जिमि बासव बस अमरपुर, सची जयंत समेत १३९ ॥

जोगवहिंप्रभु सिअ लषनहिं कैसे * पलक बिलोचन गोलक जैसे
सेवहिं लषन सीय रघुबीरहि * जिमि अबिबेकी पुरुषु सरीरहि
एहिबिधि प्रभु बनु बसहिं सुषारी * षग मृग सुर तापस हितकारी
कहेउँ राम बनगवनु सोहावा * सुनहु सुमंत्रअवधजिमिआवा
फिरेउ निषाद प्रभुहि पहुँचाई * सचिव सहित रथ देषेसि आई
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू * कहि न जाइ जस भएउ बिषादू
राम राम सिअ लषनु पुकारी * परेउ धरनितल ब्याकुल भारी
देषि दषिनादिसि हय हिंहिंनाहीं * जनु बिनुपंष बिहग अकुलाहीं

दो० नहिंत्रिनु चरहिं न पिअहिं जलु, मोचहिं लोचनबारि।
ब्याकुल भए निषादसब, रघुबरबाजि निहारि १४०॥

धरि धीरजु तब कहइ निषादू * अब सुमंत्र परिहरहु बिषादू
तुम्ह पंडित परमारथ ज्ञाता * धरहु धीर लषि बिमुष बिधाता[1]

१ विपदि धैर्य्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः। यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम्। नीतिशतके

बिबिधकथा कहिकहि मृदुबानी * रथ बैठारेउ बरबस आनी
सोकसिथिल रथु सकइ न हाँकी * रघुबर बिरह पीर उर बाँकी
चरफराहिं मग चलहि न घोरे * बनमृग मनहुँ आनि रथ जोरे
अटकि परहिं फिरि हेरहिं पीछे * रामबियोगु बिकल दुषु तीछे
जो कह रामु लषनु बैदेही * हिकरि हिकरि हित हेरहिं तेही
बाजिबिरहगतिकहिकिमिजाती*बिनुमनिफनिकबिकलजेहिभाँती

दो॰ भयेउ निषादु बिषादु बस, देषत सचिव तुरंग।
बोलि सुसेवक चारि तब, दिये सारथी संग १४१ ॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई * बिरह बिषादु बरनि नहिं जाई
चले अवध लेइ रथहि निषादा * होहिं छनहिंछन मगन बिषादा
सोच सुमंत्र बिकल दुषदीना * धिक जीवन रघुबीर बिहीना
रहिहि न अंतहुँ अधमु सरीरू * जसु न लहेउ बिछुरत रघुबीरू
भये अजस अघभाजन प्राना * कवन हेतु नहिं करत पयाना
अहह मंदमन अवँसरु चूका * अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका
मीजि हाँथ सिरधुनि पछिताई * मनहुँ कृपिनि धनरासि गँवाई
बिरद बाधि बर बीरु कहाई * चलेउ समर जनु सुभट पराई

दो॰ बिप्र बिबेकी बेदबिद, संमत साधु सुजाति।
जिमि धोषेमदपानकर, सचिवसोचुतेहिंभाँति १४२॥

जिमि कुलीनतिअ साधु सयानी * पतिदेवता करमु मनु बानी
रहै करमबस परिहरि नाहू * सचिवहृदय तिमि दारुन दाहू
लोचन सजल डीठि भइ थोरी * सुनइ न श्रवन बिकलमति भोरी
सूषहि अधर लागि मुहँलाटी * जिउ न जाइ उर अवधि कपाटी
बिबरन भयेउ न जाइ निहारी * मारेसि मनहुँ पिता महँतारी

हानि गलानि बिपुल मन ब्यापी * जमपुर पंथु सोचु जिमि पापी
बचन न आव हृदय पछिताई * अवध काह मैं देषब जाई
रामुरहित रथु देषिहि जोई * सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई

दो॰ धाइ पूँछिहहि मोहि जब, बिकल नगर नर नारि।
उतरु देब मैं सबहि तब, हृदय बज्र बैठारि १४३॥

पूछिहहिं दीन दुषित सब माता * कहब काह मैं तिन्हहिं बिधाता
पूछिहि जबहिं लषनु महतारी * कहिहौं कवन सँदेस सुषारी
रामजननि जब आइहि धाई * सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई
पूँछत उतरु देब मैं तेही * गे बनु रामु लषनु बैदेही
जोइ पूछिहि तेहि ऊतरु देबा * जाइ अवध अब यहु सुषु लेबा
पूँछिहि जबहि राउ दुषु दीना * जीवनु जासु रामु अधीना
दैहौं उतरु कवनु मुहुँ लाई * आयेउँ कुसलु कुअँरु पहुँचाई
सुनत लषनु सिय रामु सँदेसू * तृन जिमि तनु परिहरिहि नरेसू

दो॰ हृदउ न बिदरेउ पंक जिमि, बिछुरत प्रीतमु नीरु।
जानत हौं मोहि दीन्ह बिधि, यहु जातना सरीरु १४४॥

एहि बिधि करत पंथ पछितावा * तमसातीर तुरत रथु आवा
बिदा किये करि बिनय निषादा * फिरे पायपरि बिकल बिषादा
पैठत नगर सचिव सकुचाई * जनु मारेसि गुरु बाभन्ह गाई
बैठि बिटपतर दिवसु गवावा * साँझ समय तब अवसरु पावा
अवध प्रबेसु कीन्ह अधिआरे * पैठ भवनु रथु राषि दुआरे
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये * भूपद्वार रथु देषन आये
रथु पहिचानि बिकल लषि घोरे * गरहिं गात जिमि आतप ओरे

१ सागर की छाती फटी और कछू दुष नाहिं। बारि पेषि पक्षी धसैं नीर हीन फिर जाहिं।

नगर नारि नर ब्याकुल कैसे * निघटत नीर मीनगन जैसे
दो०सचिव आगमनु सुनत सब, बिकल भयेउ रनिवासु।
भवनु भयंकरु लाग तेहि, मानहुँ प्रेत निवासु १४५॥
अति आरति सब पूँछहिं रानी * उतरु न आव बिकल भइ बानी
सुनइ न श्रवन नयन नहिं सूझा * कहहु कहां नृपु जेहि तेहि बूझा
दासिन्ह देषि सचिवबिकलाई * कौसल्या गृह गईं लेवाई
जाइ सुमंत्र दीष कस राजा * अमी रहित जनु चंदु बिराजा
आसन सयन बिभूषन हीना * परेउ भूमितल निपट मलीना
लेहि उसाँस सोचु येहि भाँती * सुरपुर ते जनु षसेउ जजाती
लेत सोचु भरि छिनु छिनु छाती * जनु जरि पंष परेउ संपाती
रामु रामु कह रामु सनेही * पुनि कह रामु लषनु बैदेही
दो० देषि सचिव जयजीव कहि, कीन्हेउँ दंडप्रनामु।
सुनत उठेउ ब्याकुल नृपति, कह सुमंत्र कहँ रामु १४६॥
भूप सुमंत्र लीन्ह उरलाई * बूडत कछु अधार जनु पाई
सहित सनेह निकट बैठारी * पूँछत राउ नयन भरि बारी
रामु कुसल कहु सषा सनेही * कहँ रघुनाथ लषनु बैदेही
आनें फेरि कि बनहिं सिधाये * सुनत सचिव लोचन जलछाये
सोक बिकल पुनि पूँछ नरेसू * कहु सिअ रामु लषनु संदेसू
राम रूप गुन सील सुभाऊ * सुमिरि सुमिरि उर सोचत राऊ
राज सुनाइ दीन्ह बनबासू * सुनि मन भएउ न हरषु हरासू
सो सुत बिछुरत गये न प्राना * को पापी बड मोहि समाना
दो० सषा रामु सिअ लषनु जहँ, तहाँ मोहि पहुँचाउ।
नाही तौ चाहत चलन अब, प्रान कहौं सतिभाउ १४७॥

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहि राऊ * प्रीतमु सुवनु सँदेस सुनाऊ
करहु सषा सोइ बेगि उपाऊ * रामु लषनु सिअ नयन देषाऊ
सचिव धीरधरि कह मृदु बानी * महाराज तुम्ह पंडित ज्ञानी
बीर सुधीर धुरंधर देवा * साधु समाज सदाँ तुम्ह सेवा
जनम मरनु सबदुषुसुषु भोगा * हाँनि लाभु प्रिअ मिलन बियोगा
काल करमु बसु होहिं गोसाँई * बरबस राति दिवस की नाँई
सुषु हरषहिं जड दुषु बिलषाहीं * दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं
धीरजु धरहु बिबेक बिचारी * छाडिअ सोचु सकलु हितकारी

दो॰ प्रथमु बासु तमसा भएउ, दूसर सुरसरि तीर।
न्हाइ रहे जलपान करि, सिअ समेत दोउ बीर १४८॥

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई * सो जामिन सिंगरौर गवाँई
होत प्रात बटछीरु मगावा * जटा मुकुट निज सीस बनावा
रामसषा तब नाव मगाई * प्रिया चढाइ चढे रघुराई
लषनु बानु धनु धरे बनाई * आपु चढे प्रभु आयसु पाई
बिकल बिलोकि मोहि रघुबीरा * बोले बचन मधुर धरि धीरा
तात प्रनामु तातसन कहेहू * बार बार पदपंकज गहेहू
करबि पाय परि बिनय बहोरी * तात करिअ जनि चिंता मोरी
बनु मग मंगल कुसल हमारे * कृपा अनुग्रह पुन्य तुम्हारे

छंद

तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुषु पाइहौं।

१ क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदपि च पर्यंकशयनं क्वचिच्छाकाहारी क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः। क्वचित्कंथाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो मनस्वीकार्य्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम् ॥ नीतिशतके ॥ धन्याः खलु महात्मानोमुनयः सत्यसंमताः। जितात्मनो महाभागा येषां न स्तः प्रियाप्रिये ॥ प्रिया न संभवे दुःखमाप्रियादधिकं भवेत्। ताभ्यां हि ये विमुच्यंते नमस्तेषां महात्मनाम् ॥ इति बा॰ सुं॰ ॥

प्रतिपालि आयसु कुसल देषन पाय पुनि फिरि आइहौं ॥
जननी सकल परितोषि परि परि पाय करि बिनती घनी ।
तुलसी करेहु सोइ जतनु जेहि बिधि कुसल रह कोसलधनी ४॥
सो० गुरुसन कहब सँदेसु, बार बार पदपदुम गहि ।
करब सोइ उपदेसु, जेहि न सोचु मोहि अवधपति ४ ॥
पुरजन परिजन सकल निहोरी * तात सुनायेहु बिनती मोरी
सोइ सब भाँति मोर हितकारी * जाते रह नरनाहँ सुषारी
कहब सँदेस भरत के आयें * नीति न तजिअ राजपदु पायें
पालेहु प्रजहि करमु मन बानी * सेयेहु मातु सकल सम जानी
ओर निबाहेउ भायप भाई * करि पितु मातु सुजन सेवकाई
तात भाँति तेहि राषब राऊ * सोचु मोर जेहि करहिं न काऊ
लषनु कहेउ कछु बचन कठोरा * बरजि रामु पुनि मोहि निहोरा
बार बार निज सपथ देवाई * कहबि न तात लषन लरिकाई
दो० कहि प्रनामु कछु कहन लिय, सिअ भइ सिथिल सनेह ।
थकित बचन लोचन सजल, पुलक पल्लवित देह १४९॥
तेहिं अवसर रघुबर रुष पाई * केवट पारहिं नाव चलाई
रघुकुलतिलक चले येहि भाँती * देषेउ ठाढ कुलिस धरि छाती
मै आपन किमि कहउँ कलेसू * जिअत फिरेउँ लइ रामु सँदेसू
अस कहि सचिव बचन रहि गएऊ * हानि गलानि सोचु बस भएऊ
सूत बचन सुनतहिं नरनाहू * परेउ धरनि उर दारुन दाहू[1]
तलफत बिषम मोह मन माँपा * माँजा मनहुँ मीन कहँ ब्यापा
करि बिलाप सब रोवहिं रानी * महाबिपति किमि जाइ बषानी

१ दारुण दाहु असाध्य लक्षण, यथा-अंतर्दाही न जीवति ।

सुनि बिलापु दुषहूँ दुषु लागा * धीरजहू कर धीरज भागा

दो० भएउ कोलाहलु अवध अति, सुनि नृप राउर सोरु।
बिपुल बिहग बन परेउ निसि, मानहु कुलिस कठोरु[1] १५०

प्रान कंठगत भएउ भुआलू * मनि बिहीन जिमि ब्याकुल ब्यालू
इंद्रिय सकल बिकल भईं भारी * जनु सर सरसिज बनु बिनु बारी
कौसल्या नृपु दीष मलाना * रबिकुलरबि अथएउ[2] जिअ जाना
उर धरि धीर राम महतारी * बोली बचन समय अनुसारी
नाथ समुझि मन करिअ बिचारू * राम बियोग पयोधि अपारू
करनधार तुम्ह अवध जहाजू * चढेउ सकल प्रिय पथिक समाजू
धीरजु धरिअ तौ पाइय पारू * नाहिं तौ बूडिअ सब परिवारू
जौं जिअ धरिअ बिनय पिअ मोरी * रामु लषन सिअ मिलहिं बहोरी

दो० प्रिआ बचन मृदु सुनत नृप, चितयेउ आँषि उघारि।
तलफत मीन मलीन जिनु, सींचेउ सीतल बारि १५१॥

धरि धीरजु उठि बैठ भुआलू * कह सुमंत्र कहँ रामु कृपालू
कहाँ लषन कहँ रामु सनेही * कहँ प्रिअ पुत्रबधू बैदेही
बिलपत राउ बिकल बहु भाँती * भइ जुग सरिस सिराति न राती
तापस अंध साप सुधि आई * कौसल्यहि सब कथा सुनाई
भयेउ बिकल बरनत इतिहासा * राम रहित धिग जीवन आसा
सो तनु राषि करबि मैं काहा * जेहिं न प्रेम पनु मोर निबाहा
हा रघुनंदन प्रान पिरीते * तुम्ह बिन जिअत बहुत दिन बीते
हा जानकी लषनु हा रघुबर * हा पितु हित चितु चातक जलधर

१ निशि में कुलिशवत् सुमंत्र-वचन।
२ यहां ते रबि अथए अब इंद्रलोक में उदय करिहैं।

दो०रामु रामु कहि रामु कहि, रामु रामु कहि राम।
तनु परिहरि रघुबरबिरह, राउ गयेउ सुरधाम १५२॥
जिअनु मरनु फलु दसरथ पावा * अंड अनेक अमल जस छावा
जिअत रामु बिधु बदनु निहारा * रामबिरह भरि मरनु सवारा
सोक बिकल सब रोवहिं रानी * रूप सील बल तेज बषानी
करहिं बिलापु अनेकु प्रकारा * परहिं भूमितल बारहिं बारा
बिलपहिं बिकल दासअरुदासी * घर घर रुदनु करहिं पुरबासी
अथएउ आजु भानुकुलभानू * धरमुअवधि गुनरूपनिधानू
गारी सकल कैकयिहि देहीं * नयनबिहीन कीन्ह जगु जेहीं
येहिबिधि बिलपत रइनि बिहानी * आये सकल महामुनि ज्ञानी
दो० तब बसिष्ट मुनि समयसम, कहिअनेक इतिहास।
सोकु नेवारेउ सबहिकर, निज बिज्ञान प्रकास १५३॥
तेल नाव भरि नृपतन राषा * दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू * नृपसुधि कतहुँ कहेहु जनि काहू
येतनइँ कहेहु भरतसन जाई * गुरु बोलाइ पठये दोउ भाई
सुनि मुनिआयसु धावन धाये * चले बेगि बर बाजि लजाये
अनरथ अवध अरंभेउ जबते * कुसगुन होहिं भरत कहँ तबते
देषहिं राति भयानक सपना * जागि करहिं कटु कोटि कलपना
बिप्र जेवाइ देहिं दिन दाना * सिव अभिषेक करहिं बिधिनाना
माँगहिं हृदय महेस मनाई * कुसल मातु पितु परिजन भाई
दो० येहिबिधि सोचत भरत मन, धावन पहुँचे आइ।
गुरु अनुसासनु श्रवनसुनि, चले गनेस मनाइ १५४॥
चले समीरबेग हय हाँके * नाघत सरित सैल बन बाँके

हृदय सोचु बड कछु न सोहाई * अस जानहिं जिअ जाउँ उडाई
येक निमेषु बरषसम जाई * येहिबिधि भरतअवध निअराई
असगुन होहिं नगरपैठारा * रटहिं कुभाँति कुषेत करारा
षर सिआर बोलहिं प्रतिकूला * सुनि सुनि होइ भरतमनसूला
श्रीहत सर सरिता बन बागा * नगरु बिसेषि भयावन लागा
षग मृग हय गय जाहि न जोये * रामुबियोगु कुरोगु बिगोये
नगरनारिनर निपट दुषारी * मनहुँ सबन्ह सब संपतिहारी

दो० पुरजन मिलहिं न कहहिं कछु, गवहिं जोहारहिं जाहिं।
भरत कुसल पूँछि न सकहिं, भयबिषादमनमाहिं १५५

हाट बाट नहिं जाइ निहारी * जनु पुर दहदिसि लागुदवारी
आवत सुत सुनि केकयनंदनि * हरषी रबिकुल जलरुह चंदनि
सजि आरती मुदित उठिधाई * द्वारेहिं भेटि भवन लेइ आई
भरत दुषित परिवारु निहारा * मानहु तुहिन बनजबनु मारा
कैकेयी हरषित येहि भाँती * मनहुँ मुदित दवलाइ किराती
सुतहि ससोचु देषि मनुमारे * पूछति नैहर कुसल हमारे
सकल कुसल कहि भरत सुनाई * पूँछी निजकुल कुसल भलाई
कहु कहँ तात कहाँ सब माता * कहँ सिअ रामु लषन प्रियभ्राता

दो० सुनि सुतबचन सनेहमय, कपट नीरभरि नैन।
भरत श्रवन मन सूलसम, पापिनि बोली बैन १५६॥

तात बात मै सकल सवारी * भइ मंथरा सहाय बिचारी
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ * भूपति सुरपतिपुर पगु धारेउ
सुनत भरतु भये। बिबस बिषादा * जनु सहमेउ करि केहरि नादा
तात तात हा तात पुकारी * परे भूमितल ब्याकुल भारी

चलत न देषन पायेउँ तोही * तात न रामहिं सौंपेहु मोही
वहुरि धीर धरि उठेउ सँभारी * कहु पितुमरनहेतु महँतारी
सुनि सुतबचन कहति कैकेयी * मरमु पाछि जनु माहुर देई
आदिहिंतें सब आपनि करनी * कुटिल कठोर मुदितमन बरनी

दो० भरतहि बिसरेउ पितुमरन, सुनत रामु बन गौन।
हेतु अपनपउ जानि जिअ, थकित रहे धरि मौन १५७॥

बिकल बिलोकि सुतहि समुझावति * मनहुँ जरेपर लोनलगावति
तात राउ नहिं सोचइ जोगू * बिढइ सुकृत जसु कीन्हेउ भोगू
जीवत सकल जनमुफलु पाये * अंत अमरपति सदन सिधाये
अस अनुमानि सोचु परिहरहू * सहित समाजु राजु पुर करहू
सुनि सुठि सहमेउ राजुकुमारा * पाके छत जनु लागु अँगारा
धीरजु धरि भरि लेहिं उसाँसा * पापिनि सबहि भाँति कुलनासा
जौपै कुरुचि रही अस तोही * जनमत काहे न मारे मोही
पेड काटि तइँ पालव सींचा * मीन जिअननिति बारि उलीचा

दो० हंस बंस दसरथ जनक, रामु लषनु से भाइ।
जननी तूँ जननी भई, बिधिसन कछु न बसाइ १५८॥

जबते कुमति कुमत जिअ ठयेऊ * षंड षंड होइ हृदय न गयेऊ
बर मागत मन भइ नहिं पीरा * गरि न जीह मुहँ परेउ न कीरा
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही * मरनकाल बिधि मति हरिलीन्ही
बिधिहुँ न नारि हृदयगति जानी * सकल कपट अघ अवगुन षानी
सरल सुसील धर्मरत राऊ * सो किमि जानइ तीय सुभाऊ
अस को जीव जंतु जगमाहीं * जेहि रघुनाथ प्रानप्रिअ नाहीं
भे अति अहित राम तेउ तोही * को तूँ अहसि सत्य कहु मोही

जो हसि सो हसि मुहँ मसि लाई * आँषि ओट उठि बैठहि जाई

दो० रामुबिरोधी हृदय ते, प्रगट कीन्ह बिधि मोहि।
मोसमानको पातकी, बादि कहउ कछु तोहि १५९॥

सुनि सत्रुघुन मातु कुटिलाई * जरहिं गात रिस कछु न बसाई
तेहिं अवँसर कुबरी तहँ आई * बसन बिभूषन बिबिध बनाई
लषि रिस भरेउ लषनु लघु भाई * बरत अनल घृत आहुति पाई
हुँमगि लात तकि कूबरु मारा * परि मुहँ भरि महि करत पुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू * दलितदसन मुषरुधिर प्रचारू
आहि दइअ मै काह नसावा * करत नीक फल अनइस पावा
सुनि रिपुहनु लषिनषसिषषोटी * लगे घसीटन धरिधरि झोटी
भरत दयानिधि दीन्ह छँडाई * कौसल्या पहिं गे दोउ भाई

दो० मलिनबसन बिबरन बिकल, कृससरीर दुषभारु।
कनककलप बर बेलि बन, मानहु हनी तुसारु १६०॥

भरतहि देषि मातु उठि धाई * मुरछित अवनि परी झँइ आई
देषत भरतु बिकल भये भारी * परे चरन तनदसा बिसारी
मातु तात कहँ देहि देषाई * कहँ सिय रामु लषनु दोउ भाई
कैकेयि कत जनमी जग माँझा * जौं जनमि तौ भइ काहे न बाँझा
कुलकलंक जेहि जनमेउ मोही * अपजस भाजन प्रिअजनद्रोही
को तिभुवन मोहि सरिस अभागी * गति असि तोरि मातु जेहि लागी
पितु सुरपुर बन रघुकुलकेतू * मै केवल सब अनरथ हेतू
धिग मोहि भयेउँ बेनुबन आगी * दुसह दाह दुष दूषन भागी

दो० मातु भरत के बचन मृदु, सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिये उठाइ लगाइ उर, लोचन मोचति बारि १६१॥

सरल सुभाय माय हिय लाये * अतिहित मनहुँ रामु फिरिआये
भेंटेउ बहुरि लषनु लघु भाई * शोकु सनेहु न हृदय समाई
देषि सुभाव कहत सब कोई * राममातु अस काहे न होई
माता भरत गोद बैठारे * आँसु पोंछि मृदुबचन उचारे
अजहुँ बत्स बलि धीरजु धरहू * कुसमउ समुझि सोक परिहरहू
जनि मानहुँ हिअ हानि गलानी * काल करमु गति अघटितजानी
काहुहि दोष देहु जनि ताता * भा मोहि सब बिधि बामबिधाता
जो येतेहु दुषु मोहि जिआवा * अजहुँ को जानै का तेहि भावा

दो॰ पितु आयसु भूषन बसन, तात तजे रघुबीर।
बिसमउ हरषु न हृदय कछु, पहिरे बलकलचीर १६२॥

मुष प्रसन्न मन रागु न रोषू *सबकर सब बिधि करि परितोषू
चलेबिपिनसुनि सिअसँगलागी * रहइ न रामुचरनअनुरागी
सुनतहिं लषनु चले उठि साथा * रहहिं न जतन किये रघुनाथा
तब रघुपति सबही सिर नाई * चले संग सिअ अरु लघुभाई
रामु लषनु सिअ बनहिं सिधाये * गइउँ न संग न प्रान पठाये
एहु सब भा इन्ह आँषिन्ह आगे * तउ न तजा तनु जीव अभागे
मोहि न लाज निज नेहँ निहारी * रामु सरिस सुत मै महँतारी
जिअइ मरइ भल भूपति जाना *मोर हृदय सत कुलिस समाना

दो॰ कौसल्या के बचन सुनि, भरत सहित रनिवासु।
ब्याकुल बिलपत राजगृह, मानहुँ सोकुनिवासु १६३॥

बिलपहिं बिकल भरत दोउ भाई * कौसल्या लिये हृदय लगाई
भाँति अनेक भरत समुझाये * कहि बिबेकमय बचन सुनाये
भरतहुँ मातु सकल समुझाई * कहि पुरान श्रुति कथा सोहाई

छलविहीन सुचि सरल सुबानी * बोले भरत जोरि जुगु पानी
जे अघ मातु पिता सुत मारे * गाइ गोठ महि सुरपुर जारे
जो अघ तिअ बालकबध कीन्हे * मीत महीपहि माहुर दीन्हे
जे पातक उपपातक अहहीं * करम बचन मन भवकबिकहहीं
ते पातक मोहि होहु बिधाता * जौं यहु होइ मोर मत माता
दो० जे परिहरि हरि हर चरन, भजहिं भूतगन घोर।
तिन्हकै गति मोहिं देउ बिधि, जौ जननी मत मोर १६४
बेंचहिं बेद धरमु दुहि लेहीं * पिसुन पराय पाप कहिदेहीं
कपटी कुटिल कलहप्रिअ क्रोधी * बेद बिदूषक बिस्व बिरोधी
लोभी लंपट लोलुप चारा * जे ताकहिं परधन परदारा
पाँवउँ मै तिन्ह कै गति घोरा * जौं जननी येहु संमत मोरा
जे नहिं साधुसंग अनुरागे * परमारथपथ बिमुष अभागे
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई * जिन्हहिं न हरिहरसुजससोहाई
तजि श्रुतिपंथु बामपथु चलहीं * बंचक बिरचि बेषु जगु छलहीं
तिन्ह कै गति मोहि संकर देऊ * जौं जननी जानउँ येह भेऊ
दो० मातु भरतके बचन सुनि, साँचे सरल सुभाय।
कहति रामप्रिय तात तुम्ह, सदाबचनमनकाय १६५॥
राम प्रानते प्रान तुम्हारे * तुम्ह रघुपतिहि प्रानते प्यारे
बिधुबिष चवइ श्रवइ हिम आगी * होइ बारिचर बारिबिरागी
भये ज्ञान बरु मिटइ न मोहू * तुम्ह रामहिं प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हार यह जो जगु कहहीं * सो सपनेहुँ सुषु सुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हियलाये * थन पय श्रवहिं नयन जल छाये
करत बिलाप बहुत येहि भाँती * बैठेहिं बीतिगई सब राती

वामदेव बसिष्ट तब आये * सचिव महाजन सकल बोलाये
मुनि बहुभाँति भरत उपदेसे * कहि परमारथ बचन सुदेसे

दो० तात हृदय धीरजु धरहु, करहु जो अवँसर आजु।
उठे भरत गुरुबचन सुनि, करन कहेउ सब काजु १६६॥

नृपतनु बेदबिहित अन्हवावा * परम बिचित्र बिमान बनावा
गहि पद भरतु मातु सब राषी * रहीं रामुदरसन अभिलाषी
चंदन अगर भार बहु आये * अमित अनेक सुगंध सोहाये
सरजु तीर रचि चिता बनाई * जनु सुरपुर सोपानु सोहाई
येहिबिधि दाहक्रिया सब कीन्ही * बिधिवतन्हाइतिलांजलिदीन्ही
सोधि सुमृति सब बेद पुराना * कीन्ह भरत दसगातबिधाना
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्हा * तहँतस सहसभाँति सब कीन्हा
भये बिसुद्ध दिये सब दाना * धेनु बाजि गज बाहनु नाना

दो० सिंघासन भूषन बसन, अन्न धरनि धन धामु।
दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरनकामु १६७॥

पितुहितुभरतुकीन्हिजसिकरनी * सो मुषुलाष जाइ नहिं बरनी
सुदिनु सोधि मुनिबर तब आये * सचिवमहाजन सकल बोलाये
बैठे राजसभा सब जाई * पठये बोलि भरत दोउ भाई
भरत बसिष्ट निकट बैठारे * नीति धरमुमय बचन उचारे
प्रथमु कथा सब मुनिबर बरनी * कैकेयिकुटिलकीन्हिजसकरनी
भूप धरमु ब्रत सत्य सराहा * जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा
कहत रामगुनु सील सुभाऊ * सजल नयन पुलकेउ मुनिराऊ
बहुरि लषनु सिअ प्रीति बषानी * सोकसनेहमगनु मुनि ज्ञानी

दो० सुनहुँ भरत भावी प्रबल, बिलषि कहेउ मुनिनाथ।

हानि लाभु जीवनु मरनु, जसु अपजसु बिधिहाथ १६८॥
अस बिचारि केहि देइअ दोषू * ब्यर्थ काहि पर कीजिअ रोषू
तात बिचारु करहु मनमाहीं * सोचु जोगु दसरथ नृपु नाहीं
सोचिअ बिप्र जो बेदबिहीना * तजिनिजधरमुबिषयलयलीना
सोचिअनृपति जो नीति न जाना * जेहि न प्रजा प्रिय प्रानसमाना
सोचिअ बयस कृपिन धनवानू * जोनअतिथिसिवभगतिसुजानू
सोचिअ सूद्र बिप्र अपमानी * मुषर मानप्रिय ज्ञानगुमानी
सोचिअ पुनि पतिबंचक नारी * कुटिल कलहप्रिअ इच्छाचारी
सोचिअ बटु निजब्रतु परिहरई * जो नहिं गुरुआयसु अनुसरई

दो० सोचिअ गृही जो मोहबस, करइ करमपथ त्यागु।
सोचिअ जती प्रपंचरत, बिगत बिबेकु बिरागु १६९॥

बयषानस सोइ सोचनु जोगू * तपु बिहाइ जेहि भावइ भोगू
सोचिअ पिसुन अकारनक्रोधी * जननि जनक गुरु बंधु बिरोधी
सब बिधि सोचिअ परअपकारी * निजतनुपोषक निरदय भारी
सोचनीअ सबही बिधि सोई * जो न छाँडि छलु हरिजन होई
सोचनीयँ नहिं कोसलराऊ * भुअन चारिदस प्रगटप्रभाऊ
भयेउ न अहइ न होनेउँहारा * भूप भरत जस पिता तुम्हारा
बिधिहरिहर सुरपति दिसिनाथा * बरनहिं सबु दसरथ गुनगाथा

दो० कहहु तात केहि भाँति कोउ, करिहि बडाई तासु।
रामु लषनु तुम्ह सत्रुहन, सरिस सुअन सुचि जासु १७०

सब प्रकार भूपति बडभागी * बादि बिषाद करिअ तेहि लागी
यहु सुनि समुझि सोचु परिहरहू * सिरधरि राज रजायसु करहू
राय राजपद तुम्ह कहँ दीन्हा * पिताबचनु फुरु चाहिअ कीन्हा

तजे रामु जेहिं बचनहिं लागी * तनु परिहरेउ रामबिरहागी
नृपहिबचनप्रिअ नहिं प्रिअप्राना * करहु तात पितुबचन प्रवाना
करहु सीसधरि भूप रजाई * हइ तुम्हकहँ सब भाँति भलाई
परसराम पितु आज्ञा राषी * मारी मातु लोक सब साषी
तनय जजातिहि जोबन दयेऊ * पितु अज्ञा अघ अजसु न भएऊ

दो० अनुचित उचित बिचारु ताजि, जे पालहिं पितुबैन ।
ते भाजन सुषु सुयसुके, बसहिं अमरपतिऐन १७१॥

अवसि नरेसबचन फुरु करहू * पालहु प्रजा सोकु परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू * तुम्ह कहँ सुजसु सुकृतु नहिं दोषू
बेदबिहित संमत सबहीका * जेहि पितु देइ सो पावइ टीका
करहु राजु परिहरहु गलानी * मानहुँ मोर बचन हित जानी
सुनि सुष लहब रामु बैदेही * अनुचित कहब न पंडित केही
कौसल्यादि सकल महतारी * तेउ प्रजासुषु होहिं सुषारी
प्रेम तुम्हार रामु करि जानिहिं * सो सबबिधि तुम्हसन भल मानिहिं
सौंपेहु राजु रामुके आये * सेवा करेहु सनेहु सोहाये

दो० कीजिअ गुरुआयसु अवसि, कहहिं सचिव करजोरि ।
रघुपति आयें उचित जस, तब तस करब बहोरि १७२॥

कौसल्या धरि धीरज कहई * पूत पथ्य गुरुआयसु अहई
सोआदरिअ करिअ हितमानी * तजिअ बिषादु कालगति जानी
बन रघुपति सुरपुर नरनाहू * तुम्ह येहि भाँति तात कदराहू
परिजन प्रजा सचिव सब अंबा * तुम्हही सुत सब कहँ अवलंबा
लषि बिधि बाम कालकाठिनाई * धीरजु धरहु मातु बलिजाई
सिरधरि गुरुआयसु अनुसरहू * प्रजा पालि पुरुजनदुषु हरहू

गुरुके बचन सचिव अभिनंदनु * सुने भरतहिअ हित जनु चंदनु
सुनी बहोरि मातु मृदुबानी * सील सनेहु सरल रस सानी

छंद

सानी सरल रस मातु बानी सुनि भरत ब्याकुल भये।
लोचन सरोरुह श्रवत सींचत बिरह उर अंकुर नये॥
सो दसा देषत समय तेहि बिसरी सबहि सुधि देहकी।
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेह की ५॥

सो॰ भरत कमल कर जोरि, धीरधुरंधर धीर धरि।
बचनु अमिअ जनु बोरि, देत उचित उत्तर सबहि ५॥

मा॰ पा॰ ॥ १८ ॥

मोहि उपदेसु दीन्ह गुरु नीका * प्रजा सचिव संमत सबहीका
मातु उचित धरि आयसु दीन्हा * अवसि सीस धरि चाहउँ कीन्हा
गुरु पितु मातु स्वामिहित बानी * सुनि मन मुदित करिअ भलि जानी
उचित कि अनुचित कियें बिचारू * धरमु जाइ सिर पातक भारू
तुम्ह तौ देहु सरल सिष सोई * जो आचरत मोर भल होई
जद्यपि यह समुझत हउँ नीके * तदपि होत परितोषु न जीके
अब तुम्ह बिनय मोरि सुनि लेहू * मोहि अनुहरत सिषावन देहू
उत्तर देउँ छमब अपराधू * दुषित दोषु गुन गनहिं न साधू

दो॰ पितु सुरपुर सिअ रामु बन, करन कहहु मोहिं राजु।
एहितें जानहु मोर हित, कै आपन बड काजु १७३॥

हित हमार सिअपति सेवकाई * सो हरि लीन्हि मातु कुटिलाई
मै अनुमानि दीष मनमाहीं * आन उपाय मोर हित नाहीं
सोकु समाजु राजु केहि लेषे * लषनु राम सिअ पदु बिनु देषे

बादि बसन बिन भूषनु भारू * बादि बिरति बिनु ब्रह्मबिचारू
सरुज सरीर बादि बहु भोगा * बिनु हरिभगति जाय जपजोगा
जाय जीव बिनु देहँ सोहाई * बादि मोर सबु बिनु रघुराई
जाउँ रामपहिं आयसु देहू * येकहि आँक मोर हित येहू
मोहि नृपुकरि भल आपन चहहू * सोउ सनेह जडताबस कहहू

दो० कैकेयिसुअनु कुटिलमति, रामबिमुष गतलाजु।
तुम्ह चाहत सुषु मोहबस, मोहिसे अधमके राजु १७४॥

कहौं साँचु सब सुनि पतिआहू * चाहिअ धरमुसील नरनाहू
मोहि राज हठि देइहहु जबहीं * रसा रसातल जाइहि तबहीं
मोहि समान को पापनिवासू * जेहि लगि सीय रामु बनबासू
राय रामु कहँ कानन दीन्हा * बिछुरत गवनु अमरपुर कीन्हा
मै सठ सब अनरथ कर हेतू * बैठ बात सब सुनउँ सचेतू
बिनु रघुबीर बिलोकि अबासू * रहे प्रान सहि जग उपहाँसू
रामु पुनीत बिषयरस रूषे * लोलुप भूमिभोग के भूषे
कहँलागि कहउँ हृदयकठिनाई * निदरि कुलिसु जेहिं लही बडाई

दो० कारन तें कारजु कठिन, होइ दोषु नहिं मोर।
कुलिस अस्थितें उपलतें, लोह कराल कठोर १७५॥

कैकेईभव तनु अनुरागे * पावर प्रान अघाइ अभागे
जौ प्रियबिरह प्रान प्रियलागे * देषब सुनब बहुत अब आगे
लषनु राम सिय कहुँ बन दीन्हा * पठइ अमरपुर पतिहितु कीन्हा
लीन्ह बिधवपन अपजस आपू * दीन्हेउ प्रजहि सोक संतापू
मोहि दीन्ह सुषु सुजसु सुराजू * कीन्ह कैकेई सब कर काजू
येहिते मोर काह अब नीका * तेहि पर देन कहहु तुम्ह टीका
कैकेइजठर जनमि जग माहीं * यहुमोहिकहँकछुअनुचितनाहीं

मोरि बात सब बिधिहि बनाई * प्रजा पाँच कत करहु सहाई

दो० ग्रहगृहीत पुनि बातबस, तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पिआइअ बारुनी, कहहु कवन उपचार १७६॥

कैकेइसुअनजोगु जगु जोई * चतुर बिरंचि दीन्ह मोहि सोई
दसरथतनय रामु लघु भाई * दीन्ह मोहि बिधि बादि बडाई
तुम्ह सब कहहु कढावन टीका * राय राजु सबही कहँ नीका
उतरु देउ केहिबिधि केहि केही * कहहु सुषेनु जथारुचि जेही
मोहि कुमातु समेत बिहाई * कहहु कहिहिके कीन्हि भलाई
मो बिनु को सचराचर माहीं * जेहि सिय रामु प्रानाप्रिय नाहीं
परम हानि सब कहँ बड लाहू * अदिन मोर नहिं दूषन काहू
संसय सील प्रेमबस अहहू * सबइ उचित सबु जो कछु कहहू

दो० राममातु सुठि सरलचितु, मोपर प्रेमु बिसेषि।
कहइ सुभाय सनेहबस, मोरि दीनता देषि १७७॥

गुरु बिबेकुसागरु जगु जाना * जिन्हहिं बिस्व कर बदरसमाना
मोकहुँ तिलकु साज सज सोऊ * भयेबिधि बिमुषु बिमुषु सबकोऊ
परिहरि रामु सीय जगुमाहीं * कोउ न कहिहि मोरु मत नाहीं
सो मै सुनब सहब सुषुमानी * अन्तहु कीच तहां जहँ पानी
डरु न मोर जगु कहिहि कि पोचू * परलोकहु कर नाहिन सोचू
येकइ उर बर दुसह दँवारी * मोहि लगि भे सिय रामु दुषारी
जीवनु लाहु लषनु भल पावा * सब तजि रामुचरन मनु लावा
मोर जनमु रघुबर बनु लागी * झूठ काह पछिताउँ अभागी

दो० आपनि दारुन दीनता, कहउँ सबहि सिरुनाइ।
देषे बिनु रघुनाथपद, जिअकै जरनि न जाइ १७८॥

आन उपाउ मोहि नहिं सूझा * को जिअकइ रघुवर बिनु बूझा
येकहि आंक इहै मनमाहीं * प्रातकाल चलिहौं प्रभुपाहीं
जद्यपि मै अनभल अपराधी * भइ मोहि कारन सकल उपाधी
तदपि सरनसनमुष मोहिदेषी * छमि सब करिहहिं कृपा बिसेषी
सील सकुच सुठि सरल सुभाऊ * कृपा सनेह सदन रघुराऊ
अरिहु क अनभल कीन्ह न रामा * मै सिसु सेवकु जद्यपि बामा
तुम्ह पय पांच मोर भलमानी * आयसु आसिष देहु सुबानी
जेहिसुनिबिनयमोहिजनजानी * आवहिं बहुरि रामु रजधानी

दो० जद्यपि जनम कुमातु तें, मै सठ सदाँ सदोसु।
आपन जानि न त्यागिहहिं, मोहिरघुबीरभरोसु १७९॥

भरतबचन सब कहँ प्रिअ लागे * राम सनेह सुधा जनु पागे
लोगु बियोगु बिषमु बिषु दागे * मन्त्रु सबीजु सुनत जनु जागे
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी * सकल सनेह बिकल भये भारी
भरतहि कहहिं सराहि सराही * रामु प्रेमु मूरति तनु आही
तात भरत अस काहे न कहहू * प्रान समान रामप्रिअ अहहू
जो पाँवरु अपनी जडताई * तुम्हहिं सुगाइ मातु कुटिलाई
सो सठ कोटिक पुरुष समेता * बसहिं कलपसत नरक निकेता
अहिअघअवगुननहिंमनिगहई * हरइ गरल दुष दारिद दहई

दो० अवसि चलिअ बन रामु जहँ, भरत मंत्रु भल कीन्ह।
शोकसिंधु बूडत सबहि, तुम्ह अवलम्बनु दीन्ह १८०॥

भा सबके मन मोद न थोरा * जनु घनधुनि सुनि चातक मोरा
चलब प्रात लषि निरनउ नीके * भरत प्रानप्रिय भे सबहीके
मुनिहिं बंदि भरतहि सिरु नाई * चले सकल घर बिदा कराई

धन्य भरत जीवन जगमाहीं * सील सनेहु सराहत जाहीं
कहहिं परस्पर भा बड काजू * सकल चलइकर साजहिं साजू
जेहि राषहिं रहु घर रषवारी * सो जानइ जनु गरदन मारी
कोउ कह रहनकहिअ नहिंकाहू * को न चहइ जगु जीवनु लाहू

दो० जरउ सो सम्पति सदन सुषु, सुहृद मातु पितु भाइ।
सन्मुष होत जो रामुपद, करइ न सहज सहाइ १८१॥

घर घर साजहिं बाहन नाना * हरष हृदय परभात पयाना
भरत जाइ घर कीन्ह बिचारू * नगर बाजि गज भवनु भँडारू
सम्पति सब रघुपतिकइ आही * जौ बिनु जतनु चलउँ तजिताही
तौ परिनामु न मोरि भलाई * पापिसिरोमनि साँइँ दोहाई
करइ स्वामिहित सेवकु सोई * दूषनु कोटि देइ किन कोई
अस बिचारि सुचि सेवकु बोले * जे सपनेहुँ निज धरमु न डोले
कहि सब मरमु धरमु भल भाषा * जो जेहि लायक सो तेहि राषा
करि सब जतन राषि रषवारे * राममातु पहिं भरत सिधारे

दो० आरत जननी जानि सब, भरत सनेहु सुजानु।
कहेउ बनावनु पालकी, सजन सुषासन जानु १८२॥

चक्क चक्कि जिमि पुर नर नारी * चहत प्रात उर आरत भारी
जागत सब निसि भयउ बिहाँना * भरत बोलाये सचिव सुजाना
कहेउ लेहु सब तिलकु समाजू * बनहिं देव मुनि रामहिं राजू
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहारे * तुरत तुरग रथ नाग सँवारे
अरुंधती अरु अगिनि समाऊ * रथ चढि चले प्रथमु मुनिराऊ
बिप्रबृंद चढि बाहन नाना * चले सकल तपु तेज निधाना
नगरलोग सब सजि सजि जाना * चित्रकूट कह कीन्ह पयाना

सिबिका सुभग न जाहिं बषानी * चढि चढि चलत भईं सब रानी

दो० सौंपि नगर सुचि सेवकन्हि, सादर सबहि चलाइ ।
सुमिरि राम सिअ चरन तब, चले भरत दोउ भाइ १८३ ॥

राम दरसबस सब नर नारी * जनु करि करिनि चले तकि बारी
बन सिअ रामु समुझि मन माहीं * सानुज भरत पयादेहिं जाहीं
देषि सनेह लोगु अनुरागे * उतरि चले हय गय रथ त्यागे
जाइ समीप राषि निज डोली * राममातु मृदुबानी बोली
तात चढहु रथ बलि महतारी * होइहि प्रिअ परिवारु दुषारी
तुम्हरे चलत चलिहि सब लोगू * सकल सोक कृस नहिं मगु जोगू
सिरधरि बचन चरन सिरु नाई * रथ चढि चलत भये दोउ भाई
तमसा प्रथम दिवस करि बासू * दूसर गोमति तीर निवासू

दो० पय अहार फल असन येक, निसि भोजन एक लोग ।
करत राम हित नेमु ब्रत, परिहरि भूषन भोग १८४ ॥

सई तीर बसि चले बिहाने * शृंगबेरपुर सब निअराने
समाचार सब सुनेउ निषादा * हृदय बिचार करै सबिषादा
कारन कवन भरत बन जाहीं * है कछु कपटभाव मन माहीं
जौं पै जिअ न होति कुटिलाई * तौ कत लीन्हि संग कटकाई
जानहिं सानुज रामहिं मारी * करौं अकंटक राजु सुषारी
भरत न राजनीति उर आनी * तब कलंक अब जीवन हानी
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा * रामहिं समर न जीतनहारा
का आचरजु भरतु अस करहीं * नहिं बिषुबेलि अमिअफल फरहीं

दो० अस बिचारि गुह ज्ञाति सन, कहेउ सजुग सब होहु ।
हथवासहु बोरहु तरनि, कीजिअ घाटारोहु १८५ ॥

होहु सजोइल रोकहु घाटा * ठाटहु सकल मरइ के ठाटा
सनमुष लोह भरतसन लेऊँ * जिअत न सुरसरि उतरन देऊँ
समर मरनु पुनि सुरसरितीरा * रामकाज छनभंगु सरीरा
भरत भाइ नृपु मै जन नीचू * बडेभागु अस पाइअ मीचू
स्वामिकाज करिहउँ रन रारी * जसधवलिहउँ भुअनु दसचारी
तजउँ प्रान रघुनाथ निहोरे * दुहूँ हाँथ मुद मोदक मोरे
साधुसमाजु न जाकर लेषा * रामुभगत महुँ जासु न रेषा
जाय जिअत जगु सो महिभारू * जननी जौबन बिटप कुठारू

दो० बिगतबिषाद निषादपति, सबहि बढाइ उछाहु।
सुमिरि रामु मागेउ तुरत, तरकस धनुष सनाहु १८६॥

बेगहु भाइहु सजहु सजोऊ * सुनि रजाय कदराइ न कोऊ
भलेहि नाथ सब कहहिं सहरषा * एकहिं एक बढावहिं करषा
चले निषाद जोहारि जोहारी * सूर सकल रन रूचै रारी
सुमिरि रामुपदपंकज पनहीं * भाथी बांधि चढायेन्हि धनुहीं
अँगरी पहिरि कूडि सिरधरहीं * फरसा बांस सेल सम करहीं
येक कुसल अतिओडन षांडे * कूदहिं गगन मनहुँ छितिछांडे
निज निज साजु समाजु बनाई * गुह राउतहिं जोहारे जाई
देषि सुभट सब लायक जाने * लइ लइ नामु सकल सनमाने

दो० भाइहु लावहु धोषु जनि, आजु काज बड मोहि।
सुनि सरोष बोले सुभट, बीर अधीर न होहि १८७॥

रामप्रताप नाथ बल तोरे * करहिं कटक बिनु भट बिनु घोरे
जीवत पाउँ न पाछे धरहीं * रुंड मुंड मय मेदिनि करहीं
दीष निषादनाथ भल टोलू * कहेउ बजाउ जुझाउ ढोलू

येतना कहत छींक भइ बायें * कहेउ सगुनिअन्ह षेत सोहाये
बूढ एकु कह सगुन बिचारी * भरतहिं मिलिअ न होइहि रारी
रामहिं भरत मनावन जाहीं * सगुन कहै अस बिग्रह नाहीं
सुनि गुह कहइ नीक कह बूढा * सहसाकरि पछताहिं बिमूढा
भरत सुभाव सील बिनु बूझे * बड हितहानि जानि बिनु जूझे
दो० गहहु घाट भट समिटि सब, लेउँ मरमु मिलिजाइ।
बूझि मित्र अरि मध्यगति, तबुतसकरिहौंआइ १८८॥
लषब सनेह सुभाय सोहाये * बैर प्रीति नहिं दुरइ दुराये
अस कहि भेंट सजोवनु लागे * कन्द मूल फल षग मृग मागे
मीन पीन पाठीन पुराने * भरि भरि भार कहारन आने
मिलनसाजसजिमिलनसिधाये * मंगलमूल सगुन सुभ पाये
देषि दूरिते कहि निजुनामू * कीन्ह मुनीसहि दंडप्रनामू
जानि राम प्रिय दीन्ह असीसा * भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीसा
रामुसषा सुनि स्यन्दनु त्यागा * चले उतरि उमगत अनुरागा
गाँउँ जाति गुह नाउँ सुनाई * कीन्ह जोहार माथ महि लाई
दो० करत दंडवत देषि तेहि, भरत लीन्ह उरलाइ।
मनहुँ लषनु सन भेंट भइ, प्रेमु न हृदय समाइ १८९॥
भेंटत भरत ताहि अतिप्रीती * लोगु सिहाहिं प्रेमकै रीती
धन्य धन्य धुनि मंगल मूला * सुर सराहि तेहि बरिसहिं फूला
लोक बेद सब भाँतिहि नीचा * जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा
तेहि भरि अंक रामलघुभ्राता * मिलत पुलक परिपूरित गाता
राम राम कहि जे जमुहाहीं * तिन्हहिं न पापपुंज समुहाहीं
येहि तौ राम लाइ उर लीन्हा * कुल समेत जगु पावन कीन्हा

करमनास जल सुरसरि परई * तिहि को कहहु सीस नहिं धरई
उलटा नामु जपत जगु जाना * बालमीकि भये ब्रह्मसमाना
दो० स्वपच सबर षस जमन जड, पावर कोल किरात ॥
राम कहत पावन परम, होत भुअनबिष्यात १९० ॥
नहिं अचरज जुग जुग चलि आई * केहि न दीन्हि रघुबीर बडाई
रामनाममहिमा सुर कहहीं * सुनि सुनि अवधलोगु सुष लहहीं
रामसषहि मिलि भरत सप्रेमा * पूँछी कुसल सुमंगल षेमा
देषि भरतकर सील सनेहू * भा निषाद तेहि समय बिदेहू
सकुच सनेह मोद मन बाढा * भरतहि चितवत एकटक ठाढा
धरि धीरजु पद बन्दि बहोरी * बिनय सप्रेम करत कर जोरी
कुसल मूल पदपंकज पेषी * मैं तिहुँकाल कुसल निज लेषी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे * सहित कोटिकुल मंगल मोरे
दो० समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिअ जोइ ।
जो न भजै रघुबीरपद, जग बिधिबंचित सोइ १९१ ॥
कपटी कायर कुमति कुजाती * लोक बेद बाहर सब भांती
राम कीन्ह आपन जबहीं तें * भयउँ भुवनु भूषनु तबहीं तें
देषि प्रीति सुनि बिनय सोहाई * मिलेउ बहोरि भरत लघुभाई
कहि निषाद निज नामु सुबानी * सादर सकल जोहारी रानी
जानि लषन सम देहिं असीसा * जिअहु सुषी सय लाष बरीसा
निरषि निषाद नगर नर नारी * भये सुषी जनु लषनु निहारी
कहहिं लहेउ एहि जीवनु लाहू * भेटेउ रामु भद्र भरि बाहू
सुनि निषाद निज भागु बडाई * प्रमुदित मनु लइ चलेउ लवाई
दो० सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुष पाइ ।

घर तरुतर सर बाग बन, बास बनायन्हि जाइ १९२॥

शृङ्गबेरपुर भरत दीष जब * भे सनेहबस अंग सिथिल तब
सोहत दिये निषादहि लागू * जनु तनु धरे बिनय अनुरागू
येहि बिधि भरत सेनु सब संगा * दीष जाइ जगपावनि गंगा
रामघाट कह कीन्ह प्रनामू * भा मनु मगनु मिले जनु रामू
करहिं प्रनाम नगरनरनारी * मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी
करि मज्जन माँगहिं करजोरी * रामचंद्रपदप्रीति न थोरी
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू * सकल सुषद सेवक सुरधेनू
जोरि पानि बर मागउँ येहू * सीय रामपद सहज सनेहू

दो० येहिबिधि मज्जनु भरतु करि, गुरुअनुसासन पाइ।
मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लेवाइ १९३॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा * भरत सोधु सबहीकर लीन्हा
गुरुसेवा करि आयसु पाई * राममातुपहिं गे दोउ भाई
चरन चाँपि कहि कहि मृदुबानी * जननी सकल भरत सनमानी
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई * आपु निषादहि लीन्ह बोलाई
चले सषा करसों कर जोरे * सिथिलसरीरु सनेहु न थोरे
पूंछत सषहि सो ठाउँ दिषाऊ * नेकु नयन मन जरनि जुडाऊ
जहँसियराम लषनु निसि सोये * कहत भरे जल लोचन कोये
भरतबचन सुनि भयेउ बिषादू * तुरत तहां लेइ गयेउ निषादू

दो० जहँ सिंसुपा पुनीत तरु, रघुबर किये बिश्रामु।
अतिसनेह सादर भरत, कीन्हे दंडप्रनामु १९४॥

कुस साँथरी निहारि सोहाई * कीन्ह प्रनामु प्रदच्छिन जाई
चरन रेष रज आँषिन्ह लाई * बनइ न कहत प्रीति अधिकाई

कनकबिंदु दुइ चारिक देषे * राषे सीस सीयसम लेषे
सजलबिलोचनहृदयगलानी * कहत सषासन बचन सुबानी
श्रीहत सीय बिरह दुतिहीना * जथा अवध नर नारि मलीना
पिता जनक देउँ पटतर केही * करतल भोगु जोगु जगु जेही
ससुरु भानुकुलभानु भुआलू * जेहि सिहात अमरावतिपालू
प्राननाथ रघुनाथ गोसाँई * जो बड होत सो राम बडाई

दो० पतिदेवता सुतीअ मनि, सीय साँथरी देषि।
बिहरत हृदउ न हहरिहर, पबितें कठिन बिसेषि १९५॥

लालन जोगु लखनु लघु लोने * भे न भाइ अस अहहिं न होने
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे * सिअ रघुबीरहि प्रान पिआरे
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ * ताति बाउ तन लागु न काऊ
ते बन सहहिं बिपति सब भाँती * निदरे कोटि कुलिस येहि छाती
राम जनमि जगु कीन्ह उजागर * रूप सील सुष सब गुन सागर
पुरजन परिजन गुरु पितु माता * रामु स्वभाव सबहिं सुषदाता
बैरिउ रामु बडाई करहीं * बोलनिमिलनि बिनय मन हरहीं
सारद कोटि कोटि सतसेषा * करि न सकहि प्रभुगुनगनलेषा

दो० सुषस्वरूप रघुबंसमनि, मंगल मोद निधान।
तेसोवतकुसडासिमहि, बिधिगतिअतिबलवान १९६॥

राम सुना दुष कान न काऊ * जीवनतरु जिमि जोगवइ राऊ
पलकनयनफनिमनिजेहिभाँती * जोगवहिंजननिसकलदिनराती
ते अब फिरत बिपिन पदचारी * कंद मूल फल फूल अहारी
धिग कैकयी अमंगल मूला * भइसि प्रान प्रियतम प्रतिकूला
मैंधिगधिगअघउदधिअभागी * सब उतपात भयेउ जेहि लागी

कुलकलंककरि सृजेउ बिधाता * साँइद्रोहि मोहि कीन्ह कुमाता
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू * नाथ करिअ कत बादि बिषादू
रामतुम्हहिंप्रियतुमप्रियरामहिं * येह निर्दोष दोष बिधि बामहिं

छंद

बिधि बाम की करनी कठिन जेहिं मातु कीन्ही बावरी।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी॥
तुलसी न तुम्हसो राम प्रीतम कहतहौं सौहैं किये।
परिनाम मंगल जानि अपने आनिये धीरज हिये ६॥

सो० अंतरजामी रामु, सकुच सप्रेम कृपायतन।
चलिअ करिअ बिश्रामु, यहबिचार दृढ आनि मन ६॥

सषा बचनसुनि उर धरि धीरा * बास चले सुमिरत रघुबीरा
यह सुधि पाइ नगर नर नारी * चले बिलोकन आरत भारी
परदछिना करि करहिं प्रनामा * देहिं कैकेयिहि षोरि निकामा
भरि भरि बारि बिलोचन लेहीं * बाम बिधातहि दूषन देहीं
येक सराहहिं भरत सनेहू * कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू
निंदहिं आपु सराहि निषादहि * को कहिसकै बिमोह बिषादहि
येहिबिधिरातिलोग सब जागा * भा भिनुसार गुदारा लागा
गुरुहिं सुनाव चढाइ सोहाई * नई नाव सब मातु चढाई
दंड चारि महँ भा सब पारा * उतरि भरत तब सबहि सँभारा

दो० प्रातक्रिया करि मातुपद, बंदि गुरुहि सिरनाइ।
आगे किये निषादगन, दीन्हेउकटकचलाइ १९७॥

कियेउ निषाद नाथ अगुआई * मातु पालकी सकल चलाई
साथ बोलाइ भाइ लघु लीन्हा * बिप्रन्ह सहित गवन गुरु कीन्हा

आपु सुरसरिहि कीन्ह प्रनामू * सुमिरे लषनसहित सिय रामू
गवने भरत पयादेहिं पाँयें * कोतल संग जाहिं डोरिआयें
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा * होइअ नाथ अस्व असवारा
राम पयादेहिं पाँउँ सिधाये * हम कहँ रथ गज बाजि बनाये
सिर भर जाउँ उचित अस मोरा * सबते सेवक धरम कठोरा
देषि भरतगति सुनि मृदुबानी * सब सेवकगन करहिं गलानी

दो० भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रबेस प्रयाग।
कहत राम सिअ राम सिअ, उमगि उमगि अनुराग १९८॥

झलका झलकत पायन कैसे * पंकज कोस ओसकन जैसे
भरत पयादेहिं आयें आजू * भयेउ दुषित सुनि सकल समाजू
षबरि लीन्ह सब लोग नहाये * कीन्ह प्रनाम त्रिबेनिहिं आये
सबिधि सितासित नीर नहाने * दिये दान महिसुर सनमाने
देषत स्यामल धवल हलोरे * पुलक सरीर भरत कर जोरे
सकल कामप्रद तीरथराऊ * बेदबिदित जग प्रगट प्रभाऊ
माँगउँ भीष त्यागि निज धरमू * आरत काह न करइ कुकरमू
अस जिअ जानि सुजान सुदानी * सुफल करहि जग जाचकबानी

दो० अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति रामपद, यह बरदान न आन १९९॥

जानहिं राम कुटिल करि मोही * लोग कहउ गुरु साहेब द्रोही
सीता राम चरन रति मोरे * अनुदिन बढउ अनुग्रह तोरे
जलद जनम भरि सुरति बिसारउ * जाचत जल पवि पाहन डारउ
चातक रटनि घटे घटि जाई * बढे प्रेम सब भाँति भलाई
कनकहि बान चढइ जिमि दाहे * तिमि प्रियतम पद प्रेम निबाहे

भरत बचन सुनि माँझ त्रिबेनी * भइ मृदु बानि सुमंगल देनी
तात भरत तुम्ह सब बिधि साधू * रामचरन अनुराग अगाधू
बादि गलानि करहु मन माहीं * तुम्ह सम रामहिं कोउ प्रिअ नाहीं

दो॰ तन पुलकेउ हियहरषि सुनि, बेनि बचन अनकूल।
भरत धन्य कहि धन्य सुर, हरषित बरषहिं फूल २००॥

प्रमुदित तीरथराज निवासी * बैषानस बटु गृही उदासी
कहहिं परसपर मिलि दसपाँचा * भरतसनेह सील सुचि साँचा
सुनत राम गुनग्राम सोहाये * भरद्वाज मुनिबर पहिं आये
दंडप्रनाम करत मुनि देषे * मूरतिबंत भाग्य निज लेषे
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे * दीन्हि असीस कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ सिरु बैठे * चहत सकुच गृह जनु भजि पैठे
मुनि पूँछब किछु यह बड सोचू * बोले ऋषि लषि सील सकोचू
सुनहुँ भरत हम सब सुधि पाई * बिधि करतब पर कछु न बसाई

दो॰ तुम्ह गलानि जिअ जनि करहु, समुझि मातुकरतूति।
तात कैकेयिहि दोष नहिं, गई गिरा मति धूति २०१॥

इहउ कहत भल कहिहि न कोऊ * लोक बेद बुध संमत दोऊ
तात तुम्हार बिमल जस गाई * पाइहि लोकउ बेद बडाई
लोक बेद संमत सब कहई * जेहि पितु देइ राज सो लहई
राउ सत्यब्रत तुम्हहिं बोलाई * देत राज सुष धरम बडाई
राम गवन बन अनरथ मूला * जो सुनि सकल बिस्व भइ सूला
सो भावीबस रानि अयानी * करि कुचालि अंतहु पछतानी
तहँउँ तुम्हार अलप अपराधू * कहइ सो अधम अयान असाधू
करतेहु राज तौ तुम्हहिं न दोषू * रामहिं होत सुनत संतोषू

दो० अब अति कीन्हेहु भरत भल, तुम्हहिं उचित मतयेहु।
सकल सुमंगलमूल जग, रघुबर चरन सनेहु २०२॥
सो तुम्हार धन जीवन प्राना * भूरि भाग को तुम्हहि समाना
यह तुम्हार आचरज न ताता * दसरथसुअन राम प्रियभ्राता
सुनहुँ भरत रघुपति मनमाहीं * प्रेमपात्र तुम्ह सम कोउ नाहीं
लषन राम सीतहिं अति प्रीती * निसिसब तुम्हहिं सराहत बीती
जाना मरम नहात प्रयागा * मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुम्हपर अस सनेह रघुबर के * सुषजीवन जग जस जडनरके
यह न अधिक रघुबीर बडाई * प्रनत कुटुँबपाल रघुराई
तुम्ह तौ भरत मोर मत येहू * धरे देह जनु रामसनेहू
दो० तुम्हकहँ भरत कलंक येह, हम सब कहँ उपदेसु।
रामभगतिरससिद्धि हित, भा यहसमउ गनेसु२०३॥
नवबिधुबिमल तात जसतोरा * रघुबरकिंकर कुमुद चकोरा
उदित सदा अथइहि कबहूँना * घटिहिनजग नभादिनादिन दूना
कोक तिलोकप्रीति नित करहीं * प्रभुप्रतापरबि छबिहि न हरहीं
निसिदिन सुषद सदाँ सब काहू * ग्रसिहि न कैकेयि करतब राहू
पूरन राम सुप्रेम पिऊषा * गुरु अपमान दोष नहिं दूषा
रामभगत अब अमी अघाहू * कीन्हिहु सुलभ सुधा बसुधाहू
भूप भगीरथ सुरसरि आनी * सुमिरत सकल सुमंगलषानी
दसरथगुनगन बरनि न जाहीं * अधिक कहा जेहिसम जग नाहीं
दो० जासु सनेह सकोच बस, राम प्रगट भये आइ।
जेहरिहिय नयननि कबहुँ, निरषे नहीं अघाइ २०४॥
कीरतिबिधु तुम्ह कीन्ह अनूपा * जहँ बस राम प्रेम मृगरूपा

तात गलानि करहु जिअ जायें * डरहु दरिद्रहि पारस पायें
सुनहुँ भरत हम झूठ न कहहीं * उदासीन तापस बन रहहीं
सब साधन कर सुफल सोहावा * लषन राम सिय दरसन पावा
तेहि फल कर फल दरस तुम्हारा * सहित प्रयाग सुभाग हमारा
भरत धन्य तुम जग जस जयेऊ * कहि अस प्रेम मगन मुनि भयेऊ
सुनि मुनि बचन सभासद हरषे * साधु सराहि सुमन सुर बरषे
धन्य धन्य धुनि गगन प्रयागा * सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा

दो० पुलकि गात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन।
करि प्रनाम मुनिमंडलिहि, बोले गदगद बैन २०५॥

मुनि समाज अरु तीरथराजू * साँचेहुँ सपथ अघाइ अकाजू
येहि थल जौं कछु कहिअ बनाई * येहि सम अधिक न अघ अधमाई
तुम्ह सरबज्ञ कहौं सतिभाऊ * उर अंतरजामी रघुराऊ
मोहि न मातु करतब कर सोचू * नहिं दुष जिअ जग जानिहिं पोचू
नाहिं न डरु बिगरिहि परलोकू * पितहु मरन कर मोहि न सोकू
सुकृत सुजस भरि भुअन सोहाये * लछिमन राम सरिस सुत पाये
राम बिरह तजि तन छनभंगू * भूप सोच कर कवन प्रसंगू
राम लषन सिय बिनु पग पनहीं * करि मुनिबेष फिरहिं बन बनहीं

दो० अजिन बसन फल असन महि, सयन डाँसि कुस पात।
बसि तरुतर नित सहत हिम, आतप बरषा बात २०६॥

येहि दुष दाह दहइ दिन छाती * भूष न बासर नींद न राती
येहि कुरोग कर औषधि नाहीं * सोधेउँ सकल बिस्व मन माहीं
मातु कुमत बढ़ई अघमूला * तेहिं हमार हित कीन्ह बसूला
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुजंत्रू * गाडि अवध पढ़ि कठिन कुमंत्रू

मोहिलगियह कुठाट तेहिंठाटा * घालेसि सब जग बारहबाटा
मिटइ कुजोग राम फिरि आये * बसइ अवध नहिं आन उपाये
भरतबचन सुनि मुनि सुषपाई * सबहिं कीन्हि बहुभाँति बडाई
तात करहु जनि सोच बिसेषी * सब दुष मिटिहि रामपगु देषी
दो० करि प्रबोध मुनिबर कहेउ, अतिथि प्रेमप्रिअ होहु।
कंद मूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु २०७॥
सुनिमुनिबचनभरतहिअसोचू * भएउ कुअवसर कठिन सकोचू
जानि गरुइ गुरु गिरा बहोरी * चरन बंदि बोले कर जोरी
सिरधरिआयसुकरिअ तुम्हारा * परम धरम यह नाथ हमारा
भरतबचन मुनिबर मनभाये * सुचि सेवक सिषनिकट बोलाये
चाहिअ कीन्हि भरत पहुनाई * कंद मूल फल आनहुँ जाई
भलेहिं नाथकहितिन्हसिरनाये * प्रमुदित निजनिज काज सिधाये
मुनिहिं सोच पाहुँनबड नेवता * तस पूजा चाहिअ जस देवता
सुनिरिधिसिधिअनिमादिकआई * आयसु होइसो करहिंगोसाईं
दो० रामबिरह ब्याकुल भरत, सानुज सहित समाज।
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहा मुदित मुनिराज २०८॥
रिधिसिधिसिरधरिमुनिबरबानी * बडभागिनि आपुहि अनुमानी
कहहिं परसपर सिधि समुदाई * अतुलित अतिथि रामलघुभाई
मुनिपद बंदिकरिअ सोइआजू * होइ सुषी सब राजसमाजू
असकहिरचेउ रुचिरगृहनाना * जे बिलोकि बिलषाहिं बिमाना
भोग बिभूति भूरि भरि राषे * देषत जिन्हहिं अमरअभिलाषे
दासी दास साज सब लीन्हे * जोगवत रहहिं मनहिं मनुदीन्हे
सबसमाजसजिसिधिपलमाहीं * जे सुष सपनेहुँ सुरपुर नाहीं

प्रथमहिं बास दिये सब केही * सुंदर सुषद जथारुचि जेही

दो० बहुरि सपरिजन भरतकहँ, रिषिअसआयसुदीन्ह ।
विधिविस्मयदायकुबिभव, मुनिबरतपबलकीन्ह २०९॥

मुनिप्रभाव जब भरत बिलोका * सब लघु लगे लोकपतिलोका
सुषसमाज नहिं जाइ बषानी * देषत बिरति बिसारहिं ज्ञानी
आसन सयन सुबसन बिताना * बन वाटिका बिहग मृगनाना
सुरभि फूल फलअमियसमाना * विमलजलासयबिबिधिबिधाना
असनपानसुचिअमियअमीसे * देषि लोग सकुचात जमीसे
सुर सुरभी सुरतरु सबहीके * लषि अभिलाष सुरेस सचीके
रितुबसंत बह त्रिबिधि बयारी * सब कहँ सुलभ पदारथचारी
स्रक चंदन बनितादिक भोगा * देषि हरष बिसमय बश लोगा

दो० संपति चकई भरत चक, मुनि आयसु षेलवार ।
तेहि निसि आश्रम पींजरा, राषे भा भिनुसार २१० ॥

मा० पा० ॥ १९ ॥

कीन्ह निमज्जन तीरथराजा * नाइ मुनिहिं सिरसहितसमाजा
रिषि आयसुअसीस सिरराषी * करि दंडवत बिनय बहुभाषी
पथगतिकुसल साथ सब लीन्हे * चले चित्रकूटहिं चित दीन्हे
रामसषा कर दीन्हे लागू * चलत देहँधरि जनु अनुरागू
नहिं पदत्रान सीस नहिं छाया * प्रेमु नेमु व्रत धरम अमाया
लषन राम सिय पंथ कहानी * पूँछत सषहि कहत मृदुबानी
रामबासथल बिटप बिलोके * उर अनुराग रहत नहिं रोके
देषि दसा सुर बरिसहिं फूला * भइ मृदु महिमगु मंगलमूला

दो० किये जाहिं छाया जलद, सुषद बहइ बर बात ।
तसमगभयेउनरामकहँ, जस भा भरतहिंजात २११ ॥

जड चेतन मग जीव घनेरे * जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे
ते सब भये परमपद जोगू * भरत दरस मेटा भवरोगू
यह बडिबात भरतकइ नाहीं * सुमिरत राम जिनहिं मनमाहीं
बारकु राम कहत जग जेऊ * होत तरन तारन नर तेऊ
भरत रामप्रिअ पुनि लघुभ्राता * कस न होइ मग मंगलदाता
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं * भरतहिनिरषिहरस हियलहहीं
देषि प्रभाव सुरेसहि सोचू * जग भल भलेहि पोचकहुँ पोचू
गुरुसन कहेउ करिअ प्रभु सोई * रामहिं भरतहिं भेट न होई

दो० राम सकोची प्रेमबस, भरत सुप्रेम पयोधि।
बनी बात बिगरन चहत, करिअजतनुछलुसोधि २१२॥

बचन सुनत सुरगुरु मुसुकाने * सहसनयन बिनु लोचन जाने
कह गुरु बादि छोभ छल छाँडू * इहाँ कपट करि होइअ भाँडू
मायापतिसेवक सन माया * करिअत उलटि परै सुरराया
तब कछु कीन्ह रामरुष जानी * अब कुचालकरि होइहि हानी
सुनु सुरेस रघुनाथ सुभाऊ * निज अपराध रिसाहिं न काऊ
जो अपराध भगत कर करई * रामरोष पावक सो जरई
लोकहुँ बेद बिदित इतिहाँसा * यह महिमा जानहिं दुरबासा
भरत सरिस को रामसनेही * जग जपु राम राम जपु जेही

दो० मनहुँनआनिअअमरपति, रघुबरभक्त अकाज।
अजसलोकपरलोक दुष, दिनादिनसोकसमाज २१३॥

सुनु सुरेस उपदेस हमारा * रामहिं सेवक परम पिआरा
मानत सुष सेवक सेवकाई * सेवक बैर बैर अधिकाई
जद्यपि सम नहिं राग न रोषू * गहहिं न पाप पुन्य गुन दोषू

करम प्रधान बिस्व करिराषा * जो जसकरइ सो तसफलचाषा
तदपिकरहिं सम बिषम बिहारा * भगत अभगत हृदय अनुसारा
अगुन अलेप अमान एकरस * राम सगुन भये भगतप्रेमबस
राम सदाँ सेवक रुचि राषी * बेद पुरान साधु सुर साषी
असजिअजानितजहुकुटिलाई * करहु भरतपद प्रीति सोहाई
दो० रामभगत परहित निरत, पर दुष दुषी दयाल।
भगतसिरोमनि भरत तें, जनि डरपहु सुरपाल २१४॥
सत्यसिंधु प्रभु सुरहितकारी * भरत राम आयसु अनुसारी
स्वारथ बिबसबिकलतुम्ह होहू * भरत दोस नाहिं राउर मोहू
सुनि सुरबर सुरगुरु बर बानी * भा प्रमोद मन मिटी गलानी
बरष प्रसून हरष सुरराऊ * लगे सराहन भरत सुभाऊ
येहिबिधि भरत चले मग जाहीं * देषि दसा मुनि सिद्ध सिहाँहीं
जबहिं राम कहि लेहिं उसासा * उमगत प्रेम मनहुँ चहुँ पासा
द्रवहिंबचनसुनिकुलिसपषाना * पुरजन प्रेम न जाय बषाना
बीच बासकरि जमुनहिं आये * निरषि नीर लोचनजल छाये
दो० रघुबरबरन बिलोकि बर, बारि समेत समाज।
होत मगन बारिधि बिरह, चढे बिबेक जहाज २१५॥
जमुनतीर तेहिदिन करि बासू * भयेउ समयसम सबहि सुपासू
रातिहिं घाट घाट की तरनी * आईं अगिनित जाहिं न बरनी
प्रात पार भये येकहि षेवा * तोषे रामसषा की सेवा
चले नहाइ नदिहि सिरनाई * साथ निषादनाथ दोउ भाई
आगे मुनिबर बाहन आछे * राजसमाज जाहिं सब पाछे
तेहि पाछे दोउ बंधु पयादे * भूषन बसन बेष सुठि सादे

सेवक सुहृद सचिव सब साथा * सुमिरत लषन सीय रघुनाथा
जहँ जहँ रामबास बिश्रामा * तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रनामा
दो० मगबासी नर नारि सुनि, धाम काम तजि धाइ।
देषि सरूप सनेहसब, मुदित जनमफल पाइ २१६॥
कहहिं सप्रेम एक एक पाहीं * राम लषन सषि होहिं कि नाहीं
बय बपु बरन रूप सोइ आली * सील सनेहसरिस समचाली
बेष न सो सषि सीय न संगा * आगे अनी चली चतुरंगा
नहिं प्रसन्नमुष मानस षेदा * सषि संदेह होइ येहि भेदा
तासु तरक तिअगन मनमानी * कहहिंसकलतोहिसमनसयानी
तेहि सराहि बानी फुरि पूजी * बोली मधुर बचन तिअ दूजी
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू * जेहि बिधि रामराजरसभंगू
भरतहि बहुरि सराहन लागी * सील सनेह सुभाय सुभागी
दो० चलत पयादे षात फल, पितादीन्ह तजि राजु।
जात मनावन रघुबरहि, भरतसरिस को आजु २१७॥
भायप भगति भरत आचरनू * कहत सुनत दुष दूषन हरनू
जो कछु कहिब थोर सषि सोई * रामबंधु अस काहे न होई
हम सब सानुज भरतहिं देषे * भइन्ह धन्य जुबती जन लेषे
सुनि गुन देषि दसा पछिताहीं * कैकेई जननिजोग सुत नाहीं
कोउ कह दूषन रानिहि नाहिन * बिधिसब कीन्ह हमहि जो दाहिन
कहँ हम लोक बेदबिधिहीनी * लघुतिय कुल करतूति मलीनी
बसहिं कुदेस कुगाव कुबाँमा * कहँ यह दरसु पुन्य परिनामा
अस अनंदु अचरजु प्रतिग्रामा * जनु मरुभूमि कलपतरु जामा
दो० भरत दरस देषत षुलेउ, मग लोगन्ह कर भाग।

जनु सिंघलबासिन्ह भयेउ, बिधिबस सुलभ प्रयाग २१८॥

निज गुन सहित रामगुनगाथा * सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा
तीरथ मुनि आश्रम सुरधामा * निरषि निमज्जहिं करहिं प्रनामा
मनहीं मन माँगहिं बर येहू * सीय राम पदपदुम सनेहू
मिलहिं किरात कोल बनबासी * बयषानस बटु जती उदासी
करि प्रनाम पूछहिं जेहि तेही * केहि बन लषन राम बयदेही
ते प्रभु समाचार सब कहहीं * भरतहि देषि जनमफल लहहीं
जे जन कहहिं कुसल हम देषे * ते प्रिय राम लषन सम लेषे
येहिबिधि बूझत सबहि सुबानी * सुनत राम बनबास कहानी

दो० तेहि बासर बसि प्रातहीं, चले सुमिरि रघुनाथ।
रामदरस की लालसा, भरतसरिस सब साथ २१९॥

मंगल सगुन होहिं सब काहू * फरकहिं सुषद बिलोचनबाहू
भरतहिं सहित समाज उछाहू * मिलिहहिं राम मिटिहि दुषदाहू
करत मनोरथ जस जिअ जाके * जाहिं सनेह सुरा सब छाके
सिथिल अंग पग मग डगि डोलहिं * बिहबल बचन प्रेमबस बोलहिं
राम सषा तेहि समय देषावा * सैलसिरोमनि सहज सोहावा
जासु समीप सरित पय तीरा * सीय समेत बसहिं दोउ बीरा
देषि करहिं सब दंडप्रनामा * कहि जय जानकिजीवन रामा
प्रेम मगन अस राजसमाजू * जनु फिरि अवध चले रघुराजू

दो० भरत प्रेम तेहि समय जस, तस कहि सकइ न सेषु
कबिहि अगम जिमि ब्रह्मसुष, अहमममलिनजनेषु २२०

सकल सनेहसिथिल रघुबरके * गये कोस दुइ दिनकर ढरके
जल थल देषि बसे निसि बीते * कीन्ह गवन रघुनाथ पिरीते

उहाँ राम रजनी अवसेषा * जागे सीय सपन अस देषा
सहितसमाज भरत जनु आये * नाथ बियोग ताप तनताये
सकल मलिन मन दीन दुषारी * देषी सासु आन अनुहारी
सुनि सिय सपन भरेजललोचन * भये सोचबस सोचबिमोचन
लषन सपन यह नीक न होई * कठिन कुचाह सुनाइहि कोई
अस कहि बंधु समेत नहाने * पूजि पुरारि साधु सनमाने

छंद

सनमानि सुरमुनि बंदि बैठे उतर दिसि देषत भये।
नभधूरि षग मृग भूरि भागे बिकल प्रभु आश्रम गये॥
तुलसी उठे अवलोकि कारन काह चित सचकित रहे।
सब समाचार किरात कोलन्हि आइ तेहि अँवसर कहे७॥

सो० सुनत सुमंगल बैन, मन प्रमोद तन पुलकभर।
सरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ७॥

बहुरि सोचबस भे सियरवनू * कारन कवन भरत आगवनू
एक आइ अस कहा बहोरी * सेनसंग चतुरंग न थोरी
सो सुनि रामहिं भा अतिसोचू * इत पितु बच उत बंधु सकोचू
भरत सुभाव समुझि मनमाहीं * प्रभु चितहित थिति पावत नाहीं
समाधान तब भा यह जाने * भरत कहे महँ साधु सयाने
लषन लषेउ प्रभु हृदय षभारू * कहत समय सम नीति बिचारू
बिनु पूँछे कछु कहउँ गोसाँई * सेवक समय न ढीठ ढिठाई
तुम्ह सरबज्ञ सिरोमनि स्वामी * आपनिसमुझिकहउँअनुगामी

दो० नाथ सुहृद सुठि सरलचित, सीलसनेह निधान।
सबपर प्रीति प्रतीति जिय, जानिअ आपुसमान २२१॥

बिषई जीव पाइ प्रभुताई * मूढ मोहबस होहिं जनाई
भरत नीतिरत साधु सुजाना * प्रभुपदप्रेम सकल जग जाना
तेऊ आजु राजपद पाई * चले धरम मरजाद मिटाई
कुटिल कुबंधु कुअँवँसर ताकी * जानि राम बनबास येकाकी
करि कुमंत्र मन साजि समाजू * आये करइ अंकटक राजू
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई * आये दल बटोरि दोउ भाई
जौं जिअ होति न कपट कुचाली * केहि सोहाति रथ बाजि गजाली
भरतहि दोष देइ को जाये * जग बौराइ राजपद पाये

दो॰ ससि गुरुतिअगामी नहुषु, चढेउ भूमिसुर जान।
लोक बेदते बिमुष भा, अधम न बेनु समान २२२॥

सहसबाहुँ सुरनाथ त्रिसंकू * केहि न राजमद दीन्ह कलंकू
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ * रिपुरिन रंच न राषब काऊ
येक कीन्हि नहिं भरत भलाई * निदरे राम जानि असहाई
समुझि परिहि सो आजु बिसेषी * समर सरोष राम मुष पेषी
येतना कहत नीतिरस भूला * रनरसबिटप पुलकमिस फूला
प्रभुपद बंदि सीस रज राषी * बोले सत्य सहज बल भाषी
अनुचित नाथ न मानब मोरा * भरत हमहिं उपचार न थोरा
कहँलगि सहिअ रहिअ मनमारे * नाथ साथ धनु हाँथ हमारे

दो॰ छत्रजाति रघुकुलजनम, रामअनुज जग जान।
लातहु मारे चढति सिर, नीच को धूरिसमान २२३॥

उठि करजोरि रजायसु माँगा * मनहुँ बीररस सोवत जागा
बाँधि जटा सिर कसि कटिभाथा * साजि सरासन सायक हाँथा
आजु रामसेवक जस लेऊँ * भरतहि समर सिषावन देऊँ

राम निरादर कर फल पाई * सोवहिं समर सेज दोउ भाई
आइ बना भल सकल समाजू * प्रगट करौं रिस पाछिलि आजू
जिमि करिनिकर दलइ मृगराजू * लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू
तैसेहिं भरतहि सेन समेता * सानुज निदरि निपातउँ षेता
जौं सहाय कर संकर आई * तौ मारौं रन राम दोहाई

दो० अतिसरोष माषे लषन, लषिसुनिसपथप्रबान ।
सभयलोकसबलोकपति, चाहत भभरि भगान २२४॥

जग भा मगन गगन भइ बानी * लषन बाँहुबल बिपुल बषानी
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा * को कहिसकै को जाननिहारा
अनुचित उचित काज कछुहोऊ * समुझिकरिअभलकहसबकोऊ
सहसा करि पाछे पछिताहीं * कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं
सुनि सुरबचन लषन सकुचाने * राम सीय सादर सनमाने
कही तात तुम्ह नीति सोहाई * सबतें कठिन राजमद भाई
जो अँचवत नृप मातहिं तेई * नाहिंन साधुसभा जेहि सेई
सुनहु लषन भल भरतसरीसा * बिधिप्रपंचमह सुना न दीसा

दो० भरतहि होइ न राजमद, बिधिहरिहरपद पाइ ।
कबहुँ कि काँजीसीकरनि, छीरसिंधु बिनसाइ २२५॥

तिमिर तरुनतरनिहिं मकु गिलई * गगन मगन मकु मेघहि मिलई
गोपद जल बूडहिं घटजोनी * सहज छमा बरु छाडइ छोनी
मसक फूँक मकु मेरु उडाई * होइ न नृपमद भरतहि भाई
लषन तुम्हार सपथ पितुआना * सुचि सुबंधु नहिं भरतसमाना
सुगुन छीर अवगुन जल ताता * मिलै रचै परपंच बिधाता
भरत हंस रबिबंस तडागा * जनमि कीन्ह गुनदोषबिभागा

गहि गुनपय तजि अवगुनवारी * निजजसजगतकीन्हिउँजिआरी
कहत भरत गुन सील सुभाऊ * प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ

दो० सुनि रघुबर बानी बिबुध, देषि भरत पर हेतु।
सकल सराहत राम सो, प्रभु को कृपानिकेतु २२६॥

जो न होत जग जनम भरतको * सकल धरमधुर धरनि धरतको
कबिकुल अगम भरतगुनगाथा * को जानइ तुम्ह बिनु रघुनाथा
लषन राम सिय सुनि सुरबानी * अतिसुष लहेउ न जाइ बषानी
इहाँ भरत सब सहित सहाये * मंदाकिनी पुनीत नहाये
सरित समीप राषि सब लोगा * माँगि मातु गुरु सचिव नियोगा
चले भरत जहँ सिय रघुराई * साथ निषादनाथ लघुभाई
समुझि मातु करतब सकुचाहीं * करत कुतरक कोटि मनमाहीं
राम लषन सिय सुनि ममनाऊँ * उठि जनि अनत जाहिं तजि ठाऊँ

दो० मातु मते महँ मानि मोहि, जो कछु करहिं सो थोर।
अघ अवगुन छमि आदरहिं, समुझि आपनी ओर २२७

जौं परिहरहिं मलिनमन जानी * जौं सनमानहिं सेवक मानी
मोरे सरन रामकी पनहीं * राम सुस्वामि दोस सब जनहीं
जग जसभाजन चातक मीना * नेम प्रेम निज निपुन नबीना
अस मन गुनत चले मग जाता * सकुचि सनेह सिथिल सब गाता
फेरत मनहिं मातु कृत षोरी * चलत भगति बल धीरज धोरी
जब समुझत रघुनाथ सुभाऊ * तब पथ परत उताइल पाऊ
भरतदसा तेहि अँवसर कैसी * जलप्रबाह जलअलिगति जैसी
देषि भरतकर सोच सनेहू * भा निषाद तेहि समय बिदेहू

दो० लगे होन मंगल सगुन, सुनि गुनि कहत निषाद।

मिटिहि सोच होइहि हरष, पुनि परिनाम बिषाद २२८॥

सेवक बचन सत्य सब जाने * आश्रम निकट जाय निअराने
भरत दीष बन सैल समाजू * मुदित छुधित जनु पाइ सुनाजू
ईति भीति जनु प्रजा दुषारी * त्रिबिधि ताप पीडित ग्रह भारी
जाइ सुराज सुदेस सुषारी * होइ भरत गति तेहि अनुहारी
राम बास बन संपति भ्राजा * सुषी प्रजा जनु पाइ सुराजा
सचिव बिराग बिबेक नरेसू * बिपिन सोहावन पावन देसू
भट जम नियम सैल रजधानी * सांति सुमति सुचि सुंदरि रानी
सकल अंग संपन्न सुराऊ * रामचरन आश्रित चित चाऊ

दो० जीति मोहमहिपालदल, सहित बिबेक भुआल।
करत अकंटक राज पुर, सुष संपदा सुकाल २२९॥

बन प्रदेस मुनिबास घनेरे * जनु पुर नगर गाउँ गन षेरे
बिपुल बिचित्र बिहग मृगनाना * प्रजा समाज न जाइ बषाना
षगहा करि हरि बाघ बराहा * देषि महिष बृकसाज सराहा
बयर बिहाय चरहिं एक संगा * जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा
झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं * मनहुँ निसान बिबिधि बिधि बाजहिं
चक चकोर चातक सुकपिकगन * कूजित मंजु मराल मुदितमन
अलिगन गावत नाचत मोरा * जनु सुराज मंगल चहुँ वोरा
बेलि बिटप तृन सफल सफूला * सब समाज मुद मंगलमूला

दो० रामसैल सोभा निरषि, भरत हृदय अतिप्रेमु।
तापस तपफल पाइ जिमि, सुषी सिराने नेमु २३०॥

मा० पा० २०॥ नवाह ५

तब केवट ऊँचे चढि धाई * कहेउ भरतसन भुजा उठाई

नाथ देषिअहि बिटप बिसाला * पाकरि जंबु रसाल तमाला
तिन्ह तरुवरन्ह मध्य बट सोहा * मंजु बिसाल देषि मनमोहा
नील सघन पल्लव फललाला * अबिचलछाँह सुषद सबकाला
मानहुँ तिमिर अरुनमय रासी * बिरची बिधि सकेलि सुषमासी
येहि तरु सरित समीप गोसाईं * रघुबर परनकुटी जहँ छाईं
तुलसी तरुवर बिबिधि सोहाये * कहुँ कहुँ सिय कहुँ लषन लगाये
बटछाया बेदिका बनाई * सिअ निज पानिसरोज सोहाई

दो० जहाँ बैठि मुनिगन सहित, नित सिय राम सुजान।
सुनहिं कथा इतिहाँस सब, आगम निगम पुरान २३१॥

सषाबचन सुनि बिटप निहारी * उमगे भरत बिलोचन बारी
करत प्रनाम चले दोउ भाई * कहत प्रीति सारद सकुचाई
हरषहिं निरषि रामपद अंका * मानहुँ पारस पायउ रंका
रजसिरधरिहियनयनन्हिलावहिं * रघुबरमिलनसरिससुषपावहिं
देषि भरतगति अकथ अतीवा * प्रेममगन मृग षग जड जीवा
सषहि सनेह बिबस मग भूला * कहि सुपंथ सुर बरषहिं फूला
निरषि सिद्ध साधक अनुरागे * सहज सनेह सराहन लागे
होत न भूतल भाव भरतको * अचर सचर चर अचर करतको

दो० प्रेम अमिअ मंदरु बिरह, भरतु पयोधि गँभीर।
मथि प्रगटेउ सुरसाधुहित, कृपासिंधु रघुबीर २३२॥

सषा समेत मनोहर जोटा * लषेउ न लषन सघनबन ओटा
भरत दीष प्रभु आश्रम पावन * सकल सुमंगलसदन सोहावन
करत प्रबेस मिटे दुष दावा * जनु जोगी परमारथ पावा
देषे भरतु लषन प्रभु आगे * पूँछे बचन कहत अनुरागे

सीस जटा कटि मुनिपट बाँधे * तून कसे कर सर धनु काँधे
बेदीपर मुनि साधु समाजू * सीय सहित राजत रघुराजू
बल्कलबसन जटिलतनस्यामा * जनु मुनिबेष कीन्ह रतिकामा
करकमलनि धनु सायक फेरत * जियकी जरनि हरत हँसि हेरत

दो० लसत मंजु मुनिमंडली, मध्य सीय रघुचंद।
ज्ञानसभा जनु तनु धरे, भगति सच्चिदानंद २३३॥

सानुज सषासमेत मगनमन * बिसरे हरष सोक सुष दुषगन
पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं * भूतल परे लकुटकी नाईं
बचन सप्रेम लषन पहिचाने * करत प्रनाम भरत जिअ जाने
बंधु सनेह सरस येहि वोरा * उत साहेब सेवा बरजोरा
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई * सुकबि लषन मन की गति भनई
रहे राषि सेवा पर भारू * चढ़ी चंग जनु षैच षेलारू
कहत सप्रेम नाइ महि माथा * भरत प्रनाम करत रघुनाथा
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा * कहुँ पट कहुँ निषंग धनुतीरा

दो० बरबस लिये उठाइ उर, लाये कृपानिधान।
भरतरामकी मिलनि लषि, बिसरे सबहि अपान २३४॥

मिलनि प्रीति किमि जाय बषानी * कबिकुल अगम करम मन बानी
परम प्रेम पूरन दोउ भाई * मनबुधिचितअहमितिबिसराई
कहहु सो प्रेम प्रगट को करई * केहि छाया कबिमति अनुसरई
कबिहि अरथ आषर बल साँचा * अनुहरि तालगतिहि नटु नाँचा
अगम सनेह भरत रघुबर को * जहँ न जाइ मनु बिधिहरिहरको
सो मै कुमति कहौं केहि भाँती * बाजु सुराग कि गाँडर ताती
मिलनि बिलोकि भरतरघुबरकी * सुरगन सभय धकधकी धरकी

समुझाये सुरगुरु जड जागे * बरषि प्रसून प्रसंसन लागे

दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटेउ राम।
भूरि भाय भेटे भरत, लछिमन करत प्रनाम २३५॥

भेटेउ लषन ललकि लघुभाई * बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई
पुनि मुनिगन दोउ भाइन्ह बंदे * अभिमत आसिष पाइ अनंदे
सानुज भरत उमगि अनुरागा * धरि सिर सियपदपदुमपरागा
पुनि पुनि करत प्रनाम उठाये * सिर करकमल परसि बयठाये
सीय असीस दीन्हि मनमाहीं * मगन सनेह देहँ सुधि नाहीं
सबबिधि सानुकूल लषि सीता * भे निसोच उर अपडर बीता
कोउकिछुकहइ न कोउकिछुपूछा * प्रेमभरा मन निज गति छूछा
तेहि अवसर केवट धीरज धरि * जोरिपानि बिनवत प्रनाम करि

दो० नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग।
सेवक सेनप सचिव सब, आये बिकल बियोग २३६॥

सीलसिंधु सुनि गुरु आगवनू * सिय समीप राषे रिपुदवनू
चले सबेग राम तेहि काला * धीर धुरमधुर दीनदयाला
गुरुहिं देषि सानुज अनुरागे * दंडप्रनाम करन प्रभु लागे
मुनिबर धाइ लिये उरलाई * प्रेम उमागि भेटे दोउ भाई
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू * कीन्ह दूरतें दंडप्रनामू
राम सषा रिषि बरबस भेटा * जनु महि लुटत सनेह समेटा
रघुपति भगति सुमंगल मूला * नभ सराहि सुर बरिसहिं फूला
येहिसम निपट नीच कोउ नाहीं * बड बसिष्ट सम को जग माहीं

दो० जेहि लषि लषनहुँते अधिक, मिले मुदितमुनिराउ।
सो सीतापति भजन को, प्रगट प्रतापप्रभाउ २३७॥

आरत लोगु राम सब जाना * करुनाकर सुजान भगवाना
जो जेहि भाय रहा अभिलाषी * तेहितेहिकै तसितसिरुचिराषी
सानुज मिलि पलमहुँ सब काहू * कीन्ह दूरि दुषु दारुन दाहू
यह बडि बात राम कै नाहीं * जिमि घटकोटि येक रबि छाहीं
मिलि केवटहि उमगि अनुरागा * पुरजन सकल सराहँहिं भागा
देषी राम दुषित महतारी * जनु सुबेलि अवलीं हिममारी
प्रथम राम भेटी कैकेयी * सरल सुभाय भगति मति भेयी
पगपरि कीन्ह प्रबोध बहोरी * कालकरम बिधि सिरधरि षोरी

दो० भेंटी रघुबर मातु सब, करि प्रबोधु परितोषु।
अंब ईसआधीन जगु, काहु न देइअ दोषु २३८॥

गुरु तिय पद बंदे दुहुँ भाई * सहित बिप्रतिअ जे सँग आई
गंग गौरि सम सब सनमानी * देहिं असीस मुदित मृदु बानी
गहि पग लगे सुमित्रा अंका * जनु भेटी संपति अतिरंका
पुनि जननीचरननि दोउ भ्राता * परे प्रेम ब्याकुल सब गाता
अति अनुराग अंब उरलाये * नयन सनेह सलिल अन्हवाये
तेहि अवँसर कर हरष बिषादू * किमिकबिकहइमूकजिमिस्वादू
मिलि जननिहिं सानुज रघुराऊ * गुरुसन कहेउ कि धारिअ पाऊ
पुरजन पाइ मुनीस नियोगू * जल थल तकि तकि उतरे लोगू

दो० महिसुर मंत्री मातु गुरु, गने लोग लिये साथ।
पावनु आश्रमु गवन किये, भरत लषन रघुनाथ २३९॥

सीअ आइ मुनिबर पग लागी * उचित असीस लही मनमागी
गुरुपतिनिहि मुनितियन्ह समेता * मिली प्रेमु कहि जाइ न जेता
बंदि बंदि पद सिय सबहीके * आसिर बचन लहे प्रियजीके

सासु सकल जब सीय निहारी * मूँदे नयन सहमि सुकुमारी
परी बधिकबस मनहुँ मराली * काह कीन्ह करतार कुचाली
तिन्हसियनिरषिनिपटदुषपावा * सो सब सहिअ जो दैवसहावा
जनकसुता तब उर धरि धीरा * नीलनलिन लोयन भरि नीरा
मिली सकलसासुन्ह सिय जाई * तेहि अवँसर करुना महि छाई

दो॰ लागिलागि पगसबनि सिय, भेंटति अतिअनुराग।
हृदय असीसहिं प्रेमबस, रहिअहु भरी सोहाग २४०॥

बिकल सनेह सीय सब रानी * बैठन सबहि कह्यो गुरु ज्ञानी
कहि जगगति मायिक मुनिनाथा * कहे कछुक परमारथ गाथा
नृपकर सुरपुर गवनु सुनावा * सुनि रघुनाथ दुसह दुष पावा
मरन हेतु निज नेह बिचारी * भे अति बिकल धीरधुरधारी
कुलिस कठोर सुनत कटुबानी * बिलपत लषन सीय सब रानी
सोक बिकल अतिसकलसमाजू * मानहु राज अकाजेउ आजू
मुनिबर बहुरि राम समुझाये * सहितसमाज सुसरित नहाये
ब्रत निरंबु तेहि दिन प्रभु कीन्हा * मुनिहुँ कहे जलु काँहु न लीन्हा

दो॰ भोर भये रघुनंदनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह।
श्रद्धा भक्तिसमेत प्रभु, सो सबु सादर कीन्ह २४१॥

करि पितुक्रिया बेद जसि बरनी * भे पुनीत पातक तम तरनी
जासु नाम पावक अघ तूला * सुमिरत सकल सुमंगलमूला
सुद्ध सो भयेउ साधुसंमत अस * तीरथ आबाहन सुरसरि जस
सुद्ध भये दुइ बासर बीते * बोले गुरुसन राम पिरीते
नाथ लोग सब निपट दुषारी * कंद मूल फल अंबुअहारी
सानुज भरत सचिव सब माता * देषि मोहि पल जिमिजुग जाता

सब समेत पुर धारिअ पाऊ * आपु इहाँ अमरावति राऊ
बहुत कहेउँ सब कियेउँ ढिठाई * उचित होय तस करिअ गोसाँई

दो० धरमुसेतु करुनायतन, कस न कहहु अस राम।
लोगदुषितदिनदुइदरस, देषि लहउ बिश्राम २४२॥

रामु बचन सुनि सभय समाजू * जनुजलनिधिमहँबिकलजहाजू
सुनि गुरु गिरा सुमंगलमूला * भयेउ मनहु मारुत अनुकूला
पावनि पय तिहुँकाल नहाहीं * जो बिलोकि अघवोघ नसाहीं
मंगलमूरति लोचन भरि भरि * निरषहिं हरषि दंडवत करिकरि
राम सैल बन देषन जाहीं * जहँ सुष सकल सकलदुष नाहीं
झरना झरहिं सुधा सम बारी * त्रिबिधि तापहरत्रिबिधि बयारी
बिटप बेलितृन अगिनितजाती * फल प्रसून पल्लव बहु भाँती
सुंदर सिला सुषद तरु छाहीं * जाइ बरनि बन छबि केहिपाहीं

दो० सरनि सरोरुह जल बिहग, कूँजत गुंजत भृंग।
बैर बिगत बिहरत बिपिन, मृग बिहंग बहुरंग २४३॥

कोल किरात भिल्ल बनबासी * मधु सुचि सुंदर स्वाद सुधासी
भरि भरि परनकुटी रचिरूरी * कंद मूल फल अंकुर जूरी
सबहि देहि करि बिनय प्रनामा * कहि कहि स्वाद भेद गुननामा
देहिं लोग बहु मोल न लेहीं * फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेह मगन मृदुबानी * मानत साधु प्रेम पहिचानी
तुम्ह सुकृती हम नीच निषादा * पावा दरसन राम प्रसादा
हमहिं अगमअतिदरसुतुम्हारा * जस मरुधरनि देवधुनि धारा
राम कृपाल निषाद नेवाजा * परिजनप्रजउ चहिअ जसराजा

दो० यहजिअजानिसकोचतजि, करिअछोहु लषिनेहु।

हमहिं कृतारथ करन लागि, फलतृन अंकुर लेहु ॥ २४४ ॥

तुम्ह प्रिय पाहुन बन पगु धारे * सेवा जोगु न भाग हमारे
देब काह हम तुम्हहिं गोसाँई * ईंधन पात किरात मिताई
यह हमारि अतिबडि सेवकाई * लेहिं न बासन बसन चोराई
हम जड जीव जीवगनघाती * कुटिल कुचाली कुमति कुजाती
पाप करत निसिवासर जाहीं * नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं
सपनेहु धरम बुद्धि कस काऊ * यह रघुनंदन दरस प्रभाऊ
जबते प्रभु पद पदुम निहारे * मिटे दुसह दुष दोष हमारे
बचन सुनत पुरजन अनुरागे * तिन्हके भाग सराहन लागे

छन्द

लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं।
बोलनि मिलनि सिय रामचरन सनेहु लषि सुष पावहीं॥
नरनारि निदरहिं नेह निज सुनि कोलभिल्लन की गिरा।
तुलसी कृपा रघुबंसमनिकी लोह लै लौका तिरा ॥ ८ ॥

सो० बिहरहिं बन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब।
जल ज्यों दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥ ८ ॥

पुर नरनारि मगन अति प्रीती * बासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सासु प्रति बेष बनाई * सादर करइ सरिस सेवकाई
लषा न मरमु राम बिनु काहूँ * माया सब सिय माया माहूँ
सीय सासु सेवा बस कीन्ही * तिन्ह लहि सुष सिष आसिष दीन्ही
लषि सिय सहित सरल दोउ भाई * कुटिल रानि पछितानि अघाई
अब निजमहिं जाँचति कैकेयी * महि न बीचु बिधि मीचु न देयी
लोकहुँ बेद बिदित कबि कहहीं * रामबिमुष थल नरक न लहहीं

यह संसउ सबके मनमाहीं * रामगवन बिधि अवध कि नाहीं

दो० निसि न नीद नहि भूष दिन, भरत बिकल सुठि सोच।
नीचकीच बिच मगन जस, मीनहिं सलिलसकोच २४५

कीन्हि मातु मिसिकाल कुचाली * ईति भीति जस पाकत साली
केहिबिधि होइ राम अभिषेकू * मोहि अब कलत उपाउ न एकू
अवसि फिरहिं गुरुआयसु मानी * मुनि पुनि कहब रामरुचि जानी
मातु कहेहु बहुरहिं रघुराऊ * रामजननि हठ करबि कि काऊ
मोहि अनुचरु कर केतिक बाता * तेहि महँ कुसमउ बाम बिधाता
जो हठ करउँ तौ निपट कुकरमू * हरगिरितें गुरु सेवक धरमू
एकउ जुगुति न मन ठहरानी * सोचत भरतहि रैनि बिहानी
प्रात नहाइ प्रभुहि सिरुनाई * बैठत पठये रिषय बोलाई

दो० गुरुपद कमल प्रनामकरि, बैठे आयसु पाइ।
बिप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ॥ २४६॥

बोले मुनिबर समय समाना * सुनहुँ सभासद भरत सुजाना
धरमधुरीन भानुकुल भानू * राजा राम स्वबस भगवानू
सत्यसंध पालक श्रुतिसेतू * राम जनम जग मंगल हेतू
गुरु पितु मातु बचन अनुसारी * षलदल दलन देवहितकारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथु * कोउ न राम सम जान जथारथु
बिधिहरिहरससिरबिदिसिपाला * माया जीव करम कलिकाला
अहिप महिप जहँलगि प्रभुताई * जोगसिद्धि निगमागम गाई
करि बिचार जिअ देखहु नीके * राम रजाइ सीस सबहीके

दो० राषे राम रजाइ रुष, हम सबकर हित होइ।
समुझि सयाने करहु अब, सब मिलिसंमतसोइ २४७॥

सब कहँ सुषद राम अभिषेकू * मंगल मोदमूल मग एकू
केहिबिधि अवध चलहिं रघुराऊ * कहहु समुझि सोइ करिअ उपाऊ
सब सादर सुनि मुनिबर बानी * नय परमारथ स्वारथ सानी
उतर न आव लोग भये भोरे * तब सिरुनाय भरत कर जोरे
भानुबंस भये भूप घनेरे * अधिक येकते येक बडेरे
जन्म हेतु सब कहँ पितु माता * करम सुभासुभ देइ बिधाता
दलि दुष स्रजइ सकल कल्याना * असि असीस राउरि जग जाना
सोइ गोसाइँ बिधिगति जेहिं छेकी * सकइ को टारि टेक जो टेकी

दो॰ बूझिय मोहि उपाउ अब, सो सब मोर अभागु।
सुनि सनेहमय बचन गुरु, उर उमगा अनुरागु॥२४८॥

तात बात फुर राम कृपाहीं * राम बिमुष सिधि सपनेहु नाहीं
सकुचउँ तात कहत येक बाता * अरध तजहिं बुध सरबस जाता
तुम्ह कानन गवनहुँ दोउ भाई * फेरिअहि लषन सीय रघुराई
सुनि सुबचन हरषे दोउ भ्राता * भे प्रमोद परिपूरन गाता
मन प्रसन्न तन तेज बिराजा * जनु जिये राउ राम भये राजा
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी * समदुख सुष सब रोवहिं रानी
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हे * फल जग जीवन्ह अभिमत दीन्हे
कानन करउँ जनम भरि बासू * येहिते अधिक न मोर सुपासू

दो॰ अंतरजामी राम सिय, तुम्ह सरबज्ञ सुजानु।
जौं फुर कहहु तौ नाथ निज, कीजिअ बचन प्रमानु॥२४९॥

भरत बचन सुनि देषि सनेहू * सभासहित मुनि भये बिदेहू
भरत महामहिमा जलरासी * मुनिमति तीर ठाढि अबलासी
गा चह पार जतन हिय हेरा * पावत नाव न बोहित बेरा

और करहि को भरत बड़ाई * सर सीपी की सिन्धु समाई
भरत मुनिहिं मन भीतर भाये * सहित समाज रामपहिं आये
प्रभु प्रनाम करि दीन्ह सुआसनु * बैठे सब सुनि मुनिअनुसासनु
बोले मुनिबर बचन बिचारी * देश काल अवँसर अनुहारी
सुनहुँ राम सरबज्ञ सुजाना * धरम नीति गुन ज्ञाननिधाना
दो॰ सबके उर अंतर बसहु, जानहुँ भाव कुभाउ।
पुरजन जननी भरत हित, होइ सो कहिअ उपाउ २५०॥
आरत कहहिं बिचारि न काऊ * सूझ जुआरिहि आपन दाऊ
सुनि मुनि बचन कहत रघुराऊ * नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ
सबकर हित रुष राउरि राषे * आयसु किये मुदित फुर भाषे
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई * माथे मानि करउँ सिष सोई
पुनि जेहि कहँ जस कहब गोसाईं * सो सब भाँति घटिहि सेवकाईं
कह मुनि राम सत्य तुम्ह भाषा * भरत सनेह बिचार न राषा
तेहितें कहउँ बहोरि बहोरी * भरतभगति बस भइ मतिमोरी
मोरे जान भरत रुचि राषी * जो कीजिअ सो सुभ सिवसाषी
दो॰ भरत बिनयसादर सुनिअ, करिअ बिचार बहोरि।
करब साधुमत लोकमत, नृपनय निगम निचोरि २५१॥
गुरु अनुराग भरत पर देषी * राम हृदय आनंद बिसेषी
भरतहि धरमधुरंधर जानी * निज सेवक तन मानस बानी
बोले गुरु आयसु अनकूला * बचन मंजु मृदु मङ्गल मूला
नाथ सपथ पितु चरन दोहाई * भयेउ न भुअन भरतसम भाई
जे गुरु पद अंबुज अनुरागी * ते लोकहुँ बेदहुँ बडभागी
राउर जापर अस अनुरागू * को कहिसकइ भरतकर भागू

लषि लघु बंधु बुद्धि सकुचाई * करत बदनपर भरत बडाई
भरत कहहिं सोइ किये भलाई * अस कहि राम रहे अरगाई

दो॰ तब मुनि बोले भरत सन, सब सकोच तजि तात ॥
कृपासिंधु प्रिय बंधुसन, कहहु हृदयकै बात ॥ २५२ ॥

सुनि मुनि बचन राम रुष पाई * गुरु साहेब अनुकूल अघाई
लषि अपने सिर सब छरभारू * कहि न सकहिं कछु करहि बिचारू
पुलकि सरीर सभा भये ठाढे * नीरजनयन नेह जल बाढे
कहब मोर मुनि नाथ निबाहा * येहिते अधिक कहौं मैं काहा
मैं जानउँ निजनाथ सुभाऊ * अपराधिहु पर कोह न काऊ
मोपर कृपा सनेह बिसेषी * षेलत षुनिस न कबहूं देषी
सिसुपनतें परिहरेउ न संगू * कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू
मै प्रभु कृपारीति जिय जोही * हारेहुँ षेल जितावहिं मोही

दो॰ महूँ सनेह सकोच बस, सनमुष कहे न बैन ।
दरसनतृप्त न आजुलगि, प्रेम पिआसे नैन ॥ २५३ ॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा * नीचु बीचु जननी मिसु पारा
इहउ कहत मोहि आजु न सोभा * अपनी समुझि साधु सुचि को भा
मातु मंद मै साधु सुचाली * उर अस आनत कोटि कुचाली
फरइ कि कोदव बालि सुसाली * मुकता प्रसव कि संबुक ताली
सपनेहुँ दोष कलेस न काहू * मोर अभाग उदधि अवगाहू
बिनु समुझे निज अघपरिपाकू * जारिउ जाइ जननिकहि काकू
हृदय हेरि हारेउ सब ओरा * येकहिं भाँति भलेहिं भल मोरा
गुरु गोसाइँ साहिब सियरामू * लागत मोहि नीक परिनामू

दो॰ साधु सभा गुरु प्रभु निकट, कहउँ सुथल सतिभाउ ।

प्रेम प्रपंच कि झूठफुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥२५४॥
भूपति मरन प्रेम पन राषी * जननीकुमति जगत सब साषी
देषि न जाहि बिकल महँतारी * जरहिं दुसह जर पुरनरनारी
महीं सकल अनरथ कर मूला * सो सुनि समुझि सहेउँ सब सूला
सुनि बनगवन कीन्ह रघुनाथा * करि मुनिबेष लषनसिय साथा
बिन पानहिन्ह पयादेहिं पाये * संकर साषि रहेउ येहि घाये
बहुरि निहारि निषाद सनेहू * कुलिस कठिन उर भयउ न बेहू
अब सब आँषिन्ह देषेउँ आई * जिअत जीव जड सबइ सहाई
जिन्हहिंनिरषिमगसाँपिनिबीछी * तजहिं बिषम बिष तामस तीछी
दो॰ तेइ रघुनंदन लषन सिय, अनहित लागे जाहि।
तासु तनय तजि दुसह दुष, दैव सहावै काहि ॥ २५५ ॥
सुनि अति बिकल भरत बरबानी * आरति प्रीति बिनय नयसानी
सोक मगन सब सभा षभारू * मनहुँ कमलबन परेउ तुसारू
कहि अनेक बिधि कथा पुरानी * भरत प्रबोध कीन्ह मुनिज्ञानी
बोले उचित बचन रघुनंदू * दिनकर कुल कैरवबन चंदू
तात जाय जनि करहु गलानी * ईसअधीन जीवगति जानी
तीनिकाल तिभुअन मत मोरे * पुन्यसिलोक तात तर तोरे
उर आनत तुम्हपर कुटिलाई * जाइ लोक परलोक नसाई
दोस देइ जननिहिं जड तेई * जिन्ह गुरु साधुसभा नहिं सेई
दो॰ मिटिहइ पाप प्रपंच सब, अषिल अमंगल भार।
लोकसुजस परलोक सुष, सुमिरत नाम तुम्हार २५६॥
कहउँ सुभाव सत्य सिवसाषी * भरत भूमि रह राउरि राषी
तात कुतर्क करहु जनि जाये * बैर प्रेम नहिं दुरइ दुराये

मुनिगुनिनिकटबिहगमृगजाहीं * बाधक बधिक बिलोकि पराहीं
हित अनहित पशुपक्षिउ जाना * मानुष तन गुन ज्ञान निधाना
तात तुम्हहिं मैं जानउँ नीके * करहुँ काह असमंजस जीके
राषेउ राय सत्य मोहि त्यागी * तनु परिहरेउ प्रेमपन लागी
तासु बचन मेटत मन सोचू * तेहितें अधिक तुम्हार सकोचू
तापर गुरु मोहि आयसु दीन्हा * अवसि जो कहहु चहउँ सोइ कीन्हा

दो० मन प्रसन्न करि सकुच तजि, कहहु करउँ सोइ आजु।
सत्यसंध रघुबर बचन, सुनि भा सुषी समाजु २५७॥

सुरगन सहित सभय सुरराजू * सोचहिं चाहत होन अकाजू
करत उपाउ बनत कछु नाहीं * रामसरन सब गे मनमाहीं
बहुरि बिचारि परस्पर कहहीं * रघुपतिभगतभगतिबसअहहीं
सुधिकरि अंबरीष दुरबासा * भे सुर सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा * नरहरि प्रगट किये प्रहलादा
लगि लगि कान कहहिं धुनिमाथा * अब सुरकाज भरतके हाँथा
आन उपाउ न देषिय देवा * मानत राम सुसेवक सेवा
हिय सप्रेम सुमिरहु सब भरतहि * निजगुन सील राम बस करतहि

दो० सुनि सुरमत सुरगुरु कहेउ, भल तुम्हार बड भाग।
सकल सुमंगल मूल जग, भरत चरन अनुराग २५८॥

सीतापति सेवक सेवकाई * कामधेनु सत सरिस सोहाई
भरत भगति तुम्हरे मन आई * तजहु सोच बिधि बात बनाई
देषु देवपति भरत प्रभाऊ * सहज सुभाय बिबस रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं * भरतहि जानि राम परिछाहीं
सुनि सुरगुरु सुरसंमत सोचू * अंतरजामी प्रभुहि सकोचू

निजसिर भार भरत जिअ जाना * करत कोटि बिधि उर अनुमाना
करि बिचार मन दीन्ही ठीका * राम रजायसु आपन नीका
निज पन तजि राषेउ पन मोरा * छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा

दो० कीन्ह अनुग्रह अमित अति, सब बिधि सीतानाथ ।
करि प्रनाम बोले भरत, जोरि जलज जुग हाँथ २५९ ॥

कहँउ कहावँउँ का अब स्वामी * कृपा अंबुनिधि अंतरजामी
गुरु प्रसन्न साहिब अनकूला * मिटी मलिन मनकलपित सूला
अपडर डरेउँ न सोच समूले * रबिहिं न दोस देव दिसिभूले
मोर अभाग मातु कुटिलाई * बिधिगति बिषम काल कठिनाई
पाउँ रोपि सब मिलि मोहिं घाला * प्रनतपाल पन आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई * लोकहु बेद बिदित नहिं गोई
जग अनभल भल येक गोसाँई * कहिअ होइ भल कासु भलाई
देव देवतरु सरिस सुभाऊ * सनमुष बिमुष न काहुहि काऊ

दो० जाइ निकट पहिचानि तरु, छाँह समनि सब सोच ।
मागत अभिमत पाउ जग, राउ रंक भल पोच ॥२६०॥

लषि सब बिधि गुरु स्वामि सनेहू * मिटे छोभ नहिं मन संदेहू
अब करुनाकर कीजिअ सोई * जनहित प्रभुचित छोभ न होई
जो सेवक साहेबहि सकोची * निजहित चहइ तासु मति पोची
सेवक हित साहेब सेवकाई * करै सकल सुष लोभ बिहाई
स्वारथ नाथ फिरे सबही का * किये रजाइ कोटि बिधि नीका
यह स्वारथ परमारथ सारू * सकल सुकृत फल सुगति सिंगारू
देव येक बिनती सुनि मोरी * उचित होइ तस करब बहोरी
तिलक समाजु साजि सबु आना * करिअ सुफल प्रभु जौं मन माना

दो० सानुज पठइअ मोहि बन, कीजिअ सबहि सनाथ।
नतरु फेरिअहि बंधु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ॥२६१॥

नतरु जाहिं बन तीनिउँ भाई * बहुरिअ सीय सहित रघुराई
जेहिबिधि प्रभु प्रसन्न मन होई * करुनासागर कीजिअ सोई
देव दीन्ह सब मोहिअ भारू * मोरे नीति न धरम बिचारू
कहउँ बचन सब स्वारथ हेतू * रहत न आरत के चित चेतू
उतर देइ सुनि स्वामि रजाई * सो सेवक लषि लाज लजाई
अस मैं अवगुन उदधि अगाधू * स्वामि सनेह सराहत साधू
अब कृपाल मोहि सो मत भावा * सकुच स्वामि मन जाहि न पावा
प्रभुपद सपथ कहउ सतिभाऊ * जग मंगल हित येक उपाऊ

दो० प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देव।
सोसिर धरिधरि करिहिसब, मिटहिअनट अवरेव २६२॥

भरत बचन सुचि सुनि सुर हरषे * साधु सराहि सुमन बहु बरषे
असमंजस बस अवधनिबासी * प्रमुदित मन तापस बनबासी
चुपहि रहे रघुनाथ सकोची * प्रभुगति देषि सभा सब सोची
जनकदूत तेहि अँवसर आये * सुनि बसिष्ट मुनि बेगि बोलाये
करि प्रनाम तिन्ह राम निहारे * बेष देषि भये निपट दुषारे
दूतन्ह मुनिबर बूझी बाता * कहहु बिदेह भूप कुसलाता
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा * बोले चरवर जोरे हाथा
बूझब राउर सादर साँईं * कुसल हेतु सोइ भयेउ गोसाँईं

दो० नाहि तौ कोसलनाथ के, साथ कुसल गयेउ नाथ।
मिथिला अवध बिशेषि ते, जग सब भयेउ अनाथ २६३॥

कोसलपतिगति सुनि जनकौरा * भे सब लोग सोकबस बौरा

जेहि देषे तेहि समय बिदेहू * नाम सत्य अस लाग न केहू
रानिकुचालि सुनत नरपालहि * सूझ न कछु जस मनि बिनु ब्यालहि
भरत राज रघुबर बनबासू * भा मिथिलेसहि हृदय हरासू
नृप बूझेउ बुध सचिव समाजू * कहहु बिचारि उचित का आजू
समुझि अवध असमंजस दोऊ * चलिअ किरहिअ न कह कछु कोऊ
नृपहि धीर धरि हृदय बिचारी * पठये अवध चतुर चर चारी
बूझि भरत सतिभाउ कुभाऊ * आयेहु बेगि न होइ लषाऊ

दो० गये अवध चर भरतगति, बूझ देषि करतूति।
चले चित्रकूटहि भरत, चार चले तेरहूति॥२६४॥

दूतन्ह आइ भरतकइ करनी * जनकसमाज जथामति बरनी
सुनि गुरु परिजन सचिव महीपति * भे सब सोकसनेह बिकल अति
धरि धीरज करि भरत बडाई * लिये सुभट साहनी बोलाई
घर पुर देस राषि रषवारे * हय गय रथ बहु जान सवारे
दुघरी साधि चले ततकाला * किये बिश्राम न मगु महिपाला
भोरहिं आजु नहाइ प्रयागा * चले जमुन उतरन सब लागा
षबरि लेन हम पठये नाथा * असकहि तिन महि नायेउ माथा
साथ किरात छ सातक दीन्हे * मुनिबर तुरित बिदा चर कीन्हे

दो० सुनत जनक आगवन सब, हरषेउ अवध समाज।
रघुनंदनहिं सकोच बड, सोच बिबस सुरराज॥ २६५॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई * काह कहइ केहि दूषन देई
असमन आनि मुदित नरनारी * भयेउ बहोरि रहब दिनचारी
येहि प्रकार गतबासर सोऊ * प्रात नहान लाग सब कोऊ
करि मज्जन पूजहिं नर नारी * गनपति गौरि पुरारि तमारी

रमारमन पद बंदि बहोरी * बिनवहिं अंजलि अंचल जोरी
राजा राम जानकी रानी * आनदअवधि अवध रजधानी
सुबसबसउफिरिसहितसमाजा * भरतहि राम करहिं जुवराजा
यहि सुषसुधा सींचि सब काहू * देव देहु जग जीवन लाहू
दो० गुरु समाज भाइन्हसहित, राम राजु पुर होउ।
अछत राम राजा अवध, मरिअ मागसबकोउ २६६॥
सुनि सनेहमय पुरजन बानी * निंदहिं जोग बिरति मुनिज्ञानी
येहिबिधिनित्यकरमकरिपुरजन * रामहिं करहि प्रनाम पुलकितन
ऊँच नीच मध्यम नर नारी * लहहिं दरसु निजनिजअनुहारी
सावधान सबही सनमानहिं * सकल सराहत कृपानिधानहिं
लरिकाइहि ते रघुबर बानी * पालत नीति प्रीति पहिचानी
सील सकोच सिंधु रघुराऊ * सुमुष सुलोचन सरल सुभाऊ
कहत राम गुनगन अनुरागे * सब निजभाग सराहन लागे
हम सम पुन्यपुंज जग थोरे * जिन्हहिं राम जानत करि मोरे
दो० प्रेममगन तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेस।
सहित सभा संभ्रम उठे, रबिकुलकमलदिनेस २६७॥
भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा * आगे गवन कीन्ह रघुनाथा
गिरिबर दीष जनकपति जबहीं * करि प्रनाम रथ त्यागेउ तबहीं
राम दरस लालसा उछाहू * पथश्रम लेस कलेस न काहू
मन तहँ जहँ रघुबर बयदेही * बिनु मन तन दुष सुष सुधिकेही
आवत जनक चले येहि भाँती * सहित समाज प्रेम मतिमाती
आये निकट देषि अनुरागे * सादर मिलन परसपर लागे
लगे जनक मुनिजनपदबंदन * ऋषिन्ह प्रनाम कीन्ह रघुनंदन

भाइन्ह सहित राम मिलि राजहि * चले लेवाय समेत समाजहि

दो० आश्रम सागर सांतरस, पूरन पावन पाथ।
सेन मनहुँ करुनासरित, लिये जात रघुनाथ॥२६८॥

बोरत ज्ञान बिराग करारे * बचन ससोक मिलत नदनारे
सोच उसास समीर तरंगा * धीरज तट तरुवर कर भंगा
बिषम बिषाद तोरावति धारा * भय भ्रम भँवर अवर्त्त अपारा
केवट बुध बिद्या बडि नावा * सकहिं न षेइ एक नहिं आवा
बनचर कोल किरात बिचारे * थके बिलोकि पथिक हियहारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई * मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई
सोक बिकल दोउ राज समाजा * रहा न ज्ञान न धीरजु लाजा
भूप रूप गुन सील सराही * रोवहिं सोक सिंधु अवगाही

छंद

अवगाहि सोकसमुद्र सोचहिं नारि नर ब्याकुल महा।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं बामबिधि कीन्हो कहा॥
सुर सिद्ध तापस जोगिजन मुनि देषि दसा विदेह की।
तुलसी न समरथु कोऊ जो तरिसकै सरित सनेह की॥६॥

सो० किये अमित उपदेस, जहँ तहँ लोगन्ह मुनिबरन्ह।
धीरजु धरिअ नरेस, कहेउ बसिष्ट बिदेह सन्ह॥६॥

जासु ज्ञान रबिभव निसि नासा * बचनकिरिनमुनिकमलबिकासा
तेहि कि मोह ममता निअराई * यह सियराम सनेह बडाई
विषई साधक सिद्ध सयाने * तृबिधि जीव जग बेद बषाने
राम सनेह सरस मन जासू * साधु सभा बड आदर तासू
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञानू * करनधार बिनु जिमि जलजानू

मुनि बहु बिधि बिदेह समुझाये * रामघाट सब लोग नहाये
सकल सोक संकुल नर नारी * सो बासर बीतेउ बिनु बारी
पसु षग मृगन्ह न कीन्ह अहारू * प्रिय परिजन कर कवन बिचारू

दो० दोउ समाज निमिराजु रघु, राजु नहाने प्रात।
बैठे सब बट बिटप तर, मन मलीन कृस गात २६९॥

जे महिसुर दसरथ पुरबासी * जे मिथिलापति नगर निवासी
हंसबंस गुरु जनकु पुरोधा * जिन्ह जगु मगु परमारथ सोधा
लगे कहन उपदेस अनेका * सहित धरम नय बिरति बिबेका
कौसिक कहि कहि कथा पुरानी * समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौसिकहि कहेऊ * नाथ कालि सब बिनु जल रहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई * गयेउ बीति दिन पहर अढाई
रिषिरुष लषि कह तिरहुतिराजू * इहाँ उचित नहिं असन अनाजू
कहा भूप भल सबहि सोहाना * पाइ रजायसु चले नहाना

दो० तेहि अवँसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार।
लै आये बनचर बिपुल, भरि भरि काँवरि भार २७०॥

कामद भे गिरि रामप्रसादा * अवलोकत अपहरत बिषादा
सर सरिता बन भूमि बिभागा * जनु उमँगत आनद अनुरागा
बेलि बिटप सब सफल सफूला * बोलत षग मृग अलि अनुकूला
तेहि अवसर बन अधिक उछाहू * त्रिबिधि समीर सुषद सब काहू
जाइ न बरनि मनोहरताई * जनु महि करत जनक पहुनाई
तब सब लोग नहाइ नहाई * राम जनक मुनि आयसु पाई
देषि देषि तरुवर अनुरागे * जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे
दल फल फूल कंद बिधि नाना * पावन सुंदर सुधा समाना

दो॰ सादर सब कहँ रामगुरु, पठये भरि भरि भार।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार २७१॥
येहिबिधि बासर बीते चारी * रामु निरषि नर नारि सुषारी
दुहु समाज अस रुचि मनमाहीं * बिनु सियराम फिरब भल नाहीं
सीताराम संग बनबासू * कोटि अमरपुर सरिस सुपासू
परिहरि लषन राम बैदेही * जेहि घरु भाव बामाबिधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबही * रामसमीप बसिअ बन तबही
मंदाकिनि मज्जनु तिहुँकाला * रामदरस मुदमंगल माला
अटन रामगिरि बन तापसथल * असन अमीसम कंद मूल फल
सुष समेत संबत दुइसाता * पलसम होहिं न जनिअहि जाता
दो॰ येहि सुषजोगु न लोग सब, कहहिं कहाँ असभागु।
सहज सुभाय समाज दुहुँ, रामचरन अनुरागु २७२॥
येहिबिधि सकल मनोरथ करहीं * बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं
सीय मातु तेहि समय पठाईं * दासी देषि सुअँवसरु आईं
सावकास सुनि सब सियसासू * आयेउ जनक राज रनिवासू
कौसल्या सादर सनमानी * आसन दिये समय सम आनी
सील सनेह सकल दुहुँ ओरा * द्रवहिं देषि सुनि कुलिस कठोरा
पुलक सिथिल तन बारि बिलोचन * महि नष लिषन लगीं सब सोचन
सब सियराम प्रीति किसि मूरति * जनु करुना बहुबेष बिसूरति
सीयमातु कह बिधिबुधि बाँकी * जो पय फेनु फोर पबि टाँकी
दो॰ सुनिअ सुधा देषिअहि गरल, सब करतूति कराल।
जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सकृत मराल २७३॥
सुनि ससोच कह देबि सुमित्रा * बिधिगति बडि बिपरीत बिचित्रा

जो सृजि पालइ हरइ बहोरी * बालकेलिसम बिधिमति भोरी
कौसल्या कह दोषु न काहू * करमबिबस दुष सुष छति लाहू
कठिन करमगति जान बिधाता * जो सुभ असुभ सकलफलदाता
ईस रजाइ सीस सबही के * उतपातिथिति लयबिषहु अमीके
देवि मोहबस सोचिअ बादी * बिधि प्रपंचु अस अचल अनादी
भूपति जिअब मरब उर आनी * सोचिअ साषि लषि निजहितहानी
सीयमातु कह सत्य सुबानी * सुकृती अवधि अवधपतिरानी

दो० लषन राम सिय जाहिं बन, भल परिनाम न पोचु।
गहबर हिअ कह कौसिला, मोहि भरतकर सोचु २७४॥

ईस प्रसाद असीस तुम्हारी * सुत सुतबधू बिबुधसरि बारी
राम सपथ मै कीन्हि न काऊ * सो करि कहौं सषी सतिभाऊ
भरतसील गुन बिनय बडाई * भायप भगति भरोस भलाई
कहत सारदहु कर मति हीचे * सागर सीपि कि जाहिं उलीचे
जानउँ सदाँ भरत कुलदीपा * बार बार मोहि कहेउ महीपा
कसे कनकु मनिपारिष पाये * पुरुषु परिषिअहि समय सुभाये
अनुचित आजु कहब अस मोरा * सोक सनेह सयानप थोरा
सुनि सुरसरि सम पावनि बानी * भईं सनेह बिकल सब रानी

दो० कौसल्या कह धीर धरि, सुनहुँ देवि मिथिलेसि।
को बिबेकनिधि बल्लभहि, तुम्हहिं सकै उपदेसि २७५॥

रानि रायसन अवसर पाई * आपनि भाँति कहब समुझाई
रषिअहि लषन भरत गवनहिं बन * जौं यह मत मानहिं महीपमन
तौ भलि जतन करब सुबिचारी * मोरे सोचु भरतकर भारी
गूढ सनेहु भरत मनमाहीं * रहें नीक मोहि लागत नाहीं

लषि सुभाव सुनि सरल सुबानी * सब भइँ मगन करुनरस रानी
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि * सिथिल सनेह सिद्ध जोगी मुनि
सबु रनिवास बिथकि लषि रहेऊ * तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ
देबि दंड जुग जामिनि बीती * राममातु सुनि उठी सप्रीती

दो० बेगि पाउ धारिअ थलहि, कह सनेह सतिभाय।
हमरे तौ अब ईस गति, कै मिथिलेस सहाय २७६॥

लषि सनेह सुनि बचन बिनीता * जनक प्रिया गहे पाय पुनीता
देबि उचित असि बिनय तुम्हारी * दसरथ घरनि राम महतारी
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं * अगिनि धूम गिरि सिर तृन धरहीं
सेवकु राउ करम मन बानी * सदाँ सहाय महेसु भवानी
रौरे अंग जोग जग को है * दीप सहाय कि दिनकर सोहै
राम जाइ बन करि सुरकाजू * अचल अवधपुर करिहहिं राजू
अमर नाग नर राम बाहुँ बल * सुष बसिहहिं अपने अपने थल
यह सब जागबलिक कहि राषा * देबि न होय मुधा मुनिभाषा

दो० अस कहि पग परि प्रेम अति, सिय हित बिनय सुनाय।
सिय समेत सिय मातु तब, चली सुआयसु पाय २७७॥

प्रिय परिजनहिं मिली बैदेही * जो जेहि जोग भाँति तेहि तेही
तापस बेष जानकी देषी * भे सब बिकल बिषाद बिसेषी
जनक राम गुरु आयसु पाई * चले थलहि सिय देषी आई
लीन्हि लाइ उर जनक जानकी * पाहुनि पावन प्रेम प्रान की
उर उमगेउ अंबुधि अनुरागू * भयेउ भूप मनु मनहुँ प्रयागू
सिअ सनेह बटु बाढत जोहा * तापर राम प्रेमु सिसु सोहा
चिरजीवी मुनि ज्ञानु बिकल जनु * बूडत लहेउ बाल अवलंबनु

मोहमगन मति नहिं बिदेहँकी * महिमा सिय रघुबर सनेहकी
दो० सिय पितुमातुसनेहबस, बिकल न सकी सँभारि।
धरनिसुता धीरजु धरेउ, समउ सुधरमु बिचारि २७८॥
तापस बेष जनक सिय देषी * भएउ प्रेम परितोष बिसेषी
पुत्रि पबित्र किए कुल दोऊ * सुजस धवल जगु कह सब कोऊ
जिति सुरसरि कीरति सरि तोरी * गवनु कीन्ह बिधि अंड करोरी
गंग अवनि थल तीनि बडेरे * येहि किए साधु समाज घनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुबानी * सीय सकुच मह मनहु समानी
पुनि पितु मातु लीन्हि उरलाई * सिष आसिषहित दीन्हिसोहाई
कहति न सीय सकुच मनमाहीं * इहाँ बसब रजनी भल नाहीं
लषि रुष रानि जनायेउ राऊ * हृदय सराहत सील सुभाऊ
दो० बार बार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्हि सनमानि।
कही समय सिर भरतगति, रानिसुबानिसयानि २७९॥
सुनि भूपाल भरत ब्योहारू * सोन सुगंध सुधा ससि सारू
मूदे सजल नयन पुलके तन * सुजसु सराहन लगे मुदितमन
सावधानसुनु सुमुषि सुलोचनि * भरतकथा भवबंध बिमोचनि
धरम राजनय ब्रह्म बिचारू * इहाँ जथामति मोर प्रचारू
सो मति मोरि भरत महिमाहीं * कहइ काह छलि छुअत न छाहीं
बिधिगनपतिअहिपतिसिवसारद * कबि कोबिद बुध बुद्धिबिसारद
भरत चरित कीरति करतूती * धरमसील गुन बिमलबिभूती
समुझत सुनत सुषद सबकाहू * सुचिसुरसरिरुचिनिदरिसुधाहू
दो० निरवधिगुननिरुपमपुरुष, भरत भरतसम जानि।
कहिअसुमेरुकिसेरसम, कबिकुलमतिसकुचानि २८०॥

अगम सबहि बरनत बरबरनी * जिमि जलहीन मीन गमु धरनी
भरत अमितमहिमा सुनु रानी * जानहिं राम न सकहिं बषानी
बरनि सप्रेम भरत अनुभाऊ * तिअजिअकीरुचिलषिकहराऊ
बहुरहिं लषनु भरत बन जाहीं * सबकर भल सबके मनमाहीं
देबि परंतु भरत रघुबरकी * प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत अवधि सनेह ममताकी * जद्यपि रामु सींव समता की
परमारथ स्वारथ सुष सारे * भरत न सपनेहु मनहुँ निहारे
साधन सिद्धि रामपद नेहू * मोहिं लषि परत भरत मत येहू

दो० भोरेहु भरत न पेलिअहि, मनसहुँ राम रजाइ।
करिअ न सोच सनेहबस, कहेउ भूप बिलषाइ २८१॥

राम भरत गुनगनत सप्रीती * निसि दंपतिहि पलकसम बीती
राजसमाज प्रात जुग जागे * न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे
गे नहाइ गुरुपहिं रघुराई * बंदि चरन बोले रुष पाई
नाथ भरत पुरजन महतारी * सोक बिकल बनबास दुषारी
सहित समाज राउ मिथिलेसू * बहुत दिवस भये सहत कलेसू
उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा * हित सबही कर रौरे हाथा
अस कहि अति सकुचे रघुराऊ * मुनि पुलके लषि सील सुभाऊ
तुम्ह बिनु राम सकलसुषसाजा * नरक सरिस दुहुँ राज समाजा

दो० प्रान प्रानके जीवके, जिव सुष के सुष राम।
तुम्हतजितातसोहातगृह, जिन्हहिंतिन्हहिंबिधिबाम २२८

सो सुष धरमु करमु जरिजाऊ * जहँ न रामपद पंकज भाऊ
जोगु कुजोगु ज्ञानु अज्ञानू * जहँ नहिं राम प्रेमु परधानू
तुम्ह बिनु दुषी सुषी तुम्हतेही * तुम्ह जानहु जिअ जो जेहिकेही

राउरि आयसु सिर सबही के * बिदित कृपालहि गति सब नीके
आपु आश्रमहिं धारिअ पाऊ * भयेउ सनेह सिथिल मुनिराऊ
करि प्रनाम तब राम सिधाये * ऋषि धरि धीर जनकपहिं आये
राम बचन गुरु नृपहि सुनाये * सील सनेह सुभाय सोहाये
महाराज अब कीजिअ सोई * सबकर धरमसहित हित होई
दो० ज्ञाननिधान सुजान सुचि, धरम धीर नरपाल।
तुम्हबिनअसमंजससमन, कोसमरथयेहिकाल २८३॥
सुनि मुनिबचनजनक अनुरागे * लषि गति ज्ञानु बिरागु बिरागे
सिथिल सनेह गुनत मन माहीं * आये इहाँ कीन्ह भल नाहीं
रामहिं राय कहेउ बन जाना * कीन्ह आपु प्रिय प्रेमु प्रमाना
हम अब बनते बनहिं पठाई * प्रमुदित फिरब बिबेक बड़ाई
तापस मुनि महिसुर सुनि देषी * भये प्रेमबस बिकल बिसेषी
समउ समुझि धरि धीरजु राजा * चले भरतपहिं सहित समाजा
भरत आइ आगे भइ लीन्हे * अवसर सरिस सुआसन दीन्हे
तात भरत कह तिरहुति राऊ * तुम्हहिं बिदित रघुबीर सुभाऊ
दो० राम सत्यब्रत धरमरत, सबकर सील सनेहु।
संकट सहत सकोचबस, कहिअ जो आयसु देहु २८४॥
सुनि तनपुलकिनयनभरि बारी * बोले भरतु धीर धरि भारी
प्रभु प्रिअ पूज्य पिता सम आपू * कुलगुरुसम हित माय न बापू
कौसिकादि मुनि सचिव समाजू * ज्ञान अंबुनिधि आपुनु आजू
सिसु सेवक आयसु अनुगामी * जानि मोहि सिष देइअ स्वामी
येहि समाज थल बूझब राउर * मौन मलिन मयँ बोलब बाउर
छोटे बदन कहौं बडि बाता * छमब तात लषि बाम बिधाता

आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * सेवा धरम कठिन जग जाना
स्वामिधरम स्वारथहि बिरोधू * बैरु अंध प्रेमहिं न प्रबोधू

दो० राषि रामरुष धरम ब्रत, पराधीन मोहि जानि।
सबके सम्मत सरबहित, करिअ प्रेमु पहिचानि २८५॥

भरत बचन सुनि देषि सुभाऊ * सहित समाज सराहत राऊ
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरे * अरथ अमित अति आषर थोरे
जौं मष मुकुर मुकुरु निजपानी * गहि न जाइ असि अदभुतबानी
भूप भरत मुनि साधु समाजू * गे जहँ बिबुध कुमुद द्विजराजू
सुनिसुधिसोचबिबससबलोगा * मनहुँ मीनगन नव जलजोगा
देव प्रथम कुलगुरु गति देषी * निरषि बिदेहँ सनेह बिसेषी
राम भगति मै भरत निहारे * सुर स्वारथी हहरि हिय हारे
सब कोउ राम प्रेममय पेषा * भये अलेष सोचबस लेषा

दो० रामु सनेह सकोचबस, कह ससोच सुरराजु।
रचहु प्रपंचहि पंच मिलि, नाहिंतौभयेउ अकाजु २८६॥

सुरन्ह सुमिरि सारदा सराही * देबि देव सरनागत पाही
फेरि भरतमति करि निज माया * पालु बिबुधकुल करिछल छाया
बिबुध बिनय सुनि देबि सयानी * बोली सुर स्वारथ जड जानी
मोसन कहहु भरत मति फेरू * लोचन सहस न सूझ सुमेरू
बिधि हरि हर माया बडि भारी * सोउ न भरतमति सकइ निहारी
सो मति मोहि कहत करु भोरी * चंदिनि कर कि चंडकर चोरी
भरत हृदय सिय राम निबासू * तहँ कि तिमिर जहँ तरनिप्रकासू
अस कहि सारद गइ बिधिलोका * बिबुधबिकलनिसिमानहुँ कोका

दो० सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाटु।

रचि प्रपंच माया प्रबल, भयभ्रमअरतिउचाटु २८७॥
करि कुचालि सोचत सुरराजू * भरत हाँथ सब काज अकाजू
गये जनक रघुनाथ समीपा * सनमाने सब रघुकुलदीपा
समय समाज धर्म अबिरोधा * बोले तब रघुबंस पुरोधा
जनक भरत संबादु सुनाई * भरत कहाउति कही सोहाई
तात राम जस आयसु देहू * सो सब करइ मोर मत येहू
सुनि रघुनाथ जोरि जुगपानी * बोले सत्य सरल मृदु बानी
बिद्यमान आपुन मिथिलेसू * मोर कहब सब भाँति भदेसू
राउरि राय रजायसु होई * राउरि सपथ सही सिर सोई
दो॰ रामसपथसुनिमुनिजनकु, सकुचेउ सभा समेत।
सकल बिलोकतभरतमुष, बनइ न ऊतरु देत २८८॥
सभा सकुचबस भरत निहारी * रामबंधु धरि धीरज भारी
कुसमउ देषि सनेह सँभारा * बढतबिंध्य जिमि घटज नेवारा
सोक कनकलोचन मति छोनी * हरी बिमल गुनगन जगजोनी
भरत बिबेक बराह बिसाला * अनायास उधरी तेहिकाला
करि प्रनामु सबकहँ कर जोरी * राम राउ गुरु साधु निहोरी
छमबआजुअतिअनुचितमोरा * कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा
हिये सुमिरि सारदा सुहाई * मानसतें मुष पंकज आई
बिमल बिबेक धरम नयसाली * भरत भारती मंजु मराली
दो॰ निरषिबिबेकबिलोचनहिं, सिथिल सनेह समाजु।
करि प्रनामु बोले भरतु, सुमिरि सीय रघुराजु २८९॥
प्रभु पितु मातु सुहृद गुरुस्वामी * पूज्य परमहित अन्तरजामी
सरल सुसाहिब सीलनिधानू * प्रनतपाल सरबज्ञ सुजानू

समरथु सरनागत हितकारी * गुनगाहँक अवगुन अघहारी
स्वामि गोसाइँहि सरिस गोसाईं * मोहि समान मै साँइँ दोहाई
प्रभु पितु बचन मोहबस पेली * आयेउँ इहाँ समाजु सकेली
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू * अमी अमरपद माहुर मीचू
राम रजाइ मेटि मन माहीं * देषा सुना कतहुँ कोउ नाहीं
सो मै सबु बिधि कीन्हि ढिठाई * प्रभु मानी सनेह सेवकाई

दो० कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर।
दूषन भे भूषन सरिस, सुजस चारु चहुँ ओर २९० ॥

राउरि रीति सुबानि बडाई * जगत बिदित निगमागम गाई
कूर कुटिल षल कुमति कलंकी * नीच निशील निरीस निसंकी
तेउ सुनि सरन सामुहे आये * सकृत प्रनाम किये अपनाये
देषि दोष कबहुँ न उर आने * सुनि गुन साधु समाज बषाने
को साहिब सेवकहि निवाजी * आपु समाज साज सब साजी
निज करतूतिन समुझि असपने * सेवक सकुच सोच उर अपने
सो गोसाइँ नहिं दूसर कोपी * भुजा उठाइ कहौं पन रोपी
पसु नाचत सुक पाठ प्रबीना * गुनगति नट पाठक आधीना

दो० यों सुधारि सनमानि जन, किये साधु सिरमोर।
को कृपाल बिनु पालिहै, बिरदावलि बरजोर २९१ ॥

सोक सनेह कि बाल सुभायें * आयेउँ लाइ रजायसु बायें
तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा * सबइ भाँति भल मानेउ मोरा
देषेउँ पायँ सुमंगल मूला * जानेउँ स्वामि सहज अनकूला
बडे समाज बिलोकेउँ भागू * बडी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अंग अघाई * कीन्हि कृपानिधि सब अधिकाई

राषा मोर दुलार गोसाँई * अपने सील सुभाय भलाई
नाथ निपट मैं कीन्हि ढिठाई * स्वामि समाज सकोच बिहाई
अबिनय बिनय जथारुचि बानी * छमिय देव अति आरत जानी

दो० सुहृद सुजान सुसाहिबहि, बहुत कहत बड़ि षोरि।
आयसु देइअ देव अब, सबइ सुधारी मोरि २६२॥

प्रभु पद पदुम पराग दोहाई * सत्य सुकृत सुष सीवँ सुहाई
सो करि कहौं हीय अपने की * रुचि जागत सोवत सपनेकी
सहज सनेह स्वामि सेवकाई * स्वारथ छल फल चारि बिहाई
अज्ञा सम न सुसाहेब सेवा * सो प्रसादु जन पावइ देवा
अस कहि प्रेम बिकल भये भारी * पुलक सरीर बिलोचन बारी
प्रभु पद कमल गहे अकुलाई * समउ सनेह न सो कहि जाई
कृपासिंधु सनमानि सुबानी * बैठाये समीप गहि पानी
भरतबिनय सुनि देषि सुभाऊ * सिथिल सनेह सभा रघुराऊ

छन्द

रघुराउ सिथिल सनेह साधुसमाजमुनि मिथिलाधनी।
मनमहँ सराहत भरत भायप भगतिकी महिमा घनी॥
भरतहि प्रसंसत बिबुध बरषत सुमन मानस मलिन से।
तुलसीबिकलसबलोगसुनिसकुचेनिसागमनलिनसे १०

सो० देषि दुषारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब।
मघवा महामलीन, मुये मारि मंगल चहत १०॥

कपट कुचालि सींव सुरराजू * पर अकाज प्रिय आपन काजू
काक समान पाकरिपु रीती * छली मलीन कतहुँ न प्रतीती
प्रथम कुमत करि कपट सकेला * सो उचाट सबके मन मेला
सुर माया बस लोग बिमोहे * राम प्रेम अतिसै न बिछोहे

भय उचाट बस मन थिर नाहीं * छनबनरुचिछन सदन सोहाहीं
दुबिधि मनोगति प्रजा दुषारी * सरित सिंधुसंगम जिमिबारी
दुचित कतहुँ परितोष न लहहीं * येक येक सन मरम न कहहीं
लषि हियहँसि कह कृपानिधानू * सरिस स्वान मघवान जुबानू

दो० भरत जनक मुनिगन सचिव, साधु सचेत बिहाइ।
लागि देवमाया सबहि, जथाजोग जन पाइ २९३॥

कृपासिंधु लषि लोग दुषारे * निज सनेह सुरपति छल भारे
सभा राउ गुरु महिसुर मंत्री * भरत भगति सबकै मतिजंत्री
रामहिं चितवत चित्र लिषे से * सकुचत बोलत बचन सिषे से
भरत प्रीति नति बिनय बडाई * सुनत सुषद बरनत कठिनाई
जासु बिलोकि भगति लवलेसू * प्रेममगन मुनिगन मिथिलेसू
महिमा तासु कहै किमि तुलती * भगतिसुभायसुमतिहियहुलसी
आपु छोटि महिमा बडि जानी * कबिकुल कानि मानि सकुचानी
कहिनसकतिगुनरुचिअधिकाई * मति गति बालबचन की नाई

दो० भरतबिमलजसुबिमलबिधु, सुमति चकोरकुमारि।
उदित बिमल जनहृदयनभ, येकटकरही निहारि २९४

भरत सुभाव न सुगम निगमहूँ * लघुमति चापलता कबि छमहूँ
कहत सुनत सतिभाव भरतको * सीय रामपद होइ न रत को
सुमिरत भरतहि प्रेम राम को * जेहि नसुलभु तेहिसरिसबामको
देषि दयाल दसा सबही की * राम सुजान जानि जन जी की
धरमधुरीन धीर नयनागर * सत्य सनेह सील सुषसागर
देसुकाल लषि समउ समाजू * नीति प्रीतिपालक रघुराजू
बोले बचन बानि सरवस से * हित परिनाम सुनत ससिरससे

तात भरत तुम्ह धरमधुरीना * लोक बेद बिधि प्रेम प्रबीना

दो० करम बचन मानस बिमल, तुम्ह समान तुम्ह तात।
गुरुसमाज लघुबंधु गुन, कुसमय किमि कहि जात २९५॥

जानहुँ तात तरनिकुल रीती * सत्यसंध पितु कीरति प्रीती
समउ समाज लाज गुरुजनकी * उदासीन हित अनहित मनकी
तुम्हहिं बिदित सबही कर करमू * आपन मोर परम हित धरमू
मोहि सब भाँति भरोस तुम्हारा * तदपि कहौं अँवसर अनुसारा
तात तात बिनु बात हमारी * केवल कुलगुरु कृपा सँभारी
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू * हमहिं सहित सब होत षुआरू
जौ बिनु अँवसर अथव दिनेसू * जग केहि कहहु न होइ कलेसू
तस उतपात तात बिधि कीन्हा * मुनि मिथिलेस राषि सब लीन्हा

दो० राज काज सब लाज पति, धरम धरनि धन धाम।
गुरुप्रभाव पालिहि सबहि, भल होइहि परिनाम २९६॥

सहित समाज तुम्हार हमारा * घर बन गुरुप्रसाद रषवारा
मातु पिता गुरु स्वामि निदेसू * सकल धरम धरनीधर सेसू
सो तुम्ह करहु करावहु मोहू * तात तरनि कुल पालक होहू
साधन एक सकल सिधि देनी * कीरति सुगति भूतिमय बेनी
सो बिचारि सहि संकटु भारी * करहु प्रजा परिवार सुषारी
बाँटी बिपति सबहि मोहि भाई * तुम्हहिं अवधिभरि बडि कठिनाई
जानि तुम्हहिं मृदु कहउँ कठोरा * कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठायँ सुबंधु सहाये * ओडिअहि हाँथ असनिहुँके घाये

दो० सेवक कर पद नयन से, मुष से साहिब होइ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकबि सराहहिं सोइ २९७॥

सभा सकल सुनि रघुबर बानी * प्रेमपयोधि अमिअ जनु सानी
सिथिल समाज सनेह समाधी * देषिदसा चुप सारद साधी
भरतहि भयेउ परम संतोषू * सनमुष स्वामि बिमुष दुष दोषू
मुष प्रसन्न मन मिटा बिषादू * भा जनु गूँगेहि गिरा प्रसादू
कीन्ह सप्रेम प्रनाम बहोरी * बोले पानि पंकरुह जोरी
नाथ भयेउ सुष साथ गये को * लहेउँ लाहु जग जनम भयेको
अब कृपाल जस आयसु होई * करौं सीसधरि सादर सोई
सो अवलंब देव मोहि देई * अवधि पार पावउँ जेहि सेई

दो० देव देव अभिषेक हित, गुरु अनुसासन पाइ।
आनेउँ सब तीरथसलिलु, तेहि कहँ काह रजाइ २९८॥

एक मनोरथ बड मनमाहीं * सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभु आयसु पाई * बोले बानि सनेह सोहाई
चित्रकूट मुनिथल तीरथबन * षगमृगसरिसरनिर्भरगिरिगन
प्रभुपद अंकित अवनि बिसेषी * आयसु होइ तो आवउँ देषी
अवसि अत्रि आयसु शिरधरहू * तात बिगतभय कानन चरहू
मुनिप्रसादु बन मंगलदाता * पावन परम सोहावन भ्राता
रिषिनायकु जहँ आयसु देहीं * राषेहु तीरथजलु थल तेहीं
सुनि प्रभुबचन भरत सुषपावा * मुनिपदकमल मुदित सिरुनावा

दो० भरत राम संबाद सुनि, सकल सुमंगल मूल।
सुर स्वारथीसराहिकुल, बरषहिं सुरतरु फूल २९९॥

धन्य भरत जय राम गोसाईं * कहत देव हरषत बरिआईं
मुनि मिथिलेस सभा सब काहू * भरतबचन सुनि भयेउ उछाहू
भरत राम गुनग्राम सनेहू * पुलकि प्रसंसत राउ बिदेहू

सेवक स्वामि सुभाउ सोहावन * नेम प्रेम अति पावन पावन
मति अनुसार सराहन लागे * सचिव सभासद सब अनुरागे
सुनि सब रामभरत संबादू * दुहुँ समाज हिय हरषु बिषादू
राममातु दुष सुष सम जानी * कहि गुन दोष प्रबोधी रानी
येक कहहिं रघुबीर बडाई * येक सराहत भरत भलाई

दो० अत्रि कहेउ तब भरत सन, शैल समीप सुकूप।
राषिअ तीरथ तोय तहँ, पावन अमल अनूप ३०० ॥

भरत अत्रि अनुसासन पाई * जलभाजन सब दिये चलाई
सानुज आपु अत्रिमुनि साधू * सहित गये जहँ कूप अगाधू
पावन पाथ पुन्य थल राषा * प्रमुदितप्रेम अत्रि अस भाषा
तात अनादि सिद्ध थल येहू * लोपेउ काल बिदित नहिं केहू
तब सेवकन्ह सरस थल देषा * कीन्ह सुजलहित कूप बिसेषा
बिधिबस भयेउ बिस्वउपकारू * सुगमअगमअतिधरमबिचारू
भरत कूप अब कहिहहिं लोगा * अति पावन तीरथ जल जोगा
प्रेम सनेम निमज्जत प्रानी * होइहहिं बिमल करममनबानी

दो० कहत कूपमहिमा सकल, गये जहाँ रघुराउ।
अत्रि सुनायेउ रघुबरहि, तीरथ पुन्य प्रभाउ ३०१ ॥

कहत धरम इतिहाँस सप्रीती * भयेउ भोरु निसि सो सुष बीती
नित्य निबाहि भरत दोउ भाई * राम अत्रि गुरु आयसु पाई
सहित समाज साज सब सादे * चले राम बन अटन पयादे
कोमल चरन चलत बिनु पनहीं * भइ मृदुभूमि सकुचि मनमनहीं
कुस कंटक काँकरी कुराई * कटुक कठोर कुबस्तु दुराई
महि मंजुल मृदु मारग कीन्हे * बहत समीर त्रिबिधि सुषलीन्हे

सुमन बरषि सुर घन करि छाँहीं * बिटप फूलि फलि तृन मृदुताहीं
मृग बिलोकि षग बोलि सुबानी * सेवहिं सकल रामप्रिय जानी
दो० सुलभ सिद्ध सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात।
राम प्रानप्रिय भरत कहुँ, यह न होइ बडि बात ३०२॥
येहिबिधि भरतु फिरत बनमाहीं * नेम प्रेमु लषि मुनि सकुचाहीं
पुन्य जलासय भूमि बिभागा * षग मृग तृन तरुगिरि बन बागा
चारु बिचित्र पबित्र बिसेषी * बूझत भरत दिब्यसबु देषी
सुनि मन मुदित कहत ऋषिराऊ * हेतु नाम गुन पुन्य प्रभाऊ
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रनामा * कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई * सुमिरत सीय सहित दोउ भाई
देषि सुभाव सनेह सुसेवा * देहिं असीस मुदित बनदेवा
फिरहिं गये दिन पहर अढाई * प्रभुपदकमल बिलोकहिं आई
दो० देषे थल तीरथ सकल, भरत पाँच दिन माँझ।
कहत सुनत हरि हर सुजस, गयेउ दिवस भइ साँझ ३०३॥
भोर न्हाइ सबु जुरा समाजू * भरतु भूमिसुर तेरहुति राजू
भल दिनु आजु जानि मनमाहीं * रामु कृपाल कहत सकुचाहीं
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी * सकुचि राम फिरि अवनि बिलोकी
सील सराहि सभा सब सोची * कहुँ न राम सम स्वामि सकोची
भरत सुजान राम रुष देषी * उठि सप्रेम धरि धीर बिसेषी
करि दंडवत कहत करजोरी * राषी नाथ सकल रुचि मोरी
मोहिं लगि सबहिं सहेउ संतापू * बहुति भाँति दुषु पावा आपू
अब गोसाइँ मोहि देउ रजाई * सेवउँ अवध अवधि भरि जाई
दो० जेहि उपाय पुनि पाँय जन, देषइ दीनदयाल।

सो सिष देइअ अवधि लगि, कोसलपाल कृपाल ३०४॥
पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं * सब रुचि सरस सनेह सगाईं
राउर बदि भल भव दुष दाहू * प्रभु बिनु बादि परमपद लाहू
स्वामि सुजानु जानि सब हीकी * रुचि लालसा रहनि जन जीकी
प्रनतपाल पालिहि सब काहू * देव दुहूँदिसि ओर निबाहू
असमोहि सब बिधिभूरि भरोसो * किये बिचारु न सोचु षरोसो
आरतिमोरि नाथकर छोहू * दुहुँमिलि कीन्ह ढीठु हठिमोहू
यह बड दोष दूरि करि स्वामी * तजिसकोचसिषइअअनुगामी
भरतबिनय सुनि सबहिप्रसंसी * षीर नीर बिबरन गतिहंसी
दो॰ दीनबंधु सुनि बंधुके, बचन दीन छल हीन।
देसकाल अँवँसर सरिस, बोले राम प्रवीन ३०५॥
तात तुम्हारि मोरि परिजनकी * चिंता गुरुहि नृपहि घरबनकी
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेसू * हमहिं तुमहिं सपनेहुँ न कलेसू
मोर तुम्हार परम पुरषारथु * स्वारथु सुजसु धरम परमारथु
पितुआयसु पालिअ दुहु भाई * लोक बेद भल भूप भलाई
गुरुपितु मातु स्वामिसिष पालें * चलेहुँ कुमग पग परे न षालें
अस बिचारि सब सोच बिहाई * पालहु अवध अवधि लगिजाई
देस कोस पुरजन परिवारू * गुरुपद रजहि लागु छरभारू
तुम्हमुनि मातु सचिवसिषमानी * पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी
दो॰ मुषिया मुषसों चाहिये, षान पान कहुँ एक।
पालइ पोसइ सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ३०६॥
राजधरम सरबस येतनोई * जिमि मन माहँ मनोरथ गोई
बंधु प्रबोध कीन्ह बहुभाँती * बिन अधार मन तोषु न साँती

भरत सील गुरु सचिव समाजू * सकुच सनेह बिबस रघुराजू
प्रभुकरि कृपा पांवरी दीन्ही * सादर भरत सीस धरि लीन्ही
चरन पीठ करुनानिधान के * जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के
संपुट भरत सनेह रतन के * आषर जनु जुग जीव जतन के
कुल कपाटकर कुसल करमके * बिमल नयन सेवा सुधरमके
भरत मुदित अवलंब लहेते * अस सुष जस सियराम रहेते

दो० मागेउ बिदा प्रनाम करि, राम लिये उरलाइ ।
लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअँवसरु पाइ ३०७॥

सो कुचालि सब कहँ भइ नीकी * अवधिआस सब जीवन जीकी
नतरु लषन सियराम बियोगा * हहरि मरत सब लोग कुरोगा
राम कृपा अवरेव सुधारी * बिबुध धारि भइ गुनद गोहारी
भेंटत भुज भरि भाइ भरत सो * रामप्रेमरसु कहि न परत सो
तन मन बचन उमग अनुरागा * धीरधुरंधर धीरजु त्यागा
बारिज लोचन मोचत बारी * देषि दसा सुरसभा दुषारी
मुनिगन गुरु धुर धीर जनकसे * ज्ञान अनल मन कसे कनकसे
जे बिरंचि निरलेप उपाये * पदुमपत्र जिमि जग जल जाये

दो० तेउ बिलोकि रघुबर भरत, प्रीति अनूप अपार ।
भये मगन तन मन बचन, सहितबिराग बिचार३०८॥

जहाँ जनक गुरु गतिमति भोरी * प्राकृत प्रीति कहत बडि षोरी
बरनत रघुबर भरत बियोगू * सुनि कठोर कबि जानिहि लोगू
सो सकोचरसु अकथ सुबानी * समउ सनेह सुमिरि सकुचानी
भेंटि भरत रघुबर समुझाये * पुनि रिपुदवन हरषि उरलाये
सेवक सचिव भरत रुष पाई * निज निज काज लगे सब जाई

सुनि दारुन दुष दुहूँ समाजा ✻ लगे चलनके साजन साजा
प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई ✻ चले सीस धरि राम रजाई
मुनि तापस बनदेव निहोरी ✻ सब सनमानि बहोरि बहोरी

दो॰ लषनहि भेंटि प्रनामुकरि, सिरधरि सियपदधूरि।
चले सप्रेम असीस सुनि, सकल सुमंगल मूरि ३०९॥

सानुज राम नृपहि सिरनाई ✻ कीन्ह बहुत बिधि बिनय बडाई
देव दयाबस बड दुष पायेउ ✻ सहितसमाज काननहि आयेउ
पुर पगु धारिअ देइ असीसा ✻ कीन्ह धीर धरि गवन महीसा
मुनि महिदेव साधु सनमाने ✻ बिदा किये हरि हर सम जाने
सासु समीप गये दोउ भाई ✻ फिरे बंदि पग आसिष पाई
कौसिक बामदेव जाबाली ✻ परिजन पुरजन सचिव सुचाली
जथा जोग करि बिनय प्रनामा ✻ बिदा किये सब सानुज रामा
नारि पुरुष लघु मध्य बडेरे ✻ सब सनमानि कृपानिधि फेरे

दो॰ भरतमातु पद बंदि प्रभु, सुचिसनेहमिलि भेंटि।
बिदाकीन्ह सजि पालकी, सकुच सोच सबमेटि ३१०॥

परिजन मातु पितहि मिलि सीता ✻ फिरी प्रानप्रिय प्रेम पुनीता
करि प्रनाम भेंटी सब सासू ✻ प्रीति कहत कबि हिय न हुलासू
सुनि सिष अभिमत आसिष पाई ✻ रही सीय दुहुँ प्रीति समाई
रघुपति पटु पालकी मगाई ✻ करि प्रबोध सब मातु चढाई
बार बार हिलिमिलि दुहुँ भाई ✻ समसनेह जननी पहुँचाई
साजि बाजि गज बाहन नाना ✻ भूप भरतदल कीन्ह पयाना
हृदय राम सिय लषन समेता ✻ चले जाहिं सब लोग अचेता
बसह बाजि गज पसु हिय हारे ✻ चले जाहिं परबस मनमारे

दो० गुरु गुरुतिय पद बंदि प्रभु, सीता लषन समेत।
फिरे हरष बिसमय सहित, आये परन निकेत ३११॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू * चलेउ हृदय बड बिरह बिषादू
कोल किरात भिल्ल बनचारी * फेरे फिरे जोहारि जोहारी
प्रभु सिय लषन बैठि बटछाहीं * प्रिअपरिजन बियोगबिलषाहीं
भरत सनेहु सुभाउ सुबानी * प्रिआ अनुजसन कहत बषानी
प्रीति प्रतीति बचन मन करनी * श्रीमुष राम प्रेमबस बरनी
तेहि अँवसर षग मृग जलमीना * चित्रकूट चर अचर मलीना
बिबुध बिलोकि दसा रघुबर की * बरसि सुमन कहिगति घरघरकी
प्रभु प्रनामुकरि दीन्ह भरोसो * चले मुदितमन डर न षरोसो

दो० सानुज सीय समेत प्रभु, राजत परनकुटीर।
भगति ज्ञान बैराग जनु, सोहत धरें सरीर ३१२॥

मुनि महिसुर गुरु भरतभुआलू * राम बिरह सब साज बेहालू
प्रभु गुनग्राम गुनत मनमाहीं * सब चुपचाप चले मग जाहीं
जमुना उतरि पार सब भयेऊ * सो बासरु बिन भोजन गयेऊ
उतरि देवसरि दूसर बासू * राम सषा सब कीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाये * चौथे दिवस अवधपुर आये
जनक रहे पुर बासर चारी * राजकाज सब साज सँभारी
सौंपि सचिव गुरु भरतहिं राजू * तेरहुति चले साजि सब साजू
नगर नारिनर गुरु सिषमानी * बसे सुषेन राम रजधानी

दो० रामदरस लगि लोग सब, करत नेम उपबास।
तजितजिभूषनभोगसुष, जिअतअवधिकीआस३१३॥

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे * निजनिज काज पाइ सिषओधे

पुनि सिष दीन्ह बोलि लघुभाई * सौंपी सकल मातु सेवकाई
भूसुर बोलि भरत करजोरे * करि प्रनाम बर बिनय निहोरे
ऊँच नीच कारज भल पोचू * आयसु देव न करब सकोचू
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये * समाधानु करि सुबस बसाये
सानुज गे गुरु गेह बहोरी * करि दंडवत कहत कर जोरी
आयसु होइ तौ रहउँ सनेमा * बोले मुनि तन पुलकि सप्रेमा
समुझब कहब करब तुम्ह जोई * धरमसार जग होइहि सोई

दो॰ सुनिसिष पाइ असीसबड, गनक बोलि दिनसाधि।
सिंघासन प्रभु पादुका, बैठारे निरुपाधि ३१४॥

राम मातु गुरुपद सिरुनाई * प्रभुपद पीठ रजायसु पाई
नंदिगाउ करि परनकुटीरा * कीन्ह निवास धरमधुरधीरा
जटाजूट सिर मुनिपट धारी * महि षनि कुससाँथरी सँवारी
असन बसन बासन ब्रत नेमा * करत कठिन रिषिधरम सप्रेमा
भूषन बसन भोग सुष भूरी * मन तन बचन तजे तृनुतूरी
अवधराज सुरराज सिहाई * दसरथधनु सुनि धनद लजाई
तेहिपुर बसत भरत बिनु रागा * चंचरीक जिमि चंपक बागा
रमा बिलासु राम अनुरागी * तजतबमनजिमि जन बडभागी

दो॰ राम प्रेमभाजन भरत, बडे न येहि करतूति।
चातक हंस सराहियत, टेक बिबेक बिभूति ३१५॥

देहँ दिनहिं दिन दूबरि होई * घटत तेज बल मुष छबि सोई
नित नव राम प्रेमपनु पीना * बढत धरमदल मन न मलीना
जिमि जल निघटत सरदप्रकासे * बिलसत बेत सबनज बिकासे
सम दम संजम नेम उपासा * नषत भरतहिअ बिमलअकासा

ध्रुव बिस्वास अवधि राकासी * स्वामि सुरति सुर बीथि बिकासी
राम प्रेम बिधु अचल अदोषा * सहित समाज सोह नित चोषा
भरत रहनि समुझनि करतूती * भगतिबिरतिगुनबिमलबिभूती
बरनत सकल सुकबि सकुचाहीं * सेष गनेस गिरा गम नाहीं

दो॰ नित पूजत प्रभु पावरी, प्रीति न हृदय समाति ।
माँगि माँगि आयसु करत, राजकाज चहुँ भाँति ३१६॥

पुलकगात हिय सिय रघुबीरू * जीह नाम जप लोचन नीरू
लषन राम सिय कानन बसहीं * भरत भवनबसि तप तनुकसहीं
दोउदिसिसमुझिकहतसबलोगू * सब बिधि भरत सराहन जोगू
सुनि ब्रत नेम साधु सकुचाहीं * देषि दसा मुनिराज लजाहीं
परम पुनीत भरत आचरनू * मधुर मंजु मुद मंगल करनू
हरन कठिन कलिकलुष कलेसू * महामोह निसि दलन दिनेसू
पाप पुंज कुंजर मृगराजू * समन सकल संताप समाजू
जन रंजन भंजन भवभारू * राम सनेह सुधाकर सारू

छंद

सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनम न भरत को ।
मुनिमनअगमजमनियमसमदमबिषमब्रतआचरतको॥
दुषदाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिष अपहरत को ।
कलिकाल तुलसीसेसठहि हठिरामसनमुष करत को ११॥

सो॰ भरतचरित करि नेम, तुलसी जो सादर सुनहिं ।
सीय रामपद प्रेम, अवसि होइ भवरसबिरति ११॥

मा॰ पा॰ ॥ २१ ॥

किसी पुस्तक में इस कांड की इति नहीं मिली ॥
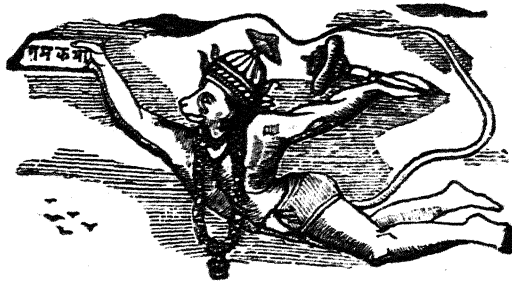
श्रीगणेशाय नमः

श्रीरामचरितमानस

तृतीय सोपान

आरण्यकांड

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानंददं
वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनं ध्वांतापहं तापहम् ।
मोहांभोधरपूगपाटनविधौ स्वःसंभवं शंकरं
वन्दे ब्रह्मकुलंकलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम् १ ॥
सांद्रानंदपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुंदरं
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारंवरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे २ ॥

सो० उमा राम गुन गूढ़, पंडित मुनि पावहिं बिरति ।
पावहिं मोह बिमूढ़, जे हरिबिमुष न धरमरति १ ॥

पुर नर भरत प्रीति मैं गाई * मति अनरूप अनूप सोहाई
अब प्रभुचरित सुनहु अतिपावन * करत जे बन सुर नर मुनिभावन
येक बार चुनि कुसुम सोहाये * निजकर भूषन राम बनाये

सीतहि पहिराये प्रभु सादर * बैठे फटिक सिला पर सुंदर
सुरपतिसुत धरि बायसबेषा * सठ चाहत रघुपतिबल देषा
जिमि पिपीलिका सागर थाहा * महामंदमति पावन चाहा
सीताचरन चोंच हति भागा * मूढ मंदमति कारन कागा
चला रुधिर रघुनायक जाना * सींक धनुष सायक संधाना

दो० अति कृपाल रघुनायक, सदाँ दीनपर नेह।
तासन आइ कीन्ह छल, मूरुष अवगुनगेह १॥

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा * चला भाजि बायस भय पावा
धरि निजरूप गयेउ पितु पाहीं * रामबिमुष राषा तेहिं नाहीं
भा निरास उपजी मन त्रासा * जथा चक्रभय रिषि दुर्बासा
ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका * फिरा स्रमितब्याकुल भयसोका
काहू बैठन कहा न वोही * राषि को सकै रामकर द्रोही
मातु मृत्यु पितु समन समाना * सुधाहोइ बिष सुनु हरिजाना
मित्र करै सत रिपुकै करनी * ताकहँ बिबुधनदी बयतरनी
सब जग ताहि अनलते ताता * जो रघुबीर बिमुष सुनु भ्राता
नारद देषा बिकल जयंता * लागि दया कोमलचित संता
पठवा तुरत राम पहिं ताही * कहेसि पुकारि प्रनतहित पाही
आतुर सभय गहेसि पद जाई * त्राहि त्राहि दयाल रघुराई
अतुलित बलअतुलितप्रभुताई * मैं मतिमंद जानि नहिं पाई
निजकृतकर्मजनित फल पायेउँ * अबप्रभुपाहि सरनतकि आयेउँ
सुनि कृपाल अतिआरत बानी * येकनयन करि तजा भवानी

सो० कीन्ह मोहबस द्रोह, जद्यपि तेहिकर बध उचित।
प्रभु छांडेउ करिछोह, को कृपाल रघुबीर सम २॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना * चरित किये श्रुति सुधासमाना
बहुरि राम अस मन अनुमाना * होइहि भीर सबहिं मोहिं जाना
सकल मुनिनसन बिदा कराई * सीतासहित चले दोउ भाई
अत्रिके आश्रम जब प्रभु गयेऊ * सुनत महामुनि हरषित भयेऊ
पुलकितगात अत्रि उठिधाये * देषि राम आतुर चलि आये
करत दंडवत मुनि उरलाये * प्रेम बारि दोउ जन अन्हवाये
देषि राम छबि नयन जुडाने * सादर निज आश्रम तब आने
करि पूजा कहि बचन सोहाये * दिये मूल फल प्रभु मनभाये

सो॰ प्रभु आसन आसीन, भरि लोचन सोभा निरषि।
मुनिबर परम प्रबीन, जोरि पानि अस्तुति करत३॥

छंद

नमामि भक्तवत्सलं * कृपालु सीलकोमलं।
भजामि ते पदांबुजं * अकामिनां स्वधामदं॥
निकामस्यामसुंदरम् * भवांबुनाथ मंदरं।
प्रफुल्ल कंजलोचनं * मदादि दोष मोचनं १॥
प्रलंब बाहुँ विक्रमं * प्रभो प्रमेय वैभवं।
निषंगचाप सायकं * धरं तृलोकनायकं॥
दिनेसबंस मंडनं * महेसचाप षंडनं।
मुनींद्र संत रंजनं * सुरारि बृंद भंजनं २॥
मनोजवैरि वंदितं * अजादि देव सेवितं।
बिसुद्ध बोध बिग्रहं * समस्त दूषणा पहं॥
नमामि इंदिरापतिं * सुषाकरं सतां तिं।
भजे ससक्ति सानुजं * सचीपतिं प्रियानुजं ३॥
त्वदंघ्रि मूल जे नराः * भजंति हीनमत्सराः।

१- श्रुतिर्वेदे श्रवस्यपीति बैजयंती कोशे।

पतंति नो भवार्नवे * वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्तवासिनः सदा * भजंति मुक्तये मुदा ।
निरस्य इंद्रियादिकं * प्रयांति ते गतिं स्वकं ४॥
त्वमेकमद्भुतं प्रभुं * निरीहमीश्वरं विभुं ।
जगद्गुरुं च सास्वतं * तुरीयमेव केवलं ॥
भजामिभाववल्लभम् * कुजोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त कल्पपादपं * समं सुसेव्यमन्वहं ५॥
अनूप रूप भूपतिं * नतोहमुर्विजा पतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते * पदाब्ज भक्ति देहि मे ॥
पठंति ये स्तवं इदं * नरादरेण ते पदं ।
व्रजंति नात्र संसयः * त्वदीय भक्तिसंयुता ६॥

दो० बिनतीकरि मुनि नाइ सिर, कह करजोरि बहोरि ।
चरन सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि २॥

अनसूया के पद गहि सीता * मिली बहोरि सुसील बिनीता
रिषिपतनी मन सुष अधिकाई * आसिस देइ निकट बैठाई
दिब्य बसन भूषन पहिराये * जे नित नूतन अमल सोहाये
कह रिषिबधू सरस मृदुबानी * नारिधर्म कछु ब्याज बषानी
मातु पिता भ्राता हितकारी * मित प्रद सब सुनु राजकुमारी
अमित दानि भर्ता बैदेही[1] * अधम सो नारि जो सेव न तेही
धीरज धरम मित्र अरु नारी[2] * आपदकाल परिषिअहि चारी

१—श्रीजानकी जी ।

२—दुशीलोदुर्भगो वृद्धो जडो रोग्यधनोऽपिवा । पतिः स्त्रीभिर्नहातव्योलोकेप्सुभिरपातकी ॥ श्रीभागवते॥तथा—न च भार्या समं किंचिद्विद्यते भिषजां मतम् । औषधं सर्व दुःखेषु सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ १ ॥ एवमेतद्यथार्थत्वं दमयंती सुमध्यमे । नास्ति भार्या समं मित्रं नरस्यार्तस्य भेषजम् ॥ २ ॥ सुभिक्षं कृषके नित्यं नित्यं सुखमरोगिणम् । भार्या भर्तुः प्रिया यस्य तस्य नित्योत्सवं गृहे ॥ ३ ॥ महाभारते नल दमयंती संवादे ॥

बृद्ध रोगबस जड धनहीना * अंध बधिर क्रोधी अति दीना
ऐसेहु पतिकर किये अपमाना * नारि पाव जमपुर दुष नाना
एकै धर्म एक ब्रत नेमा * काय बचन मन पतिपद प्रेमा
जग पतिब्रता चारिबिधि अहहीं * बेद पुरान संत सब कहहीं
उत्तम के अस बस मनमाहीं * सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं
मध्यम परपति देषै कैसे * भ्राता पिता पुत्र निज जैसे
धर्म बिचारि समुझि कुल रहई * सो निकिष्टतिय श्रुतिअसकहई
बिनु अवसर भय ते रह जोई * जानेहु अधम नारि जग सोई
पतिबंचक परपति रति करई * रवरव नरक कल्पसत परई
छनसुष लागि जन्म सतकोटी * दुष न समुझ तेहिसम को षोटी
बिनुश्रम नारि परमगति लहई * पतिब्रतधर्म छाँडि छल गहई
पति प्रतिकूल जन्म जहँ जाई * बिधवा होइ पाइ तरुनाई

सो० सहज अपावनि नारि, पति सेवत सुभगति लहइ।
जसगावत श्रुतिचारि, अजहुँतुलसिकाहरिहिप्रिय ४॥
सुनु सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं।
तोहि प्रानप्रिय राम, कहेउँ कथा संसारहित ५॥

सुनि जानकी परम सुष पावा * सादर तासु चरन सिर नावा
तब मुनिसन कह कृपानिधाना * आयसु होइ जाउँ बन आना
संतत मोपर कृपा करेहू * सेवक जानि तजेउ जनि नेहू
धर्मधुरंधर प्रभुकै बानी * सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी
जासुकृपा अज सिव सनकादी * चहत सकल परमारथबादी
ते तुम्ह राम अकाम पिआरे * दीनबंधु मृदु बचन उचारे
अब जानी मैं श्री चतुराई * भजी तुम्हहिं सबदेव बिहाई

जेहि समान अतिसय नहिं कोई * ताकर सील कस न अस होई
केहिबिधि कहौं जाहु अब स्वामी * कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी
अस कहि प्रभु बिलोकि मुनि धीरा * लोचन जल बह पुलक सरीरा

छंद

तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नयन मुष पंकज दिये।
मन ज्ञान गुन गोतीत प्रभु मैं दीष जप तप का किये॥
जप जोग धर्म समूह तें नर भक्ति अनुपम पावई।
रघुबीर चरित पुनीत निसि दिनु दास तुलसी गावई७॥

दो० कलिमल समन दमन मन, राम सुजस सुषमूल।
सादर सुनहिं जे तिन्हपर, राम रहहिं अनकूल ३॥

सो० कठिन काल मलकोस, धर्म न ज्ञान न जोग तप।
परिहरि सकल भरोस, रामहिं भजहिं ते चतुर नर ६॥

मुनिपद कमल नाइ करि सीसा * चले बनहिं सुर नर मुनि ईसा
आगे राम अनुज पुनि पाछे * मुनिबर बेष बने अति काछे
उभयबीच सिय सोहइ कैसी * ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
सरिता बन गिरि अवघट घाटा * पति पहिचानि देहिं बर बाटा
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया * करहिं मेघ नभ तहँ तहँ छाया
मिला असुर विराध मग जाता * आवत ही रघुबीर निपाता
तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा * देषि दुषी निज धाम पठावा
पुनि आये जहँ मुनि सरभंगा * सुंदर अनुज जानकी संगा

दो० देषि राम मुष पंकज, मुनिवर लोचन भृंग।
सादर पान करत अति, धन्य जन्म सरभंग ४॥

१-इहां अयोध्याकांड वैराग्यसंदीपिनी सोपान की गुप्त इति है पुनः गणना क्रमते भी जानब प्रमाण वाल्मीकीये॥

कह मुनि सुनु रघुबीर कृपाला * संकर मानस राज मराला
जात रहेउँ बिरंचिके धामा * सुनेउँ श्रवन बन ऐहहिं रामा
चितवत पंथ रहेउँ दिन राती * अब प्रभु देषि जुडानी छाती
नाथ सकल साधन मै हीना * कीन्ही कृपा जानि जन दीना
सो कछु देव न मोहि निहोरा * निजपन राषेउ जनमनचोरा
तब लगि रहहु दीन हितलागी * जबलगिमिलौंतुम्हहिंतनुत्यागी
जोग जज्ञ जप तप जत कीन्हा * प्रभुकहँ देइ भक्तिवर लीन्हा
येहिबिधिसररचि मुनिसरभंगा * बैठे हृदय छाँडि सब संगा

दो॰ सीता अनुजसमेत प्रभु, नील जलद तनु स्याम।
ममहिय बसहु निरंतर, सगुनरूप श्रीराम ५॥

असकहिजोगअगिनितनुजारा * रामकृपा बैकुंठ सिधारा
ताते मुनि हरिलीन न भयेऊ * प्रथमहिं भेद भक्तिवर लयेऊ
रिषिनिकाय मुनिबरगति देषी * सुषी भये निज हृदय बिसेषी
अस्तुति करहिं सकल मुनिबृंदा * जयति प्रनतहित करुनाकंदा
पुनि रघुनाथ चले बन आगे * मुनिबर बृंद बिपुल सँगलागे
अस्थि समूह देषि रघुराया * पूंछी मुनिन्ह लागि अतिदाया
जानतहूँ पूंछिय कस स्वामी * सबदरसी तुम्ह अंतरजामी
निसिचरनिकरसकलमुनिषाये * सुनि रघुबीरनयन जल छाये

दो॰ निसिचरहीन करौं महि, भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकलमुनिन्हकेआश्रमनि, जाइजाइसुषदीन्ह ६॥

मुनि अगस्तिकर सिष्य सुजाना * नाम सुतीच्छन रति भगवाना
मन क्रम बचन राम पद सेवक * सपनेहुँ आन भरोस न देवक
प्रभुआगवन श्रवन सुनिपावा * करत मनोरथ आतुर धावा

हे बिधि दीनबंधु रघुराया * मोसे सठपर करिहहिं दाया
सहित अनुज मोहि रामगोसाईं * मिलिहहिं निजसेवक की नाईं
मोरे जिअ भरोस दृढ नाहीं * भक्ति बिरति न ज्ञान मन माहीं
नहिं सतसंग जोग जप जागा * नहिं दृढ चरनकमल अनुरागा
एक बानि करुनानिधान की * सो प्रिय जाके गति न आनकी
होइहहिसफल आजुममलोचन * देषि बदनपंकज भवमोचन
निर्भर प्रेम मगन मुनि ज्ञानी * कहि न जाय सो दसा भवानी
दिसिअरुबिदिसिपंथनहिंसूझा * को मैं चलेउँ कहाँ नहिं बूझा
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई * कबहुँक नृत्य करै गुनगाई
अबिरल प्रेम भक्ति मुनि पाई * प्रभु देषहिं तरु ओट लुकाई
अतिसय प्रीति देषि रघुबीरा * प्रगटे हृदय हरन भवभीरा
मुनि मगमाँझ अचलहोइ बैसा * पुलक सरीर पनसफल जैसा
तब रघुनाथ निकट चलिआये * देषि दसा निजजन मन भाये
मुनिहिं राम बहुभाँति जगावा * जाग न ध्यानजनित सुषपावा
भूपरूप तब राम दुरावा * हृदय चतुर्भुज रूप देषावा
मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे * बिकल हीनमनि फनि वर जैसे
आगे देषि राम तन स्यामा * सीता अनुज सहित सुष धामा
परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी * प्रेम मगन मुनिवर बड भागी
भुज बिसाल गहि लिये उठाई * परम प्रीति राषेउ उरलाई
मुनिहिंमिलतअससोहकृपाला * कनकतरुहिं जनु भेंट तमाला
राम वदन बिलोक मुनि ठाढा * मानहु चित्रमाझ लिषि काढा

दो॰ तब मुनि हृदय धीरधरि, गहि पद बारहिंबार।
निजआश्रम प्रभुआनिकरि, पूजा बिबिधि प्रकार ७॥

कह मुनि प्रभु सुनु विनतीमोरी * अस्तुति करौं कौनविधि तोरी
महिमा अमिति मोरिमतिथोरी * रवि सनमुष षद्योत अँजोरी
स्याम तामरस दामशरीरं * जटामुकुट परिधन मुनिचीरं
पानि चाप सर कटि तूनीरं * नौमि निरंतर श्रीरघुवीरं
मोहविपिनघनदहन कृसानुः * संत सरोरुह कानन भानुः
निसिचर करिवरूथ मृगराजः * त्रातु सदाँ नो भवषगबाजः
अरुननयन राजीव सुवेसं * सीतानयन चकोर निसेसं
हरहृदि मानस बाल मरालं * नौमि राम उर बाहु बिसालं
संसयसर्प ग्रसन उरगादः * समन सुकर्क सतर्क विषादः
भयभंजन रंजन सुरजूथः * त्रातु सदाँ नो कृपावरूथः
निर्गुन सगुन विषमसमरूपं * ज्ञान गिरा गोतीतमरूपं
अमल मषिल मनवद्य मपारं * नौमि राम भंजनमहिभारं
भक्त कल्पपादप आरामः * तर्जन क्रोध लोभ मद कामः
अति नागर भवसागरसेतुः * त्रातु सदा दिनकरकुलकेतुः
अतुलितभुजप्रताप बलधामः * कलिमलविपुल विभंजननामः
धर्मवर्म नर्मद गुनग्रामः * संतत संतनोतु मम रामः
जदपिविरजव्यापकअविनासी * सबके हृदय निरंतरवासी
तदपि अनुज श्री सहितषरारी * बसहु मनसि मम काननचारी
जे जानहिं ते जानहुँ स्वामी * सगुन अगुन उर अंतरजामी
जो कोसलपति राजिवनैना * करौ सो रामु हृदय ममऐना
अस अभिमान जाइ जनिभोरे * मै सेवक रघुपति पति मोरे
सुनि मुनिवचन रामनम भाये * बहुरि हरषि मुनिवर उरलाये
परम प्रसन्न जानु मुनि मोही * जो वर मागु देउँ सो तोही

मुनि कह मैं वर कबहुँ न जाँचा * समुझ न परै झूठ का साँचा
तुम्हहिं नीक लागइ रघुराई * सो मोहिं देहु दास सुषदाई
अविरल भक्ति विरति विज्ञाना * होहु सकल गुन ज्ञाननिधाना
प्रभु जो दीन्ह सो वर मै पावा * अब सो देहु मोहि जो भावा

दो० अनुज जानकी सहित प्रभु, चाप बान धर राम।
मम हिय गगन इंदु इव, बसहु सदा निःकाम ८॥

एवमस्तु करि रमानिवासा * हरषि चले कुंभजरिषि पासा
बहुत दिवस गुरु दरसन पाये * भये मोहि येहि आश्रम आये
अब प्रभुसंग जाउँ गुरुपाहीं * तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं
देषि कृपानिधि मुनि चतुराई * लिये संग बिहँसे दोउ भाई
पंथ कहत निज भक्ति अनूपा * मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा
तुरत सुतीच्छन गुरुपहिंगयेऊ * करि दंडवत कहत अस भयेऊ
नाथ कोसलाधीस कुमारा * आये मिलन जगत आधारा
राम अनुज समेत वैदेही * निसु दिनु देव जपतहहु जेही
सुनत अगस्ति तुरत उठिधाये * हरि विलोकि लोचनजल छाये
मुनिपद कमल परे दोउ भाई * रिषि अति प्रीति लिये उरलाई
सादर कुसल पूँछि मुनिज्ञानी * आसन पर बैठारे आनी
पुनि कर बहुप्रकार प्रभुपूजा * मोहिसम भागवंत नहिं दूजा
जहँलगि रहे अपर मुनिवृंदा * हर्षे सब विलोकि सुषकंदा

दो० मुनिसमूह महँ बैठे, सनमुष सबकी ओर।
सरद इंदु जनु चितवत, मानहुं निकरचकोर ९॥

तब रघुवीर कहा मुनिपाहीं * तुम्हसन प्रभु दुराव कछु नाहीं
तुम्ह जानहु जेहि कारन आयेउँ * ताते तात न कहि समुझायेउँ

अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही * जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी * पूँछेहु नाथ मोहि का जानी
तुम्हरे भजन प्रभाउ अघारी * जानौं महिमा कछुक तुम्हारी
ऊमरि तरु बिसाल तव माया * फल ब्रह्मांड अनेक निकाया
जीव चराचर जंतु समाना * भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फलभक्षक कठिन कराला * तवभय डरत सदा सोउ काला
ते तुम्ह सकल लोकपति साईं * पूँछेहु मोहि मनुजकी नाईं
यह बर मागौं कृपानिकेता * बसहु हृदय श्री अनुज समेता
अविरल भक्ति बिरति सतसंगा * चरन सरोरुह प्रीति अभंगा
जद्यपि ब्रह्म अषंड अनंता * अनुभवगम्य भजहिं जेहि संता
अस तव रूप बषानौं जानौं * फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मानौं
संतत दासन्ह देहु बडाई * ताते मोहि पूँछेहु रघुराई
है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ * पावन पंचवटी तेहि नाऊँ
दंडकबन पुनीत प्रभु करहू * उग्र साप मुनिवर कर हरहू
वास करहु तहँ रघुकुलराया * कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया
चले राम मुनि आयसु पाई * तुरतहिं पंचवटी निअराई

दो० गीधराज सन भेंट भइ, बहु बिधि प्रीति बढाइ।
गोदावरी निकट प्रभु, रहे पर्नगृह छाइ १०॥

जबते राम कीन्ह तहँ बासा * सुषी भये मुनि बीती त्रासा
गिरि बन नदी ताल छबिछाये * दिनदिन प्रति अति होहिं सुहाये
षग मृग बृंद अनंदित रहहीं * मधुप मधुर गुंजत छवि लहहीं
सो बन बरनि न सक अहिराजा * जहां प्रगट रघुवीर बिराजा
एक बार प्रभु सुष आसीना * लछिमन वचन कहे छलहीना

सुर नर मुनि सचराचर साईं * मैं पूछौं निज प्रभुकी नाईं
मोहि समुझाइ कहहु सोइ देवा * सब तजि करौं चरनरजसेवा
कहहु ज्ञान विराग अरु माया * कहहु सो भगति करहु जेहि दाया
दो० ईस्वर[1] जीवहि भेद प्रभु, सकल कहहु समुझाइ।
जाते होइ चरन रति, सोक मोह भ्रम जाइ ११॥
थोरेहिं महँ सब कहौं बुझाई * सुनहु तात मन मति चित लाई
मै अरु मोर तोर तैं माया * जेहिंबस कीन्हे जीव निकाया
गो गोचर जहँ लगि मन जाई * सो सब माया जानेहु भाई
तेहिकर भेद सुनहुँ तुम्ह सोऊ * विद्या अपर अविद्या दोऊ
येक दुष्ट अतिसय दुषरूपा * जा बस जीव परा भवकूपा
येक रचै जग गुनबस जाके * प्रभुप्रेरित नहिं निजबल ताके
ज्ञान मान जहँ येकौ नाहीं * देष ब्रह्मसमान सब माहीं
कहिअ तात सो परम विरागी * तृनसम सिद्धि तीनि गुन त्यागी
दो० माया ईस न आपु कहँ, जान कहिअ सो जीव।
बंध मोक्षप्रद सर्वपर, माया प्रेरक सीव १२॥
धर्म ते विरति जोग तें ज्ञाना * ज्ञान मोक्षप्रद वेद बषाना
जाते वेगि द्रवौं मैं भाई * सो मम भक्ति भक्तसुषदाई
सो सुतंत्र अवलंब न आना * तेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना
भक्ति तात अनुपम सुषमूला * मिलइ जो संत होहिं अनुकूला
भक्तिकी साधन कहौं बषानी * सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी
प्रथमहिं विप्रचरन अतिप्रीती * निज निज धर्म निरत श्रुतिरीती
येहिकर फल पुनि विषयविरागा * तब मम धर्म उपज अनुरागा

१ अविद्योपाधि सह आत्मा जीवोच्यते ॥ विद्योपाधि सह आत्मा ईश्वरोच्यते ॥ इति वेदान्त आत्मबोधे ॥

श्रवनादिक नव भक्ति दिढाहीं * मम लीला रति अति मनमाहीं
संत चरन पंकज अति प्रेमा * मन क्रम बचन भजन दृढ नेमा
गुरु पितु मातु बंधु पति देवा * सब मोहिं कहँ जानै दृढ सेवा
मम गुन गावत पुलक सरीरा * गदगद गिरा नयन वह नीरा
काम आदि मद दंभ न जाके * तात निरंतर बस मैं ताके

दो० बचन कर्म मन मोरिगति, भजन करहिं निःकाम।
तिनके हृदय कमल महँ, करौं सदा बिश्राम १३॥

भक्तिजोग सुनि अति सुषपावा * लछिमनप्रभुचरनन्हिसिरनावा
येहि बिधि गये कछुक दिन बीती * कहत बिराग ज्ञान गुन नीती
सूपनषा रावनकै बहिनी * दुष्टहृदय दारुनि जसि अहिनी
पंचवटी सो गइ येक बारा * देषि बिकल भइ जुगुल कुमारा
भ्राता पिता पुत्र उरगारी * पुरुष मनोहर निरषत नारी
होइ बिकल सक मनहिं न रोकी * जिमिरबिमनिद्रवरबिहिबिलोकी
रुचिररूप धरि प्रभु पहँ जाई * बोली बचन बहुत मुसुकाई
तुम्हसम पुरुष न मोसम नारी * यह सजोग बिधि रचा बिचारी
मम अनुरूप पुरुष जग माहीं * देषेउँ षोजि लोक तिहुँ माहीं
ताते अबलगि रहिहुँ कुँआरी * मन माना कछु तुम्हहिं निहारी
सीतहि चितइ कही प्रभु बाता * अहै कुँआर मोर लघु भ्राता
गइ लछिमनरिपुभगिनीजानी * प्रभु बिलोकि बोले मृदुबानी
सुंदरि सुनु मैं उन्हकर दासा * पराधीन नहिं तोर सुपासा
प्रभु समरथ कोसलपुर राजा * जो कछु करहिं उन्हहिं सब छाजा
सेवक सुष चह मान भिषारी * ब्यसनीधनसुभगतिब्यभिचारी
लोभी जस चह चाह गुमानी * नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी

पुनि फिरि रामनिकट सो आई * प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई
लछिमन कहा तोहि सो बरई * जो त्रिन तोरि लाज परिहरई
तब षिसियानि रामपहिं गई * रूप भयंकर प्रगटत भई
सीतहि सभय देषि रघुराई * कहा अनुजसन सैन बुझाई
दो० लछिमन अति लाघव सों, नाक कान बिनु कीन्हि।
ताके कर रावन कहँ, मनौ चुनवटी दीन्हि १४॥
नाक कान बिनु भइ बिकरारा * जनु श्रव सैल गेरु कै धारा
षरदूषन पहिं गइ बिलपाता * धिगधिग तव पौरुष बल भ्राता
तेहिं पूँछा सब कहेसि बुझाई * जातुधान सुनि सेन बनाई
धाये निसिचर निकर वरूथा * जनु सपक्ष कज्जलगिरि जूथा
नाना बाहन नानाकारा * नानायुध धर घोर अपारा
सूपनषा आगे करिलीनी * असुभरूप श्रुति नासा हीनी
असगुन अमित होहिं भयकारी * गनहिं न मृत्युविवस सबझारी
गर्जहिं तर्जहिं गगन उडाहीं * देषि कटक भट अति हरषाहीं
कोउ कह जिअतधरहु दोउ भाई * धरि मारहु तिय लेहु छडाई
धूरि पूरि नभमंडल रहा * राम बोलाइ अनुजसन कहा
लै जानकिहि जाहु गिरिकंदर * आवा निसिचर कटक भयंकर
रहेहु सजग सुनि प्रभुकै बानी * चले सहित श्री सरधनु पानी
देषि राम रिपुदल चलिआवा * बिहँसि कठिन कोदंड चढावा

छंद

कोदंड कठिन चढाइ सिर जटजूट बांधत सोह क्यों।
मरकतसइल पर लरत दामिनि कोटिसों जुगभुजग ज्यों॥

व्यभिचारिणी को विरूप करि दंडदीन औ कान इसलिये काटा कि तैं कान से नाहीं सुना राम धर्मात्मा एक पत्नीव्रत हैं ?॥

कटिकसि निषंग बिसालभुजगहि चाप बिसिष सुधारिकै।
चितवत मनहुँ मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारिकै ८॥

सो॰ आइ गये बगमेल, धरहु धरहु धावत सुभट।
जथा बिलोकि अकेल, बालरबिहि घेरत दनुज ७॥

प्रभुबिलोकि सर सकहिं न डारी * थकित भई रजनीचर धारी
सचिव बोलि बोले षरदूषन * यह कोउ नृपबालक नरभूषन
नाग असुर सुर नर मुनि जेते * देषे जिते हते हम केते
हम भरि जन्म सुनहुँ सब भाई * देषी नहिं असि सुंदरताई
जद्यपि भगनी कीन्हि कुरूपा * बधलायक नहिं पुरुष अनूपा
देहिं तुरित निज नारि दुराई * जीअत भवन जाहिं दोउ भाई
मोर कहा तुम्ह ताहि सुनावहु * तासु बचन सुनि आतुर आवहु
दूतन्ह कहा रामसन जाई * सुनत राम बोले मुसुकाई
हम छत्री मृगया बन करहीं * तुम्हसे षल मृग षोजत फिरहीं
रिपु बलवंत देषि नहिं डरहीं * येक बार कालहु सन लरहीं
जद्यपि मनुज दनुजकुल घालक * मुनिपालक षलसालक बालक
जौं न होइ बल घर फिरिजाहू * समर बिमुष मैं हतौं न काहू
रन चढि करिअ कपट चतुराई * रिपु पर कृपा परम कदराई
दूतन जाइ तुरत सब कहेऊ * सुनि षरदूषन उर अतिदहेऊ

छंद

उर दहेउ कहेउ कि धरहु धाये बिकट भट रजनीचरा।
सर चाप तोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसुधरा॥
प्रभु कीन्ह धनुष टँकोर प्रथम कठोर घोर भयावहा।
भये बधिर ब्याकुल जातुधान न ज्ञान तेहि अवसर रहा ९॥

दो०सावधान होइ धाये, जानि सबल आराति।
लागे बर्षन राम पर, अस्त्र सस्त्र बहु भाँति १५॥
तिन्हके आयुध तिलसम, करि काटे रघुबीर।
तानिसरासनश्रवनलगि, पुनि छाँडे निजतीर १६॥

तोमर छंद

तब चले बान कराल। फुंकरत जनु बहु ब्याल॥
कोपेउ समर श्रीराम। चलेबिसिषनिसित निकाम॥
अवलोक षरतर तीर। मुरि चले निसिचर बीर॥
भये क्रुद्ध तीनिउँ भाइ। जो भागि रनतें जाइ॥
तेहि बधब हम निज पानि। फिरे मरन मन महँ ठानि॥
आयुध अनेक प्रकार। सनमुष ते करहिं प्रहार॥
रिपु परम कोपे जानि। प्रभु धनुषसर संधानि॥
छाँडे बिपुल नाराच। लगे कटन बिकट पिसाच॥
उर सीस कर भुज चरन। जहँ तहँ लगे महि परन॥
चिक्करत लागत बान। धर परत कुधर समान॥
भट कटत तन सतषंड। पुनि उठत करि पाषंड[1]॥
नभ उडत बहु भुज मुंड। बिनु मौलि धावत रुंड॥
षग कंक काक सृगाल। कटकटहिं कठिन कराल १०॥

छंद

कटकटहिं जंबुक भूत प्रेत पिसाच षप्पर संचहीं।
बेताल बीर कपाल ताल बजाइ जोगिनि नंचहीं॥
रघुबीर बान प्रचंड षंडहिं भटनि के उर भुज सिरा।
जहँतहँ परहिं उठि लरहिं धरुधरुधरु करहिं भयकरगिरा ११॥

१– पाषंड इंद्रजाल माया॥

अंतावरी गहि उडत गिद्ध पिसाच कर गहि धावहीं।
संग्राम पुरवासी मनहुँ बहु बाल गुडी उडावहीं॥
मारे पछारे उर बिदारे विपुल भट कहरत परे।
अवलोकि निजदल विकलभट त्रिसिरादि षरदूषन फिरे १२॥
सर सक्ति तोमर परसु सूल कृपान एकहिं बारहीं।
करि कोप श्रीरघुवीरपर अगिनित निसाचर डारहीं॥
प्रभु निमिष महँ रिपु सर निवारि प्रचारि डारे सायका।
दसदस विसिष उरमाभ मारे सकल निसिचरनायका १३॥
महिपरत उठि भट भिरत मरत न करतमाया अतिघनी।
सुर डरत चौदह सहस प्रेत बिलोकि येक अवध धनी॥
सुर मुनिसभय प्रभु देषि मायानाथ अतिकौतुक कर्यौ।
देषहिं परसपर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मर्यौ १४॥
दो० राम राम कहि तन तजहिं, पावहिं पद निर्बान।
करि उपाय रिपु मारे, छन महँ कृपानिधान १७॥
हराषित बरषहिं सुमन सुर, बाजहिं गगन निसान।
अस्तुति करिकरि सबचले, सोभित विविधिविमान १८॥

जब रघुनाथ समर रिपु जीते * सुर नर मुनि सबके भय बीते
तब लछिमन सीतहि लै आये * प्रभुपद परत हरषि उरलाये
सीता चितव स्याम मृदु गाता * परम प्रेम लोचन न अघाता
पंचवटी बसि श्रीरघुनायक * करत चरित सुरमुनिसुषदायक
धुवाँ देषि षरदूषन केरा * जाइ सुपनषा रावन प्रेरा
बोली बचन क्रोधकरि भारी * देस कोष कै सुरति बिसारी
करसि पान सोवसि दिन राती * सुधि नाहिं तव सिरपर आराती

राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा * हरिहि समर्पे बिनु सतकर्मा
बिद्या बिनु बिबेक उपजाये * श्रम फल पढे किये अरु पाये
संगते जती कुमंत्र ते राजा * मान ते ज्ञान पान तें लाजा
प्रीति प्रनय बिनु मदते गुनी * नासहिं बेगि नीति अस सुनी

सो॰ रिपु रुज पावक पाप, प्रभुअहिगनिय न छोटकरि।
असकहिविविधिविलाप, करि लागी रोदनकरन ८॥

दो॰ सभा माझ परिव्याकुल, बहु प्रकार कह रोइ।
तोहि जिअत दसकंधर, मोरिकि असिगतिहोइ १९॥

सुनत सभासद उठे अकुलाई * समुझाई गहि बांह उठाई
कह लंकेस कहसि निज बाता * केइँ तव नासा कान निपाता
अवध नृपति दसरथ के जाये * पुरुषसिंह बन षेलन आये
समुझिपरी मोहिउन्हकै करनी * रहितनिसाचर करिहहिं धरनी
जिन्हकर भुजबल पाइ दसानन * अभयभये बिचरत मुनि कानन
देषत बालक काल समाना * परमधीर धन्वी गुन नाना
अतुलित बलप्रतापदोउभ्राता * षलबधरत सुर मुनि सुषदाता
सोभाधाम राम अस नामा * तिन्हके संग नारि येक स्यामा
रूपरासि विधि नारि सँवारी * रतिसतकोटि तासु बलिहारी
तासु अनुज काटे श्रुतिनासा * सुनितवभगिनिकरहिं परिहासा
षरदूषन सुनि लगे पुकारा * छनमहँ सकलकटक उन्ह मारा
षरदूषन त्रिसिरा कर घाता * सुनि दससीस जरे सब गाता

दो॰ सूपनषहिं समुझाइ करि, बल बोलेसि बहुभाँति।
गयेउ भवन अति सोचबस, नींद परै नहिं राति २०॥

१—प्रणयः स्यात्परिचये यांचायां सौहृदेपि चेति यादवः॥

सुर नर असुर नाग षगमाहीं * मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं
षरदूषन मोहिंसम बलवंता * तिन्हहिं को मारै बिन भगवंता
सुररंजन भंजन महि भारा * जौं भगवंत लीन्ह अवतारा
तौ मैं जाइ बैर हठि करऊँ * प्रभुसर प्रान तजे भव तरऊँ
होइहि भजन न तामस देहा * मन क्रम बचन मंत्र दृढ़ येहा
जौं नररूप भूपसुत कोऊ * हरिहौं नारि जीति रन दोऊ
चला अकेल जान चढि तहवाँ * बस मारीच सिंधुतट जहवाँ
इहाँ राम जसि जुगुति बनाई * सुनहुँ उमा सो कथा सुहाई

दो० लछिमन गये बनहिं जब, लेन मूल फल कंद।
जनकसुता सन बोले, बिहँसि कृपा सुष बृंद २१॥

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला * मैं कछु करबि ललित नरलीला
तुम्ह पावक महँ करहु निवासा * जौ लगि करौं निसाचर नासा
जबहिं राम सब कहा बषानी * प्रभुदप धरिहिय अनलसमानी
निज प्रतिबिंब राषि तहँ सीता * तैसइ रूप सुसील बिनीता
लछिमनहूँ यह मरम न जाना * जो कछु चरित रचा भगवाना
दसमुष गयेउ जहाँ मारीचा * नाइ माथ स्वारथरत नीचा
नवनि नीच कै अति दुषदाई * जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई
भयदायक षलकै प्रियबानी * जिमि अकालके कुसुम भवानी

दो० करि पूजा मारीच तब, सादर पूंछी बात।
कवनहेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयेहु तात २२॥

दसमुष सकल कथा तेहि आगे * कही सहित अभिमान अभागे
होहु कपटमृग तुम्ह छलकारी * जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी
तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा * ते नररूप चराचर ईसा

तासों तात बयर नहिं कीजै * मारे मरिय जिआये जीजै
मुनिमषराषन गयेउ कुमारा * बिनुफर सर रघुपति मोहिं मारा
सत जोजन आयेउँ छनमाहीं * तिनसन बयर किये भल नाहीं
भय मम कीट भृंग की नाईं * जहँ तहँ मैं देषहुँ दोउ भाई
जौं नर तात तदपि अति सूरा * तिन्हहिं बिरोधि न आइहि पूरा
दो॰ जेहिं ताड़का सुबाहुँ हति, षंडेउ हरकोदंड।
षरदूषन त्रिसिरा बधेउ, मनुज किअसबरिबंड २३॥
जाहु भवन कुल कुसल बिचारी * सुनत जरा दीन्हिसि बहु गारी
गुरुजिमि मूढ करसि मम बोधा * कहु जग मोहिसमान को जोधा
तब मारीच हृदय अनुमाना * नवहि विरोधे नहिं कल्याना
सस्त्री मर्मी प्रभु सठ धनी * बैद बंदि कबि मानस[1] गुनी
उभय भाँति देषा निज मरना * तब ताकेसि रघुनायक सरना
उतर देत मोहिं बधब अभागे * कस न मरौं रघुपतिसर लागे
अस जिअजानि दसाननसंगा * चला राम पद प्रेम अभंगा
मन अति हरष जनाव न तेही * आजु देषिहौं परम सनेही

छंद

निजपरम प्रीतम देषि लोचन सुफलकरि सुष पाइहौं।
श्रीसहित अनुजसमेत कृपानिकेत पद मन लाइहौं॥
निर्बानदायक क्रोध जाकर भगति अवसहि वसकरी।
निजपानिसरसंधानि सो मोहि वधिहि सुषसागर हरी १५॥
दो॰ मम पाछे धर धावत, धरे सरासन बान।
फिरिफिरिप्रभुहिबिलोकिहौं, धन्य न मोसम आन २४॥
तेहि वननिकट दसानन गयेऊ * तब मारीच कपटमृग भयेऊ

१—राजमंत्री वा ज्योतिषी॥

अति विचित्र कछु बरनि न जाई * कनकदेह मनि रचित बनाई
सीता परम रुचिर मृग देषा * अंग अंग सुमनोहर बेषा
सुनहु देव रघुबीर कृपाला * यह मृगकर अतिसुंदर छाला
सत्यसंध प्रभु बधिकरि येही * आनहु चरम कहति बैदेही
तब रघुपति जानत सब कारन * उठे हरषि सुरकाज सँवारन
मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा * करतल चाप रुचिरसर साँधा
प्रभु लछिमनहि कहा समुझाई * फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई
सीताकेरि करेहु रषवारी * बुधि बिबेक बल समय बिचारी
प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी * धाये राम सरासन साजी
निगम नेति सिव ध्यान न पावा * मायामृग पाछे सोइ धावा
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई * कबहुँक प्रगटै कबहुँ छपाई
प्रगटत दुरत करत छल भूरी * येहिबिधि प्रभुहिं गयेउ लै दूरी
तब तकि राम कठिन सर मारा * धरनि परेउ करि घोर पुकारा
लछिमनकर प्रथमहिं लै नामा * पाछे सुमिरेसि मनमहँ रामा
प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा * सुमिरेसि राम समेत सनेहा
अंतर प्रेम तासु पहिचाना * मुनिदुर्लभ गति दीन्ह सुजाना

दो० बिपुल सुमन सुर बरषहिं, गावहिं प्रभुगुनगाथ।
निजपद दीन्ह असुर कहँ, दीनबंधु रघुनाथ २५॥

षल बधि तुरत फिरे रघुबीरा * सोह चाप कर कटि तूनीरा
आरत गिरा सुनी जब सीता * कह लछिमनसन परम सभीता
जाहु बेगि संकट अति भ्राता * लछिमन बिहँसि कहा सुनु माता
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई * सपनेहु संकट परै कि सोई
मरम बचन जब सीता बोली * हरिप्रेरित लछिमन मति डोली

बन दिसि देव सौंपि सब काहू * चले जहां रावनससिराहू
सून्य बीच दसकंधर देषा * आवा निकट जती के बेषा
जाके डर सुर असुर डेराहीं * निसि न नींद दिन अन्न न षाहीं
सो दससीस स्वान की नांईं * इत उत चितै चला भँडिहाईं
इमि कुपंथ पग देत षगेसा * रह न तेज तनु बुधि बललेसा
नाना विधि कहि कथा सुहाई * राजनीति भय प्रीति देषाई
कह सीता सुनु जती गोसाईं * बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं
तब रावन निज रूप दिषावा * भई सभय जब नाव सुनावा
कह सीता धरि धीरजु गाढा * आइ गये प्रभु रहु षल ठाढा
जिमि हरिबधुहि छुद्र सस चाहा * भयेसि कालबस निसिचरनाहा
सुनत बचन दससीस लजाना * मनमहँ चरनबंदि सुष माना

दो० क्रोधवंत तब रावन, लीन्हेसि रथ बयठाय।
चला गगन पथ आतुर, भयरथ हांकि न जाय २६॥

हा जगदेक वीर रघुराया * केहि अपराध बिसारेहु दाया
आरतिहरन सरन सुषदायक * हा रघुकुलसरोजदिननायक
हा लछिमन तुम्हार नहिं दोषा * सो फल पायेउँ कीन्हेउँ रोषा
विविधि विलाप करति वैदेही * भूरिकृपा प्रभु दूरि सनेही
विपति मोरि को प्रभुहि सुनावा * पुरोडास चह रासभ षावा
सीताकै विलाप सुनि भारी * भये चराचर जीव दुषारी
गीधराज सुनि आरत बानी * रघुकुलतिलकनारि पहिचानी
अधम निसाचर लीन्हे जाई * जिमि मलेछबस कपिलागाई
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा * करिहौं जातुधान कर नासा
धावा क्रोधवंत षग कैसे * छूटै पवि पर्वत कहुँ जैसे

जटायु-रावणयुद्ध ।

उतर न देत दशानन योधा । तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा ॥
तब सक्रोध निशिचर खिसियाना । काटेसि पंख कराल कृपाना ॥

रे रे दुष्ट ठाढ किन होही * निर्भय चलेसि न जानेहिमोही
आवत देषि कृतांत समाना * फिरि दसकंधर कर अनुमाना
की मैनाक कि षगपति होई * मम बल जान सहित पतिसोई
जाना जरठ जटायू येहा * मम करतीरथ छांडिहि देहा
सुनत गीध क्रोधातुर धावा * कह सुनु रावन मोर सिषावा
तजि जानकिहि कुसल गृहजाहू * नाहिंतौ अस होइहि बहुबाहू
राम रोष पावक अतिघोरा * होइहि सकल सलभ कुलतोरा
उतर न देत दसानन जोधा * तबहिं गिद्ध धावा करि क्रोधा
धरिकच विरथ कीन्ह महि गिरा * सीतहि राषि गिद्ध पुनि फिरा
चोचन्ह मारि बिदारेसि देही * दंड येक भइ मुरछा तेही
तबसक्रोध निसिचरषिसिआना * काढेसि परम कराल कृपाना
काटेसि पंष परा षग धरनी * सुमिरि राम करि अद्भुतकरनी
सीतहि जान चढाइ बहोरी * चला उताइल त्रास न थोरी
करतिबिलाप जाति नभ सीता * व्याधबिबस जनु मृगी सभीता
गिरिपर बैठे कपिन्ह निहारी * कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी
येहिबिधि सीतहि सो लै गयेऊ * बन असोकमहँ राषत भयेऊ

दो॰ हारिपरा षल बहुबिधि, भय अरु प्रीति देषाइ।
तब असोक पादप तर, राषेसि जतनु कराइ २७॥

नवाह दिन ६

जेहिबिधि कपटकुरंगसँग, धाइ चले श्रीराम।
सो छबि सीता राषिउर, रटति रहति हरिनाम २८॥

रघुपति अनुजहिं आवत देषी * बाहिज चिंता कीन्ह बिसेषी
जनकसुता परिहरेउ अकेली * आयेहु तात बचन मम पेली

निसिचरनिकरफिरहिं बनमाहीं * मम मन सीता आश्रम नाहीं
गहि पदकमल अनुज करजोरी * कहेहु नाथ कछु मोहि न षोरी
अनुज समेत गये प्रभु तहँवां * गोदावरि तट आश्रम जहँवां
आश्रम देषि जानकी हीना * भये बिकल जस प्राकृत दीना
हा गुनषानि जानकी सीता * रूपसील ब्रत नेम पुनीता
लछिमन समुझाये बहु भाँती * पूँछत चले लता तरु पाँती
हे षग मृग हे मधुकर श्रेनी * तुम देषी सीता मृगनयनी
षंजन सुक कपोत मृग मीना * मधुप निकर कोकिला प्रबीना
कुंदकली दाडिम दामिनी * कमल सरदससि अहिभामिनी
बरुनपास मनोजधनु हंसा * गज केहरि निज सुनत प्रसंसा
श्रीफल कनककदलि हरषाहीं * नेकु न संक सकुच मनमाहीं
सुनु जानकी तोहि बिनु आजू * हरषे सकल पाइ जनु राजू
किमिसहिजातअनषतोहिपाहीं * प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं
येहिबिधि षोजत बिलपत स्वामी * मनहु महाबिरही अतिकामी
पूरनकाम राम सुषरासी * मनुजचरित करअजअबिनासी
आगे परा गीधपति देषा * सुमिरत रामचरन जिन्ह रेषा

दो॰ करसरोज सिर परसेउ, कृपासिंधु रघुबीर।
निरषि रामछबिधाममुष, बिगतभई सब पीर २९ ॥

तब कह गीध बचन धरिधीरा * सुनहु राम भंजन भव भीरा
नाथ दसानन यह गति कीन्ही * तेहिषल जनकसुता हरिलीन्ही
लै दक्षिनदिसि गयेउ गोसाईं * बिलपति अति कुररी की नाईं
दरस लागि प्रभु राषेउँ प्राना * चलनचहत अब कृपानिधाना
राम कहा तनु राषहु ताता * मुष मुसुकाइ कही तेहिं बाता

जाकर नाम मरत मुष आवा * अधमौ मुक्त होइ श्रुति गावा
सो मम लोचन गोचर आगे * राषौं देह नाथ केहि षांगे
जल भरि नयन कहहिं रघुराई * तात कर्म निजते गति पाई
परहित बस जिन्हके मनमाहीं * तिनकहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
तनतजि तात जाहु मम धामा * देउँ काह तुम पूरनकामा

दो० सीताहरन तात जनि, कहेहु पितासन जाइ।
जौं मैं राम तौ कुलसहित, कहिहि दसानन आइ ३०॥

गिद्ध देह तजि धरि हरिरूपा * भूषन बहु पटपीत अनूपा
स्यामगात बिसाल भुजचारी * अस्तुति करत नयन भरिबारी

छंद

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।
दससीसबाहुप्रचंडषंडन चंड सर मंडन मही॥
पाथोदगात सरोजमुष राजीव आयत लोचनं।
निति नौमि राम कृपाल बाहुबिसाल भवभयमोचनं १६॥
बल मप्रमेय मनादि मज मब्यक्त मेकम गोचरं।
गोबिंद गोपर द्वंदहर बिज्ञानघन धरनीधरं॥
जे राममंत्रजपंत संत अनंत जनमनरंजनं।
नित नौमि राम अकामप्रिय कामादिषलदलगंजनं १७॥
जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्मब्यापक बिरजअज कहि गावहीं।
करि ध्यानज्ञान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥
सो प्रगट करुनाकंद सोभाबृंद अग जग मोहई।
मम हृदयपंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई १८॥
जो अगम सुगमसुभाव निर्मल असमसमसीतल सदा
पस्यंति जं जोगी जतनु करि करत मन गो बसंसदा॥

सो राम रमानिवास संतत दासबस त्रिभुअनधनी।
मम उर बसउ सो समनसंसृति जासु कीरति पावनी १६॥

दो॰ अबिरलभक्ति मागि बर, गीध गयेउ हरिधाम।
तेहिकी कृया जथोचित, निजकरकीन्हीराम ३१॥

कोमलचित अति दीनदयाला * कारन बिनु रघुनाथ कृपाला
गीध अधम षग आमिषभोगी * गति दीन्ही जो जाचत जोगी
सुनहु उमा ते लोग अभागी * हरितजि होहिं बिषयअनुरागी
पुनि सीतहि षोजत दोउ भाई * चले बिलोकत बन बहुताई
संकुल लता बिटप घन कानन * बहु षग मृग तहँ गज पंचानन
आवत पंथ कबंध निपाता * तेहिं सब कही सापकै बाता
दुर्बासा मोहि दीन्ही सापा * प्रभुपद पेषि मिटा सो पापा
सुनु गंधर्ब कहौं मै तोही * मोहि न सुहाय ब्रह्मकुलद्रोही

दो॰ मनक्रमबचन कपट तजि, जो कर भूसुर सेव।
मोहि समेत बिरंचि सिव, बस ताके सब देव ३२॥

सापत ताडत परुष कहंता * बिप्र पूज्य अस गावहिं संता
पूजियं बिप्र सील गुन हीना * सूद्र न गुनगन ज्ञानप्रबीना
कहि निज धर्म ताहि समुझावा * निज पदप्रीति देषि मनभावा
रघुपति चरनकमल सिरनाई * गयेउ गगन आपनि गति पाई
ताहि देइ गति राम उदारा * सवरी के आश्रम पगु धारा
सवरी देषि राम गृह आये * मुनिके बचन समुझि जियभाये
सरसिज लोचन बाहु बिसाला * जटामुकुट सिर उर बनमाला
स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई * सवरी परी चरन लपटाई

१—दुःशीलोपि द्विजः पूज्यो न शूद्रो विजितेन्द्रियः। दुष्टां गां कः परित्यज्य अर्चैत्शीलवतीं खरीम्॥

प्रेममगन मुष बचन न आवा * पुनि पुनि पदसरोज सिरनावा
सादर जल लै चरन पषारे * पुनि सुंदर आसन बैठारे

दो० कंदमूल फल सरसअति, दिये राम कहँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु पाये. बारहि बार बषानि ३३॥

पानि जोरि आगे भइ ठाढी * प्रभुहिबिलोकिप्रीतिअतिबाढ़ी
केहिबिधिअस्तुतिकरौंतुम्हारी * अधम जाति मैं जडमति भारी
अधमतेअधमअधमअतिनारी * तिनमहँ मै मतिमंद अघारी
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता * मानौ येक भगति कर नाता
जाति पांति कुल धर्म बडाई * धन बल परिजन गुन चतुराई
भगति हीन नर सोहै कैसा * बिन जल बारिद देषिय जैसा
नवधा भगति कहौं तोहि पाहीं * सावधान सुनु धरु मन माहीं
प्रथम भगति संतन कर संगा * दूसर रति मम कथा प्रसंगा

दो० गुरु पद पंकज सेवा, तीसरि भगति अमान।
चौथिभगतिममगुनगन, करइकपटतजिगान ३४॥

मंत्र जाप मम दृढ बिस्वासा * पंचम भजन सो बेद प्रकासा
छठ दम सील बिरति बहु कर्मा * निरत निरंतर सज्जन धर्मा
सातवँ सब मोहिमय जग देषा * मोतें संत अधिक करि लेषा
आठव जथा लाभ संतोषा * सपनेहुँ नहिं देषइ पर दोषा
नवम सरल सबसन छल हीना * मम भरोस हिय हरष न दीना
नव महँ येकौ जिन्हके होई * नारि पुरुष सचराचर कोई
सो अतिसयप्रियभामिनिमोरे * सकल प्रकार भगति दृढ तोरे
जोगि बृंद दुर्लभ गति जोई * तोकहँ आजु सुलभ भइ सोई
मम दर्सन फल परम अनूपा * जीव पाव निज सहज सरूपा

जनकसुता कै सुधि भामिनी * जानहिं कहु करिवरगामिनी
पंपासरहि जाहु रघुराई * तहँ होइहि सुग्रीव मिताई
सो सब कहिहि देव रघुबीरा * जानतहूँ पूँछहु मतिधीरा
बार बार प्रभुपद सिर नाई * प्रेम सहित सब कथा सुनाई

छंद

कहिकथा सकल बिलोकि हरिमुष हृदय पदपंकज धरे।
तजि जोगपावक देह हरिपद लीन भइ जहँ नहिं फिरे॥
नर बिबिधि कर्म अधर्म बहुमत सोकप्रद सब त्यागहू।
बिस्वास करि कह दासतुलसी राम पद अनुरागहू २०॥

दो० जातिहीन अघजन्म महि, मुक्त कीन्हि असि नारि।
महामंद मन सुष चहसि, ऐसे प्रभुहि बिसारि ३५॥

चले राम त्यागा बन सोऊ * अतुलित बल नरकेहरि दोऊ
बिरही इव प्रभु करत बिषादा * कहत कथा अनेक संबादा
लछिमन देषु बिपिन कै सोभा * देषत केहिकर मन नहिं छोभा
नारि सहित सब षग मृगबृंदा * मानहुँ मोरि करतहहिं निंदा
हमहिं देषि मृगनिकर पराहीं * मृगी कहहिं तुमकहँ भय नाहीं
तुम आनंद करहु मृगजाये * कंचन मृग षोजन ये आये
संग लाइ करिनी करि लेहीं * मानहुँ मोहिं सिषावन देहीं
सास्त्रसुचिंतित पुनिपुनि देषिय * भूप सुसेवित बस नहिं लेषिय
राषिअ नारि जदपि उर माहीं * जुवती सास्त्र नृपति बस नाहीं
देषहु तात बसंत सुहावा * प्रियाहीन मोहि भय उपजावा

दो० बिरहबिकल बलहीन मोहि, जानेसि निपट अकेल।
सहितबिपिनमधुकरषगन, मदनकीन्हि बगमेल ३६॥

देषिगयेउ भ्रातासहित, तासु दूत सुनि बात।
डेरा कीन्हेउ मनहुँ तिन, कटकु हटकि मनजात ३७॥

बिटप बिशाल लता अरुझानी * विविध बितान दिये जनु तानी
कदलि ताल बर ध्वजा पताका * देषि न मोह धीर मन जाका
विविधि भाँति फूले तरु नाना * जनु बानैत बने बहु बाना
कहुँ कहुँ सुंदर विटप सुहाये * जनुभट बिलगबिलग होइ छाये
कूजत पिक मानहु गज माते * ढेक महोष ऊँट बेसराते
मोर चकोर कीर बर बाजी * पारावत मराल सब ताजी
तीतिर लावक पदचर जूथा * बरनि न जाइ मनोज बरूथा
रथ गिरिसिला दुंदुभी झरना * चातक बंदी गुनगन बरना
मधुकर मुषर भेरि सहनाई * त्रिबिधि बयारि बसीठी आई
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हे * बिचरति सबहि चुनवती दीन्हे
लछिमन देषहु काम अनीका * रहहिं धीर तिन्हकै जगलीका
येहि के एक परम बल नारी * तेहितें उबर सुभट सोइ भारी

दो॰ ताततीनि अतिप्रबलषल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि बिज्ञान धाम मन, करहिं निमिषमहुँ छोभ ३८
लोभके इच्छा दंभबल, कामके केवल नारि।
क्रोधके परुष बचन बल, मुनिबर कहहिं बिचारि॥

गुनातीत सचराचर स्वामी * राम उमा सब अंतरजामी
कामिन्ह कै दीनता दिषाई * धीरन के मन बिरति दृढाई
क्रोध मनोज लोभ मद माया * छूटहिं सकल रामकी दाया
सो नर इंद्रजाल नहिं भूला * जापर होइ सो नट अनकूला
उमा कहउँ मैं अनुभव अपना * सत हरिभजन जगत सबसपना

पुनि प्रभु गये सरोवर तीरा * पंपा नाम सुभग गंभीरा
संत हृदय जस निर्मल बारी * बाँधे घाट मनोहर चारी
जहँतहँपिअहिंबिबिधिमृगनीरा * जनु उदारगृह जाचक भीरा

दो० पुरइनि सघन ओट जल, बेगि न पाइअ मर्म।
मायाछन्न न देषिए, जैसे निर्गुन ब्रह्म ३९ ॥
सुषी मीन सब एकरस, अति अगाध जलमाहिं।
जथा धर्मसीलान्ह के, दिनसुषसंजुत जाहिं ४० ॥

बिगसे सरसिज नाना रंगा * मधुर मुषर गुंजत बहु भृंगा
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा * प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा
चक्रबाक बक षग समुदाई * देषत बनइ बरनि नहिं जाई
सुन्दर षग गन गिरा सुहाई * जात पथिक जनु लेत बोलाई
ताल समीप मुनिन्ह गृह छाये * चहुँदिसि कानन बिटप सोहाये
चंपक बकुल कदंब तमाला * पाटल पनस पलास रसाला
नवपल्लव कुसुमित तरु नाना * चंचरीक पटली कर गाना
सीतल मंद सुगंध सुहाऊ * संतत बहै मनोहर बाऊ
कुहू कुहू कोकिल ध्वनि करहीं * सुनि रव सरस ध्यान मुनि टरहीं

दो० फल भर नम्र बिटप सब, रहे भूमि निअराइ।
परउपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाइ ४१ ॥

देषि राम अति रुचिर तलावा * मज्जन कीन्ह परम सुष पावा
देषी सुंदर तरु बर छाया * बैठे अनुजसहित रघुराया
तहँ पुनि सकल देव मुनि आये * अस्तुति करि निजधामसिधाये
बैठे परम प्रसन्न कृपाला * कहत अनुजसन कथा रसाला
बिरहवंत भगवंतहिं देषी * नारद मन भा सोच बिसेषी

मोर साप करि अंगीकारा * सहत राम नाना दुष भारा
ऐसे प्रभुहि बिलोकौं जाई *पुनि न बनिहि असअवसरआई
यह बिचार नारद करबीना * गये जहां प्रभु सुष आसीना
गावत रामचरित मृदु बानी * प्रेमसहित बहुभांति बषानी
करत दंडवत लिये उठाई * राषे बहुत बार उर लाई
स्वागत पूँछि निकट बैठारे * लछिमन सादर चरन पषारे

दो॰ नाना बिधि बिनती करि, प्रभु प्रसन्न जिय जानि।
नारद बोले बचन तब, जोरि सरोरुहपानि ४२॥

सुनहु उदार परम रघुनायक * सुंदर अगम सुगम बरदायक
देहु येक बर मागौं स्वामी * जद्यपि जानत अंतरजामी
जानहु मुनि तुम मोर सुभाऊ * जनसन कबहुँ कि करौं दुराऊ
कवनबस्तुअसिप्रियमोहिलागी* जो मुनिबर न सकहु तुम्ह मागी
जन कहँ कछु अदेय नहिं मोरे * अस बिस्वास तजहु जनि भोरे
तब नारद बोले हरषाई * अस बर मागौं करौं ढिठाई
जद्यपि प्रभुके नाम अनेका * श्रुति कह अधिक येकतें येका
राम सकल नामन्ह ते अधिका * होउ नाथ अघषगगनबधिका

दो॰ राका रजनी भगति तव, राम नाम सोइ सोम।
अपरनामउडगनबिमल, बसहुभगतउरब्योम ४३॥
येवमस्तु मुनिसन कहेउ, कृपासिंधु रघुनाथ।
तबनारदमन हरषअति, प्रभुपद नायेउ माथ ४४॥

अति प्रसन्न रघुनाथहि जानी * पुनि नारद बोले मृदु बानी
राम जबहिं प्रेरेहु निज माया * मोहेहु मोहि सुनहुँ रघुराया

तब बिवाह मैं चाहेउँ कीन्हा * प्रभु केहि कारन करै न दीन्हा
सुनु मुनि तोहि कहौं सहरोसा * भजहिं जे मोहि तजि सकल भरोसा
करौं सदा तिन्ह कै रषवारी * जिमि बालकहि राष महँतारी
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई * तहँ राषै जननी अरगाई
प्रौढ भये तेहि सुत पर माता * प्रीति करै नहिं पाछिल बाता
मोरे प्रौढ तनय सम ज्ञानी * बालक सुत सम दास अमानी
जनहिं मोर बल निज बल ताही * दुहुँ कहँ काम क्रोध रिपु आही
यह बिचारि पंडित मोहि भजहीं * पायेहु ज्ञान भगति नहिं तजहीं

दो० काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह कै धारि।
तिन्ह महँ अति दारुन दुषद, मायारूपी नारि ४५॥

सुनु मुनि कह पुरान श्रुति संता * मोह बिपिन कहुँ नारि बसंता
जप तप नेम जलासय भारी * होइ ग्रीसम सोषै सब नारी
काम क्रोध मद मत्सर भेका * इन्हहिं हरषप्रद बरषा येका
दुर्बासना कुमुद समुदाई * तिन कहँ सरद सदा सुषदाई
धर्म सकल सरसीरुह बृंदा * ह्वै हिम तिन्हहिं दहै सुष मंदा
पुनि ममता जवाँस बहुताई * पलुहै नारि सिसिर रितु पाई
पाप उलूक निकर सुषकारी * नारि निबिड रजनी अँधिआरी
बुधि बल सील सत्य सब मीना * बंसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना

दो० अवगुन मूल सूलप्रद, प्रमदा सब दुष षानि।
तातें कीन्ह निवारन, मुनि मै यह जिअ जानि ४६॥

सुनि रघुपति के बचन सोहाये * मुनि तनु पुलक नयन भरि आये
कहहु कवन प्रभु के असि रीती * सेवक पर ममता अरु प्रीती

जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी * ज्ञानरंक नर मंद अभागी
पुनि सादर बोले मुनि नारद * सुनहु राम विज्ञानबिशारद
संतन्ह के लच्छन रघुबीरा * कहहु नाथ भंजन भवभीरा
सुनु मुनि संतन्ह के गुन कहऊँ * जिन्हते मैं उन्ह के बश रहऊँ
षटविकार जित अनघ अकामा * अचल अकिंचन सुचि सुषधामा
अमित बोध अनीह मित भोगी * सत्यसार कवि कोविद जोगी
सावधान मानद मद हीना * धीर धर्म गति परम प्रबीना

दो० गुनागार संसार दुष, रहित बिगत संदेह।
तजि मम चरनसरोज प्रिय, तिन्ह कहँ देह न गेह ४७॥

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं * पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती * सरल सुभाव सबहिं सन प्रीती
जप तप व्रत दम संजम नेमा * गुरु गोबिंद बिप्रपद प्रेमा
श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया * मुदिता ममपद प्रीति अमाया
बिरति बिबेक बिनय बिज्ञाना * बोध जथारथ वेद पुराना
दंभ मान मद करहिं न काऊ * भूलि न देहिं कुमारग पाऊ
गावहिं सुनहिं सदा मम लीला * हेतुरहित परहितरत सीला
मुनि सुनु साधुन के गुन जेते * कहि न सकैं सारद श्रुति तेते

छंद

कहि सक न सारद सेष नारद सुनत पदपंकज गहे।
अस दीनबन्धु कृपाल अपने भक्तगुन निजमुष कहे॥
सिरुनाइ बारहिंबार चरनन्हि ब्रह्मपुर नारद गये।
ते धन्य तुलसीदास आस बिहाइ जे हरिरँगरये २१॥

दो० रावनारि जस पावन, गावहिं सुनहिं जे लोग।
रामभगति दृढ पावहिं, बिनु बिराग जप जोग ४८॥
दीपसिषासम जुबती, मन जनि होसि पतंग।
भजहि राम तजि काम मद, करिय सदा सतसंग ४९॥

मास पारायण दिन २२

आरण्यकाण्ड समाप्त.

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलवैराग्यसंपादनो नाम तृतीयः सोपानः समाप्तः

श्रीगणेशाय नमः

श्रीरामचरितमानस

चतुर्थ सोपान

किष्किन्धाकाण्ड

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सद्धर्मवर्मौ हि तौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि नः १ ॥

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं
श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ।
संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् २ ॥

सो० मुक्तिजन्म महि जानि, ज्ञानखानि अघहानिकर ।
जहँ बस संभुभवानि, सो कासी सेइय कस न १ ॥
जरत सकल सुरबृंद, बिषमगरल जेहिंपान किअ ।
तेहिं न भजसि मतिमंद, को कृपालु संकरसरिस २ ॥

आगे चले बहुरि रघुराया * रिष्यमूक पर्बत निअराया
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवां * आवत देषि अतुल बलसीवां
अतिसभीत कह सुनु हनुमाना * पुरुष जुगल बल रूपनिधाना
धरि बटुरूप देखु तैं जाई * कहेसि जानिजिअसयनबुझाई
पठये बालि होहिं मन मैला * भागौ तुरत तजौ यह सैला
बिप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ * माथ नाय पूँछत अस भयऊ
को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा * छत्रीरूप फिरहु बन बीरा
कठिन भूमि कोमल पद गामी * कवन हेतु बन बिचरहु स्वामी
मृदुल मनोहर सुंदर गाता * सहत दुसह बन आतप बाता
की तुम्ह तीनि देवमहँ कोई * नरनारायन की तुम्ह दोई

दो० जग कारन तारन भवहि, भंजन धरनी भार।
की तुम अषिलभुअनपति, लीन्ह मनुजअवतार १॥

कोसलेस दसरथके जाये * हम पितुबचन मानि बन आये
नाम राम लछिमन दोउ भाई * संग नारि सुकुमारि सोहाई
इहां हरी निसिचर बैदेही * बिप्र फिरहिं हम षोजत तेही
आपन चरित कहा हम गाई * कहहु बिप्र निज कथा बुझाई
प्रभु पहिंचानिपरेउगहि चरना * सो सुष उमा जाइ नहिं बरना
पुलकिततनु मुष आव न बचना * देषत रुचिर बेषकै रचना
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्ही * हर्षहृदय निज नाथहिं चीन्ही
मोर न्याउ मैं पूछा साईं * तुम कस पूंछहु नरकी नाईं
तव मायाबस फिरौं भुलाना * ताते मइँ नहिं प्रभु पहिचाना

दो० एक मै मंद मोहबस, कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ, दीनबंधु भगवान २॥

जदपि नाथ बहु अवगुन मोरे * सेवक प्रभुहि परै जनि भोरे

नाथ जीव तव माया मोहा * सो निस्तरै तुम्हारेहि छोहा
तापर मै रघुवीर दोहाई * जानौं नहिं कछु भजन उपाई
सेवक सुत पति मातु भरोसे * रहै असोच बनै प्रभु पोसे
असकहि परेउ चरन अकुलाई * निज तन प्रगटि प्रीति उरछाई
तब रघुपति उठाइ उर लावा * निज लोचनजल सींचि जुडावा
सुनुकपिजिअमानसिजनिऊना * तैं मम प्रिय लछिमन तें दूना
समदरसी मोहि कह सब कोऊ * सेवक प्रिय अनन्यगति सोऊ

दो० सो अनन्य जाके असि, मति न टरै हनुमंत।
मै सेवक सचराचर, रूपस्वामि भगवंत ३॥

देषि पवनसुत पति अनुकूला * हृदय हरष बीती सब सूला
नाथ सैलपर कपिपति रहई * सो सुग्रीव दास तव अहई
तेहिसन नाथ मयत्री कीजै * दीन जानि तेहि अभय करीजै
सो सीताकर षोज कराइहि * जहँ तहँ मर्कट कोटि पठाइहि
यहिविधि सकल कथा समुझाई * लिये दुवौ जन पीठि चढाई
जब सुग्रीव राम कहँ देषा * अतिसय जन्म धन्यकरि लेषा
सादर मिलेउ नाइ पद माथा * भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा
कपिकर मन बिचार येहि रीती * करिहहिं बिधि मोसन ये प्रीती

दो० तब हनुमंत उभयदिसि, की सब कथा सुनाइ।
पावक साषी देइ करि, जोरी प्रीति दिढाइ ४॥

कीन्हि प्रीति कछु बीच न राषा * लछिमन रामचरित सब भाषा
कह सुग्रींव नयन भरि बारी * मिलिहि नाथ मिथिलेसकुमारी
मंत्रिन्ह सहित इहां येक बारा * बैठ रहेउँ मैं करत बिचारा
गगन पंथ देषी मै जाता * परबस परी बहुत बिलपाता

राम राम हा राम पुकारी * हमहिं देषि दीन्हेउ पट डारी
मागा राम तुरत तेहिं दीन्हा * पट उरलाइ सोच अति कीन्हा
कह सुग्रींव सुनहु रघुबीरा * तजहु सोच मन आनहुँ धीरा
सब प्रकार करिहौं सेवकाई * जेहिबिधि मिलिहि जानकी आई

दो० सषा बचन सुनि हरषे, कृपासिंधु बलसींव।
कारन कवन बसहु बन, मोहि कहहु सुग्रीव ५॥

नाथ बालि अरु मै दोउ भाई * प्रीति रही कछु बरनि न जाई
मयसुत[1] मायावी तेहि नाऊं * आवा सो प्रभु हमरे गाऊं
अर्ध राति पुर द्वार पुकारा * बाली रिपु बल सहै न पारा
धावा बालि देषि सो भागा * मै पुनि गयउँ बंधु सँग लागा
गिरिवर गुहा पैठ सो जाई * तब बाली मोहि कहा बुझाई
परषेसु मोहिं येक पषवारा * नहिं आवौं तब जानेसु मारा
मास दिवस तहँ रहेउँ षरारी * निसरी रुधिर धार तहँ भारी
बालिहतेसि मोहि मारिहि आई * शिला देइ तहँ चलेउँ पराई
मंत्रिन्ह पुर देषा बिनु साईं * दीन्हेउ मोहिं राज बरिआई
बाली ताहि मारि गृह आवा * देषि मोहिं जिअ भेद बढावा
रिपुसम मोहिं मारेसि अतिभारी * हरिलीन्हेसि सर्बस अरु नारी
ताके भय रघुबीर कृपाला * सकल भुअन मै फिरेउँ बिहाला
इहां सापबस आवत नाहीं * तदपि सभीत रहौं मनमाहीं
सुनि सेवक दुष दीनदयाला * फरकिउठी दोउ भुजा बिसाला

दो० सुनु सुग्रींव मारिहौं, बालिहि येकहि बान।
ब्रह्म रुद्र सरनागत, गये न उबरहिं प्रान ६॥

१—मय के दो पुत्र दुंदुभी और मायावी मंदोदरी के भाई॥

जे न मित्र दुष होहिं दुषारी ॥ तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी
निजदुष गिरिसम रजकरि जाना ॥ मित्रक दुष रज मेरुसमाना
जिन्हके असिमति सहज न आई ॥ ते सठ कत हठि करत मिताई
कुपथ निवारि सुपंथ चलावा ॥ गुन प्रगटहि अवगुनहिं दुरावा
देत लेत मन संक न धरई ॥ बलअनुमान सदा हित करई
बिपति कालकर सतगुन नेहा ॥ श्रुति कह संत मित्रगुन येहा
आगे कह मृदु बचन बनाई ॥ पाछे अनहित मन कुटिलाई
जाकरचित अहिगतिसम भाई ॥ अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई
सेवक सठ नृप कृपिन कुनारी ॥ कपटी मित्र सूल सम चारी
सषा सोच त्यागहु बल मोरे ॥ सब बिधि घटब काज मैं तोरे
कह सुग्रींव सुनहु रघुबीरा ॥ बालि महाबल अति रनधीरा
दुंदुभि अस्थिताल दिषराये ॥ बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाये
देषि अमितबल बाढी प्रीती ॥ बालि बधब इन्ह भइ परतीती
बार बार नावइ पद सीसा ॥ प्रभुहिं जान मन हरष कपीसा
उपजा ज्ञान बचन तब बोला ॥ नाथ कृपा मन भयेउ अलोला
सुष संपति परिवार बडाई ॥ सब परिहरि करिहौं सेवकाई
ये सब रामभगति के बाधक ॥ कहहिं संत तवपद अवराधक
सत्रु मित्र सुष दुष जगमाहीं ॥ मायाकृत परमारथ नाहीं
बालि परमहित जासु प्रसादा ॥ मिलेहु राम तुम्ह समनबिषादा
सपनेहुँ जेहिसन होइ लराई ॥ जागे समुझत मन सकुचाई
अब प्रभु कृपा करहु येहिभांती ॥ सब तजि भजन करौं दिनराती
सुनि बिरागसंजुत कपिबानी ॥ बोले बिहँसि राम धनुपानी
जो कछु कहेहु सत्य सब सोई ॥ सषा बचन मम मृषा न होई

नट मर्कट इव सबहिं नचावत * राम षगेस बेद अस गावत
लै सुग्रीव संग रघुनाथा * चले चाप सायक गहि हाँथा
तब रघुपति सुग्रींव पठावा * गर्जेसि जाइ निकट बल पावा
सुनत बालि क्रोधातुर धावा * गहिकर चरन नारि समुझावा
सुनु पति जिन्हहिं मिलेउ सुग्रींवा * ते दोउ बंधु तेजबलसींवा
कोसलेस सुत लछिमन रामा * कालहु जीति सकहिं संग्रामा

दो० कह बाली सुनु भीरु प्रिय, समदरसी रघुनाथ।
जौं कदाचि मोहिं मारहिं, तौं पुनि होउं सनाथ ७॥

असकहि चला महाअभिमानी * तृन समान सुग्रींवहिं जानी
भिरे उभौ बाली अति तर्जा * मुठिका मारि महाधुनि गर्जा
तब सुग्रींव बिकल होइ भागा * मुष्टिप्रहार बज्र सम लागा
मै जो कहा रघुबीर कृपाला * बंधु न होइ मोर यह काला
येक रूप तुम्ह भ्राता दोऊ * तेहि भ्रमते नहिं मारेउँ सोऊ
कर परसा सुग्रींव सरीरा * तन भा कुलिस गई सब पीरा
मेली कंठ सुमनकइ माला * पठवा पुनि बल देइ बिसाला
पुनि नाना बिधि भई लराई * बिटप ओट देषहिं रघुराई

दो० बहुछल बल सुग्रींव कर, हिय हारा भय मानि।
मारा बाली राम तब, हृदय मांझ सर तानि ८॥

परा बिकल महि सरके लागे * पुनि उठि बैठ देषि प्रभु आगे
स्याम गात सिर जटा बनाये * अरुन नयन सर चाप चढाये
पुनिपुनि चितइ चरन चित दीन्हा * सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा
हृदय प्रीति मुष बचन कठोरा * बोला चितइ राम की ओरा
धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं * मारेहु मोहि ब्याध की नाईं

मै बैरी सुग्रीव पिआरा * अवगुन कवन नाथ मोहिं मारा
अनुजबधू भगनी सुतनारी * सुन सठ कन्या सम ये चारी
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकइ जोई * ताहि बधे कछु पाप न होई
मूढ तोहि अतिसय अभिमाना * नारि सिषावन करेसि न काना
ममभुजबल आश्रित तेहिं जानी * मारा चहसि अधम अभिमानी

दो० सुनहु राम स्वामी सन, चल न चातुरी मोरि।
प्रभु अजहू मै पापी, अंतकाल गति तोरि ६॥

सुनत राम अति कोमल बानी * बालि सीस परसेउ निज पानी
अचल करौं तनु राषहु प्राना * बालि कहा सुनु कृपानिधाना
जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं * अंत राम कहि आवत नाहीं
जासु नाम बल संकर कासी * देत सबहिं समगति अबिनासी
मम लोचनगोचर सोइ आवा * बहुरि कि अस प्रभु बनिहि बनावा

छंद

सो नयनगोचर जासु गुन नित नेति कहि श्रुति गावहीं।
जित पवन मन गो निरसकरि मुनिध्यान कबहुँक पावहीं॥
मोहि जानि अतिअभिमानबस प्रभु कहेउ राषु सरीरही।
अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूरही १॥
अब नाथ करि करुना बिलोकहु देहु जो बर मागऊं।
जेहि जोनि जन्मो कर्मबस तहँ रामपद अनुरागऊं॥
यह तनय मम सम बिनय बल कल्यानपद प्रभु लीजिये।
गहि बाहँ सुरनरनाहँ आपन दास अंगद कीजिये २॥

दो० रामचरन दृढ प्रीतिकरि, बालि कीन्ह तनुत्याग।
सुमनमाल जिमि कंठते, गिरत न जानै नाग १०॥

राम बालि निज धाम पठावा * नगर लोग सब ब्याकुल धावा

नाना बिधि बिलाप कर तारा * छूटे केस न देहँ सँभारा
तारा बिकल देषि रघुराया * दीन्ह ज्ञान हरिलीन्ही माया
छिति जल पावक गगन समीरा * पंचरचित अति अधम सरीरा
प्रगट सो तन तव आगे सोवा * जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा
उपजा ज्ञान चरन तब लागी * लीन्हेसि परमभक्ति बर मागी
उमा दारुजोषित की नाईं * सबहि नचावत राम गोसाईं
तब सुग्रीवहिं आयसु दीन्हा * मृतककर्म बिधिवत सब कीन्हा
राम कहा अनुजहि समुझाई * राज देहु सुग्रीवहिं जाई
रघुपति चरन नाइ करि माथा * चले सकल प्रेरित रघुनाथा

दो॰ लछिमन तुरत बोलाये, पुरजन बिप्र समाज।
राज दीन्ह सुग्रीव कहँ, अंगद कहँ जुबराज॥११॥

उमा राम सम हित जगमाहीं * गुरु पितु मातु बंधु प्रभु नाहीं
सुर नर मुनि सबके यह रीती * स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती
बालि त्रास ब्याकुल दिनराती * तन बहु ब्रन चिंता जर छाती
सोइ सुग्रीव कीन्ह कपिराऊ * अति कृपाल रघुबीर सुभाऊ
जानतहूँ अस प्रभु परिहरहीं * काहे न बिपति जाल नर परहीं
पुनि सुग्रीवहिं लीन्ह बोलाई * बहुप्रकार नृपनीति सिषाई
कह प्रभु सुनु सुग्रीव हरीसा * पुर न जाउँ दस चारि बरीसा
गत ग्रीषम बरषा रितु आई * रहिहौं निकट सयलपर छाई
अंगद सहित करहु तुम्ह राजू * संतत हृदय धरेहु मम काजू
जब सुग्रीव भवन फिरि आये * राम प्रबर्षन गिरिपर छाये

दो॰ प्रथमहिं देवन गिरि गुहा[1], राषेउ रुचिर बनाइ।

१- दरी तु कंदरा वा स्त्री देवखातबिले गुहा इत्यमरः॥

राम कृपानिधि कछुक दिन, बास करहिंगे आइ १२॥

सुंदर बन कुसुमित अतिसोभा * गुंजत मधुपनिकर मधु लोभा
कंद मूल फल पत्र सोहाये * भये बहुत जबतें प्रभु आये
देषि मनोहर सैल अनूपा * रहे तहँ अनुज सहित सुरभूपा
मधुकर षग मृग तन धरि देवा * करहिं सिद्ध मुनि प्रभुकै सेवा
मंगलरूप भयेउ बन तबतें * कीन्ह निवास रमापति जबतें
फटिकसिला अति शुभ्र सोहाई * सुष आसीन तहां दोउ भाई
कहत अनुजसन कथा अनेका * भगति बिरति नृप नीति बिबेका
बरषा काल मेघ नभ छाये * गर्जत लागत परम सोहाये

दो० लछिमन देषु मोर गन, नाचत बारिद पेषि।
गृही बिरतिरत हरष जस, बिस्नुभक्त कहँ देषि १३॥

घन घमंड नभ गर्जत घोरा * प्रियाहीन डरपत मन मोरा
दामिनि दमक रह न घनमाहीं * षलकै प्रीति जथा थिर नाहीं
बरषहिं जलद भूमि नियराये * जथा नवहिं बुध बिद्या पाये
बुंद अघात सहहिं गिरि कैसें * षल के बचन संत सह जैसें
छुद्रनदी भरि चली तोराई * जस थोरे धन षल इतराई
भूमि परत भा ढाबर पानी * जनु जीवहि माया लपटानी
सिमिटिसिमिटिजलभरहिंतलावा * जिमिसद्गुनसज्जनपहिंआवा
सरिताजल जलनिधिमहँ जाई * होइअचल जिमि जिव हरिपाई

दो० हरित भूमि तृन संकुल, समुझिपरहि नहिं पंथ।
जिमि पाषंड बादतें, गुप्त होहिं सदग्रंथ १४॥

दादुर धुनि चहुँ दिसा सोहाई * बेद पढहिं जनु बटु समुदाई
नव पल्लव भे बिटप अनेका * साधक मन जस मिले बिबेका

अर्क जवास पात बिनु भयेऊ * जस सुराज षल उद्यम गयेऊ
षोजत कतहुँ मिलै नहिं धूरी * करै क्रोध जिमि धर्महिं दूरी
ससि संपन्न सोह महि कैसी * उपकारी कै संपति जैसी
निसितमघन षद्योत बिराजा * जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा
महाबृष्टि चलि फूटि किआरी * जिमि सुतंत्र भये बिगरहिं नारी
कृषी निरावहिं चतुर किसाना * जिमि बुध तजहिं मोहमदमाना
देषिअत चक्रबाक षग नाहीं * कलिहि पाइ जिमि धर्म पराहीं
ऊसर बरषै तृन नहिं जामा * जिमि हरिजन हियँ उपज न कामा
बिबिधजंतु संकुल महि भ्राजा * प्रजा बाढ जिमि पाइ सुराजा
जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना * जिमि इंद्री गन उपजे ज्ञाना

दो० कबहुँ प्रबल मारुत बह, जहँ तहँ मेघ बिलाहिं।
जिमि कपूत के उपजे, कुल सद्धर्म नसाहिं १५॥
कबहुँ दिवस महँ निबिडतम, कबहुँक प्रगट पतंग।
बिनसै उपजै ज्ञान जिमि, पाइ कुसंग सुसंग १६॥

बरषा बिगत सरद रितु आई * लछिमन देषहु परम सोहाई
फूले कास सकल महि छाई * जनु बरषाकृत प्रगट बुढ़ाई
उदित अगस्ति पंथ जल सोषा * जिमि लोभहि शोषइ संतोषा
सरिता सर निर्मल जल सोहा * संतहृदय जस गत मदमोहा
रस रस सूष सरित सर पानी * ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी
जानि सरद रितु षंजन आये * पाइ समय जिमि सुकृत सोहाये
पंक न रेनु सोह अस धरनी * नीतिनिपुन नृपकै जसि करनी
जल संकोच बिकल भइ मीना * अबुध कुटुम्बी जिमि धनहीना
बिनु घन निर्मल सोह अकासा * हरिजन इव परिहरि सब आसा

कहुँ कहुँ बृष्टि सारदी थोरी * कोउ येक पाव भगति जिमि मोरी
दो० चले हरषि तजि नगर नृप, तापस बनिक भिषारि।
जिमि हरिभगति पाइ श्रम, तजहिं आश्रमी चारि १७॥
सुषी मीन जे नीर अगाधा * जिमि हरिसरन न येको बाधा
फूले कमल सोह सर कैसे * निर्गुन ब्रह्म सगुन भये जैसे
गुंजत मधुकर मुषर अनूपा * सुंदर षग रव नाना रूपा
चक्रवाक मन दुष निषि पेषी * जिमि दुर्जन परसंपति देषी
चातक रटत तृषा अति वोही * जिमि सुष लहै न संकरद्रोही
सरदातप निसि ससि अपहरई * संत दरस जिमि पातक टरई
देषि इंदु चकोर समुदाई * चितवहिं जिमि हरिजन हरि पाई
मसक दंस बीते हिमि त्रासा * जिमि द्विजद्रोह किये कुलनासा
दो० भूमि जीव संकुल रहे, गये सरदरितु पाइ।
सदगुरु मिले जाहिं जिमि, संसय भ्रम समुदाइ १८॥
बरषा गत निर्मल रितु आई * सुधि न तात सीता कै पाई
येक बार कैसेहुँ सुधि जानौं * कालहु जीति निमिषमहँ आनौं
कतहुँ रहौ जौ जीवति होई * तात जतन करि आनौं सोई
सुग्रींवहुँ सुधि मोरि बिसारी * पावा राज कोस पुर नारी
जेहि सायक मै मारा बाली * तेहि सर हतउँ मूढ कहँ काली
जासु कृपा छूटहिं मद मोहा * ताकहुँ उमा कि सपनेहु कोहा
जानहिं यह चरित्र मुनि ज्ञानी * जिन रघुबीर चरनरति मानी
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना * धनुष चढाय गहे कर बाना
दो० तब अनुजहि समुझावा, रघुपति करुनासींव।
भै देषाइ लै आवहु, तात सषा सुग्रींव १९॥

इहां पवनसुत हृदय बिचारा * राम काज सुग्रींव बिसारा
निकट जाइ चरनन्हि सिरनावा * चारिहुँबिधितेहिकहिसमुझावा
सुनि सुग्रींव परम भय माना * विषय मोर हरिलीन्हेउँ ज्ञाना
अब मारुतसुत दूत समूहा * पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा
कहेहु पाष महँ आव न जोई * मोरेकर ताकर बध होई
तब हनुमंत बोलाये दूता * सबकर करि सनमान बहूता
भय अरु प्रीति नीति देषराई * चले सकल चरनन्हि सिरनाई
येहि अवसर लछिमन पुर आये * क्रोध देषि कपि जहँ तहँ धाये

दो० धनुष चढाइ कहा तब, जारि करौं पुरछार।
ब्याकुल नगर देषि तब, आयेउबालिकुमार २०॥

चरननाइ सिर बिनती कीन्ही * लछिमन अभयबाहँ तेहि दीन्ही
क्रोधवंत लछिमन सुनि काना * कहकपीस अतिभय अकुलाना
सुनु हनुमंत संग लै तारा * करि बिनती समुझाउ कुमारा
तारा सहित जाइ हनुमाना * चरन बंदि प्रभु सुजस बषाना
करि बिनती मंदिर लेइ आये * चरन पषारि पलँग बैठाये
तब कपीस चरनन्हि सिरुनावा * गहि भुज लछिमन कंठलगावा
नाथ बिषयसम मद कछु नाहीं * मुनिमन मोह करै छन माहीं
सुनत बिनीत बचन सुष पावा * लछिमनतेहि बहुबिधिसमुझावा
पवनतनय सब कथा सुनाई * जेहि बिधि गये दूत समुदाई

दो० हरषि चले सुग्रींव तब, अंगदादि कपि साथ।
रामानुज आगे करि, आये जहँ रघुनाथ २१॥

नाइ चरन सिर कह करजोरी * नाथ मोहिं कछु नाहिंन षोरी
अतिसय प्रबल देव तव माया * छूटै राम करहु जौ दाया

विषयवस्य सुर नर मुनि स्वामी * मैं पावर पसु कपि अतिकामी
नारि नयनसर जाहि न लागा * घोर क्रोध तमनिसि जो जागा
लोभ पांस जेहिं गर न बँधाया * सो नर तुम्ह समान रघुराया
यह गुन साधन तें नहिं होई * तुम्हरी कृपा पाव कोइ कोई
तब रघुपति बोले मुसुकाई * तुम्ह प्रियमोहिभरत जिमिभाई
अब सोइ जतन करहु मन लाई * जेहि बिधि सीताकै सुधिपाई

दो॰ येहि बिधि होत बतकही, आये बानर जूथ।
नाना बरन सकल दिसि, देषिय कीसबरूथ २२॥

बानर कटक उमा मैं देषा * सो मूरुष जो करन चह लेषा
आइ रामपद नावहिं माथा * निरषि वदन सब होहिं सनाथा
अस कपि येक न सेना माहीं * राम कुसल जेहि पूंछी नाहीं
यह कछु नहिं प्रभुकै अधिकाई * बिस्वरूप ब्यापक रघुराई
ठाढे जहँ तहँ आयसु पाई * कह सुग्रींव सबहि समुझाई
राम काज अरु मोर निहोरा * बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा
जनकसुता कहँ षोजहु जाई * मास दिवस महँ आयहु भाई
अवधि मेटि जो बिनु सुधि पाये * आवइ बनिहि सो मोहि मराये

दो॰ बचन सुनत सब बानर, जहँ तहँ चले तुरंत।
तब सुग्रींव बोलाये, अंगद नल हनुमंत २३॥

सुनहु नील अंगद हनुमाना * जामवंत मतिधीर सुजाना
सकलसुभट मिलि दच्छिन जाहू * सीतासुधि पूछेहु सब काहू
मन क्रमबचनसोजतनबिचारेहु * रामचंद्र कर काज सँवारेहु
भानुपीठि सेइअ उर आगी * स्वामिहिं सर्ब भाव छलत्यागी

१—पृष्ठेन सेवते चार्कमुदरेण हुताशनम्। स्वामिनं सर्वभावेन परलोकहितेच्छया॥

तजि माया सेइअ परलोका * मिटहिं सकल भवसंभव सोका
देहँ धरे कर यह फल भाई * भजिअ राम सब काम बिहाई
सोइ गुनज्ञ सोई बड भागी * जो रघुबीर चरन अनुरागी
आयसु माँगि चरन सिर नाई * चले हरषि सुमिरत रघुराई
पाछे पवनतनय सिर नावा * जानि काज प्रभु निकट बोलावा
परसा सीस सरोरुह पानी * कर मुद्रिका दीन्ह जनजानी
बहु प्रकार सीतहि समुझायेहु * कहि बलबिरह बेगि तुम्ह आयेहु
हनुमत जन्म सफल करि माना * चलेउ हृदय धरि कृपानिधाना
जद्यपि प्रभु जानत सब बाता * राजनीति राषत सुरत्राता

दो॰ चले सकल बनषोजत, सरिता सर गिरि षोह।
रामकाज लयलीन मन, बिसरा तनकर छोह २४॥

कतहुँ होइ निसिचरसैं भेंटा * प्रान लेइँ येक येक चपेटा
बहु प्रकार गिरिकानन हेरहिं * कोउ मुनि मिलहि ताहि सब घेरहिं
लागि तृषा अतिसय अकुलाने * मिलइ न जल घन गहन भुलाने
मन हनुमान कीन्ह अनुमाना * मरन चहत सब बिनु जलपाना
चढि गिरि सिषर चहूंदिसि देषा * भूमि बिबर येक कौतुक पेषा
चक्रबाक बक हंस उडाहीं * बहुतक षग प्रबिसहिं तेहि माहीं
गिरिते उतरि पवनसुत आवा * सबकहँ लै सोइ बिबर देषावा
आगे करि हनुमंतहि लीन्हा * पैठे बिबर बिलंब न कीन्हा

दो॰ दीषजाइ उपबन बर, सर बिगसित बहु कंज।
मंदिर येक रुचिर तहँ, बैठि नारि तपपुंज २५॥

दूरितें ताहि सबन्हि सिरनावा * पूंछे निज बिरतांत सुनावा
तेहिं तब कहा करहु जलपाना * षाहु सरस सुंदर फल नाना

मज्जन कीन्ह मधुरफल षाये * तासु निकट पुनि सब चलि आये
तेहिं सब आपनि कथा सुनाई * मैं अब जाव जहां रघुराई
मूंदहु नयन बिवर तजि जाहू * पैहहु सीतहि जनि पछिताहू
नयन मूंदि पुनिदेषहिं बीरा * ठाढे सकल सिंधु के तीरा
सो पुनि गई जहां रघुनाथा * जाइ कमलपद नायेसि माथा
नाना भाँति विनय तेहि कीन्ही * अनपाइनी भगति प्रभु दीन्ही

दो॰ बदरीबन कहँ सो गई, प्रभु अज्ञा धरि सीस।
उरधरि राम चरन जुग, जे बंदत अज ईस २६ ॥

इहां बिचारहिं कपि मनमाहीं * बीती अवधि काज कछु नाहीं
सब मिलि कहहिं परस्पर बाता * बिनु सुधि लये करब का भ्राता
कह अंगद लोचन भरि बारी * दुहूँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी
इहां न सुधि सीता कै पाई * उहां गये मारिहि कपिराई
पिता बधेपर मारत मोही * राषा राम निहोर न ओही
पुनि पुनि अंगद कह सब पाहीं * मरन भयो कछु संसय नाहीं
अंगद बचन सुनत कपि बीरा * बोलि न सकहिं नयन बह नीरा
छन येक सोच मगन होइ गये * पुनि अस बचन कहत सब भये
हम सीता कै सोध बिहीना * नहिं जै हैं जुबराज प्रबीना
अस कहि लवनसिंधुतट जाई * बैठे कपि सब दर्भ डसाई
जामवंत अंगद दुष देषी * कही कथा उपदेस बिसेषी
तात रामकहँ नर जनि मानहु * निर्गुन ब्रह्म अजित अज जानहु
हम सब सेवक अति बडभागी * संतत सगुन ब्रह्म अनुरागी

दो॰ निज इच्छा प्रभु अवतरइँ, सुर महि गो द्विज लागि।
सगुन उपासक संगतहँ, रहहिं मोक्ष सब त्यागि २७ ॥

येहिबिधिकथा कहहिं बहुभाँती * गिरि कन्दरा सुनी संपाती
बाहेर होइ देषि बहु कीसा * मोहि अहार दीन्ह जगदीसा
आजु सबहिकहु भच्छन करऊं * दिनबहुचलेउअहारबिनुमरऊं
कबहुँ न मिलै भरि उदर अहारा * आजु दीन्ह बिधि येकहिंबारा
डरपे गीध बचन सुनि काना * अब भा मरन सत्य हम जाना
कपि सब उठे गीध कहँ देषी * जामवंत मन सोच बिसेषी
कह अंगद बिचारि मन माहीं * धन्य जटाइउसम कोउ नाहीं
रामकाज कारन तन त्यागी * हरिपुर गयउ परम बडभागी
सुनि षग हरष सोकजुत बानी * आवा निकट कपिन्ह भयमानी
तिन्हहिं अभयकरि पूंछेसिजाई * कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई
सुनि संपाति बंधुकै करनी * रघुपतिमहिमा बहुबिधि बरनी

दो० मोहिं लैजाहु सिंधुतट, देउं तिलांजलि ताहि।
बचन सहाइ करब मैं, पैहहु षोजहु जाहि २८॥

अनुज कृया करि सागर तीरा * कहि निज कथा सुनहु कपिबीरा
हम दोउ बंधु प्रथम तरुनाई * गगन गये रबि निकट उडाई
तेज न सहिसक सो फिरि आवा * मै अभिमानी रबि निअरावा
जरे पंष अति तेज अपारा * परेउ भूमि करि घोर चिकारा
मुनि येक नाम चंद्रमा वोही * लागी दया देषिकरि मोहीं
बहुप्रकार तेहि ज्ञान सुनावा * देहजनित अभिमान छोडावा
त्रेता ब्रह्म मनुज तन धरही * तासु नारि निसिचरपति हरही
तासु षोज पठइहि प्रभु दूता * तिन्हहि मिले तैं होब पुनीता
जमिहहिं पंष करसि जनि चिंता * तिन्हहिं देषाय दिहसु तैं सीता
मुनिकै गिरा सत्य भइ आजू * सुनि मम बचन करहु प्रभुकाजू

गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका * तहँ रह रावन सहज असंका
तहाँ असोकउपवन जहँ रहई * सीता बैठि सोचरत अहई

दो० मै देषउँ तुम्ह नाहीं, गीधहि दिष्टि अपार।
बूढ भयेउँ नत करतेउँ, कछुक सहाइ तुम्हार २९॥

जो नाघै सतजोजन सागर * करै सो रामकाज मतिआगर
मोहि बिलोकि धरहु मन धीरा * रामकृपा कस भयेउ सरीरा
पापिउ जाकर नाम सुमिरहीं * अति अपार भवसागर तरहीं
तासु दूत तुम्ह तजि कदराई * राम हृदय धरि करहु उपाई
असकहिगरुडगीधजब गयेऊ * तिन्हकेमन अतिबिसमयभयेऊ
निज निज बल सबकाहू भाषा * पार जाइकर संसय राषा
जरठ भयेउँ अब कहै रिछेसा * नहिं तन रहा प्रथम बललेसा
जबहिं त्रिबिक्रम भयेउ षरारी * तब मै तरुन रहेउँ बल भारी

दो० बलि बांधत प्रभु बाढेउ, सो तनु बरनि न जाइ।
उभयघरी महँ कीन्ही, सात प्रदछिन धाइ ३०॥

अंगद कहै जाउँ मैं पारा * जिअ संसय कछु फिरती बारा
जामवंत कह तुम्ह सबलायक * पठइअ किमि सबहीकर नायक
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना * का चुप साधि रहेहु बलवाना
पवनतनय बल पवन समाना * बुधि बिबेक बिज्ञान निधाना
कवनसो काज कठिन जगमाहीं * जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं
राम काज लगि तव अवतारा * सुनतहिं भयेउ पर्वताकारा
कनक बरन तन तेज बिराजा * मानहुँ अपर गिरिन्हकर राजा
सिंहनाद करि बारहिं बारा * लीलहिं नांघउँ जलनिधिषारा
सहित सहाइ रावनहिं मारी * आनौं इहां त्रिकूट उपारी

जामवंत मै पूंछउं तोहीं * उचित सिषावन दीजहु मोहीं
येतना करेहु तात तुम्ह जाई * सीतहि देषि कहहु सुधि आई
तब निज भुजबल राजिवनैना * कौतुक लागि संग कपि सैना

छंद

कपि सेन संग सँघारि निसिचर राम सीतहि आनिहैं।
त्रैलोक पावन सुजस सुर मुनि नारदादि बषानिहैं॥
जो सुनत गावत कहत समुझत परमपद नर पावई।
रघुबीर पदपाथोज मधुकर दास तुलसी गावई ३॥

दो० भवभेषज रघुनाथ जसु, सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्हके सकल मनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिसिरारि ३१॥

सो० नीलोत्पल तनस्याम, कामकोटि सोभा अधिक।
सुनिअ तासु गुनग्राम, जासु नाम अघषगबधिक ३॥

मास पारायण दिन २३

किष्किंधाकांड समाप्त.

इति श्रीरामचरित्रमानसे सकलकालिकलुषविध्वंसने विशुद्धसंतोषसंपादनो नाम चतुर्थः सोपानः॥ ४॥
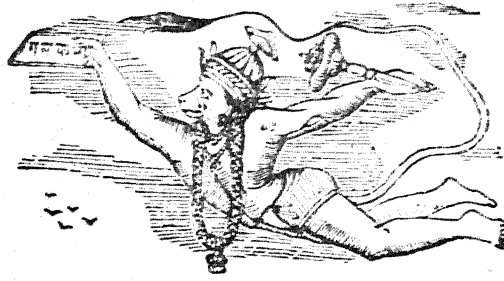
श्री गणेशाय नमः

श्रीरामचरितमानस

पंचम सोपान

सुन्दरकाण्ड

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं गीर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् १ ॥

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसञ्च २ ॥

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातन्नमामि ३ ॥

जामवंत के बचन सोहाये * सुनि हनुमंत हृदय अति भाये
तबलगि मोहिपरिषेहु तुम भाई * सहि दुष कंद मूल फल षाई
जबलगि आवौं सीतहि देषी * होइ काज मोहि हरष बिसेषी
अस कहि नाइ सबन्हि कहँ माथा * चलेउ हरषि हियधरि रघुनाथा
सिंधुतीर येक सुंदर भूधर * कौतुक कूदि चढेउ ता ऊपर
बार बार रघुबीर सँभारी * तरकेउ पवनतनय बलभारी
जेहिगिरि चरन देइ हनुमंता * चलेउ सो गा पाताल तुरंता
जिमि अमोघ[1] रघुपति करबाना * तेही भाँति चला हनुमाना
जलनिधि रघुपति दूतबिचारी * तइ मैनाक होहि श्रमहारी

दो० हनूमान तेहि परसा, कर पुनि कीन्ह प्रनाम।
राम काज कीन्हे बिनु, मोहि कहा बिश्राम १॥

जात पवनसुत देवन्ह देषा * जानै कहँ बल बुद्धि बिसेषा
सुरसा नाम अहिन्ह की माता * पठइन्हि आइ कहा तेहि बाता
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा * सुनत बचन कह पवनकुमारा
रामकाज करि फिरि मै आवौं * सीताकै सुधि प्रभुहि सुनावौं
तब तव बदन पइठिहौं आई * सत्य कहौं मोहि जानदे माई
कउनेहु जतन देइ नहिं जाना * ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना
जोजन भरि तेहि बदन पसारा * कपि तन कीन्ह दुगुन बिस्तारा
सोरह जोजन मुष तेहिं ठयेऊ * तुरत पवनसुत बत्तिस भयेऊ
जस जस सुरसा बदन बढावा * तासु दून कपिरूप दिषावा
सतजोजन तेहिं आनन कीन्हा * अतिलघुरूप पवनसुत लीन्हा
बदन पइठि पुनि बाहेर आवा * मागी बिदा ताहि सिर नावा

१—मोघं निरर्थकं स्पष्टम् इति विश्वकोशे ॥

मोहि सुरन्ह जेहि लागि पठावा * बुधि बल मरम तोर मैं पावा

दो० राम काज सब करिहहु, तुम्ह बल बुद्धिनिधान।
आसिष देइ गई सो, हरषि चलेउ हनुमान २॥

निसिचरि येक सिंधुमहँ रहई * करि माया नभके षग गहई
जीवजंतु जो गगन उडाहीं * जलबिलोकि तिन्हकैपरिछाहीं
गहइ छांह सक सो न उडाई * येहिबिधि सदाँ गगनचर षाई
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा * तासुकपट कपि तुरतहिं चीन्हा
ताहि मारि मारुतसुत बीरा * बारिधिपार गयेउ मतिधीरा
तहां जाइ देषी बन सोभा * गुंजत चंचरीक मधु लोभा
नाना तरु फल फूल सोहाये * षग मृग बृंद देषि मनभाये
सैल बिसाल देषि येक आगे * तापर धाइ चढेउ भय त्यागे
उमा न कछु कपि कै अधिकाई * प्रभुप्रताप जो कालहि षाई
गिरिपर चढि लंका तेहि देषी * कहि न जाइ अतिदुर्गबिसेषी
अतिउतंग जलनिधिचहुँपासा * कनककोटकर परम प्रकासा

छंद

कनककोट बिचित्र मनिकृत सुंदरायतना घना।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथी चारु पुर बहु बिधि बना॥
गज बाजि षच्चर निकर पदचर रथ बरूथन्हिको गनै।
बहुरूप निसिचरजूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै १॥
बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापी सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्यारूप मुनि मन मोहहीं॥
कहुँ माल देहँ बिसाल सैलसमान अतिबल गर्जहीं।
नाना अषारन्ह भिरहिं बहुबिधि येक येकन्हि तर्जहीं २॥

करिजतन भटकोटिन्ह बिकटतन नगर चहुँदिसिरक्षहीं।
कहुँ महिष मानुष धेनु षर अज षल निसाचर भक्षहीं ॥
येहिलागि तुलसीदास इन्हकी कथा कछुयेक है कही।
रघुबीर सरतीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ३ ॥

दो० पुर रषवारे देषि बहु, कपि मन कीन्ह बिचार।
अति लघुरूप धरौं निसि, नगर करौं पइसार ३ ॥

मसक समान रूप कपि धरी * लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी
नाम लंकनी येक निसिचरी * सो कह चलेसि मोहि निंदरी
जाने नहीं मरम सठ मोरा * मोर अहार जहांलगि चोरा
मुठिका येक महा कपि हनी * रुधिर बमत धरनी ढनमनी
पुनि संभारि उठी सो लंका * जोरि पानि कर बिनय ससंका
जब रावनहिं ब्रह्म बर दीन्हा * चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा
बिकल होसि तैं कपिके मारे * तब जानेसु निसिचर संघारे
तात मोर अति पुन्य बहूता * देषेउँ नयन रामकर दूता

दो० तात स्वर्ग अपबर्ग सुष, धरिअ तुला येकअंग।
तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुष लवसतसंग ४ ॥

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा * हृदय राषि कोसलपुर राजा
गरल सुधा रिपु करै मिताई * गोपद सिंधु अनल सितलाई
गरुड सुमेरु रेनु सम ताही * राम कृपाकरि चितवा जाही
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना * पैठा नगर सुमिरि भगवाना
मंदिर मंदिर प्रतिकरि सोधा * देषे जहँ तहँ अगिनित जोधा
गयेउ दसानन मंदिर माहीं * अति बिचित्र कहिजात सो नाहीं

१ —मसको बिडालो मार्जारो वोतुःप्रचुरआखुभुक् इति कोशे ॥

सयन किये देषा कपि तेही * मंदिरमहँ न दीष वैदेही
भवन येक पुनि दीष सोहावा * हरिमंदिर तहँ भिन्न बनावा

दो॰ रामायुध अंकित गृह, सोभा बरनि न जाइ।
नवतुलसी के बृंद तहँ, देषि हरष कपिराइ ५॥

लंका निसिचर निकर निवासा * इहां कहां सज्जन कर वासा
मन महँ तरक करै कपि लागा * तेही समय बिभीषन जागा
राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा * हृदय हरष कपि सज्जन चीन्हा
येहि सन हठि करिहौं पहिचानी * साधु ते होइ न कारज हानी
बिप्ररूप धरि बचन सुनाये * सुनत बिभीषन उठि तहँ आये
करि प्रनाम पूंछी कुसलाई * बिप्र कहहु निज कथा बुझाई
की तुम्ह हरिदासन्ह महँ कोई * मोरे हृदय प्रीति अति होई
की तुम्ह राम दीनअनुरागी * आयेहु मोहि करन वडभागी

दो॰ तब हनुमंत कही सब, रामकथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलकमन, मगन सुमिरि गुनग्राम ६॥

सुनहुँ पवनसुत रहनि हमारी * जिमि दसनन्हि महँ जीभ बिचारी
तात कबहुँ मोहि जानि अनाथा * करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा
तामस तन कछु साधन नाहीं * प्रीति न पदसरोज मन माहीं
अब मोहि भा भरोस हनुमंता * बिनु हरिकृपा मिलहिं नहिं संता
जौ रघुबीर अनुग्रह कीन्हा * तौ तुम्ह मोहि दरस हठि दीन्हा
सुनहु बिभीषन प्रभु कइ रीती * करहिं सदाँ सेवक पर प्रीती
कहहु कवन मै परम कुलीना * कपि चंचल सबही बिधि हीना
प्रात लेइ जो नाम हमारा * तेहि दिन ताहि न मिलै अहारा

दो॰ अस मै अधम सषा सुनु, मोहू पर रघुबीर।

कीन्ही कृपा सुमिरि गुन, भरे बिलोचन नीर ७॥
जानतहूँ अस स्वामि बिसारी * फिरहिं ते काहे न होहिं दुषारी
येहि बिधि कहत रामगुनग्रामा * पावा अनिर्वाच्य बिश्रामा
पुनि सब कथा बिभीषन कही * जेहि बिधि जनकसुता तहँ रही
तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता * देषी चहौं जानकी माता
जुगुति बिभीषन सकल सुनाई * चलेउ पवनसुत बिदा कराई
करि सोइ रूप गयेउ पुनि तहँवां * बन असोक सीता रह जहँवां
देषि मनहिं महँ कीन्ह प्रनामा * बैठेहिं बीति जात निसि जामा
कृस तनु सीस जटा येक बेनी * जपति हृदय रघुपतिगुनश्रेनी
दो॰ निज पद नयन दिये मन, रामचरन महँ लीन।
परम दुषी भा पवनसुत, देषि जानकी दीन ८॥
तरुपल्लव महँ रहा लुकाई * करै बिचार करौं का भाई
तेहि अवसर रावन तहँ आवा * संग नारि बहु किये बनावा
बहुबिधिषलसीतहि समुझावा * साम दाम भय भेद देषावा
कह रावन सुनु सुमुषि सयानी * मंदोदरी आदि सब रानी
तव अनुचरी करौं पन मोरा * येकबार बिलोकु मम ओरा
तृन धरि वोट कहति बैदेही * सुमिरि अवधपति परमसनेही
सुनु दसमुष षद्योत प्रकासा * कबहुँकि नलिनी करइ बिकासा
असमनसमुझु कहतिजानकी * षल सुधि नहिं रघुबीर बानकी
सठ सूने हरि आनेहि मोही * अधम निलज्ज लाज नहिं तोही
दो॰ आपुहि सुनि षद्योतसम, रामहिं भानु समान।
परुषबचनसुनि काढि असि, बोला अति षिसिआन ९॥
सीता तैं मम कृत अपमाना * कटिहौं तव सिर कठिन कृपाना

अशोक वन में सीता ।
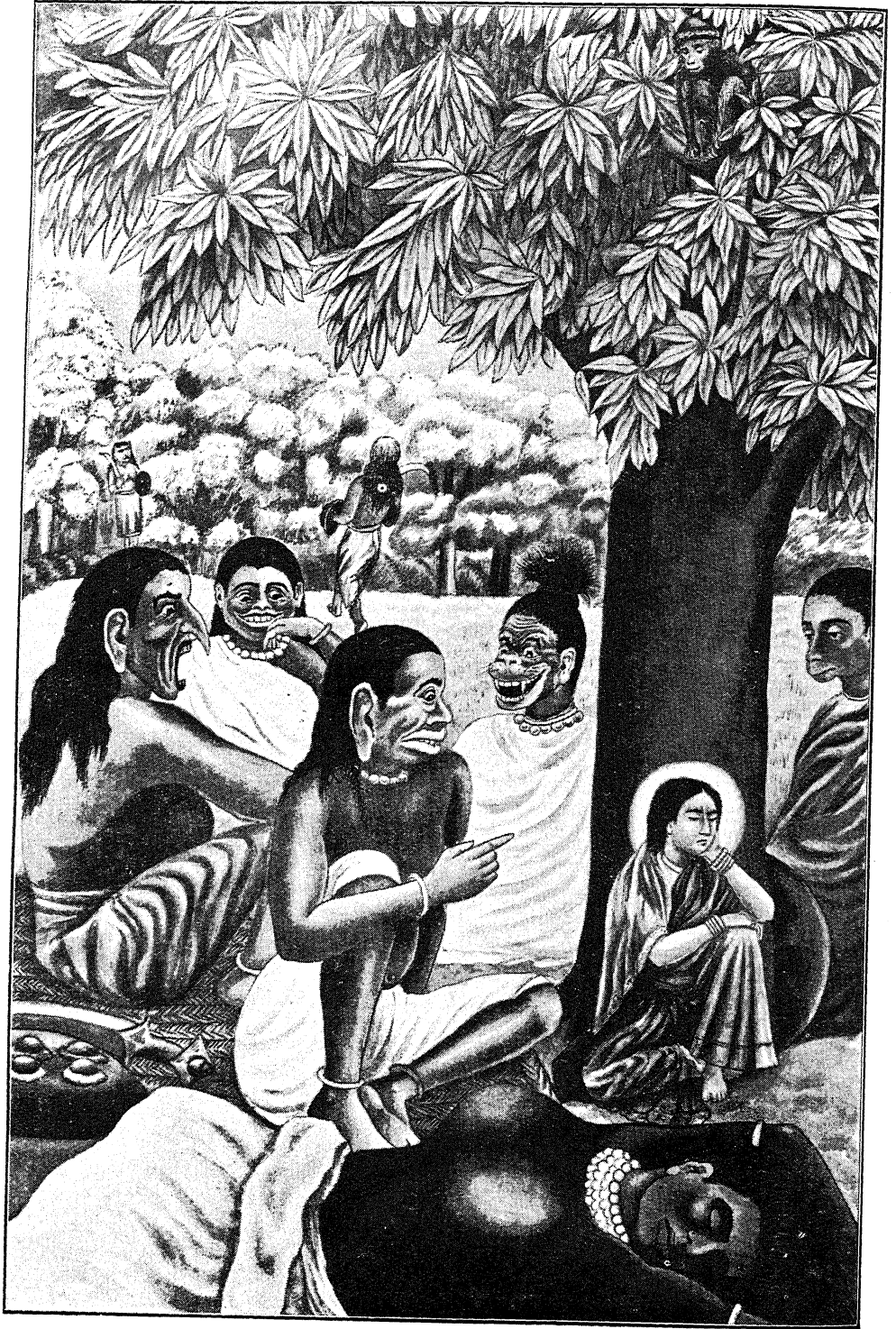
(शोक निवारक तरु तरे) घोर निशाचरि-वृन्द ।
सीतहिं त्रास दिखावहीं धरहिं रूप बहु मन्द ॥

नाहिं तौ सपदि मानु मम बानी ❋ सुमुषि होति नत जीवनहानी
स्यामसरोज दामसम सुंदर ❋ प्रभुभुज करिकरसम दसकंधर
सोभुजकंठ कि तवअसि घोरा ❋ सुनुसठ असप्रमान पन मोरा
चंद्रहास हर मम परितापं ❋ रघुपति बिरह अनल संजातं
सीतलनिसितव असिबरधारा ❋ कह सीता हरु मम दुष भारा
सुनत बचन पुनि मारन धावा ❋ मयतनया कहि नीति बुझावा
कहेसिसकलनिसिचरिन्हबोलाई❋सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई
मास दिवस महँ कहा न माना ❋ तौ मै मारबि काढि कृपाना

दो० भवनगयेउदसकंधतब, इहां पिसाचिनि बृंद।
सीतहि त्रास देषावहिं, धरहिं रूप बहु मंद १०॥

त्रिजटा नाम राछसी येका ❋ रामचरनरति निपुन बिबेका
सबन्हौ बोलि सुनायेसि सपना ❋ सीतहि सेइ करहु हित अपना
सपने बानर लंका जारी ❋ जातुधान सेना सब मारी
षरआरूढ नगन दससीसा ❋ मुंडितसिर षंडित भुजबीसा
येहिबिधि सोदच्छिनदिसिजाई ❋ लंका मनहुँ बिभीषन पाई
नगर फिरी रघुबीर दोहाई ❋ तब प्रभु सीता बोलि पठाई
यह सपना मै कहौं पुकारी ❋ होइहि सत्य गये दिन चारी
तासु बचन सुनि ते सब डरीं ❋ जनकसुता के चरनन्हि परीं

दो० जहँ तहँ गईं सकल तब, सीताकर मन सोच।
मास दिवस बीते मोहि, मारिहिनिसिचरपोच ११॥

त्रिजटा सन बोलीं करजोरी ❋ मातु बिपतिसंगिनि तइँ मोरी
तजौं देहँ करु बेगि उपाई ❋ दुसह बिरह अब नाहिं सहि जाई
आनिकाठ रचु चिता बनाई ❋ मातु अनल पुनि देहि लगाई

सत्य करहि मम प्रीति सयानी * सुनैको श्रवनसूल सम बानी
सुनतबचनपदगहिसमुझायेसि * प्रभुप्रताप बल सुजससुनायेसि
निसिनअनलमिलसुनुसुकुमारी * असकहि सोनिजभवनसिधारी
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला * मिलिहि नपावक मिटिहिनसूला
देषिअत प्रगट गगन अंगारा * अवनि न आवत येकौ तारा
पावकमयससि श्रवत न आगी * मानहुँ मोहि जानि हतभागी
सुनहि बिनयममबिटपअसोका * सत्यनाम करु हरु मम सोका
नूतन किसलय अनलसमाना * देहि अगिनि तन करहिं निदाना
देषि परम बिरहाकुल सीता * सो छन कपिहि कलपसम बीता

सो० कपिकरि हृदय बिचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार, दीन्हहरषि उठि करगहेउ १॥

तब देषी मुद्रिका मनोहर * राम नाम अंकित अतिसुंदर
चकित चितव मुदरी पहिचानी * हरष बिषाद हृदय अकुलानी
जीति को सकै अजय रघुराई * माया ते अस रचि नहिं जाई
सीता मन बिचार कर नाना * मधुर बचन बोलेउ हनुमाना
रामचंद्र गुन बरनै लागा * सुनतहिं सीताकर दुष भागा
लागीं सुनै श्रवन मन लाई * आदिहिं ते सब कथा सुनाई
श्रवनामृत जेहिं कथा सुहाई * कहिसो प्रगट होत किन भाई
तब हनुमंत निकटचलिगयेऊ * फिरि बैठी मन बिसमय भयेऊ
राम दूत मै मातु जानकी * सत्य सपथ करुनानिधानकी
यह मुद्रिका मातु मै आनी * दीन्हि राम तुम्हकहँ सहिदानी
नर बानरहि संग कहु कैसें * कही कथा भइ संगति जैसें

दो० कपिके बचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास।

जाना मन क्रम बचन यह, कृपासिंधुकर दास १२ ॥
हरिजन जानि प्रीति अतिबाढी * सजल नयन पुलकावलि ठाढी
बूडत बिरहजलधि हनुमाना * भयहु तात मोकहँ जलजाना
अबकहु कुसल जाउँ बलिहारी * अनुजसहित सुषभवन षरारी
कोमल चित कृपाल रघुराई * कपि केहि हेतु धरी निठुराई
सहजबानि सेवक सुषदायक * कबहुँक सुरति करत रघुनायक
कबहुँ नयन मम सीतल ताता * होइहहिं निरषि स्याममृदुगाता
बचन न आव नयन भरे बारी * अहहनाथ हों निपट बिसारी
देषि परम बिरहाकुल सीता * बोला कपि मृदुबचन बिनीता
मातु कुसल प्रभु अनुजसमेता * तव दुषदुषी सु कृपानिकेता
जनि जननी मानहुँ जिअ ऊना * तुम्हतें प्रेम राम के दूना
दो० रघुपति के संदेसु अब, सुनु जननी धरिधीर।
असकहि कपिगदगद भयेउ, भरेबिलोचननीर १३॥
कहेउ राम बियोग तव सीता * मोकहँ सकल भये बिपरीता
नवतरुकिसलय मनहुँ कृसानू * कालनिसासम निसि ससिभानू
कुबलयबिपिन कुंतबन सरिसा * बारिद तपततेल जनु बरिसा
जे हित रहें करत तेइ पीरा * उरगस्वाँससम त्रिबिध समीरा
कहेहू तें कछु दुष घटि होई * काहि कहौं यह जान न कोई
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा * जानत प्रिया येक मन मोरा
सो मन सदाँ रहत तोहि पाहीं * जानु प्रीतिरस येतनेहिं माहीं
प्रभु संदेस सुनत बैदेही * मगन प्रेम तन सुधि नाहिं तेही
कह कपि हृदय धीर धरु माता * सुमिरि राम सेवक सुषदाता
उर आनहु रघुपति प्रभुताई * सुनि ममबचन तजहु बिकलाई

दो० निसिचर निकर पतंगसम, रघुपतिबान कृसानु।
जननी हृदय धीर धरु, जरे निसाचर जानु १४॥

जौं रघुबीर होत सुधि पाई * करते नहिं बिलंब रघुराई
राम बान रबि उयें जानकी * तमबरूथ कहँ जातुधान की
अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई * प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई
कछुक दिवस जननी धरु धीरा * कपिन्ह सहित ऐहहिं रघुबीरा
निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं * तिहुँपुर नारदादि जस गैहहिं
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना * जातुधान अति भट बलवाना
मोरे हृदय परम संदेहा * सुनि कपि प्रगटकीन्हि निजदेहा
कनक भूधराकार सरीरा * समर भयंकर अति बलबीरा
सीता मन भरोस तब भयेऊ * पुनि लघुरूप पवनसुत लयेऊ

दो० सुनु माता साषामृग, नहिं बल बुद्धि बिसाल।
प्रभु प्रतापते गरुडहि, षाइ परमलघु ब्याल १५॥

मन संतोष सुनत कपि बानी * भगति प्रताप तेज बल सानी
आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना * होहु तात बल सील निधाना
अजर अमर गुननिधि सुत होहू * करहुँ बहुत रघुनायक छोहू
करहुँ कृपा प्रभु अस सुनि काना * निर्भर प्रेम मगन हनुमाना
बार बार नायेसि पद सीसा * बोला बचन जोरि कर कीसा
अब कृतकृत्य भयेउँ मैं माता * आसिष तव अमोघ बिष्याता
सुनहु मातु मोहिं अतिसय भूषा * लागि देषि सुंदर फल रूषा
सुनु सुत करहिं बिपिनि रषवारी * परम सुभट रजनीचर भारी
तिन्हकर भय माता मोहि नाहीं * जौ तुम्ह सुष मानहु मनमाहीं

दो० देषि बुद्धिबल निपुन कपि, कहेउ जानकी जाहु।

रघुपति चरन हृदय धरि, तात मधुर फल षाहु १६॥
चलेउ नाइ सिर पैठेउ बागा * फल षायेसि तरु तोरैं लागा
रहे तहां बहु भट रषवारे * कछु मारे कछु जाइ पुकारे
नाथ येक आवा कपि भारी * तेहिं असोक बाटिका उजारी
षायसि फल अरु बिटप उपारे * रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे
सुनि रावन पठये भट नाना * तिन्हहिं देषि गर्जेउ हनुमाना
सब रजनीचर कपि संघारे * गये पुकारत कछु अधमारे
पुनि पठये तेहिं अछयकुमारा * चला संग लै सुभट अपारा
आवत देषि बिटप गहि तर्जा * ताहि निपाति महाधुनि गर्जा
दो० कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछु मिलयसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बल भूरि १७॥
सुनि सुतबध लंकेस रिसाना * पठयसि मेघनाद बलवाना
मारेसि जनि सुत बाँधेसु ताही * देषिअ कपिहि कहांकर आही
चला इंद्रजित अतुलित जोधा * बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा
कपि देषा दारुन भट आवा * कटकटाइ गर्जा अरु धावा
अति बिसाल तरु येक उपारा * बिरथ कीन्ह लंकेसकुमारा
रहे महाभट ताके संगा * गहिगहि कपिमर्दइ निजअंगा
तिन्हहिं निपात ताहिसन बाजा * भिरे जुगुल मानहुँ गजराजा
मुठिका मारि चढा तरु जाई * ताहि येक छन मुरछा आई
उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया * जीति न जाइ प्रभंजनजाया
दो० ब्रह्मअस्त्र तेहिं साधा, कपि मन कीन्ह बिचार।
जौं न ब्रह्मसर मानौं, महिमा मिटइ अपार १८॥
ब्रह्मबान कपि कहँ तेहिं मारा * परातिहुँ बार कटक संघारा

तेहिं देषा कपि मुरछित भयेऊ * नागफाँस बाँधेसि लै गयेऊ
जासु नाम जपि सुनहुँ भवानी * भवबंधन काटहिं नर ज्ञानी
तासु दूत कि बंधन तर आवा * प्रभु कारजलागि कपिहि बँधावा
कपिबंधन सुनि निसिचर धाये * कौतुक लागि सभा सब आये
दसमुषसभा दीष कपि जाई * कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई
कर जोरे सुर दिसप बिनीता * भृकुटि बिलोकत सकल सभीता
देषि प्रताप न कपिमन संका * जिमिअहिगनमहुँगरुडअसंका

दो० कपिहिबिलोकिदसानन, बिहँसा कहि दुर्बाद।
सुतबधसुरतिकीन्हिपुनि, उपजाहृदयबिषाद १९॥

कह लंकेस कवन तैं कीसा * केहि के बल बन घाले षीसा
कीधौं श्रवन सुने नहिं मोही * देषौं अति असंक सठ तोही
मारे निसिचर केहि अपराधा * कहुसठ तोहि न प्रानकै बाधा
सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया * पाइ जासु बल बिरचति माया
जाके बल बिरंचि हरि ईसा * पालत श्रजत हरत दससीसा
जा बल सीस धरत सहसानन * अंडकोस समेत गिरि कानन
धरे जो बिबिध देहँ सुरत्राता * तुम्हसे सठन्ह सिषावन दाता
हर कोदंड कठिन जेहिं भंजा * तोहि समेत नृपदल मद गंजा
षरदूषन तिसिरा अरु वाली * बधे सकल अतुलित बलसाली

दो० जाके बल लवलेसतें, जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मै जाकरि, हरि आनेहुँ प्रियनारि २०॥

जानेउँ मैं तुम्हारि प्रभुताई * सहसबाहुँ सन परी लराई
समर बालिसन करि जसपावा * सुनि कपिबचन बिहँसि बहरावा
षायेउँ फल प्रभु लागी भूषा * कपि सुभावतें तोरेउँ रूषा

सबके देहँ परमप्रिय स्वामी * मारहिं मोहिं कुमारगगामी
जिन्ह मोहि मारा ते मै मारे * तेहिपर बाँधेउ तनय तुम्हारे
मोहि न कछु बाँधेकर लाजा * कीन्ह चहौं निज प्रभुकर काजा
बिनती करौं जोरि कर रावन * सुनहुँ मान तजि मोर सिषावन
देषहु तुम्ह निज कुलहि बिचारी * भ्रम तजि भजहु भगतभयहारी
जाके डर अति काल डेराई * जो सुर असुर चराचर षाई
तासों बयर कबहुँ नहिं कीजे * मोरे कहे जानकी दीजे

दो० प्रनतपाल रघुनायक, करुनासिंधु परारि।
गये सरन प्रभु राषिहैं, तव अपराध बिसारि २१ ॥

रामचरनपंकज उर धरहू * लंका अचल राज तुम करहू
रिषिपुलस्तिजस बिमलमयंका * तेहि ससि महँ जनि होहु कलंका
राम नाम बिनु गिरा न सोहा * देषु बिचारि त्यागि मद मोहा
बसनहीन नहिं सोह सुरारी * सब भूषन भूषित बर नारी
राम बिमुष संपति प्रभुताई * जाइ रही पाई बिनु पाई
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं * बरषि गये पुनि तबहिं सुषाहीं
सुनु दसकंठ कहौं पन रोपी * बिमुष राम त्राता नहिं कोपी
संकर सहस बिस्नु अज तोही * सकहिं न राषि रामकर द्रोही

दो० मोहमूल बहुसूल प्रद, त्यागहु तम अभिमान।
भजहु रामरघुनायक, कृपासिंधु भगवान २२ ॥

जदपि कही कपि अतिहितबानी * भगति बिबेक बिरति नयसानी
बोला बिहँसि महा अभिमानी * मिला हमहिं कपि गुरु बडज्ञानी
मृत्यु निकट आई षल तोही * लागेसि अधम सिषावन मोही
उलटा होइहि कह हनुमाना * मति भ्रम तोहि प्रगट मै जाना

सुनि कपिबचन बहुत षिसियाना * बेगि न हरहु मूढ कर प्राना
सुनत निसाचर मारन धाये * सचिवन्ह सहित बिभीषन आये
नाइ सीस करि बिनय बहूता * नीति बिरोध न मारिय दूता
आनदंड कछु करिअ गोसांई * सबहीं कहा मंत्र भल भाई
सुनत बिहँसि बोला दसकंधर * अंग भंग करि पठइअ बंदर

दो० कपि के ममता पुच्छपर, सबहि कह्यो समुझाइ।
तेल बोरि पट बांधि पुनि, पावक देहु लगाइ २३॥

पुच्छहीन बानर तहँ जाइहि * तब सठ निज नाथहि लैआइहि
जिन्ह कै कीन्हेसि बहुत बडाई * देषौं मै तिन्ह कै प्रभुताई
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना * भइ सहाइ सारद मै जाना
जातुधान सुनि रावन बचना * लागे रचै मूढ सोइ रचना
रहा न नगर बसन घृत तेला * बाढी पुच्छ कीन्ह कपि षेला
कौतुक कहँ आये पुरवासी * मारहिं चरन करहिं बहु हाँसी
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी * नगर फेरि पुनि पुच्छ पजारी
पावक जरत देषि हनुमंता * भयेउ परम लघु रूप तुरंता
निबुकि चढेउ कपि कनकअटारी * भई सभीत निसाचर नारी

दो० हरि प्रेरित तेहि अवसर, चले मरुत उनचास।
अट्टहाँस करि गर्जा, कपिबढिलागअकास २४॥

देहँ बिसाल परम हरुआई * मंदिर तें मंदिर चढ धाई
जरइ नगर भा लोग बिहाला * झपट लपट बहु कोटि कराला
तात मातु हा सुनिअ पुकारा * येहि अँवसर को हमहिं उबारा
हम जो कहा यह कपि नहिं होई * बानर रूप धरे सुर कोई
साधु अवज्ञाकर फल ऐसा * जरै नगर अनाथ कर जैसा

जारा नगर निमिष येक माहीं * येक विभीषन कर गृह नाहीं
ताकर दूत अनल जेहि सिरिजा * जरा न सो तेहि कारन गिरिजा
उलटि पलटि लंका सब जारी * कूदि परा पुनि सिंधु मझारी

दो० पुच्छ बुझाई षोइ श्रम, धरि लघुरूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे, ठाढ भयौ कर जोरि २५ ॥

मातु मोहि दीजै कछु चीन्हा * जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा
चूडामनि उतारि तब दयेऊ * हरष समेत पवनसुत लयेऊ
कहेहु तात अस मोर प्रनामा * सब प्रकार प्रभु पूरनकामा
दीनदयाल बिरद संभारी * हरहु नाथ मम संकट भारी
तात सक्रसुत कथा सुनायेहु * बान प्रताप प्रभुहि समुझायेहु
मास दिवस महँ नाथ न आवा * तौ पुनि मोहि जिअत नहिं पावा
कहु कपि केहि बिधि राषौं प्राना * तुम्हहूं तात कहत अब जाना
तोहि देषि सीतल भइ छाती * पुनि मोकहँ सो दिन सो राती

दो० जनकसुतहि समुझाइ करि, बहुबिधि धीरज दीन्ह ।
चरनकमल सिरनाइ कपि, गवन रामपहिं कीन्ह २६ ॥

चलत महाधुनि गर्जेसि भारी * गर्भश्रवहिं सुनि निसिचर नारी
लांघ सिंधु येहि पारहि आवा * सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा
हरषे सब बिलोकि हनुमाना * नूतन जनम कपिन्ह तब जाना
मुष प्रसन्न तन तेज बिराजा * कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा
मिले सकल अति भये सुषारी * तलफत मीन पाव जिमि बारी
चले हरषि रघुनायक पासा * पूँछत कहत नवल इतिहाँसा
तब मधुबन भीतर सब आये * अंगद संमत मधुफल षाये
रषवारे जब बरजइ लागे * मुष्टिप्रहार हनत सब भागे

दो० जाइ पुकारे ते सब, बन उजार जुवराज।
सुनि सुग्रीव हरष कपि, करि आये प्रभु काज २७॥
जौं न होति सीता सुधि पाई * मधुबनके फल सकहिं कि षाई
येहिबिधि मन बिचारकर राजा * आइ गये कपि सहित समाजा
आइ सबन्हि नावा पद सीसा * मिलेउ सबहि अतिप्रीति कपीसा
पूंछी कुसल कुसलपद देषी * राम कृपा भा काज बिसेषी
नाथ काज कीन्हेउँ हनुमाना * राषे सकल कपिन्ह के प्राना
सुनि सुग्रीव बहुरि तेहि मिलेऊ * कपिन्हसहित रघुपति पहँ चलेऊ
राम कपिन्ह जब आवत देषा * किये काज मन हरष बिसेषा
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई * परे सकल कपि चरनन्हि जाई
दो० प्रीति सहित सब भेंटे, रघुपति करुनापुंज।
पूंछी कुसल नाथ अब, कुसल देषिपदकंज २८॥
जामवंत कह सुनु रघुराया * जापर नाथ करहु तुम्ह दाया
ताहि सदासुभ कुसल निरंतर * सुर नर मुनि प्रसन्न ता ऊपर
सोइ बिजई बिनई गुन सागर * तासु सुजस त्रैलोक उजागर
प्रभुकी कृपा भयेउ सब काजू * जन्म हमार सुफल भा आजू
नाथ पवनसुत कीन्हि जो करनी * सहसहु मुष न जाइ सो बरनी
पवनतनय के चरित सोहाये * जामवंत रघुपतिहि सुनाये
सुनत कृपानिधि मनअतिभाये * पुनि हनुमान हरषि हिय लाये
कहहु तात केहि भाँति जानकी * रहति करति रक्षा स्व प्रानकी
दो० नाम पाहरू राति दिन, ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निजपद जंत्रिता, जाहिं प्रानकेहिबाट २९॥
चलत मोहि चूडामनि दीन्हीं * रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही

नाथ जुगल लोचन भरि बारी * बचन कहे कछु जनककुमारी
अनुजसमेत गहेहु प्रभु चरना * दीनबंधु प्रनतारति हरना
मन क्रम बचन चरन अनुरागी * केहि अपराध नाथ हौं त्यागी
अवगुन येक मोर मै जाना * बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना
नाथ सो नयनन्हि कर अपराधा * निसरत प्रान करहिं हठि बाधा
बिरह अगिनि तन तूल समीरा * स्वास जरइ छन माहिं सरीरा
नयन श्रवहिं जल निजहित लागी * जरै न पाव देह बिरहागी
सीता कै अति बिपति बिसाला * बिनहि कहे भलि दीनदयाला

दो० निमिष निमिष करुनानिधि, जाहिं कलपअस बीति ।
बेगि चलिय प्रभु आनिय, भुजबल षलदल जीति ३०॥

सुनि सीतादुष प्रभु सुषअयना * भरि आये जल राजिवनयना
बचन काय मन मम गति जाही * सपनेहु बूझिय बिपति कि ताही
कह हनुमंत बिपति प्रभु सोई * जब तब सुमिरन भजन न होई
केतिक बात प्रभु जातुधानकी * रिपुहि जीति आनिबी जानकी
सुनु कपि तोहि समान उपकारी * नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी
प्रति उपकार करौं का तोरा * सनमुष होइ न सकत मन मोरा
सुनु सुत तोहिं उरिन मै नाहीं * देषेउँ करि बिचार मन माहीं
पुनिपुनि कपिहि चितव सुरत्राता * लोचन नीर पुलक अति गाता

दो० सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुष, गात हरषि हनुमंत ।
चरन परेउ प्रेमाकुल, त्राहि त्राहि भगवंत ३१ ॥

बार बार प्रभु चहै उठावा * प्रेम मगन तेहि उठब न भावा
प्रभु करपंकज कपिके सीसा * सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा
सावधान मन करि पुनि संकर * लागे कहन कथा अति सुंदर

कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा * कर गहि परम निकट बैठावा
कहु कपि रावनपालित लंका * केहिबिधि दहेहु दुर्ग अतिबंका
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना * बोला बचन बिगत अभिमाना
साषामृग कै बडि मनुसाई * साषा ते साषा पर जाई
नाँघि सिंधु हाटकपुर जारा * निसिचरगन बधि बिपिन उजारा
सो सब तव प्रताप रघुराई * नाथ न कछू मोरि प्रभुताई

दो॰ ताकहँ प्रभु कछु अगम नहिं, जापर तुम्ह अनकूल।
तव प्रभाव बँडवानलहि, जारि सकै षलु तूल ३२॥

नाथ भगति अति सुषदायनी * देहु कृपाकरि अनपायनी
सुनि प्रभु परम सरल कपिबानी * एवमस्तु तब कहेउ भवानी
उमा राम सुभाव जेहि जाना * ताहि भजनतजि भाव न आना
यह संबाद जासु उर आवा * रघुपति चरनभगति सोइ पावा
सुनि प्रभुबचन कहहिं कपिबृंदा * जय जय जय कृपाल सुषकंदा
तबरघुपति कपिपतिहि बोलावा * कहा चलैकर करहु बनावा
अब बिलंब केहिकारन कीजै * तुरत कपिन्हकहँ आयसु दीजै
कौतुक देषि सुमन बहु बरषी * नभ ते भवन चले सुर हरषी

दो॰ कपिपति बेगि बोलाये, आये जूथप जूथ।
नाना बरन अतुल बल, बानर भालु बरूथ ३३॥

प्रभुपदपंकज नावहिं सीसा * गर्जहिं भालु महाबल कीसा
देषी राम सकल कपि सैना * चितइ कृपाकरि राजिवनैना
राम कृपा बल पाय कपिंदा * भये पक्षजुत मनहु गिरिंदा
हरषि राम तब[1] कीन्ह पयाना * सगुन भये सुंदर सुभ नाना

१—अथ विजयदशम्यामाश्विने शुक्लपक्षे दशमुखनिधनाय प्रस्थितो रामचन्द्र इतिनाटके॥

जासु सकल मंगलमय कीती * तासु पयान सगुन यह नीती
प्रभु पयान जाना वैदेहीं * फरकि बाम अँग जनु कहि देहीं
जोइ जोइ सगुन जानकिहि होई * असगुन भयेउ रावनहिं सोई
चला कटक को बरनै पारा * गर्जहिं बानर भालु अपारा
नष आयुध गिरि पादप धारी * चले गगन महि इच्छाचारी
केहरिनाद भालु कपि करहीं * डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं

छंद

चिक्करहिं दिग्गज डोलमहि गिरि लोलसागर परभरे।
मनहरष दिनकर सोमसुर मुनि नाग किन्नर दुषटरे॥
कटकटहिं मर्कट बिकटभट बहुकोटि कोटिन्ह धावहीं।
जयराम प्रबलप्रताप कोसलनाथ गुनगन गावहीं ४॥
सहि सक न भार उदार अहिपति बार बारहिं मोहई।
गहिदसन पुनि पुनि कमठपृष्ठ कठोर सो किमि सोहई॥
रघुबीर रुचिर पयान प्रस्थिति जानि परम सोहावनी।
जनु कमठषप्परसर्पराज सो लिषत अबिचलपावनी ५॥

दो० येहि बिधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर।
जहँतहँ लागे षान फल, भालु बिपुल कपिबीर ३४॥

उहां निसाचर रहहिं ससंका * जबतें जारि गयेउ कपि लंका
निजनिजगृह सब करहिं बिचारा * नहिं निसिचरकुल केर उबारा
जासु दूत बल बरनि न जाई * तेहि आयें पुर कवन भलाई
दूतिन्ह सन सुनि पुरजनबानी * मंदोदरी अधिक अकुलानी
रहसि जोरि कर पतिपद लागी * बोली बचन नीतिरस पागी

१—जयप्रयाणे रघुनंदनस्य धूली कदंबास्तमिते दिनेशे। शशिप्रभं छत्रमुदीक्ष्य बाला सूर्योदये रोदति चक्रवाकी॥ हनुमन्नाटके॥

कंत करष हरिसन परिहरहू * मोर कहा अति हित हियधरहू
समुझत जासु दूत कै करनी * श्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी
तासु नारि निज सचिव बोलाई * पठवहु कंत जौ चहहु भलाई
तव कुलकमल बिपिन दुषदाई * सीता सीतनिसा सम आई
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे * हित न तुम्हार संभु अज कीन्हे

दो० राम बान अहिगन सरिस, निकर निसाचर भेक।
जबलगि ग्रसत न तब लगि, जतन करहु तजि टेक ३५॥

श्रवन सुनी सठ ताकर बानी * बिहँसा जगत बिदित अभिमानी
सभय सुभाव नारिकर साँचा * मंगल महँ भयमन अतिराँचा
जौं आवै मर्कट कटकाई * जिअहिं बिचारे निसिचर षाई
कंपहिं लोकप जाकी त्रासा * तासु नारि सभीत बडि हाँसा
असकहि बिहँसि ताहि उरलाई * चलेउ सभा ममता अधिकाई
मंदोदरी हृदय कर चिंता * भयेउ कंतपर बिधि बिपरीता
बैठेउ सभा षबरि असि पाई * सिंधु पार सेना सब आई
बूझेसि सचिव उचितमत कहहू * ते सब हँसे मष्ट करि रहहू
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं * नर बानर केहि लेषे माहीं

दो० सचिव बैद गुरु तीनि जौं, प्रिअ बोलहिं भयआस।
राज धर्म तन तीनिकर, होइ बेगहीं नास ३६॥

सोइ रावन कहँ बनी सहाई * अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई
अँवसर जानि बिभीषन आवा * भ्राता चरन सीस तेहिं नावा
पुनि सिरनाइ बैठि निज आसन * बोला बचन पाइ अनुसासन
जौ कृपाल पूछहु मोहि बाता * मति अनरूप कहौं हित ताता
जो आपन चाहै कल्याना * सुजससुमति सुभगतिसुषनाना

सो परनारि लिलार गोसाईं * तजौ चौथि के चंद कि नाईं
चौदह भुअन येक पति होई * भूत द्रोह तिष्टै नहिं सोई
गुनसागर नागर नर जोऊ * अलप लोभ भल कहै न कोऊ
दो० काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि, भजहु भजहिं जेहि संत ३७॥
तात राम नहिं नर भूपाला * भुवनेस्वर कालहु कर काला
ब्रह्म अनामय अज भगवंता * ब्यापक अजित अनादि अनंता
गो द्विज धेनु देव हितकारी * कृपासिंधु मानुष तनु धारी
जन रंजन भंजन षल व्राता * बेद धर्म रक्षक सुनु भ्राता
ताहि बयर तजि नाइअ माथा * प्रनतारति भंजन रघुनाथा
देहु नाथ प्रभु कहँ बैदेही * भजहु राम बिनु हेतु सनेही
सरन गये प्रभु ताहु न त्यागा * बिस्वद्रोहकृत अघ जेहि लागा
जासु नाम त्रयताप नसावन * सोइ प्रभु प्रगट समुझु जियरावन
दो० बार बार पद लागउं, बिनय करउं दससीस।
परिहरि मान मोह मद, भजहु कौसलाधीस ३८॥
मुनि पुलस्ति निज सिष्य सन, कहि पठई यह बात।
तुरत सो मै प्रभु सन कही, पाइ सुअवसर तात ३९॥
माल्यवंत अति सचिव सयाना * तासु बचन सुनि अति सुष माना
तात अनुज तव नीति बिभूषन * सो उर धरहु जो कहत बिभीषन
रिपु उतकर्ष कहत सठ दोऊ * दूरि न करहु इहां हइ कोऊ
माल्यवंत गृह गयेउ बहोरी * कहइ बिभीषन पुनि करजोरी
सुमति कुमति सबके उर रहहीं * नाथ पुरान निगम अस कहहीं
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना * जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना

तव उर कुमति बसी बिपरीता * हित अनहित मानहुँ रिपु प्रीता
कालराति निसिचरकुल केरी * तेहि सीता पर प्रीति घनेरी

दो॰ तात चरन गहि मांगौं, राषहु मोर दुलार।
सीता देहु राम कहँ, अहित न होइ तुम्हार ४०॥

बुध पुरान श्रुति संमत बानी * कही बिभीषन नीति बषानी
सुनत दसानन उठा रिसाई * षलतोहिं निकट मृत्यु अबआई
जिअसिसदां सठमोर जिआवा * रिपु कर पक्ष मूढ तोहि भावा
कहसि न षलअसको जगमाहीं * भुजबल जाहि जिता मैं नाहीं
ममपुरबासि तपसिन्ह पर प्रीती * सठमिलु जाइ तिन्हहिंकहुनीती
असकहि कीन्हेसि चरनप्रहारा * अनुज गहे पद बारहिं बारा
उमा संतकै इहइ बडाई * मन्द करत जो करै भलाई
तुम्ह पितुसरिसभलेंहिमोहिमारा* राम भजे हित नाथ तुम्हारा
सचिव संग लै नभपथ गयेऊ * सबहि सुनाइ कहत असभयेऊ

दो॰ राम सत्यसंकल्प प्रभु, सभा कालबस तोरि।
मै रघुबीर सरन अब, जाउँ देहु जनि षोरि ४१॥

असकहि चला बिभीषन जबहीं * आयूहीन भये सब तबहीं
साधु अवज्ञा तुरत भवानी * कर कल्यान अषिलकै हानी
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा * भयेउ बिभवबिनु तबहिंअभागा
चले हरषि रघुनायक पाहीं * करत मनोरथ बहु मनमाहीं
देषिहौं जाइ चरन जलजाता * अरुन मृदुल सेवक सुषदाता
जे पद परसि तरी रिषिनारी * दंडक कानन पावनकारी
जे पद जनकसुता उरलाये * कपट कुरंग संग धरधाये
हर उर सर सरोज पद जेई * अहोभाग्य मैं देषिहौं तेई

दो० जिन्ह पांयन्ह की पादुकन्हि, भरत रहे मन लाइ।
ते पद आजु बिलोकिहौं, इन्ह नयनन्हि अब जाइ ४२॥

येहि बिधि करत सप्रेम बिचारा * आयेउ सपदि सिंधु के पारा
कपिन्ह बिभीषन आवत देषा * जाना कोउ रिपुदूत बिसेषा
ताहि राषि कपीस पहिं आये * समाचार सब ताहि सुनाये
कह सुग्रीव सुनहु रघुराई * आवा मिलन दसानन भाई
कह प्रभु सषा बूझिये काहा * कहै कपीस सुनहु नरनाहा
जानि न जाइ निसाचर माया * कामरूप केहि कारन आया
भेद हमार लेन सठ आवा * राषिअ बांधि मोहि अस भावा
सषा नीति तुम्ह नीकि बिचारी * मम पन सरनागत भयहारी
सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना * सरनागत वत्सल भगवाना

दो० सरनागत कहँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि।
ते नर पावर पापमय, तिनहिं बिलोकत हानि ४३॥

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू * आये सरन तजौं नहिं ताहू
संमुष होइ जीव मोहि जबहीं * जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं
पापवंत कर सहज सुभाऊ * भजन मोर तेहि भाव न काऊ
जो पै दुष्ट हृदय सोइ होई * मोरे सनमुष आव कि सोई
निर्मल मन जन सो मोहि पावा * मोहि कपट छल छिद्र न भावा
भेद लेन पठवा दससीसा * तबहुँ न कछु भयहानि कपीसा
जग महँ सषा निसाचर जेते * लछिमन हनइं निमिषि महँ तेते
जो सभीत आवा सरनाई * रषिहौं ताहि प्रानकी नाई

दो० उभय भाँति तेहि आनहु, हँसि कह कृपानिकेत।
जय कृपाल कहि कपि चले, अंगद हनू समेत ४४॥

सादर तेहि आगे करि बानर * चले जहां रघुपति करुनाकर
दूरिहि ते देषे दोउ भ्राता * नयनानंद दान के दाता
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी * रहे ठठुकि येकटक पल रोंकी
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन * स्यामलगात प्रनत भय मोचन
सिंह कंध आयत उर सोहा * आनन अमित मदन मन मोहा
नयननीर पुलकित अतिगाता * मन धरि धीर कही मृदुबाता
नाथ दसानन कर मै भ्राता * निसिचर बंस जन्म सुरत्राता
सहज पापप्रिय तामस देहा * जथा उलूकहि तमपर नेहा

दो० श्रवण सुजस सुनि आयेउँ, प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि त्राहि आरतिहरन, सरनसुषद रघुबीर ४५॥

अस कहि करत दंडवत देषा * तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा
दीन बचन सुनि प्रभु मनभावा * भुज बिसाल गहि हृदय लगावा
अनुजसहित मिलि ढिग बैठारी * बोले बचन भगत भयहारी
कह लंकेस सहित परिवारा * कुसल कुठाहर बास तुम्हारा
षलमंडली बसहु दिन राती * सषा धर्म निबहइ केहि भाँती
मै जानौं तुम्हारि सब रीती * अतिनय निपुन न भाव अनीती
बरु भल बास नरक कर ताता * दुष्ट संग जनि देइ बिधाता
अब पद देषि कुसल रघुराया * जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया

दो० तबलगि कुसल न जीव कहँ, सपनेहु मन बिश्राम।
जब लगि भजत न रामकहँ, सोकधाम तजि काम ४६॥

तबलगि हृदय बसत षल नाना * लोभ मोह मत्सर मद माना
जब लगि उर न बसत रघुनाथा * धरे चाप सायक कटि भाथा
ममता तरुन तमी अँधिआरी * राग द्वेष उलूक सुषकारी

तबलगि बसति जीव मन माहीं * जबलगि प्रभु प्रताप रवि नाहीं
अब मै कुसल मिटे भय भारे * देषि राम पद कमल तुम्हारे
तुम्ह कृपाल जापर अनकूला * ताहि न व्याप त्रिविधि भवसूला
मै निसिचर अति अधम सुभाऊ * सुभ आचरन कीन्ह नहि काऊ
जासु रूप मुनि ध्यान न पावा * तेहिं प्रभु हरषि हृदय मोहि लावा

दो० अहो भाग्य मम अमित अति, रामकृपा सुषपुंज।
देषेउँ नयन बिरंचि सिव, सेव्य जुगलपद कंज ४७॥

सुनहु सषा निज कहउँ सुभाऊ * जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ
जो नर होइ चराचर द्रोही * आवइ सभय सरन तकि मोही
तजि मद मोह कपट छलनाना * करौं सद्य तेहि साधु समाना
जननी जनक बंधु सुत दारा * तन धन भवन सुहृद परिवारा
सबकै ममता ताग बटोरी * ममपद मनहिं बाँधु बरिडोरी
समदरसी इच्छा कछु नाहीं * हरषसोक भय नहिं मनमाहीं
अस सज्जन मम उरबस कैसे * लोभी हृदय बसै धन जैसे
तुम्ह सारिषे संत प्रियमोरे * धरौं देह नहिं आन निहोरे

दो० सगुनउपासक परहित, निरत नीति दृढ नेम।
ते नर प्रान समान मम, जिन्हके द्विजपद प्रेम ४८॥

सुनु लंकेस सकल गुन तोरे * ताते तुम्ह अतिसय प्रिय मोरे
राम बचन सुनि बानर जूथा * सकल कहहिं जय कृपाबरूथा
सुनत बिभीषन प्रभुकी बानी * नहिं अघात श्रवनामृत जानी
पद अंबुज गहि बारहिं बारा * हृदय समात न प्रेम अपारा
सुनहु देव सचराचर स्वामी * प्रनतपाल उर अंतरजामी
उर कछु प्रथम बासना रही * प्रभुपद प्रीति सरित सो बही

अब कृपालु निज भगति पावनी * देहु सदा सिव मन भावनी
एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा * मांगा तुरत सिंधुकर नीरा
जदपि सषा तव इच्छा नाहीं * मोर दरस अमोघ जगमाहीं
असकहिरामतिलक तेहि सारा * सुमनबृष्टि नभ भई अपारा

दो० रावन क्रोधअनल निज, स्वास समीर प्रचंड।
जरत बिभीषन राषा, दीन्हेउ राज अषंड४६॥
जो संपति सिव रावनहिं, दीन्ह दिये दसमाथ।
सोइ सम्पदा बिभीषनहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ५०॥

असप्रभु छाँडि भजहिं जे आना * ते नर पसु बिनु पूंछ बिषाना
निज जनजानि ताहि अपनावा * प्रभुसुभाव कपिकुल मनभावा
पुनि सर्बज्ञ सर्ब उरबासी * सर्बरूप सबरहित उदासी
बोले बचन नीति प्रतिपालक * कारन मनुज दनुज कुलघालक
सुनु कपीस लंकापति बीरा * केहिबिधितरिअजलधिगंभीरा
संकुल मकर उरग झषजाती * अति अगाध दुस्तर सबभाँती
कह लंकेस सुनहु रघुनायक * कोटि सिंधु सोषक तव सायक
जद्यपि तदपि नीति असिगाई * बिनय करिअ सागरसन जाई

दो० प्रभुतुम्हारकुलगुरुजलधि, कहिहि उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागरतरिहि, सकलभालु कपिधारि५१॥

सषा कही तुम्ह नीकि उपाई * करिअ दैव जो होइ सहाई
मंत्र न येह लछिमन मनभावा * राम बचन सुनि अतिदुषपावा
नाथ दैवकर कौन भरोसा * सोषिय सिंधु करिअ मनरोसा
कादर मनकहँ येक अधारा * दैव दैव आलसी पुकारा
सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा * ऐसेइ करब धरहु मन धीरा

असकहि प्रभु अनुजहि समुझाई * सिंधु समीप गये रघुराई
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिर नाई * बैठे पुनि तट दर्भ डसाई
जबहिं बिभीषन प्रभुपहिं आये * पाछे रावन दूत पठाये

दो० सकल चरित तिन्ह देषे, धरे कपट कपि देहँ।
प्रभु गुन हृदय सराहहिं, सरनागतपर नेहँ ५२॥

प्रगट बषानहिं राम सुभाऊ * अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ
रिपुके दूत कपिन जब जाने * सकल बाँधि कपीस पहँ आने
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर * अंगभंग करि पठवहु निसिचर
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाये * बाँधि कटक चहुँ पास फिराये
बहु प्रकार मारन कपि लागे * दीन पुकारत तदपि न त्यागे
जो हमार हर नासा काना * तेहि कोसलाधीस कै आना
सुनि लछिमन सब निकट बोलाये * दया लागि हँसि तुरत छोड़ाये
रावन कर दीजेउ यह पाती * लछिमन बचन बाँचु कुलघाती

दो० कहेउ मुषागर मूढ़सन, मम संदेस उदार[1]।
सीता देइ मिलहु नत, आवा काल तुम्हार ५३॥

तुरत नाइ लछिमन पद माथा * चले दूत बरनत गुनगाथा
कहत राम जस लंका आये * रावन चरन सीस तिन्ह नाये
बिहँसि दसानन पूँछी बाता * कहसि न सुक आपनि कुसलाता
पुनि कहु षबरि बिभीषन केरी * जाहि मृत्यु आई अति नेरी
करत राज लंका सठ त्यागी * होइहि जवकर कीट अभागी
पुनि कहु भालु कीस कटकाई * कठिन काल प्रेरित चलि आई
जिन्हके जीवनकर रषवारा * भयेउ मृदुलचित सिंधु बिचारा

१—उदारो दातृ महतो॥

कहु तपसिन्हकै बात बहोरी * जिनके हृदय त्रास अति मोरी

दो०की भइ भेंट कि फिरिगये, श्रवन सुजस सुनिमोर।
कहसि न रिपुदलतेजबल, बहुतचकितचिततोर ५४॥

नाथ कृपाकरि पूंछेहु जैसे * मानहु कहा क्रोध तजि तैसे
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा * जातहि राम तिलक तेहिसारा
रावनदूत हमहिं सुनि काना * कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुष नाना
श्रवन नासिका काटन लागे * राम सपथ दीन्हे हम त्यागे
पूंछेहु नाथ राम कटकाई * बदन कोटिसत बरनि न जाई
नाना बरन भालु कपि धारी * बिकटानन बिसाल भयकारी
जेहि पुर दहेउ हतेउ सुत तोरा * सकलकपिन्हमहँ तेहिबलथोरा
अमित नाम भट कठिन कराला * अमितनागबलबिपुलबिसाला

दो० द्विबिद मयंद नील नल, अंगदगंद[1] बिकटासि।
दधिमुष केहरि निसठ सठ, जामवंत बलरासि ५५॥

ये कपि सब सुग्रीव समाना * इन्हसमकोटिन्हगनइ कोआना
राम कृपा अतुलित बल तिनहीं * तृन समान त्रैलोकहि गनहीं
अस मै श्रवन सुना दसकंधर * पदुम अठारह जूथप बंदर
नाथ कटकमहँ सो कपि नाहीं * जो न तुमहिं जीतइ रनमाहीं
परम क्रोध मींजहिं सब हाँथा * आयसु पै न देहिं रघुनाथा
सोषहिं सिंधु सहित झषब्याला * पुरहिं न तरुधरि कुधर बिसाला
मर्दि गर्द मिलवहिं दससीसा * ऐसेइ बचन कहहिं सब कीसा
गर्जहिं तर्जहिं सहज असंका * मानहु ग्रसन चहत हहिं लंका

दो० सहज सूर कपिभालु सब, पुनि सिरपर प्रभुराम।

---

१ गद नाम बानर का है॥

रावन काल कोटि कहँ, जीति सकहिं संग्राम ५६ ॥
राम तेज बल बुधि बिपुलाई * सेष सहस सत सकहिं न गाई
सकसर येक सोषिसत सागर * तव भ्रातहि पूंछेउ नयनागर
तासु बचन सुनि सागर पाहीं * मांगत पंथ कृपा मनमाहीं
सुनत बचन बिहँसा दससीसा * जौं असिमति सहायकृत कीसा
सहज भीरुकर बचन दृढाई * सागर सन ठानी मचलाई
मूढ मृषा का करसि बडाई * रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई
सचिव सभीत बिभीषन जाके * बिजय बिभूति कहाजग ताके
सुनि षल बचन दूत रिसबाढी * समय बिचारि पत्रिका काढी
रामानुज दीन्ही यह पाती * नाथ बँचाय जुडावहु छाती
बिहँसि बामकर लीन्ही रावन * सचिवबोलिसठलाग बचावन

दो॰ बातनमनहिंरिझाइसठ, जनिघालसिकुलषीस ।
राम बिरोध न उबरसि, सरन बिष्नु अज ईस ५७ ॥
की तजि मान अनुजइव, प्रभु पदपंकज भृंग ।
होहिकि रामसरानल, खल कुलसहित पतंग ५८ ॥

सुनत सभय मन मुख मुसुकाई * कहत दसानन सबहि सुनाई
भूमि परा कर गहत अकासा * लघु तापसकर बाग बिलासा
कह सुक नाथ सत्य सब बानी * समुझहुछांडिप्रकृतिअभिमानी
सुनहु बचनमम परिहरि क्रोधा * नाथ रामसन तजहु बिरोधा
अति कोमल रघुबीर सुभाऊ * यद्यपि अखिल लोककर राऊ
मिलतकृपातुम्हपर प्रभु करहीं * उर अपराध न येकौ धरहीं
जनकसुता रघुनाथहि दीजे * येतना कहा मोर प्रभु कीजे
जब तेहिं कहा देन बैदेही * चरन प्रहार कीन्ह सठ तेही

नाइ चरन सिर चला सो तहाँ * कृपासिंधु रघुनायक जहाँ
करि प्रनाम निज कथा सुनाई * राम कृपा आपनि गति पाई
रिषि अगस्ति की साप भवानी * राक्षस भयेउ रहा मुनि ज्ञानी
बंदि राम पद बारहिं बारा * मुनि निज आश्रम कहँ पगु धारा

दो० बिनय न मानत जलधि जड, गये तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति ५९॥

लछिमन बान सरासन आनू * सोषौं बारिधि बिसिष कृसानू
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती * सहज कृपिन सन सुंदर नीती
ममतारत सन ज्ञान कहानी * अतिलोभी सन बिरति बषानी
क्रोधिहि सम कामिहि हरिकथा * ऊसर बीज बये फल जथा
अस कहि रघुपति चाँप चढावा * यह मत लछिमन के मन भावा
संधानेउ प्रभु बिसिष कराला * उठी उदधि उर अंतर ज्वाला
मकर उरग झष गन अकुलाने * जरत जंतु जलनिधि जब जाने
कनकथार भरि मनिगन नाना * बिप्ररूप आयेउ तजि माना

दो० काटेहिं पै कदली फरै, कोटि जतन कोउ सींच।
बिनय न मान षगेस सुनु, डाँटेहिं पै नव नीच ६०॥

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे * छमहु नाथ सब अवगुन मेरे
गगन समीर अनल जल धरनी * इन्हकइ नाथ सहज जड करनी
तव प्रेरित माया उपजाये * सृष्टिहेतु सब ग्रंथन्हि गाये
प्रभु आयसु जेहि कहँ जसि अहई * सो तेहि भाँति रहें सुष लहई
प्रभु भल कीन्ह मोहिं सिष दीन्ही * मरजादा पुनि तुम्हरिय कीन्ही
ढोल गँवार सूद्र पसु नारी * सकल ताडना के अधिकारी
प्रभु प्रताप मै जाब सुषाई * उतरिहि कटक न मोरि बडाई

समुद्र-निग्रह ।
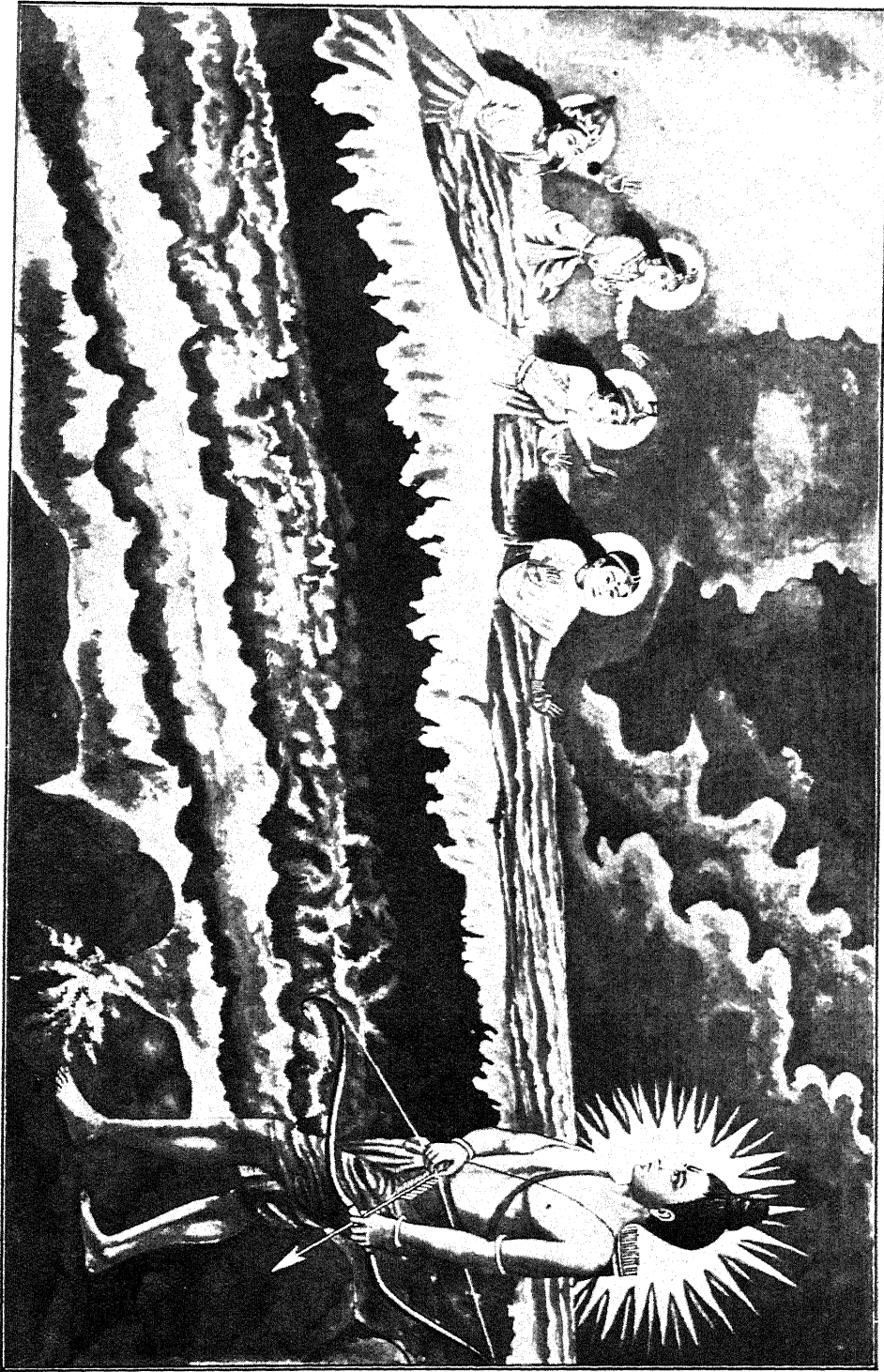
सन्धानेउ प्रभु विशिख कराला । उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला ॥

प्रभु अज्ञा अपेल श्रुति गाई * करौंसोबेगि जो तुम्हहिं सोहाई

दो० सुनत बिनीत बचन अति, कह कृपाल मुसुकाइ ।
जेहि बिधि उतरइ कपिकटक, तातसोकहहु उपाइ ६१ ॥

नाथ नील नल कपि द्वौ भाई * लरिकाईं रिषि आसिष पाई
तिन्हके परस किये गिरि भारे *तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे
मै पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई * करिहौं बल अनुमान सहाई
येहि बिधिनाथपयोधिबँधाइअ *जेहिं यह सुजसलोकतिहुँगाइअ
येहि सर मम उत्तर तटबासी * हतहु नाथ षलनर अघरासी
सुनि कृपाल सागर मन पीरा * तुरतहिं हरी राम रनधीरा
देषि राम बल पौरुष भारी * हरषि पयोनिधिभयो सुषारी
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा * चरनबंदि पाथोधि सिधावा

छंद

निज भवन गवनेउँ सिंधु श्रीरघुपतिहि यह मत भायेऊ ।
यह चरित कलिमलहर जथामति दासतुलसी गायेऊ ॥
सुषभवन संसयसमन दमनबिषाद रघुपति गुनगना ।
तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहि संतत सठमना ६ ॥

दो० सकल सुमंगलदायक, रघुनायक गुनगान ।
सादर सुनहिंते तरहिं भव, सिंधु बिना जलजान ६२ ॥

मासपारायण दिन २४

इति श्रीरामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने ज्ञानसंपादनो नाम
पंचमः सोपानः ॥ ५ ॥

श्री गणेशाय नमः

श्रीरामचरितमानस

षष्ठ सोपान

लंकाकांड

श्रीजानकीवल्लभो विजयते ।

लव निमेष परमानु जुग, बरष कलप सर चंड ।
भजसि न मन तेहि राम कहँ, काल जासु को दंड १ ॥

रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं
योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणंनिर्विकारम्॥
मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं
वन्दे कुन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपं १ ॥
शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं शार्दूलचर्माम्बरं
कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियम् ॥
काशीशं कलिकल्मषौघसमनं कल्याणकल्पद्रुमं
नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशङ्करं कामहम् २ ॥
यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभम् ।
खलानां दण्ड कृद्योऽसौ शङ्करः शं तनोतु मे ३ ॥

सेतुबन्धन ।
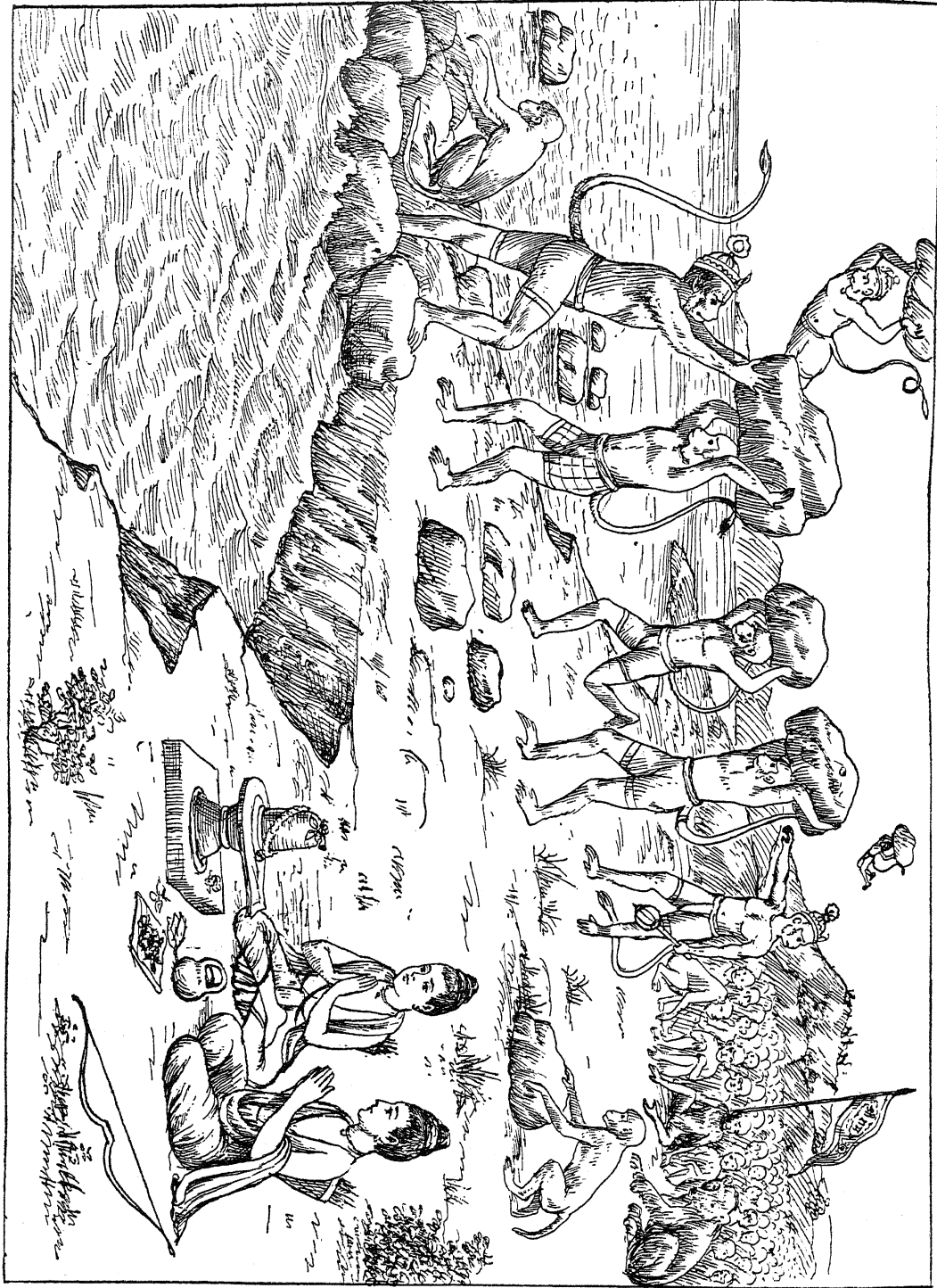
शैल विशाल आनि कपि देहीं । कन्दुक इव नल नील सो लेहीं ॥

लिङ्ग थापि विधिवत करि पूजा । शिवसमान प्रिय मोहिं न दूजा ॥

सो० सिंधु बचन सुनि राम, सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ।
अब बिलंब केहि काम, करहु सेतु उतरइ कटक १॥
सुनहु भानुकुलकेतु, जामवंत करजोरि कह।
नाथ नाम तव सेतु, नर चढ़ि भवसागर तरहिं २॥

यह लघु जलधि तरत कतवारा * अस सुनि पुनि कह पवनकुमारा
प्रभु प्रताप बडवानल भारी * सोषेउ प्रथम पयोनिधि बारी
तव रिपु नारि रुदन जलधारा * भरेउ बहोरि भयेउ तेहि षारा
सुनि अति उकुति पवनसुत केरी * हरषे कपि रघुपति तन हेरी
जामवंत बोले दोउ भाई * नल नीलहि सब कथा सुनाई
राम प्रताप सुमिरि मन माहीं * करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं
बोलि लिये कपिनिकर बहोरी * सकल सुनहु बिनती कछु मोरी
राम चरन पंकज उर धरहू * कौतुक येक भालु कपि करहू
धावहु मर्कट बिकट बरूथा * आनहु बिटप गिरिन्ह के जूथा
सुनि कपि भालु चले करि हूहा * जय रघुबीर प्रताप समूहा

दो० अति उतंग गिरि पादप, लीलहि लेहिं उठाइ।
आनि देहिं नल नीलहि, रचहिं ते सेतु बनाइ २॥

सैल बिसाल आनि कपि देहीं * कंदुक इव नल नील ते लेहीं
देषि सेतु अति सुंदर रचना * बिहँसि कृपानिधि बोले बचना
परमरम्य उत्तम यह धरनी * महिमा अमित जाइ नहिं बरनी
करिहौं इहां संभु थापना * मोरे हृदय परम कलपना
सुनि कपीस बहु दूत पठाये * मुनिवर सकल बोलि लै आये
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा * सिव समान प्रिय मोहि न दूजा
सिव द्रोही मम भगत कहावा * सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा

संकर बिमुष भगति चह मोरी * सो नारकी मूढ मति थोरी

दो॰ संकर प्रिय मम द्रोही, सिवद्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि, घोर नरक महँ बास ३॥

जे रामेस्वर दरसन करिहहिं * ते तन तजि ममलोक सिधरिहहिं
जो गंगाजल आनि चढाइहि * सो साजुज्य मुक्ति नर पाइहि
होइ अकाम जो छल तजि सेइहि * भगति मोरि तेहि संकर देइहि
ममकृत सेतु जो दरसन करहीं * सो बिनु श्रम भवसागर तरहीं
राम बचन सबके जिय भाये * मुनिवर निज निज आश्रम आये
गिरिजा रघुपति कै यह रीती * संतत करहिं प्रनत पर प्रीती
बांधा सेतु नील नल नागर * रामकृपा जस भयेउ उजागर
बूडहिं आनहिं बोरहिं जेई * भये उपल बोहित सम तेई
महिमा यह न जलधिकइ बरनी * पाहन गुन न कपिन्ह कै करनी

दो॰ श्री रघुबीर प्रताप ते, सिंधु तरे पाषान।
ते मतिमंद जे राम तजि, भजहिं जाइ प्रभु आन ४॥

बांधि सेतु अति सुदृढ बनावा * देषि कृपानिधि के मन भावा
चली सेन कछु बरनि न जाई * गर्जहिं मर्कट भट समुदाई
सेत बंध ढिग चढि रघुराई * चितव कृपाल सिंधु बहुताई
देषन कहुँ प्रभु करुनाकंदा * प्रगट भये सब जलचरबृंदा
मकर नक्र नाना झष ब्याला * सतजोजन तन परम बिसाला
अइसे येक तिन्हहिं जे षाहीं * येकन्ह के डर तेपि डेराहीं
प्रभुहि बिलोकहिं टरहिं न टारे * मन हरषित सब भये सुषारे
तिनकी ओट न देषिअ बारी * मगन भये हरिरूप निहारी
चला कटक प्रभु आयसु पाई * को कहि सक कपिदल बिपुलाई

दो० सेतुबंध भइ भीर अति, कपि नभ पंथ उडाहिं।
अपर जलचरन्हि ऊपर, चढ़ि चढ़ि पारहि जाहिं ५॥

अस कौतुक बिलोकि दोउ भाई * बिहँसि चले कृपाल रघुराई
सेन सहित उतरे रघुबीरा * कहि न जाइ कछु जूथप भीरा
सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा * सकल कपिन्ह कहँ आयसु दीन्हा
षाहु जाइ फल मूल सोहाये * सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये
सब तरु फरे राम हित लागी * रितु अरु कुरितु काल गति त्यागी
षाहिं मधुर फल बिटप हलावहिं * लंका सनमुष सिषर चलावहिं
जहँ कहुँ फिरत निसाचर पावहिं * घेरि सकल बहु नाच नचावहिं
दसनन्हि काटि नासिका काना * कहि प्रभु सुजस देहिं तब जाना
जिन्हकर नासा कान निपाता * तिन्ह रावनहिं कही सब बाता
सुनत श्रवन बारिधि बंधाना * दसमुष बोलि उठा अकुलाना

दो० बांध्यौ बननिधि नीरनिधि, जलधि सिंधु बारीस।
सत्य तोयनिधि कंपति, उदधि पयोधि नदीस ६॥

निज बिकलता बिचारि बहोरी * बिहँसि गयेउ गृह करि भय भोरी
मंदोदरी सुनेउ प्रभु आये * कौतुकही पाथोधि बँधाये
कर गहि पतिहि भवन निज आनी * बोली परम मनोहर बानी
चरन नाइ सिर अंचल रोपा * सुनहु बचन पिअ परिहरि कोपा
नाथ बयर कीजे ताही सों * बुधि बल सकि अ जीति जाही सों
तुम्हहिं रघुपतिहि अंतर कैसा * षलु षद्योत दिनकरहि जैसा
अतिबल मधु कैटभ जेहि मारे * महाबीर दितिसुत संहारे
जेहिं बलि बांधि सहसभुज मारा * सोइ अवतरेउ हरन महिभारा
तासु बिरोध न कीजिअ नाथा * काल करम जिव जाके हाथा

दो० रामहिं सौंपि जानकी, नाइ कमल पद माथ।
सुत कहँ राज समर्पि बन, जाइ भजिय रघुनाथ ७॥

नाथ दीनदयाल रघुराई * बाघौ सनमुष गये न षाई
चाहिअ करन सो सब करि बीते * तुम्ह सुर असुर चराचर जीते
संत कहहिं असि नीति दसानन * चौथे पन जाइहि नृप[१] कानन
तासु भजन कीजिअ तहँ भर्ता * जो करता पालक संहरता
सोइ रघुबीर प्रनत अनुरागी * भजहु नाथ ममता सब त्यागी
मुनिबर जतन करहिं जेहि लागी * भूप राज तजि होहिं बिरागी
सोइ कोसलाधीस रघुराया * आयेउ करन तोहि पर दाया
जौं पिअ मानहु मोर सिषावन * सुजस होइ तिहुँपुर अतिपावन

दो० अस कहि नयन नीर भरि, गहि पद कंपितगात।
नाथ भजहु रघुनाथहि, अचल होइ अहिबात ८॥

तब रावन मयसुता उठाई * कहइ लाग षल निज प्रभुताई
सुनु तइँ प्रिया बृथा भय माना * जग जोधा को मोहि समाना
बरुन कुबेर पवन जम काला * भुजबल जितेउँ सकल दिगपाला
देव दनुज नर सब बस मोरे * कवन हेतु उपजा भय तोरे
नाना बिधि तेहि कहेसि बुझाई * सभा बहोरि बैठ सो जाई
मंदोदरी हृदय अस जाना * काल बस्य उपजा अभिमाना
सभा आइ मंत्रिन्ह तेहिं बूझा * करिअ कवन बिधि रिपु से जूझा
कहहिं सचिव सुनु निसिचरनाहा * बार बार प्रभु पूंछहु काहा
कहहु कवन भय करिअ बिचारा * नर कपि भालु अहार हमारा

दो० सबके बचन श्रवन सुनि, कह प्रहस्त कर जोरि।

१–गृहस्थस्तु यदा पश्येद्बलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैवचापत्यं तदारण्यं समाश्रयेदिति मनुस्मृतौ॥

नीति बिरोध न करिअ प्रभु, मंत्रिन्हमति अति थोरि ९ ॥
कहहिं सचिव सठ ठकुर सोहाती * नाथ न पूर आव येहि भाँती
बारिधि लाँघि येक कपि आवा * तासु चरित मन महँ सब गावा
छुधा न रही तुम्हहिं तब काहू * जारत नगर कस न धरि षाहू
सुनत नीक आगे दुष पावा * सचिवन असमत प्रभुहि सुनावा
जेहिं बारीस बँधायेउ हेला[1] * उतरे सेन समेत सुबेला
सोभनु मनुज षाब हम भाई * बचन कहहिं सब गाल फुलाई
तात बचन मम सुनु अति आदर * जनि मन गुनहु मोहि करि कादर
प्रिय बानी जे सुनहिं जे कहहीं * अइसे नर निकाइ जग अहहीं
बचन परम हित सुनत कठोरे * सुनहिं जे कहहिं ते नर प्रभु थोरे
प्रथम बसीठ पठव सुनु नीती * सीता देइ करहु पुनि प्रीती
दो० नारि पाइ फिरि जाहिं जौ, तौ न बढाइअ रारि ।
नाहिं तो सनमुष समर महि, तात करिय हठि मारि १० ॥
यह मत जौ मानहु प्रभु मोरा * उभय प्रकार सुजस जग तोरा
सुत सन कह दसकंठ रिसाई * असमति सठ केहि तोहिं सिषाई
अबहीं ते उर संसय होई * बेनुमूल सुत भयेहु घमोई
सुनि पितु गिरा परुष अति घोरा * चला भवन कहि बचन कठोरा
हित मत तोहि न लागत कैसे * काल बिबस कहँ भेषज जैसे
संध्या समय जानि दससीसा * भवन चला निरषत भुजबीसा
लंका सिषर उपर आगारा * अति बिचित्र तहँ होइ अषारा
बैठ जाइ तेहि मंदिर रावन * लागे किन्नर गुनगन गावन
बाजहिं ताल पषाउज बीना * नृत्य करहिं अप्सरा प्रबीना
दो० सुनासीर सत सरिस सो, संतत करइ बिलास ।

१-हेलया दलितभूभारभारी, विजय । पुनः तारुण्यहेलारतिरंगलालसे श्रुतबोधे । हेला क्रीडा ॥

परमप्रबल रिपु सीसपर, तद्यपि सोच न त्रास ११॥

इहाँ सुबेल सैल रघुबीरा * उतरे सेन सहित अति भीरा
सिषर येक उतंग अति देषी * परम रम्य समसुभ्र बिसेषी
तहँ तरुकिसलय सुमन सोहाये * लछिमन रचि निजहाथ डसाये
तापर रुचिर मृदुल मृगछाला * तेहि आसन आसीन कृपाला
प्रभुकृत सीस कपीस उछंगा * बाम दहिन दिसि चाप निषंगा
दुहुँ करकमल सुधारत बाना * कह लंकेस मंत्र लगि काना
बडभागी अंगद हनुमाना * चरन कमल चापत बिधिनाना
प्रभु पाछे लछिमन बीरासन * कटिनिषंग कर बान सरासन

दो॰ येहि बिधि कृपा रूप गुन, धाम राम आसीन।
धन्य ते नर येहि ध्यान जे, रहतसदालयलीन १२॥
पूरब दिसा बिलोकि प्रभु, देषा उदित मयंक।
कहत सबहिंदेषहुससिहि, मृगपतिसरिसअसंक १३॥

पूरब दिसि गिरि गुहानिवासी * परम प्रताप तेज बलरासी
मत्त नाग तम कुंभ बिदारी * ससि केसरी गगन बनचारी
बिथुरे नभ मुकुताहल तारा * निसि सुंदरी केर सिंगारा
कह प्रभु ससि महँ मेचकताई * कहहु काह निजनिज मतिभाई
कह सुग्रींव सुनहु रघुराई * ससि महँ प्रगट भूमिकै झांई
मारेउ राहु ससिहि कह कोई * उर महँ परी स्यामता सोई
कोउकहजबबिधिरतिमुषकीन्हा * सारभाग ससिकर हरिलीन्हा
छिद्र सो प्रगट इंदु उरमाहीं * तेहि मग देषिअ नभपरिछाहीं
प्रभु कह गरलबंधु ससिकेरा * अति प्रिअ निजउरदीन्हबसेरा
बिष संजुत कर निकर पसारी * जारत बिरहवंत नर नारी

दो॰ कह हनुमंत सुनहु प्रभु, ससितुम्हार प्रिअदास।
तव मूरति तेहि उर बसति, सोइ स्यामता अभास १४॥

नवाह्न दिन ७

पवनतनय के बचन सुनि, बिहँसे राम सुजान।
दच्छिनदिसि बिलोकि प्रभु, बोले कृपानिधान १५॥

देषु बिभीषन दच्छिन आसा * घन घमंड दामिनी बिलासा
मधुर मधुर गरजै घन घोरा * होइ बृष्टि जनु उपल कठोरा
कहत बिभीषन सुनहु कृपाला * होइ न तडित न बारिदमाला
लंका सिषर उपर आगारा * तहँ दसकंधर केर अषारा
छत्र मेघ डंबर सिर धारी * सोइजनु जलदघटा अतिकारी
मंदोदरी श्रवन ताटंका * सोइ प्रभु जनु दामिनीदमंका
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा * सोइ रव मधुर सुनहुँ सुरभूपा
प्रभु मुसुकान समुझि अभिमाना * चाप चढाइ बान संधाना

दो॰ छत्र मुकुट ताटंक सब, हते एकही बान।
सब के देषत महिपरे, मरम न कोऊ जान १६॥
अस कौतुक करि रामसर, प्रबिसेउ आइ निषंग।
रावन सभा ससंक सब, देषि महा रसभंग १७॥

कंप न भूमि न मरुत बिसेषा * अस्त्र सस्त्र कछु नयन न देषा
सोचहिं सब निजहृदय मझारी * असगुन भयेउ भयंकर भारी
दसमुष देषि सभा भय पाई * बिहँसि बचनकह जुगुति बनाई
सिरौ गिरे संतत सुभ जाही * मुकुट परे कस असगुन ताही
सयन करहु निजनिजगृह जाई * गमने भवन सकल सिरनाई
मंदोदरी सोच उर बसेऊ * जबते श्रवनपूर महि षसेऊ
सजलनयन कह जुग करजोरी * सुनहुँ प्रानपति बिनती मोरी

कंत राम बिरोध परिहरहू * जानि मनुज जनि हठ मन धरहू

दो० बिस्वरूप रघुबंसमनि, करहु बचन बिस्वासु ।
लोक कल्पना बेद कर, अंग अंग प्रति जासु १८ ॥

पद पाताल सीस अज धामा * अपर लोक अँग अँग बिश्रामा
भृकुटि बिलास भयंकर काला * नयन दिवाकर कचघनमाला
जासु घ्रान अस्वनीकुमारा * निसि अरुदिवस निमेष अपारा
श्रवन दिसा दस बेद बषानी * मारुत स्वाँस निगम निजु बानी
अधरलोभ जम दसन कराला * माया हाँस बाहु दिगपाला
आनन अनल अंबुपतिजीहा * उतपति पालन प्रलय समीहा
रोमराजि अष्टादस भारा * अस्थि सैल सरिता नस जारा
उदर उदधि अधगो जातना * जगमय प्रभुकी बहु कलपना

दो० अहंकार सिव बुद्धि अज, मन ससि चित्त महान ।
मनुज बास सचराचर, रूपरासि भगवान १९ ॥
अस बिचारि सुनु प्रानपति, प्रभु सन बयरु बिहाइ ।
प्रीति करहु रघुबीर पद, मम अहिबात न जाइ २० ॥

बिहँसा नारि बचन सुनि काना * अहो मोह महिमा बलवाना
नारि सुभाव सत्य सब कहहीं * अवगुन आठ सदा उर रहहीं
साहस अनृत चपलता माया * भय अबिबेक असौच अदाया
रिपुकर रूप सकल तैं गावा * अति बिसाल भय मोहिं सुनावा
सो सब प्रिया सहज बस मोरे * समुझि परा प्रसाद अब तोरे
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई * येहि बिधि कहेहु मोरि प्रभुताई
तव बतकही गूढ मृगलोचनि * समुझत सुषद सुनत भयमोचनि
मंदोदरि मनमहँ असठयेऊ * पिअहि कालबस मतिभ्रम भयेऊ

दो० येहि बिधि करत बिनोद बहु, प्रात प्रगट दसकंध।
सहज असंक सो लंकपति, सभा गयो मदअंध २१॥
सो० फूलइ फरइ न बेत, जदपि सुधा बरषहिं जलद।
मूरुष हृदय न चेत, जौ गुरु मिलहिं बिरंचिसिव ३॥
इहां प्रात जागे रघुराई * पूंछा मत सब सचिव बोलाई
कहहु बेगि का करिअ उपाई * जामवंत कह पद सिर नाई
सुनु सर्बज्ञ सकल उरबासी * बुधिबल तेज धर्म गुन रासी
मंत्र कहौं निजमति अनुसारा * दूत पठाइअ बालिकुमारा
नीक मंत्र सब के मनमाना * अंगदसन कह कृपानिधाना
बालितनय बुधिबल गुनधामा * लंका जाहु तात मम कामा
बहुत बुझाइ तुम्हहिं का कहऊं * परम चतुर मैं जानत अहऊं
काज हमार तासु हित होई * रिपुसन करेहु बतकही सोई
सो० प्रभु अज्ञाधरि सीस, चरनबंदि अंगद उठेउ।
सोइ गुनसागर ईस, राम कृपा जापर करहु ४॥
स्वयं सिद्ध सब काज, नाथ मोहिं आदर दियौ।
अस बिचारि जुबराज, तन पुलकित हरषित हियौ ५॥
बंदि चरन उरधरि प्रभुताई * अंगद चलेउ सबहि सिरनाई
प्रभु प्रताप उर सहज असंका * रन बांकुरा बालिसुत बंका
पुर पैठत रावन कर बेटा * षेलत रहा होइगै भेटा
बातहिं बात करष बढिआई * जुगुल अतुलबलपुनि तरुनाई
तेहिं अंगद कहँ लात उठाई * गहिपद पटकेउ भूमि भँवाई
निसिचर निकर देषि भट भारी * जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी
येक येक सन मरम न कहहीं * समुझि तासु बध चुपकरिरहहीं

भयेउ कोलाहल नगर मँझारी * आवा कपि लंका जेहिं जारी
अबधौं कहा करिहि करतारा * अति सभीत सब करहिं बिचारा
बिन पूँछे मग देहिं देषाई * जेहि बिलोक सोइ जाइ सुषाई

दो० गयेउ सभा दरबार तब, सुमिरि राम पदकंज।
सिंहठवनि इत उत चितव, धीर बीर बलपुंज २२॥

तुरत निसाचर येक पठावा * समाचार रावनहिं जनावा
सुनत बिहँसि बोला दससीसा * आनहु बोलि कहां करकीसा
आयसु पाइ दूत बहु धाये * कपिकुंजरहि बोलि लै आये
अंगद दीष दसानन वैसे * सहित प्रान कज्जलगिरि जैसे
भुजा बिटप[1] सिर शृंग समाना * रोमावली लता जनु नाना
मुष नासिका नयन अरु काना * गिरि कंदरा षोह अनुमाना
गयेउ सभा मन नेकु न मुरा * बालितनय अति बलबाँकुरा
उठे सभासद कपि कहँ देषी * रावन उर भा क्रोध बिसेषी

दो० जथा मत्त गज जूथ महँ, पंचानन चलि जाइ।
राम प्रताप सुमिरि मन, बैठ सभा सिरनाइ २३॥

कह दसकंठ कवन तैं बंदर * मै रघुबीर दूत दसकंधर
मम जनकहि तोहि रही मिताई * तव हित कारन आयेउँ भाई
उत्तम कुल पुलस्ति कर नाती * सिव बिरंचि पूजेहु बहुभाँती
बर पायहु कीन्हेहु सब काजा * जीतेहु लोकपाल सबराजा
नृप अभिमान मोहबस किंवा * हरि आनेहुँ सीता जगदंबा
अब सुभ कहा सुनहुँ तुम्ह मोरा * सब अपराध छमहिं प्रभु तोरा
दसन गहहु तृन कंठ कुठारी * परिजन सहित संग निजनारी

१-विटपः पल्लवे शृंगे विस्तारे स्तंभशाखयोरिति-विश्वः॥

सादर जनकसुता करि आगे * येहिबिधि चलहुसकलभयत्यागे

दो० प्रनतपाल रघुबंसमनि, त्राहि त्राहि अब मोहि।
आरत गिरा सुनत प्रभु, अभय करैंगे तोहि २४॥

रे कपि पोत[1] बोलु संभारी * मूढ न जानेहि मोहि सुरारी
कहु निजनाम जनक कर भाई * केहि नाते मानिये मिताई
अंगद नाम बालिकर बेटा * तासौं कबहुँ भई ही भेटा
अंगद बचन सुनत सकुचाना * रहा बालि बानर मैं जाना
अंगद तहीं बालिकर बालक * उपजेहु बंस अनल कुलघालक
गर्भ न गयेउ ब्यर्थ तुम्हजायेहु * निज मुष तापस दूत कहायेहु
अब कहु कुसल बालिकहँ अहई * बिहँसि बचन तब अंगद कहई
दिन दसगये बालिपहिं जाई * बूझेहु कुसल सषा उरलाई
रामबिरोध कुसल जस होई * सो सब तोहि सुनाइहि सोई
सुनु सठ भेद होइ मन ताके * श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाके

दो० हम कुलघालक सत्य तुम्ह, कुलपालक दससीस।
अंधौ बधिर न अस कहहिं, नयन कान तव बीस २५॥

सिव बिरंचि सुर मुनि समुदाई * चाहत जासु चरन सेवकाई
तासु दूत होइ हम कुल बोरा * अइसिहु मतिउर बिहर न तोरा
सुनि कठोर बानी कपिकेरी * कहत दसानन नयन तरेरी
षल तव कठिन बचन सब सहऊं * नीति धर्म मै जानत अहऊं
कह कपि धर्मसीलता तोरी * हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी
देषी नयन दूत रषवारी * बूडि न मरहु धर्म ब्रतधारी
नाक कान बिनु भगनि निहारी * छमा कीन्ह तुम्ह धरम बिचारी

१-पोतः पाकोर्भको डिंभः पृथुकः शावकः शिशुः॥

धरमसीलता तव जग जागी * पावा दरस हमहुँ बडभागी

दो० जनिजल्पसि जडजंतु कपि, सठ बिलोकु ममबाहु।
लोकपाल बल बिपुलससि, ग्रसन हेतु सबराहु २६॥
पुनि नभसर ममकर निकर, कमलन्हि पर करि बास।
सोभित भयेउ मरालइव, संभु सहित कैलास २७॥

तुम्हरे कटकमाहिं सुनु अंगद * मोसन भिरिहि कवन जोधा बद
तव प्रभु नारिबिरह बलहीना * अनुज तासु दुषदुषी मलीना
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ * अनुज हमार भीरु अति सोऊ
जामवंत मंत्री अति बूढा * सोइ कि होइ अब समरारूढा
सिलिपकर्म जानहिं नल नीला * है कपि येक महा बलसीला
आवा प्रथम नगर जेहिं जारा * सुनत बचन कह बालिकुमारा
सत्य बचन कहु निसिचरनाहा * साँचेहु कीस कीन्ह पुरदाहा
रावन नगर अलप कपि दहई * सुनि असबचन सत्य को कहई
जो अति सुभट सराहेहु रावन * सो सुग्रीव केर लघु धावन
चलै बहुत सो बीर न होई * पठवा षबरि लेन हम सोई

दो० सत्य नगर कपि जारेउ, बिनु प्रभु आयसु पाइ।
फिरि न गयेउ सुग्रीव पहिं, तेहिभय रहा लुकाइ २८॥
सत्य कहहि दसकंठ सब, मोहि न सुनि कछु कोह।
कोउ न हमरे कटक अस, तुम सन लरत जो सोह २९॥
प्रीति बिरोध समान सन, करिअ नीति असि आहि।
जो मृगपति बध मेडुकन्हि, भलकि कहै कोउ ताहि ३०॥
जद्यपि लघुता राम कहँ, तोहि बधे बड दोष।
तदपि कठिन दसकंठ सुनु, छत्र जातिकर रोष ३१॥

बक्र उक्ति धनु बचन सर, हृदय दहेउ रिपु कीस।
प्रतिउत्तर सँडसिन्ह मनहुँ, काढ़त भट दससीस ३२॥
हँसि बोल्यो दसमौलि तब, कपिकर बड़ गुन येक।
जो प्रतिपालै तासु हित, करै उपाइ अनेक ३३॥

धन्य कीस जो निज प्रभुकाजा * जहँ तहँ नाचै परिहरि लाजा
नाचि कूदि करि लोग रिझाई * पतिहित करै धर्म निपुनाई
अंगद स्वामिभक्ति तव जाती * प्रभुगुनकस न कहसि येहि भाँती
मै गुनगाहक परम सुजाना * तव कटुरटनि करौं नहिं काना
कह कपि तव गुनगाहकताई * सत्य पवनसुत मोहि सुनाई
बन बिधंसि सुत बधि पुरजारा * तदपि न तेहि कछु कृत अपकारा
सोइ बिचारि तव प्रकृति सोहाई * दसकंधर मै कीन्ह ढिठाई
देषेउँ आइ जो कछु कपिभाषा * तुम्हरे लाज न रोष न माषा
जौं असिमति पितु षायेहु कीसा * कहि अस बचन हँसा दससीसा
पितहि षाइ षातेउँ पुनि तोही * अबहीं समुझि परा कछु मोही
बालि बिमल जसभाजन जानी * हतौं न तोहि अधम अभिमानी
कहु रावन रावन जग केते * मै निज श्रवन सुने सुनु जेते
बलिहि जितन येक गयेउ पताला * राषेउ बाँधि सिसुन्ह हयसाला
षेलहिं बालक मारहिं जाई * दयालागि बलि दीन्ह छोडाई
येक बहोरि सहसभुज देषा * धाइ धरा जिमि जंतु बिसेषा
कौतुक लागि भवन लै आवा * सो पुलस्ति मुनि जाइ छोडावा

दो॰ येक कहत मोहि सकुच अति, रहा बालि की कांष।
इन्ह महँ रावन तै कवन, सत्य बदहि तजि माष ३४॥

सुनु शठ सोइ रावन बलसीला * हरगिरि जानु जासु भुजलीला

जान उमापति जासु सुराई * पूजेउँ जेहि सिर सुमन चढाई
शिरसरोज निज करन्हि उतारी * पूजेउँ अमित बार त्रिपुरारी
भुजबिक्रम जानहिं दिगपाला * सठ अजहूं जिन्हके उरसाला
जानहिं दिग्गज उर कठिनाई * जब जब भिरउँ जाइ बरिआई
जिन्हके दशन करालन फूटे * उर लागत मूलक इव टूटे
जासु चलत डोलत इमि धरणी * चढत मत्तगज जिमि लघुतरनी
सोइ रावन जगबिदित प्रतापी * सुनेहि न श्रवन अलीकप्रलापी

दो० तेहि रावन कहँ लघु कहसि, नरकर करसि बषान ।
रे कपि बर्बर पर्ब षल, अब जाना तवज्ञान ३५॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी * बोलु सँभारि अधम अभिमानी
सहसबाहुँ भुज गहन अपारा * दहन अनलसम जासु कुठारा
जासु परसु सागर षर धारा * बूडे नृप अगनित बहु बारा
तासु गर्ब जेहि देषत भागा * सो नर क्यौं दससीस अभागा
राम मनुज कस रे सठ बंगा * धन्वी काम नदी पुनि गंगा
पसु सुरधेनु कल्पतरु रूषा * अन्नदान अरु रस पीयूषा
बैनतेय षग अहि सहसानन * चिंतामनि पुनि उपल दसानन
सुनु मतिमंद लोक बैकुंठा * लाभकि रघुपतिभगति अकुंठा

दो० सेनसहित तव मान मथि, बन उजारि पुर जारि ।
कस रे सठ हनुमान कपि, गये उजो तव सुत मारि ३६॥

सुनु रावन परिहरि चतुराई * भजसि न कृपासिंधु रघुराई
जो षल भयेसि रामकर द्रोही * ब्रह्म रुद्र सक राषि न तोही
मूढ बृथा जनि मारसि गाला * राम बयरु अस होइहि हाला
तव सिर निकर कपिन्ह के आगे * परिहहिं धरनि राम सर लागे

ते तव सिर कंदुक सम नाना * षेलिहहिं भालु कीस चौगाना
जबहिं समर कोपिहि रघुनायक * छुटिहहिं अतिकराल बहुसायक
तबकिचलिहिअसगालतुम्हारा * अस विचारि भजु राम उदारा
सुनत बचन रावन परजरा * जरत महानल जनु घृत परा

दो० कुंभकरन अस बंधु मम, सुत प्रसिद्ध सक्रारि।
मोर पराक्रम नहिं सुनेहि, जितेउँ चराचर भारि ३७॥

सठ साषामृग जोरि सहाई * बाँधा सिंधु इहै प्रभुताई
नांघहिं षग अनेक बारीसा * सूर न होहिं ते सुनु जड कीसा
मम भुजसागर बलजल पूरा * जहँ बूडे बहु सुर नर सूरा
बीस पयोधि अगाध अपारा * को अस बीर जो पाइहि पारा
दिगपालन मैं नीर भरावा * भूप सुजस षल मोहिं सुनावा
जौं पै समर सुभट तव नाथा * पुनिपुनि कहसि जासु गुनगाथा
तौ बसीठि पठवत केहि काजा * रिपुसन प्रीति करत नहिं लाजा
हरगिरिमथन निरषु ममबाहू * पुनि सठकपि निजप्रभुहि सराहू

दो० सूर कवन रावन सरिस, स्वकर काटि जेहि सीस।
हुने अनलअति हरषबहु, बार साषि गौरीस ३८॥

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला * बिधिके लिषे अंक निजभाला
नरके कर आपन बध बांची * हँसेउँ जानि बिधिगिराअसांची
सोउ मन समुझि त्रास नहिंमोरे * लिषा बिरंचि जरठ मति भोरे
आन बीर बल सठ मम आगे * पुनिपुनि कहसि लाजपतित्यागे
कह अंगद सलज्ज जगमाहीं * रावन तोहि समान कोउ नाहीं
लाजवंत तव सहज सुभाऊ * निजमुषनिजगुनकहसिन काऊ
सिर अरु सैलकथा चितरही * तातें बार बीस तैं कही

सो भुजबल राषेहु उरघाली * जीतेहु सहसबाहु बलि बाली
सुनु मतिमंद देहि अब पूरा * काटे सीस कि होइअ सूरा
इंद्रजालि कहँ कहिअ न बीरा * काटइ निजकर सकल सरीरा

दो० जरहिं पतंग मोह बस, भार बहहिं षरबृंद।
ते नहिं सूर कहावहिं, समुझि देषु मतिमंद ३९॥

अब जनि बतबढाव षल करही * सुनु मम बचन मान परिहरही
दसमुष मै न बसीठी आयेउ * अस बिचारि रघुबीर पठायेउ
बार बार इमि कहइ कृपाला * नहिं गजारि जस बधे सृगाला
मन महँ समुझि बचन प्रभु केरे * सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे
नाहिं तौ करि मुष भंजन तोरा * लै जातेउँ सीतहि बरजोरा
जानेउँ तव बल अधम सुरारी * सूने हरिआनेहि परनारी
तै निसिचरपति गर्ब बहूता * मै रघुपति सेवक कर दूता
जौं न राम अपमानहिं डरऊं * तोहि देषत अस कौतुक करऊं

दो० तोहि पटकि महि सेन हति, चौपट करि तव गावँ।
तव जुवतिन्ह समेत सठ, जनकसुतहि लै जावँ ४०॥

जौं अस करौं तदपि न बडाई * मुयेहि बधे नहिं कछु प्रभुताई
कौल[१] कामबस कृपिन बिमूढा * अति दरिद्र अजसी अति बूढा
सदाँ रोगबस संतत क्रोधी * बिस्नु बिमुष श्रुति संत बिरोधी
तनपोषक निंदक अघषानी * जीवत सव[२] सम चौदह प्रानी
अस बिचारि षल बधउँ न तोही * अब जनि रिसि उपजावसि मोही
सुनि सकोप कह निसिचरनाथा * अधर दसन डसि मीजत हाँथा
रे कपि अधम मरन अब चहसी * छोटे बदन बात बडि कहसी

१-कौलः वामचारिणः। पुनः नानावेशधराः कौलाः॥
२-नेहयत्कर्मधर्माय न विरागाय कल्पते। न तीर्थपदसेवायै जीवन्नपि मृतो हि सः॥

कटु जलपसि जडकपि बलजाके * बल प्रताप बुधि तेज न ताके

दो० अगुन अमान जानि तेहि, दीन्ह पिता बनवास।
सो दुष अरु जुवती बिरह, पुनिनिसिदिनममत्रास ४१॥
जिन्हके बलकर गर्ब तोहि, अइसे मनुज अनेक।
षाहिं निसाचर दिवस निसि, मूढ समुझु तजि टेक ४२॥

जब तेहिं कीन्ह राम कै निंदा * क्रोधवंत अति भयेउ कपिंदा
हरि हर निंदा सुनै जो काना * होइ पाप गोघात समाना
कटकटान कपि कुंजर भारी * दुहुँ भुजदंड तमकि महिमारी
डोलत धरनि सभासद षसे * चले भाजि भय मारुत ग्रसे
गिरत सँभारि उठा दसकंधर * भूतल परे मुकुट अति सुंदर
कछु तेहिं लै निज सिरन्ह सँवारे * कछु अंगद प्रभु पास पँवारे
आवत मुकुट देषि कपि भागे * दिनही लूक परन बिधि लागे
की रावन करि कोप चलाये * कुलिस चारि आवत अति धाये
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डेराहू * लूक न असनि केतु नहिं राहू
ये किरीट दसकंधर केरे * आवत बालितनय के प्रेरे

दो० तरकि पवनसुत कर गहेउ, आनि धरे प्रभु पास।
कौतुक देषहिं भालु कपि, दिनकर सरिस प्रकास ४३॥
उहाँ सकोप दसानन, सब सन कहत रिसाइ।
धरहु कपिहि धरि मारहु, सुनि अंगद मुसुकाइ ४४॥

येहि बधि वेगि सुभट सब धावहु * षाहु भालु कपि जहँ तहँ पावहु
मर्कट हीन करहु महि जाई * जिअत धरहु तापस द्वौ भाई
पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा * गाल बजावत तोहि न लाजा
मरु गर काटि निलज कुलघाती * बल बिलोकि बिहरत नहिं छाती

रे त्रिअचोर कुमारगगामी * षलमलरासि मंदमति कामी
सन्यपात जलपसि दुर्बादा * भयेसि कालबस षल मनुजादा
याको फल पावहिगो आगे * बानर भालु चपेटन्हि लागे
राम मनुज बोलत असि बानी * गिरहिं न तवरसना अभिमानी
गिरिहहिंरसना संसय नाहीं * सिरन्ह समेत समरमहि माहीं

सो० सो नर क्यौं दसकंध, बालि बध्यो जेहि येकसर।
बीसहु लोचन अंध,धिगतवजन्मकुजातिजडद॥
तव सोनित की प्यास, तृषित रामसायकनिकर।
तजौं तोहि तेहि त्रास,कटुजलपकनिसिचरअधम७॥

मै तव दसन तोरिबे लायक * आयसु मोहि न दीन्हरघुनायक
अस रिसि होति दसौ मुष तोरौं * लंका गहि समुद्र महँ बोरौं
गूलरि फल समान तव लंका * बसहु मध्य तुम्ह जंतु असंका
मै बानर फल षात न बारा * आयसु दीन्ह न राम उदारा
जुगुति सुनत रावन मुसुकाई * मूढ सीष कहँ बहुत झुठाई
बालि न कबहुँ गाल अस मारा * मिलितपसिन्हतै भयेसिलबारा
सांचहु मै लबार भुजबीहा * जौ न उपारेउँ तव दस जीहा
समुझि राम प्रताप कपि कोपा * सभा माँझ पन करि पदरोपा
जउँ ममचरनसकसि सठ टारी * फिरहिं राम सीता मै हारी
सुनहु सुभट सब कह दससीसा * पद गहि धरनि पछारहु कीसा
इंद्रजीत आदिक बलवाना * हरषि उठे जहँ तहँ भटनाना
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई * पद न टरै बैठहिं सिरनाई
पुनि उठि झपटहिं सुर आराती * टरै न कीस चरन येहि भाँती
पुरुष कुजोगी जिमि उरगारी * मोह बिटप नहिं सकहिं उपारी

दो० कोटिन मेघनाद सम, सुभट उठे हरषाइ।
झपटहिं टरइ न कपिचरन, पुनि बैठहिं सिरनाइ ४५॥
भूमि न छाँडत कपि चरन, देषत रिपुमद भाग।
कोटि बिघ्न ते संत कर, मन जिमि नीति न त्याग ४६॥
कपिबल देषि सकल हिअहारे * उठा आप कपि के परचारे
गहत चरन कह बालिकुमारा * मम पद गहे न तोर उबारा
गहसि न रामचरन सठ जाई * सुनत फिरा मन अतिसकुचाई
भयेउ तेजहत श्री सब गई * मध्य दिवस जिमि ससिसोहई
सिंहासन बैठेउ सिर नाई * मानहुँ संपति सकल गवाँई
जगदातमा प्रानपति रामा * तासु बिमुषकिमि लह बिश्रामा
उमा राम की भृकुटि बिलासा * होइ बिस्व पुनि पावइ नासा
तृनते कुलिस कुलिस तृन करई * तासु दूतपन कहु किमि टरई
पुनि कपि कही नीति बिधिनाना * मान न ताहि काल नियराना
रिपुमदमथिप्रभु सुजससुनायो * यह कहि चल्यौ बालिनृपजायो
तोहिं अबहीं का करौं बडाई * हतौं न षेत षेलाइ षेलाई
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा * सो सुनि रावन भयेउ दुषारा
जातुधान अंगद पन देषी * भय ब्याकुल सब भयेउ बिसेषी
दो० रिपुबल धरषि हरषि कपि, बालितनय बलपुंज।
पुलक सरीर नयन जल, गहे रामपद कंज ४७॥
साँझ जानि दसकंधर, भवन गयेउ बिलपाइ।
मंदोदरी रावनहिं, बहुरि कहा समुझाइ ४८॥
कंत समुझि मन तजहु कुमतिही * सोहन समर तुम्हहिं रघुपतिही
रामानुज लघु रेष षचाई * सोउ नहिं नाघेउ असि मनुसाई

पिअ तुम्ह ताहि जितब संग्रामा * जाके दूत केर यह कामा
कौतुक सिंधु नाघि तव लंका * आयेउ कपि केहरी असंका
रषवारे हति बिपिन उजारा * देषत तोहि अच्छ जेहि मारा
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा * कहाँ रहा बल गर्ब तुम्हारा
अब पति मृषा गाल जनिमारहु * मोर कहा कछु हृदय बिचारहु
पतिरघुपतिहिमनुजजनिमानहुँ*अगजगनाथ अतुलबल जानहुँ
बान प्रताप जानु मारीचा * तासु कहा नहिं मानेहि नीचा
जनकसभा अगनित भूपाला * रहेहु तुम्हौ बल अतुलबिसाला
भंजि धनुष जानकी बिआही * तब संग्राम जितेहु किन ताही
सुरपतिसुत जानै बल थोरा * राषा जिअत आंषि गहि फोरा
सूपनषा कै गति तुम देषी * तदपि हृदय नहिं लाजबिसेषी

दो० बधि बिराध षरदूषनहिं, लीला हत्यौ कबंध।
बालि येक सर मार्‍यौ, तेहि जानहुँ दसकन्ध ४९॥

जेहि जलनाथ बँधायेउ हेला * उतरे प्रभुदल सहित सुबेला
कारुनीक दिनकरकुलकेतू * दूत पठायेउ तव हित हेतू
सभामांझ जेहिं तव बल मथा * करिबरूथ महँ मृगपति जथा
अंगद हनुमत अनुचर जाके * रन बाँकुरे बीर अति बाँके
तेहिकहँपिअ पुनिपुनि नरकहहू * मुधा मान ममता मद बहहू
अहह कंत कृत राम बिरोधा * काल बिबस मन उपज न बोधा
कालदंड गहि काहु न मारा * हरै धर्म बल बुद्धि बिचारा
निकट काल जेहि आवत साईं * तेहि भ्रम होत तुम्हारिहि नाईं

दो० दुइ सुत मारे दहेउ पुर, अजहुँ पूर पिअ देहु।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि, नाथ बिमल जस लेहु ५०॥

नारिबचन सुनि बिसिषसमाना * सभा गयेउ उठि होत बिहाना
बैठ जाइ सिंहासन फूली * अतिअभिमान त्रास सब भूली
इहां राम अंगदहि बोलावा * आइ चरन पंकज सिरनावा
अति आदर समीप बैठारी * बोले बिहँसि कृपाल षरारी
बालितनय कौतुक अति मोही * तात सत्य कहु पूंछउं तोही
रावन जातुधान कुल टीका * भुजबल अतुल जासु जगलीका
तासु मुकुट तुम्ह चारि चलाये * कहहु तात कवनी बिधि पाये
सुनु सर्वज्ञ प्रनत सुषकारी * मुकुट न होहिं भूप गुन चारी
साम दान अरु दंड बिभेदा * नृप उर बसहिं नाथ कह बेदा
नीति धर्म के चरन सोहाये * अस जिअजानिनाथपहिंआये

दो॰ धर्महीन प्रभुपद बिमुष, कालबिवस दससीस ।
तेहि परिहरि गुन आये, सुनहु कोसलाधीस ५१॥
परम चतुरता श्रवन सुनि, बिहँसे रामउदार ।
समाचार तब सब कहे, गढ़केबालिकुमार ५२॥

रिपुके समाचार जब पाये * राम सचिवसबनिकट बोलाये
लंका बाँके चारि दुआरा * केहिबिधिलागिअ करहुबिचारा
तब कपीस ऋच्छेस बिभीषन * सुमिरि हृदय दिनकरकुलभूषन
करि बिचार तिन्ह मंत्र दिढ़ावा * चारि अनी कपि कटक बनावा
जथाजोग सेनापति कीन्हे * जूथपसकलबोलि तब लीन्हे
प्रभुप्रतापकहि सब समुझाये * सुनि कपि सिंहनाद करि धाये
हरषित राम चरन सिर नावहिं * गहि गिरिसिषरबीरसबधावहिं
गर्जहिं तर्जहिं भालुकपीसा * जय रघुबीर कोसलाधीसा
जानत परम दुर्ग अति लंका * प्रभु प्रताप कपि चले असंका

घटाटोप करि चहुँदिसि घेरी * मुषहि निसान बजावहिं भेरी

दो॰ जयति राम जय लच्छिमन, जय कपीस सुग्रीव।
गर्जहिं सिंह नाद कपि, भालु महाबल सींव ५३॥

लंका भयेउ कोलाहल भारी * सुना दसानन अति अहँकारी
देषहु बनरन्ह केरि ढिठाई * बिहँसि निसाचर सेन बोलाई
आये कीस काल के प्रेरे * छुधावंत सब निसिचर मेरे
असकहि अट्टहाँस सठ कीन्हा * गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा
सुभट सकल चारिहु दिसि जाहू * धरि धरि भालु कीस सब षाहू
उमा रावनहिं अस अभिमाना * जिमि टिट्टिभ षग सूत उताना
चले निसाचर आयसु मांगी * गहिकर भिंडिपाल बर साँगी
तोमर मुद्गर परसु प्रचंडा * सूल कृपान परिघ गिरिषंडा
जिमि अरुनोपल निकर निहारी * धावहिं सठ षग मांसु अहारी
चोंचभंग दुष तिन्हहिं न सूझा * तिमि धाये मनुजाद अबूझा

दो॰ नानायुध सर चाप धर, जातुधान बलबीर।
कोट कँगूरन्हि चढ़ि गये, कोटि कोटि रनधीर[1] ५४॥

कोट कँगूरन्हि सोहहिं कैसे * मेरु के शृंगन्हि जनु घन बैसे
बाजहि ढोल निसान जुझाऊ * सुनि धुनि होइ भटन्हि मन चाऊ
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा * सुनि कादर उर जाहि दरारा
देषि न जाइ कपिन्ह के ठट्टा * अति बिसाल तन भालु सुभट्टा
धावहिं गनहिं न अवघट घाटा * पर्वत फोरि करहिं गहि बाटा
कटकटाहिं कोटिन्ह भट गर्जहिं * दसन वोठ काटहिं अति तर्जहिं
उत रावन इत राम दोहाई * जयति जयति जय परी लराई

१- धीरः पण्डितमद्ययोरिति धरणिः॥

निसिचर सिषरसमूह ढहावहिं * कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं

छंद

धरि कुधर षंड प्रचंड मर्कट भालु गढ़पर डारहीं।
झपटहिं चरनगहि पटकि महि भजि चलत बहुरि प्रचारहीं॥
अतितरलतरुनप्रतापतरपहिं तमकि गढ़ पर चढ़िगये।
कपि भालु चढ़ि मंदिरन्ह जहँ तहँ रामजस गावत भये १॥

दो० येकयेकनिसिचरगहि, पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपु हेठ भट, गिरहिं धरनिपर आइ ५५॥

रामप्रताप प्रबल कपि जूथा * मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा
चढे दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर * जय रघुवीर प्रताप दिवाकर
चले निसाचर निकर पराई * प्रबल पवन जिमि घनसमुदाई
हाहाकार भयेउ पुर भारी * रोवहिं बालक आतुर नारी
सब मिलि देहिं रावनहिं गारी * राज करत येहिं मृत्यु हँकारी
निजदलबिचलसुनी तेहिकाना * फेरि सुभट लंकेस रिसाना
जो रनबिमुष सुना मै काना * सो मै हतब कराल कृपाना
सर्बस षाइ भोगकरि नाना * समरभूमि भये वल्लभ प्राना
उग्र बचन सुनि सकल डेराने * चले क्रोधकरि सुभट लजाने
सन्मुष मरन बीरकै सोभा * तब तिन्ह तजा प्रानकर लोभा

दो० बहुआयुध धर सुभटसब, भिरहिं प्रचारि प्रचारि।
ब्याकुल कियेभालुकपि, परिघत्रिसूलन्हिमारि ५६॥

भय आतुर कपि भागन लागे * जद्यपि उमा जीतिहहिं आगे
कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता * कहँ नल नील दुबिदबलवंता
निजदलबिकलसुना हनुमाना * पच्छिम द्वार रहा बलवाना
मेघनाद तहँ करै लराई * टूट न द्वार परम कठिनाई

पवनतनयमन भा अति क्रोधा * गर्जेउ प्रबल काल सम जोधा
कूदि लंक गढ ऊपर आवा * गहि गिरि मेघनादकहँ धावा
भंजेउ रथ सारथी निपाता * ताहि हृदय महँ मारेसि लाता
दुसरे सूत बिकल तेहि जाना * स्यंदन घालि तुरित गृह आना

दो० अंगद सुना पवनसुत, गढपर गयेउ अकेल।
रन बाँकुरा बालिसुत, तरकि चढेउ कपिपेल ५७॥

जुद्ध बिरुद्ध क्रुद्ध द्वौ बंदर * राम प्रताप सुमिरि उरअंतर
रावन भवन चढे द्वौ धाई * करहिं कोसलाधीस दोहाई
कलस सहितगहिभवनढहावा * देषि निसाचरपति भय पावा
नारिबृंद कर पीटहिं छाती * अब दुइ कपि आये उतपाती
कपिलीलाकरितिन्हहिंडेरावहिं * रामचंद्र कर सुजस सुनावहिं
पुनि कर गहि कंचनके षंभा * कहेन्हि करिअ उतपात अरंभा
गर्जि परे रिपु कटक मझारी * लागे मर्दइ भुजबल भारी
काहुहि लात चपेठान्हि केहू * भजेहु न रामहिं सो फल लेहू

दो० येक येकसन मर्दहिं, तोरि चलावहिं मुंड।
रावन आगे परहिं ते, जनु फूटहिं दधिकुंड ५८॥

महा महा मुषिया जे पावहिं * ते पदगहि प्रभु पास चलावहिं
कहहिं बिभीषन तिन्हके नामा * देहिं राम तिन्हहूँ निज धामा
षल मनुजाद द्विजामिष भोगी * पावहिं गति जो जाँचत जोगी
उमा राम मृदुचित करुनाकर * बयरभावसुमिरतमोहिंनिसिचर
देहिं परम गति सो जिअजानी * अस कृपालु को कहहु भवानी
असप्रभुसुनिनभजहिंभ्रमत्यागी * नर मतिमंद ते परम अभागी
अंगद अरु हनुमंत प्रबेसा * कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेसा

लंका द्वौ कपि सोहहिं कैसे * मथहिं सिंधु दुइ मंदर जैसे
दो० भुजबलरिपुदलदलमलिउ, देषि दिवसकर अंत।
कूदे जुगल बिगत श्रम, आये जहँ भगवंत ५९॥
प्रभुपद कमल सीस तिन्ह नाये * देषि सुभट रघुपति मन भाये
राम कृपाकरि जुगल निहारे * भये बिगत श्रम परम सुषारे
गये जानि अंगद हनुमाना * फिरे भालु मर्कट भट नाना
जातुधान प्रदोष बल पाई * धाये करि दससीस दोहाई
निसिचर अनी देषि कपि फिरे * जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे
द्वौ दल प्रबल प्रचारिप्रचारी * लरत सुभट नहिं मानत हारी
महाबीर निसिचर सब कारे * नाना बरन बली मुष भारे
सबलजुगलदलसमअतिजोधा * कौतुक करत लरत करि क्रोधा
प्राबिट सरद पयोद घनेरे * लरत मनहुँ मारुत के प्रेरे
अनिप अकंपन अरु अतिकाया * बिचलत सेन कीन्ह इन्ह माया
भयेउनिमिषमहँअतिअँधियारा * बृष्टि होइ रुधिरोपल छारा
दो० देखि निबिडतम दसहुँ दिसि, कपिदलभयेउ षँभार।
येकहि येक न देषईं, जहँ तहँ करहिं पुकार ६०॥
सकल मरम रघुनायक जाना * लिये बोलि अंगद हनुमाना
समाचार सब कहि समुझाये * सुनत कोपि कपिकुंजर धाये
पुनि कृपाल हँसि चाप चढ़ावा * पावक सायक सपदि चलावा
भयेउ प्रकास कतहुँ तम नाहीं * ज्ञान उदय जिमि संसय जाहीं
भालु बली मुष पाइ प्रकासा * धाये हरषि बिगतश्रम त्रासा
हनूमान अंगद रन गाजे * हांक सुनत रजनीचर भाजे
भागत भटपटकहिं धरि धरनी * करहिंभालुकपिअद्भुतकरनी

गहिपद डारहिं सागर माहीं * मकर उरग झष धरिधरि षाहीं
दो॰ कछु मारे कछु घायल, कछु गढ चले पराइ।
गर्जहिं भालु बली मुष, रिपुदल बल बिचलाइ ६१ ॥
निसा जानि कपि चारिउ अनी * आये जहाँ कोसलाधनी
राम कृपाकरि चितवा सबही * भये बिगतश्रम बानर तबही
उहां दसानन सचिव हँकारे * सबसन कहेसि सुभट जे मारे
आधा कटक कपिन्ह संघारा * कहहु बेगि का करिअ बिचारा
मालवंत अति जरठ निसाचर * रावन मातु पिता मंत्रीबर
बोला बचन नीति अतिपावन * सुनहु तात कछु मोर सिषावन
जबतें तुम्ह सीता हरिआनी * असगुन होहिं न जाइ बषानी
बेद पुरान जासु जस गायो * राम बिमुष काहु न सुष पायो
दो॰ हिरन्याच्छ भ्रातासहित, मधुकैटभ बलवान।
जेहिं मारे सोइ अवतरेउ, कृपासिंधु भगवान ६२ ॥

मासपरायण २५

कालरूप षलबन दहन, गुनागार घन बोध।
शिव बिरंचि जेहि सेवहिं, तासों कवन बिरोध ६३ ॥
परिहरि बैर देहु बैदेही * भजहु कृपानिधि परम सनेही
ताके बचन बान सम लागे * करिआ मुहँ करि जाहि अभागे
बूढ भयसि नतौ मरतेउँ तोही * अब जनि नयन देषावसि मोही
तेहि अपने मन अस अनुमाना * बध्यौ चहत यहि कृपानिधाना
सो उठि गयेउ कहत दुर्बादा * तब सकोप बोलेउ घननादा
कौतुक प्रात देषिअहु मोरा * करिहौं बहुत कहौं का थोरा
सुनि सुत बचन भरोसा आवा * प्रीति समेत अंक बैठावा

करत बिचार भयेउ भिनुसारा * लागे कपि पुनि चहूँ दुआरा
कोपि कपिन दुर्घट गढ घेरा * नगर कोलाहल भयेउ घनेरा
बिबिधायुध धर निसिचर धाये * गढते पर्वत सिषर ढहाये

छंद

ढाहे महीधरसिषर कोटिन्ह बिबिधि बिधि गोला चले।
घहरात जिमि पविपात गर्जत जनु प्रलय के बादले॥
मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लटत तन जर्जरभये।
गहि सैल तेहि गढ पर चलावहिं जहँ सो तहँ निसिचरहये २॥

दो० मेघनाद सुनि श्रवन अस, गढ पुनि छेंका आइ।
उतर्यौ बीर दुर्गतें, सनमुष चल्यौ बजाइ ६४॥

कहँ कौसलाधीस द्वौ भ्राता * धन्वी सकल लोकबिष्याता
कहँ नल नील दुबिद सुग्रीवाँ * अंगद हनूमंत बलसींवाँ
कहां बिभीषन भ्राताद्रोही * आजु सबहि हठि मारउँ वोही
अस कहि कठिनबान संधाने * अतिसय क्रोध श्रवनलगि ताने
सर समूह सो छाडइ लागा * जनु सपच्छ धवहिं बहु नागा
जहँ तहँ परत देषिअहि बानर * सन्मुषहोइ न सके तेहिअवसर
जहँ तहँ भागि चले कपि रिक्षा * बिसरी सबहि जुद्ध कै इक्षा
सो कपि भालु न रनमहँ देषा * कीन्हेसि जेहि न प्रान अवसेषा

दो० दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि बीर।
सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बलधीर ६५॥

देषि पवनसुत कटक बिहाला * क्रोधवंत जनु धायेउ काला
महा सैल येक तुरत उपारा * अति रिसि मेघनादपर डारा
आवत देषि गयेउ नभ सोई * रथ सारथी तुरग सब षोई
बार बार प्रचार हनुमाना * निकट न आव मरम सो जाना

रघुपति निकट गयेउ घननादा * नाना भाँति कहेसि दुर्बादा
अस्त्र सस्त्र आयुध सब डारे * कौतुकहीं प्रभु काटि निवारे
देषि प्रताप मूढ षिसियाना * करै लाग माया बिधि नाना
जिमि काउ करै गरुड सैं षेला * डरपावै गहि स्वल्प सपेला

दो० जासु प्रबल माया बस, सिव बिरंचि बडछोट ।
ताहि देषावै निसिचर, निज माया मति षोट ६६ ॥

नभ चढि बरष बिपुल अंगारा * महितें प्रगट होहिं जलधारा
नानाभाँति पिसाच पिसाची * मारुकाटुधुनि बोलहिं नाची
बिष्टा पूय रुधिर कचहाडा * बरषइ कबहुँ उपल बहु छाँडा
बरषि धूरि कीन्हेसि अँधिआरा * सूझ न आपन हाँथ पसारा
कपि अकुलाने माया देषे * सबकर मरन बना येहि लेषे
कौतुक देषि राम मुसुकाने * भये सभीत सकल कपि जाने
येक बान काटी सब माया * जिमिदिनकरहरतिमिरनिकाया
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके * भये प्रबल रन रहहिं न रोके

दो० आयसु मांगि राम पहिं, अंगदादि कपि साथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ, बान सरासन हाँथ ६७ ॥

छतजनयन उर बाहुँ बिसाला * हिमिगिरिनिभतनुकछुयेकलाला
इहां दसानन सुभट पठाये * नाना अस्त्र सस्त्र गहि धाये
भूधर नष बिटपायुध धारी * धाये कपि जय राम पुकारी
भिरे सकल जोरिहिसन जोरी * इत उत जयइच्छा नहिं थोरी
मुठिकन्ह लातन दातनकाटहिं * कपि जयसील मारि पुनिडाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरुमारू * सीस तोरि गहि भुजा उपारू
आसि रव पूरिरही नवषंडा * धावहिं जहँ तहँ रुंड प्रचंडा

१—शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाइत्यमरः ॥

देषहिं कौतुक नभ सुरबृंदा * कबहुँक बिसमय कबहुँ अनंदा

दो० रुधिरगाढभरि भरि जम्यौ, ऊपर धूरि उडाइ।
जनु अंगार रासिन्हपर, मृतकधूम रह्यौ छाइ ६८॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे * कुसुमित किंसुक के तरु जैसे
लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा * भिरहिं परसपर करि अतिक्रोधा
येकहिं येक सकै नहिं जीती * निसिचर छलबल करै अनीती
क्रोधवंत तब भये अनंता * भंजेउ रथ सारथी तुरंता
नानाबिधि प्रहार कर सेषा * राछस भयेउ प्रान अवसेषा
रावनसुत निज मन अनुमाना * संकट भयेउ हरिहि मम प्राना
बीरघातिनी छांडेसि साँगी * तेजपुंज लछिमन उर लागी
मुरछा भई सक्ति के लागे * तब चलिगयेउ निकट भयत्यागे

दो० मेघनादसम कोटिसत, जोधा रहे उठाइ।
जगदाधार सेष किमि, उठइ चले षिसिआइ ६९॥

सुनु गिरिजा क्रोधानल जासू * जारै भुवन चारि दस आसू
सक संग्राम जीति को ताही * सेवहिं सुर नर अग जग जाही
येह कौतुक जानै जन सोई * जापर कृपा राम कै होई
सन्ध्या भइ फिरि द्वौ बाहिनी * लगे सँभारन निज निज अनी
ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर * लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर
तब लगि लै आयउ हनुमाना * अनुज देषि प्रभु अतिदुषमाना
जामवंत कह बैद सुषेना * लंका रहै को पठई लेना
धरि लघुरूप गयेउ हनुमंता * आनेउ भवन समेत तुरंता

दो० राम पदारबिंद सिर, नायेउ आइ सुषेन।
कहा नाम गिरि औषधी, जाहु पवनसुत लेन ७०॥

रामचरन सरसिज उर राषी * चला प्रभंजन सुत बल भाषी
उहां दूत येक मरम जनावा * रावन कालनेमि गृह आवा
दसमुष कहा मरम तेहिं सुना * पुनि पुनि कालनेमि सिरधुना
देषत तुम्हहिं नगर जेहि जारा * तासु पंथ को रोकन हारा
भजि रघुपति हित करु आपना * छांडहु नाथ मृषा जलपना
नीलकंज तन सुंदर स्यामा * हृदय राषु लोचनाभिरामा
मैं तैं मोर मूढता त्यागू * महामोह निसि सूतत जागू
काल ब्यालकर भक्षक जोई * सपनेहु समर कि जीतियसोई

दो॰ सुनि दसकंधरिसान अति, तेहिं मन कीन्ह बिचार।
राम दूतकर मरौं बरु, यहषलरतमलभार ७१॥

असकहि चला रचेसिमगमाया * सर मंदिर बर बाग बनाया
मारुतसुत देषा सुभ आश्रम * मुनिहिंबूझिजलपियउँजाइश्रम
राच्छस कपट बेष तहँ सोहा * मायापति दूतहि चह मोहा
जाइ पवनसुत नायेउ माथा * लागसो कहै राम गुन गाथा
होत महारन रावन रामहिं * जीतिहहिंराम न संसय यामहिं
इहां भये मै देषौं भाई * ज्ञानदृष्टिबल मोहि अधिकाई
मागा जल तेहिं दीन्ह कमंडल * कह कपि नहिं अघाउँ थोरेजल
सरमज्जन करि आतुर आवहु * दीक्षा देउँ ज्ञान जेहि पावहु

दो॰ सर पैठत कपिपद गहा, मकरी तब अकुलान।
मारी सोधरि दिब्य तनु, चली गगन चढि जान ७२॥

कपि तवदरस भइउँ निःपापा * मिटा तात मुनिबरकर सापा
मुनि न होइ येह निसिचरघोरा * मानहु सत्य बचन कपि मोरा
असकहि गई अप्सरा जबहीं * निसिचरनिकटगयेउकपितबहीं

कह कपि मुनि गुरुदच्छिन लेहू * पाछे हमहिं मंत्र तुम्ह देहू
सिर लंगूर लपेटि पछारा * निजतन प्रगटेसि मरतीबारा
राम राम कहि छाँडेसि प्राना * सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना
देषा सैल न औषधि चीन्हा * सहसा कपि उपारि गिरिलीन्हा
गहिगिरिनिसि नभ धावतभयेऊ * अवधपुरी ऊपर कपि गयेऊ

दो० देषाभरत बिसाल अति, निसिचरमन अनुमानि ।
बिनफर सायक मारेउ, चाप श्रवनलगि तानि ७३ ॥

परेउ मुरुछि महि लागत सायक * सुमिरत राम राम रघुनायक
सुनि प्रियबचन भरत तब धाये * कपि समीप अति आतुर आये
बिकल बिलोकि कीस उर लावा * जागत नहिं बहु भाँति जगावा
मुष मलीन मन भयेउ दुषारी * कहत बचन भरि लोचन बारी
जेहिंबिधिरामबिमुषमोहिकीन्हा * तेहिं पुनि येह दारुन दुष दीन्हा
जौं मोरे मन बच अरु काया * प्रीति रामपदकमल अमाया
तौ कपि होउ बिगतश्रम सूला * जौं मोपर रघुपति अनकूला
सुनत बचन उठि बैठ कपीसा * कहि जयजयति कोसलाधीसा

सो० लीन्ह कपिहि उरलाइ, पुलकिततन लोचन सजल ।
प्रीति न हृदय समाइ, सुमिरिरामरघुकुलतिलक ८ ॥

तात कुसल कहु सुषनिधानकी * सहित अनुजअरु मातुजानकी
कपि सब चरित समास बषाने * भये दुषी मनमहँ पछिताने
अहह दैव मै कत जग जायेउँ * प्रभुके येकहु काज न आयेउँ
जानि कुअँवसर तन धरिधीरा * पुनि कपिसन बोले बलबीरा
तात गहर होइहि तोहि जाता * काज नासइहि होत प्रभाता
चढु मम सायक सैलसमेता * पठवउँ तोहि जहँ कृपानिकेता

सुनि कपिमनउपजा अभिमाना * मोरे भार चलिहि किमि बाना
राम प्रभाव बिचारि बहोरी * बंदि चरन कह कपि कर जोरी

दो० तव प्रताप उर राषि प्रभु, जैहौं नाथ तुरंत।
असकहि आयसु पाइ पद, बंदि चलेउ हनुमंत ७४॥
भरत बाहुँबल सील गुन, प्रभुपद प्रीति अपार।
मनमहँ जात सराहत, पुनि पुनि पवनकुमार ७५॥

उहां राम लछिमनहिं निहारी * बोले बचन मनुज अनुहारी
अर्धराति गइ कपिनहिं आयेउ * राम उठाय अनुज उर लायेउ
सकहु न दुषितदेषि मोहिंकाऊ * बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ
ममहितलागि तजेहु पितुमाता * सहेहु बिपिनहिमिआतपबाता
सो अनुराग कहा अब भाई * उठहु न सुनि ममबच बिकलाई
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू * पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू
सुत बित नारि भवन परिवारा * होहिं जाहिं जग बारहिं बारा
अस बिचारि जिअजागहुताता * मिलै न जगत सहोदरभ्राता
जथा पंष बिनु षगअति दीना * मनि बिनु फनि करिवरकरहीना
अस ममजिवन बंधु बिनुतोही * जौं जड दैव जिआवै मोही
जैहौं अवध कवन मुह लाई * नारिहेतु प्रिअ भाइ गवाई
बरु अपजस सहतेउँ जगमाहीं * नारि हानि बिसेष छति नाहीं
अब अपलोक सोक सुत तोरा * सहिहि निठुर कठोर उर मोरा
निज जननी के येक कुमारा * तात तासु तुम्ह प्रान अधारा
सौंपेसि मोहिं तुम्हहिं गहिपानी * सब बिधिसुषदपरमहितजानी
उतर काह देइहौं तेहि जाई * उठि किन मोहि सिषावहु भाई
बहुबिधि सोचत सोच बिमोचन * स्रवतसलिलराजिवदललोचन

उमा येक अषंड रघुराई * नर गति भगति कृपालु देषाई

सो० प्रभु प्रलाप सुनिकान, बिकल भये बानर निकर।
आइ गयेउ हनुमान, जिमि करुनामहँ बीररस ६१॥

हरषि राम भेंटेउ हनुमाना * अतिकृतज्ञ प्रभु परम सुजाना
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई * उठि बैठे लछिमन हरषाई
हृदय लाइ भेंटेउ प्रभु भ्राता * हरषे सकल भालु कपि ब्राता
कपि पुनि बैद तहां पहुँचावा * जेहि बिधि तबहिं ताहि लेआवा
यह बृत्तांत दसानन सुनेऊँ * अतिबिषाद पुनिपुनि सिर धुनेऊँ
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा * बिबिधिजतन करिताहि जगावा
जागा निसिचर देषिअ कैसा * मानहु काल देहँ धरि बैसा
कुंभकरन बूझा कहु भाई * काहे तब मुष रहेउ सुषाई
कथा कही सब तेहिं अभिमानी * जेहि प्रकार सीता हरि आनी
तात कपिन्ह निसिचर सब मारे * महा महा जोधा संघारे
दुर्मुष सुररिपु मनुजअहारी * भट अतिकाय अकंपन भारी
अपर महोदर आदिक बीरा * परे समरमहि सब रनधीरा

दो० सुनि दसकंधर बचन तब, कुंभकरन बिलषान।
जगदंबा हरि आनि अब, सठ चाहत कल्यान ७६॥

भल न कीन्ह तैं निसिचरनाहा * अब मोहिं आइ जगायेहि काहा
अजहूँ तात त्यागि अभिमाना * भजहु राम होइहि कल्याना
हैं दससीस मनुज रघुनायक * जाके हनूमान से पायक
अहह बंधु तैं कीन्हि षोटाई * प्रथमहिं मोहिं न सुनायहि आई
कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देवक * सिव बिरंचि सुर जाके सेवक

१—प्रलापोऽनर्थकं वचः इत्यमरः, पुनः बिनु समुझे कछु बकि उठै कहिये ताहि प्रलाप, भाषाभूषणे॥

नारदमुनि मोहिं ज्ञान जो कहा * कहतेउँ तोहिं समय निर्बहा
अब भरि अंक भेटु मोहि भाई * लोचन सफल करौं मै जाई
स्यामगात सरसीरुह लोचन * देषौं जाइ ताप त्रय मोचन
दो॰ रामरूपगुन सुमिरत, मगन भयो छन येक।
रावन मांगेउ कोटि घट, मद अरु महिष अनेक ७७॥
महिष षाय करि मदिरा पाना * गर्जा बज्राघात समाना
कुंभकरन दुर्मद रन रंगा * चला दुर्ग तजि सेन न संगा
देषि बिभीषन आगे आयेउ * परेउ चरन निज नाम सुनायेउ
अनुज उठाइ हृदय तेहि लायेउ * रघुपति भगत जानि मन भायेउ
तात लात रावन मोहिं मारा * कहत परमहित मंत्र बिचारा
तेहि गलानि रघुपति पहिं आयेउँ * देषि दीन प्रभु के मन भायेउँ
सुनु सुत भयेउ कालबस रावन * सो कि मान अब परम सिषावन
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषन * भयहु तात निसिचर कुलभूषन
बंधु बंस तैं कीन्ह उजागर * भजेहु राम सोभा सुषसागर
दो॰ बचन कर्म मन कपट तजि, भजेहु राम रनधीर।
जाहु न निज पर सूझ मोहिं, भयेउँ कालबस बीर ७८
बंधु बचन सुनि चला बिभीषन * आयेउ जहँ त्रैलोकबिभूषन
नाथ भूधराकार सरीरा * कुंभकरन आवत रनधीरा
इतना कपिन्ह सुना जब काना * किलकिलाय धाये बलवाना
लिये उठाइ बिटप अरु भूधर * कटकटाइ डारहिं ता ऊपर
कोटि कोटि गिरि सिषर प्रहारा * करहिं भालु कपि येकयेक बारा
मुर्‍यो न मन तन टर्‍यो न टारे * जिमि गज अर्कफलनि के मारे
तब मारुतसुत मुठिका हन्यौ * परा धरनि ब्याकुल सिर धुन्यौ

पुनि उठि तेहिं मारेउ हनुमंता * घुर्मित भूतल परेउ तुरंता
पुनि नल नीलहि अवनि पछारेसि * जहँ तहँ पटकि पटकि भटडारेसि
चली बलीमुष सेन पराई * अतिभय त्रसित न कोउ समुहाई

दो० अंगदादि कपि मुरछित, करि समेत सुग्रींव।
कांष दावि कपिराज कहँ, चला अमितबलसींव ७९ ॥

उमा करत रघुपति नरलीला * षेल गरुड़ जिमि अहिगन मीला
भृकुटि भंग कालहिं जो षाई * ताहि कि सोहै ऐसि लराई
जगपावनि कीरति बिस्तरिहहिं * गाइ गाइ भवनिधि नर तरिहहिं
मुरछा गइ मारुतसुत जागा * सुग्रींवहिं तब षोजन लागा
सुग्रींवहु की मुरछा बीती * निबुकि गयेउ तेहि मृतक प्रतीती
काटेसि दसन नासिका काना * गर्जि अकास चलेउ तेहिं जाना
गहेउ चरन गहि भूमि पछारा * अति लाघव उठि पुनि तेहि मारा
पुनि आयेउ प्रभु पहिं बलवाना * जयति जयति जय कृपानिधाना
नाक कान काटे जिय जानी * फिरा क्रोध करि भइ मन ग्लानी
सहजभीम पुनि बिनु श्रुति नासा * देषत कपिदल उपजी त्रासा

दो० जय जय जय रघुबंसमनि, धाये कपि दै हूह।
येकहि बार तासु पर, छाँडहिं गिरि तरु जूह ८० ॥

कुंभकरन रन रंग बिरुद्धा * सन्मुष चला काल जनु क्रुद्धा
कोटि कोटि कपि धरि धरि षाई * जनु टीडी गिरिगुहा समाई
कोटिन्ह गहि सरीर सन मर्दा * कोटिन्ह मींजि मिलव महि गर्दा
मुष नासा श्रवनन्हि की बाटा * निसरि पराहिं भालु कपि ठाटा
रन मदमत्त निसाचर दर्पा * बिस्व ग्रसिहि जनु यहि बिधि अर्पा
मुरे सुभट सब फिरहिं न फेरे * सूझ न नयन सुनहिं नहिं टेरे

कुंभकरन कपि फौज बिडारी * सुनि धाई रजनीचर धारी
देषी राम बिकल कटकाई * रिपु अनीक नाना बिधि आई

दो० सुनु सुग्रीव बिभीषन, अनुज सँभारेहु सैन।
मै देषौ षलबल दलहि, बोले राजिव नैन ८१॥

कर सारंग साजि कटि भाथा * अरिदल दलन चले रघुनाथा
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुष टँकोरा * रिपुदल बधिर भयेउ सुनि सोरा
सत्य संध छाँडे सर लक्षा * काल सर्प जनु चले सपक्षा
जहँ तहँ चले निकर नाराचा * लगे कटन भट बिकट पिसाचा
कटहिं चरन उर सिर भुजदंडा * बहुतक बीर होहिं सतषंडा
घुर्मि घुर्मि घायल महि परहीं * उठि संभारि सुभट पुनि लरहीं
लागतबानजलदजिमिगाजहिं * बहुतक देषि कठिन सर भाजहिं
रुंड प्रचंड मुंड बिनु धावहिं * धरु धरु मारु मारु धुनिगावहिं

दो० छनमहँ प्रभुके सायकन्हि, काटे बिकट पिसाच।
पुनि रघुबीर निषंग महँ, प्रबिसे सब नाराच ८२॥

कुंभकरन मन दीष बिचारी * हति छनमाझ निसाचर धारी
भा अति क्रुद्ध महा बलबीरा * कियो मृगनायक नाद गँभीरा
कोपि महीधर लेइ उपारी * डारै जहँ मर्कट भट भारी
आवत देषि सैल प्रभु भारे * सरन्हि काटि रजसम करिडारे
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक * छाँडे अति कराल बहु सायक
तनमहँप्रबिसिनिसरिसरजाहीं * जिमि दामिनिघनमाझसमाहीं
सोनित श्रवत सोह तन कारे * जनु कज्जल गिरि गेरु पनारे
बिकलबिलोकिभालुकपिधाये * बिहँसा जबहिं निकट कपिआये

दो० महा नाद करि गर्जा, कोटि कोटि गहि कीस।

महि पटकै गजराज इव, सपथ करै दससीस ८३ ॥

भागे भालु बली मुष जूथा * बृक बिलोक जिमि मेष बरूथा
चले भागि कपि भालु भवानी * बिकल पुकारत आरत बानी
यहनिसिचर दुकालसम अहई * कपिकुल देस परन अब चहई
कृपा बारिधर राम षरारी * पाहि पाहि प्रनतारतिहारी
सकरुन बचन सुनत भगवाना * चले सुधारि सरासन बाना
राम सेन निज पाछे घाली * चले सकोप महाबलसाली
षैंचि धनुष सर सत संधाने * छूटे तीर सरीर समाने
लागत सर धावा रिस भरा * कुधर डगमगति डोलति धरा
लीन्ह येक तेहिं सैल उपाटी * रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी
धावा बाम बाहुँ गिरिधारी * प्रभु सोउ भुजा काटि महि पारी
काटे भुजा सोह षल कैसा * पक्षहीन मंदर गिरि जैसा
उग्रबिलोकनि प्रभुहि बिलोका * ग्रसन चहत मानहुँ त्रैलोका

दो॰ करि चिक्कार घोर अति, धावा बदन पसारि ।
गगन सिद्ध सुर त्रासित, हाहाहेति पुकारि ८४ ॥

सभय देव करुनानिधि जान्यौ * श्रवन प्रजंत सरासन तान्यौ
बिसिषनिकरनिसिचरमुषभरेऊ * तदपि महाबल भूमि न परेऊ
सरन्हि भरा मुष सन्मुष धावा * कालत्रोन सजीव जनु आवा
तब प्रभु कोपि तीब्रसर लीन्हा * धरतें भिन्न तासु सिर कीन्हा
सो सिर परेउ दसाननआगे * बिकलभयेउजिमिफनिमनित्यागे
धरनि धसै धर धाव प्रचंडा * तब प्रभु काटि कीन्ह दुइ षंडा
परे भूमि जिमि नभतें भूधर * हेठ दाबि कपि भालु निसाचर
तासु तेज प्रभु बदन समाना * सुर मुनि सबहिं अचंभौ माना

सुर दुंदुभी बजावहिं हरषहिं * अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं
करि बिनती सुर सकल सिधाये * तेही समय देवऋषि आये
गगनोपरि हरिगुनगन गाये * रुचिर बीररस प्रभुमन भाये
बेगि हतहु षल कहि मुनि गये * राम समर महँ सोभत भये

छंद

संग्राम भूमि बिराज रघुपति अतुल बल कोसल धनी।
श्रमबिंदु मुष राजीवलोचन अरुन तन सोनितकनी॥
भुजजुगल फेरत सरसरासन भालु कपि चहुँ दिसि बने।
कह दास तुलसी कहि न सक छबि शेष जेहि आनन घने ३॥

दो॰ निसिचर अधम मलायकर, ताहि दीन्ह निजधाम।
गिरिजा ते नर मंदमति, जे न भजहिं श्रीराम ८५॥

दिनके अंत फिरीं द्वौ अनी * समर भई सुभटन्ह श्रम घनी
राम कृपा कपि दल बल बाढा * जिमि तृन पाइ लाग अति डाढा
छीजहिं निसिचर दिन अरु राती * निज मुष कहे सुकृत जेहि भाँती
बहु बिलाप दसकंधर करई * बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई
रोवहिं नारि हृदय हति पानी * तासु तेज बल बिपुल बषानी
मेघनाद तेहि अवँसर आयेउ * कहि बहु कथा पिता समुझायेउ
देषेहु कालि मोरि मनुसाई * अबहिं बहुत का करौं बडाई
इष्टदेव से बल रथ पायेउँ * सो बल तात न तोहि देषायेउँ
येहि बिधि जलपत भये उबिहाना * चहुँ दुआर लागे कपि नाना
इत कपि भालु कालसम बीरा * उत रजनीचर अति रनधीरा
लरहिं सुभट निज निज जयहेतू * बरनि न जाइ समर षग केतू

दो॰ मेघनाद मायामय, रथ चढि गयेउ अकास।

गर्जेउ अट्ट हाँस करि, भइ कपिकटकहित्रास ८६॥

सक्ति सूल तरवारि कृपाना * अस्त्र सस्त्र कुलिसायुध नाना
डारै परसु परिघ पाषाना * लागेउ बृष्टि करै बहु बाना
दस दिसि रहे बान नभ छाई * मानहुँ मघा मेघ झरिलाई
धरु धरु मारु सुनिय धुनि काना * जो मारै तेहि कोउ न जाना
गहिगिरितरुअकासकपिधावहिं * देषहिंतेहिनदुषितफिरिआवहिं
अवघट बाट घाट गिरि कंदर * मायाबल कीन्हेसि सर पंजर
जाहिं कहां ब्याकुल भये बंदर * सुरपति बंदि परे जनु मंदर
मारुतसुत अंगद नलनीला * कीन्हेसिबिकलसकलबलसीला
पुनि लछिमन सुग्रींव बिभीषन * सरन्हि मारिकीन्हेसि जर्जर तन
पुनि रघुपति सें जूझै लागा * सर छाँडै होइ लागहिं नागा
ब्याल पास बस भये षरारी * स्वबस अनंत येक अबिकारी
नट इव कपट चरितकर नाना * सदाँ स्वतंत्र येक भगवाना
रन सोभा लागि प्रभुहि बँधायो * नागपांस देवन्ह दुष पायो

दो॰ गिरिजा जासु नामजपि, मुनि काटहिं भवपास।
सो कि बंधतर आवै, ब्यापक बिस्वनिबास ८७॥

चरित राम के सगुन भवानी * तर्कि न जाहिं बुद्धिबल बानी
अस बिचारि जे तज्ञ बिरागी * रामहिं भजहिं तर्क सब त्यागी
ब्याकुल कटक कीन्ह घननादा * पुनि भा प्रगट कहत दुर्बादा
जामवंत कह षलु रहु ठाढा * सुनिकरि ताहि क्रोध अति बाढा
बूढ जानि सठ छांडेउँ तोहीं * लागेसि अधम प्रचारै मोहीं
असकहितरलत्रिसूलचलायो * जामवंत करगहि सोइ धायो
मारेसि मेघनाद के छाती * परा भूमि घुर्मित सुरघाती

पुनि रिसान गहि चरन फिरायो * महि पछारि निज बल देषरायो
बर प्रसाद सो मरइ न मारा * तब गहि पद लंका पर डारा
इहां देवरिषि गरुड पठायो * रामसमीप सपदि सो आयो

दो० षगपति सब धरि षाये, माया नाग बरूथ।
माया बिगत भये सब, हरषे बानर जूथ ८८॥
गहि गिरि पादप उपल नष, धाये कीस रिसाइ।
चले तमीचर बिकल तर, गढपर चढे पराइ ८९॥

मेघनाद कै मुरछा जागी * पितहि बिलोकि लाज अति लागी
तुरत गयेउ गिरिवरकंदरा * करौं अजय मष अस मन धरा
इहां बिभीषन मंत्र बिचारा * सुनहु नाथ बल अतुल उदारा
मेघनाद मष करै अपावन * षल मायावी देव सतावन
जौं प्रभु सिद्ध होइ सो पाइहि * नाथ बेगि पुनि जीति न जाइहि
सुनि रघुपति अतिसय सुषमाना * बोले अंगदादि कपि नाना
लछिमन संग जाहु सब भाई * करहु बिधंस यज्ञकर जाई
तुम्ह लछिमन रन मारेहु वोही * देषि सभय सुर दुष अति मोही
मारेहु तेहि बल बुद्धि उपाई * जेहि छीजै निसिचर सुनु भाई
जामवंत सुग्रींव बिभीषन * सेन समेत रहेहु तीनिउँ जन
जब रघुबीर दीन्ह अनुसासन * कटि निषंग कसि साजि सरासन
प्रभु प्रताप उर धरि रन धीरा * बोले घनइव गिरा गँभीरा
जौं तेहि आजु बधे बिनु आवउँ * तौ रघुपति सेवक न कहावउँ
जौं सत संकर करहिं सहाई * तदपि हतौं रघुबीर दोहाई

दो० रघुपति चरन नाइ सिर, चलेउ तुरंत अनंत।
अंगद नील मयंद नल, संग सुभट हनुमंत ९०॥

जाइ कपिन्ह सो देषा वैसा * आहुति देत रुधिर अरु भैंसा
कीन्ह कपिन्ह सब जज्ञ बिधंसा * जब न उठै तब करहिं प्रसंसा
तदपि न उठै धरेन्हि कच जाई * लातन्ह हति हति चलैं पराई
लै त्रिसूल धावा कपि भागे * आये जहँ रामानुज आगे
आवा परम क्रोधकर मारा * गर्ज घोर रव वारहिं वारा
कोपि मरुतसुत अंगद धाये * हति त्रिसूल उरधरनि गिराये
प्रभु कहँ छाँडेसि सूल प्रचंडा * सर हति कृत अनंत जुग षंडा
उठि बहोरि मारुति जुवराजा * हतहिं कोप तेहि घाव न वाजा
फिरे बीर रिपु मरइ न मारा * तव धावा करि घोर चिकारा
आवत देषि क्रुद्ध जनु काला * लछिमन छाँडे बिसिष कराला
देषेसि आवत पबिसम वाना * तुरत भयेउ षल अंतरधाना
बिबिधि बेष धरि करै लराई * कबहुँक प्रगट कबहुँ दुरि जाई
देषि अजय रिपु डरपे कीसा * परमक्रुद्ध तव भयेउ अहीसा
लछिमन मन अस मंत्र दृढावा * येहि पापिहि मैं बहुत षेलावा
सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा * सर संधान कीन्ह करि दापा
छांडा वान मांझ उर लागा * मरती वार कपट सब त्यागा

दो० रामानुज कहँ रामकहँ, अस कहि छांडेसि प्रान।
धन्य धन्य तव जननी, कह अंगद हनुमान ६१॥

बिनु प्रयास हनुमान उठायो * लंका द्वार राखि पुनि आयो
तासु मरन सुनि सुर गंधर्वा * चढि विमान आये नभ सर्वा
बरषि सुमन दुंदुभी बजावहिं * श्रीरघुनाथबिमल जसगावहिं
जय अनंत जय जगदाधारा * तुम्ह प्रभु सव देवन्हि निस्तारा
अस्तुति करि सुरसिद्ध सिधाये * लछिमन कृपासिंधु पहिं आये

सुत बध सुना दसानन जबहीं * मुरुछितभयउ परेउमहि तबहीं
मंदोदरी रुदन कर भारी * उर ताडन बहुभाँति पुकारी
नगर लोग सब ब्याकुल सोचा * सकल कहहिं दसकंधर पोचा

दो० तब दसकंठ बिबिधि बिधि, समुझाई सब नारि।
नस्वर रूप जगत सब, देषहु हृदय बिचारि ९२॥

तिन्हहि ज्ञान उपदेसा रावन * आपुन मंद कथा सुभ पावन
पर उपदेस कुसल बहुतेरे * जे आचरहिं ते नर न घनेरे
निसा सिरानि भयेउ भिनुसारा * लगे भालु कपि चारिहुँ द्वारा
सुभट बोलाइ दसानन बोला * रन सन्मुष जाकर मन डोला
सो अबही बरु जाहु पराई * संजुग बिमुष भये न भलाई
निज भुज बल मैं बैर बढावा * दैहौं उतरु जो रिपु चढिआवा
अस कहि मरुत बेग रथ साजा * बाजे सकल जुझाऊ बाजा
चले बीर सब अतुलित बली * जनु कज्जलकै आँधी चली
असगुनअमितहोहिंतेहिकाला * गनै न भुजबल गर्ब बिसाला

छंद

अति गर्ब गिनइँ न सगुन असगुन श्रवहिं आयुध हाँथ तें।
भट गिरत रथ तें बाजि गज चिक्करत भाजहिं साथ तें॥
गोमायु गृध्र कराल षर रव स्वान बोलहि अति घने।
जनु कालदूत उलूक बोलहिं बचन परम भयावने ४॥

दो० ताहि कि संपति सगुनसुभ, सपनेहुँ मन बिश्राम।
भूतद्रोहरत मोहबस, रामबिमुष रतिकाम ९३॥

चलेउ निसाचर कटक अपारा * चतुरंगिनी अनी बहु धारा
बिबिधि भांति बाहन रथ जाना * बिपुल बरन पताक ध्वज नाना

चले मत्त गजजूथ घनेरे * प्राबिट जलद मरुत जनु प्रेरे
बरन बरन बिरदैत निकाया * समर सूर जानहिं बहु माया
अति बिचित्र बाहनी बिराजी * बीर बसंत सेन जनु साजी
चलत कटक दिगसिंधुर डगहीं * छुभित पयोधि कुधर डगमगहीं
उठी रेनु रबि गयेउ छपाई * मरुत थकित बसुधा अकुलाई
पनव निसान घोर रव बाजहिं * प्रलय समयके घन जनु गाजहिं
भेरि नफीरि बाज सहनाई * मारू राग सुभट सुषदाई
केहरिनाद बीर सब करहीं * निज निज बल पौरुष उच्चरहीं
कहै दसानन सुनहु सुभट्टा * मर्दहु भालु कपिन्ह के ठट्टा
हौं मारिहौं भूप द्वौ भाई * असकहि सनमुष फौज रेंगाई
यह सुधि सकल कपिन्ह जब पाई * धाये करि रघुबीर दोहाई

छंद

धाये बिसाल कराल मर्कट भालु काल समानते।
मानहु सपच्छ उडाहिं भूधर बृंद नाना बानते॥
नष दसन सैल महा द्रुमायुध सबल संक न मानहीं।
जय राम रावनमत्तगजमृगराज सुजस बषानहीं ५॥

दो॰ दुहुँदिसि जय जयकार करि, निज निज जोरी जानि।
भिरे बीर इत रामहित, उत रावनहिं बषानि ६४॥

रावन रथी बिरथ रघुबीरा * देषि बिभीषन भयेउ अधीरा
अधिक प्रीति मन भा संदेहा * बंदि चरन कह सहित सनेहा
नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना * केहि बिधि जितब बीर बलवाना
सुनहु सषा कह कृपानिधाना * जेहि जय होइ सो स्यंदन आना
सौरज धीरज तेहि रथ चाका * सत्य सील दृढ ध्वजा पताका

बल बिबेक दम परहित घोरे * छमा कृपा समता रजु जोरे
ईस भजन सारथी सुजाना * बिरति चर्म संतोष कृपाना
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा * बर बिज्ञान कठिन कोदंडा
अमल अचल मन तून समाना * समजम नियम सिलीमुष नाना
कवच अभेद बिप्रगुरु पूजा * येहिसम बिजय उपाय न दूजा
सषा धर्ममय अस रथ जाके * जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके

दो० महाअजय संसार रिपु, जीतिसकै सो बीर।
जाके अस रथ होइ दिढ, सुनहु सषा मतिधीर ९५॥
सुनि प्रभुबचन बिभीषन, हरषि गहे पदकंज।
येहि मिस मोहिं उपदेसेहु, राम कृपासुषपुंज ९६॥
उत प्रचार दसकंधर, इत अंगद हनुमान।
लरतनिसाचरभालुकपि, करिनिजनिजप्रभुआन ९७॥

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना * देषत रन नभ चढे बिमाना
हम हूं उमा रहे तेहि संगा * देषत राम चरित रन रंगा
सुभट समररस दुहुँ दिसि माते * कपि जयसील रामबल ताते
येक येक सन भिरहिं प्रचारहिं * येकन्ह येक मर्दि महि पारहिं
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं * सीस तोरि सीसन्हसन मारहिं
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं * गहिपदअवनि पटकिभटडारहिं
निसिचर भट महि गाडहिंभालू * ऊपर डारि देहिं बहु बालू
बीर बलीमुष जुद्ध बिरुद्धे * देषिअत बिपुलकाल जनुक्रुद्धे

छंद

क्रुद्धे कृतांत समान कपि तन श्रवत श्रोनित राजहीं।
मर्दहिं निसाचर कटक भट बलवंत घन जिमि गाजहीं॥

मारहिं चपेटन्हि डाटि दाँतन्ह काटि लातन्ह मींजहीं।
चिक्करहिं मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खल छीजहीं ६॥
धरि गाल फारहिं उर बिदारहिं गल अँतावरि मेलहीं।
प्रह्लादपति जनु बिबिधि तनधरि समर अंगन षेलहीं॥
धरु मारु काटु पछारु घोर गिरा गगन महि भरि रही।
जय राम जो तृनतें कुलिसकर कुलिसते कर तृन सही ७॥
दो० निजदलबिचलत देषेसि, बीस भुजा दस चाप।
रथचढ़ि चलेउ दसानन, फिरहु फिरहु करि दाप ६८॥

धायेउ परम क्रुद्ध दसकंधर * सन्मुष चले हूह दै बंदर
गहि कर पादप उपल पहारा * डारेन्हि तापर येकहिं बारा
लागहिं सैल बज्र तन तासू * षंड षंड होइ फूटहिं आसू
चला न अचल रहा रथ रोपी * रनदुर्मद रावन अति कोपी
इतउत झपटि दपटि कपिजोधा * मर्दै लाग भयेउ अति क्रोधा
चले पराइ भालु कपि नाना * त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना
पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं * यह षल षाइ कालकी नाईं
तेहिं देषे कपि सकल पराने * दसहुँ चापसायक संधाने

छंद

संधानि धनु सरनिकर छाँडेसि उरग जिमि उड़ि लागहीं।
रहे पूरि सर धरनी गगन दिसि बिदिसि कहँ कपि भागहीं॥
भयो अति कोलाहल बिकल कपिदल भालु बोलहिं आतुरे।
रघुबीर करुनासिंधु आरतबंधु जनरक्षक हरे ८॥
दो० निज दल बिकल देषि कटि, कसि निषंग धनु हाँथ
लछिमन चले क्रुद्ध होइ, नाइ रामपद माथ ६६॥

रे षल का मारसि कपि भालू * मोहि बिलोकु तोर मैं कालू
षोजत रहेउँ तोहि सुतघाती * आजु निपाति जुड़ावौं छाती
असकहि छांडेसि बान प्रचंडा * लछिमन किये सकलसतषंडा
कोटिन्ह आयुध रावन डारे * तिलप्रमान करि काटि निवारे
पुनि निजबानन कीन्ह प्रहारा * स्यंदन भंजि सारथी मारा
सत सत सर मारेदसभाला * गिरिशृंगन्हजनुप्रबिसहिंब्याला
पुनि सत सर मारा उरमाहीं * परेउ धरनितलसुधिकछुनाहीं
उठा प्रबल पुनि मुरुछा जागी * छांडेसि ब्रह्म दीन्ह जो सांगी

छंद

सो ब्रह्मदत्त प्रचंड सक्ति अनंत उर लागी सही।
पर्यौ बीर बिकल उठाव दसमुष अतुलबल महिमा रही॥
ब्रह्मांड भवन बिराज जाके येक सिर जिमि रजकनी।
तेहि चह उठावन मूढ़ रावनजाननहिं त्रिभुवनधनी ६॥

दो० देषि पवनसुत धायो, बोलत बचन कठोर।
आवत कपिहि हन्यो तेहि, मुष्टि प्रहार प्रघोर १००॥

जानु टेकि कपि भूमि न गिरा * उठा सँभारि बहुत रिस भरा
मुठिका येक ताहि कपि मारा * परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा
मुरुछा गै बहोरि सो जागा * कपिबल बिपुल सराहन लागा
धिग धिग ममपौरुष धिग मोही * जौं तैं जिअत उठेसि सुरद्रोही
असकहिलछिमनकहँकपिल्यायो * देषि दसानन बिसमय पायो
कह रघुबीर समुझु जिअ भ्राता * तुम्ह कृतांत भक्षक सुरत्राता
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला * गई गगन सो सक्ति कराला
पुनि कोदंड बान गहि धाये * रिपु सन्मुष अतिआतुर आये

छंद

आतुर बहोरि बिभंजि स्यंदन सूत हति व्याकुल कियो।
गिस्यौ धरनि दसकंधर बिकल तर बानसत बेध्यौ हियो॥
सारथी दूसर घालि रथ तेहि तुरत लंका लेगयो।
रघुबीर बन्धु प्रतापपुञ्ज बहोरिप्रभु चरनन्हिनयो १०॥

दो॰ उहां दसानन जागिकरि, करै लाग कछु जज्ञ।
रामबिरोधबिजयचहत,सठहठबस अतिअज्ञ १०१॥

इहां बिभीषन सब सुधिपाई * सपदि जाइ रघुपतिहि सुनाई
नाथ करै रावन येक जागा * सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा
पठवहु नाथ बेगि भट बंदर * करहिं विध्वंस आव दसकंधर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये * हनुमदादि अंगद सब धाये
कौतुक कूदि चढे कपि लंका * पैठे रावन भवन असंका
जज्ञ करत जबहीं सो देषा * सकल कपिन्ह भा क्रोधबिसेषा
रनते निलज भाजि गृह आवा * इहां आइ बकध्यान लगावा
अस कहि अंगद मारेउ लाता * चितव न सठ स्वारथमनराता

छंद

नहिं चितव जब करि कोप कपि गहिदसनलातन्हमारहीं।
धरि केस नारि निकारि बाहेर तेति दीन पुकारहीं॥
तब उठेउ क्रुद्ध कृतांतसम गहि चरन बानर डारई
येहि बीच कपिन्ह बिध्वंस कृत मष देषि मन मह हारई ११॥

दो॰ जज्ञ बिध्वंसि कुसल कहि, आये रघुपति पास।
चलेउ निसाचर क्रुद्ध होइ,त्यागि जिवन कै आस १०२॥

चलत होहिं अति असुभ भयंकर * बैठहिं गिद्ध उडाइ सिरन्ह पर
भयेउ कालबस काहु न माना * कहेसि बजावहु जुद्धनिसाना

चली तमीचर अनी अपारा * बहु गज रथ पदाति असवारा
प्रभु सन्मुष धाये षल कैसे * सलभ समूह अनल कहँ जैसे
इहां देवतन्ह अस्तुति कीन्ही * दारुन बिपति हमहिं येहि दीन्ही
अब जनि राम षेलावहु येही * अतिसय दुषित होति बैदेही
देवबचन सुनि प्रभु मुसुकाना * उठि रघुबीर सुधारे बाना
जटाजूट दृढ बांधे माथे * सोहहिं सुमन बीच बिच गाथे
अरुननयन बारिद तनस्यामा * अषिल लोक लोचनाभिरामा
कटितट परिकर कस्यौ निषंगा * कर कोदंड कठिन सारंगा

छंद

सारंग कर सुंदर निषंग सिलीमुषाकर कटि कस्यो।
भुजदंड पीन मनोहरायत उर धरासुरपद लस्यो॥
कह दासतुलसी जबहिं प्रभु सर चाप कर फेरन लगे।
ब्रह्मांड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे १२॥

दो० सोभा देषि हरषि सुर, बरषहिं सुमन अपार।
जयजयजय करुनानिधि, छबिबलगुनआगार १०३॥

येही बीच निसाचर अनी * कसमसात आई अति घनी
देषि चले सन्मुष कपि भट्टा * प्रलयकाल के जिनु घनघट्टा
बहु कृपान तरवारि चमंकहिं * जनु दह दिसि दामिनी दमंकहिं
गज रथ तुरग चिकार कठोरा * गर्जहिं मनहुँ बलाहक घोरा
कपि लंगूर बिपुल नभ छाये * मनहु इंद्रधनु उये सोहाये
उठै धूरि मानहु जल धारा * बान बुंद भै बृष्टि अपारा
दुहुँ दिसि पर्बत करहिं प्रहारा * बज्रपात जनु बारहिं बारा
रघुपति कोपि बान झरिलाई * घायल भै निसिचर समुदाई

लागत बान बीर चिक्करहीं ✻ घुर्मि घुर्मि जहँ तहँ महि परहीं
श्रवहिं सैल जनु निर्भरभारी ✻ सोनित सरि कादर भयकारी

छंद

कादर भयंकर रुधिर सरिता चली परम अपावनी।
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त वहति भयावनी॥
जल जंतु गज पदचर तुरग पर विविध वाहन को गने।
सर सक्ति तोमर सर्प चाप तरंग चर्म कमठ घने १३॥

दो० बीर परहिं जनु तीर तरु, मज्जा बहु वह फेन।
कादर देषि डरहिं तहँ, सुभटन्ह के मन चैन १०४॥

मज्जहिं भूत पिसाच बेताला ✻ प्रथम महा झोटिंग कराला
काक कंक लै भुजा उडाहीं ✻ येकते छीनि येक लै षाहीं
येक कहहिं ऐसिउ सौंघाई ✻ सठहु तुम्हार दरिद्र न जाई
कहरत भट घायल तट गिरे ✻ जहँ तहँ मनहुँ अर्धजल परे
षैंचहिं गिद्ध आँत तट भये ✻ जनु बंसी षेलत चित दये
बहु भट बहहिं चढे षग जाहीं ✻ जनु नावरि षेलहिं सरिमाहीं
जोगिनि भरिभरि षप्पर संचहिं ✻ भूत पिसाच बधू नभ नंचहिं
भट कपाल करताल बजावहिं ✻ चामुंडा नानाविधि गावहिं
जंबुक निकर कटक्कट कट्टहिं ✻ षाहिं हुआहिं अघाहिं दपट्टहिं
कोटिन रुंड मुंड बिनु डोल्लहिं ✻ सीस परे महि जय जय बोल्लहिं

छंद

बोल्लहिं जो जयजय मुंड रुंड प्रचंड सिर बिनु धावहीं।
षप्परिन्हषग्ग अलुज्झ जुज्झहिं सुभट भटन्ह ढहावहीं॥
बानर निसाचर निकर मर्दहिं राम बल दर्पित भये।
संग्राम अंगन सुभट सोवहिं राम सर निकरन्हि हये १४॥

दो० रावन हृदय बिचारा, भा निसिचर संहार।
मै अकेल कपि भालु बहु, माया करउँ अपार १०५॥

देवन्ह प्रभुहि पयादें देषा * उर उपजा अतिछोभ बिसेषा
सुरपति निजरथ तुरत पठावा * हरषसहित मातलि लै आवा
तेजपुंज रथ दिब्य अनूपा * हरषि चढे कोसलपुरभूपा
चंचल तुरग मनोहर चारी * अजर अमर मनसम गतिकारी
रथारूढ रघुनाथहि देषी * धाये कपि बल पाइ बिसेषी
सही न जाइ कपिन्ह कै मारी * तब रावन माया बिस्तारी
सो माया रघुबीरहि बाँची * लछिमन कपिन्हसो मानीसाँची
देषी कपिन्ह निसाचर अनी * अनुज सहित बहु कोसलधनी

छंद

बहु राम लछिमन देषि मर्कट भालु मन अति अपडरे।
जनु चित्र लिषित समेत लछिमन जहँ सो तहँ चितवहिं षरे॥
निजसेन चकित बिलोकि हँसि सरचाँपसजि कोसलधनी।
माया हरी हरि निमिषमहँहरषी सकल मर्कट अनी १५॥

दो० बहुरि राम सब तन चितइ, बोले बचन गँभीर।
द्वन्द्व जुद्ध देषहु सकल, श्रमित भये अति बीर १०६॥

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा * बिप्र चरन पंकज सिरनावा
तब लंकेस क्रोध उर छावा * गर्जत तर्जत सनमुष धावा
जीतेहु जे भट संजुग माहीं * सुनु तापस मै तिन्हसम नाहीं
रावन नाम जगत जस जाना * लोकप जाके बंदीषाना
षर दूषन बिराध तुम्ह मारा * बधेहु ब्याध इव बालि बिचारा
निसिचर निकर सुभट संघारेहु * कुंभकर्न घननादहिं मारेहु
आजु बयर सब लेउँ निबाही * जौं रनभूप भागि नहिं जाही

आजु करौं षल काल हवाले * परेहु कठिन रावन के पाले
सुनि दुर्बचन कालवस जाना * बिहँसि बचन कह कृपानिधाना
सत्य सत्य सब तव प्रभुताई * जल्पसि जनि देषउ मनुसाई

छंद

जनिजल्पनाकरि सुजसनासहि नीति सुनहि करहि छमा।
संसार महँ पूरुष त्रिविधि पाटल रसाल पनस समा॥
येकसुमनप्रद येकसुमन फल येक फलइ केवल लागहीं।
येककहहिंकहहिंनकरहिंअपरयेककरहिंकहतनवागहीं १६

दो० रामबचन सुनि बिहँसा, मोहिं सिषावत ज्ञान।
बयर करत नहिं तब डरे, अब लागे प्रिय प्रान १०७॥

कहि दुर्बचन क्रुद्ध दसकंधर * कुलिससमान लाग छाँडै सर
नानाकार सिलीमुष धाये * दिसिअरुबिदिसिगगनमहिछाये
पावकसर छाँडे रघुबीरा * छनमहँ जरे निसाचर तीरा
छांडेसि तीब्र सक्ति षिसिआई * बान संग प्रभु फेरि चलाई
कोटिन्ह चक्र त्रिसूल पवारइ * बिनु प्रयास प्रभु काटि निवारइ
निफल होइ रावन सर कैसे * षल के सकल मनोरथ जैसे
तब सतबान सारथी मारेसि * परेउ भूमि जय राम पुकारेसि
राम कृपाकरि सूत उठावा * तब प्रभु परम क्रोधकहँ पावा

छंद

भये क्रुद्ध युद्ध बिरुद्ध रघुपति तून सायक कसमसे।
कोदंड धुनि अति चण्ड सुनि मनुजाद सब मारुतग्रसे॥
मंदोदरी उर कंप कंपति कमठ भूभूधर त्रसे।
चिक्करहिं दिग्गज दसनगहि महि देषि कौतुक सुर हँसे १७॥

दो० तान्यो चाप श्रवनलागि, छाँडे बिसिष कराल।

राम मार्गन गन चले, लहलहात जनु ब्याल १०८॥

चले बान सपक्ष जनु उरगा * प्रथमहिं हत्यौ सारथी तुरगा
रथ बिभंजि हति केतु पताका * गर्जा अति अंतरबल थाका
तुरत आनरथ चढि षिसियाना * अस्त्र सस्त्र छाँडेसि बिधिनाना
निफल होहिं सब उद्यम ताके * जिमि परद्रोहनिरत मनसाके
तब रावन दस सूल चलावा * बाजि चारि महि मारि गिरावा
तुरग उठाइ कोपि रघुनायक * षैंचि सरासन छाँडे सायक
रावन सिर सरोज बनचारी * चलि रघुबीर सिलीमुषधारी
दसदस बान भाल दस मारे * निसरि गये चले रुधिर पनारे
श्रवत रुधिर धायेउ बलवाना * प्रभु पुनि कृत धनु सर संधाना
तीस तीर रघुबीर पवारे * भुजन्हि समेत सीस महिपारे
राम बहोरि भुजा सिर छीने * काटतहीं पुनि भये नबीने
प्रभु बहु बार बाहुँ सिर हये * कटत झटित पुनि नूतन भये
पुनिपुनि प्रभु काटत भुजसीसा * अति कौतुकी कोसलाधीसा
रहे छाइ नभ सिर अरु बाहू * मानहुँ अमित केतु अरु राहू

छंद

जनु राहु केतु अनेक नभपथ श्रवत श्रोनित धावहीं।
रघुबीर तीर प्रचंड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं॥
येक येक सर सिरनिकर छेदे नभ उडत इमि सोहहीं।
जनु कोपि दिनकर करनिकर जहँ तहँ बिधुंतुद पोहहीं १८॥

दो० जिमिजिमिप्रभुहततासुसिर, तिमितिमिहोहिंअपार।
सेवत बिषय बिबर्धजिमि, नितिनितिनूतनमार १०९॥

दसमुष देषि सिरन्ह कै बाढी * बिसरा मरन भई रिसि गाढी

१-तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुंतुद इत्यमरः।

गर्जेउ मूढ महा अभिमानी * धायो दसौ सरासन तानी
समरभूमि दसकंधर कोप्यौ * बरषि बान रघुपति रथ तोप्यौ
दंड येक रथ देषि न परेऊ * जनु निहारमहँ दिनकर दुरेऊ
हाहाकार सुरन्हि जब कीन्हा * तब प्रभु कोपि कार्मुक लीन्हा
सर निवारि रिपु के सिर काटे * ते दिसि बिदिसि गगन महि पाटे
काटे सिर नभमारग धावहिं * जयजयधुनिकरिभयउपजावहिं
कहँ लछिमन सुग्रींव कपीसा * कहँ रघुबीर कोसलाधीसा

छंद

कहँ राम कहि सिरनिकर धाये देषि मर्कट भजि चले।
संधानि धनु रघुबंसमनि हँसि सरन्हि सिर बेधे भले॥
सिर मालिका कर कालिका गहि बृंद बृंदन्हि बहु मिलीं।
करि रुधिरसरि मज्जन मनहुँ संग्रामबट पूजन चलीं १६॥

दो० पुनि दसकंठ क्रुद्ध होइ, छाँडी सक्ति प्रचंड।
चली बिभीषन सन्मुष, मनहु कालकरदंड ११०॥

आवत देखि सक्ति अति घोरा * प्रनतारति भंजन पन मोरा
तुरत बिभीषन पाछे मेला * सन्मुष राम सहेउ सोइ सेला
लागि सक्ति मुरछा कछु भई * प्रभुकृत षेल सुरन बिकलई
देषि बिभीषन प्रभु श्रम पायो * गहिकर गदा क्रुद्ध होइ धायो
रे कुभाग्य सठ मंद कुबुद्धे * तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे
सादर सिव कहँ सीस चढाये * येक येक के कोटिन्ह पाये
तेहिकारनषलअबलागिबाच्यौ * अब तव काल सीसपर नाच्यौ
रामबिमुष सठ चहसि संपदा * अस कहि हनेसि माँझउरगदा

छंद

उर माँझ गदा प्रहार घोर कठोर लागत महि पर्‍यो।

दसबदन श्रोनित श्रवत पुनि संभारि धायो रिसभस्यो ॥
द्वौ भिरे अतिबल मल्लजुद्ध बिरुद्ध येक येकहि हने ।
रघुबीर बल दर्पित बिभीषन घालि नहिं ताकहँ गने २० ॥
दो० उमा बिभीषन रावनहिं, सन्मुष चितव कि काउ ।
सो अब भिरत काल ज्यौं, श्रीरघुबीरप्रभाउ १११ ॥

देषा अमित बिभीषन भारी * धायेउ हनूमान गिरिधारी
रथ तुरंग सारथी निपाता * हृदय माँझ तेहि मारेसि लाता
ठाढ रहा अति कंपति गाता * गयेउ बिभीषन जहँ जनत्राता
पुनि रावन कपि हतेउ प्रचारी * चलेउ गगन कपि पूंछ पसारी
गहेसि पूंछ कपि सहित उडाना * पुनि फिरि भिरेउ प्रबल हनुमाना
लरत अकास जुगल समजोधा * येकहिं येक हनत करि क्रोधा
सोहहिं नभ छल बल बहु करहीं * कज्जलगिरि सुमेरु जनु लरहीं
बुधि बल निसिचर परै न पास्यो * तब मारुतसुत प्रभु संभास्यो

छंद

संभारि श्रीरघुबीर धीर प्रचारि कपि रावन हन्यौ ।
महिपरत पुनि उठि लरत देवन्ह जुगल कहँ जयजय भन्यौ ॥
हनुमंत संकट देषि मर्कट भालु क्रोधातुर चले ।
रनमत्त रावन सकलसुभट प्रचंड भुजबल दलमले २१ ॥
दो० तब रघुबीर प्रचारे, धाये कीस प्रचंड ।
कपिदल प्रबल देषि तेहिं, कीन्ह प्रगटपाषंड ११२ ॥

अंतरधान भयेउ छन येका * पुनि प्रगटे षल रूप अनेका
रघुपति कटक भालु कपि जेते * जहँ तहँ प्रगट दसानन तेते
देषे कपिन्ह अमित दससीसा * जहँ तहँ भजे भालु अरु कीसा

भागे बानर धरहिं न धीरा * त्राहि त्राहि लछिमन रघुबीरा
दहुँ दिसि धावहिं कोटिन्ह रावन * गर्जहिं घोर कठोर भयावन
डरे सकल सुर चले पराई * जय कै आस तजहु अब भाई
सब सुर जिते येक दसकंधर * अब बहु भये तकहु गिरिकंदर
रहे बिरंचि संभु मुनि ज्ञानी * जिन्ह जिन्ह प्रभु महिमा कछु जानी

छंद

जाना प्रताप ते रहे निर्भय कपिन्ह रिपु मानेउ फुरे।
चले बिचलि मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे॥
हनुमंत अंगद नील नल अति बल लरत रनबाँकुरे।
मर्दहिं दसानन कोटि कोटिन्ह कपट भूभट अंकुरे २२॥

दो॰ सुर बानर देषे बिकल, हँस्यौ कोसलाधीस।
सजि सारंग येक सर, हते सकल दससीस ११३॥

प्रभु छन महँ माया सब काटी * जिमि रबि उये जाहिं तम फाटी
रावन येक देषि सुर हरषे * फिरे सुमन बहु प्रभुपर बरषे
भुज उठाइ रघुपति कपि फेरे * फिरे येक येकन्ह तब टेरे
प्रभु बल पाइ भालु कपि धाये * तरल तमकि संजुग महि आये
अस्तुति करत देवतेहि देषे * भयउँ येक मै इन्हके लेषे
सठहु सदा तुम्ह मोर मरायल * अस कहि कोपि गगन पर धायल
हाहाकार करत सुर भागे * षलहु जाहु कहँ मोरे आगे
देषि बिकल सुर अंगद धायो * कूदि चरन गहि भूमि गिरायो

छंद

गहि भूमि पार्यो लात मार्यो बालिसुत प्रभु पहिं गयो।
संभारि उठि दसकंठ घोर कठोर रव गर्जत भयो॥
करि दाप चाप चढाय दस संधानि सर बहु बर्षई।

किये सकलभट घायलभयाकुल देषि निजबलहर्षई २३॥

दो० तब रघुपति रावन के, सीस भुजा सर चाप।
काटे बहुत बढ़त पुनि, जिमि तीरथ कर पाप ११४॥

सिरभुज बाढि देषि रिपुकेरी * भालु कपिन्ह रिसि भई घनेरी
मरत न मूढ कटेहु भुज सीसा * धाये कोपि भालु भट कीसा
बालि तनय मारुति नलनीला * बानरराज दुबिद बलसीला
बिटप महीधर करहिं प्रहारा * सोइगिरितरुगहिकपिन्हसोमारा
येक नषन्हि रिपुबपुष बिदारी * भागि चलहिं येक लातन्ह मारी
तबनलनीलसिरन्हचढिगयेऊ * नषन्हि लिलाट बिदारत भयेऊ
रुधिर देषि बिषाद उर भारी * तिन्हहिं धरन कहँ भुजा पसारी
गहे न जाहिं करन्हि पर फिरहीं * जनु जुग मधुप कमलबन चरहीं
कोपि कूदि द्वौ धरेसि बहोरी * महि पटकत भजे भुजा मरोरी
पुनि सकोप दस धनुकर लीन्हे * सरन्हि मारि घायल कपि कीन्हे
हनुमदादि मुरछित करि बंदर * पाइ प्रदोष हरषि दसकंधर
मुरछित देषि सकल कपिबीरा * जामवंत धायेउ रनधीरा
संग भालु भूधर तरु धारी * मारन लगे प्रचारि प्रचारी
भयेउ क्रुद्ध रावन बलवाना * गहि पद महि पटकै भट नाना
देषि भालुपति निज दल घाता * कोपि माँझउर मारेसि लाता

छंद

उर लात घात प्रचंड लागत बिकल रथ ते महि परा।
गहे भालु बीसहुकर मनहुँ कमलन्हि बसे निसि मधुकरा॥
मुरछितबिलोकि बहोरि पदहति भालुपति प्रभु पहिं गयो।
निसिजानिस्यंदनघालितेहितबसूतजतनकरतभयो २४॥

दो० मुरछा बिगत भालु कपि, सब आये प्रभु पास।
निसिचर सकल रावनहिं, घेरिरहे अति त्रास ११५॥

मास पारायण दिन २६

तेहि निसि सीता पहिं तब जाई * त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई
सिर भुज बाढि सुनत रिपुकेरी * सीता उर भइ त्रास घनेरी
मुष मलीन उपजी मन चिंता * त्रिजटा सन बोली तब सीता
होइहि कहा कहसि किन माता * केहिबिधिमरिहिबिस्वदुषदाता
रघुपति सर सिर कटेहुँ न मरई * बिधि बिपरीत चरित सब करई
मोर अभाग्य जिआवत वोही * जेहि हौं हरिपदकमल बिछोही
जेहि कृत कनक कपटमृग भूँठा * अजहुँ सो दैव मोहिं पर रूठा
जेहिबिधिमोहि दुष दुषह सहाये * लछिमन कहँ कटु बचन कहाये
रघुपति बिरह सबिष सर भारी * तकि तकि मारबार बहु मारी
ऐसेहुँ दुष जो राष मम प्राना * सोइबिधिताहिजिआवनआना
बहु बिधि करति बिलापजानकी * करि करि सुरति कृपानिधानकी
कह त्रिजटा सुनु राजकुमारी * उर सर लागत मरै सुरारी
प्रभु ताते उर हतैं न तेही * येहि के हृदय बसति बैदेही

छंद

यहि के हृदय बस जानकी जानकीउर मम वास है।
मम उदर भुवन अनेक लागत बान सबकर नास है॥
सुनि बचन हरष बिषाद मन अति देषि पुनि त्रिजटा कहा।
अबमरिहिरिपुयेहिबिधिसुनहिसुंदरितजहिसंसयमहा २५॥

दो० काटतसिरहोइहिबिकल, छुटिजाइहि तब ध्यान।
तब रावनहि हृदय महँ, मरिहहिंरामसुजान ११६॥

अस कहि बहुत भांति समुभाई * पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई

राम सुभाव सुमिरि बैदेही * उपजी बिरह बिथा अति तेही
निसिहिससिहिनिंदतिबहुभाँती * जुग सम भई सिराति न राती
करति बिलाप मनहिं मन भारी * राम बिरह जानकी दुषारी
जब अति भयउ बिरह उर दाहू * फरकेउ बाम नयन अरु बाहू
सगुन बिचारि धरी मन धीरा * अब मिलिहहिं कृपाल रघुबीरा
इहां अर्ध निसि रावन जागा * निज सारथिसन षीझन लागा
सठ रनभूमि छुडाइसि मोहीं * धिगधिग अधम मंदमति तोहीं
तेहिपदगहिबहुबिधिसमुझावा * भोर भये रथचढि पुनि धावा
सुनि आगवन दसानन केरा * कपिदल षरभर भयेउ घनेरा
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी * धाये कटकटाइ भट भारी

छंद

धाये जो मर्कट बिकल भालु कराल कर भूधर धरा।
अति कोप करहिं प्रहार मारत भजि चले रजनीचरा॥
बिचलाइ दल बलवंत कीसन्ह घेरि पुनि रावन लियो।
चहुँदिसिचपेटन्हिमारिनषन्हिबिदारितनब्याकुलकियो॥२६

दो० देषि महा मर्कट प्रबल, रावन कीन्ह बिचार।
अंतरहित होइ निमिष महँ, कृतमाया बिस्तार ११७॥

छंद

जब कीन्ह तेहिं पाषंड * भये प्रगट जंतु प्रचंड॥
बेताल भूत पिसाच * कर धरे धनु नाराच॥
जोगिनि गहे करबाल * येक हाँथ मनुज कपाल॥
करि सद्य सोनित पान * नाचहिं करहिं बहुगान॥
धरु मारु बोलहिं घोर * रहि पूरि धुनि चहुँओर॥

मुषबाइ धावहिं पान * तब लगे कीस परान ॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि * तहँ बरत देषहिं आगि ॥
भे बिकल बानर भालु * पुनि लाग बरषै बालु ॥
जहँ तहँ थकित करि कीस * गर्जेउ बहुरि दससीस ॥
लछिमन कपीस समेत * भये सकल बीर अचेत ॥
हा राम हा रघुनाथ * कहि सुभट मींजहिं हाथ ॥
येहि बिधि सकलबलतोरि * तेहिं कीन्ह कपट बहोरि ॥
प्रगटेसि बिपुल हनुमान * धाये गहे पाषान ॥
तिन्ह राम घेरे जाइ * चहुँ दिसि बरूथ बनाइ ॥
मारहु धरहु जनि जाइ * कटकटहिं पूंछि उठाइ ॥
दहँ दिसि लंगूर बिराज * तेहि मध्य कोसलराज २७॥

छंद

तेहि मध्य कोसलराज सुंदर स्यामतन सोभा लही ।
जनु इंद्रधनुष अनेक की बर बारि तुंग तमालही ॥
प्रभु देषि हरष बिषाद उर सुर बदत जय जय जय करी ।
रघुबीर येकहि तीर कोपि निमेषमहँ माया हरी २८ ॥
माया बिगत कपि भालु हरषे बिटप गिरि गहि सब फिरे ।
सरनिकर छाँडे राम रावन बाहु सिर पुनि महि गिरे ॥
श्रीराम रावन समर चरित अनेक कल्प जो गावहीं ।
सत सेष सारद निगम कबितेउ तदपि पार न पावहीं २९॥

दो० ताके गुनगन कछु कहे, जडमति तुलसीदास ।
जिमि निज बल अनुरूपतें, माछी उडै अकास ११८॥
काटे सिर भुज बार बहु; मरत न भट लंकेस ।

प्रभुक्रीडत सुर सिद्ध मुनि, ब्याकुल देषि कलेस ११९॥

काटत बढहिं सीस समुदाई * जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई
मरै न रिपु श्रम भयेउ बिसेषा * राम बिभीषन तन तब देषा
उमा काल मरु जाकी इच्छा * सो प्रभु जनकर प्रीति परिच्छा
सुनु सरबज्ञ चराचर नायक * प्रनतपाल सुर मुनिसुषदायक
नाभि कुंड पियूष बस याके * नाथ जिअत रावन बल ताके
सुनत बिभीषन बचन कृपाला * हरषि गहे कर बान कराला
असुभ होनलागे तब नाना * रोवहिं षर शृगाल बहु स्वाना
बोलहिं षग जग आरति हेतू * प्रगट भये नभ जहँ तहँ केतू
दहादिसि दाहहोन अति लागा * भयउ परब बिनु रबिउपरागा
मंदोदरि उर कंपति भारी * प्रतिमा श्रवहिं नयनमग बारी

छंद

प्रतिमा रुदहिं पबिपात नभ अति बात बहु डोलति मही।
बरषहिं बलाहक रुधिर कच रज असुभ अतिसक को कही॥
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहिं जय जये।
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चाँप सर जोरत भये ३०॥

दो० षैंचि सरासन श्रवन लगि, छाँडे सर येकतीस।
रघुनायक सायक चले, मानहुँ काल फनीस १२०॥

सायक येक नाभिसर सोषा * अपर लगे भुज सिर करि रोषा
लै सिर बाहुँ चले नाराचा * सिर भुज हीन रुंड महि नाचा
धरनि धसै धर धाव प्रचंडा * तब सरहति प्रभु कृत जुग षंडा
गर्जेउ मरत घोर रव भारी * कहाँ राम रन हतौं प्रचारी
डोली भूमि गिरत दसकंधर * छुभित सिंधु सरि दिग्गज भूधर

परेउ धरनि दोउ षंड बढाई * चाँपि भालु मर्कट समुदाई
मंदोदरि आगे भुज सीसा * धरि सर चले जहां जगदीसा
प्रविसे सब निषंग महँ आई * देषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई
तासु तेज समान प्रभु आनन * हरषे देषि संभु चतुरानन
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मंडा * जय रघुबीर प्रबल भुजदंडा
बरषहिं सुमन देव मुनिबृंदा * जय कृपाल जय जयति मुकुंदा

छंद

जय कृपाकंद मुकुंद द्वंद्वहरन सरन सुषप्रद प्रभो।
षलदल बिदारन परमकारन कारुनीक सदाँ बिभो॥
सुर सुमन बरषहिं हरष संकुल बाज दुंदुभि गहगही।
संग्राम अंगन रामअंग अनंग बहु सोभा लही ३१॥
सिर जटामुकुट प्रसून बिच बिच अति मनोहर राजहीं।
जनु नीलगिरिपर तडित पटल समेत उडगन भ्राजहीं॥
भुजदंड सर कोदंड फेरत रुधिरकन तन अति बने।
जनु रायमुनी तमाल पर बैठीं बिपुल सुष आपने ३२॥

दो॰ कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु, अभय किये सुरबृंद।
भालु कीस सब हरषे, जय सुषधाम मुकुंद १२१॥

पति सिर देषत मंदोदरी * मुरछित बिकल धरनिषसि परी
जुवतिबृंद रोवति उठि धाईं * तेहि उठाइ रावन पहिं आईं
पतिगति देषि ते करहिं पुकारा * छूटे कच नहिं बपुष सँभारा
उरताडना करहिं बिधिनाना * रोवत करहिं प्रताप बषाना
तव बल नाथ डोल नित धरनी * तेजहीन पावक ससि तरनी
सेष कमठ सहि सकहिं न भारा * सो तन भूमि परेउ भरि छारा

बरुन कुबेर सुरेस समीरा * रन सन्मुष धर काहुँ न धीरा
भुजबल जितेहु काल जम साँई * आजु परेउ अनाथ की नाँई
जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई * सुत परिजन बल बरनि न जाई
राम बिमुष अस हाल तुम्हारा * रहा न कोउ कुल रोवनहारा
तव बस बिधिप्रपंच सब नाथा * सभयदिसिप नित नावहिं माथा
अब तव सिर भुज जंबुक षाहीं * राम बिमुष यह अनुचित नाहीं
कालबिबस पति कहा न माना * अगजगनाथ मनुज करि जाना

छंद

जानेउ मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं।
जेहि नमत सिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनापयं।
आजन्म ते परद्रोहरत पापौघमय तव तनु अयं।
तुमहूं दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ३३॥

दो॰ अहह नाथ रघुनाथसम, कृपासिंधु नहिं आन।
जोगि बृंद दुर्लभ गति, तोहि दीन्हि भगवान १२२॥

मंदोदरी बचन सुनि काना * सुरमुनि सिद्ध सबन्हि सुषमाना
अज महेस नारद सनकादी * जो मुनिबर परमारथ बादी
भरि लोचन रघुपतिहि निहारी * प्रेम मगन सब भये सुषारी
रुदन करत देषीं सब नारी * गयेउ बिभीषन मन दुष भारी
बंधुदसा बिलोकि दुष कीन्हा * तबप्रभुअनुजहि आयसु दीन्हा
लछिमनतेहिबहुबिधिसमुझायो * बहुरिबिभीषन प्रभु पहिं आयो
कृपादिष्टि प्रभु ताहि बिलोका * करहु क्रिया परिहरि सब सोका
कीन्हि क्रिया प्रभुआयसु मानी * बिधिवत देसकाल जियजानी

दो॰ मंदोदरी आदि सब, देइँ तिलांजलि ताहि।

भवन गई रघुपति गुन, गन बर्नत मनमाहि १२३ ॥
आइ बिभीषन पुनि सिर नायो * कृपासिंधु तब अनुज बोलायो
तुम्ह कपीस अंगद नल नीला * जामवंत मारुति नयसीला
सब मिलि जाहु बिभीषन साथा * सारेउ तिलक कहेउ रघुनाथा
पिता बचन मै नगर न आवौं * आपु सरिस कपि अनुज पठावौं
तुरत चले कपि सुनि प्रभु बचना * कीन्हीं जाइ तिलक की रचना
सादर सिंघासन बैठारी * तिलक सारि अस्तुति अनुसारी
जोरि पानि सबही सिर नाये * सहित बिभीषन प्रभु पहिं आये
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे * कहि प्रिअ बचन सुषी सब कीन्हे

छंद

किये सुषी कहि बानी सुधासम बल तुम्हारे रिपु हयो ।
पायो बिभीषन राज्ु तिहुँ पुर जस तुम्हारो नित नयो ॥
मोहिं सहित सुभ कीरति तुम्हारी परम प्रीति जो गाइहैं ।
संसारसिंधु अपार पार प्रयास बिनु नर पाइहैं ३४ ॥

दो॰ प्रभु के बचन श्रवन सुनि, नहिं अघाहिं कपिपुंज ।
बार बार सिर नावहीं, गहहिं सकल पदकंज १२४ ॥

पुनि प्रभु बोलि लियेउ हनुमाना * लंका जाहु कहेउ भगवाना
समाचार जानकिहि सुनावहु * तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु
तब हनुमंत नगर महँ आये * सुनि निसिचरी निसाचर धाये
बहु प्रकार तिन्ह पूजा कीन्ही * जनकसुता देषाइ पुनि दीन्ही
दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा * रघुपति दूत जानकी चीन्हा
कहहु तात प्रभु कृपानिकेता * कुसल अनुज कपि सेन समेता
सब बिधि कुसल कोसलाधीसा * मातु समर जीत्यौ दससीसा

अबिचल राज बिभीषन पायो * सुनि कपि बचन हरष उर छायो

छंद

अतिहरष मनतन पुलकलोचन सजल कह पुनिपुनि रमा।
कादेउँ तोहि त्रिलोकमहँ कपि किमपि नहिं बानी समा॥
सुनु मातु मै पायौं अषिल जगराजु आजु न संसयं।
रनजीति रिपुदल बंधुजुत पश्यामि राम निरामयं ३५॥

दो० सुनु सुत सदगुन सकल तव, हृदय बसउ हनुमंत।
सानकूल कोसलपति, रहहु समेत अनंत १२५॥

अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता * देषौं नयन स्याम मृदुगाता
तब हनुमान राम पहिं जाई * जनकसुताकै कुसल सुनाई
सुनि संदेस भानुकुलभूषन * बोलिलिये जुबराज बिभीषन
मारुतसुत के संग सिधावहु * सादर जनकसुतहि लै आवहु
तुरतहिं सकल गये जहँ सीता * सेवहिं सब निसिचरी बिनीता
बेगि बिभीषन तिन्हहिं सिषायो * तिन्ह बहुबिधि मज्जन करवायो
बहुप्रकार भूषन पहिराये * सिबिका रुचिर साजि पुनि ल्याये
तापर हरषि चढी बैदेही * सुमिरि राम सुषधाम सनेही
बेतपानि रक्षक चहुँ पासा * चले सकल मन परम हुलासा
देषन कीस भालु सब आये * रक्षक कोपि निवारन धाये
कह रघुबीर कहा मम मानहु * सीतहि सषा पयादे आनहु
देषहु कपि जननी की नाईं * बिहँसि कहा रघुनाथ गोसाईं
सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे * नभतें सुरन्ह सुमन बहु बरषे
सीता प्रथम अनल महँ राषी * प्रगट कीन्हि चह अंतर साषी

दो० तेहि कारन करुनानिधि, कहे कछुक दुर्बाद।

सुनत जातुधानी सब, लागीं करन बिषाद १२६॥

प्रभु के बचन सीस धरि सीता * बोली मन क्रम बचन पुनीता
लछिमन होहु धरम के नेगी * पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी
सुनि लछिमन सीता कै बानी * बिरह बिबेक धरम नुति सानी
लोचन सजल जोरि कर दोऊ * प्रभुसन कछु कहिसकत न वोऊ
देषि राम रुष लछिमन धाये * पावक प्रगटि काठ बहु लाये
पावक प्रबल देषि बैदेही * हृदय हरष नहिं भय कछु तेही
जौं मन बच क्रम मम उरमाहीं * तजि रघुबीर आन गति नाहीं
तौ कृसानु सबकै गति जाना * मो कहँ होउ श्रिषंड समाना

छंद

श्रीषंड सम पावक प्रवेस कियो सुमिरि प्रभु मैथिली।
जय कोसलेस महेस बंदित चरन रति अति निर्मली॥
प्रतिबिम्ब अरु लौकिक कलंक प्रचंड पावक महँ जरे।
प्रभुचरित काहुँ न लषे नभ सुर सिद्ध मुनि देषहिंपरे ३६॥
धरि रूप पावक पानि गहि श्रीसत्यश्रुतिजगबिदित जो।
जिमि छीरसागर इंदिरा रामहिं समर्पी आनि सो॥
सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली।
नवनील नीरज निकट मानहुँ कनकपंकजकी कली ३७॥

दो० बरषहिं सुमन हरषि सुर, बाजहिं गगन निसान।
गावहिं किन्नर सुरबधू, नाचहिं चढीं बिमान १२७॥
जनकसुता समेत प्रभु, सोभा अमित अपार।
देषि भालु कपि हरषे, जय रघुपति सुषसार १२८॥

तब रघुपति अनुसासन पाई * मातलि चलेउ चरन सिरनाई

आये देव सदाँ स्वारथी * बचन कहहिं जनु परमारथी
दीनबंधु दयाल रघुराया * देव कीन्हि देवन्ह पर दाया
बिस्वद्रोहरत यह षल कामी * निज अघ गयेउ कुमारगगामी
तुम्ह समरूप ब्रह्म अबिनासी * सदाँ येक रस सहज उदासी
अकलअगुनअजअनघअनामय * अजितअमोघसक्तिकरुनामय
मीन कमठ सूकर नरहरी * बामन परसुराम बपुधरी
जब जब नाथ सुरन्ह दुष पायो * नाना तन धरि तुम्हइँ नसायो
यह षल मलिन सदा सुरद्रोही * काम लोभ मद रत अतिकोही
अधम सिरोमनि तव पद पावा * यह हमरे मन बिस्मय आवा
हम देवता परम अधिकारी * स्वारथ रत प्रभु भगति बिसारी
भव प्रबाह संतत हम परे * अब प्रभु पाहि सरन अनुसरे

दो०करि बिनती सुरसिद्ध सब, रहे जहँ तहँ करजोरि।
अतिसप्रेमतनपुलकिबिधि,अस्तुतिकरतबहोरि १२९॥

छंद

जयराम सदाँसुष धामहरे * रघुनायक सायक चाँप धरे
भव बारनदारन सिंहप्रभो * गुनसागर नागर नाथ बिभो
तन काम अनेक अनूप छबी * गुन गावत सिद्ध मुनिंद्र कबी
जस पावन रावन नागमहा * षगनाथजथा करि कोपगहा
जनरंजन भंजन सोकभयं * गतक्रोध सदाँ प्रभु बोधमयं
अवतार उदार अपार गुनं * महिभारबिभंजन ज्ञानघनं
अजब्यापकमेकमनादिसदा * करुनाकर राम नमामि मुदा
रघुबंसबिभूषन दूषनहा * कृत भूप बिभीषन दीनरहा
गुनज्ञाननिधानअमान अजं * नितरामनमामि बिभुं बिरजं

भुजदंड प्रचंडप्रताप बलं * खलवृंद निकंद महाकुसलं
बिनु कारन दीनदयालहितं * छबिधाम नमामि रमासहितं
भवतारन कारन काज परं * मनसंभव दारुन दोषहरं
सरचाँप मनोहर तूनधरं * जलजारुन लोचन भूपवरं
सुषमंदिर सुंदर श्रीरमनं * मदमार मुधा ममतासमनं
अनवद्य अषंडअगोचरगो * सब रूप सदाँ सब होइ न सो
इति बेद बदंति न दंतिकथा * रबि आतपाभिन्न न भिन्न जथा
कृतकृत्य बिभो सब बानर ये * निरषंत तवानन सादर ये
धिग जीवन देवसरीर हरे * तव भक्ति बिना भव भूलिपरे
अब दीनदयाल दया करिये * मति मोरि बिभेदकरी हरिये
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिये * दुष सो सुषमानि सुषी चरिये
षल षंडन मंडन रम्य छमा * पदपंकज सेवित संभु उमा
नृपनायक दे बरदानमिदं * चरनांबुजप्रेमसदाँसुभदं ३८॥
दो॰ बिनय कीन्हि चतुरानन, प्रेम पुलक अति गात।
सोभासिंधु बिलोकत, लोचन नहीं अघात ११२०॥
तेहि अवसर दसरथ तहँ आये * तनय बिलोकि नयन जलछाये
अनुजसहित प्रभु बंदन कीन्हा * आसिर्बाद पिता तब दीन्हा
तात सकल तव पुन्य प्रभाऊ * जीत्यों अजय निसाचरराऊ
सुनि सुतबचन प्रीति अति बाढी * नयन सलिल रोमावलि ठाढी
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना * चितै पितहि दीन्हेउ दृढ ज्ञाना
ताते उमा मोक्ष नहिं पायो * दसरथ भेद भगति मन लायो
सगुनोपासक मोक्ष न लेहीं * तिन्हकहँ राम भगति निज देहीं
बार बार करि प्रभुहि प्रनामा * दसरथ हरषि गये सुर धामा

१-भुक्तिमुक्तिस्पृहा यावत्पिशाची हृदि वर्तते। तावद्भक्तिसुखस्यात्र कथमभ्युदयो भवेत्॥

दो० अनुजजानकी सहित प्रभु, कुसल कोसलाधीस।
सोभा देषि हरषि मन, अस्तुति कर सुरईस १३१

छंद

जय राम सोभाधाम * दायक प्रनत बिश्राम।
धृत तून बर सर चाँप * भुजदंड प्रबल प्रताप ॥
जय दूषनारि षरारि * मर्दन निसाचर धारि।
यह दुष्ट मारेउ नाथ * भयेदेव सकल सनाथ ॥
जय हरन धरनीभार * महिमा उदार अपार।
जय रावनारि कृपाल * किये जातुधान बिहाल ॥
लंकेस अतिबल गर्ब * किये बस्य सुर गंधर्ब।
मुनिसिद्ध नर षग नाग * हठि पंथ सबके लाग ॥
परद्रोहरति अति दुष्ट * पायो सो फल पापिष्ट।
अब सुनहु दीनदयाल * राजीवनयन बिसाल ॥
मोहिंरहाअतिअभिमान * नहिंकोउ मोहिं समान।
अब देषि प्रभुपदकंज * गतमान प्रद दुषपुंज ॥
कोइ ब्रह्म निर्गुन ध्याव * अव्यक्त जेहिश्रुति गाव।
मोहि भाव कोसल भूप * श्रीराम सगुन सरूप ॥
बैदेहि अनुज समेत * मम हृदय करहु निकेत।
मोहिजानिये निजदास* दे भक्ति रमानिवास ३९॥
दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुषदायकं।
सुषधाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं ॥
सुरबृंदरंजन द्वंद्वभंजन मनुज तन अतुलित बलं।
ब्रह्मादि संकर सेब्य राम नमामि करुना कोमलं ४० ॥

दो० अब करि कृपा बिलोकि मोहि, आयसु देहु कृपाल।
काह करौं सुनि प्रिय बचन, बोले दीनदयाल १३२॥

सुनु सुरपति कपि भालु हमारे * परे भूमि निसिचरन्हि जे मारे
मम हित लागि तजे इन्ह प्राना * सकल जिआव सुरेस सुजाना
सुनु षगेस प्रभु कै यह बानी * अति अगाध जानहिं मुनि ज्ञानी
प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई * केवल सक्रहि दीन्हि बडाई
सुधा बरषि कपि भालु जिआये * हरषि उठे सब प्रभु पहिं आये
सुधा बृष्टि भै दुहुँ दल ऊपर * जिये भालु कपि नहिं रजनीचर
रामाकार भये तिन्हके मन * मुक्त भये छूटे भवबंधन
सुरअंसिक सब कपि अरु रिक्षा * जिये सकल रघुपति की इक्षा
राम सरिस को दीन हितकारी * कीन्हे मुक्त निसाचर भ्झारी
षल मलधाम कामरत रावन * गति पाई जो मुनिवर पावन

दो० सुमन बरषि सब सुर चले, चढि चढि रुचिर बिमान।
देषि सुअवसर प्रभु पहिं, आयेउ संभु सुजान १३३॥
परम प्रीति कर जोरि जुग, नलिननयन भरि बारि।
पुलकित तन गदगद गिरा, बिनय करत त्रिपुरारि १३४॥

मामभिरक्षय रघुकुलनायक * धृत बरचाँप रुचिरकर सायक
मोह महा घनपटल प्रभंजन * संसयबिपिनअनल सुररंजन
अगुन सगुन गुनमंदिर सुंदर * भ्रमतम प्रबल प्रताप दिवाकर
काम क्रोध मद गज पंचानन * बसहु निरंतर जन मन कानन
बिषय मनोरथ पुंज कंजबन * प्रबल तुषार उदार पारमन
भवबारिधि मंदर पर मंदर * वारय तारय संसृति दुस्तर
स्यामगात राजीव बिलोचन * दीनबंधु प्रनतारति मोचन

अनुज जानकी सहित निरंतर * बसहु रामनृप मम उरअंतर
मुनिरंजन महिमंडल मंडन * तुलसिदास प्रभु त्रासबिषंडन

दो० नाथ जबहिं कोसलपुरी, होइहि तिलक तुम्हार।
कृपासिंधु मैं आउब, देषन चरित उदार १३५॥

करि बिनती जब संभु सिधाये * तब प्रभुनिकट बिभीषन आये
नाइ चरन सिर कह मृदुबानी * बिनय सुनहु प्रभु सारँगपानी
सकुल सदल रनरावन मार्‍यो * पावन जस त्रिभुअन बिस्तार्‍यो
दीन मलीन हीनमति जाती * मोपर कृपा कीन्हि बहु भाँती
अबजन गृह पुनीत प्रभु कीजे * मज्जन करिअ समरश्रम छीजे
देषि कोस मंदिर संपदा * देहु कृपाल कपिन्ह कहँ मुदा
सबबिधिनाथ मोहिंअपनाइअ * पुनिमोहिंसहितअवधपुरजाइअ
सुनत वचन मृदु दीनदयाला * सजल भये द्वौ नयन बिसाला

दो० तोर कोस गृह मोर सब, सत्यबचन सुनु भ्रात।
भरतदसासुमिरतमोहि, निमिषकल्पसमजात १३६॥
तापस बेष गात कृस, जपत निरंतर मोहि।
देषौं बेगि सो जतन करु, सषा निहोरौं तोहि १३७॥
बीते अवधि जाउँ जौं, जिअत न पावौं बीर।
सुमिरतअनुजप्रीतिप्रभु, पुनिपुनि पुलकसरीर १३८॥
करेहुकल्पभरिराजतुम्ह, मोहिंसुमिरेहु मनमाहिं।
पुनिमम धाम पाइहहु, जहां संत सब जाहिं १३९॥

सुनत बिभीषन बचन रामके * हरषि गहे पद कृपाधामके
बानर भालु सकल हरषाने * गहि प्रभुपद गुन बिमल बषाने
बहुरि बिभीषन भवन सिधायो * मनिगन बसन बिमान भरायो

लै पुष्पक प्रभु आगे राषा * हँसिकरि कृपासिंधु तब भाषा
चढि बिमान सुनु सषा बिभीषन * गगन जाइ बरषहु पटभूषन
नभपर जाइ बिभीषन तबहीं * बरषि दिये मनिअंबर सबहीं
जोइ जोइ मनभावै सोइ लेहीं * मनिमुष मेलि डारि कपि देहीं
हँसे राम श्री अनुज समेता * परम कौतुकी कृपानिकेता

दो॰ मुनि जेहि ध्यान न पावहिं, नेति नेति कह बेद।
कृपासिंधु सोइ कपिन्ह सन, करत अनेक बिनोद १४०॥
उमा जोग जप दान तप, नाना मष ब्रत नेम।
रामकृपा नहिं करहिं तसि, जसि निःकेवल प्रेम १४१॥

भालु कपिन्ह पट भूषन पाये * पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आये
नाना जिनिसि देषि सब कीसा * पुनिपुनि हँसत कोसलाधीसा
चितै सबहि पर कीन्ही दाया * बोले मृदुल बचन रघुराया
तुम्हरे बल मैं रावन मार्‍यो * तिलक बिभीषन कहँ पुनि सार्‍यो
निजनिजगृहअबतुम्हसबजाहू * सुमिरेहु मोहिं डरपेहु जनि काहू
सुनत बचन प्रेमाकुल बानर * जोरि पानि बोले सब सादर
प्रभु जोइ कहहु तुमहिं सब सोहा * हमरे होत बचन सुनि मोहा
दीन जानि कपि किये सनाथा * तुम्ह त्रैलोक ईस रघुनाथा
सुनि प्रभु बचन लाज हम मरहीं * मसक कहूँ षगपति हित करहीं
देषि रामरुष बानर रिच्छा * प्रेममगन नहिं गृह कै इच्छा

दो॰ प्रभु प्रेरित कपि भालु सब, रामरूप उर राषि।
हरष बिषाद सहित चले, बिनय बिबिधि बिधि भाषि १४२॥
कपिपति नील रिक्षपति, अंगद नल हनुमान।
सहित बिभीषन अपर जे, जूथप कपि बलवान १४३॥

कहि न सकहिं कछु प्रेमबस, भरिभरि लोचन बारि।
सन्मुष चितवहिं रामतन, नयन निमेष निवारि १४४॥

अतिसय प्रीति देषि रघुराई * लीन्हे सकल बिमान चढाई
मनमहँ बिप्रचरन सिरनायो * उत्तर दिसिहि बिमान चलायो
चलत बिमान कोलाहल होई * जय रघुबीर कहै सब कोई
सिंहासन अति उच्च मनोहर * श्रीसमेत प्रभु बैठे तापर
राजत राम सहित भामिनी * मेरु शृंग जनु घन दामिनी
रुचिर बिमान चलेउ अतिआतुर * कीन्हीं सुमन बृष्टि हरषे सुर
परम सुषद चलि त्रिबिधि बयारी * सागर सर सरि निर्मल बारी
सगुन होहिं सुंदर चहुँ पासा * मन प्रसन्न निर्मल नभ आसा
कह रघुबीर देषु रन सीता * लछिमन इहां हत्यौ इंद्रजीता
हनूमान अंगद के मारे * रन महि परे निसाचर भारे
कुंभकर्न रावन द्वौ भाई * इहां हते सुर मुनि दुषदाई

दो० इहां सेतु बाँध्यों अरु, थापेउँ सिव सुषधाम।
सीता सहित कृपानिधि, संमुहि कीन्ह प्रनाम १४५॥
जहँ जहँ कृपासिंधु बन, कीन्ह बास बिश्राम।
सकल देषाये जानकिहि, कहे सबन्हिके नाम १४६॥

तुरत बिमान तहां चलिआवा * दंडकबन जहँ परम सोहावा
कुंभजादि मुनिनायक नाना * गये राम सबके अस्थाना
सकल रिषिन्हसन पाइ असीसा * चित्रकूट आयेउ जगदीसा
तहँ करि मुनिन्ह केर संतोषा * चला बिमान तहांते चोषा
बहुरि राम जानकिहि देषाई * जमुना कलिमलहरनि सोहाई
पुनि देषी सुरसरी पुनीता * राम कहा प्रनाम करु सीता

तीरथपति पुनि देषु प्रयागा * निरषत जन्मकोटि अघ भागा
देषु परम पावनि पुनि बेनी * हरनि सोक हरिलोक निसेनी
पुनि देषु अवध पुरीअतिपावनि * त्रिबिधिताप भव रोग नसावनि
दो० सीता सहित अवध कहँ, कीन्ह कृपाल प्रनाम।
सजल नयन तन पुलकित, पुनि पुनि हरषित राम १४७
पुनि प्रभु आइ त्रिबेनी, हरषित मज्जन कीन्ह।
कपिन्हसहितबिप्रन्हकहँ, दानबिबिधिबिधिदीन्ह १४८॥
प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई * धरि बटु रूप अवधपुर जाई
भरतहि कुसल हमारि सुनायहु * समाचार लै तुम्ह चलि आयहु
तुरत पवनसुत गवनत भयेऊ * तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयेऊ
नाना बिधि मुनि पूजा कीन्ही * अस्तुतिकरिपुनिआसिष दीन्ही
मुनि पद बंदि जुगुल कर जोरी * चढि बिमान प्रभु चले बहोरी
इहां निषाद सुना प्रभु आये * नाव नाव कहँ लोग बोलाये
सुरसरि नाघि जान तब आयो * उतरेउ तट प्रभुआयसु पायो
तब सीता पूजी सुरसरी * बहु प्रकार पुनि चरनन्हि परी
दीन्हि असीस हरषि मन गंगा * सुंदरि तव अहिवात अभंगा
सुनत गुहा धायो प्रेमाकुल * आयेउ निकट परमसुषसंकुल
प्रभुहि सहित बिलोकि बैदेही * परेउ अवनि तनसुधि नहिं तेही
प्रीति परम बिलोकि रघुराई * हरषि उठाइ लियो उर लाई

छंद

लियो हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राय रमापती।
बैठारि परम समीप बूझी कुसल सो कर बीनती॥
अब कुसल पदपंकज बिलोकि बिरंचि संकर सेब्यजे।

सुषधाम पूरनकाम राम नमामि राम नमामि ते ४१ ॥
सब भाँति अधम निषाद सो हरि भरत ज्यों उरलाइयो ।
मतिमंद तुलसीदास सो प्रभु मोहबस बिसराइयो ॥
यह रावनारि चरित्र पावन रामपद रतिप्रद सदा ।
कामादिहर बिज्ञानकर सुरसिद्ध मुनि गावहिं मुदा ४२ ॥

दो० समर बिजय रघुबीर के, चरित जे सुनहिं सुजान ।
बिजयबिबेकबिभूतिनित, तिनहिं देहिं भगवान १४९ ॥
यह कलिकाल मलायतन, मन करि देषु बिचार ।
श्रीरघुनाथ नाम तजि, नाहिंन आन अधार १५० ॥

मास पारायण दिन २७

इति श्रीरामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
विमलविज्ञानसंपादनोनाम षष्ठः सोपानः ॥ ६ ॥
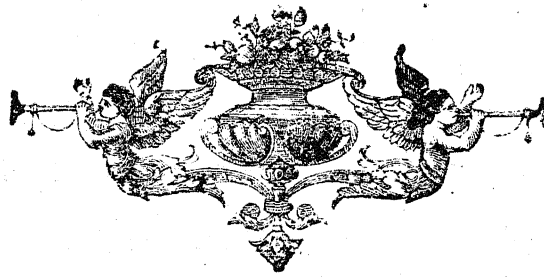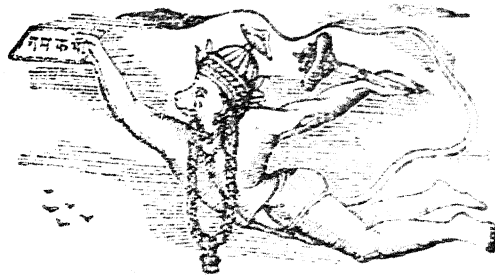
श्री गणेशाय नमः

श्रीरामचरितमानस

सप्तमसोपान

उत्तरकांड

केकी कण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् १॥

कोशलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्यमनभृङ्गसङ्गिनौ २
कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम्।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शङ्करमनङ्गमोचनम् ३॥

दो० रहा एक दिन अवधि कर, अतिआरत पुरलोग।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर, कृसतन रामवियोग १॥
सगुन होहिं सुंदर सकल, मन प्रसन्न सब केर।
प्रभु आगवन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँफेर २॥

कौसल्यादि मातु सब, मन अनंद अस होइ।
आयेउ प्रभु श्रीअनुजजुत, कहन चहत अब कोइ ३॥
भरत नयन भुज दच्छिन, फरकत बारहिंबार।
जानि सगुन मनहरष अति, लागे करन बिचार ४॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा * समुझत मन दुष भयेउ अपारा
कारनकवननाथनहिं आयेउ * जानिकुटिलकिधौंमोहिंबिसरायेउ
अहह[1] धन्य लछिमन बडभागी * राम पदारबिंद अनुरागी
कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा * तातें नाथ संग नहिं लीन्हा
जो करनी समुझै प्रभु मोरी * नहिं निस्तार कलपसत कोरी
जनअवगुन प्रभु मान न काऊ * दीनबंधु अति मृदुल सुभाऊ
मोरे जिअ भरोस दृढ सोई * मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई
बीते अवधि रहहिं जौ प्राना * अधम कवन जग मोहि समाना

दो० राम बिरह सागर महँ, भरत मगन मन होत।
बिप्ररूप धरि पवनसुत, आइगयेउ जनु पोत ५॥
बैठे देषि कुसासन, जटा मुकुट कृस गात।
रामराम रघुपति जपत, श्रवत नयन जलजात ६॥

देषत हनूमान अति हरषेउ * पुलकगात लोचन जलबरषेउ
मनमहँ बहुत भाँति सुषमानी * बोलेउ श्रवनसुधा सम बानी
जासु बिरह सोचहु दिन राती * रटहु निरंतर गुनगन पाँती
रघुकुलतिलक सुजनसुषदाता * आयेउ कुसल देव मुनि त्राता
रिपु रनजीति सुजस सुरगावत * सीतासहित अनुज प्रभुआवत
सुनत बचन बिसरे सब दूषा * तृषावंत जिमि पाइ पियूषा

१—अहहेत्यद्भुते खेदे इति विश्वः॥

को तुम्ह तात कहां ते आये * मोहिं परम प्रिअ बचन सुनाये
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना * नाम मोर सुनु कृपानिधाना
दीनबंधु रघुपति कर किंकर * सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर
मिलत प्रेम नहिं हृदय समाता * नयन श्रवत जल पुलकित गाता
कपि तव दरस सकल दुष बीते * मिले आजु मोहिं राम पिरीते
बार बार बूझी कुसलाता * तो कहँ देउँ काह सुनु भ्राता
यहि संदेस सरिस जगमाहीं * करि बिचार देषेउँ कछु नाहीं
नाहिंन तात उरिन मैं तोही * अब प्रभु चरित सुनावहु मोही
तब हनुमंत नाइ पद माथा * कही सकल रघुपतिगुनगाथा
कहु कपि कबहुँ कृपाल गोसाईं * सुमिरहिं मोहि दास की नाईं

छंद

निज दास ज्यों रघुबंसभूषन कबहुँ मम सुमिरन कर्यो।
सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि पुलकित न चरनन्हि पर्यो॥
रघुबीर निजमुष जासु गुनगन कहत अगजगनाथ जो।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सदगुनसिंधु सो १॥

दो० राम प्रानप्रिय नाथ तुम्ह, सत्यबचन मम तात।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि, हरष न हृदय समात ७॥

सो० भरत चरन सिरनाइ, तुरत गयेउ कपि राम पहिं।
कही कुसल सब जाइ, हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि १॥

हरषि भरत कोसलपुर आये * समाचार सब गुरुहि सुनाये
पुनि मंदिर महँ बात जनाई * आवत नगर कुसल रघुराई
सुनत सकल जननी उठिधाईं * कहि प्रभु कुसल भरत समुझाई
समाचार पुरबासिन्ह पाये * नर अरु नारि हरषि सब धाये

दधि दुर्बा रोचन फल फूला * नव तुलसीदल मंगल मूला
भरिभरि हेमथार भामिनी * गावति चलिं सिंधुरगामिनी
जे जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं * बाल बृद्ध कहँ संग न लावहिं
येक येकन्ह कहँ बूझहिं भाई * तुम्ह देषे दयाल रघुराई
अवधपुरी प्रभु आवत जानी * भई सकल सोभा कै षानी
बहइ सोहावनि त्रिबिधि समीरा * भइ सरजू अति निर्मल नीरा

दो० हरषित गुरु परिजन अनुज, भूसुर बृंद समेत।
चले भरत मन प्रेम अति, सन्मुष कृपानिकेत ८॥
बहुतक चढी अटारिन्ह, निरषहिं गगन बिमान।
देषि मधुर सुर हरषित, करहिं सुमंगल गान ९॥
राकाससि रघुपति पुर, सिंधु देषि हरषान।
बढेउ कोलाहल करत जनु, नारि तरंग समान १०॥

इहाँ भानुकुलकमलदिवाकर * कपिन्ह देखावत नगर मनोहर
सुनु कपीस अंगद लंकेसा * पावन पुरी रुचिर यह देसा
जद्यपि सब बैकुंठ बषाना * बेद पुरान बिदित जगजाना
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ * यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ
जन्मभूमि मम पुरी सोहावनि * उत्तरदिसि बह सरजू पावनि
जा मज्जन तें बिनहिं प्रयासा * मम समीप नर पावहिं बासा
अति प्रिय मोहि इहां के बासी * मम धामदा पुरी सुषरासी
हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी * धन्य अवध जेहि राम बषानी

दो० आवत देषे लोग सब, कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ, उतरेउ भूमि बिमान ११॥
उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि, तुम्ह कुबेर पहिं जाहु।

भरत-भेंट ।

प्रभु मिलन अनुजहिं सोह मोपहँ जात नहिं उपमा कही ।
जनु प्रेम अरु शृङ्गार तनु धरि मिलत वर सुषमा लही ॥

पेरित राम चलेउ सो, हरष विरह अति ताहु १२॥
आये भरत संग सब लोगा * कृसतन श्रीरघुवीर वियोगा
बामदेव बसिष्ट मुनिनायक * देषे प्रभु महिधरि धनुसायक
धाइ धरे गुरु चरन सरोरुह * अनुजसहितअतिपुलकतनोरुह
भेंटि कुसल बूझी मुनिराया * हमरे कुसल तुम्हारिहि दाया
सकल द्विजन मिलि नायेउ माथा * धर्मधुरंधर रघुकुलनाथा
गहे भरत पुनि प्रभुपदपंकज * नमतजिन्हहिंसुरमुनिसंकरअज
परे भूमि नहिं उठत उठाये * बरकर कृपासिंधु उरलाये
स्यामल गात रोम भये ठाढे * नवराजीव नयन जलबाढे

छंद

राजीवलोचन श्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी।
अतिप्रेम हृदयलगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुअनधनी॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मोपहिं जात नहिं उपमा कही।
जनु प्रेम अरु सिंगार तन धरि मिले बर सुषमा लही २॥
बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि बचन बेगि न आवई।
सुनु सिवा सो सुष बचन मन तें भिन्न जान जो पावई॥
अब कुशल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो।
बूडत बिरहबारीस कृपानिधान मोहि करगहि लियो ३॥

दो० पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ।
लछिमन भरत मिले तब, परम प्रेम दोउ भाइ १२॥

भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे * दुसह विरहसंभव दुष मेटे
सीताचरन भरत सिर नावा * अनुज समेत परम सुष पावा
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी * जनित वियोग बिपतिसब नासी

प्रेमातुर सब लोग निहारी * कौतुक कीन्ह कृपाल षरारी
अमिति रूप प्रगटे तेहि काला * जथाजोग मिले सबहि कृपाला
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी * किये सकल नरनारि बिसोकी
छनमहिं सबहि मिले भगवाना * उमा मरम यह काहुँ न जाना
येहिबिधि सबहिं सुषीकरि रामा * आगे चले सीलगुनधामा
कौसल्यादि मातु सब धाईं * निरषि बच्छ जनु धेनु लवाईं

छंद

जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परबस गईं ॥
दिन अंत पुर रुष श्रवत थन हुंकार करि धावत भईं ॥
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटीं बचन मृदु बहुबिधि कहे ।
गइ बिषमबिपति बियोगभव तिन्हहरषसुष अगिनित लहे ४ ॥

दो॰ भेंटेउ तनय सुमित्रा, राम चरन रति जानि ।
रामहिं मिलत कैकई, हृदय बहुत सकुचानि १४ ॥
लछिमन सब मातन्ह मिलि, हरषे आसिष पाइ ।
कैकेइ कहँ पुनि पुनि मिले, मनकर छोभ न जाइ १५ ॥

सासुन्ह सबन्हि मिली बैदेही * चरनन्हि लागि हरष अति तेही
देहिं असीस बूझि कुसलाता * होइ अचल तुम्हार अहिवाता
सब रघुपतिमुषकमल बिलोकहिं * मंगल जानि नयनजल रोकहिं
कनकथार आरती उतारहिं * बार बार प्रभुगात निहारहिं
नाना भाँति निछावरि करहीं * परमानंद हरष उर भरहीं
कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं * चितवति कृपासिंधु रनधीरहिं
हृदय बिचारति बारहिं बारा * कवन भाँति लंकापति मारा
अतिसुकुमार जुगल मेरे बारे * निसिचर सुभट महाबल भारे

१-स्यात्प्रबन्धे पुरातीते निकटागामिके पुरे इत्यमरः ॥

दो॰ लछिमन अरु सीतासहित, प्रभुहि विलोकति मातु ।
परमानंद मगन मन, पुनि पुनि पुलकित गातु १६॥

लंकापति कपीस नल नीला ॥ जामवंत अंगद सुभ सीला
हनुमदादि सब बानर बीरा ॥ धरे मनोहर मनुज सरीरा
भरत सनेह सीलव्रत नेमा ॥ सादर सब बरनहिं अति प्रेमा
देषि नगरबासिन कै रीती ॥ सकल सराहहिं प्रभुपद प्रीती
पुनि रघुपति सब सषा बोलाये ॥ मुनिपद लागहु सकल सिषाये
गुरु बासिष्ट कुलपूज्य हमारे ॥ इन्हकी कृपा दनुज रनमारे
ये सब सषा सुनहुँ मुनि मेरे ॥ भये समर सागर कहँ बेरे
मम हितलागि जन्म इन्ह हारे ॥ भरतहु तें मोहि अधिक पिआरे
सुनि प्रभुबचन मगन सब भये ॥ निमिष निमिष उपजत सुष नये

दो॰ कौसल्या के चरनन्हि, पुनि तिन्ह नायेउ माथ ।
आसिषदीन्हे हरषितुम्ह, प्रिय मम जिमि रघुनाथ १७॥
सुमन वृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुषकंद ।
चढ़ी अटारिन्ह देषहिं, नगर नारि नरवृंद १८॥

कंचन कलस विचित्र सवारे ॥ सबहिं धरे सजि सजि निज द्वारे
बंदनिवार पताका केतू ॥ सबन्हि बनाये मंगल हेतू
बीथी सकल सुगंध सिंचाई ॥ गजमनि रचि बहु चौक पुराई
नाना भाँति सुमंगल साजे ॥ हरषि नगर निसान बहु बाजे
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं ॥ देहिं असीस हरष उर भरहीं
कंचन थार आरती नाना ॥ जुवती सजे करहिं सुभगाना
करहिं आरती आरति हरके ॥ रघुकुलकमलबिपिन दिनकरके
पुर सोभा संपति कल्याना ॥ निगम सेष शारदा बषाना

तेउ येह चरित देषि ठगि रहहीं * उमा तासु गुन नर किमि कहहीं

दो० नारि कुमुदिनी अवधसर, रघुपति बिरह दिनेस।
अस्त भये बिगसित भईं, निरषि राम राकेस १९ ॥
होहिं सगुन सुभ बिबिधि बिधि, बाजहिं गगन निसान।
पुर नर नारि सनाथ करि, भवन चले भगवान २० ॥

प्रभु जानी कैकई लजानी * प्रथम तासु गृह गये भवानी
ताहि प्रबोधि बहुत सुष दीन्हा * पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा
कृपासिंधु जब मंदिर गये * पुर नर नारि सुषी सब भये
गुरु बसिष्ट द्विज लिये बोलाई * आजु सुघरी सुदिन समुदाई
सब द्विज देहु हरषि अनुसासन * रामचंद्र बैठहिं सिंघासन
मुनि बसिष्ट के बचन सोहाये * सुनत सकल बिप्रन्ह अतिभाये
कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका * जग अभिराम राम अभिषेका
अब मुनिवर बिलंब नहिं कीजे * महाराज कर तिलक करीजे

दो० तब मुनि कहेउ सुमंतसन, सुनत चलेउ हरषाइ।
रथ अनेक बहु बाजि गज, तुरत सँवारे जाइ २१ ॥

नवाह्न दिन ॥ ८ ॥

जहँ तहँ धावन पठय पुनि, मंगल द्रव्य मँगाइ।
हरष समेत बसिष्टपद, पुनि सिरनायेउ आइ २२॥

अवधपुरी अति रुचिर बनाई * देवन्ह सुमन बृष्टि झरिलाई
राम कहा सेवकन्ह बुलाई * प्रथम सषन्ह अन्हवावहु जाई
सुनत बचन जहँ तहँ जन धाये * सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये
पुनि करुनानिधि भरत हँकारे * निजकर राम जटा निरुआरे
अन्हवाये प्रभु तीनिउँ भाई * भक्तबछल कृपाल रघुराई

श्रीरामाभिषेक ।
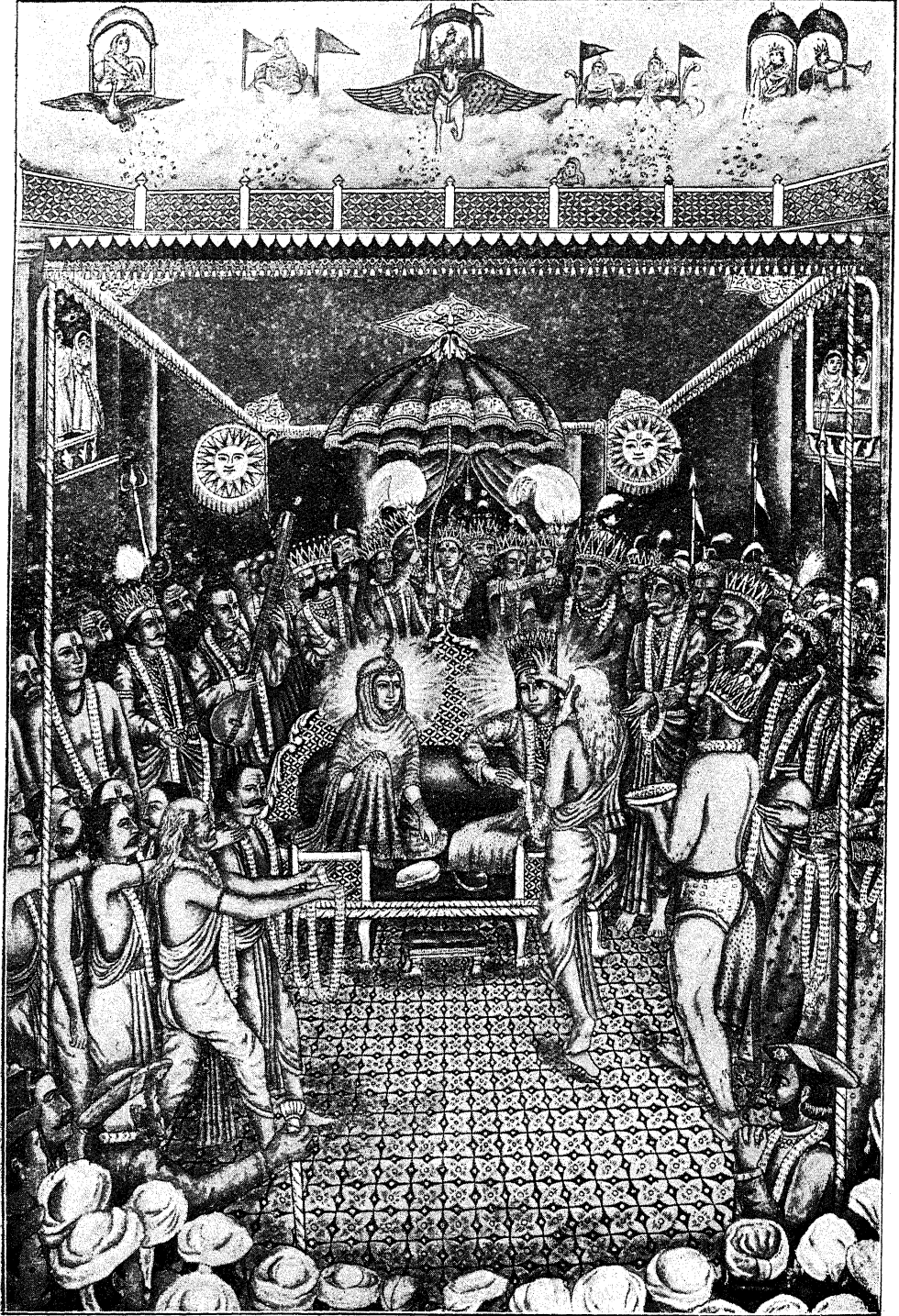
(सिद्ध साध्य देवर्षिगण किन्नर यक्ष अनेक ।)
चढ़ि विमान आये सबै सुर देखन (अभिषेक ।।)

भरत भाग्य प्रभु कोमलताई * सेष कोटिसत सकहिं न गाई
पुनि निज जटा राम बिवराये * गुरु अनुसासन मागि नहाये
करि मज्जन प्रभु भूषन साजे * अंग अनंग कोटि छबि लाजे

दो० सासुन्ह सादर जानकिहि, मज्जन तुरत कराय।
दिब्य बसन मनिभूषन, अँगअँग सजे बनाइ २३॥
राम बामदिसि सोभित, रमारूप गुनषानि।
देषि मातु सब हरषीं, जन्म सुफल निज जानि २४॥
सुनु षगेस तेहि अवसर, ब्रह्मा सिव मुनिबृंद।
चढ़ि बिमान आये सब, सुर देषन सुषकंद २५॥

प्रभु बिलोकि मुनिमन अनुरागा * तुरत दिब्य सिंघासन मागा
रबिसम तेज सो बरनि न जाई * बैठे राम द्विजन्ह सिर नाई
जनकसुता समेत रघुराई * पेषि प्रहरषे मुनि समुदाई
बेदमंत्र तब द्विजन्ह उचारे * नभसुर मुनि जय जयति पुकारे
प्रथमतिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा * पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा
सुत बिलोकि हरषीं महँतारी * बार बार आरती उतारी
बिप्रन्ह दान बिबिधि बिधि दीन्हे * जाचक सकल अजायक कीन्हे
सिंघासन पर त्रिभुअन साई * देषि सुरन्ह दुंदुभी बजाई

छंद

नभ दुंदुभी बाजहिं बिपुल गंधर्ब किन्नर गावहीं।
नाचहिं अप्सराबृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं॥
भरतादि अनुज बिभीषनांगद हनुमदादि समेत ते।
गहे छत्र चामर ब्यजन धनु असिचर्म सक्ति बिराजते ५॥
श्रीसहित दिनकरबंसभूषन कामबहु छबि सोहई।

नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुरमन मोहई ॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषन अंग अंगन्हि प्रति सजे ।
अंभोजनयन बिशाल उर भुज धन्य नर निरषंत जे६ ॥

दो० वह सोभा समाज सुष, कहत न बनय षगेस ।
बरनै सारद सेष श्रुति, सो रस जान महेस २६ ॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गये सुर निज निज धाम ।
बंदी बेष बेद तब, आये जहँ श्रीराम २७ ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान ।
लषेउ न काहूँ मरम कछु, लगे करन गुनगान २८ ॥

छंद

जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने ।
दसकंधरादिप्रचंड निसिचर प्रबलषल भुजबलहने ॥
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुष दहे ।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे ७ ॥
तव बिषम मायाबस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भवपंथभ्रमत अमित दिवस निसि कालकर्मगुननि भरे ॥
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिधि दुषते निर्बहे ।
भव षेद छेदन दक्ष हमकहँ रक्ष राम नमामहे ८ ॥
जे ज्ञान मान बिमत्त तव भवहरनि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देषत हरी ॥
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे ह्वैरहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भवनाथ सो स्मरामहे ९ ॥
जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी ।

नषांनिर्गता मुनिबंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंजजुत बन फिरन कंटक किन लहे।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे १० ॥
अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षटु कंध साषा पंचबिंस अनेक पर्न सुमन घने ॥
फलजुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसारबिटप नमामहे ११ ॥
जे ब्रह्म अजमद्वैत अनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं।
ते कहहु जानहु नाथ हम तव सगुनजस नित गावहीं ॥
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मांगहीं।
मन बचन कर्म बिकार तजि तवचरन हम अनुरागही १२॥

दो० सबके देषत बेदन्ह, बिनती कीन्हि उदार।
अंतरधान भये पुनि, गये ब्रह्म आगार २९ ॥
बैनतेय सुनु संभु तब, आये जहँ रघुबीर।
बिनय करतगदगदगिरा, पूरित पुलकसरीरा ३० ॥

छंद

जय राम रमारमनं समनं * भवतापभयाकुल पाहि जनं
अवधेस सुरेस रमेस बिभो * सरनागतमागतपाहिप्रभो १३
दससीसबिनासनबीसभुजा * कृतदूरि महा महि भूरि रुजा
रजनीचर बृंद पतंग रहे * सर पावक तेज प्रचंड दहे १४
महिमंडलमंडन चारुतरं * धृतसायक चापनिषंगबरं
मद मोह महा ममता रजनी * तमपुंजदिवाकरतेजअनी १५
मनजात किरात निपात किये * मृगलोग कुभोग सरे न हिये

हतिनाथअनाथन्हिपाहिहरे * बिषयाबन पाँवर भूलिपरे १६
बहुरोग बियोगन्हि लोगहये * भवद्रंघ्रि निरादर के फलये
भवसिंधु अगाध परे नरते * पदपंकज प्रेम न जे करते १७
अतिदीन मलीन दुषीनितहीं * जिन्हके पदपंकज प्रीति नहीं
अवलंबभवंतकथाजिन्हके * प्रिअसंतअनंतसदातिन्हके १८
नहिंरागनलोभन मानमदा * जिन्हके सम बैभव वा बिपदा
येहितेतवसेवक होतमुदा * मुनित्यागतजोगभरोससदा १९
करि प्रेम निरंतर नेम लिये * पदपंकज सेवत सुद्ध हिये
सममान निरादर आदरही * सबसंतसुषी बिचरंति मही २०
मुनिमानसपंकज भृंगभजे * रघुबीर महारनधीर अजे
तव नामजपामि नमामिहरी * भवरोगमहागदमानअरी २१
गुनसील कृपापरमायतनं * प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं
रघुनंदनिकंदयद्वंदघनं * महिपालबिलोकयदीनजनं २२
दो॰ बार बार बर मांगउँ, हरषि देहु श्रीरंग।
पदसरोज अनपायनी, भगति सदाँ सतसंग ३१ ॥
बरनि उमापति रामगुन, हरषि गये कैलास ।
तब प्रभु कपिन्ह दिवायेउ, सबबिधि सुषप्रद बास ३२॥
सुनु षगपति यह कथा पावनी * त्रिबिधि ताप भवभय दावनी
महाराज कर सुभ अभिषेका * सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं * सुष संपति नाना बिधि पावहिं
सुर दुर्लभ सुष करि जगमाहीं * अंतकाल रघुपतिपुर जाहीं
सुनहिं बिमुक्त बिरति अरु बिषई * लहहिं भगति गति संपति नितई
षगपति रामकथा मैं बरनी * स्वमति बिलास त्रासदुषहरनी

बिरति बिबेक भगति दृढकरनी * मोह नदी कहँ सुंदर तरनी
नित नव मंगल कोसलपुरी * हरषित रहहिं लोग सबकुरी
नितिनइ प्रीति रामपदपंकज * सबकेजिन्हहिं नमतसिवमुनिअज
मंगन बहुप्रकार पहिराये * द्विजन्ह दान नानाबिधि पाये
दो० ब्रह्मानन्द मगन कपि, सबके प्रभुपद प्रीति।
जात न जानैं दिवस तिन्ह, गये मास षट बीति ३३॥
बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाहीं * जिमि परद्रोह संत मननाहीं
तब रघुपति सब सषा बोलाये * आइ सबन्हि सादर सिर नाये
परम प्रीति समीप बैठारे * भगत सुषद मृदु बचन उचारे
तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई * मुषपर केहिबिधि करौं बड़ाई
ताते मोहि तुम्ह अतिप्रिअ लागे * ममहित लागि भवनसुष त्यागे
अनुज राज संपति बैदेही * देह गेह परिवार सनेही
सबममप्रिअनहिंतुम्हहिंसमाना * मृषा न कहौं मोर यह बाना
सब के प्रिय सेवक यह नीती * मोरे अधिक दास पर प्रीती
दो० अब गृह जाहु सषा सब, भजेहु मोहि दृढ़ नेम।
सदाँ सर्बगत सर्बहित, जानि करेहु अति प्रेम ३४॥
सुनि प्रभु बचन मगन सब भये * को हम कहां बिसरि तन गये
येकटक रहे जोरिकर आगे * सकहिंनकछुकहिअतिअनुरागे
परम प्रेम तिन्हकर प्रभु देषा * कहा बिबिधि बिधि ज्ञान बिसेषा
प्रभु सन्मुष कछु कहन न पारहिं * पुनि पुनि चरनसरोज निहारहिं
तब प्रभु भूषन बसन मगाये * नाना रंग अनूप सोहाये
सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराये * बसन भरत निज हाँथ बनाये
प्रभु प्रेरित लछिमन पहिराये * लंकापति रघुपति मन भाये

अंगद बैठि रहे नहिं डोला * प्रीति देषि प्रभु ताहि न बोला

दो० जामवंत नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ।
हियधरि राम रूप सब, चले नाइ पद माथ ३५॥
तब अंगद उठि नाइ सिर, सजल नयन करजोरि।
अति बिनीत बोलेउ बचन, मनहुँ प्रेमरस बोरि ३६॥

सुनु सर्बज्ञ कृपा सुषसिंधो * दीन दयाकर आरतबंधो
मरती बेर नाथ मोहि बाली * गयेउ तुम्हारेहिं कोंछे घाली
असरन सरन बिरद संभारी * मोहि जनि तजहु भगत हितहारी
मोरें तुम्ह प्रभु गुरु पितु माता * जाउँ कहाँ तजि पदजलजाता
तुम्हहिं बिचारि कहहु नरनाहा * प्रभु तजि भवन काज मम काहा
बालक ज्ञान बुद्धि बल हीना * राषहु सरन नाथ जन दीना
नीचि टहल गृहकै सब करिहौं * पद पंकज बिलोकि भव तरिहौं
असकहि चरण परेउ प्रभु पाही * अब जनि नाथ कहहु गृहजाही

दो० अंगद बचन बिनीत सुनि, रघुपति करुनासीव।
प्रभु उठाइ उर लायेऊ, सजल नयन राजीव ३७॥
निजउर माला बसन मनि, बालितनय पहिराय।
बिदा कीन्हि भगवान तब, बहु प्रकार समुझाय ३८॥

भरत अनुज सौमित्रि समेता * पठवन चले भक्त कृत चेता
अंगद हृदय प्रेम नहिं थोरा * फिरि फिरि चितव रामकी ओरा
बार बार कर दंड प्रनामा * मन अस रहन कहहिं मोहि रामा
रामबिलोकनि बोलनि चलनी * सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मिलनी
प्रभुरुष देषि बिनय बहु भाषी * चलेउ हृदय पदपंकज राषी
अतिआदर सबकपि पहुँचाये * भाइन्ह सहित भरत पुनि आये

तब सुग्रीव चरन गहि नाना * भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना
दिनदस करि रघुपतिपद सेवा * पुनि तव चरन देषिहौं देवा
पुन्यपुंज तुम्ह पवनकुमारा * सेवहु जाइ कृपा आगारा
असकहि कपि सब चले तुरंता * अंगद कहै सुनहु हनुमंता
दो० कहेहु दंडवत प्रभुसैं, तुम्हहिं कहौं करजोरि।
बार बार रघुनायकहि, सुरति करायेहु मोरि ३९॥
असकहि चलेउ बालिसुत, फिरि आयेउ हनुमंत।
तासु प्रीति प्रभुसन कही, मगन भये भगवंत ४०॥
कुलिसहु चाहि कठोर अति, कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त षगेस रामकर, समुझिपरै कहु काहि ४१॥
पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा * दीन्हे भूषन बसन प्रसादा
जाहु भवन मम सुमिरन करेहू * मन क्रम वचन धर्म अनुसरेहू
तुम्ह मम सषा भरतसम भ्राता * सदाँ रहेहु पुर आवत जाता
बचन सुनत उपजा सुष भारी * परेउ चरन भरि लोचन बारी
चरन नलिन उरधरि गृह आवा * प्रभु प्रभाव परिजनन्हि सुनावा
रघुपति चरित देषि पुरबासी * पुनि पुनि कहहिं धन्य सुषरासी
रामराज बैठे त्रैलोका * हरषित भये गये सब शोका
बयर न कर काहूसन कोई * राम प्रताप बिषमता षोई
दो० बरनाश्रम निज निज धरम, निरत बेद पथ लोग।
चलहिं सदाँ पावहिं सुष, नहिं भयसोक न रोग ४२॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा * रामराज नहिं काहुहि ब्यापा
सब नर करहिं परस्पर प्रीती * चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीती
चारिउ चरन धर्म जगमाहीं * पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं

राम भगतिरति नर अरु नारी * सकल परमगति के अधिकारी
अलप मृत्यु नहिं कौनिउँ पीरा * सब सुंदर सब बिरुज सरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुषी न दीना * नहिं कोउ अबुध न लक्षनहीना
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी * नर अरु नारि चतुर सबगुनी
सब गुनज्ञ पण्डित सब ज्ञानी * सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी
दो० रामराज नभगेस सुनु, सचराचर जगमाहिं।
काल कर्म सुभाव गुन, कृत दुष काहुहि नाहिं ४३॥
भूमि सप्त सागर मेषला * येक भूप रघुपति कोसला
भुवन अनेक रोम प्रति जासू * यह प्रभुता कछु बहुत न तासू
सो महिमा समुझत प्रभु केरी * यह बरनत हीनता घनेरी
सोउ महिमा षगेस जिन्ह जानी * फिरि येहि चरित तिन्हहुँ रतिमानी
सोउ जानेकर फल यह लीला * कहहिं महामुनिबर दमसीला
राम राजकर सुष संपदा * बरनि न सकहिं फनीस सारदा
सब उदार सब पर उपकारी * द्विज सेवक सब नर अरु नारी
एक नारि व्रत रत नर झारी * ते मन बच क्रम पति हितकारी
दो० दंड जतिन्हकर भेद जहँ, नर्त्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहिं सुनिअ अस, रामचंद्र के राज ४४॥
फूलहिं फरहिं सदाँ तरु कानन * रहहिं येक सँग गज पंचानन
षग मृग सहज बयर बिसराई * सबन्हि परस्पर प्रीति बढाई
कूजहिं षग मृग नाना बृंदा * अभय चरहिं बन करहिं अनंदा
सीतल सुरभि पवन बह मंदा * गुंजत अलि ले चलि मकरंदा
लता बिटप मांगे मधु चवहीं * मनभावतो धेनु पय श्रवहीं
सासि संपन्न सदाँ रह धरनी * त्रेता भइ सतजुग की करनी

प्रगटीं गिरिन्ह बिबिधि मनि पानी * जगदातमा भूप जगजानी
सरिता सकल बहहिं बरबारी * सीतल अमल स्वाद सुषकारी
सागर निज मरजादा रहहीं * डारहिं रतन तटन्हि नर लहहीं
सरसिज संकुल सकल तडागा * अतिप्रसन्न दसदिसा बिभागा

दो० बिधु महि पूरि पियूषनि, रबि तप जेतनेहि काज।
मांगे बारिद देहिं जल, रामचंद्र के राज ४५॥

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे * दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे
श्रुतिपथपालक धर्मधुरंधर * गुनातीत अरु भोग पुरंदर
पति अनुकूल सदाँ रहा सीता * सोभाषानि सुसील बिनीता
जानति कृपासिंधु प्रभुताई * सेवति चरनकमल मन लाई
जद्यपि गृह सेवक सेवकिनी * बिपुल सकल सेवा बिधि गुनी
निजकर गृहपरिचरजा करई * रामचंद्र आयसु अनुसरई
जेहि बिधि कृपासिंधु सुष मानइँ * सोइ करश्री सेवाबिधि जानइँ
कौसल्यादि सासु गृह माहीं * सेवइ सबहि मान मद नाहीं
उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता * जगदंबा संतत मनिंदिता

दो० जासु कृपाकटाक्ष सुर, चाहत चितवन सोइ।
राम पदारबिंद रति, करति सुभावहि षोइ ४६॥

सेवहिं सानकूल सब भाई * रामचरनरति अति अधिकाई
प्रभुमुषकमल बिलोकत रहहीं * कबहुँ कृपाल हमहिं कछु कहहीं
राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती * नानाभाँति सिषावहिं नीती
हरषित रहहिं नगरके लोगा * करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा
अहनिसि बिधिहि मनावत रहहीं * श्रीरघुबीर चरनरति चहहीं
दुइ सुत सुंदर सीता जाये * लव कुस बेद पुरानन्ह गाये

दोउ बिजई बिनई गुनमंदिर * हरिप्रतिबिंब मनहुँ अतिसुंदर
दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे * भये रूप गुन सील घनेरे

दो० ज्ञान गिरा गोतीत अज, माया मन गुन पार।
सोइ सच्चिदानंद घन, कर नर चरित उदार ४७॥

प्रातकाल सरजू करि मज्जन * बैठहिं सभा संत द्विज सज्जन
बेद पुरान बसिष्ट बषानहिं * सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं
अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं * देषि सकल जननी सुष भरहीं
भरत सत्रुहन दोनौ भाई * सहित पवनसुत उपबन जाई
बूझहिं बैठि रामगुन गाहा * कह हनुमान सुमति अवगाहा
सुनतबिमलगुनअतिसुषपावहिं * बहुरिबहुरिकरिबिनयकहावहिं
सबके गृह गृह होहिं पुराना * रामचरित पावन बिधि नाना
नर अरु नारि रामगुन गानहिं * करहिंदिवसनिसिजातनजानहिं

दो० अवधपुरी बासीन्ह कर, सुष संपदा समाज।
सहससेप नहिं कहिसकहिं, जहँनृपराम बिराज ४८॥

नारदादि सनकादि मुनीसा * दरसन लागि कोसलाधीसा
दिनप्रतिसकलअजोध्याआवहिं * देषि नगर बिरागु बिसरावहिं
जातरूप मनि रचित अटारी * नाना रंग रुचिर गच ढारी
पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर * रचे कँगूरा रंग रंग बर
नवग्रह निकर अनीक बनाई * जनु घेरी अमरावति आई
महि बहुरंग रचित गचकाँचा * जो बिलोकि मुनिवरमननाँचा
धवल धाम ऊपर नभ चुंबत * कलसमनहुँरबिससिदुतिनिंदत
बहुमनिराचित झरोषा भ्राजहिं * गृहगृहप्रति मनिदीपबिराजहिं

छंद

मनिदीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी बिद्रुम रची।

मनिषंभ भीति विरंचि विरची कनकमनि मरकत पची॥
सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे।
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि पचे २३॥
दो० चारु चित्रसाला गृह, गृह प्रति लिपे बनाइ।
रामचरित जे निरत मुनि, ते मन लेहिं चोराइ ४९॥
सुमन बाटिका सबहि लगाई * बिबिधि भाँति करि जतन बनाई
लता ललित बहु भाँति सोहाई * फूलहिं सदा बसंत कि नाई
गुंजत मधुकर मुषर मनोहर * मारुत त्रिबिधि सदा बह सुंदर
नाना षग बालकन्हि जिआये * बोलत मधुर उडात सोहाये
मोर हंस सारस पारावत * भवननि पर सोभा अतिपावत
जहँ तहँ देषहिं निज परिछाहीं * बहुबिधि कूजहिं नृत्य कराहीं
सुक सारिका पढावहिं बालक * कहहु राम रघुपति जनपालक
राजदुआर सकल बिधि चारू * बीथी चौहट रुचिर बजारू

छंद

बाजारु रुचिर न बनै बरनत वस्तु बिनु गथ पाइये।
जहँ भूप रमानिवास तहँकी संपदा किमि गाइये॥
बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते।
सब सुषी सब सुचरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे २४॥
दो० उत्तर दिसि सरजू बह, निर्मल जल गंभीर।
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं तीर ५०॥
दूरि फराक रुचिर सो घाटा * जहँ जल पिअहिं बाजिगज ठाटा
पनिघट परम मनोहर नाना * तहां न पुरुष करहिं अस्नाना
राजघाट सब बिधि सुंदर बर * मज्जहिं तहां बरन चारिउ नर

तीर तीर देवन्ह के मंदिर * चहुँ दिसि तिन्हके उपबन सुंदर
कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी * बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी
तीर तीर तुलसिका सोहाई * बृंद बृंद बहु मुनिन्ह लगाई
पुरसोभा कछु बरनि न जाई * बाहेर नगर परम रुचिराई
देषत पुरी अषिल अघ भागा * बन उपवन बापिका तडागा

छंद

बापी तडाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं।
सोपान सुंदर नीर निरमल देषि सुर मुनि मोहहीं॥
बहुरंग कंज अनेक षग कूजहिं मधुप गुंजारहीं।
आरामरम्य पिकादि षगरव जनु पथिक हंकारहीं २५॥

दो॰ रमानाथ जहँ राजा, सो पुर बरनि कि जाइ।
अनिमादिक सुष संपदा, रहीं अवध सब छाइ ५१॥

जहँतहँनररघुपति गुन गावहिं * बैठि परस्पर इहै सिषावहिं
भजहु प्रनतप्रतिपालक रामहिं * सोभा सील रूप गुन धामहिं
जलजबिलोचनस्यामलगातहि * पलक नयन इव सेवकत्रातहि
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि * संत कंज बन रबि रनधीरहि
कालकराल ब्याल षगराजहि * नमत राम अकाम ममताजहि
लोभमोह मृगजूथ किरातहि * मनसिजकरिहरिजनसुषदातहि
संसयसोक निबिडतमभानुहिं * दनुज गहनबनदहन कृसानुहिं
जनकसुता समेत रघुबीरहि * कस न भजहु भंजन भवभीरहि
बहुबासना मसक हिमरासिहि * सदाँ येकरस अज अबिनासिहि
मुनिरंजन भंजन महिभारहि * तुलसिदासके प्रभुहि उदारहि

दो॰ येहि बिधि नगर नारि नर, करहिं रामगुन गान।
सानुकूल सबपर रहहिं, संतत कृपानिधान ५२॥

जबतें राम प्रताप षगेसा * उदित भयेउ अति प्रवल दिनेसा
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका * वहुतेन्ह सुष बहुतन मनसोका
जिन्हहिं शोक ते कहौं बषानी * प्रथम अविद्या निसा नसानी
अघ उलूक जहँ तहां लुकाने * काम क्रोध कैरव सकुचाने
बिबिधि कर्म गुन काल सुभाऊ * ये चकोर सुष लहहिं न काऊ
मत्सर मान मोह मद चोरा * इन्ह कर हुनर न कवनिउँ ओरा
धरम तडाग ज्ञान बिज्ञाना * ये पंकज विकसे विधि नाना
सुष संतोष बिराग बिवेका * विगत सोक ये कोक अनेका

दो॰ यह प्रताप रवि जाके, उर जब करै प्रकास।
पछिले बाढहिं प्रथम जे, कहे ते पावहिं नास ५३॥

भ्रातन्ह सहित राम येक बारा * संग परम प्रिय पवनकुमारा
सुंदर उपबन देखन गये * सब तरु कुसुमित पल्लव नये
जानि समय सनकादिक आये * तेज पुंज गुन सील सोहाये
ब्रह्मानंद सदा लयलीना * देषत बालक बहु कालीना
रूप धरे जनु चारिउ बेदा * समदरसी मुनि बिगत बिभेदा
आसा बसन ब्यसन यह तिन्हहीं * रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं
तहाँ रहे सनकादि भवानी * जहँ घटसंभव मुनिबर ज्ञानी
रामकथा मुनिबर बहु बरनी * ज्ञानजोनि पावक जिमि अरनी

दो॰ देषि राम मुनि आवत, हरषि दंडवत कीन्ह।
स्वागत पूंछि पीतपट, प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ५४॥

कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई * सहित पवनसुत सुष अधिकाई
मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी * भये मगन मन सके न रोंकी
स्यामल गात सरोरुह लोचन * सुंदरता मंदिर भवमोचन

येकटक रहे निमेष न लावहिं * प्रभु करजोरें सीस नवावहिं
तिन्हकै दसा देषि रघुबीरा * श्रवत नयन जल पुलक सरीरा
करगहि प्रभु मुनिबर बैठारे * परम मनोहर बचन उचारे
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा * तुम्हरे दरस जाहि अघषीसा
बडे भाग पाइअ सतसंगा * बिनहिं प्रयास होइ भवभंगा

दो० संत संग अपबर्ग कर, कामी भवकर पंथ।
कहहिं संत कबि कोबिद, श्रुति पुरान सदग्रंथ ५५॥

सुनिप्रभुबचनहरषि मुनिचारी * पुलकिततनअस्तुति अनुसारी
जय भगवंत अनंत अनामय * अनघ अनेक येक करुनामय
जय निर्गुन जय जय गुनसागर * सुषमंदिर सुंदर अति नागर
जय इंदिरारमन जय भूधर * अति अनुपम अनादिसोभाकर
ज्ञान निधान अमान मानप्रद * पावन सुजस पुरान बेद बद
तज्ञ कृतज्ञ अज्ञता भंजन * नाम अनेक अनाम निरंजन
सर्ब सर्बगत सर्ब उरालय * बससि सदाँ हमकहँ परिपालय
द्वंद बिपति भवफंद बिभंजय * हृदि बसि राम काममद गंजय

दो० परमानंद कृपायतन, मन परिपूरन काम।
प्रेम भगति अनपायनी, देहु हमहिं श्रीराम ५६॥

देहुभगति रघुपतिअतिपावनि * त्रिबिधि ताप भवदाप नसावनि
प्रनतपाल सुरधेनु कलपतरु * होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु
भवबारिधि कुंभज रघुनायक * सेवत सुलभ सकल सुषदायक
मनसंभव दारुन दुष दारय * दीनबंधु समता बिस्तारय
आस त्रास इरषादि निवारक * बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक
भूपमौलिमनि मंडन धरनी * देहि भगति संसृति सरि तरनी

मुनि मन मानसहंस निरंतर * चरनकमल बंदित अज संकर
रघुकुलकेतु सेतु श्रुति रच्छक * काल कर्म सुभाव गुन भच्छक
तारन तरन हरन सब दूषन * तुलसिदास प्रभु त्रिभुवनभूषन
दो० बार बार अस्तुति करि, प्रेम सहित सिर नाइ।
ब्रह्म भवन सनकादि गे, अति अभीष्ट बर पाइ ५७॥
सनकादिक बिधिलोक सिधाये * भ्रातन्ह राम चरन सिर नाये
पूंछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं * चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं
सुनी चहैं प्रभुमुष कै बानी * जो सुनि होइ सकल भ्रमहानी
अंतरजामी प्रभु सब जाना * बूझत कहहु काह हनुमाना
जोरिपानि कह तब हनुमंता * सुनहुँ दीनदयाल भगवंता
नाथ भरत कछु पूंछन चहहीं * प्रश्नकरत मन सकुचत अहहीं
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ * भरतहि मोहि कछु अंतरकाऊ
सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरना * सुनहु नाथ प्रनतारति हरना
दो० नाथ न मोहि संदेह कछु, सपनेहुँ सोक न मोह।
केवल कृपा तुम्हारिहि, कृपानंद संदोह ५८॥
करौं कृपानिधि येक ढिठाई * मै सेवक तुम्ह जन सुषदाई
संतन्ह कै महिमा रघुराई * बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई
श्रीमुष तुम्ह पुनि कीन्हि बडाई * तिन्हपर प्रभुहि प्रीति अधिकाई
सुनाचहौं प्रभु तिन्हकर लक्षण * कृपासिंधु गुनज्ञान बिचक्षण
संत असंत भेद बिलगाई * प्रनतपाल मोहिं कहहु बुझाई
संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता * अगिनित श्रुति पुरान बिष्याता
संत असंतन्हकै असि करनी * जिमि कुठार चंदन आचरनी
काटै परसु मलय सुनु भाई * निज गुन देइ सुगंध बसाई

दो० ताते सुर सीसन्ह चढ़त, जगबल्लभ श्रीषंड।
अनल दाहि पीटत घनहि, परसुबदन यह दंड ५९॥

बिषय अलंपट सीलगुनाकर * परदुष दुष सुष सुष देषे पर
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी * लोभामरष हरष भय त्यागी
कोमलचित दीनन्ह पर दाया * मन बच क्रम मम भगति अमाया
सबहि मानप्रद आप अमानी * भरत प्रानसम मम ते प्रानी
बिगतकाम मम नामपरायन * सांति बिराति बिनती मुदितायन
सीतलता सरलता मयत्री * द्विजपद प्रीति धर्म जनयत्री
ये सब लच्छन बसहिं जासु उर * जानेहु तात संत संतत फुर
समदम नियम नीति नहिं डोलहिं * परुष बचन कबहूं नहिं बोलहिं

दो० निंदा अस्तुति उभय सम, ममता मम पदकंज।
ते सज्जन मम प्रान प्रिअ, गुनमंदिर सुषपुंज ६०॥

सुनहुँ असंतन्ह केर सुभाऊ * भूलेहु संगति करिअ न काऊ
तिन्हकर संग सदा दुषदाई * जिमि कपिलहि घालै हरहाई
षलन्ह हृदय अति तापबिसेषी * जरहिं सदाँ परसंपति देषी
जहँ कहुँ निंदा सुनहिं पराई * हरषहिं मनहुँ परी निधि पाई
काम क्रोध मद लोभ परायन * निर्दय कपटी कुटिल मलायन
बयर अकारन सब काहू सों * जो कर हित अनहित ताहू सों
झूँठै लेना झूँठै देना * झूँठै भोजन झूँठ चबेना
बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा * षाहिं महा अहि हृदय कठोरा

दो० परद्रोही परदार रत, परधन पर अपबाद।
ते नर पाँवर पापमय, देह धरे मनुजाद ६१॥

लोभै ओढन लोभै डासन * सिस्नोदर पर जमपुर त्रासन

काहूकी जौं सुनहिं बडाई * स्वाँस लेहिं जनु जूडी आई
जब काहूके देषहिं बिपती * सुषी भये मानहुँ जग नृपती
स्वारथ रत परिवार बिरोधी * लंपट काम लोभ अति क्रोधी
मातु पिता गुरु बिप्र न मानहिं * आपु गये अरु घालहिं आनहिं
करहिं मोहबस द्रोह परावा * संतसंग हरिकथा न भावा
अवगुनसिंधु मंदमति कामी * बेद बिदूषक पर धन स्वामी
बिप्रद्रोह पर द्रोह बिसेषा * दंभ कपट जिअ धरे सुबेषा

दो० ऐसे अधम मनुज षल, कृतजुग त्रेता नाहिं।
द्वापर कछुक बृंद बहु, होइहहिं कलिजुग माहिं ६२ ॥

परहित सरिस धर्म नहिं भाई * पर पीडा सम नहिं अधमाई
निरनय सकल पुरान बेदकर * कहेउँ तात जानहिं कोबिदनर
नर सरीर धरि जे परपीरा * करहिं ते सहहिं महा भवभीरा
करहिं मोहबस नर अघ नाना * स्वारथ रत परलोक नसाना
कालरूप तिन कहँ मैं भ्राता * सुभ अरु असुभ कर्म फलदाता
अस बिचार जे परम सयाने * भजहिं मोहिं संसृति दुष जाने
त्यागहिं कर्म सुभासुभदायक * भजहिं मोहि सुर नर मुनिनायक
संत असंतन्ह के गुन भाषे * ते न परहिं भव जिन लषि राषे

दो० सुनहु तात मायाकृत, गुन अरु दोष अनेक।
गुन यह उभय न देषिअहिं, देषिअ सो अबिबेक ६३ ॥

श्रीमुष बचन सुनत सब भाई * हरषे प्रेम न हृदय समाई
करहिं बिनय अति बारहिंबारा * हनूमान हिअ हरष अपारा
पुनि रघुपति निज मंदिर गये * येहिबिधि चरित करत नित नये
बार बार नारद मुनि आवहिं * चरित पुनीत रामके गावहिं

नितनव चरित देषि मुनि जाहीं * ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं
सुनि बिरंचि अतिसय सुषमानहिं * पुनिपुनि तातकरहु गुनगानहिं
सनकादिक नारदहि सराहहिं * जद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं
सुनि गुनगान समाधि बिसारी * सादर सुनहिं परम हितकारी
दो० जीवनमुक्त ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजि ध्यान।
जेहरिकथा न करहिं रति, तिन्हके हिय पाषान ६४॥
येकबार रघुनाथ बोलाये * गुरु द्विज पुरबासी सब आये
बैठे गुरु मुनि अरु द्विज सज्जन * बोले बचन भगत भव भंजन
सुनहु सकल पुरजन मम बानी * कहौं न कछु ममता उर आनी
नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई * सुनहु करहु जो तुम्हहिं सोहाई
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई * मम अनुसासन मानै जोई
जौं अनीति कछु भाषौं भाई * तौ मोहिं बरजेहु भय बिसराई
बडे भाग मानुष तन पावा * सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्ह गावा
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा * पाइ न जेहिं परलोक सवारा
दो० सो परत्र दुष पावै, सिर धुनि धुनि पछिताइ।
कालहि कर्महि इस्वरहि, मिथ्या दोस लगाइ ६५॥
येहि तनु का फल बिषय न भाई * स्वर्गौ स्वल्प अंत दुषदाई
नर तनु पाय बिषय मन देहीं * पलटि सुधा ते सठ बिष लेहीं
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई * गुंजा ग्रहै परसमनि षोई
आकर चारि लक्ष चौरासी * जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी
फिरत सदा माया कर प्रेरा * काल कर्म सुभाव गुन घेरा
कबहूं करि करुना नर देही * देत ईस बिनु हेतु सनेही
नरतन भव बारिधि कहँ बेरो * सन्मुष मरुत अनुग्रह मेरो

करनधार सदगुरु दिढ नावा * दुर्लभ साज सुलभ करि पावा

दो० जो न तरै भवसागर, नर समाज अस पाइ।
सो कृतनिंदक मंदमति, आत्माहन गति जाइ ६६॥

जो परलोक इहां सुष चहहू * सुनि मम बचन हृदय दृढ गहहू
सुलभ सुषद मारग यह भाई * भक्ति मोरि पुरान श्रुति गाई
ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका * साधन कठिन न मन कहँ टेका
करत कष्ट बहु पावै कोऊ * भक्तिहीनमोहिं प्रिअ नहिं सोऊ
भक्ति सुतंत्र सकल सुषषानी * विनु सतसंग न पावहिं प्रानी
पुन्यपुंज बिनु मिलहिं न संता * सतसंगति संसृति कर अंता
पुन्य येक जगमहँ नहिं दूजा * मन क्रम बचन विप्रपद पूजा
सानुकूल तेहिपर मुनि देवा * जो तजि कपट करै द्विजसेवा

दो० औरौ येक गुप्त मत, सबहिं कहौं कर जोरि।
संकरभजन बिना नर, भगति न पावै मोरि ६७॥

कहहु भगतिपथ कवन प्रयासा * जोग न मष जप तप उपवासा
सरल सुभाव न मन कुटिलाई * जथा लाभ संतोष सदाई
मोर दास कहाइ नर आसा * करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा
बहुत कहौं का कथा बढाई * येहि आचरन बस्य मै भाई
बैर न बिग्रह आस न त्रासा * सुषमय ताहि सदाँ सब आसा
अनारंभ अनिकेत अमानी * अनघ अरोष दच्छविज्ञानी
प्रीति सदाँ सज्जन संसर्गा * तृन सम बिषय स्वर्ग अपवर्गा
भगति पक्ष हठ नहिं सठताई * दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई

दो० मम गुन ग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह।

१— आत्मा कलेवरे यन्त्रे स्वभावे परमात्मनि॥

ताकर सुष सोइ जानै, परानंद संदोह ६८ ॥

सुनत सुधा सम बचन रामके * गहे सबनि पद कृपाधामके
जननि जनक गुरु बंधु हमारे * कृपानिधान प्रानते प्यारे
तन धन धाम राम हितकारी * सब बिधि तुम्ह प्रनतारतिहारी
अस सिष तुम्ह बिनु देइ न कोऊ * मातु पिता स्वारथ रत वोऊ
हेतु रहित जुग जुग हितकारी * तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी
स्वारथ मीत सकल जगमाहीं * सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं
सबके बचन प्रेम रस साने * सुनि रघुनाथ हृदय हरषाने
निज निज गृह गये आयसु पाई * बरनत प्रभु बतकही सोहाई

दो० उमा अवधबासी नर, नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्मसच्चिदानंद घन, रघुनायक जहँ भूप ६९ ॥

येक बार बसिष्ट मुनि आये * जहां राम सुषधाम सोहाये
अति आदर रघुनायक कीन्हा * पद पषारि पादोदक लीन्हा
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी * कृपासिंधु बिनती कछु मोरी
देषि देषि आचरन तुम्हारा * होत मोह मम हृदय अपारा
महिमा अमिति बेद नहिं जाना * मै केहि भाँति कहौं भगवाना
उपरोहित्य कर्म अति मंदा * बेद पुरान स्मृति कर निंदा
जब न लेउँ मै तब बिधि मोही * कहा लाभ आगे सुत तोही
परमातमा ब्रह्म नर रूपा * होइहि रघुकुलभूषन भूपा

दो० तब मै हृदय बिचारा, जोग जज्ञ ब्रत दान।
जाकहँ करिय सो पैहौं, धर्म न येहिसम आन ७० ॥

जप तप नियम जोग निज धर्मा * श्रुतिसंभव नाना सुभ कर्मा
ज्ञान दया दम तीरथ मज्जन * जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन

आगम निगम पुरान अनेका * पढे सुनेकर फल प्रभु येका
तव पद पंकज प्रीति निरंतर * सब साधन कर फल यह सुंदर
छूटै मल कि मलहि के धोये * घृताकि पाव कोइ बारि बिलोये
प्रेमभगति जल बिनु रघुराई * अभिअंतर मल कबहुँ न जाई
सोइ सर्बज्ञ तज्ञ सोइ पंडित * सोइ गुनगृह बिज्ञान अषंडित
दच्छ सकल लच्छणजुत सोई * जाके पदसरोज रति होई

दो० नाथ येक बर मांगों, राम कृपा करि देहु।
जन्म जन्म प्रभुपद कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ७१॥

अस कहि मुनि बसिष्ट गृह आये * कृपासिंधु के मन अति भाये
हनूमान भरतादिक भ्राता * संग लिये सेवक सुषदाता
पुनि कृपालु पुर बाहेर गये * गज रथ तुरग मगावत भये
देषि कृपा करि सकल सराहे * दियेउचितजिन्हजिन्हजेइचाहे
हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई * गये जहां सीतल अँमँराई
भरत दीन्ह निज बसन डसाई * बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई
मारुतसुत तब मारुत करई * पुलकबपुष लोचन जल भरई
हनूमान सम नहिं बड भागी * नहिं कोउ रामचरन अनुरागी
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई * बार बार प्रभु निज मुष गाई

दो० तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल बीन।
गावन लगे राम कल, कीरति सदाँ नबीन ७२॥

मामवलोकय पंकज लोचन * कृपा बिलोकनि सोचबिमोचन
नील तामरस स्याम कामअरि * हृदय कंज मकरंद मधुप हरि
जातुधान बरूथ बलभंजन * मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक * असरन सरन दीन जन गाहक

भुजबल बिपुल भारमहिषंडित * षरदूषन बिराध बध पंडित
रावनारि सुषरूप भूपबर * जय दसरथकुलकुमुद सुधाकर
सुजसपुरान बिदितनिगमागम * गावत सुर मुनि संतसमागम
कारुनीक ब्यलीक मदषंडन * सब बिधि कुसल कोसलामंडन
कलिमल मथननाममममताहन * तुलसिदासप्रभु पाहिप्रनतजन
दो० प्रेमसहित मुनि नारद, बरनि राम गुन ग्राम।
सोभासिंधु हृदय धरि, गये जहां बिधिधाम ७३॥
गिरिजासुनहु बिसद यहकथा * मै सब कही मोरि मति जथा
रामचरित सतकोटि अपारा * श्रुति सारदा न बरनै पारा
राम अनंत अनंत गुनानी * जन्म कर्म अनन्त नामानी
जलसीकर महिरज गनिजाहीं * रघुपतिचरित न बरनि सिराहीं
बिमलकथा यह हरिपददायनी * भगतिहोइ सुनि अतिअनपायनी
उमा कहेउँ सब कथा सोहाई * जो भसुंडि षगपतिहि सुनाई
कछुक रामगुन कहेउँ बषानी * अब का कहौं सो कहहु भवानी
सुनि सुभ कथा उमा हरषानी * बोली अति बिनीत मृदु बानी
धन्य धन्य मै धन्य पुरारी * सुनेउँ रामगुन भवभयहारी
दो० तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह।
जानेउँ राम प्रताप प्रभु, चिदानंद संदोह ७४॥
नाथ तवाननसासि श्रवत, कथा सुधा रघुबीर।
श्रवनपुटन्हि मन पानकरि, नहिंअघातमतिधीर ७५॥
रामचरित जे सुनत अघाहीं * रस बिसेष जाना तिन नाहीं
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ * हरि गुन सुनहिं निरंतर तेऊ
भवसागर चह पार जो पावा * राम कथा ताकहँ दृढ नावा

बिषइन्हकहँपुनिहरिगुनग्रामा * श्रवनसुषद अरु मन अभिरामा
श्रवनवंत अस को जगमाहीं * जाहि न रघुपतिचरित सोहाहीं
ते जड जीव निजातमघाती * जिन्हहिं न रघुपतिकथा सोहाती
हरिचरित्रमानस तुम्ह गावा * सुनि मैं नाथ अमिति सुष पावा
तुम्ह जो कही यह कथा सोहाई * कागभसुंडि गरुड प्रति गाई

दो॰ बिरति ज्ञान बिज्ञान दिढ, रामचरन अतिनेहु।
बायसतन रघुपतिभगति, मोहि परम संदेहु ७६॥

नरसहस्र महँ सुनहु पुरारी * कोउ येक होइ धर्मब्रतधारी
धर्मसील कोटिक महँ कोई * बिषय बिमुष बिरागरत होई
कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई * सम्यकज्ञान सकृत कोउ लहई
ज्ञानवंत कोटिक महँ कोऊ * जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ
तिन सहस्र महँ सब सुषषानी * दुर्लभ ब्रह्म लीन बिज्ञानी
धर्मसील बिरक्त अरु ज्ञानी * जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी
सब ते सो दुर्लभ सुरराया * राम भगति रत गत मद माया
सो हरिभगति काग किमि पाई * बिस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई

दो॰ राम परायन ज्ञानरत, गुनागार मतिधीर।
नाथ कहहु केहि कारन, पायेउ कागसरीर ७७॥

यह प्रभु चरित पबित्र सोहावा * कहहु कृपाल काग कहँ पावा
तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी * कहहु मोहि अति कौतुक भारी
गरुड महाज्ञानी गुनरासी * हरिसेवक अति निकट निवासी
तेहिं केहि हेतु कागसन जाई * सुनी कथा मुनिनिकर बिहाई
कहहु कवन बिधि भा संबादा * दोउ हरिभगत काग उरगादा
गौरिगिरा सुनि सरल सोहाई * बोले सिव सादर सुष पाई

धन्य सती पावनि मति तोरी * रघुपति चरन प्रीति नहिं थोरी
सुनहु परम पुनीत इतिहासा * जो सुनि सकललोक भ्रमनासा
उपजै रामचरन बिस्वासा * भवनिधितर नर बिनहिं प्रयासा

दो० ऐसिअ प्रस्न बिहंगपति, कीन्हि कागसन जाइ।
सो सब सादर कहिहौं, सुनेहु उमा मनलाइ ७८॥

मै जिमि कथा सुनी भवमोचनि * सो प्रसंग सुनु सुमुषि सुलोचनि
प्रथम दच्छगृह तव अवतारा * सती नाम तब रहा तुम्हारा
दच्छ जज्ञ तव भा अपमाना * तुम्ह अतिक्रोध तजे तब प्राना
मम अनुचरन्ह कीन्ह मषभंगा * जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा
तब अतिसोच भयेउ मन मोरे * दुषी भयेउँ बियोग प्रिय तोरे
सुंदर बन गिरि सरित तडागा * कौतुक देषत फिरौं बिरागा
गिरिसुमेरु उत्तर दिसि दूरी * नील सैल येक सुंदर भूरी
तासु कनकमय सिषर सोहये * चारि चारु मोरे मन भाये
तिन्हपर एकएक बिटप बिसाला * बट पीपर पाकरी रसाला
सैलोपरि सर सुंदर सोहा * मनि सोपान देषि मन मोहा

दो० सीतल अमल मधुरबन, जलज बिपुल बहुरंग।
कूजत कलरव हंसगन, गुंजत मंजुल भृंग ७९॥

तेहि गिरि रुचिर बसै षग सोई * तासु नास कल्पांत न होई
मायाकृत गुन दोष अनेका * मोह मनोज आदि अबिबेका
रहे ब्यापि समस्त जगमाहीं * तेहिगिरिनिकटकबहुँनहिंजाहीं
तहँ बसि हरिहि भजै जिमि कागा * सो सुनु उमा सहित अनुरागा
पीपर तरु तर ध्यान जो धरई * जाप जज्ञ पाकरि तर करई
आँब छाहँ कर मानस पूजा * तजि हरिभजन काज नहिं दूजा

बरतर कह हरिकथा प्रसंगा ✻ आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा
रामचरित बिचित्र बिधिनाना ✻ प्रेम सहित कर सादर गाना
सुनहिंसकलमतिबिमलमराला ✻ बसहिं निरंतर जेहि तेहि ताला
तब मै जाइ सो कौतुक देषा ✻ उर उपजा आनंद बिसेषा

दो॰ तब कछुकाल मरालतन, धरि तहँ कीन्ह निवास।
सादर सुनि रघुपतिगुन, पुनि आयेउँ कैलास ८०॥

गिरिजा कहेउँ सो सबइतिहाँसा ✻ मै जेहि समय गयेउँ षगपासा
अब सो कथा सुनहुँ जेहि हेतू ✻ गयेउ कागपहिं षगकुलकेतू
जब रघुनाथ कीन्ह रनक्रीडा ✻ समुझत चरित होत मोहिं ब्रीडा
इंद्रजीत कर आपु बँधायो ✻ तब नारदमुनि गरुड पठायो
बंधन काटि गयो उरगादा ✻ उपजा हृदय प्रचंड बिषादा
प्रभुबंधन समुझत बहुभाँती ✻ करत बिचार उरग आराती
ब्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा ✻ माया मोह पार परमीसा
सो अवतार सुनेउँ जगमाहीं ✻ देषेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं

दो॰ भवबंधन ते छूटहीं, नर जपि जाकर नाम।
षर्ब निसाचर बाँधेउ, नागपास सोइ राम ८१॥

नानाभाँति मनहिं समुझावा ✻ प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रमछावा
षेद षिन्न मन तर्क बढाई ✻ भयेउ मोहबस तुम्हरिहि नाई
ब्याकुल गयेउ देवरिषि पाहीं ✻ कहेसि जो संसयनिजमनमाहीं
सुनि नारदहि लागि अतिदाया ✻ सुनु षग प्रबल रामकै माया
जो ज्ञानिनकर चित अपहरई ✻ बरिआई बिमोह मन करई
जेहिं बहु बार नचावा मोही ✻ सोइ ब्यापी बिहंगपति तोही
महा मोह उपजा उर तोरे ✻ मिटहि न बेगि कहे षग मोरे

चतुरानन पहिं जाहु षगेसा * सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा

दो० अस कहि चले देव रिषि, करत राम गुन गान।
हरिमाया बल बरनत, पुनिपुनि परमसुजान८२॥

तब षगपति बिरंचि पहिं गयेऊ * निज संदेह सुनावत भयेऊ
सुनि बिरंचि रामहिं सिर नावा * समुझि प्रताप प्रेम अति छावा
मन महँ करइ बिचार बिधाता * मायाबस कबि कोबिद ज्ञाता
हरि मायाकर अमिति प्रभावा * बिपुलबार जेहिं मोहि नचावा
अगजगमयजग ममउपराजा * नहिं आचरज मोह षगराजा
तब बोले बिधि गिरा सोहाई * जानु महेस राम प्रभुताई
बैनतेय संकर पहिं जाहू * तात अनत पूछहु जनि काहू
तहँ होइहि तव संसय हानी * चलेउ बिहंग सुनत बिधि बानी

दो० परमातुर बिहंगपति, आयेउ तब मो पास।
जात रहेउँ कुबेर गृह, उमा रहिहु कैलास ८३॥

तेहि मम पद सादर सिर नावा * पुनि आपन संदेह सुनावा
सुनि ताकरि बिनती मृदुबानी * प्रेम सहित मैं कहेउँ भवानी
मिलेउ गरुड मारग महँ मोहीं * कवनि भाँति समुझावौं तोहीं
तबहिं होय सब संसय भंगा * जब बहुकाल करिअ सतसंगा
सुनिअ तहां हरिकथा सोहाई * नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई
जेहि महँ आदि मध्य अवसाना * प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना
नित हरिकथा होति जहँ भाई * पठवौं तहाँ सुनहु तुम्ह जाई
जाइहि सुनत सकल संदेहा * रामचरन होइहि अति नेहा

दो० बिनु सतसंग न हरिकथा, तेहि बिनु मोह न भाग।

१--वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा। आदौ मध्ये तथा चान्ते हरिः सर्वत्र गीयते॥

मोह गये बिनु रामपद, होइ न दृढ़ अनुराग ८४॥
मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा * किये जोग जप ज्ञान बिरागा
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला * तहँ रह कागभसुंडि सुसीला
राम भगति पथ परम प्रबीना * ज्ञानी गुनगृह बहु कालीना
रामकथा सो कहइ निरंतर * सादर सुनहिं बिबिधि बिहंगवर
जाइ सुनहु तहँ हरिगुन भूरी * होइहि मोह जनित दुख दूरी
मै जब तेहि सब कहा बुझाई * चलेउ हरषि ममपद सिर नाई
ताते उमा न मैं समुझावा * रघुपति कृपा मरम मैं पावा
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना * सो षोवैं वह कृपानिधाना
कछु तेहिते पुनि मै नहिं राषा * समुझै षग षगही कै भाषा
प्रभुमाया बलवंत भवानी * जाहि न मोह कवन असज्ञानी

दो० ज्ञानी भगत सिरोमनि, त्रिभुवन पतिकर जान।
ताहि मोह माया नर, पावर करहिं गुमान ८५॥

मासपारायण दिन ॥ २८ ॥

सिव बिरंचि कहँ मोहै, को है बपुरा आन।
असजियजानिभजहिंमुनि, मायापतिभगवान८६॥
गयेउ गरुड जहँ बसै भसुंडी * मतिअकुंठ हरिभगति अषंडी
देषि सैल प्रसन्न मन भयेऊ * माया मोह सोच सब गयेऊ
करि तडाग मज्जन जलपाना * बटतर गयेउ हृदय हरषाना
बृद्ध बृद्ध बिहग तहँ आये * सुनै राम के चरित सुहाये
कथा अरंभ करइ सोइ चाहा * तेही समय गयेउ षगनाहा
आवत देषि सकल षगराजा * हरषेउ वायस सहित समाजा
अति आदर षगपतिकर कीन्हा * स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा

करि पूजा समेति अनुरागा * मधुर बचन तब बोलेउ कागा
दो॰ नाथ कृतारथ भयेउँ मैं, तव दरसन षगराज।
आयसु देउ सो करौं अब, प्रभु आयेहु केहि काज ८७॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन षगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुष कीन्ह महेस ८८॥
सुनहुँ तात जेहि कारन आयेउँ * सो सब भयेउ दरस तव पायेउँ
देषि परम पावन तव आस्रम * गयेउ मोह संसय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अति पावनि * सदा सुषद दुषपुंज नसावनि
सादर तात सुनावहु मोही * बार बार बिनवौं प्रभु तोही
सुनत गरुड के गिरा बिनीता * सरल सप्रेम सुषद सुपुनीता
भयेउ तासु मन परम उछाहा * लाग कहइ रघुपति गुन गाहा
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी * रामचरित सर कहेसि बषानी
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई * तब सिसु चरित कहेसि मन लाई
दो॰ बालचरित कहि बिबिधि बिधि, मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिबाह ८९॥
बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा * पुनि नृप बचन राज रस भंगा
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा * कहेसि राम लछिमन संवादा
बिपिन गवन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीकि प्रभु मिलन बषाना * चित्रकूट जिमि बसे भगवाना
सचिवागवन नगर नृप मरना * भरतागवन प्रेम बहु बरना
करि नृप क्रिया संग पुरबासी * भरत गये जहँ प्रभु सुषरासी
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये * लै पादुका अवधपुर आये

भरत रहनि सुरपतिसुत करनी * प्रभु अरु अत्रिभेट पुनि बरनी

दो० कहि बिराधबध जेहि बिधि, देहँ तजी सरभंग।
बरन सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभुअगस्तिसतसंग ६०॥

कहि दंडक बन पावनताई * गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई
पुनि प्रभु पंचबटी कृतबासा * भंजी सकल मुनिन्हकी त्रासा
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा * सूपनषा जिमि कीन्हि कुरूपा
षरदूषन बध बहुरि बषाना * जिमि सब मरमु दसानन जाना
दसकंधर मारीच बतकही * जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही
पुनि माया सीताकर हरना * श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना
पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही * बधिकबंध सबरिहि गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा * जेहि बिधि गये सरोवरतीरा

दो० प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रानकर भंग ६१॥
कपिहि तिलककरि प्रभुकृत, सैल प्रबर्षन बास।
बरनत बरषा सरद अरु, रामरोष कपित्रास ६२॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये * सीता षोज सकल दिसि धाये
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भांती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा * नाघत भयेउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा * पुनि सीतहि धीरज जिमि दीन्हा
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी * पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई * बैदेही की कुसल सुनाई
सेन समेति जथा रघुबीरा * उतरे जाइ बारिनिधि तीरा
मिला बिभीषन जेहिबिधिआई * सागर निग्रह कथा सुनाई

करि पूजा समेति अनुरागा * मधुर बचन तब बोलेउ कागा

दो०नाथ कृतारथ भयेउँ मैं, तव दरसन षगराज।
आयसु देउ सो करौं अब, प्रभु आयेहु केहि काज ८७॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन षगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुष कीन्ह महेस ८८॥

सुनहुँ तात जेहि कारन आयेउँ * सो सब भयेउ दरस तव पायेउँ
देषि परम पावन तव आस्रम * गयेउ मोह संसय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अति पावनि * सदा सुषद दुषपुंज नसावनि
सादर तात सुनावहु मोही * बार बार बिनवौं प्रभु तोही
सुनत गरुड के गिरा बिनीता * सरल सप्रेम सुषद सुपुनीता
भयेउ तासु मन परम उछाहा * लाग कहइ रघुपति गुन गाहा
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी * रामचरित सर कहेसि बषानी
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई * तब सिसुचरित कहेसि मन लाई

दो०बालचरित कहि बिबिधि बिधि, मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिबाह ८९॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा * पुनि नृप बचन राज रस भंगा
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा * कहेसि राम लछिमन संवादा
बिपिन गवन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीकि प्रभु मिलन बषाना * चित्रकूट जिमि बसे भगवाना
सचिवागवन नगर नृप मरना * भरतागवन प्रेम बहु बरना
करि नृप क्रिया संग पुरबासी * भरत गये जहँ प्रभु सुषरासी
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये * लै पादुका अवधपुर आये

भरत रहनि सुरपतिसुत करनी * प्रभु अरु अत्रिभेट पुनि बरनी

दो० कहि बिराधबध जेहि बिधि, देहँ तजी सरभंग।
बरन सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभु अगस्तिसतसंग ६०॥

कहि दंडक बन पावनताई * गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई
पुनि प्रभु पंचबटी कृतबासा * भंजी सकल मुनिन्हकी त्रासा
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा * सूपनषा जिमि कीन्हि कुरूपा
षरदूषन बध बहुरि बषाना * जिमि सब मरमु दसानन जाना
दसकंधर मारीच बतकही * जेहि बिधि भई सोसब तेहिं कही
पुनि माया सीताकर हरना * श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना
पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही * बधिकबंध सबरिहि गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा * जेहि बिधि गये सरोवरतीरा

दो० प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रानकर भंग ६१॥
कपिहि तिलककरि प्रभुकृत, सैल प्रवर्षन बास।
बरनत बरषा सरद अरु, रामरोष कपित्रास ६२॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये * सीता षोज सकल दिसि धाये
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भांती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा * नाघत भयेउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा * पुनि सीतहि धीरज जिमिदीन्हा
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी * पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई * बैदेही की कुसल सुनाई
सेन समेति जथा रघुबीरा * उतरे जाइ बारिनिधि तीरा
मिला बिभीषन जेहिबिधिआई * सागर निग्रह कथा सुनाई

करि पूजा समेति अनुरागा * मधुर बचन तब बोलेउ कागा

दो०नाथ कृतारथ भयेउँ मैं, तव दरसन षगराज।
आयसु देउ सो करौं अब, प्रभु आयेहु केहि काज ८७॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन षगेस।
जेहिकै अस्तुति सादर, निज मुष कीन्ह महेस ८८॥

सुनहु तात जेहि कारन आयेउँ * सो सब भयेउ दरस तव पायेउँ
देषि परम पावन तव आस्रम * गयेउ मोह संसय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अति पावनि * सदा सुषद दुषपुंज नसावनि
सादर तात सुनावहु मोही * बार बार बिनवौं प्रभु तोही
सुनत गरुड के गिरा बिनीता * सरल सप्रेम सुषद सुपुनीता
भयेउ तासु मन परम उछाहा * लाग कहइ रघुपति गुन गाहा
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी * रामचरित सर कहेसि बषानी
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई * तब सिसु चरित कहेसि मन लाई

दो०बालचरित कहि बिबिधि बिधि, मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिबाह ८९॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा * पुनि नृप बचन राज रस भंगा
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा * कहेसि राम लछिमन संबादा
बिपिन गवन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीकि प्रभु मिलन बषाना * चित्रकूट जिमि बसे भगवाना
सचिवागवन नगर नृप मरना * भरतागवन प्रेम बहु बरना
करि नृप क्रिया संग पुरबासी * भरत गये जहँ प्रभु सुषरासी
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये * लै पादुका अवधपुर आये

भरत रहनि सुरपतिसुत करनी * प्रभु अरु अत्रिभेट पुनि बरनी

दो० कहि बिराधबध जेहि बिधि, देहँ तजी सरभंग।
बरन सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभुअगस्तिसतसंग ६०॥

कहि दंडक बन पावनताई * गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई
पुनि प्रभु पंचबटी कृतबासा * भंजी सकल मुनिन्हकी त्रासा
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा * सूपनषा जिमि कीन्हि कुरूपा
षरदूषन बध बहुरि बषाना * जिमि सब मरमु दसानन जाना
दसकंधर मारीच बतकही * जेहि बिधि भई सोसब तेहिं कही
पुनि माया सीताकर हरना * श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना
पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही * बधिकबंध सबरिहि गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा * जेहि बिधि गये सरोवरतीरा

दो० प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रानकर भंग ६१॥
कपिहि तिलककरि प्रभुकृत, सैल प्रबर्षन बास।
बरनत बरषा सरद अरु, रामरोष कपित्रास ६२॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये * सीता षोज सकल दिसि धाये
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भांती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा * नाघत भयेउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा * पुनि सीतहि धीरज जिमिदीन्हा
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी * पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई * बैदेही की कुसल सुनाई
सेन समेति जथा रघुबीरा * उतरे जाइ बारिनिधि तीरा
मिला बिभीषन जेहिबिधिआई * सागर निग्रह कथा सुनाई

करि पूजा समेति अनुरागा * मधुर बचन तब बोलेउ कागा

दो०नाथ कृतारथ भयेउँ मैं, तव दरसन षगराज।
आयसु देउ सो करौं अब, प्रभु आयेहु केहि काज ८७॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन षगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुष कीन्ह महेस ८८॥

सुनहु तात जेहि कारन आयेउँ * सो सब भयेउ दरस तव पायेउँ
देषि परम पावन तव आस्रम * गयेउ मोह संसय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अति पावनि * सदा सुषद दुषपुंज नसावनि
सादर तात सुनावहु मोही * बार बार बिनवौं प्रभु तोही
सुनत गरुड के गिरा बिनीता * सरल सप्रेम सुषद सुपुनीता
भयेउ तासु मन परम उछाहा * लाग कहइ रघुपति गुन गाहा
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी * रामचरित सर कहेसि बषानी
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई * तब सिसु चरित कहेसि मन लाई

दो०बालचरित कहि बिबिधि बिधि, मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिबाह ८९॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा * पुनि नृप बचन राज रस भंगा
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा * कहेसि राम लछिमन संबादा
बिपिन गवन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीकि प्रभु मिलन बषाना * चित्रकूट जिमि बसे भगवाना
सचिवागवन नगर नृप मरना * भरतागवन प्रेम बहु बरना
करि नृप क्रिया संग पुरबासी * भरत गये जहँ प्रभु सुषरासी
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये * लै पादुका अवधपुर आये

भरत रहनि सुरपतिसुत करनी * प्रभु अरु अत्रिभेट पुनि बरनी

दो० कहि बिराधबध जेहि बिधि, देहँ तजी सरभंग।
बरन सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभुअगस्तिसतसंग ६०॥

कहि दंडक बन पावनताई * गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई
पुनि प्रभु पंचबटी कृतबासा * भंजी सकल मुनिन्हकी त्रासा
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा * सूपनषा जिमि कीन्हि कुरूपा
षरदूषन बध बहुरि बषाना * जिमि सब मरमु दसानन जाना
दसकंधर मारीच बतकही * जेहि बिधि भई सोसब तेहिं कही
पुनि माया सीताकर हरना * श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना
पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही * बधिकबंध सबरिहि गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा * जेहि बिधि गये सरोवरतीरा

दो० प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रानकर भंग ६१॥
कपिहि तिलककरि प्रभुकृत, सैल प्रबर्षन बास।
बरनत बरषा सरद अरु, रामरोष कपित्रास ६२॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये * सीता षोज सकल दिसि धाये
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भांती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा * नाघत भयेउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा * पुनि सीतहि धीरज जिमिदीन्हा
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी * पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई * बैदेही की कुसल सुनाई
सेन समेति जथा रघुबीरा * उतरे जाइ बारिनिधि तीरा
मिला बिभीषन जेहिबिधिआई * सागर निग्रह कथा सुनाई

करि पूजा समेति अनुरागा * मधुर बचन तब बोलेउ कागा

दो०नाथ कृतारथ भयेउँ मैं, तव दरसन षगराज।
आयसु देउ सो करौं अब, प्रभु आयेहु केहि काज ८७॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन षगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुष कीन्ह महेस ८८॥

सुनहुँ तात जेहि कारन आयेउँ * सो सब भयेउ दरस तव पायेउँ
देषि परम पावन तव आस्रम * गयेउ मोह संसय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अति पावनि * सदा सुषद दुषपुंज नसावनि
सादर तात सुनावहु मोही * बार बार बिनवौं प्रभु तोही
सुनत गरुड के गिरा बिनीता * सरल सप्रेम सुषद सुपुनीता
भयेउ तासु मन परम उछाहा * लाग कहइ रघुपति गुन गाहा
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी * रामचरित सर कहेसि बषानी
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई * तब सिसु चरित कहेसि मन लाइ

दो०बालचरित कहि बिबिधि बिधि, मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिबाह ८९॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा * पुनि नृप बचन राज रस भंगा
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा * कहेसि राम लछिमन संबादा
बिपिन गवन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीकि प्रभु मिलन बषाना * चित्रकूट जिमि बसे भगवाना
सचिवागवन नगर नृप मरना * भरतागवन प्रेम बहु बरना
करि नृप क्रिया संग पुरबासी * भरत गये जहँ प्रभु सुषरासी
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये * लै पादुका अवधपुर आये

भरत रहनि सुरपतिसुत करनी * प्रभु अरु अत्रिभेट पुनि बरनी

दो० कहि बिराधबध जेहि बिधि, देहँ तजी सरभंग।
बरन सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभुअगस्तिसतसंग ६०॥

कहि दंडक बन पावनताई * गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई
पुनि प्रभु पंचबटी कृतबासा * भंजी सकल मुनिन्हकी त्रासा
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा * सूपनषा जिमि कीन्हि कुरूपा
षरदूषन बध बहुरि बषाना * जिमि सब मरमु दसानन जाना
दसकंधर मारीच बतकही * जेहि बिधि भई सोसब तेहिं कही
पुनि माया सीताकर हरना * श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना
पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही * बधिकबंध सबरिहि गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा * जेहि बिधि गये सरोवरतीरा

दो० प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रानकर भंग ६१॥
कपिहि तिलककरि प्रभुकृत, सैल प्रबर्षन बास।
बरनत बरषा सरद अरु, रामरोष कपित्रास ६२॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये * सीता षोज सकल दिसि धाये
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भांती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा * नाघत भयेउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा * पुनि सीतहि धीरज जिमिदीन्हा
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी * पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई * बैदेही की कुसल सुनाई
सेन समेति जथा रघुबीरा * उतरे जाइ बारिनिधि तीरा
मिला बिभीषन जेहिबिधिआई * सागर निग्रह कथा सुनाई

करि पूजा समेति अनुरागा * मधुर बचन तब बोलेउ कागा

दो०नाथ कृतारथ भयेउँ मैं, तव दरसन षगराज।
आयसु देउ सो करौं अब, प्रभु आयेहु केहि काज ८७॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन षगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुष कीन्ह महेस ८८॥

सुनहु तात जेहि कारन आयेउँ * सो सब भयेउ दरस तव पायेउँ
देषि परम पावन तव आस्रम * गयेउ मोह संसय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अति पावनि * सदा सुषद दुषपुंज नसावनि
सादर तात सुनावहु मोही * बार बार बिनवौं प्रभु तोही
सुनत गरुड के गिरा बिनीता * सरल सप्रेम सुषद सुपुनीता
भयेउ तासु मन परम उछाहा * लाग कहइ रघुपति गुन गाहा
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी * रामचरित सर कहेसि बषानी
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई * तब सिसु चरित कहेसि मन लाई

दो०बालचरित कहि बिबिधि बिधि, मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिबाह ८९॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा * पुनि नृप बचन राज रस भंगा
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा * कहेसि राम लछिमन संवादा
बिपिन गवन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीकि प्रभु मिलन बषाना * चित्रकूट जिमि बसे भगवाना
सचिवागवन नगर नृप मरना * भरतागवन प्रेम बहु बरना
करि नृप क्रिया संग पुरबासी * भरत गये जहँ प्रभु सुषरासी
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये * लै पादुका अवधपुर आये

भरत रहनि सुरपतिसुत करनी * प्रभु अरु अत्रिभेट पुनि बरनी

दो० कहि बिराधबध जेहि बिधि, देहँ तजी सरभंग।
बरन सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभु अगस्तिसतसंग ६०॥

कहि दंडक बन पावनताई * गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई
पुनि प्रभु पंचबटी कृतबासा * भंजी सकल मुनिन्हकी त्रासा
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा * सूपनषा जिमि कीन्हि कुरूपा
षरदूषन बध बहुरि बषाना * जिमि सब मरमु दसानन जाना
दसकंधर मारीच बतकही * जेहि बिधि भई सोसब तेहिं कही
पुनि माया सीताकर हरना * श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना
पुनिप्रभुगीधक्रियाजिमिकीन्ही * बधिकबंध सबरिहि गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा * जेहि बिधि गये सरोवरतीरा

दो० प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रानकर भंग ६१॥
कपिहि तिलककरि प्रभुकृत, सैल प्रबर्षन बास।
बरनत बरषा सरद अरु, रामरोष कपित्रास ६२॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये * सीता षोज सकल दिसि धाये
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भांती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा * नाघत भयेउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा * पुनि सीतहि धीरज जिमि दीन्हा
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी * पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई * बैदेही की कुसल सुनाई
सेन समेति जथा रघुबीरा * उतरे जाइ बारिनिधि तीरा
मिला बिभीषन जेहिबिधिआई * सागर निग्रह कथा सुनाई

करि पूजा समेति अनुरागा * मधुर बचन तब बोलेउ कागा

दो०नाथ कृतारथ भयेउँ मैं, तव दरसन षगराज।
आयसु देउ सो करौं अब, प्रभु आयेहु केहि काज ८७॥
सदा कृतारथ रूप तुम्ह, कह मृदु बचन षगेस।
जेहि कै अस्तुति सादर, निज मुष कीन्ह महेस ८८॥

सुनहुँ तात जेहि कारन आयेउँ * सो सब भयेउ दरस तव पायेउँ
देषि परम पावन तव आस्रम * गयेउ मोह संसय नाना भ्रम
अब श्रीरामकथा अति पावनि * सदा सुषद दुषपुंज नसावनि
सादर तात सुनावहु मोही * बार बार बिनवौं प्रभु तोही
सुनत गरुड के गिरा बिनीता * सरल सप्रेम सुषद सुपुनीता
भयेउ तासु मन परम उछाहा * लाग कहइ रघुपति गुन गाहा
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी * रामचरित सर कहेसि बषानी
पुनि नारद कर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावन अवतारा
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई * तब सिसुचरित कहेसि मन लाइ

दो०बालचरित कहि बिबिधिबिधि, मन महँ परम उछाह।
रिषि आगवन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीर बिबाह ८९॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा * पुनि नृप बचन राज रस भंगा
पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा * कहेसि राम लछिमन संवादा
बिपिन गवन केवट अनुरागा * सुरसरि उतरि निवास प्रयागा
बालमीकि प्रभु मिलन बषाना * चित्रकूट जिमि बसे भगवाना
सचिवागवन नगर नृप मरना * भरतागवन प्रेम बहु बरना
करि नृप क्रिया संग पुरबासी * भरत गये जहँ प्रभु सुषरासी
पुनि रघुपति बहु बिधि समुझाये * लै पादुका अवधपुर आये

भरत रहनि सुरपतिसुत करनी * प्रभु अरु अत्रिभेंट पुनि बरनी

दो० कहि बिराधबध जेहि बिधि, देहँ तजी सरभंग।
बरन सुतीछन प्रीति पुनि, प्रभु अगस्तिसतसंग ६०॥

कहि दंडक बन पावनताई * गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई
पुनि प्रभु पंचबटी कृतबासा * भंजी सकल मुनिन्हकी त्रासा
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा * सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा
खरदूषन बध बहुरि बखाना * जिमि सब मरमु दसानन जाना
दसकंधर मारीच बतकही * जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही
पुनि माया सीताकर हरना * श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना
पुनि प्रभु गीधक्रिया जिमि कीन्ही * बधि कबंध सबरिहि गति दीन्ही
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा * जेहि बिधि गये सरोवरतीरा

दो० प्रभु नारद संबाद कहि, मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मिताई, बालि प्रानकर भंग ६१॥
कपिहि तिलककरि प्रभुकृत, सैल प्रबर्षन बास।
बरनत बरषा सरद अरु, रामरोष कपित्रास ६२॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाये * सीता खोज सकल दिसि धाये
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भांती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती
सुनि सब कथा समीरकुमारा * नाघत भयेउ पयोधि अपारा
लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा * पुनि सीतहि धीरज जिमि दीन्हा
बन उजारि रावनहिं प्रबोधी * पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी
आये कपि सब जहँ रघुराई * बैदेही की कुसल सुनाई
सेन समेति जथा रघुबीरा * उतरे जाइ बारिनिधि तीरा
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई * सागर निग्रह कथा सुनाई

दो० सेतु बांधि कपिसेन जिमि, उतरी सागर पार।
गयेउ बसीठी बीरबर, जेहिबिधि बालकुमार ६३॥
निसिचर कीसलराई, बरनेसि बिबिधिप्रकार।
कुंभकरन घननाद कर, बल पौरुष संघार ६४॥

निसिचरनिकर मरन बिधिनाना * रघुपतिरावन समर बषाना
रावन बध मंदोदरि सोका * राज बिभीषन देव असोका
सीता रघुपति मिलन बहोरी *सुरन्हकीन्हि अस्तुतिकरजोरी
पुनि पुष्पक चढिकपिन्हसमेता * अवध चले प्रभु कृपानिकेता
जेहिबिधि राम नगर निजआये * बायस बिसद चरित सब गाये
कहेसि बहोरि राम अभिषेका * पुरबरनन नृप नीति अनेका
कथा समस्त भसुंडि बषानी * जो मै तुमसों कहा भवानी
सुनि सब रामकथा षगनाहा * कहत बचन मन परम उछाहा

सो० गयेउ मोर संदेह, सुनेउँ सकलरघुपतिचरित।
भयेउ रामपद नेह, तव प्रसादबायसतिलक२॥
मोहिभयउअतिमोह, प्रभुबंधन रनमहँ निरषि।
चिदानंद संदोह, रामबिकलकारन कवन ३॥

देषि चरितअति नर अनुसारी * भयेउ हृदय मम संसयभारी
सो भ्रम अब हितकरि मै माना * कीन्हि अनुग्रह कृपानिधाना
जो अति आतपब्याकुल होई * तरु छाया सुष जानै सोई
जौ नहिं होत मोह अतिमोही *मिलितेउँतातकवनि बिधितोही
सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई *अति बिचित्र बहु बिधितुम्हगाई
निगमागम पुरान मत येहा * कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा
संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही * चितवहिं राम कृपा कर जेही

राम कृपा तव दरसन भयेऊ * तव प्रसाद सब संसय गयेऊ

दो॰ सुनि बिहंगपति बानी, सहित विनय अनुराग।
पुलकगात लोचनसजल, मनहरषेउ अतिकाग ९५॥
श्रोतासुमतिसुसीलसुचि, कथा रसिक हरिदास।
पाइउमाअतिगोप्यमपि, सज्जनकरहिंप्रकास ९६॥

बोलेउ कागभसुंडि बहोरी * नभगनाथ पर प्रीति न थोरी
सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे * कृपापात्र रघुनायक केरे
तुम्हहिं न संसय मोह न माया * मोपर नाथ कीन्हि तुम्ह दाया
पठै मोह मिसि षगपति तोही * रघुपति दीन्हि बडाई मोही
तुम्ह निज मोहकही षगसाईं * सो नहिं कछु आचरज गोसाईं
नारद भव बिरंचि सनकादी * जे मुनिनायक आतम बादी
मोह न अंध कीन्ह केहि केही * को जग काम नचाव न जेही
त्रिस्ना केहि न कीन्ह बौराहा * केहिकर हृदय क्रोध नहिं दाहा

दो॰ ज्ञानी तापस सूर कबि, कोबिद गुन आगार।
केहिकै लोभ बिडंबना, कीन्हि न येहि संसार ९७॥
श्रीमदबक्रन कीन्हकेहि, प्रभुता बधिर न काहि।
मृगलोचनि लोचन सर, कोअस लाग न जाहि ९८॥

गुनकृत सन्यपात नहिं केही * कोउ न मानमदतजेउ निबेही
जौबनज्वर केहि नहिं बलकावा * ममता केहिकर जस न नसावा
मत्सर काहि कलंक न लावा * काहि न सोक समीर डोलावा
चिंता साँपिन को नहिं षाया * को जग जाहि न ब्यापी माया
कीट मनोरथ दारु सरीरा * जेहि न लाग घुन कोअसधीरा
सुत बित लोक ऐषना तीनी * केहिकैमति इन्ह कृत न मलीनी

यह सब माया कर परिवारा * प्रबल अमिति को बरनै पारा
सिवचतुरानन जाहि डेराहीं * अपर जीव केहि लेषे माहीं

दो॰ ब्यापि रहेउ संसार महँ, माया कटक प्रचंड।
सेनापति कामादि भट, दंभ कपट पाषंड ९९॥
सो दासी रघुबीर कै, समुझे मिथ्या सोपि।
छूट न राम कृपा बिनु, नाथ कहौं पदरोपि १००॥

सो माया सब जगहि नचावा * जासु चरित लषि काहुँ न पावा
सोइ प्रभु भ्रूबिलास षगराजा * नाच नटी इव सहित समाजा
सो सच्चिदानंद घनरामा * अज बिज्ञान रूप बलधामा
ब्यापक ब्याप्य अषंड अनंता * अषिल अमोघ सक्ति भगवन्ता
अगुन अदभ्र गिरा गोतीता * सबदर्सी अनवद्य अजीता
निर्मम निराकार निर्मोहा * नित्य निरंजन सुष संदोहा
प्रकृतिपार प्रभु सब उरबासी * ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी
इहां मोहकर कारन नाहीं * रबि सनमुष तम कबहुँ कि जाहीं

दो॰ भगत हेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तन भूप।
किये चरित पावन परम, प्राकृत नर अनुरूप १०१॥
जथा अनेक बेष धरि, नृत्य करै नट कोइ।
सोइ सोइ भाव दिषावै, आपुन होइ न सोइ १०२॥

असि रघुपति लीला उरगारी * दनुज बिमोहनि जनसुषकारी
जे मतिमलिन बिषयबस कामी * प्रभुपर मोह धरहिं इमि स्वामी
नयनदोष जाकहँ जब होई * पीतबरन ससि कहु कह सोई
जब जेहि दिसिभ्रम होइ षगेसा * सो कह पच्छिम उगेउ दिनेसा
नौकारूढ चलत जग देषा * अचल मोहबस आपुहि लेषा

बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी * कहहिं परस्पर मिथ्यावादी
हरिबिषइक अस मोहबिहंगा * सपनेहुँ नहिं अज्ञान प्रसंगा
मायाबस मतिमंद अभागी * हृदय जवनिका बहुबिधि लागी
ते सठ हठवस संसय करहीं * निज अज्ञान रामपर धरहीं

दो० काम क्रोध मदलोभरत, गृहासक्त दुषरूप।
ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ़ परे तमकूप १०३॥
निर्गुनरूप सुलभ अति, सगुन जान नहिं कोइ।
सुगमअगम नानाचरित, सुनिमुनिमनभ्रमहोइ १०४॥

सुनु षगेस रघुपति प्रभुताई * कहौं जथामति कथा सुहाई
जेहिबिधि मोहभयेउप्रभुमोही * सोउ सब कथा सुनावौं तोही
राम कृपा भाजन तुम्ह ताता * हरिगुन प्रीति मोहि सुषदाता
तातें नहिं कछु तुम्हहिं दुरावौं * परम रहस्य मनोहर गावौं
सुनहु रामकर सहज सुभाऊ * जन अभिमान न राषहिं काऊ
संसृति मूल सूल प्रद नाना * सकल सोक दायक अभिमाना
तातें करहिं कृपानिधि दूरी * सेवक पर ममता अतिभूरी
जिमिसिसुतनब्रनहोइगोसाईं * मातु चिराव कठिन की नाईं

दो० जदपि प्रथम दुष पावै, रोवै बाल अधीर।
ब्याधिनास हित जननी, गनइ न सो सिसुपीर १०५॥
तिमिरघुपतिनिजदासकर, हरहिं मान हितलागि।
तुलसिदासऐसेप्रभुहि, कस न भजहु भ्रमत्यागि १०६॥

राम कृपा आपनि जड़ताई * कहहुँ षगेस सुनहु मनलाई
जब जब राम मनुजतन धरहीं * भक्तहेतु लीला बहु करहीं
तब तब अवधपुरी मैं जाऊं * बालचरित बिलोकि हरषाऊं

जन्म महोत्सव देषौं जाई * बरष पांच तहँ रहौं लुभाई
इष्टदेव मम बालक रामा * सोभाबपुष कोटिसत कामा
निजप्रभु बदन निहारि निहारी * लोचन सुफल करौं उरगारी
लघु बायस बपुधरि हरिसंगा * देषौं बालचरित बहुरंगा
दो० लरिकाईं जहँ जहँ फिरहिं, तहँ तहँ संग उडाउँ।
जूठन परइ अजिर महँ, सो उठाइ कर षाउँ १०७॥
एक बार अतिसय सब, चरित किये रघुबीर ।
सुमिरत प्रभुलीला सोइ, पुलकित भये उसरीर १०८॥
कहै भसुंडि सुनहु षगनायक * रामचरित सेवक सुषदायक
नृप मंदिर सुंदर सब भांती * षचित कनकमनि नाना जाती
बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई * जहँ षेलहिं नित चारिउ भाई
बाल बिनोद करत रघुराई * बिचरत अजिर जननि सुषदाई
मरकत मृदुल कलेवर स्यामा * अंग अंग प्रति छबि बहु कामा
नवराजीव अरुन मृदु चरना * पदज रुचिर नष ससिदुतिहरना
ललित अंक कुलिसादिक चारी * नुपूर चारु मधुर रवकारी
चारु पुरट मनि रचित बनाई * कटि किंकिनि कल मुषर सुहाई
दो० रेषात्रय सुंदर उदर, नाभी रुचिर गँभीर।
उर आयत भ्राजत बिबिधि, बालबिभूषन चीर १०९॥
अरुन पानि नष करज मनोहर * बाहुँ बिसाल बिभूषन सुंदर
कंध बाल केहरि दर ग्रीवाँ * चारु चिबुक आननछबि सीवाँ
कलबल बचन अधर अरुनारे * दुइ दुइ दसन बिसद बर बारे
ललित कपोल मनोहर नासा * सकल सुषद ससिकरसम हाँसा
नील कंज लोचन भव मोचन * भ्राजत भाल तिलक गोरोचन

बिकट भृकुटिसम श्रवन सुहाये * कुंचित कच मेचक छबिछाये
पीत भीनि झँगुली तन सोही * किलकति चितवनि भावति मोही
रूपरासि नृप अजिर बिहारी * नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी
मोहिं सन करहिं बिबिधि बिधि क्रीडा * बरनत मोहि होति अति ब्रीडा
किलकत मोहि धरन जब धावहिं * चलौं भाजि तब पूप देषावहिं

दो० आवत निकट हसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं।
जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितइ पराहिं ११०॥
प्राकृत सिसु इव लीला, देषि भयेउ मोहिं मोह।
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानंद संदोह १११॥

एतना मन आनत षगराया * रघुपति प्रेरित ब्यापी माया
सो माया न दुषद मोहि काहीं * आन जीव इव संसृति नाहीं
नाथ इहां कछु कारन आना * सुनहु सो सावधान हरिजाना
ज्ञान अषंड एक सीतावर * माया बस्य जीव सचराचर
जौं सबके रह ज्ञान एक रस * ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस
माया बस्य जीव अभिमानी * ईस बस्य माया गुनषानी
परबस जीव स्वबस भगवंता * जीव अनेक एक श्रीकंता
मुधा भेद जद्यपि कृत माया * बिनु हरि जाइ न कोटि उपाया

दो० रामचंद्र के भजन बिनु, जो चह पद निर्बान।
ज्ञानवंत अपि सो नर, पसु बिनु पूंछ बिषान ११२॥
राकापति षोडष उअहि, तारा गन समुदाइ।
सकल गिरिन दव लाइय, रबि बिनु राति न जाइ ११३॥

ऐसेहिं हरि बिनु भजन षगेसा * मिटइ न जीवन्हकेर कलेसा
हरिसेवकहि न ब्याप अबिद्या * प्रभु प्रेरित ब्यापै तेहि बिद्या

तातें नास न होइ दासकर * भेद भगति बाढै बिहंगबर
भ्रमते चकित राम मोहिं देषा * बिहँसे सो सुनु चरित बिसेषा
तेहि कौतुककर मरम न काहूँ * जाना अनुज न मातु पिताहूँ
जानु पानि धाये मोहिं धरना * स्यामलगात अरुनकर चरना
तब मै भागि चलेउँ उरगारी * राम गहन कहँ भुजा पसारी
जिमि जिमि दूरि उडाउँ अकासा * तहँ भुज हरि देषौं निजपासा
दो॰ ब्रह्मलोक लगि गयेउँ मै, चितयेउँ पाछ उडात।
जुग अंगुलकर बीच सब, रामभुजहि मोहि तात ११४॥
सप्तावरन भेदकरि, जहाँ लगे गति मोरि।
गयेउँ तहां प्रभु भुज निरषि, ब्याकुल भयेउँ बहोरि ११५॥
मूदेउँ नयन तृषित जब भयेऊं * पुनि चितवत कोसलपुर गयेऊं
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं * बिहँसत तुरत गयेउँ मुषमाहीं
उदर मांझ सुनु अंडजराया * देषेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका * रचना अधिक येकते येका
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा * अगिनित उडुगन रबि रजनीसा
अगिनित लोकपाल जमकाला * अगिनित भूधर भूमि बिसाला
सागर सरिसर बिपिन अपारा * नाना भांति सृष्टि बिस्तारा
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किन्नर * चारि प्रकार जीव सचराचर
दो॰ जो नहिं देषा नहिं सुना, जो मनहूँ न समाइ।
सो सब अदभुत देषेउँ, बरनि कवनि बिधि जाइ ११६॥
एक एक ब्रह्मांड महँ, रहौं बरष सत एक।
येहि बिधि देषत फिरेउ मै, अंडकटाह अनेक ११७॥
लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता * भिन्न बिस्नु सिव मनु दिसित्राता

नर गंधर्ब भूत बेताला * किन्नरनिसिचरपसु पग ब्याला
देव दनुज गन नानाजाती * सकल जीव तहँ आनहिं भांती
महि सरि सागर सर गिरि नाना * सब प्रपंच तहँ आनै आना
अंडकोस प्रति प्रति निजरूपा * देषेउँ जिनिसि अनेक अनूपा
अवधपुरी प्रति भुवननि नारी * सरजू भिन्न भिन्न नर नारी
दसरथ कौसल्या सुनु ताता * बिबिधि रूप भरतादिक भ्राता
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा * देषों बालबिनोद अपारा

दो॰ भिन्न भिन्न मैं दीष सब, अति बिचित्र हरिजान।
अगिनित भुवन फिरेउँ प्रभु, राम न देषेउँ आन ११८॥
सोइ सिसुपन सोइ सोभा, सोइ कृपालु रघुबीर।
भुवन भुवन देषत फिरौं, प्रेरित मोह समीर ११९॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका * बीते मनहुँ कल्पसत एका
फिरतफिरतनिजआश्रमआयेउँ * तहँपुनिरहिकछुकाल गवायेउँ
निजप्रभु जन्मअवधसुनिपायेउँ * निर्भर प्रेम हरषि उठिधायेउँ
देषौं जन्म महोत्सव जाई * जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई
राम उदर देषेउँ जग नाना * देषत बनइ न जाइ बषाना
तहँ पुनि देषेउँ राम सुजाना * मायापति कृपालु भगवाना
करौं बिचार बहोरि बहोरी * मोहकलिल[1] ब्यापितमतिमोरी
उभय घरी महँ मैं सब देषा * भयेउँ भ्रमित मनमोह बिसेषा

दो॰ देषि कृपाल बिकल मोहि, बिहँसे तब रघुबीर।
बिहँसतही मुष बाहेर, आयेउँ सुनु मतिधीर १२०॥
सोइ लरिकाईं मोसन, करन लगे पुनि राम।

१—कलिलं बुद्धिकालुष्यं बुद्धिगतं। यथा—यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति इति गीतायाम्॥

कोटि भांति समुझावौं, मन न लहै बिश्राम १२१॥
देषि चरित यह सो प्रभुताई * समुझत देहँ दसा बिसराई
धरनि परेउँ मुष आव न बाता * त्राहि त्राहि आरत जन त्राता
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी * निज माया प्रभुता तब रोंकी
करसरोज प्रभु मम सिर धरेऊ * दीनदयाल सकल दुष हरेऊ
कीन्ह राम मोहि बिगतबिमोहा * सेवक सुषद कृपा सन्दोहा
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी * मन महँ होइ हरष अतिभारी
भगत बछलता प्रभुकै देषी * उपजी मम उर प्रीति बिसेषी
सजल नयन पुलकित करजोरी * कीन्हेउँ बहुबिधि बिनय बहोरी

दो०सुनि सप्रेम मम बानी, देखि दीन निज दास।
बचन सुषद गंभीर मृदु, बोले रमानिवास १२२॥
काकभसुंडि मांगु बर, अति प्रसन्न मोहि जानि।
अनिमादिकसिधिअपरनिधि, मोक्षसकलसुषषानि १२३

ज्ञान बिबेक बिरति बिज्ञाना * मुनि दुर्लभ गुन जे जगजाना
आजु देउँ सब संसय नाहीं * मांगु जो तोहि भाव मनमाहीं
सुनिप्रभुबचनअधिकअनुरागेउँ * मन अनुमान करन तबलागेउँ
प्रभु कह देन सकल सुष सही * भगति आपनी देन न कही
भगतिहीन गुन सब सुष कैसें * लवन बिना बहु ब्यंजन जैसें
भजन हीन सुष कवने काजा * अस बिचारि बोलेउँ षगराजा
जो प्रभु होइ प्रसन्न बरदेहू * मोपर करहु कृपा अरु नेहू
मनभावत बर मांगौं स्वामी * तुम उदार उर अंतरजामी

दो० अबिरलभगति बिसुद्ध तव, श्रुति पुरान जो गाव।
जेहि षोजत जोगीसमुनि, प्रभुप्रसादकोउपाव १२४॥

भगत कल्पतरु प्रनतहित, कृपासिंधु सुषधाम।
सोइ निजभगतिमोहिप्रभु, देहु दया करि राम १२५॥
एवमस्तु कहि रघुकुलनायक * बोले बचन परम सुषदायक
सुनु बायस तइँ परम सयाना * काहे न मांगसि अस बरदाना
सब सुषषानि भगति तैं मागी * नहिंकोउ जगतोहिसमबडभागी
जो मुनिकोटिजतन्हनहिंलहहीं * जे जप जोग अनल तन दहहीं
रीझेउँ देषि तोरि चतुराई * मागेहु भगति मोहि अतिभाई
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरे * सब सुभ गुन बसिहहिं उरतोरे
भगति ज्ञान बिज्ञान बिरागा * जोग चरित्र रहस्य बिभागा
जानब तैं सबहीकर भेदा * मम प्रसाद नहिं साधनषेदा
दो० मायासंभव भ्रम सब, अब न ब्यापिहहि तोहि।
जानेसु ब्रह्मअनादिअज, अगुनगुनाकरमोहि १२६॥
मोहि भगतिप्रिय संतत, अस बिचारि सुनु काग।
काय बचन मन ममपद, करेसुअचलअनुराग १२७॥
अबसुनु परमबिमलमम बानी * सत्य सुगमनिगमादि बषानी
निज सिद्धांत सुनावौं तोही * सुनिमनधरुसबतजिभजु मोही
मम माया संभव संसारा * जीवचराचर बिबिधि प्रकारा
सब ममप्रिय सबममउपजाये * सबतेंअधिक मनुज मोहि भाये
तिन्हमहँद्विजद्विजमहँश्रुतिधारी * तिन्हमहँ निगमधर्मअनुसारी
तिन्हमहँप्रिय बिरक्तपुनिज्ञानी * ज्ञानिहुँतें अति प्रिय बिज्ञानी
तिन्हतेंपुनिमोहिप्रियनिजदासा * जेहि गतिमोरि न दूसरि आसा
पुनि पुनि सत्यकहौंतोहिपाहीं * मोहि सेवकसम प्रियकोउनाहीं
भगतिहीन बिरंचि किन होई * सब जीवहुसमप्रियमोहि सोई

भगतिवंत अति नीचौ प्रानी * मोहि प्रान प्रिय असिमम बानी

दो० सुचि सुसील सेवक सुमति, प्रिय कहु काहि न लाग ।
श्रुति पुरान कहनीति असि, सावधान सुनु काग १२८॥

एक पिताके बिपुल कुमारा * होहिं पृथक गुन सील अचारा
कोउ पंडित कोउ तापसज्ञाता * कोउ धनवंत सूर कोउ दाता
कोउ सर्वज्ञ धर्मरत कोई * सबपर पितहि प्रीति सम होई
कोउ पितु भगत बचनमन कर्मा * सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा
सो सुत प्रियपितुप्रानसमाना * जद्यपि सो सब भाँति अयाना
एहि बिधि जीव चराचर जेते * त्रिजग देव नर असुर समेते
अखिल विस्व यह मोर उपाया * सबपर मोहि बराबर दाया
तिन्हमहँ जोपरिहरिमद माया * भजइँ मोहि मन बचअरुकाया

दो० पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोइ ।
सर्ब भाव भज कपटतजि, मोहिपरमप्रियसोइ १२९॥

सो० सत्य कहौं षग तोहि, सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।
अस बिचारिभजुमोहि, परिहरि आसभरोस सब ४॥

कबहूँ काल न ब्यापिहि तोही * सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही
प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ * तनुपुलकित मनअति हरषाऊँ
सो सुष जानै मन अरु काना * नहिं रसना पहिं जाइ बषाना
प्रभुसोभासुषजानहिंनयना * कहिकिमिसकहिंतिन्हहिंनहिंबयना
बहु बिधि मोहिं प्रबोध सुष देई * लगे करन सिसु कौतुक तेई
सजल नयन कछु मुष करि रूषा * चितै मातु लागी अति भूषा
देखि मातु आतुर उठि धाई * कहि मृदु बचन लिये उर लाई
गोद राषि कराव पय पाना * रघुपति चरितललितकर गाना

सो० जेहि सुष लागि पुरारि, असुभ वेष कृतसिवसुषद।
अवधपुरी नर नारि, तेहि सुषमहँ संततमगन ५॥
सोइ सुष लवलेस, जिन्ह बारक सपनेहुँ लहेउ।
ते नहिं गनहिं षगेस, ब्रह्मसुषहि सज्जन सुमति ६॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला * देषेउँ बाल बिनोद रसाला
राम प्रसाद भगति बर पायेउँ * प्रभुपद बंदि निजास्रम आयेउँ
तबते मोहि न ब्यापी माया * जबतें रघुनायक अपनाया
यह सब गुप्त चरित मै गावा * हरिमाया जिमि मोहि नचावा
निजअनुभव अबकहौंषगेसा * बिनु हरिभजन न जाहिं कलेसा
राम कृपा बिनु सुनु षगराई * जानि न जाइ राम प्रभुताई
जाने बिनु न होइ परतीती * बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीति बिना नहिंभगतिदृढाई * जिमि षगपति जलकै चिकनाई

सो० बिनु गुरु होहिं कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ बिरागबिनु।
गावहिं बेद पुरान, सुष कि लहियहरिभगति बिनु ७॥
कोउ बिस्राम कि पाव, तात सहज संतोष बिनु।
चलैकि जलबिनुनाव,कोटिजनमपचिपचि मरिय ८॥

बिनु संतोष न काम नसाहीं * काम अछत सुष सपनेहुँ नाहीं
रामभजनबिनुमिटहिंकि कामा * थल बिहीनतरु कबहुँकि जामा
बिनु बिज्ञान कि समता आवै * कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै
स्रद्धा बिना धर्म नहिं होई * बिनु महि गंध कि पावै कोई
बिनु तप तेज किकरबिस्तारा * जल बिनु रस कि होहिं संसारा
सील कि मिलु बिनुबुधसेवकाई * जिमि बिनु तेज न रूप गोसाँई
निजसुष बिनुमन होइकिथीरा * परस कि होइ बिहीन समीरा

कवनिउँ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा * बिनु हरिभजन न भवभयनासा

दो० बिनु बिस्वास भगति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम ।
रामकृपा बिनु सपनेहुँ, जीव न लह बिश्राम १३०॥

सो० अस बिचारि मतिधीर, तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुबीर, करुनाकर सुंदर सुषद ६ ॥

निज मति सरिस नाथ मइँ गाई * प्रभु प्रताप महिमा षगराई
कहेउँ न कछु करि जुगुति बिसेषी * यह सब मैं निज नयनन्हि देषी
महिमा नाम रूप गुन गाथा * सकल अमित अनंत रघुनाथा
निजनिजमति मुनि हरिगुन गावहिं * निगम सेष सिव पार न पावहिं
तुम्हहिं आदि षगमसक प्रजंता * नभ उडाहिं नहिं पावहिं अंता
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा * तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा
रामकाम सत कोटि सुभगतन * दुर्गा कोटि अमिति अरि मर्दन
सक्र कोटिसत सरिस बिलासा * नभसतकोटि अमिति अवकासा

दो० मरुत कोटिसत बिपुलबल, रबिसत कोटि प्रकास ।
ससि सतकोटि सुसीतल, समन सकल भवत्रास १३१॥
कालकोटिसत सरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूम्रकेतु सतकोटि सम, दुराधरष भगवंत १३२ ॥

प्रभु अगाध सतकोटि पताला * समन कोटिसत सरिस कराला
तीरथ अमिति कोटिसत पावन * नाम अषिल अघपुंज नसावन
हिमिगिरि कोटि अचल रघुबीरा * सिंधु कोटिसत सम गंभीरा
कामधेनु सतकोटि समाना * सकल काम दायक भगवाना
सारद कोटि अमिति चतुराई * बिधि सतकोटि सृष्टि निपुनाई
बिस्नु कोटिसम पालनकर्त्ता * रुद्र कोटिसत सम संहर्त्ता

धनद कोटिसत समधनवाना * माया कोटि प्रपंच निधाना
भार धरन सत कोटि अहीसा * निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा

छंद

निरुपम न उपमा आन राम समान राम निगम कहै।
जिमि कोटिसत षद्योतसम रविकहतअतिलघुता लहै॥
एहिभाँति निजनिजमतिविलासमुनीसहरिहिवपानहीं।
प्रभु भावगाँहक अति कृपाल सुप्रेमसुनिसुपमानहीं २६॥

दो॰ राम अमित गुनसागर, थाह कि पावै कोइ।
संतन्हसनजसकिछुसुनेउँ, तुम्हहिं सुनायेउँसोइ १३३॥

सो॰ भावबस्य भगवान, सुषनिधान करुनाभवन।
तजि ममतामदमान, भजिय सदा सीतारवन १०॥

सुनि भसुंडि के बचन सोहाये * हरषित षगपति पंष फुलाये
नयन नीर मन अति हरषाना * श्रीरघुपति प्रताप उर आना
पाछिल मोहसमुझिपछिताना * ब्रह्मअनादि मनुज करिजाना
पुनि पुनि कागचरनसिरुनावा * जानि राम सम प्रेम बढावा
गुरु बिनु भवनिधि तरै नकोई * जौं बिरंचि संकर सम होई
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता * दुषद लहरि कुतर्क बहुब्राता
तव सरूप गारुडि रघुनायक * मोहि जियायेउ जन सुषदायक
तव प्रसाद मम मोह नसाना * राम रहस्य अनूपम जाना

दो॰ ताहिप्रसंसिबिबिधिबिधि, सीस नाइ कर जोरि।
बचन बिनीत सप्रेममृदु, बोलेउ गरुडबहोरि १३४॥
प्रभु अपने अबिबेक तें, बूझौं स्वामी तोहि।

१—समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं गुरुं तत्त्वज्ञानार्थमभिगच्छेत् इतिश्रुतौ॥

कृपासिंधु सादर कहहु, जानिदास निजमोहि १३५॥

तुम सर्बज्ञ तज्ञ तम पारा * सुमति सुसील सरल आचारा
ज्ञान बिरति बिज्ञाननिवासा * रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा
कारन कवन देहँ यह पाई * तात सकल मोहि कहहु बुझाई
राम चरित सर सुंदर स्वामी * पायेहु कहां कहहु नभगामी
नाथ सुना मै अस सिवपाहीं * महाप्रलयेहुँ नास तव नाहीं
मुधा बचन नहिं ईस्वर कहई * सोउ मोरेमन संसय अहई
अग जग जीव नाग नरदेवा * नाथ सकल जग कालकलेवा
अंडकटाह अमितिलयकारी * काल सदाँ दुरतिक्रम भारी

सो० तुम्हहिं न ब्यापतकाल, अति कराल कारन कवन।
मोहि सो कहहुकृपाल, ज्ञानप्रभाव कि जोगबल ११॥

दो० प्रभु तव आश्रम आए, मोर मोह भ्रम भाग।
कारन कवन सो नाथ सब, कहहुसहितअनुराग १३६॥

गरुड गिरा सुनि हरषेउकागा * बोलेउ उमा सहित अनुरागा
धन्य धन्य तव मति उरगारी * प्रस्न तुम्हारि मोहिअतिप्यारी
सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई * बहुत जन्मकै सुधिमोहि आई
सब निज कथा कहौं मै गाई * तात सुनहु सादर मन लाई
जप तपमषसम दम ब्रत दाना * बिरति बिबेक जोग बिज्ञाना
सबकर फलरघुपतिपदप्रेमा * तेहि बिनु कोउ न पावै छेमा
येहि तन रामभगति मै पाई * तातें मोहि ममता अधिकाई
जेहितें कछु निजस्वारथ होई * तेहिपर ममता कर सब कोई

सो० पन्नगारि असि नीति, श्रुतिसंमत सज्जन कहहिं।
अतिनीचहुसनप्रीति, करियजानिनिजपरमहित १२॥

पाट कीट तें होइ, तेहितें पाटंबर रुचिर।
कृमि पालै सब कोइ, परम अपावन प्रान सम १३॥

स्वारथ साँच जीव कहँ एहा * मन क्रम बचन रामपद नेहा
सोइ पावन सोइसुभगसरीरा * जो तन पाइ भजिअ रघुबीरा
रामबिमुषलहिबिधिसमदेही * कबि कोबिद न प्रसंसहिं तेही
राम भगति एहितनउरजामी * ताते मोहि परमप्रिय स्वामी
तजौं न तन निजइच्छामरना * तन बिनु बेद भजन नहिं बरना
प्रथम मोहमोहिबहुतबिगोवा * राम बिमुष सुष कबहुँ न सोवा
नाना जन्म कर्म पुनि नाना * किये जोग जप तप मष दाना
कवन जोनिजनमेउँजहँनाहीं * मै षगेस भ्रमि भ्रमि जगमाहीं
देषेउँ करि सब करम गोसाईं * सुषी न भयेउँ अबहिं की नाईं
सुधि मोहि नाथजनमबहु केरी * सिवप्रसाद मति मोह न घेरी

दो० प्रथम जनमके चरित अब, कहौं सुनहु बिहगेस।
सुनि प्रभुपद रति ऊपजै, जाते मिटहिंकलेस १३७॥
पूरब कल्प एक प्रभु, जुगकलिजुग मलमूल।
नर अरु नारि अधर्मरत, सकलनिगमप्रतिकूल १३८॥

तेहि कलिजुगकोसलपुरजाई * जनमत भयेउँ सूद्रतन पाई
सिवसेवक मन क्रमअरुबानी * आन देव निंदक अभिमानी
धन मद मत्त परम बाचाला * उग्रबुद्धि उर दंभ बिसाला
जदपि रहेउँरघुपतिरजधानी * तदपि न कछु महिमा तव जानी
अब जाना मै अवध प्रभावा * निगमागम पुरान अस गावा
कवनेहुँ जन्म अवध बसजोई * राम परायन सो परि होई
अवध प्रभाव जान तबप्रानी * जब उर बसहिं राम धनुपानी

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भये बहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥

सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नबीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रबर, आंपि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं *जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरिएक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा *स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी *मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कल्पित करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिवेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही *कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भये बहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥

सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ१४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नबीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रबर, आंषि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं *जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरिएक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कल्पित करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी
दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भये बहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥
बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला
दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥
सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥
नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नबीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंषि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं * जो कहुं सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कलिपत करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भयेबहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥

सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नबीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंषि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं *जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कलिपत करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भये बहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥
सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नबीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंषि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा में चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं * जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कल्पित करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिवेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो॰ कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भयेबहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो॰ असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥

सो॰ जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नबीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपितावालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंषि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं * जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कलिपत करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिवेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भयेबहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥

सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नवीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंपि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं *जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कल्पित करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भयेबहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसखरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नख अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे खाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥
सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नवीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेखा * येक न सुनै येक नहिं देखा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंषि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं *जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कल्पित करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिवेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भयेबहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥

सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नबीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपिताबालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंपि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं * जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कलिपत करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भये बहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥
सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नवीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपितावालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आँषि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं * जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कलिपत करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिवेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भयेबहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥

सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नवीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपितावालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं
दो॰ ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंपि देपावहिं डाटि १४३॥
परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं * जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कलिपत करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा
दो॰ भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

सो कलिकालकठिनउरगारी * पाप परायन सब नर नारी

दो० कलिमल ग्रसे धर्म सब, गुप्त भये सदग्रंथ।
दंभिन्हनिजमतकल्पिकरि, प्रगट भयेबहु पंथ १३९॥
भये लोग सब मोहबस, लोभ ग्रसे सुभ कर्म।
सुनु हरिजान ज्ञाननिधि, कहौं कछुककलिधर्म १४०॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी * श्रुति बिरोध रत सब नर नारी
द्विज श्रुतिबेचकभूपप्रजासन *कोउ नहिं माननिगम अनुसासन
मारग सोइ जाकहँजोइभावा * पंडित सो जो गाल बजावा
मिथ्यारंभ दंभरत जोई * ताकहँ संत कहैं सब कोई
सोइ सयान जो परधन हारी * जो कर दंभ सो बड आचारी
जो कह झूँठ मसषरी जाना * कलिजुग सोइ गुनवंत बषाना
निराचार जो स्रुतिपथत्यागी * कलिजुग सोइ ज्ञानीसो बिरागी
जाके नष अरु जटा बिसाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो० असुभ बेष भूषन धरे, भच्छाभच्छ जे षाहिं।
तेइ जोगीतेइसिद्धनर, पूजित कलिजुग माहिं १४१॥
सो० जे अपकारी चार, तिन्हकर गौरव मान्य तेइ।
मन क्रम बचन लबार, तेइ बक्ता कलिकाल महँ १४॥

नारि बिबस नरसकलगोसाईं * नाचहिं नट मर्कटकी नाईं
सूद्र द्विजन उपदेसहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना
सब नर काम लोभरत क्रोधी * देव बिप्र श्रुति संत बिरोधी
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी
सौभागिनी बिभूषन हीना * बिधवन्ह के सिंगार नबीना
गुरु सिष बधिर अंधकालेषा * येक न सुनै येक नहिं देषा

हरै शिष्य धन सोक न हरई * सो गुरु घोर नरक महँ परई
मातपितावालकन्हिबोलावहिं * उदर भरै सोइ धर्म सिषावहिं

दो० ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहहिं न दूसरि बात।
कौडी लागि लोभ बस, करहिं बिप्र गुरु घात १४२॥
बादहिं सूद्र द्विजन्हसन, हम तुम्हतें कछु घाटि।
जानै ब्रह्म सो बिप्रवर, आंषि देषावहिं डाटि १४३॥

परत्रिय लंपट कपट सयाने * मोह द्रोह ममता लपटाने
तेइ अभेदबादी ज्ञानी नर * देषा मैं चरित्र कलिजुग कर
आपुगयेअरु तिन्हहूँघालहिं *जो कहुँ सत मारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्पभरि एक एकनरका * परहिं जे दूषहिं श्रुति करितरका
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा * स्वपच किरात कोल कलवारा
नारि मुई गृह संपति नासी * मूँड मुँडाइ होहिं संन्यासी
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं * उभय लोक निज हाथ नसावहिं
बिप्र निरच्छर लोलुप कामी * निराचार सठ बृषली स्वामी
सूद्र करहिं जप तप ब्रतनाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना
सबनर कलिपत करहिं अचारा * जाइ न बरनि अनीति अपारा

दो० भये बरन संकर कलि, भिन्न सेतु सब लोग।
करहिं पाप पावहिं दुष, भय रुज सोक बियोग १४४॥
स्त्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संजुत बिरति बिबेक।
तेहि न चलहिंनरमोहबस, कल्पहिं पंथ अनेक १४५॥

छंद

बहु दाम सँवारहिं धाम जती * बिषया हरिलीन्ह रही बिरती
तपसी धनवंत दरिद्र गृही * कलिकौतुक तात न जात कही

कुलवंति निकारहिं नारिसती * गृह आनहिं चेरि निबेरिगती
सुत मानहिं मातु पिता तबलौं * अबलानन दीष नहीं जबलौं
ससुरारिपियारि लगी जबते * रिपुरूप कुटंब भये तबते
नृप पापपरायन धर्म नहीं * करु दंड बिडंब प्रजा नितहीं
धनवंत कुलीन मलीनअपी * द्विज चिह्न जनेउ उघार तपी
नहिं मान पुरान न बेदहि जो * हरिसेवक संत सही कलि सो
कबिबृंद उदार दुनी न सुनी * गुनदूषक ब्रात न कोपि गुनी
कलि बारहिंबार दुकाल परै * बिनु अन्न दुषी सबलोग मरै

दो०सुनुषगेस कलिकपट हठ, दंभ द्वेष पाषंड।
मान मोह मारादि मद, ब्यापि रहे ब्रह्मांड १४६॥
तामस धर्म करहिं नर, जप तप ब्रत मष दान।
देव न बरषै धरनी, बये न जामहिं धान १४७॥

छंद

अबला कच भूषन भूरि छुधा * धनहीन दुषी ममता बहुधा
सुष चाहहिं मूढ न धर्मरता * मति थोरि कठोरि न कोमलता
नरपीडित रोग न भोग कहीं * अभिमान बिरोध अकारनहीं
लघुजीवन संबत पंच दसा * कलपांत न नास गुमान असा
कलिकाल बिहाल किये मनुजा * नहिं मानत कोउ अनुजा तनुजा
नहिं तोष बिचार न सीतलता * सब जाति कुजाति भये मँगता
इरसा परुसाछर लोलुपता * भरि पूरि रही समता बिगता
सब लोग बियोग बिसोक हये * बर्नास्रम धर्म अचार गये
दम दान दया नहिं जानपनी * जडता परबंचनताति घनी
तन पोषक नारि नरा सगरे * पर निंदक जे जगमो बगरे

दो० सुनु ब्यालारि कालकलि, मल अवगुन आगार।
गुनौ बहुत कलिजुगकर, बिनु प्रयास निस्तार १४८॥
कृतजुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु जोग।
जो गति होइ सो कलिहरि, नाम ते पावहिं लोग १४९॥
कृतजुग सब जोगी बिज्ञानी * करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी
त्रेता बिबिधि जज्ञ नर करहीं * प्रभुहि समर्पि कर्म भव तरहीं
द्वापर करि रघुपति पद पूजा * नर भव तरहिं उपाय न दूजा
कलिजुग केवल हरिगुन गाहा * गावत नर पावहिं भव थाहा
कलिजुग जोग न जज्ञ न ज्ञाना * येक अधार राम गुन गाना
सब भरोस तजि जो भज रामहिं * प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहिं
सोइ भव तर कछु संशय नाहीं * नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं
कलिकर येक पुनीत प्रतापा * मानस पुन्य होहि नहिं पापा
दो० कलिजुग सम जुग आन नहिं, जौं नर कर बिस्वास।
गाइ रामगुनगन बिमल, भवतर बिनहिं प्रयास १५०॥
प्रगट चारिपद धर्म के, कलिमहँ येक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हे, दान करै कल्यान १५१॥
नित जुग धर्म होहिं सब केरे * हृदय राम माया के प्रेरे
सुद्ध सत्त्व समता बिज्ञाना * कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना
सत्त्व बहुत रज कछु रति कर्मा * सब बिधि सुष त्रेताकर धर्मा
बहुरज स्वल्प सत्त्व कछु तामस * द्वापर धर्म हरष भय मानस
तामस बहुत रजोगुन थोरा * कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा
बुध जुग धर्म जानि मनमाहीं * तजि अधर्म रति धर्म कराहीं
काल धर्म नहिं ब्यापहिं ताही * रघुपतिचरनप्रीति अतिजाही

नट कृत बिकट कपट षगराया * नट सेवकहि न ब्यापै माया

दो० हरि मायाकृत दोष गुन, बिनु हरिभजन न जाहिं।
भजियरामतजिकामसब, असबिचारिमनमाहिं १५२॥

तेहि कलिकाल बरष बहु, बसेउँ अवध बिहँगेस।
परेउ दुकाल बिपतिबस, तब मैं गयेउँ बिदेस १५३॥

गयेउँ उजेनी सुनु उरगारी * दीन मलीन दरिद्र दुषारी
गये काल कछु संपति पाई * तहँ पुनि करौं संभु सेवकाई
बिप्र येक बैदिक सिवपूजा * करै सदा तेहि काज न दूजा
परम साधु परमारथ बिंदक * संभु उपासक नहिं हरिनिंदक
तेहि सेवौं मैं कपट समेता * द्विजदयाल अतिनीतिनिकेता
बाहिज नम्र देषि मोहि साँई * बिप्र पढाव पुत्र की नाँई
शंभुमंत्र मोहि द्विज बर दीन्हा * सुभउपदेसबिबिधिबिधिकीन्हा
जपौं मंत्र शिवमंदिर जाई * हृदयदंभ अहमिति अधिकाई

दो० मैं षल मल संकुल मति, नीच जाति बस मोह।
हरिजन द्विज देषे जरौं, करौं बिस्नु कर द्रोह १५४॥

सो० गुरु नित मोहिं प्रबोध, दुषित देषि आचरन मम।
मोहिं उपजै अतिक्रोध, दंभिहि नीति कि भावई १५॥

येक बार गुरु लीन्ह बुलाई * मोहि नीति बहुभाँति सिषाई
सिव सेवाकर फल सुत सोई * अबिरल भगति रामपद होई
रामहिं भजहिं तात सिव धाता * नर पावर कै केतिक बाता
जासु चरन अज सिव अनुरागी * तासु द्रोह सुष चहसि अभागी
हरकहँ हरि सेवक गुरु कहेऊ * सुनि षगनाथ हृदय मम दहेऊ
अधम जाति मैं बिद्या पाये * भयउँ जथा अहि दूध पियाये

मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती * गुरु कर द्रोह करौं दिन राती
अति दयाल गुरु स्वल्प न क्रोधा * पुनिपुनि मोहि सिषाव सुबोधा
जेहिते नीच बडाई पावा * सो प्रथमहिं हठि ताहि नसावा
धूम अनल संभव सुनु भाई * तेहि बुझाव घन पदवी पाई
रज मग परी निरादर रहई * सबकर पद प्रहार नित सहई
मरुत उडाव प्रथम तेहि भरई * पुनि नृप नयन किरीटन्हि परई
सुनुषगपति अस समुझि प्रसंगा * बुध नहिं करहिं अधमकर संगा
कबिकोबिद गावहिं अस नीती * षलसन कलह न भल नहिं प्रीती
उदासीन नित रहिय गोसाईं * षल परिहरिय स्वान की नाईं
मैं षल हृदय कपट कुटिलाई * गुरुहित कहहिं न मोहि सुहाई

दो॰ येक बार हरमंदिर, जपत रहेउँ शिव नाम।
गुरु आये अभिमानतें, उठि नहिं कीन्ह प्रनाम १५५॥
सो दयाल नहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेस।
अति अघ गुरु अपमानते, सहि नहिं सके महेस १५६॥

मंदिर माझ भई नभबानी * रे हतभाग्य अज्ञ अभिमानी
जद्यपि तव गुरु के नहिं क्रोधा * अतिकृपाल चित सम्यकबोधा
तदपि साप सठ देहौं तोही * नीति बिरोध सुहाइ न मोही
जौं नहिं दंड करौं षल तोरा * भ्रष्ट होहि श्रुतिमारग मोरा
जे सठ गुरुसन इरषा करहीं * रौरव नरक कोटिजुग परहीं
त्रिजग जोनि पुनि धरहि सरीरा * अयुत जन्मभरि पावहि पीरा
बैठ रहेसि अजगर इव पापी * सर्प होहि षल मलमति ब्यापी
महाबिटप कोटर महुँ जाई * रहु अधमाधम अधगति पाई

दो॰ हाहाकार कीन्ह गुरु, दारुन सुनि शिवसाप।

कंपित मोहि बिलोकि अति, उर उपजा परिताप १५७॥
करि दंडवत सप्रेम द्विज, सिव सन्मुष करजोरि।
बिनयकरतगदगदगिरा, समुझिघोरगतिमोरि १५८॥

छंद

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं * विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं * चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं २७
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं * गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकालकालं कृपालं * गुणागार संसारपारं नतोऽहं २८
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं * मनो भूतकोटिप्रभाश्री शरीरं।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा * लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा २९
चलत्कुंडलं भ्रूसुनेत्रं विशालं * प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।
मृगाधीशचर्मांबरं मुंडमालं * प्रियंशंकरसर्वनाथंभजामि ३०
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं * अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रिधाशूलनिर्मूलिनंशूलपाणिं * भजेऽहंभवानीपतिंभावगम्यं ३१
कलातीत कल्याण कल्पांतकारी * सदा सज्जनानंददाता पुरारी।
चिदानंदसंदोह मोहापहारी * प्रसीद प्रसीद प्रभोमन्मथारी ३२
न यावदुमानाथ पादारविंदम् * भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं * प्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवासं ३३
न जानामि योगं जपं नैव पूजां * नतोऽहं सदा सर्वदा शंभुतुभ्यं।
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं * प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो ३४

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठंति नरा भक्त्या तेषां शंभुः प्रसीदति ४॥

दो० सुनि बिनती सर्बज्ञ शिव, देषि बिप्र अनुराग।

पुनि मंदिर नभबानी, भइ द्विजवर वर मांग १५९ ॥
जौ प्रसन्न प्रभु मोहिंपर, नाथ दीनपर नेहु ।
निजपद भगति देइ प्रभु, पुनि दूसर वर देहु १६० ॥
तव माया बस जीव जड, संतत फिरैं भुलान ।
तेहिपर क्रोध न करिय प्रभु, कृपासिंधु भगवान १६१ ॥
शंकर दीनदयाल अब, येहि पर होहु कृपाल ।
सापअनुग्रह होइ जेहि, नाथ थोरेही काल १६२ ॥

यहिकर होइ परम कल्याना * सोइ करहु अब कृपानिधाना
बिप्र गिरा सुनि परहित सानी * एवमस्तु इति भइ नभ बानी
जदपि कीन्ह येहिं दारुन पापा * मैं पुनि दीन्हि क्रोधकरि सापा
तदपि तुम्हारि साधुता देषी * करिहौं येहिपर कृपा बिसेषी
छमासील जे पर उपकारी * ते द्विज मोहिं प्रिय जथाषरारी
मोर साप द्विज ब्यर्थ न जाइहि * जन्मसहस्र अवसि यह पाइहि
जन्मत मरत दुसह दुष होई * यहि स्वल्पौ नाहिं ब्यापिहि सोई
कवनेउँ जन्म मिटिहि नहिं ज्ञाना * सुनहि सूद्र मम वचन प्रमाना
रघुपतिपुरी जन्म तव भयेऊ * पुनि तइँ मम सेवा मन दयेऊ
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरे * रामभक्ति उपजिहि उर तोरे
सुनु मम बचन सत्य अब भाई * हरितोषन ब्रत द्विज सेवकाई
अब जनि करेहि बिप्र अपमाना * जानेसु सत अनंत समाना
इंद्र कुलिस मम सूल बिसाला * काल दंड हरिचक्र कराला
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई * बिप्रद्रोह पावक सो जरई
अस बिबेक राषेहु मन माहीं * तुम कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं
औरौ येक आसिषा मोरी * अप्रतिहत गति होइहि तोरी

दो०सुनि सिवबचन हरषि गुरु, एवमस्तु इति भाषि।
मोहिं प्रबोधि गयेउ गृह, शंभुचरन उर राषि १६३॥
प्रेरित काल सुबिंध्यगिरि, जाइ भयेउँ मैं ब्याल।
पुनि प्रयास बिनु सो तनु, तजेउँ गयें कछुकाल १६४॥
जोइ तनु धरौं तजौं पुनि, अनायास हरिजान।
जिमि नूतन पट पहिरैं, नर परिहरै पुरान १६५॥
सिव राषी स्रुतिनीति अरु, मैं नहिं पावा क्लेस।
येहि बिधि धरेउँ बिबिधितनु, ज्ञान न गयेउ षगेस १६६॥

त्रिजगदेव नर जोइ तनु धरऊं * तहँ तहँ राम भजन अनुसरऊं
येक सूल मोहि बिसर न काऊ * गुरुकर कोमल सीलसुभाऊ
चर्म देहँ द्विजकै मै पाई * सुरदुर्लभ पुरान स्रुति गाई
षेलौं तहू बालकन्ह मीला * करौं सकल रघुनायक लीला
प्रौढ भये मोहि पिता पढावा * समुझौं सुनौं गुनौं नहि भावा
मनते सकल बासना भागी * केवल रामचरन लय लागी
कहु षगेस अस कवन अभागी * षरी सेव सुरधेनुहिं त्यागी
प्रेममगन मोहि कछु न सोहाई * हारेउ पिता पढाइ पढाई
भये कालबस जब पितु माता * मइँबन गयेउँ भजन जनत्राता
जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावौं * आस्रम जाइ जाइ सिरु नावौं
बूझौं तिनहिं रामगुन गाहा * कहहिं सुनौं हरषित षगनाहा
सुनत फिरौं हरिगुन अनुबादा * अब्याहतगति संभु प्रसादा
छूटी त्रिबिधि ईषना गाढी * येक लालसा उर अति बाढी
राम चरन बारिज जब देषौं * तब निज जन्म सफल करिलेषौं

१ दुःशीलोऽपिद्विजःपूज्यो न शूद्रो विजितेन्द्रियः। दुष्टां गां कः परित्यज्य अर्चैत्शीलवतींखरीम्॥

जेहि पूछौं सोइ मुनि अस कहई * ईस्वर सर्बभूत मय अहई
निर्गुनमत नहिं मोहि सोहाई * सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई
दो० गुरुके बचन सुरति करि, रामचरन मनलाग।
रघुपति जस गावतफिरौं, छिन छिन नवअनुराग १६७॥
मेरु सिषर बट छाया, मुनि लोमस आसीन।
देषि चरन सिरुनायेउँ, बचन कहेउँ अति दीन १६८॥
सुनि मम बचन बिनीतमृदु, मुनि कृपाल षगराज।
मोहि सादर पूँछत भये, द्विज आयेहु केहिकाज १६९॥
तब मैं कहा कृपानिधि, तुम्ह सर्वज्ञ सुजान।
सगुन ब्रह्म अवराधन, मोहि कहहु भगवान १७०॥
तब मुनीस रघुपति गुनगाथा * कहे कछुक सादर षगनाथा
ब्रह्म ज्ञान रत मुनि बिज्ञानी * मोहि परम अधिकारी जानी
लागे करन ब्रह्म उपदेसा * अज अद्वैत अगुन हृदयेसा
अकल अनीह अनाम अरूपा * अनुभवगम्य अषंड अनूपा
मनगोतीत अमल अबिनासी * निर्बिकार निरवधि सुषरासी
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा * बारि बीचि इव गावहिं बेदा
बिबिधिभाँतिमोहिमुनिसमुझावा * निर्गुनमत मम हृदय न आवा
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा * सगुन उपासन कहहु मुनीसा
रामभगति जल मम मनमीना * किमि बिलगाइ मुनीस प्रबीना
सोइ उपदेस कहहु करि दाया * निज नयनन्हि देषौं रघुराया
भरि लोचन बिलोकि अवधेसा * तब सुनिहौं निर्गुन उपदेसा
मुनिपुनि कहि हरिकथा अनूपा * षंडि सगुनमत अगुन निरूपा
तब मैं निर्गुनमत करि दूरी * सगुन निरूपौं करि हठ भूरी

उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा * मुनितन भये क्रोधको चीन्हा
सुनु प्रभु बहुत अवज्ञा किये * उपज क्रोध ज्ञानिहुँ के हिये
अति संघर्षन जौं कर कोई * अनल प्रगट चंदन ते होई

दो० बारंबार सकोप मुनि, करै निरूपन ज्ञान।
मै अपने मन बैठ तब, करौं बिबिधि अनुमान १७१॥
क्रोध कि द्वैत बुद्धिबिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान।
माया सब परछिन्न जड, जीव कि ईश समान १७२॥

कबहुँ कि दुष सब कर हित ताके * तेहि कि दरिद्र परसमनि जाके
परद्रोही कि होहि निःसंका * कामी पुनि कि रहहि अकलंका
बंस कि रह द्विजअनहित कीन्हे * कर्म कि होहिं स्वरूपहिं चीन्हे
काहू सुमतिकि षलसँगजामी * सुभगति पाव कि परत्रियगामी
भव कि परहिं परमात्मा बिंदक * सुषी कि होहिं कबहुँ हरिनिंदक
राजु कि रहै नीति बिनु जाने * अघ कि रहहिं हरिचरित बषाने
पावन जस कि पुन्य बिनु होई * बिनु अघ अजस कि पावै कोई
लाभ किकछु हरिभगतिसमाना * जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना
हानि कि जग येहिसमकछुभाई * भजिय न रामहिं नरतनु पाई
अघ कि पिसुनतासमकछुआना * धर्म कि दया सरिस हरिजाना
येहिबिधिअमितिजुगतिमनगुनऊं * मुनिउपदेस न सादर सुनऊं
पुनि पुनि सगुन पच्छ मै रोपा * तब मुनि बोलेउ बचन सकोपा
मूढ परम सिष देउँ न मानसि * उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनासि
सत्य बचन बिस्वास न करही * बायस इव सबही ते डरही
सठ स्वपच्छ तव हृदय बिसाला * सपदि होहि पच्छी चंडाला
लीन्ह साप मै सीस चढाई * नहिं कछु भय न दीनता आई

दो॰ तुरत भयेउँ मैं काग तब, पुनि मुनिपद सिरु नाइ।
सुमिरि राम रघुबंसमनि, हरषित चलेउँ उडाइ १७३॥
उमा जे रामचरन रत, बिगत काम मद क्रोध।
निजप्रभुमयदेषहिजगत, केहिमनकरहिंबिरोध १७४॥
सुनु षगेस नहिं कछु रिषिदूषन * उर प्रेरक रघुबंस बिभूषन
कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी * लीन्हीं प्रेम परीच्छा मोरी
मनबचकर्ममोहिंनिजजनजाना * मुनि मति पुनि फेरी भगवाना
रिषि मम महतसीलता देषी * रामचरन बिस्वास बिसेषी
अतिबिसमयपुनिपुनिपछिताई * सादर मोहिं मुनि लीन्ह बोलाई
ममपरितोषबिबिधिबिधिकीन्हा * हरषित राममंत्र तब दीन्हा
बालक रूप राम कर ध्याना * कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना
सुंदर सुषद मोहि अति भावा * सो प्रथमहिं मैं तुम्हहि सुनावा
मुनिमोहि कछुककाल तहँ राषा * रामचरित मानस तब भाषा
सादर मोहि यह कथा सुनाई * पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई
रामचरित सर गुप्त सुहावा * संभुप्रसाद तात मैं पावा
तोहि निज भगत रामकर जानी * तातें मैं सब कहेउँ बषानी
राम भगति जिन्हके उर नाहीं * कबहुँ न तात कहिय तिन्हपाहीं
मुनिमोहिंबिबिधिभाँतिसमुझावा * मइँ सप्रेम मुनिपद सिरु नावा
निज करकमल परसि ममसीसा * हरषित आसिष दीन्हि मुनीसा
रामभगति अबिरल उर तोरे * बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे

दो॰ सदा राम प्रिय होब तुम्ह, सुभ गुनभवन अमान।
काम रूप इच्छा मरन, ज्ञान बिराग निधान १७५॥
जेहि आस्रम तुम्ह बसहु पुनि, सुमिरत श्रीभगवंत।

ब्यापिहि तहँ न अबिद्या, जोजन येक प्रजंत १७६॥

काल कर्म गुन दोष स्वभाऊ * कछुदुष तुम्हहिं न ब्यापिहि काऊ
रामरहस्य ललित बिधि नाना * गुप्त प्रगट इतिहास पुराना
बिनु श्रम तुम सब जानब सोऊ * नित नव नेहँ राम पद होऊ
जो इच्छा करिहहु मनमाहीं * हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं
सुनिमुनि आसिष सुनु मतिधीरा * ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा
एवमस्तु तव बच मुनिज्ञानी * यह मम भगत कर्म मन बानी
सुनि नभ गिरा हरषमोहि भयेऊ * प्रेममगन सब संसय गयेऊ
करि बिनती मुनि आयसु पाई * पदसरोज पुनि पुनि सिरुनाई
हरष सहित येहि आस्रम आयेउँ * प्रभुप्रसाद दुर्लभ बर पायेउँ
इहां बसत मोहि सुनु षगईसा * बीते कलप सात अरु बीसा
करौं सदा रघुपति गुनगाना * सादर सुनहिं बिहंग सुजाना
जब जब अवधपुरी रघुबीरा * धरहिं भक्तहित मनुजसरीरा
तब तब जाइ रामपुर रहऊं * सिसुलीला बिलोकिसुष लहऊं
पुनि उर राषि राम सिसुरूपा * निज आश्रम आवौं षगभूपा
कथा सकल मैं तुम्हहिं सुनाई * काग देह जेहि कारन पाई
कहेउँ तात सब प्रस्न तुम्हारी * रामभगति महिमा अतिभारी

दो० तातें यह तन मोहि प्रिय, भयेउ राम पद नेह।
निज प्रभु दरशन पायेऊं, गये सकल संदेह १७७॥

मासपारायण दिन २९

भगतपच्छ हठ करि रहेउँ, दीन्हि महारिषि साप।
मुनि दुर्लभ बर पायेउँ, देषहु भजन प्रताप १७८॥

जे असि भगति जानि परिहरहीं * केवल ज्ञान हेतु स्रम करहीं

ते जड कामधेनु गृह त्यागी * षोजत आक फिरिहिं पयलागी
सुनु षगेस हरि भगति बिहाई * जे सुष चाहहिं आन उपाई
ते सठ महासिंधु बिनु तरनी * पैरि पार चाहहिं जड करनी
सुनि भुसुंडि के बचन भवानी * बोलेउ गरुड हरषि मृदुबानी
तव प्रसाद प्रभु मम उरमाहीं * संसय सोक मोह भ्रम नाहीं
सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा * तुम्हरी कृपा लहेउँ बिस्रामा
येक बात प्रभु पूंछेउँ तोही * कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही
कहहिं संत मुनि बेद पुराना * नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान समाना
सोइमुनितुम्हसनकहेउगोसाँई * नहिं आदरेहु भगति की नाई
ज्ञानहिं भगतिहि अंतर केता * सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता
सुनि उरगारिबचन सुष माना * सादर बोलेउ काग सुजाना
भगतिहि ज्ञानहिं नहिं कछु भेदा * उभै हरहिं भवसंभव षेदा
नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर * सावधान सोउ सुनु बिहंगवर
ज्ञान बिराग जोग बिज्ञाना * ये सब पुरुष सुनहुँ हरिजाना
पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती * अबला अबल सहज जड जाती

दो० पुरुष त्यागि सक नारि हि, जो बिरक्त मतिधीर।
नतु कामी बिषया बस, बिमुष जो पद रघुबीर १७९॥

सो० सोउ मुनि ज्ञान निधान, मृगनयनीबिधुमुष निरषि।
बिबस होइ हरिजान, नारि बिस्न माया प्रगट १६॥

इहां न पच्छपात कछु राषौं * बेद पुरान संत मत भाषौं
मोह न नारि नारि के रूपा * पन्नगारि यह रीति अनूपा
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ * नारि बर्ग जानै सब कोऊ
पुनि रघुबीरहि भगति पियारी * माया षलु नरतकी बिचारी

भगतिहि सानुकूल रघुराया * तातें तेहि डरपति अति माया
राम भगति निरुपम निरुपाधी * बसै जासु उर सदा अबाधी
तेहि बिलोकि माया सकुचाई * करि न सकै कछु निजप्रभुताई
अस बिचारि जे मुनि बिज्ञानी * जाचहिं भगति सकलसुषषानी
दो०यह रहस्य रघुनाथ कर, बेगि न जानै कोइ।
जो जानै रघुपति कृपा, सपनेउ मोह न होइ॥ १८०॥
औरौ ज्ञान भगति कर, भेद सुनहु सुप्रबीन।
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अबिछीन॥ १८१॥
सुनहु तात यह अकथ कहानी * समुझत बनै न जाइ बषानी
ईस्वर अंस जीव अबिनासी * चेतन अमल सहज सुषरासी
सो माया बस भयेउ गोसाँई * बँध्यो कीर मर्कट की नाईं
जड चेतनहिं ग्रंथि परिगई * जदपि मृषा छूटत कठिनई
तबते जीव भयेउ संसारी * छूट न ग्रंथि न होइ सुषारी
श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई * छूट न अधिकअधिक अरुझाई
जीव हृदय तम मोह बिसेषी * ग्रंथि छूट किमि परै न देषी
अस संजोग ईस जब करई * तबहुँ कदाचित सो निरुअरई
सात्विक स्रद्धा धेनु सुहाई * जौ हरिकृपा हृदय बस आई
जपतपब्रतजम नियम अपारा * जे स्रुतिकह सुभ धर्म अचारा
तेइ तृन हरित चरै जब गाई * भावबच्छ सिसु पाइ पन्हाई
नोइँ निबृत्ति पात्र बिस्वासा * निर्मल मन अहीर निज दासा
परम धर्ममय पय दुहि भाई * अवटै अनल अकाम बनाई
तोष मरुत तब छमा जुडावै * धृतिसम जावन देइ जमावै

१—आस्तिक्यं सात्विकीश्रद्धा॥

मुदिता मथै बिचार मथानी * दम अधार रजु सत्य सुबानी
तब मथि काढ़िलेइ नवनीता * बिमल बिराग सुभग सपुनीता
दो०जोग अगिनि करि प्रगट तब, कर्म सुभासुभ लाइ।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममता मल जरि जाइ १८२॥
तब बिज्ञान रूपनी, बुद्धि बिपद घृत पाइ।
चित्त दिया भरि धरै दृढ़, समतादिअटिवनाइ १८३॥
तीनि अवस्था तीनि गुन, तेहि कपास ते काढ़ि।
तूल तुरीय सवाँरि पुनि, बाती करै सुगाढ़ि १८४॥
सो० येहि बिधि लेसै दीप, तेजरासि बिज्ञानमय।
जातहिं जासु समीप, जरहिंमदादिकसलभ सब १७॥
सोऽहमस्मि[1] इति वृत्ति अषंडा * दीप सिषा सोइ परम प्रचंडा
आतम अनुभव सुषसुप्रकासा * तब भवमूल भेद भ्रम नासा
प्रबल अबिद्याकर परिवारा * मोह आदि तम मिटै अपारा
तब सोइ बुद्धि पाइ उजिआरा * उर गृह बैठि ग्रंथि निरुआरा
छोरन ग्रंथि पाव जौं सोई * तौ यह जीव कृतारथ होई
छोरत ग्रंथि जानि षगराया * बिघ्न अनेक करै तब माया
रिद्धिं सिद्धि प्रेरै बहु भाई * बुद्धिहि लोभ दिषावहि आई
कलबलछलकरिजाहिंसमीपा * अंचल बात बुझावहिं दीपा
होइ बुद्धि जौं परम सयानी * तिन्हतनाचितवनअनहितजानी
जौं तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी * तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी
इंद्री द्वार झरोषा नाना * तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना
आवत देषहिं बिषय बयारी * ते हठि देहिं कपाट उघारी

१—अहं ब्रह्मास्मि इति महा वाकयम्॥

जब सो प्रभंजन उर गृह जाई * तबहिं दीप बिज्ञान बुझाई
ग्रंथि न छूटि मिटा सुप्रकासा * बुद्धि बिकल भइ बिषय बतासा
इंद्रिन्ह सुरन्ह न ज्ञान सुहाई * बिषय भोग पर प्रीति सदाई
बिषय समीर बुद्धिकृत भोरी * तेहि बिधि दीप को बार बहोरी

दो॰ तब फिरि जीव बिबिधिबिधि, पावै संसृति क्लेस।
हरि माया अति दुस्तर, तरि न जाइ बिहगेस १८५॥
कहतकठिनसमुझतकठिन, साधत कठिन बिबेक।
होइ घुनाक्षर न्याय जौ, पुनि प्रत्यूह अनेक १८६॥

ज्ञानक पंथ कृपान कै धारा * परत षगेस होइ नहिं बारा
जो निर्बिघ्न पंथ निर्बहई * सो कैवल्य परमपद लहई
अति दुर्लभ कैवल्य परमपद * संत पुरान निगम आगम बद
रामभजत सोइ मुकुति गोसाँई * अन इच्छित आवै बरिआँई
जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई * कोटि भाँति कोउ करइ उपाई
तथा मोच्छ सुष सुनु षगराई * रहि न सकै हरिभगति बिहाई
अस बिचारि हरिभगत सयाने * मुक्ति निरादर भगति लुभाने
भगति करत बिनु जतन प्रयासा * संसृति मूल अबिद्या नासा
भोजन करिय तृप्तिहितलागी * जिमिसोअसनपचवइजठरागी
असिहरिभगतिसुगमसुषदाई * को अस मूढ न जाहि सुहाई

दो॰ सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।
भजहु रामपद पंकज, अस सिद्धांत बिचारि १८७॥
जो चेतन कहँ जड करै, जडहि करै चैतन्य।
अस समरथ रघुनायकहि, भजहिं जीव ते धन्य १८८॥

कहेउँ ज्ञान सिद्धांत बुझाई * सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई

रामभगति चिंतामनि सुंदर * बसै गरुड जाके उर अंतर
परम प्रकास रूप दिन राती * नहिं कछु चहिय दिया घृत बाती
मोह दरिद्र निकट नहिं आवा * लोभवात नहिं ताहि बुझावा
प्रबल अबिद्या तम मिटिजाई * हारहिं सकल सलभ समुदाई
षलकामादि निकट नहिं जाहीं * बसै भगति जाके उरमाहीं
गरल सुधासम अरि हित होई * तेहि मनि बिनु सुष पाव न कोई
ब्यापहिं मानस रोग न भारी * जिन्हके बस सब जीव दुषारी
रामभगतिमनि उर बस जाके * दुष लवलेस न सपनेहु ताके
चतुर सिरोमनि तेइ जगमाहीं * जे मनिलागि सुजतन कराहीं
सोमनिजदपिप्रगटजगअहई * रामकृपा बिनु नहिं कोउ लहई
सुगम उपाइ पाइबे केरे * नर हत भाग्य देहिं भटभेरे
पावन पर्वत बेद पुराना * रामकथा रुचिराकर नाना
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी * ज्ञान बिराग नयन उरगारी
भावसहित षोजै जो प्रानी * पाव भगति मनि सब सुषषानी
मोरे मन प्रभु अस बिस्वासा * राम ते अधिक राम कर दासा
राम सिंधु घन सज्जन धीरा * चंदन तरु हरि संत समीरा
सबकर फल हरिभगति सुहाई * सो बिनु संत न काहूँ पाई
असबिचारिजोइकरसतसंगा * रामभगति तेहि सुलभ बिहंगा

दो॰ ब्रह्म पयोनिधि मंदर, ज्ञान संत सुर आहि।
कथा सुधा मथि काढहिं, भगति मधुरता जाहि १८९ ॥
बिरति चर्म असिज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि।
जयपाइय सो हरि भगति, देषु षगेस बिचारि १९० ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ षगराऊ * जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ

नाथ मोहिं निज सेवक जानी * सप्त प्रस्न मम कहहु बषानी
प्रथमहिं कहहु नाथमतिधीरा * सब ते दुर्लभ कवन सरीरा
बड दुष कवन कवन सुषभारी * सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी
संत असंत मरम तुम्ह जानहु * तिन्हकर सहज सुभाउ बषानहु
कवनपुन्यस्रुतिबिदितबिसाला * कहहु कवन अघ परम कराला
मानस रोग कहहु समुझाई * तुम्ह सरबज्ञ कृपा अधिकाई
तात सुनहु सादर अति प्रीती * मैं संछेप कहौं यह नीती
नर तन सम नहिं कवनिउँ देही * जीव चराचर जाँचत जेही
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी * ज्ञान बिराग भगति सुभ देनी
सो तनुधरिहरिभजहिंनजेनर * होहिं बिषयरत मंद मंदतर
कांचु किरिच बदले ते लेहीं * करतें डारि परस मनि देहीं
नहिं दरिद्रसम दुष जग माहीं * संत मिलन सम सुष जग नाहीं
पर उपकार बचन मन काया * संत सहज सुभाव षगराया
संत सहहिं दुष पर हितलागी * परदुष हेतु असंत अभागी
भूर्जतरू सम संत कृपाला * परहितनितसह बिपतिबिसाला
सन इव षल पर बंधन करई * षाल कढाइ बिपति सहि मरई
षल बिनु स्वारथ परअपकारी * अहि मूषक इव सुनु उरगारी
पर संपदा बिनासि नसाहीं * जिमिससिहतिहिमउपलबिलाहीं
दुष्ट उदय जग आरति हेतू * जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू
संत उदय संतत सुषकारी * बिस्व सुषद जिमि इंदु तमारी
परमधर्म स्रुतिबिदितअहिंसा * परनिंदा सम अघ न गरीसा
हर गुरु निंदक दादुर होई * जन्म सहस्त्र पाव तन सोई
द्विज निंदक बहुनरक भोगकरि * जग जन्मै बायस सरीर धरि

सुर स्रुतिनिंदक जे अभिमानी * रौरव नरक परहिं ते प्रानी
होइ उलूक संत निंदारत * मोह निसा प्रिय ज्ञानभानुगत
सबकै निंदा जे जड करहीं * ते चमगादुर होइ अवतरहीं
सुनहु तात अब मानस रोगा * जिन्हते दुष पावहिं सबलोगा
मोह सकल ब्याधिनकर मूला * तिन्हते पुनि उपजहिं बहु सूला
काम बात कफ लोभ अपारा * क्रोध पित्त नित छाती जारा
प्रीति करहिं जो तीनिउँ भाई * उपजै सन्निपात दुषदाई
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना * ते सब सूल नाम को जाना
ममता दादु कंडु इरषाई * हरष बिषाद गरह बहुताई
पर सुष देषि जरनि सोइ छई * कुष्ठ दुष्टता मन कुटिलई
अहंकार अति दुषद डमरुआ * दंभ कपट मद मान नेहरुआ
तृस्ना उदर बृद्धि अतिभारी * त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी
जुगबिधिज्वरमत्सरअबिबेका * कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका

दो०येक ब्याधिबसनर मरहिं, ये असाधि बहुब्याधि।
पीडहिं संतत जीवकहुँ, सोकिमि लहइसमाधि १९१॥
नेम धर्म आचार तप, ज्ञान जज्ञ जप दान।
भेषज पुनि कोटिन्हनहिं, रोग जाहिं हरिजान १९२॥

यहिबिधिसकलजीवजगरोगी * सोक हरष भय प्रीति बियोगी
मानस रोग कछुक मैं गाये * हहिं सब के लषि बिरलेन्ह पाये
जानेतें छीजहिं कछु पापी * नास न पावहिं जन परितापी
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे * मुनिहुँ हृदय का नर बापुरे
रामकृपा नासहिं सब रोगा * जो येहि भाँति बनै संजोगा

१- षाज्जु मैं जल भरना फेरि फूटना गरह है।

सदगुरु बैद बचन बिस्वासा * संयम यह न बिषय कै आसा
रघुपति भगति सजीवन मूरी * अनोपान श्रद्धा मति पूरी
एहि बिधि भलेही रोग नसाहीं * नाहिंतौ जतन कोटि नहिं जाहीं
जानिय तब मन बिरुज गोसांई * जब उर बल बिराग अधिकाई
सुमति छुधा बाढै नित नई * बिषय आस दुर्बलता गई
बिमलज्ञानजलजबसो नहाई * तब रह रामभगति उर छाई
शिवअजसुकसनकादिकनारद * जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद
सबकर मत षगनायक येहा * करिय रामपद पंकज नेहा
स्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं * रघुपति भगति बिना सुष नाहीं
कमठ पीठ जामहिं बरु बारा * बंध्या सुत बरु काहुहि मारा
फूलहिं नभ बरु बहुबिधिफूला * जीव न लह सुष हरिप्रतिकूला
तृषा जाइ बरु मृगजल पाना * बरु जामहिं सससीस बिषाना
अंधकार बरु रबिहि नसावै * रामबिमुष न जीव सुष पावै
हिमि तें अनल प्रगट बरु होई * बिमुष राम सुष पाव न कोई

दो०बारि मथे घृत होय बरु, सिकता तें बरु तेल।
बिनु हरिभजन न भवतरिय, यह सिद्धांत अपेल १९३॥
मसकहि करै बिरंचि प्रभु, अजहि मसक ते हीन।
अस बिचारि तजि संसय, रामहिं भजहिं प्रबीन १९४॥

श्लो०बिनिश्चितं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे।
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरंति ते १९५॥

कहेउ नाथ हरिचरित अनूपा * ब्यास समास स्वमतिअनुरूपा
स्रुति सिद्धांत इहै उरगारी * राम भजिय सब काज बिसारी
प्रभु रघुपति तजिसेइय काही * मोहि से सठ पर ममता जाही

तुम्ह बिज्ञानरूप नहिं मोहा * नाथ कीन्हि मोपर अति छोहा
पूंछेउ रामकथा अति पावनि * शुक सनकादि शंभुमनभावनि
सतसंगति दुर्लभ संसारा * निमिष दंड भरि येको बारा
देषु गरुड निज हृदय बिचारी * मैं रघुबीर भजन अधिकारी
सकुनाधमसब भाँति अपावन *प्रभुमोहिंकीन्हाबिदित जगपावन

दो० आजु धन्य मैं धन्य अति, जद्यपि सब बिधि हीन।
निजजन जानि राममोहि, संत समागम दीन १९६॥
नाथ जथामति भाषेउँ, राषेउँ नहिं कछु गोइ।
चरित सिंधु रघुनायक, थाह कि पावै कोइ १९७॥

सुमिरि रामके गुनगन नाना * पुनि पुनि हरष भसुंड सुजाना
महिमा निगम नेति करिगाई * अतुलित बल प्रताप प्रभुताई
सिव अज पूज्य चरन रघुराई * मोपर कृपा परम मृदुलाई
अस सुभाव कहुँ सुनौं न देषौं * केहि षगेस रघुपतिसम लेषौं
साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी * कबि कोबिद कृतज्ञ संन्यासी
जोगी सूर सुतापस ज्ञानी * धर्मनिरत पंडित बिज्ञानी
तरहिं न बिनु सेये मम स्वामी * राम नमामि नमामि नमामी
सरन गये मोसे अघरासी * होहिं शुद्ध नमामि अबिनासी

दो० जासु नाम भवभेषज, हरन घोर त्रयसूल।
सोकृपाल मोहि तोहिपर, सदा रहौ अनुकूल १९८॥
सुनि भसुंडिके बचन सुभ, देषि रामपद नेह।
बोलेउ प्रेम सहित गिरा, गरुड बिगतसंदेह १९९॥

मै कृतकृत्य भयेउँ तव बानी * सुनि रघुबीर भगति रससानी
रामचरन नूतन रति भई * मायाजनित बिपति सब गई

मोहजलधि बोहित तुम्ह भये * मोकह नाथ बिबिधि सुष दये
मोपहिं होइ न प्रतिउपकारा * बंदौं तव पद बारहिं बारा
पूरन काम राम अनुरागी * तुम्ह सम तात न कोइ बडभागी
संत बिटप सरिता गिरि धरनी * परहित हेतु सबन्ह कै करनी
संत हृदय नवनीत समाना * कहा कबिन्ह परि कहै न जाना
निज परिताप द्रवै नवनीता * परदुष द्रवहि संत सुपुनीता
जीवन जन्म सुफल मम भयेऊ * तव प्रसाद संसय सब गयेऊ
जानेहु सदा मोहि निज किंकर * पुनि पुनि उमा कहइ बिहंगबर

दो०तासु चरन सिरुनायकरि, प्रेमसहित मतिधीर।
गयउ गरुड बैकुंठ तव, हृदयराषि रघुबीर २००॥
गिरिजा संत समागम, सम न लाभ कछु आन।
बिनु हरिकृपा न होइ सो, गावहिं बेद पुरान २०१॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा * सुनत स्रवन छूटहि भव पासा
प्रनत कलपतरु करुनापुंजा * उपजै प्रीति रामपद कंजा
मनक्रमबचनजनितअघजाई * सुनहिं जे कथा स्रवन मनलाई
तीर्थाटन साधन समुदाई * जोग बिराग ज्ञान निपुनाई
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना * संजम दम जप तप मख नाना
भूत दया द्विज गुरु सेवकाई * बिद्या बिनय बिबेक बडाई
जहँ लगि साधन बेद बषानी * सबकर फल हरिभक्ति भवानी
सो रघुनाथ भक्ति स्रुति गाई * रामकृपा काहू यक पाई

दो०मुनि दुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं बिनहिं प्रयास।
जे यह कथा निरंतर, सुनहिं मानि बिस्वास २०२॥

सोइ सर्बज्ञ गुनी सोइ ज्ञाता * सोइ महिमंडित पंडित दाता

धर्मपरायन सोइ कुलत्राता * राम चरन जाकर मन राता
नीतिनिपुन सोइ परम सयाना * स्रुति सिद्धांत नीक तेहि जाना
सोइ कबि कोबिद सोइ नरधीरा * जो छल छांडि भजै रघुबीरा
धन्य देस सो जहां सुरसरी * धन्य नारि पतिब्रत अनुसरी
धन्य सो भूप नीति जो करई * धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी * धन्य पुन्यरत मति सोइ पाकी
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा * जन्म धन्य द्विज भक्ति अभंगा

दो० सोइ कुल धन्य उमा सुनु, जगत पूज्य सुपुनीत।
श्री रघुबीर परायन, जेहि नर उपज बिनीत २०३॥

मति अनुरूप कथा मैं भाषी * जद्यपि प्रथम गुप्त करि राषी
तव मन प्रीति देषि अधिकाई * तौ मैं रघुपति कथा सुनाई
यह नहिं कहिय सठहि हठशीलहि * जो मन लाइ न सुनु हरिलीलहि
कहिय न लोभिहि क्रोधिहि कामिहिं * जो न भजइ सचराचर स्वामिहिं
द्विजद्रोहिहि न सुनाइय कबहूं * सुरपति सरिस होइ नृप जबहूं
रामकथा के तेइ अधिकारी * जिन्हके सतसंगति अति प्यारी
गुरुपद प्रीति नीतिरत जेई * द्विज सेवक अधिकारी तेई
ताकहँ यह बिसेष सुषदाई * जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई

दो० रामचरन रति जो चह, अथवा पद निर्बान।
भावसहित सो यहि कथा, करौ स्रवनपुट पान २०४॥

राम कथा गिरिजा मैं बरनी * कलिमलसमनि मनोमल हरनी
संसृत रोग सजीवन मूरी * राम कथा गावहिं स्रुति सूरी
एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना * रघुपति भगति केर पंथाना
अति हरिकृपा जाहि पर होई * पाउं देइ यहि मारग सोई

मन कामना सिद्धि नर पावा * जे यह कथा कपट तजि गावा
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं * ते गोपद इव भवनिधि तरहीं
सुनि सब कथा हृदय अति भाई * गिरिजा बोली गिरा सुहाई
नाथ कृपा मम गत संदेहा * रामचरन उपजेउ नव नेहा

दो० मैं कृतकृत्य भइउँ अब, तव प्रसाद बिस्वेस।
उपजी राम भगति दृढ, बीते सकल कलेस २०५॥

यह सुभ संभु उमा संबादा * सुष संपादन समन बिषादा
भव भंजन गंजन संदेहा * जन रंजन सज्जन प्रिय येहा
राम उपासक जे जग माहीं * यह सम प्रिय तिनके कछु नाहीं
रघुपति कृपा जथामति गावा * मैं यह पावन चरित सुहावा
येहि कलिकाल न साधन दूजा * जोग जज्ञ जप तप ब्रत पूजा
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं * संतत सुनिय राम गुनग्रामहिं
जासु पतितपावन बड बाना * गावहिं कबि स्रुति संत पुराना
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई * राम भजे गति केहिं नहिं पाई

छंद

पाई न केहि गति पतितपावन रामभजि सुनु सठमना।
गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि षल तारे घना॥
आभीर जमन किरात षस स्वपचादि अति अघरूप ते।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ३५॥
रघुबंसभूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं।
कलिमल मनोमल धोइ बिनु स्रम रामधाम सिधावहीं॥
सतपंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरे।
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्रीरघुपति हरे ३६॥

सुंदर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो येक राम अकामहित निर्वानप्रद सम आन को॥
जाकी कृपा लवलेसतें मतिमंद तुलसीदास हूं।
पायो परम बिस्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं ३७॥

दो० मोसम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंसमनि, हरहु बिषम भवभीर २०६॥
कामिहिंनारि पियारि जिमि, लोभिहिप्रियजिमिदाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रियलागहुमोहि राम २०७॥

मास पारायण दिन ३०

यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम्।
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतस्स्वान्तस्तमः शान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ५॥
पुण्यं पापहरं सदाशिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्याऽवगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ६॥

नवाह्न दिन ९

इति श्री रामचरित्र मानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने अविरल
हरिभक्ति संपादनो नाम सप्तमः सोपानः॥ ७॥

आरती ॥

आरति श्रीरामायनजी की। कीरति कलित ललित सियपी की ॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिज्ञान बिसारद ॥
सुकसनकादि सेस अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥ १ ॥
गावत बेद पुरान अष्टदस। छवो सास्त्र सब ग्रंथन को रस ॥
मुनिजन-धन संतन को सर्बस। सारअंस सम्मत सबही की ॥ २ ॥
गावत संतत संभु भवानी। अरु घट संभव मुनि बिज्ञानी ॥
ब्यास आदि कबिबर्ज बषानी। कागभसुंडि गरुड के ही की ॥ ३ ॥
कलिमलहरनि बिषयरस फीकी। सुभग सिंगार भक्ति जुबती की ॥
दलनि रोग भव मूरि अमीकी। तात मातु सबबिधि तुलसी की ॥ ४ ॥

* इति आरती संपूर्णम् *

अथ सरय्वष्टकं प्रारभ्यते ॥

जननि सरयु देवि त्वज्जलं ब्रह्मलोकात् क्षितितलमुपनीतं ब्रह्मपुत्रर्षभेन।
विमलमतिवशिष्ठेनात्मनो योगसिद्ध्यै रघुवरकुलवृद्ध्यै रामगङ्गे प्रसीद ॥ १ ॥
त्वदभिशरणमात्राज्जन्तवः सर्वं एते सरयु जय जयेति ध्यानवन्तः पठन्तः।
परम पदमपन्द्रैरर्थ्यमानं वरेण्यं विगतविषयशोका दिव्यदेहा लभन्ते ॥ २ ॥
कैलासाश्रमवासिनो भगवतः श्रीचन्द्रमौलेः पुरा रिक्तं वीक्ष्य कपर्दिकं सुरगजैर्गाङ्गं यदाप्तं जलम्।
तत्कालं विधिपात्रतो मुनिवरैरानीय संस्थापितं शम्भोःसन्निहते जलं तदमलं ख्यातं सुरैःसारवम् ३
तद्वाशिष्ठजलं त्वदीयममरैः संप्रार्थितं नित्यशः श्रीरामेण मनीषणःस्वनगरे संवीक्ष्यतो योजितम्।
ब्रह्मैकान्तनितान्तसंस्थितमतौ पूज्ये वशिष्ठैर्थितान् पूज्ये श्रीशिवसन्निधिरुपगतं प्राप्तं पृथिव्यां पुनः ४
भगवति तव तीरेऽयोध्यया विध्यनीरे कुसुमितकरवीरे शुद्धिसौगंधिसीरे।
यदि पतति तरङ्गास्त्वत्पयःप्राप्तपूरे भवति विगतदोषे दिव्यरूपीशरीरे ॥ ५ ॥
सकलकलुषहंत्री स्वर्गसोपानकर्त्री सुरपथमनुगंत्री ब्रह्महत्यादिहंत्री।
सकलसुखविधात्री सिद्धिदात्रीनराणां जयतु जयतु देवी श्रीवशिष्ठस्य पुत्री॥६॥
वाशिष्ठस्त्वत्तटाम्भः कणमणुमितमप्यात्मनो योगसिद्धैः
ये मे जीवाः स्पृशन्ति प्रतिदिनमभयं तत्क्षणाद्यान्ति सिद्धिम्।
भूलोके नागलोगे सुरपतिसदने त्वत्कथाकीर्तनेन
स्नातः प्रातः प्रयान्ति प्रमितामितवचस्कोपि कैवल्यधाम ॥ ७ ॥
त्वत्संगे नागभृंगी भवति शुभतनुः कीर्तिमान्सौकृतान्ते।
त्वत्पूरैः पूर्ण भाग्यो भवति नरवरः कर्मकाण्डप्रसक्तः।
शृंगी भृङ्गी पतङ्गी यदि पतति जले कुञ्जराश्वशृगाला
सर्वे मुक्तात्मदेहा हरिपुरसदने दिव्यदेहं लभन्ते ॥ ८ ॥
स्तोत्रमेतच्च गार्ग्योक्तं सरय्वाष्टकमद्भुतम्। यः पठेत् प्रयतो नित्यं सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥
इति सरय्वष्टकं सम्पूर्णम् ॥

श्रीरामचरित-मानस का शुद्धाशुद्ध-पत्र।

बालकाण्ड।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२३	गुप्त	गुपुत
५	३	दुषदारुन	दारुणदुष
५	१३	भलउ	भलेउ
५	२३	भलउ	भलेउ
७	२३	भनित	भणिति
८	११	भनित	भणिति
८	१६	भनित	भणिति
१०	५	जेहि	तेहि
११	२१	करउँ	करिहिं
१२	४	भनित	भणिति
१३	१६	रामनाम	नामराम
१३	२०	कहि	करि
१४	२२	बाहर	बाहरहुँ
१६	३	अमिति	अमित
१६	११	सकल कुल	सकुलरन
१६	१२	सुर मुनिबर वर	गुनसुरमुनिबर
१८	१६	कहीं	कहुं
२२	१	येह	एहि
२६	४	इव नर	नरइव
३०	२३	तहँ	तहउँ
३४	२२	कृपाअयन	कृपायतन
३८	१८	इक्षित	इच्छित
४१	७	असहित	असव्रत
४३	१०	वरैं	वरौं
४३	११	उपदेसा=महेसा	उपदेसू=महेसू
४६	२	रितुराजू=बिराजू	रितुराजा=बिराजा
५८	४	मनमाहीं=हरपाहीं	अनुमानी=मृदुबानी
६३	१	बिसेषा	असेषा
६४	८	सोहावा=गावा	सुहाए=गाए
७३	२१	परम	धरम
८०	१६	मग	मृग
८५	२१	जोई=सोई	जोऊ=सोऊ
८७	२०	सब	वर
८९	१५	उग्र सो बरनि न जाई	उग्र नहि बरनि सो जाई
९४	३	यह नीती	तेहि रीती
९६	९	लगि जग्य	शुभयज्ञ
१०६	१५	रिषय	विप्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१११	१७	कोऊ नाहीं	कोउन आही
११२	६	उचित	रुचिर
११३	१४	हिय हरष अति	अति हरष हिय
११४	१६	बाग भूप कर	भूपबागवर
११५	१४	दोउ	दुइ
११५	१७	कहहिं	कहइ
११६	१५	भूलि न देहिं कुमारग पाऊ	मन कुपंथ पग धरहि न काऊ
११६	१६	जिय	मन
११६	२१	चीता	चिन्ता
११८	७	चित्र भीतर	चित्त भीती
१२६	७	भुबि भट बिन	बिनुभट भुमि
१२६	२२	डगमगात	डगमगानि
१२८	८	भई मन	बढ़ी अति
१३२	१२	हिय हरषे	मन बिहँसे
१३५	२	पतिकेतू	कुलकेतू
१३७	५	कठु	कटु
१४४	८	भूप	बीर
१४४	१०	सुरासुर	शरासुर
१४४	२०	सब मिलि	दूतन्ह
१५०	२१	समाई	अमाई
१५१	८	उर	हिय
१५७	१६	समधी	साँमध
१७०	५	पुलक	उमगि
१७६	२१	चीर	चैल

अयोध्याकाण्ड ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८६	५	चमर	चरम
१६१	३	जल	जर
१६२	७	जिमि न नवइ फिरि उकठाकाठू	फिरि न नवइ जिमि उकठि कुकाठू
१६६	२	मुनि	मनु
१६६	१०	सो बचन	मृदु वचन
२०४	११	अगम	अगहु
२०६	११	इहै	मिटा
२०६	१२	रघुबंसमनि	रघुबीरमन
२१४	११	चितवन	चितवत
२१६	२१	तुम्हते	तुम्हर
२२०	१०	हरषि	हृदय
२२०	२१	सकल	सफल
२२४	१६	कोउ न काहु	काहु न कोऊ
२२५	४	पन	सपन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३२	११	सनास	सुपास
२३३	६	बड कीन्हे	सब कीन्हे
२३६	१६	बायँ	लायँ
२४१	३	करेउँ	करउँ
२४१	७	जो सृजति पालति हरति जगरुप	जो सृजति जगपालति हरति रुप
२४७	१	बिनुश्रमु	श्रमबिनु
२४६	४	अटकि	अट्ठकि
२५०	११	जीवनु जासु रामु आधीना	जिवन जासु रघुनाथ अधीना
२५३	३	जेहि बिधि कुशलरह	जिहि कुशली रहहिं
२६३	१७	तब तस	तस तब
२६८	१३	तेहि	तहँ
२७५	३	निर्दोष	निर्जोष
२७५	२२	लीन्हा	दीन्हा
२७७	६	मूरतिधं	मूरतिवंत
२७८	१५	नित	अति
२६६	१६	कुटी	पुटी
३००	१	सर सीपी	सरसी सीपि
३०२	१७	पुन्यसि	पुन्यस
३०५	२१	गयेउ	गई
३०६	१०	सब बिनु जल	जल बिनु सब
३११	१०	बिबुधसरि	देवसरि
३२३	३	सुनि सब	सुनि मुनि
३२३	४	काहि गुन दोष	कहि गुण राम

आरण्यकाण्ड ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३३	२२	सचीपति	सचीपति
३४०	१८	पुनि कर	पुनिकरि
३४३	१५	सजोग	सँयोग
३४४	६	चुनवटी	चुनौती
३५८	२२	पगन	पग
३६०	७	सीलान्ह	सीलन्ह

किष्किंधाकाण्ड

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३६५	१७	मतिमंद	मनमन्द
३७६	१७	हम सीता कै सोध बिहीना	हम सीता के सुधि लीन्हे बिना

सुन्दरकाण्ड ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८४	५	सुन्दर भूधर	भूधर सुन्दर
३८४	८	तेही	एही
३८६	६	जाने	जानहिं
३६१	२३	बिकलाई	कदराई
३६८	२२	जंत्रिता	जंत्रित

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४०१	१४	षप्पर	षर्पर
४०४	१६	चले	चलेउ

लंकाकाण्ड ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४१४	११	कुन्दा	कन्दा
४१४	१६	मे	मां
४१५	५	कत	कति
४१७	१६	आये=बँधाये	आयो=बँधायो
४२०	१६	प्रभुताई	मनुसाई
४३३	१५	तोहि अबहीं का करौं बडाई ॥	हतौं न खेत खिलाइ खिलाई ॥
		हतौं न षेत षेलाइ षेलाई ॥	तोहि अबहि का करौं बड़ाई ॥
४४२	४	काउ	कोउ
४५६	२	ताडन	ताडति
४६३	२	भारी	वारी
४७१	३	तेहि निसि सीता पाहिं तब जाई	तेही निसि सीता पहिं जाई
४७१	६	जिहि कृत कनक कपट मृग झूँठा	जिहि कृत कपट कनक मृग झूठा
४७६	४	नुति	निति

उत्तरकाण्ड ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६१	१७	तुरत	तुरित
४६२	२०	जेहि	जो
४६३	८	वरकर	वरकरि
४६७	५	मनिभूषन	वरभूषन
५००	४	जिन्ह के	तिन्ह के
५०४	१४	द्विज सेवक सब नर अरु नारी	विप्र चरण सेवक नर नारी
५०७	१७	सुचरित	सचरित
५१४	४	हितकारी	अधिकारी
५१४	१७	तनुका	तनकर
५२५	२२	समेति	समेत
५२६	११	कहा	कही
५२६	१८	कीन्हि	कीन्ह
५३४	१३	अपर निधि	अपर रिधि
५३७	३	साई	सोई
५३८	१६	कोटिसत	कोटिसम
५४६	१६	सत	संत
५६७	११	निरतस्	निरतं

सरयू अष्टक ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५६८	१३	मपन्द्रिरै	मपीन्द्रैर
,,	१६	मनीषणः	मनीषिणा
,,	२२	वाशिष्ठस्त्व	वाशिष्ठित्व

मूल गोसाईं-चरित का शुद्धाशुद्ध-पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	चेता	त्रेता
२	२७	न	ने
३	३१	जग जान	त्रियजानि
४	१२	रामापुर	राजापुर
५	१६	[पृष्ठ ४ की टिप्पणी के नीचे चाहिए]	
५	३१	मंगल	मंगन
६	३	यह	यहां
७	११	उस	उसे
८	१२	गणेश	गयेश
८	१५	पानिपद्मक	पानिपद्मजा
१०	७	दिखाने	दिखने
२१	२५	विपट	विटप
२३	५	थ	थे
२३	६	नारयण	नारायण
३०	१६	वदे	वेद
३६	१६	छीटन	छीटने
३८	६	दिया	दिये
३६	११	सद के	सदके
३६	१४	खड़ा	खड़े
४५	२२	पांचउ	पांचइ
४६	१५	पाठ	पात
५२	१०	कहेउ	कहेउ पुनि
५३	१८	राधिक	राधिका
५७	१०	कहने	कहनो
६४	६		लागिय नाथ गोहार अपर बल कछु न बिसाता । राखैं हरिके दास कि सिरजनहार विधाता ॥
६७	१६	हेतु	हेत
७२	७	ग्रन्थमनि	ग्रन्थननि
७४	२२	सो० २०	सो० १६
७४	२३	त्रोटक ४३२	त्रोटक ४३१
,,	,,	,,	रोला १